

DUE DATE SLIP**GOVT. COLLEGE, LIBRARY****KOTA (Raj.)**

Students can retain library books only for two weeks at the most

BORROWER'S No	DUE DATE	SIGNATURE

कलकत्ता, लखनऊ, कानपुर, बंबई, अहमदाबाद,
 इडोदा, पूना तथा ५० अन्य नगरों में
 रजत-जयंती मनाने जा रहा है



कलाकार . दिलीप कुमार, मीना कुमारी

संगीत सी. रामचन्द्र

मिनर्वा

जयहिन्द

रोज २-३०, ५-४५ तथा ९, छुट्टी तथा रवि ११-१५
 में

१५ वाँ रजत-जयंती, सप्ताह

स्क्रींस प्रकाशन

लाखों लोगों की सेवामें..
उचित दाममें
अच्छी चीजें...



बिस्कुट -

- भूजरी
- ऑरेंज
- इसबिस
- ग्लूफो -
- लैफ्टीन
- फ्रान्सीस
- चाकलेट -
- दूध का
- सादा



HERO'S No 42

OSLER

यहां



वहां



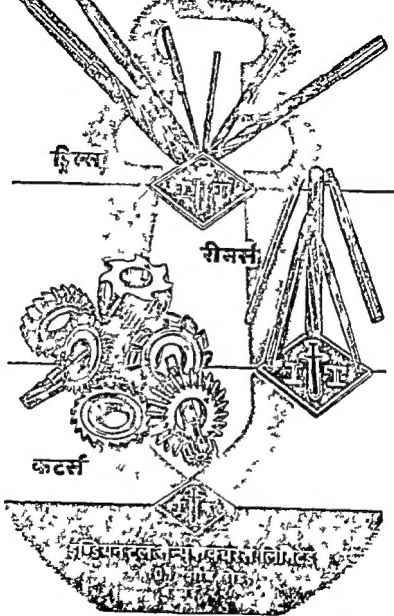
और सब जगह

सोल डीस्ट्रीब्यूटर्स -

एफ. एण्ड सी. ओसलर (इंडिया) लि०

कलकत्ता ▽ बम्बई ▽ न्यु दिल्ली ▽ मद्रास ▽ कानपुर ▽ गोहती

हिंदी डाइजस्ट



सुखद
निर्भरयोग्य...

देखने में
ननोरम...

स्मंदर-बाहर
प्रयोग के लिए



...खूब चमकीली
फिनिश देनेवाला...

...इसमें कोई संदेह
नहीं कि इसका जवाब
है उच्च-क्वैलिटी का
सिंथेटिक एनामेल...



शालीमार
सुपरलैक



इस व, इस वर की हरे
रंगों के लिये इन्फ्रार
ल्लो १० गालों की बॉटल
इन्फ्रार १० गालों की बॉटल
इन्फ्रार १० गालों की बॉटल
इन्फ्रार १० गालों की बॉटल

SHALIMAR PAINT, COLOUR & VARNISH CO., LTD

14, BANG STREET १४, भा. भा. बंगला



नयना मिराम

सैचुअरी के कपड़ों का स्थान
सदैव विशिष्ट रहा है। 'परत
सुल' धोतियों, लेबल प्यूटि मलमल,
धुली और रंगीन घायल, साड़ियों,
काउनवेस्ट के बम्बल, चाररें, घुले एव
रंगीन टॉप्स सौलिये और कलात्मक-
रंगीन छोट सैचुअरी की अपनी
विशेषताएं हैं।



हटारी हाउस, १९० चर्चगेट
रेस्नेमरान इम्बर-१
मेनेत्रिम प्रजेंटम
चिन्ता मरसं लि०



मील - प्रति - मील

आपके थम नौ हल्का करने अपना साइकिल
की सैर को अधिक आनन्ददायक बनाने के
लिए मजबूत व टिकाऊ हिन्द साइकिलें सब
प्रकार की क्षात्रों से मुक्त और पूर्णरूपेण
निम्न पोष्य सेवा प्रस्तुत करती हैं।



वर्ष

प्रति

वर्ष

जितनी अन्य 'सिक्क देव' की
अपेक्षा हिन्द साइकिल वहीं
अधिक सादा व बिकती है -
भारतीय वातावरण के बिलकुल
अनुकूल होने के साथ-साथ यह
उत्तम शैलिका और लोचनीयता
का प्रमाण है।



मीलों आगे

हिन्द साइकिल लि०, २५०, पत्नी, बम्बई-१८.

ASPHC 87

हिन्द मिल्स लिमिटेड

डुगल रोड, बलार्ड स्टेट, बम्बई-१.



वारः
"हिन्द धाम"

टेलिफोन ।

आफिस: ३००१७

मिह: ६०४४३

निर्याता

लेपर्ड, कोरे और धुले हुए लांगक्लाय, रंगीन लांग-क्लाय, रंगीन सूती सूसीज और शर्टिंग, पल्स, जीन, शर्टिंग, धोतियाँ और साड़ियाँ और १० से लेकर ६० कारन्ट तक के सूत, विशेषकर देहात और निर्यात - बाजार के लिए

स्वादिष्ट रसोई के लिए



अभी ही एक प्रति मँगाइये !

कुसुम खाद्य-प्रणाली के लिए लिखिये—

१. मेरे नाम है—

एक से अधिक और एक से अधिक के लिए पत्र आने का
दिनांक देंगे। ईमानदारी के लिए, कृपया अपना नाम
लिखें, यह भी लिखें

कुसुम खाद्य-पदार्थों की पोषण-शक्ति बहुत बढ़ाता है

सुरुचिपूर्ण
 छपाई
 सुन्दर
 बनियान व
 शर्टिंग
 टिकाऊ
 धोतियाँ व
 साड़ियाँ

हमारी विशेषताएं हैं

केसोराम काटन मिल्स लि०

हमारे बंधू एजेंट :

थंयई स्टोर्स सप्लायर्स लि०
 (टेक्सटाइल डि०)

शास्त्री बिल्डिंग, बंक स्ट्रीट,
 कोर्ट, थंयई

केसोराम काटन मिल्स लि०

८, रायल एक्स्प्रेस प्लेस,

कलकत्ता

वो कहानी जो स्वर्ग
से आरंभ होती है..
पृथ्वीपर घटित होती
है—तथा पाताल में
अंत होती है

हेमलता पिकवर्स



नवती
मुद्रांतर

निरुपा राय, मनहर देसाई, जीवन,
निरंजन शर्मा, कुमकुम, सौरा सावंत,
सुकुमार, अरविंद दूधे तथा कमलामुक्ती

दिग्दर्शन : जयंत देसाई

संगीत * कथा * गीत
विश्वगुप्त चतुर्भुज दोशी नेपाली

नृत्य . सत्यनारायण * फोटोग्राफी : मुकुन्द पथारे

मे जे स्टिक

(मे मुग्ध दर्शको के बीच चालू)

बुकिंग - ९-३० से ११ और ५ से ६-३०

रोज ३-१५, ६-१५, ९-१५ रविवार व छुट्टी १२-१५

देसाई फिल्म डिस्ट्रीब्यूटर्स प्रकाशन

TEXMACO

टेक्सटाइल मशीनों के निर्माता

रिज रिजिनिंग

माइनिंग

वाइरिंग

कॉन्क्रीट

अपनी जानकारी के लिए लिखिए
टेक्सटाइल मशीनरी कार्पोरेशन लि.

चेन्नई, 28 परगना

पश्चिम बंगाल

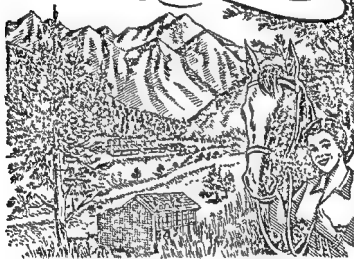
विक्रय केन्द्र

बम्बई, अहमदाबाद, कोयंबूर, कानपुर, भोलापुर

.....कहिए

काश्मीर

में छुट्टी बिताएंगे



माना सम्बन्धी साहित्य
स्पानीय "ट्रैवेल एजेंट"
निकटस्थ "काश्मीर सर-
कार ट्रेड एजेंट" या
डायरेक्टोरेट आव टूरिज्म"
श्रीनगर से मुफ्त प्राप्त करें

आप अधिक आनन्द के लिए काश्मीर
पर विश्वास कर सकते हैं। आप काश्मीर
में अधिक घूम सकते हैं—देख सकते हैं—
ऐतिहासिक प्रतीक, मुगल उद्यान, शीले
हिमाच्छादित पर्वत श्रेणियाँ तथा फूल
और फल के भंडार—यहाँ से अधिक आनन्द
छुट्टी में कहीं नहीं मिल सकता।

डायरेक्टर आव टूरिज्म, "गवर्नमेंट आव जम्मू एवं काश्मीर"

श्रीनगर द्वारा प्रसारित

ऐर्ष्य जैसी सफेद

यह जसो सफेद शक्कर बनान में
प्रायः 'यू स्वदेशी शुगर मिल्स' दम
को शक्कर में आरम्भ निभर बनान में भी
एक बहुत बड़ा हाथ बढ़ाती है। सदा 'यू
स्वदेशी शुगर मिल्स' को बनाइ हुई शक्कर
का उपयोग करें।

यू स्वदेशी शुगर मिल्स लि.
नई दिल्ली

अपनी
रक्षा के लिए



ICP 390

हिन्दी साइजेस्ट

स्वदेशी

काटन मिल्स क० लि० कानपुर

द्वारा प्रस्तुत

• धीलियाँ

• शर्टियाँ

• कौटिंग

• शर्टिंग

• फापलीन

• मारकीन

तथा

बरार स्वदेशी वनस्पति सेगांव (बरार)

द्वारा प्रस्तुत

• वनस्पति

• तैल

• साबुन सदैव व्योहार कीजिये

एजेन्ट्स

जैपुरिया ब्रादर्स लिमिटेड

There are
4 in the
WILSON
Family

विस्तन "जुनावर"

बेकाराफि

विस्तन U S A नंबर के साथ

र 3-12-0

विस्तन "मजर"

बेकाराफि

विस्तन U S A नंबर के साथ

र 4-10-0

विस्तन "डी लक्ष"

बेकाराफि

1/4 केरेट गल्ल नील बली

र 6-10-0

विस्तन "बेडमार्श"

बेकाराफि

बली माइल की 1/4 केरेट

विस्तन नंबर के साथ र 12-1-0

WILSON REGD
VACOFIL PEN

विस्तन पन रेगुलर, नील
और ब्लू-ब्लैक में भी प्राप्त है

Sole Distributors for India

KIRON & CO. LTD.

73-75 CHHIT CHAY/L BOMBAY 2
BRANCHES IN CALCUTTA &
MADRAS

विस्तन पेन में विस्तन ग्राहीवा उपयोग
कर



अपरा संरक्षण

एन, ईंगलुअर और अपन
दियाके अपन विचारों से बनने
के लिए 'कास्को' नैपथियुक्त
दिक्रियों का उपयोग अत्यन्त
हाना है। खैरो, हरी, पके
की गुजराहन, बेंकराफि
आदि बीमारियोंमें कास्को
उपयुक्त है। अच्छी एक
बोतल खरीदिये। हर
बपद मिलती है।



कास्को

नॉदी का अपूर्व हथक



आयुर्वेदाग्रम
'कार्मसी लिमिटेड'
बम्बेदुनगर



बड़े दानेवाली सफेद चमकदार चीनी के लिए
प्रख्यात



श्री लक्ष्मीजी शुगर मिल्स कं. लि.
महोली

श्री अजुधिया शुगर मिल्स कं. लि.
राजा का साहसपुर
मुरादाबाद

और
सर्वाधिक टिकाऊ
एवं सरती
शर्टिंग, कोटिंग, धोतियों
व
चादरों
के
लिए



अजुधिया शुगर मिल्स कं. लि. दिल्ली

दोहरी

शक्तिवाला



मोबिलगैस

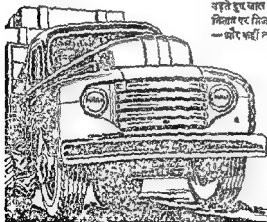
इस्तेमाल में लाइए और प्रति गैलन पर
ज्यादा से ज्यादा मीलों का फासला तय कीजिए !

घास के फेंदों में से सँजता पेट्रोल आसानी से बदले ब्यापक
माध्यम बना है। कारिर है, बरी है स्वभाव है जो ब्यापक
गाड़ी के इतना जो ताकत ब्यापक ताकत बना रहता है। और
यह पेट्रोल है—दोहरी शक्तिवाला मोबिलगैस,
क्योंकि यह सिर्फ़ दोहरे पेट्रोल की तुलना में आपके इतना
ही अधिक ब्यापकता मिलता है।

इस ताकत आपका इतना अधिक लोफ़ पैदा करता है और
आपने बिनामत की होगी है। अपनी मोटरगाड़ी का लोफ़
बिनामत बड़ी ब्यापकता लोफ़ बना ली दुनिया के साथ

आप बनी है जिसकी साथ साथ उसके बने है।

आप ही के बनी गाड़ी में दोहरी शक्तिवाला
मोबिलगैस इस्तेमाल करना शुरू कीजिए। केवल बड़ी एक
देखा पेट्रोल है जिसमें मोबिलगैस का ब्यापकता शामिल है।
यह ब्यापकता बड़े तम्बों (एरियर) का एक ऐसा लोफ़
लोज़ी मिलता है—आपका लोफ़ी बेटों में नहीं मिलता
सकता। इसका इस्तेमाल जब आप गाड़ी में लौटें क्योंकि
मोबिलगैस आपके लोफ़ या ब्यापक से ब्यापक मूल्य
बढ़ा करता है।



बढ़ते हुए साथ छोड़ें के
नित्यता पर निजता है
—और कहीं नहीं!



अपने ब्यापकता के साथ साथ दोहरी
शक्तिवाले मोबिलगैस की
बारीक बारी है—उनका ब्यापक
है कि यह बड़ी शक्ति ब्यापक
करता है और साथ ही यह
बिनामत की है।

मोबिलगैस केवल ब्यापक ब्यापक (आपकी के हाथों का ब्यापक लोफ़ है)

आपकी
आंखों को आगम
देनेवाली वस्तु



PLX 47 H N



फिलिप्स
अर्गेण्टा

जिसकी रोशनी मसमल-सी मुलायम है



स्त्री का सच्चा वैभव

उजवा निष्कल्व जोर परम पथिव
वरिष्ठ ही है। उस पर भूटा इल्जाम
वर कभी सह नहीं सकती ऐसी एक
नारी की बापवांती शरद प्रौढशक्त

ऊंची हवेली

: निर्माता दिग्दर्शक :

धोंरुभाई देस्तार



सूत्रिका :-

* निरुपाय व वरुणदिग्गज

* भगवान

रोज ३, ६, ९

शरद फोरवर्ड प्रिन्स सीलोन

लॉमेंग्टन

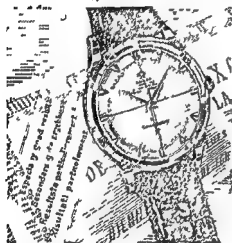
रवि, छटो में

१२ वजे

अपने आप चाभी लगानेवाली यह नई क्रोनोमीटर आपके लिए कैसी होगी...

६६११

यह विशेषण न बनाई ओर टाक भी गई है। समय की यथावधि में यह घटा बढ न बढ सरसरा परीक्षा में खरी निकल। मानामात्र खरोदन के पूरे सरसरी ओर पर परीक्षण और सत्यता की 'सर्टिफिकेट' अवश्य पढ़ें—जो प्रत्यक्ष आमेगा में आपकी मिलेगा।



पीछे करने में परीक्षा-
चालासुदी देससर आप
आपका वास्तविकता की
पहचान करें — जो
विशेषण स अच्छी
मानामात्र होने की
आपके लिए गारंटी है।

सबदा सज्जन रहनेवाला स्टील अवका १८ कर
साले का बस जा चुम्बन और धरती न अग्रभाक्ति
है। पानी स मुखतिन बेसा में भी उपलब्ध है।

Ω

OMEGA Constellation

भारत के सो एजेण्ट्स — चार्ल्स अत्रेट,
दो-५ बंगला विहिदल बन्वता तथा २६० हावा गड, मर्द।
ससार ने ओमेगा पर मोसा रखना सीख लिया है।



विडला
कटछे चम्पा
केश लाल

अनुपम गन्ध
एवं केश शोभा
केलिये

वीर-बच्चा

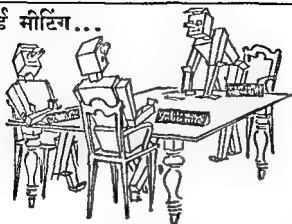
बच्चों की ताकत के लिये
अनुपम टानिक

(बालागुल)



विडला लेवोरेटरीज, कलकत्ता २०

बोर्ड मीटिंग...



मुद्रकों को एसन्द का अर्थ ही है रोहतास बोर्ड तथा कागज

डुप्लेक्स, पाक्स और ट्रिप्लेक्स बोर्ड, आर्ट और
प्रोमो बोर्ड तथा प्लेयिंग कार्ड बोर्ड.

इन सभी प्रकार के बोर्डों पर होने वाली छपाई में सुन्दर प्रतिफल
निश्चित है, चाहे वह लीथो, आफसेट प्रिपरा सेटर प्रेस, इत्यादि किसी
भी पद्धति से की जाय।

रोहतास के कुछ और कामज :

पोस्टर पेपर, नीला मीच पेपर, टी बेलो पेपर, एम जी प्रेसिंग, तथा
एम जी एवम् एम एक कागज की विभिन्न उत्तम बिस्में

उत्पादक :

रोहतास इंडस्ट्रीज, लि०,
० बालमियागढ़, बिहार.

मैनेजिंग एजेंट्स :

साहू जैन लिमिटेड,
११, बलाइय रो, कलकत्ता-१

रामतीर्थ ब्राह्मी तैल (स्पेशल नं १)



आयुर्वेदिक ओषधि (रजिस्टर्ड)

रमरण-ज्वर बढ़ाना है, गाड़ी निद्रा आती है तथा बाय बाय हात है। आँखा में डालने ॥ ओछा की दृष्टि बढ़ती है। काम में डालने ॥ बाय व मय राग मिटते हैं। गजापन दूर होना है। मय ऋतुआ म उपयोगी। कोमल बड़ी घोसी ३॥ छोटी घोसी २) व

प्रत्येक स्थान पर मिलता है।

५॥॥) का मनीशार्डर बड़ी घोसी के लिए तथा ३॥॥) का मनीशार्डर छोटी घोसी के लिए (डाक-व्यय मिला कर) भेजें।

आसन चार्ट

स्वस्थ और प्रसन्न रहने के लिये हमारा योगिक आसनो का आकर्षण चार्ट (नक्शा) मगाइये जो डाक सर्व सहित र १-१२-०० में प्राप्य है। यह आसन सरलता है पर पर निम्ने का सचते है।

श्री रामतीर्थ योगाश्रम वावर (सेण्ट्रल रेलवे) पम्प-१४

टेलिफोन : ६२८९९

सत्तो उत्तम बिस्म, टिकाऊ और सर्वोत्तम

स्टील फर्नीचर

के लिए

दी नोवेल स्टील प्राइवेट्स लिमिटेड

द्वारा निर्मित फर्नीचर पर भरोसा कीजिए



मुख्य कार्यालय व भंडार

वर्ली, बम्बई-१८

टेलीफोन - ७३२३८-७

टेलीग्राम - गायरप्रूफ



जो स्म

२४, न्यूनेर

स्ट्रीट

पूरु १

११८, कालका

देवी रोड

फिल्मिस्तान का

साहस और धीरता से पूर्ण अन्याचार व दंड का अद्भुत कथानक



मुन्नीमजी

कलाकार नलिनी जयवंत ☆ देव आनन्द

निरुपा राय, प्राण, पुरी तथा अमिता

निर्देशक सुबोध मुकर्जी संगीत सचिनदेव वर्मन

नाज (एयर कन्डीशन) तथा किस्मत

रोज ९-४५; ६, ९-१५ * ३, ६, ९ शनि रविव १२-०

में अपार भोड़ के बीच चालू

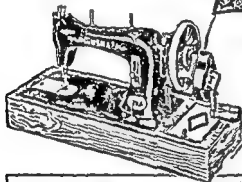
लिडो (जूहू) आकाश (कुर्ला), अशोक (याना) कृष्ण (कल्याण),

रीजट (कल्याण कंपनी) : अल्का (पूना) रिलीफ (अहमदाबाद)

घर में सिलाईका काम

यही जैसा शौक
और साथ ही बचत भी!

अपना मे सिलाई करने में
सबसे अधिक प्रसन्नता होती है
ये हर प्रकार के भुई के
काम आसानी से कर
सकती है और दर्जी के
सर्व को काफी बचा
देती है।



अपना
सिलाई मशीन

अपना स्कूल में
सिलाई सीखिये

दी जय इंजीनीयरिंग वर्क्स लि. कलकत्ता



सितम्बर

नवनीत

[हिन्दी डाइजेस्ट]

१९५५

संचालक
श्रीगोपाल नेवटिया

प्रबंध-संचालक
हरिप्रसाद नेवटिया

चित्र-शिल्प: गोपालकृष्ण भोवें



सम्पादक
रतनलाल जोशी

सहकारी
रमेश सिन्हा: ज्ञानचन्द्र

लेख-सूची

१. देह-मणि	'चरित-चिन्तामणि' से	१
२. मिथ्या सबसे बड़ा दुःख	जातक-कथा	२
३. ...वह चरखा-जपती	मनुजह्वर गांधी	४
४. महापुरुषों का देश	विनोद	७
५. मोक्ष	बैन जातक से	९
६. क्षीतान	कुमारयोगी	९
७. फानी	'जोश' मलीहाबादी	११
८. नारी अनन्त-वास्तव	जगदीशचन्द्र पन्त	१५
९. ...होनी प्रबल	एडविन अर्नाल्ड	१६
१०. धैर्य	खलील जिब्रान	१७
११. आप यत्र क्यों जाते हैं	क्लिफोर्ड बी हिव्स	१८
१२. पूँजीवाद की जीवनधूँटी	'बनिक'	२४
१३. दीवारों के कान होते हैं	ओम्प्रकाश	२८
१४. संपद जमालुद्दीन...	मिर्जा अदीब, बी ए	३३
१५. इतनी सवेदनशीलता भी बुरी है	ईथेल एच बैरन	३९
१६. शेर से भी भयावह	बेल्बी पोरनूअस	४०
१७. वर्षा की बूद	नवीनतम वैज्ञानिक रोचो से	४२
१८. कहि न जाय वा कहिये	योगोपाल नेवटिया	४७
१९. प्ररास और कलक	रवीन्द्रनाथ ठाकुर	४८
२०. एक अद्भुत प्रतिशोध	लवेरचन्द मेघाणी	५१

२१. ...तरल मोने की मनमानी	डेनिपल हनवेल्
२२. सर्जरी के नवीन चमत्कार	डा० एस. आर भटनागर
२३. महासागर की जन्म-गाथा	डा० एस. के. बल्याणसुंदरम्
२४. मानव-मन	शरत्चन्द्र चट्टोपाध्याय
२५. भय के राज्य में प्रथम प्रवेश	बर्नल बर्दान जर्ल
२६. 'देश मेरा पजाब नी	अमृता प्रीतम
२७. उज्जल-उज्जल ..	[पजाबी साहित्य]
२८. आप... कितने दृढ़ हैं	"द' लाइफ य मस्ट टूँष' मे
२९. ब्रह्मिणी	जैम्स बेल्सर
३०. ...बहरा से बात करना है	जान वान
३१. पाइया की घृत-प्रीति (कहानी)	परमुराम
३२. नीलाम (कहानी)	ई. बी. ल्यूकास
३३. अगम्या (उपन्यास)	मगामोहन



सुदरी, दक्षिणी शैली

[चित्र 'प्रिय आठ वेल्स म्यूजियम' के भोजन्य में]



धर्मोपदेश; लबा में महेंद्र और मधमित्रा

[चित्रकार - एस. आर. बर्न]

सूचना : 'नवनाम' में प्रकाशित प्रत्येक रचना, चित्र एवं स्टेप पर नवनी प्रकाशन लि० का वापीराइट रहता है। अतः पूर्वानुमति के बिना किसी भी रूप में इनका उपयोग नहीं किया जाना चाहिए।

वापिस मूल्य : दस रुपये नवनाम प्रकाशन लि० प्रति अंक। एक रु.
विशेष साधारण : पन्द्रह रुपये ३४१, तारदेव, मम्बई-७ विशेष साधारण : दस रु.

नवनीत

[हिन्दी डाइजेस्ट]

संचालक
श्रीगोपाल नन्दिग

सम्पादक
रत्नलाल जोशी

वर्ष ४ : : अंक ९

सितम्बर, १९५५

देह-मणि

गङ्गाप्रवाह के रागव परमशक्ति ने अपने पुत्रों की चतुर्वर्तिमणि दी—“मात, इस कामधेनुसुविणी मणि द्वारा तुम अनन्त भीतुक प्राप्त करो।” ज्येष्ठ पुत्र ने रात्रि में प्रकाश के लिए मणि का प्रयोग किया। छोटे ने प्रथम प्राप्ति हेतु उसे मगर कपू के गर्भ में डाल दिया। धन की भूमी मणिवा ने उसे मणिभार को भेज दिया। मणिभार तो पारसी चढ़ा। बुद्धिमान को राजावरि प्रयोग द्वारा उसने प्रथम स्वयंराशि उससे प्राप्त की। स्वयं तुम भोगा और परोपकार द्वारा बनेछों के कष्ट मिटावे। महर्षि ने दुर्लभ समभाते हुए कहा—“आयुष्मान्, मनुष्यदेह की भी तुम ऐसी ही चतुर्वर्तिमणि मानो।”

—‘चरित चिन्तामणि’ से

राजसे लक्ष दुःख

माधारण अति माधारण समारी अनुष्यो को उमरे दैनिक जीवन के विप विकारों से कषर उठाने नाम विधात के आनन्द-पव पर आरुह करना ही मतवान बुद्ध का जीवगोदेश था। इमेलिह इन्होंने जो बुद्ध कहा, जनसाणी में कहा और जो दुष्टान दिये, जनमाधारण के जीवन से दिये। नीचे की जनक वचा में आपको इसी परिपटी का सुंदर निर्वाह मिलेगा।

★

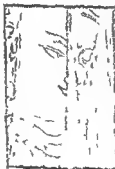
जुन दिन माराफिसो में महोत्सव था।
दूर-दूर से लोग उगे देखने के लिए
आये थे। बहुत-से नाग, गरुड और भुम्भट्टज
(पृथ्वी पर विचरण करनेवाले) देवता

और पक्षी और नयोनिज
मवन (बैतुठ) ने भी चार
नेरपुन उस उत्सव की
मति सुनकर चले आये।
उनमें में एक देवपुन बोधि
मन्त्र थे। पारो देवपुन
वक्ता नाम के दिव्य पुत्रा
न बने लगे परते हुए थे।
आर्य योगन ना वह विगाह
एक उन पूरे की मुगम
ने मन्त्र उठा। मनी ने
मन में उन व्यक्तियों के
शान की लाया प्रवट
हुई, बिहोने में दिव्य

दुन्दार धारण लिये थे। देवपुत्रों ने
जब देता कि, लोग हमें ही छोड़ रहे हैं,
तो वे रागागम में उबर पड़ अपने प्रवास
ने जगाम में स्थित हुए। जवना इन्ट्रों

नराने

हुई। राजा ब्रह्मदत्त, मेदुओ तथा उपराज
आदि भी जा पहुँचे। सभी की जिज्ञासा
को उन्होंने यह बह कर शांत किया कि,
वे नयोनिज मवन से पधारते हैं और दिव्य



बोधिमाल

विश्व निष्पन्न के एक
शिल्प की मूल रेखाद्वयति।

वक्ता पुष्प की मालाएँ
धारण किये हैं।

लोगों ने उनसे प्रार्थना
की—“स्वामी, जाम ता
दिव्यलोक में और दूसरी
मालाएँ प्राप्त कर लधते हैं,
ये हमें दें दें।” देवपुत्रों ने
उन्हे सप्रभाया कि, अनुष्म-
लोक में रहनेवाले दुष्ट,
मूर्ख या तुच्छ लोग उन्हें
धारण नहीं कर सकते।
लेकिन जिनमें में गुण हो,
वे उनसे योग्य हैं। प्रोष्ठ
देवपुत्र ने बताया—

“जामने जो नाजहरे वाद्यय न मुसाभये,
यतो लज्जान मयबेय्य सवे वक्तापनरहति॥

—जो वाद्य ने विनी की कोई वस्तु हरण
नही करता, वाणी से मिथ्या नहीं बोलता

और ऐश्वर्य-लाभ करने पर प्रमाद नहीं करता, वह कक्काद के योग्य है।”

यह सुनकर पुरोहित ने सोचा कि, यद्यपि ये गुण मुझमें वर्तमान नहीं, फिर भी झूठ बोल कर मैं यदि यह माला ले लूँ, तो लोग मुझे इन गुणों से युक्त समझेंगे। उसने वह माला ले ली।

दूसरे देवपुत्र ने कहा—

“यस्तं चित्तं अहाळिद् सदा च अचिराग्निनी,
एको सादु म भुञ्जेद्य सवे कक्कादमरहति॥

—जिसका चित्त हल्दी की तरह नहीं, अर्थात् स्थिर है और जो दूध श्रद्धावान् है, किसी स्वादिष्ट वस्तु को अकेला नहीं खाता, वही कक्काद के योग्य है।”

पुरोहित ने इन गुणों को भी अपने में बता कर दूसरी माला ले ली। तीसरे देवपुत्र ने कहा—

“यस्मै न विसर्गो न निष्कस्या धनं हरे,
भोगे छद्वा न मज्जेद्य सवे कक्कादमरहति॥

—जो धर्म से धन प्राप्त करे, किसी को देने नहीं और भोग वस्तुओं से प्राप्त होने पर प्रमादी न बने, वही कक्काद के सर्वथा उपयुक्त है।”

पुरोहित ने स्वयं को इन गुणों से भी युक्त प्रता कर चौथी माला को कामना की। चौथे देवपुत्र ने कहा—

“सन्मुखा या तिरिक्खा
धा यो सत्ते न परिमासति,
मयावासी तयाकारी स-
वे कक्कादमरहति॥

—जो सामने या पीठ-पीछे, किसी भी

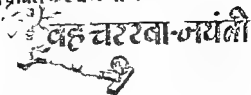
अवस्था में सतों की निंदा नहीं करता और अपने वचन से अनुकूल ही आचरण करता है, वह इस दिव्य माला के योग्य है।”

पुरोहित ने अपने को इन गुणों से भी युक्त बताया और चौथी माला प्राप्त कर ली। चारों देवपुत्र उसे अपने गजरे दे कर चले गए। उनके चले जाने पर पुरोहित ने सिर में भयानक दर्द प्रारम्भ हुआ। वह बच्चे से व्याकुल हो जमीन पर लोटने लगा और जोर-जोर से चिल्लाने लगा—“मैंने झूठ बोल कर ये पुष्पहार ले लिये हैं। मैं इनके उपयुक्त नहीं। इन्हें मेरे सिर पर से उठ लो।” लेकिन द्वार किसी भी उपाय से उसके सिर पर से हटायें न जा सके, भागों के लोहे के पट्टे से जकड़ दिये गये हो।

सात दिन तक पुरोहित भयकर कष्ट से ग्रस्त हो रीता-चिल्लाता रहा। उससे लिए राजा भी धिक्कित हो गए। सोच-विचार कर अमात्यों ने फिर से उत्सव के आयोजन की सलाह दी। राजा ने फिर उत्सव कराया। देवपुत्र इस बार भी पधारें और उनके दिव्य पुष्पहारों से फिर एक बार वह विशाल नगर महक उठा।

जनता ने उस पाखंडी पुरोहित को देवपुत्रों के सामने ला कर सीमा पीठ के बल लिटा दिया। उसने देवपुत्रों से क्षमा-याचना करते हुए जीवन क्षान्ति देने की प्रार्थना की। देवपुत्रों ने सबके सामने ज्योत्स्य पुरोहित को भर्त्सना की और चारों द्वार उस पर से उठा ले गये।

हृदय द्रवित कर देने वाली



मजुरहन गांधी द्वारा लिखित यह नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद द्वारा प्रकाशित 'श' और बापू की शीतल छाया में पुस्तक का एक मर्मस्पर्शी अध्याय

✱

सबेरे सड़के हो सबसे पहले बा ने बापूजी को प्रणाम करते हुए कहा—
“लीजिये, यह मेरा अंतिम जयंती का प्रणाम है, अगली द्वादशी को मैं रहने-वाली नहीं हूँ....।”

इसने बाद हम सबने बारी-बारी से बापूजी को प्रणाम किया। रात-भर बिये गये घुंगार में, सारे वरामदे में अलग-अलग रंगों से सुबह

अक्षरों में लिखे गये मन्त्र के पवित्र गूँघ और श्लोक, आषपंच कलामय चौक और फूली की महक, ये सब तो बाह्य आवरण थे, परन्तु बा की मौजूदगी में उत्सव का कुछ अनोखा ही रूप हो जाता स्वाभाविक था।



गांधीजी

[चित्र पोर्ट्रेट चित्रकार फेलिक्स टोपोलास्की]

‘हिन्दुस्तान टाइम्स’ के शौक्य थे

नवनीत

४

प्रार्थना में आज का भजन था—
“और नहीं कुछ काम के में भरोसे अपने राम के सोऊ अक्षर सब कुल तारे धारी जाऊँ उस नाम पे ‘तुलसीदास’ प्रभु राम दयाधन और देव सब काम के।”

यह भजन बापूजी के इक्कीस दिन के उपवास के समय एक बहन ने खास तौर पर तार से भेजा था और बापूजी को यह बहुत प्रिय था।

प्रार्थना के बाद नित्यक्रम चला। धा उठी। उनके दातून-पानी का इंतजाम कर और चाय देकर निपट जाने पर, मुझे सुशीला बहन ने

सितम्बर

डाक्टर साहब ने कमरे में आने को कहा था। इसलिए मैं वहीं गयी। जाकर देखती हूँ, तो सभी का भेष बदला हुआ था। मेरा बहन ने दाढ़ी लगाकर सिक्खों जैसा सफेद साफा बांध रखा था और डाक्टर साहब (डाक्टर गिल्डर) के कोट-पतलून पहन लिये थे। एक हाथ में सिक्खों-जैसा मट्ठा था। ऊँचाई काफ़ी और क्षीर को रचना बढ़िया थी। इसलिए बिल्कुल सरदारजी-जैसी लगती थी।

डाक्टर साहब पठाव देने। मेरा बहन की खूबीदार सलवार और सिर पर पठानों-जैसा तुरा निका-लकर फेटा बांधा था। सुशीला बहन ने पादरी का वेश बनाकर बले में कास डाल लिया था।

व्यारेलाजी वशिष्ठी सावु घने। मैंने फाग, ऊँची एडी के बूट और सिर पर पारसी टोपी पहनी, जो कटेली साहब ने जुटा दी थी। इस प्रकार हम तैयार हो रहे थे कि, इस बीच था चुपके से एक बार आकर देख गयी और बापूजी को परोस रूप में कह भी दिया।

इसी अंश में कटेली साहब बापूजी को कह आये कि, आज आपका जन्मदिवस

है, इसलिए चायद कुछ मुलाकाती आये। परन्तु बापूजी थोड़े ही इस प्रकार के मुलाके में आनेवाले थे।

हम मेरा बहन के कमरे में बैठे और कटेली साहब ने बापूजी से कहा—“कुछ दर्शनार्थी कहते हैं कि, वे सरकार से मजूरी लेकर आपके दर्शन करने आये हैं।” बापूजी का घूमने का समय ७। बजे (रात) का हो गया था। इसलिए वे हमारे कमरे में आये। यही बापूजी ने पर



[प्रक्षालन]

रखा, यही ही मैं सबसे पहले उठी—“महात्मा जी, साल मुबारक। मेरा नाम जरबायी जरी वाला है। खुदा आपको बहुत-बहुत जिलाये।” मैंने यह सब-कुछ उसी भाषा में कहा, जो आम

तौर पर पारसी बोझ करते हैं।

बापूजी और बा बिलखिलाकर हँसे। और, बापूजी ने तुरत ही मेरे कान छूँकर खूब जोर की घप लगायी।

चाय में मेरा बहन आयी, पजाबी भेंट लेकर। स्वयं ही अपना परिचय दिया और हलवे की बड़ाई की। बापूजी ने भी खूब जोर की घप जमायी। फिर चाय डा बिल्डर, खजूर इत्यादि पठानों

मेरा चेहर। और, पादरी के बाद अत
मे ब्राह्मण-साधु इस तरह आये, मानो
आनीर्वाद देने लगे हों।

हम सब पेंट पावरर ऐसे और यहाँ
मे भीमे मगदेन पारा की समाधि की
तारफ जाने लगे। परन्तु हम ज्यों ही
मंदिर में निरले, त्यों ही बटेमी साहब
ने जमादार की इराने के लिए डौट कर
कहा—“ये तीन तीन आदमी क्यों आ
गये? दोनो-दोनों।” बेपारा रघुनाथ
जमादार, साहब की ऐसी जोर की पगवों
में घबरा कर दौड़ा। दरवाजे पर पहुँच
देनेवाले गीरे साजेंटी ने भी बिचित्र होकर
अपनी भरी बकूँ से सँभाल ली। रघुनाथ
आकर हमारे मँहू की तरफ देगने लगा
और गवने पहुँच बोला—“अरे, ये तो
गुलीलावार्द और गनुवार्द हैं।” बेचारे के
दम-मँ-दम आया। और तिमी की जल्दी
पहचाना ही नहीं जा सक्ता था।

पूजाकर जाने के बाद हम अपने बीच-
मर्दी के काम में लग गये। बापूजी महाने
पटे गये। इस बीच बापूजी जिग वमने
में बँटोवाँटे थे, कहे। उनके लिए अनेक
भक्तों ने राम नामर जो लारी भेजी
थी, उसे भजन-आत्म डग ने मजाया और
पूजे तथा मूल के सारण बनाये गये।
बापूजी की पढ़ी के टीन गायने पूँडे ने
अँ लिया। बापूजी ने पूँडे के ज्वाला हार
काने की मकारी की थी। मूल के हार
भी इस तरह बनाने की कहा था कि,
दूगरी बार गुटा ही वे दुगने के काम
गवनीम

में ले लिये जा सके।

छेडी मेमरीला महान ठाकरसी की
तरफ मे कुमकुम के साधियोंसाला नारिय
आया था। इसी सियाम तीन नवी
बटारियो में दवावर, मेँ, गुड, पण
की जोटी, या और दोनों के लिए
मायार्द पनेम्ह पाँच म भरवर बटेमी
साहब नीचे ले जाये।

गाववर बापूजी अपनी गद्दी पर बैठे।
गवने पाँके कुमकुम की ७५ बिदिपे
बवावर, ल सवने अपने-अपने हाथ के
कति हुए ७५ गवने का जो हार सँवार
दिया था, उस पूँडे का मे बापूजी के
साथे पर लिख लया कर पहनाया और
प्रणाम किया। बाद में, हमने बारी-
बारी में लिख बरने मायार्द पहनायीं।

आज का मे बापूजी के हाथ के गाने
हुए मूल की म्वाट बिनारे की सादी पहनी
थी। इस माड़ी के लिए मुझे था मे नाम
सोर पर लिखल की थी कि, मेरे नाम
बापूजी के हाथ की कति हुई यह एक ही
माड़ी है। इसे जब मैं मँहू, तब मूल मुझे
औँडा देना। ये पजावी पंजाव पहनायी
थी, फिर भी था मे मुझे आज म्वाट बिनारे
की दूगरी माड़ी पहनने की कहा।

गुलीलावार्द था मे भी म्वाट बिनारे की
सादी पहनी। या करने लगी—“आज जीते-
जा तो मूल बार और आगिरी बार यह
बापूजीवार्द माड़ी बरला-भादमी के दिन
पहन लँ—फिर कहों पहननी हँ?”

इसके बाद गवमुष ही यह माड़ी

उनकी मृत-देह पर ओढ़ाने का कठिन काम भुज्जे ही करना पड़ा। अपने जीते-जी वा ने दूसरी बार बापूजी के हाथ की साड़ी आगा सा महल में कभी नहीं पहनी।

फिर हमने छोटी-

सो प्रार्थना की।

‘वैष्णव जन’ का

भजन गाया। प्रार्थना

के बाद बापूजी के

लिए मैं भोजन

लायी। सा रोज तो

बापूजी के वा लेने

के बाद जाने बैठती,

परन्तु आज देर

बहुत हो गयी थी,

इसलिए बापूजी ने

भनायास ही कहा-

‘वा वो भी परोस

दो। मैं और वा

एक-दूसरे का ध्यान

रखकर साथ ही खा

लेगे। और, तुम लोग

भी जाकर भोजन

से निपट लो।”

वा ने बापूजी को

आपहूँपूर्वक गोड़ी

पपड़ी दी और

दोनों खाने बैठे। वा के जीते-जी आखिरी

धरमा-दादगी हमने सब शान से बनायी।

उसके पसम वमी तक धेरी ओछो के

आगे इतने ताने हैं कि, मैं चित्रकार

महापुरुषों का देश

यह महापुरुषों का देश है। यहाँ वे लोग सत्पत्ति को उच्च स्थान नहीं देने। किसी के पास राक्षस की ताकत है या गन्धर्व है तो उसे बड़ा महो मानते।

मित्रद्वार ही कहानी है। भारत में एक दिन यह राक्षस के जा रहत वा तो उत्पन्न होता है एक साधु वंश हुआ है।

उम साधु ५ मित्रद्वार को देखकर न सन्तान किन्ना न उत्तर पड़ा हस। मित्रद्वार ने उसको पूछा-‘तू कौन है?’ उसके

कहा-“मैं दुनिया का मालिक हूँ।” यह सुनकर मित्रद्वार पकड़ा गया। उत्पन्न सोचा कि, मेरे पास दत्तरी पड़ी सेना है और

इससे वास्त तो कुछ भी करी है तो यह क्यों दुनिया का मालिक हो सारा है ? उसने साधु ने कहा-‘तू कहाँ जा रहा है, मैं तबबर हूँ-इत दुनिया का मालिक।”

साधु ने उत्तर दिया-‘मैं तो तुझे जानना ही गरी, तो फिर तू बंसे दुनिया का मालिक बना ?”

-मित्रद्वार

होती, तो हू-ब-हू बिना खींच देती। परन्तु हमें यह वस्तुना बोधे ही थी कि, वा के लिए यह एक अतिम ही साबित होया।

बापूजी और वा के भोजन पर लेने

पर सब कंठी प्रणाम

करने आये। लेडी

टाकरसी की तरफ

से जो लतरे और

भौलम्हियों आदी

थीं, वे बापूजी के

हाथ से दिलवाने के

लिए वा ने भोगवायी

थी। कंठी प्रणाम

करते गये और

बापूजी आपसी हुई

सारी भेट उन्हें

बँदते गये। फिर

आराम करने के

लिए वे भेट गये।

मैंने बापूजी और

वा के पैर जकड़ी-

बलदी मले। इतने

में २॥ से ३॥ वजे

के सामूहिक कताई

का वस्त हो गया।

सबने मीन

बतायी की।

४॥ यद्वे वैदियों को मिठाई बिना

और सेव-मोठिये दिये। यह वैदियों की

सहायता से घर पर ही बनाया गया था।

धीरा बहन अपनी नयी धुन में चार

पाता था। एक बार भगवान महावीर वहाँ पधारे। भायोत्तर्ग ध्यान में थे अचल खड़े थे। चटर्वाणिक अत्यन्त श्रद्धा हो उन्हें दग्ध करने के लिए फेंफकारे छाटने लगे। किन्तु महावीर के तेज के समक्ष उनकी विष-द्रष्टि असफल रही। और भी अधिक शोषोन्मत्त होकर वे भगवान महावीर के चरणों में बार-बार दस्तक करने लगे। पर क्षमापति महावीर तब भी शांत थे। उनके चरणों से रसक पै बहने लगे। वह दूध की पार वह निबली, तब चटर्वाणिक को समझ में आया कि, जिस पर वे अवधारण ही शोध कर रहे हैं, वे सामान्य मनुष्य न होकर अवश्य ही कोई विशिष्ट पुरुष हैं। वे तत्काल ही अपना शोष त्याग उनके चरणों में जा गिरे।

भगवान महावीर मुस्कराये। अपनी क्षमापति बाणी में उन्होंने कहा—“बट-बाणिय। जरा सोचो, तुम क्या थे और शोध ने तुम्हारी क्या दगा कर दी है? प्राय प्राणि-मात्र का घोर शत्रु हैं और

इसके ससर्ग-मात्र से जन्म-जन्मांतर के संचित पुण्य जलवर छार हो जाते हैं।”

उनके अमृततुल्य वचनों को सुनकर चटर्वाणिक को शांति प्राप्त हुई। उन्हें अपने पूर्व-जन्मों का स्मरण हुआ और वे पश्चात्ताप करने लगे। भगवान महावीर के पैरों पर सिर धुनते हुए गद्गल से वे बोले—“प्रभु, मैंने आपसे साथ धर्मसाधुष्ट व्यवाहार किया, फिर भी आपने मेरा उद्धार किया। मैं आपका अत्यन्त कृतज्ञ हूँ।”

तीन बार प्रदक्षिणा कर उन्होंने भगवान महावीर के आदेशानुसार जनश्रम किया। शोध का उन्होंने सम्पूर्णतया परित्याग कर दिया। अहीर-बनिताओं ने दूध, दही, घी इत्यादि से उनकी पूजा की। पीढ़े-पिढोने ने पाद-चर शरीर को छुलनी बना दिया; किन्तु वे चुपचाप छिपे रहे। भगवान महावीर की वाणी उन्हें क्षांति प्रदान करती रही। अंत में, नियत समय पर मृत्यु को प्राप्त कर वे आठवें देवलोक (महावसार) में देव-रूप में प्रवृत्त हुए।

✽

एक बार नेहरूजी जब सत्यनरु की एक सार्वजनिक सभा में भाषण देने के लिए खड़े हुए, तो दर्शकों के बीच कुछ व्यक्तियों के शब्द पढ़ने में गहरी व्यवस्था समगुलित हो गयी। कुछ क्षणा तक तो नेहरूजी लोगों के शान होने की प्रतीक्षा करते रहे; किन्तु जब हो-हुल्ला नहीं रुका, तो शोधित हो स्वयं भीड़ की ओर छपटे। अगस्त्यों ने उन्हें पकड़ लिया। नेहरूजी अपनी पूरी ताकत लगाकर छूटना चाहते थे; किन्तु पकड़ मजबूत थी। उनका चेहरा समाना उठा—उन्होंने धैर्य भी जलाये; परन्तु अगस्त्यों ने उन्हें छोड़ा नहीं। तब तब पुलिस ने भीड़ पर चार्ज पा लिया। सभा में सर्वत्र शान्ति छा गयी। अगस्त्यों ने नेहरूजी को छोड़ दिया। नेहरूजी का गुस्सा भी तुरन्त ही उतर गया। पुनः मंच पर चढ़ कर टउनजी और पतंजी में हँसते हुए बोले—“आरने मेरी कुर्सी देखी?”

—गम निदारी

✽

फानी

उर्दू के श्रमसिद्ध कवि-शब्दविशार 'जोश' मल्लोदयादी द्वारा लिखित 'फानी' के अंग्रेज की कुछ फिट-फुट शैक्तियाँ

★

अपने प्यारे और जगाने के सवाये हुए शायर 'फानी' बरामूनी से मैं उस जमाने में मिला था, जब मेरी मते भीव रही थी और उनकी जवान दाढ़ी के बाल सन्ना हो चुके थे। हाय ! यह भी क्या

जमाना था—'दुनिया जवान थी, मेरे अह्द के खमम (जवानों के समय) में।'

'फानी' उस जमाने में लगनऊ में बकाअत करते थे। लेकिन बकाअत में उनकी दिल नहीं लगता था और लगता भी क्यों ? एक तो शायर, दूसरे वे राजा कारिबाने-मिराते-हवाये-गुल (घरात के नये विकसित गुल)वादी एक तो गदेल और दूसरे गीम बक़ा।

बारो-बार दिन-ब-दिन बिगड़ता गया। आखिर एक रोज उनकी माली हालत (आधिक दना) बिलगुल बिबट गयी और दूसरी तरफ उनके दस्त (प्रेम) की भरती में एक ऐसा जलजला (बूचाल)

आया, जिसने पूरा तरता ही उलट दिया। लाचार, बोरियत-बिस्तर बांधा और यह बहते हुए लगनऊ से आगरा चले गये—

जहाज हूँ आराम लिये कूबे से दार के।
आता हूँ नी भरा बरो-बीवार बेलकर ॥



शैक्तभरती रा 'फानी'
[चित्र : पी. एन. ओके]

'फानी' के आगरा चले जाने के बाद, मेरे हिए पर भी 'उन्ही' की तरह सूफानी बरकत गढगढाने लगे और कुछ ऐसे दूट-दूटकर बरमे कि, मुझे भी हँदराबाद चल जाना पड़ा। 'फानी' को आगरे में भी धन न बिल्ल। उस जमाने में यहीं 'हाफिज', 'इमामुद्दीन', 'छम्पो जग', 'लसीक गह-मद', 'मकस', 'मलूमूर' और 'बानो' सभी मौजूद थे और उनकी हिम्मत पैघाते थे ; लेकिन दस जले-शन का वही होल था।

आ गया जब कोई,
कर लो चार बातें उराते भी।
किर वही निर कोड़ना,

नहीं गया और जब उन्होंने दुआरा कहा—
“आप खामोश हैं”, तो हमें वे साथ मेरे
मुँह से ‘जो-जो’ निकला। मेरी इस
‘जो-जो’ पर उन्होंने कहा—“आप लस-
नवाँ सहजोय के नाम-लेवा हैं और हँस-हँस
कर ‘जो-जो’ कह रहे हैं।” फिर तो मेरा
सौना ही पट पड़ा। “अरे, मर गये”, कहता
हुआ उठा और ‘फानी’ की तरह मेरे मुँह
से भी उठने-उठने तोप के गोले की तरह
एक पाटदार (कहकहा) निकल गया।

फिर मैं कहकहे मारता हुआ ‘फानी’
की जमी कतराई पर आकर खड़े लगा,
जिसपर ‘फानी’ हमें के मारे छोड़ रहे थे।

अभी हम लौट ही रहे थे कि, महन में
गुनिया की पो-पो की आवाज आयी।
हम दोनों हमें के मारे-दूधो ने खिड़की
से फिर निराल कर देखा, तो अलगमा
मारे गुप्ते के गोपने हुए, थोड़े हँस गुनिया
का पोंन बुचक कर बाहर जा रहे थे।

इस विस्रे के बाद अलगमा ने हममें
मिन्नता छोड़ दिया। हमने भी उन्हें अपनी
मूरत नहीं दिखायी। क्या मुँह लेकर
प्रानाँ मूरत दिगाने ?

पर और दया की बात है। रात का
घसन था, महफिज जमी हुई थी। ‘फानी’
गुनगुनाने-गुनगुनाने एकरम चीज पड़े।
मुझमें कहा—“तोंग, क्या गम चलन कर
रह हो ?” मैंने हँसकर कहा—“तों और
क्या करे ?” उन्होंने गर्दन लम्बी करते
हुए कहा—“अरे जातिम, गम गन्न करने
की चीज नहीं। यह तो एक अमानत-

इलाही (परमात्मा की धरोहर) है।
इसे गलत करने अमानत में खयानत
(धरोहर का अपव्यय) करते हो।”

मैंने कहकहा लगाकर कहा—“अरे
फनिया, तू तो गम की वालिदा (माँ) है
अपने बच्चे को दूध पिला, छाती से लगा,
पालपोम कर जवान कर दे, यारों को
इस इलाही-अमानत में क्या वास्ता-

बकं से करते हैं रोजान,

अमे-आतमवाना हम।

—हम तो गातमखाने की क्षमा की बिजली
में गोजन करते हैं।” इस बात पर तमाम
महफिज झूमने लगी। मैंने फिर कहा—
“भाइयो, देखा इस ‘फानी’ की तरफ। यह
पूरी दुनिया एव बवा इमामवाडा है और
‘फानी’ एव ताजिया हैं, जो मुहताँ में हममें
रखा हुआ है।” महफिज कहकहो के धोर में
झूमने दूबने और उमरने लगी। ‘फानी’
अजीब-भी नजरो से देखने रह गये।

‘फानी’ की शायरी के बारे में क्या कहूँ ?
‘फानी’ ही वह आदमी था, जिसने गजद
को गैर-फिनरी (प्रवृत्ति-विरोधी) और
बेमानी (असहनी) से फिनरी (प्रवृत्ति-
अनुकूल) और मानीदार (सार्थक) बन
दिया। जो उनके दिमाग ने सोचा और
जो उनके दिउ ने महसूस किया, उसी को
उन्होंने शायरी का लिखास पहना दिया।
‘फानी’ का बलाम बाकी रहेगा—इसलिए
कि, उसमें खुलूस (निष्ठा) है, बलबले
(उद्गार) है और धोरियन (बलिष्ठ)
के जोहर बूढ़-बूढ़ कर मरे हुए हैं।

अनंत-वत्सला

भारतीय नारी के चरम अद्भुत रूप का स्व जगदीशचन्द्र बसु द्वारा एक शब्द निरूपण

★

एक दिन सामने की गली के मोड़ पर मैंने एक भिखारी को पड़े देखा, जो अपनी पतुता के कारण सड़का छ्यान भाङ्गष्ट कर उसी दया की भीख माँग रहा था। सहगोरो की करुणा को ब्रवित करने के लिए वह फूट-फूट कर रो रहा था। मुझे उसका यह स्वाग बिल्कुल पसंद नहीं आया। थोड़ी देर में पटी-सी साडो पढ़ने एक हनी उधर से निकली। भिखारी का आर्तनाद सुन कर वह क्षणभर ठिठकी और अपने अंगल के छोर पर बैठा एक पैसा उसे देकर वहाँ से चली गयी।

मेरे माँ की प्रतीति हुई, मांगो वह पैसा उसकी कुल अमा-पूँजी हो। अतः जिस वरुणा और स्नेहशीलता का परिचय उसने दिया, उससे नारी की मातृरूपिणी जगद्धात्री मूर्ति आँखों के आगे मूर्तिमान हो उठी।

एक बार मैंने १०-१२ वर्ष के एक बच्चे को देखा, जिसे बचपन में एक बाघिन उठा ले गयी थी। भोले शिशु ने भूरा से जातर हो बाघिन का रतनपान करने की चेष्टा की। बाघिन के भीतर भी आखिर माता का ही मन तो था। इसी से उस खूँटवार बाघिन ने उस शिशु को स्वयं अपने ही शिशु की तरह पाला और एक दिन

उसकी रक्षा में अपने प्राण भी दे दिये।

नारी के हृदय में सतान-स्नेह का जो सरस स्रोत बहता है, उसी से इस जगत में इस अनन्त वास्तव्य की अवस्थिति है। हे वास्तव्य स्रोतस्विनी नारी, क्या तुमने कभी यह भी विचार किया है कि, जिस वसुधरा को तुमने अपने आंतरिक तेजोबल से गौरवान्वित किया है, उस पर तुम्हारा क्या स्थान है? आज तो शांति के स्थान पर इस सत्सार में तथर्ष-ही-तथर्ष के विगुल बजाये जा रहे हैं। और, तुमने कभी क्या यह भी सोचा है कि, जिस पुरुष नाम के सहचर पर तुम निर्भर हो, वह क्या घोर दुर्दिन के समय, घोरतर लाघना से तुम्हारी रक्षा कर सकेगा? यादव ने अतिरिक्त तुम्हारे पास कोई अस्त्र नहीं। कौन तुम्हारे बाहु सदल करेगा, हृदय की सवित को दुर्दम रखेगा? एक मृत्यु के भय को दूर करेगा? यह सब शिक्षा तो मातृ-गर्भ से ही प्राप्त हो जाती है। पर तुम्हारी दीक्षा क्या है, जिससे तुम अपनी सतान को मनुष्य बनाने में सफल होगी? नठोर साधना अथवा विलासिता-इन दो में से तुम कौन-सा पथ ग्रहण करना पसंद करोगी?

★

होनी प्रबल

सुप्रसिद्ध पुस्तिका 'काश्त काव पशिया' के लेखक एडविन जर्नल्ड द्वारा लिखित होनी
(चेस्विनी)-साम्बन्धी एक प्रामाणिक शब्द चित्र

*

अरब के दमिस्त शहर में छन दिनों एक बड़ा परानमी सुल्तान राग्य करता था। वह बहुत ही दयालु और न्यायी था। प्रजा निरतर उसके दीर्घायु हान की कल्पना करती रहती। उसके महल में दूर-दूर दशा के गुलाम उनकी सेवा के लिए नियुक्त थे।

एक दिन दोपहरी में जब वह अपने शयनागार में आराम कर रहा था, तो उसके खाम गुलाम ने आगर कीर्तिष बनायी और खडा हो गया। भय से उसका चेहरा सफेद पड गया था और अग प्रत्यक्ष कौप रहे थे। लगाता था, जैसे वाग्ने की कीर्तिष करने पर भी शय्य उसके गले में अटक कर रह जाते हैं।

सुल्तान ने देखा, तो क्षणभर आश्चर्य-अवाक् रह गया। बाद में, उसने उसे सात्वता दी और धर्म बंधाते हुए उसकी इस दशा का कारण पूछा। गुलाम बड़ी मुश्किल से हकलाते हुए बोला—“जहोपनाह! मुझे

एक धा डा भोगवा दीजिये? 'धाडा?' सुल्तान का आश्चर्य बढ़ता जा रहा था।

“जो हों, सबने तेज धोडा।” गुलाम की वाणी में भय का समावेश था।

‘किन्तु वात क्या है?’

‘गरीजपरवर!’ गुलाम ने दृढ़-दृढ़ दृष्टि में परिस्थिति समझाने की कोशिश की—“अभी बाग में मुझे मौत मिला थी। यकीन कीजिये, जहोपनाह।



निरीह

[चित्र चित्रीयन के विचारनेनसेतिशो गार्तिन के एक चित्र की प्रतिकृति]

साक्षान् मौत। उसने बताया, वह मुझे अपने साथ ले चलने के लिए आयी है।”

‘क्या यपतो ही?’ सुल्तान चौंका।

गुलाम उसके पैरों पर था गिरा। निडगिडावर बोला—“खुदा की कसम! झूठ नहीं बोलता हूँ, हुजूर। किसी प्रकार उस चक्का दवर भाग आया हूँ और अब उमम बचने के लिए इसी क्षण बगदाद भाग जाना चाहता हूँ।... दया कीजिये, खुदाबद! सबसे तेज धोडा

नवनीत

मोंगा दीजिये। जन्दी, जहोंफनाह!" स्वभावतः ही मुलतान को मोय हो आया।

मुलतान का यह सब-कुछ बड़ा अजीब-सा कुछ स्पष्ट स्वर में उगने कहा—"तूने मेरे

लगा। किन्तु इस गुलाम के ऊपर उनका विशेष रनेह था। तत्काल ही घोड़ा मोंगाया गया और गुलाम मुलतान में बिदा ले, घोड़े पर सवार हो क्षणभर में ओल्पो में ओझल हो गया।

मुलतान को अभी भी गुलाम की कहानी पर यकीन नहीं आ रहा था। उसके कथन में कितनी मझाई है, इसकी जाँच करने के लिए वह स्वयं वाम में गया। मुलाक़ात के लिए आज की तिथि निश्चित कर सचमुच ही, वही मौत पून रही थी। दीगमी भी-धाम को, घहर बगदाद में।"

शौर्य

संक्षेपतः एक शेर और एक आरमी साथ-साथ जा रहे थे। बानों-ही-बानों में दोनों में मतभेद हो गया कि, कौन अधिक बलवान है? चलते-चलते उन्हें एक क्षण मिला, जिसमें एक ओरस्थी मनुष्य शेर के जबड़े पकड़ कर उसे घोर रहा था।

मनुष्य ने बिजयोत्सास से कहा—
"देख लिया न मनुष्य का शौर्य?"

"क्या? इसका निर्माता भी तो एक मनुष्य ही है—" शेर ने तैयार बरलते हुए कहा—"प्रत्यक्ष में प्रमाण की क्या जरूरत? आओ, यहीं हमारे शौर्य की परीक्षा हो जावे!" —सलीम निदान

प्रिय गुलाम को इस तरह क्यों भयभीत कर दिया? क्यों उसके पीछे पड़ी हुई है?"

मौत है नी। वही भयानक हँसी थी वह। बोली—
"मैंने उसे भयभीत कर दिया? बेकार की बानेहैं। उसे यही देखकर मुनें तो स्वयं आश्चर्य हुआ। तुम्हें जान नहीं कि, जिस दिन उसने जन्म लिया था, उसी दिन मेरी और उसकी

★

... मरना अधिक श्रेयस्कर समझूँगा

सन् १९०७ में मूरत के काब्रम-अधिवेशन की समाप्ति पर लोकमान्य तिलक जब पूना सौंठने के लिए वहाँ से स्टेशन जाने को तैयार हुए, तो लोगों ने सलाह दी—"आप पुलिस की मदद लेकर जाइये। अधिवेशन की अवसरता से प्रोत्साहित हो, कुछ वदभाषा रास्ते में जमा है और वे निश्चय ही आपको पीट पट्टेपायेंगे।" तिलक ने सहज भाव में उत्तर दिया—"पुलिस की मदद ले पहुँचने के बजाय, मैं अपने देशवासियों के हाथ मरना अधिक श्रेयस्कर समझूँगा।"

—ए आनंद

★

आप तक क्यों जाते हैं

‘पापुलर-मेकेनिक्स’ में प्रकाशित मित्रबोटे की हिंस के एक लेख के आधार पर

★

ध्यान किसे अधिक आती है—दिन-भर दफ्तर में काम करनेवाले पति को या घर-भूखियों में लगी पत्नी को? धर्म किसे अधिक करना पड़ता है—गृह-कार्य में लगी महिला को अथवा उम्र महिला को, जो जीविबोसाईन के लिए दफ्तर में काम करती है? ये कुछ ऐसे प्रश्न हैं, जिनका उत्तर वैज्ञानिक स्तर पर ढूंढ निकालना आज अत्यंत आवश्यक है।

यद्यपि ध्यान का प्रश्न ऐसा है, जिसका अनुभव मनुष्य जनन काल में करता था या करता है, तथापि यह कुछ कम आश्चर्य की बात नहीं है कि, अभी तक हम सम्बन्ध में अनुशीलन-नार्थ नहीं के बराबर ही हुआ है। हम प्रश्न का कि, आदमी धनता क्यों है, अभी तक नहीं उत्तर दिया जाता रहा है—“परिधम करने से ध्यान आती है और परिधम ही ध्यान का कारण है।” लेकिन प्रश्न का समाधान इस उत्तर में नहीं होता। वही समाधान के लिए तो प्रश्न को समुचित रूप में रचना चाहिए कि, जाति धर्म करने से मानव-शरीर में ऐसा कौन-सा परिवर्तन होता है, जिससे कारण वह ध्यान अनुभव करता है? क्या धर्म में मनुष्य की नाडी

की गति में, श्वास प्रिया में अवस्था रक्त में मिश्रित रासायनिक द्रव्यों में कुछ परिवर्तन होते हैं? यदि हाँ, तो उन परिवर्तनों का ध्यान में क्या सम्बन्ध है?

अंतर्धम-निर्माण करनेवाली द्रुपट सम्पत्ति नामक एक मत्था न हम दिया में बहुत ही गहन अध्ययन और अनुशीलन पारम्भ किया है। ५०-वर्षीय डाक्टर ल्यूमीन ब्रूहा नामक मुम्बईवासी दार्शनिक-शारीरी इन अनुशीलन-नार्थ के अध्यक्ष हैं।

डाक्टर ब्रूहा का बयान है कि, चिन्तित के लिए भी ध्यान का वैज्ञानिक परि-नामा बनता बटित है। ऐसे, निष्प्रियता की ओर ध्यान, ध्यान का करने प्रमुख लक्षण है। ध्यान समुचित तीन विस्मो को होती है—शारीरिक, म्नायविक और मानसिक। हममें से अधिकांश लोग इनमें से किसी-न-किसी एक को ध्यान के गिनाते होते ही हैं। अभी तक म्नायविक और मानसिक ध्यान की मात्रा का कोई साधन वैज्ञानिकों के पास नहीं है; लेकिन शारीरिक ध्यान और उम्मा श्रमिपद, दोनों ही की मात्रा आज आसानी से जानी जा सकती है। अब, हमारी गहन ही जाणा की जाती है कि, हम साधन

द्वारा शारीरिक ध्रम की माप करके हम भविष्य में यकान के कारण को ही कम करने अथवा उसे पूर्णतः समाप्त कर देने में समर्थ हो सकेंगे।

डाक्टर ब्रूहा मानसिक और स्नायविक यकान से अधिक शारीरिक यकान को ही महत्व देते हैं। उनका कहना है कि, अधिकांश लोग शारीरिक यकान के ही शिकार होते हैं। जो कुस्ती हडता है

अथवा वजन उठाता है, वह व्यक्ति सबसे अधिक क्षति का शय करता है। लेकिन इसका यह अर्थ नहीं है कि केवल अधिक ध्रम करनेवाले ही थकते हैं। यकान का अनुभव तो बपतरो में फाईल उलटनवाले बर्ग घर में काम करनेवाली महिला अथवा बैंक के काउंटर पर बैठनवाले सजाची को भी होता ही है।

विज्ञान स्नायविक अथवा मानसिक यकान के शक्कर में नहीं है। सम्भव है कभी यह उनके लिए भी माप ढूँढ निकाले अथवा उनका उपचार ढूँढन की चप्टा करे, परन्तु अभी तो उसका सारा ध्यान शारीरिक यकान के कारण

और उपचार ढूँढने में ही लगा हुआ है।

शारीरिक शक्ति तथा यकान को भलीभाँति समझने के लिए किसी बैंक के हिसाब से उसकी उपमा दी जा सकती है। जब हम विधाम करते हैं तो हम शरीर के जमा-खाते में शक्ति जमा करते हैं और जब हम ध्रम करते हैं तो जमा-पूँजी में से निकाल कर शक्ति व्यय करत हैं। यदि शक्ति का धन जमा की

अपक्षा अधिक हो जाय तो जिस प्रकार बरु में अतिरिक्त रुपया निकाल लेन पर पूरा करना कठिन हो जाता है उसी प्रकार धन की गयी शक्ति की पूर्ति भी कठिन है।

वह कौन-सी स्थिति है जब व्यक्ति का धन



[प्रतिकूल पोशाक भी थकावट पैदा कर सकती है। चित्र में एक की पोशाक पहने एक स्त्री की यकान को मापा जा रहा है।]

उसके संचय से अधिक हो जान की आशंका हो सकती है? इस सम्बन्ध में डाक्टर ब्रूहा बड़-बड़भूत और कौतूहल-वर्द्धक दवा का प्रयोग कर रहे हैं। जिस दवा की सहायता से वे अपना अनुसंधान-कार्य कर रहे हैं, वह भी कुछ धन कौतूहल-प्रद नहीं है। इस धन का निमाण फ्रांस के एन इंजीनियर ने किया है जिसका नाम लामे लारु है। अभी नव विश्व में इस दवा

के बचल दो ही यंत्र हैं—एक डाक्टर यूहा की प्रयोगशाला में और दूसरा काम में। उस मशीन में एक 'प्लेटफार्म' बना है, जिस पर किसी व्यक्ति को बैठाकर विभिन्न स्थितियों में काम कराया जाता है और वह मशीन यह बताती रहती है कि, वह व्यक्ति किस स्थिति में कितनी शक्ति का क्षय कर रहा है।

अभी तक वैज्ञानिक सिर्फ बाल और संचालन के रूप में मनुष्य के कार्य को मापने रहे हैं। उदाहरणार्थ, यदि एक व्यक्ति १०० रतल का बोझ २ फुट ऊपर उठा लेता है, तो वैज्ञानिकों की माप के अनुसार उस व्यक्ति ने २०० फुट रतल काम किया। पर डाक्टर यूहा का कथन है कि, जहाँ तक मानव-शक्ति के क्षय का प्रश्न है, यह हिमाव जिलुल ही ग्रामव है, क्योंकि इसमें उसकी उम्र शक्ति के क्षय का कोई उल्लेख नहीं है, जो सामान उठाने के लिए उसे अपने अंग के उत्प्रेष-भाग के संचालन में परना पड़ा। इससे अनिश्चित बोझ ऊपर उठाने के बाद, उसकी गति रोकने में उसे जिस शक्ति का क्षय करना पड़ता है और उस बोझ को उठाने समय उसे हिलाने-डुलाने में जिस शक्ति का क्षय होता है, उनका उल्लेख भी इस हिमाव में नहीं आता।

हा यूहा अन्य वैज्ञानिकों की तरह मनुष्य के श्रम के सिर्फ उम्र सब की ही माप नहीं करते, जो उपयोगी हो; वरन् वे उस कार्य को करने में क्षय होनेवाली

सम्पूर्ण शक्ति की माप करते हैं। और, इस कार्य में उनका यंत्र बड़ा सतर्क है। उस यंत्र के 'प्लेटफार्म' पर यदि एक चूहा भी दौड़े, तो वह यह अति बर देता कि, 'प्लेटफार्म' पार करने में चूहे ने कितनी शक्ति का क्षय किया है। यदि कोई व्यक्ति उस मशीन के 'प्लेटफार्म' पर बैठे और काम न करे, तो उसकी माटी में चलने का ही अर्थ वह मशीन कर देगी।

उस मशीन का 'प्लेटफार्म' तिनोना है। उसकी तीन सतह हैं। उन तीनों सतह के बीच में त्रिकोण के कोनों पर कुछ फिन्टल (रबे) हैं। ये फिन्टल बिजली की हल्की-से-हल्की शक्ति को भी प्रोपित करने में समर्थ हैं। इन फिन्टलों का सम्बन्ध एक 'रिवाइड' में है, जिसमें पेंसिल लगी होती है और वह इस पेंसिल की सहायता से ग्राफ-वागज पर मानव की हर गति का अर्थ कर देता है।

सारे सार की इस मशीन के 'प्लेटफार्म' पर यदि किसी व्यक्ति को खड़ा कर उसमें ४ रतल का बोझ उठाने को कहा जाये, तो जो प्रतिफल वह मशीन अर्पित करेगी, उसमें ४ रतल के वही अधिक बोझ उठाने का उल्लेख जायेगा; क्योंकि वह व्यक्ति ४ रतल के बोझ के साथ ही अपनी भुजा भी तो ऊपर उठाता है। डाक्टर यूहा का कहना है कि, व्यक्ति जिनकी शक्ति भुजा-संचालन में व्यय करता है, उससे वही अधिक शक्ति का क्षय, उसे संचालन रोकने में करना पड़ता है।

अब उस मशीन के कुछ अन्य मोरलज हिस्सों में सुनि। एक आदमी छत पर रंग लगा रहा था। उसने बाद, एक औरत को बगड़े पर लोहा करने को कहा गया। मशीन से पता चला कि लोहा करने वाली वह औरत, छत में रंग लगाते-रंगते की अपेक्षा दूरी शक्ति का क्षय करती है। और, एक व्यक्ति, जो बार ड्राइवरों के बिंदु पर काम करता है, वह लोहा करनेवाली मशीन की अपेक्षा भी दूरी शक्ति का क्षय करता है।

शक्ति-क्षय के इस हिसाब को रखते में परिणामित कर दिया जाये, तो कहा जा सकता है कि, नीचे से ऊपर और ऊँचे को उठाने में एक राज ६१६ रक्त शक्ति का क्षय करता है—एक को छत के ऊपर तक उठाने और उसे नीचे करने में मनुष्य ६२५ रक्त शक्ति का क्षय करता है और एक संश्लिष्ट आगे शरीर को नीचे की ओर झुकाते में २७६ रक्त शक्ति का क्षय करता है। इस प्रकार एक काम का कुल उठाने का हिस्सा वह मशीन बता देती है। उदाहरणार्थ, नीचे के ड्राइवर से एक बड़ा काम लाने में औसत १५४ रक्त शक्ति का क्षय होता है।

डाक्टर ब्रह्म के इस प्रयोगों का फल संश्लिष्ट मूल्य हो, यह मान नहीं। उनका प्रयोग-रंग मूल्य भी है। एक राज

दीवार बना रहा था। उसके लिए ईंटें और माला जमीन पर रख दिये गये थे। उन्हें उठा-उठाकर उसे दीवार बनानी पड़ रही थी। फिर ईंट और माला कुछ ऊँचाई पर रख दिये गये ताकि उन्हें लेने के लिए उसे झुकना पड़े। मशीन से पता चला कि, ईंट और माला उठाने से उस रंग का शक्ति-क्षय पहले की अपेक्षा बहुत कम हो गया। डाक्टर ब्रह्म का कथन है कि, इस प्रयोगों से हम एक दिन उस विधि को निश्चित कर सकेंगे कि जो कार्य के बिना काम करने में मनुष्य को कम करना आवे।

वह मशीन यह भी बता देती है कि, कौन व्यक्ति किस काम को करने के योग्य है। एक बार दो व्यक्ति एक ही तरह की सुविधाओं की व्यवस्था के साथ उस 'मोटर' पर एक ही काम करने के लिए बँधे गये। फिर भी मशीन के रेखांक में अंतर था। इस बात के



[सांकेतिक चित्रण समय रक्त शक्ति द्वारा प्रकाश की ओर]

भर के कटिन धम के बाद अक्सर व्यक्ति का तापमान १०१ और कभी कभी १०२ अंश तक पहुँच जाता है।

तापमान और आर्द्रता का मनुष्य की ध्वान से बहुत गहरा सम्बन्ध है। सारी रिक्र श्रम के सम्बन्ध में यह बात पायी गयी है कि, ४० अंश फार्नहाइट से जितना तापमान बढ़ता जायेगा, उतना ही आदमी की ध्वान भी अधिक होती जायगी। डाक्टर ब्रूहा की सलाह पर एक कारखाने वालों ने अपने कारखाने का तापमान ४० अंश पर नियन्त्रित कर दिया। फल यह हुआ कि, आर्द्रतियों ने काम की शक्ति बढ़ गयी। फिर उन्हीं व्यक्तियों से ८२ अंश फार्नहाइट तापमान पर काम कराया

गया। इन दोनों परिस्थितियों में धमिकों के काम का अनुपात ११ और ८ का था।

तापमान और आर्द्रता को ध्यान में रखते हुए डाक्टर ब्रूहा की खोजों के आधार पर एक ऐसा वस्त्र भी तैयार किया गया है, जिसे पहन कर आदमी अधिक तापमान में आसानी से काम कर सकता है। उत्तम ऐसी व्यवस्था है, जिसके कारण शहर की गरमी का उस व्यक्ति पर कम-से-कम प्रभाव पड़ता है। लेकिन डाक्टर ब्रूहा का यचन है कि, ये सभी चीजें तो गौण हैं। मुख्य वस्तु तो हमारा प्राण है, जिसके माध्यम से सम्भवतः निकट भविष्य में ही हम एक दिन ध्वान को सम्पूर्णतया मिटा देने में समर्थ हो जाय।

★

दिवा-भ्रम

एक बार प्रयाग विश्वविद्यालय के दर्शन शास्त्र के प्रोफेसर श्री ए सी बनर्जी तत्कालीन वाइस चांसलर श्री अगरनाथ झा के साथ किसी सम्मेलन में भाग लेने के लिए बाहर जा रहे थे। गाड़ी छूटने में प्रायः आध घंटे की देर थी। टिकिट पहले ही आ चुका था।

बनर्जी महाशय एकाएक व्यथ हो उठे। उनका मनीवेग नहीं हो रहा था। उन्होंने अपना सूटकेस खूँट लेने के बाद अपने नीतर को थगले पर मनीवेग की खोज में भेजा। इसी समय डा० झा की दृष्टि उनके हाथ पर पड़ी। उन्होंने बनर्जी महाशय से कहा—“भाई साहब, आपके हाथ में यह क्या है? देखें तो।” अपने हाथ में ही मनी वेग देखकर प्रोफेसर साहब लज्जित हो गये और बोले—“डाक्टर साहब, मैं समझ रहा था कि, मेरे हाथ में वही पुस्तक है, जिसे मैं अभी बगले पर पढ़ रहा था।”

—श्रीवृष्ण गोस्वामी

★

पूँजीवाद की नीलमूर्ति

देश के एक प्रसिद्ध व्योमपति की निवारभारा से प्रेरित श्री 'कथिन्' द्वारा लिखित एक
गवेषणापूरा विवेचन

★

हमारा देश दस वर्षों—पन्नीस वर्षों—बाद
जंगा होगा, वह अब बल्बना के परे
की बात नहीं रह गया है। देश के सयाने
उसका स्वरूप स्पष्ट दृष्टने लगे हैं। वे उस
भविष्य की देग ही नहीं रहे हैं, बल्कि
उम भविष्य तक पहुँचने के मार्ग की
प्रशस्त भी कर रहे हैं। सरकारी पञ्चवर्षीय
योजनाएँ उमने प्रकृत पद्धत हैं। पहली
पञ्चवर्षीय योजना सफलता के संनिष्ठ है,
दूसरी योजना का धीमणश होनवाला है।

हरेक देश की धी-बुद्धि अब तक
सरकार और धीमत मिश्रण करते हैं,
दोना का अपना-अपना बलंध्य रहा है।
किन्तु कुछ समय में—जबसे धीमत
'पूँजीपति' के नाम से बदनाम किये जाने
लगे हैं—सरकार और धीमनों का गाथ
गूटने के लक्षण दिगायी देने लगे हैं। यही
नहीं, धीमनों—पूँजीपतियों—के विग्नन
तक की बातें आजकल होन लगी है।

एक ओर विप्रेक के अभाव में पूँजीपति
आज कहते हैं—'जो-कुछ उत्पादन करना
है, हमें करने दो। यह सोन सरकार का

नहीं, हमारा है। हम-जो कुछ कर चुके हैं या
करेंगे, उसने लिए हम आश्यासन दो कि,
वह हमारा ही रहेगा—सरकार उसे नहीं
हथियायेगी। हमारे व्ययसाधो की व्ययसा
में हस्तक्षेप करने के बानन घनाने के
इरादों की रोकें। हमें आदयासन दो,
हमारे काम में हमारे लाभ का आवर्षण
इतना बना रहेगा कि, हम उसने पीछे पड़े
रहे। लाभ के अभाव में बही हमें आलस्य
न घेर ले, जिसके फलस्वरूप देश में
उत्पादन की बमी हो जाये।"

दूसरी ओर, जो इस गुमान में हैं कि,
शासन उनके मत पर अवलम्बित है,
कहते हैं—"उत्पादन कुछेक व्यक्तियों पर
छोड़ कर उन्हें और धीमत करने में धन-
सत्ता उन्हीं कुछेक व्यक्तियों में सीमित हो
जायेगी। वे स्वार्थ-आधन में ही रत रहेंगे—
देशोपकार में नहीं। उद्योग-व्ययसाधो की
व्यक्ति-विशेष बला सकते हैं, तो उन्हीं
व्यक्तियों को नीवर रणकर सरकार काम
चलाकर, उनका मुनाफा अपने हाथ में
करके, उगे जन-हित के कामों में लगा

सबेगी। सरकारी कामों में मुनाफे की भावना न होने से उससे धर्मिक और उपाधोक्तियों को अधिक लाभ होगा। निजी रूप से कामों में कमी होने से समाज में धनवानों व धनहीनों की विषमता दूर होगी; इत्यादि।”

इन दो विपरीत भावनाओं का उदय और विस्तार क्यों हुआ? अवश्य ही उद्योग व व्यवसाय चलानेवाले अनेक व्यक्तिगत रूप में ऐसे अयोग्य आ गये, जिनसे उन सब पर बुरा प्रभाव पाने लगा—उनसे नफ़ास की जाने लगी। उन्हें सुधारण की अपेक्षा उन्हें नष्ट करने की भावना का विस्तार होने लगा। दूसरी ओर, जिनके पास बहुत कम पैसों हैं, वे दासताधिनार में आकर, इस ईर्ष्या से अभिभूत हो गये कि, हम दासताधिनारी तो दाने ‘करीब’ और ये हमारी दवा पर जीवित इतने ‘धनी’ धर्मिकों के आचरण और अधिकांशों के ईर्ष्यापूरित मनोभावों के कारण ही वर्तमान काल का यह सार्वभौम और श्रीमंतों का समर्थ उपाधोक्त हुआ है। यह समर्थ देश के लिए बहुत अहितकर है।

सार्वभौम में भी और श्रीमंतों में भी ऐसे सदाने हैं, जो इस समर्थ से होनेवाले अहित को भलीभाँति समझते हैं और उससे लिए ऐसे किसी प्रकार के कदम उठाये जाने के बीच में आते हैं, मगर वे नहीं अजिष्ट न हो जाये। किन्तु दोनों ओर ही ऐसे व्यक्तिधों की कमी नहीं है, जो हित को अवहेलना कर अपनी-अपनी बात पर अड़े हैं। फिर भी

संतोष की बात है कि, देश के भाग्य की—भविष्य की—बागडोर ऐसे महान् पुरुषों के हाथ में है, जो सद्भावनाओं से गूरित हैं, जिनका एतद्भाव उद्देश्य है—देशहित और जो ईर्ष्या-द्वेष से जरा प्रभावित नहीं है।

इस पर श्रीमंतों में भी एसे हैं, जो समय की गति को गह्रचान सम्ये हैं, जिनमें धनो-पार्जन ही नहीं, देशहित की भावना भी है। अपने उद्योग में पत्रस्वरूप के अवश्य ही सुख-सुविधाओं से पूर्ण निजी जीवन खिताला चाहते हैं, पर साथ ही अपने उद्योग का अधिवास कर, परीक्षा व अपरीक्षा रूप में देशहित में समर्पण करने में उत्तरोत्तर प्रयत्नशील हैं। ऐसे व्यक्ति ही देश की सुख-सामृद्धि की वृद्धि करने और देश में ‘पूँजीवाद’ की रक्षा करेंगे।

एक जमाना था, जब सार्वभौम में वहाँ का शेठ या जमींदार अपने घोड़े या रथ पर सवार होकर चारों ओर घिरा हुआ निरालता, तो उसके आधित-अना-धित मूल पर उसे तिर नवाते और समझते कि, पूर्वजन्म का भाग्यशाली है—अपने सार्वभौमों का पक्ष भोग रहा है। अब कोई धनिक यदि अच्छी व बड़ी माटर में बँट कर, उस की प्रतीक्षा में राखे ‘पूँ’ के आगे से, गुजरता है, तो जा सार्वभौम छूटते हैं, उनका सहज ही अनुमान दिया जा सकता है। इस युग की यह गवने बड़ी मानसिक शांति मानो जानो चाहिए। इसने जनता के बहुत बड़े भाग में मनो-भावों में जातिवारी परिवर्तन कर दिया है।

ऐसा क्यों हुआ ? पिछले महायुद्ध-काल और उसके तत्काल बाद जिस गति से और जिन प्रकार धन कुछ लोगों के पास आया और उस गति-विधि का बुरा ज़मर उपभोक्ताओं—जनसमुदाय—पर पड़ा जिन धनवान को—पूँजीपति को—बदनाम कर दिया । उस बदलव को घोटने के लिए—मिटाने के लिए—स्वयं पूँजीपति का अपने सत्तार्यों के साधुन-पानी का व्यवहार करना होगा ।

देश में उत्पादन की निम्नता आवश्यकता है । उद्योगपति उसके लिए सबसे अधिक मत्तम हैं । देश को उनकी ज़रूरत धनी रहनी—उनका विनाश देश के हित का विनाश होगा । हाँ, अब यह जमाना नहीं रहा कि, उद्योगपतियों के मन के मुताबिक ही सब बातें हों । उन्हें देश की मना के मुताबिक चलना होगा—इसी में उनका हित है और देश का भी ।

हमारी पंचवर्षीय योजना गड़ी जा रही है । उद्योगपतियों को उस योजना में कितना हाथ घँटाना है, यह तय हो रहा है । कौन-कौन-से काम उन्हें करने होंगे, इनको उपरान्त घोषणा ही सम्मुख आयेगी । देश के प्रति—उनके अपने-आपके प्रति भी—उद्योगपतियों का एक वर्तव्य है । वह है, देश की सम्पत्ति की वृद्धि के लिए जो काम उन्हें भीषण जायें, उनमें सलग्न हो जाना । उन्हें सफलतापूर्वक कर दिखाना ही उद्योगपतियों को—धीमनों को—ताबित रख सकेगा ।

पंचवर्षीय योजना के दो मुख्य विचार विधे जा सकते हैं । एक निर्माण के कार्य, जो जनता को अपना लाभ कुछ समय के बाद पहुँचायेंगे—जनता के सुख-सुविधाओं, ज्ञान, स्वास्थ्य आदि में वृद्धि करेगा । ये सब काम सरकारी करेगी । इन कामों में सरकार जो खर्च करेगी, वह अधिराज्य आयेगा—देशवासियों के हाथ में ही महानत-मजदूरी वस्तुओं के वय के मूल्य के रूप में । उन रुपये को पाकर लोग अपनी निजी ज़रूरत को चीजों की खोज में निकलेगे । लोगों को जितनी अब ज़रूरत है, उससे ज्यादा कपड़े, सेल, शक्कर, इमारती सामान इत्यादि वस्तुओं की ज़रूरत पड़ेगी । इन चीजों का उत्पादन बढ़ाकर देशवासियों के माँग को पूरा करना पंचवर्षीय योजना का दूसरा विभाग माना जा सकता है और उत्पादक सम्पादन उद्योगपतियों के जिम्मे होगा । उनका वर्तव्य होगा कि, वे अपनी क्षमता को उमड़े लगा कर देश को जासाधारण की आवश्यकताओं में भरा-भूर कर दें । यदि इन काम में वे सफल नहीं हुए, तो उसका दोष उन पर आयेगा और उनकी यह असफलता उनके विनाश का कारण हो जाये, तो अचरज नहीं ।

उद्योगपतियों की वर्तव्यताक्ति : अभाव में यदि जनसाधारण की आवश्यक वस्तुओं का अभाव हुआ और उ वस्तुओं के भाव बढ़े—जैसा कि, महायुद्धकाल में हुआ था—तो यह स्थिति

उद्योगपतियों को बहुत भारी पड़ेगी। उन उद्योगपतियों का जो विरोध दिखायी ता है, उसका मूलभूत कारण युद्धकालीन फासोरी ही है। यदि वैसा ही, ईश्वर करे, फिर कोई मोका आ गया, तो वह भी तीव्र विरोध उत्पन्न करेगा, उसे कोई ही सँभाल सकेगा। इस बात को हृदयगम रने छोटे बड़े सभी उद्योगपतियों को लदी से जल्दी अपना कर्तव्य निर्धारित कर लेना चाहिए।

हर्ष की बात है कि, उद्योगपति अपना कर्तव्य निभा रहे हैं। सन् १९५० की लना में देश में औद्योगिक उत्पादन इस र्द बरीय ५० प्रतिशत घट गया है। ह उद्योगपतियों की कर्तृत्वशक्ति के ण ही तो हो पाया है। अवश्य ही तमान सरकार भी उत्पादकों को सभ रह की सहायता देने में, उनकी कठिनाइयों ने दूर करने में, तत्पर है। जिस रकार का अपना अस्तित्व जनता के त्तर पर—उसकी आवश्यकताओं की अधिक-

से-अधिक पूर्ति पर—निर्भर है, वह क्यों नहीं उद्योगों को प्रोत्साहित करेगी? आज यह भय मन में रखना नि, हम उत्पादकों— उद्योगपतियों—को जीने दिया जायेगा या नहीं, निर्मूल है। सरकार को, देश को, उनकी अघरत है और वह जरूरत उन्हें जिदा रखेगी। हाँ, भ्रमर के अपन कर्तव्य से व्युत्त हुए, तो अवश्य ही उन्हें दण्ड होना पड़ेगा। अन्यथा कोई ईर्ष्या-द्वेष की भावना उनका विनाश नहीं कर सकेगी।

आगे आनेवाले पाँच-दस वर्ष विवेकपूर्ण सरकार के निर्देश में उद्योगपतियों के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण है। इस बदलती दुनिया में यही पाँच-दस वर्ष निर्णय कर देंगे कि, उनका क्या भविष्य होगा। ईश्वर करे, सरकार का विवेक घना रहे और वह अवाञ्छनीय भावनाओं से प्रेरित व्यक्तियों के दवाव में नहीं आ जाये। इधर उद्योगपतियों की कर्तृत्वशक्ति भी बनी रहे और वे स्वार्थ की आकाशा में अपने कर्तव्य को न भूल बैठे।

★

दो बादल

शरत् काल के आकाश में दो बादल कहीं से धुमके-धामते एग-दूगरे के पास आ निकले।

जल से बरे हुए बादल ने जल-शून्य बादल से कहा—“ससार में तुम्हारा अस्तित्व ही व्यर्थ है, क्योंकि तुम किसी के काम नहीं आ सकते।”

बिन्दु जलहीन बादल ने पृथ्वी पर लहराते हुए खेतों की ओर इशारा करके कहा—“मेरा अस्तित्व इन फले हुए खेतों में देखो।”

—तेजनाशायन बाक

★

सोचो ले लाल हिले हूँ

“सोचो के कान होने हैं—” जब तक यह एक मुहावरा ही था, किन्तु ध्यान विज्ञान ने एक समावारी सत्य में परिवर्तित कर दिया है। श्री ओम्प्रकाश ने इसी सम्भावना की कहानी यही प्रस्तुत की है।

✱

वैज्ञानिक बंकिमों के इस अद्भुत और आधुनिक समार में यह बात अक्षरशः सत्य है कि, सोचो के कान होते हैं। आप अपने कमरे में बैठे बिम्बी ने बाने पर रहे हैं, पर आपको ज्ञात नहीं कि, आपसे पर के सम्मुख, सड़क के उम पार बिम्बी कमरे में बैठे हुआ आधुनिक विद्युत्-वर्ण-उपकरणों में सुमज्जित एक व्यक्ति आपको दोनों को न केवल पूरी तरह सुन रहा है, बल्कि ग्रामोफोन के रिकार्ड की भौति उसे ‘टैप-रिकार्डर’ पर गदगद के लिए अंकित भी कर रहा है, जिसे यह जब चाहें सुन सकता है।

विश्वास मानिये, यही नहीं—पनपोर तिमिर में अथवा पूर्ण रूप से दह कमरे में प्रेमालाप करती हुई सुगल-जोड़ी का चित्र भी बिना उसके जाने गैबडो पीट दूर से लिया जा सकता है। उसकी बातों को सुना जा सकता है और उन्हें रिकार्ड किया जा सकता है। यदि बिम्बी के घर में टेलिफोन है, तो इन नवीन आवि-

ष्कारों के कारण उसकी खबर नहीं। उन व्यक्तिगत जीवन मानो समाप्त हो गया। हर क्षण और हर घड़ी के उन्मिया-बलाप, उसकी यातनांत, उन उठना-बैठना-लेटना—सभी कुछ मीलों बैठे विद्युत्-वर्ण-विशेषज्ञ अपने यंत्रों अंकित कर सकते हैं और उन्हें मित्र की फिल्म की भौति जय और जहाँ के दिखा और सुना सकता है। भजे की तो यह है कि, इन यंत्रों में कोई भी दियासलाई के बक्का में बड़ा नहीं है।

अधिन दिन नहीं हुए, जब मुद्रा अमरीकी गुप्तचर बरनार्ड स्पिनडल अलगामा नगर की एक धातु-निर्माण कंपनी के प्रधान मि. ह्वाइट के रास्ते में पूरी जानकारी प्राप्त करने के कार्य नियुक्त किया गया था। मि. ह्वा की पत्नी को अपने पति के चरित्र पर हो गया था। इसी गदगद को पुष्टि लिए आवश्यक प्रमाणों को एकत्र करने भार स्पिनडल पर था। ह्वाइट :

बाहर एक बड़ी कोठी में रहता था। स्पिनडल ने सबसे पहला कार्य यह था कि, उसकी बातचीत सुनने के लिए के टेलिफोन के तार से गुप्त रूप में 'वायर टप' का सम्बन्ध जोड़ दिया। पश्चात् वह तार विभाग के एक शरी का रूप धारण पर ह्वाइट नवान के सामनवाले तार के सम्म आ चडा। ह्वाइट के टेलिफोन से तार जुड़ हुए थे, उनका र स्पिनडल ने नोट किया फिर उतरकर उसके घर में मील दूर चला आया। पर तार ने एक लम्ब के में से केवल उही तारा जो ह्वाइट ने टेलिफोन डे हुए थे-उसने दो अन्य का सम्बन्ध जोडा और दो तारो को भूगर्भ के निकट के एक मकान आया, जिसे उसने कुछ के लिए किराये पर था। इन तारो मे उसने एक 'टेप रीडर,' 'जबो रेडियो-सप्राह्व' और आवश्यक यन्त्रो का सम्बन्ध बना। अब इस मकान में बैठा स्पिनडल कम्पनी के प्रधान मि ह्वाइट के रे में होनेवाली प्रत्येक बातचीत को आराम के साथ सुन सकता था। यद्यपि दिवस ही उसने टेलिफोन द्वारा बातचीत को बीच में पकड़ कर

यह जान लिया कि, ह्वाइट ने अपनी भवसी मेरी एलेन को अपने कार्यालय में दूसर दिन सायंकाल में बुलाया है।

स्पिनडल तत्काल ह्वाइट के कार्यालय का निरीक्षण करने पहुँचा। यह एक अच्छा-खासा किला-सा था। विद्युत् यन्त्रो द्वारा किसी भी सकट भी सूचना मि ह्वाइट को अपनी कुर्सी पर बैठ ही-बैठे मिल जाती थी। इसमें तीन द्वार थे,



विपुल विज्ञान का विश्वकर्मा एडिसन [चित्र भी इन ओके]

जिनमें रात को अंदर से ताला लगा दिया जाता था। स्पिनडल को ह्वाइट की पत्नी से यह भी ज्ञात हुआ कि, व्यवसाय की गुप्त बातें कोई और न सुन सके इसका बहाना बनाकर, हजारों डॉलर के व्यय से उसने अपन कार्यालय स्थित कमरे को 'माइक्रोफोन फ्रून्' बना लिया था, ताकि अगर कोई व्यक्ति उसके कार्यालय में 'माइक्रोफोन लगाकर कभी किसी प्रकारकी जानकारी प्राप्त करना चाहे तो उसे सफलता न मिल सके।

स्पिनडल ने ह्वाइट की पत्नी से एक ऐसा सेट खरीदवाया, जिसमें रेडियो, टेलिविजन और फोनोग्राफ, सभी मौजूद थे। इस सेट का मूल्य लगभग ३,२५० रु था। स्पिनडल ने दियासलाई के बक्स जितना बडा अपना 'जबो रेडियो प्रपल' यन्त्र इस सेट के रेडियो के 'लाउड-स्पीकर' में छिपा कर लगा दिया। अब जब कभी

भी यह मेट चालू किया जाता, तो उस कमरे की-पहों पर यह रखा रहता-सारी बातें इस 'रेडियो-प्रेषक यंत्र' द्वारा दूर घंटे व्यक्ति का ज्ञान हो जाती।

हवाईट की पत्नी ने इस नवीन मेट को अपने पति को उपहार-स्वरूप दे दिया। दूसरे ही दिन वह इस मेट को अपने कार्यालय में ले जाया। तीन सप्ताह तक स्पिनडल, हवाईट और उसकी प्रयत्नी की हज़ारों की प्रणय-वार्ता का 'टप-रिस्पांडर' पर भरित करता रहा।

हवाईट की पत्नी इस 'टप-रिस्पांडर' को घर पर बड़ी आदानी से अपने पति से तंगन था मन्दी और हवाईट को उसके हिस्से का पर्याप्त धन भी देना पड़ा।

उसी गुप्तचर की ओरियो में एक दूसरा बेश मिला। उसने मुक्किल्ल की पत्नी एक बंद कमरे में अपने तयामकित चचेरे भाई की दामन कर रही थी। उसका मुक्किल्ल यह जानना चाहता था कि, उसकी पत्नी अपने उस भाई से क्या बातें कर रही हैं? स्पिनडल ने पाम एण ऐंग 'माइक्रोफोन' था, जो प्रतियुक्ति की विधि में किसी बंद कमरे की बातों को भी मग्न कर लेता था। उसने दीवार में एक कील गाँधी और अपना यह 'माइक्रोफोन' टँग दिया। बंद कमरे के अंदर उनके मुक्किल्ल की पत्नी और उसके भाई की बातचीत दीवार के दूसरी कील तक आती, फिर उस 'माइक्रोफोन' तक-स्पिनडल का काम मिला किनी

नयनीत

विशेष अमुकिया के पूरा हो गया।

मिडवेस्टर्न टाउन में स्पिनडल का जो तीसरा मुक्किल्ल मिला, वह एक लोहे का व्यापारी था। इस लोहे के व्यापारी मि कीन की धारणा थी कि, उसका साझेदार उसके साथ वैदमानो का रहा है। चागीस हज़ार डालर का मात्र दूरान में गायब था, किन्तु पर्याप्त संशे होते हुए भी कीन के पास इसका कोई प्रमाण नहीं था कि, यह उसके साझेदार की ही चालवाही है।

स्पिनडल ने मि कीन के साझेदार के घर के 'स्विचबोर्ड' पर एक 'वायर-टैप' लगा दिया और उसका सम्बन्ध उसके घर के चार व्याक की दूर पर के एक तानी घर के 'स्विचबोर्ड' से जोड़ दिया। अब खाली घर में बँटा हुआ वह साझेदार की बातों को सुनता रहा।

प्रथम दिवस ही उसे ज्ञान हो गया कि साझेदार लोहे की दूरान में उठाये हुए चालीस हजार के मात्र की जहाज द्वार दूसरे शहर के एक ग़ादाम में बेचता रह है। वहाँ वह कुछ मात्र अपना रता व बेच रहा है और शेष दम दृष्टि में मग्न कर रहा है कि, कुछ समय परचान् मात्र मात्र कर अपना स्वयं व्यापार कर सके

स्पिनडल की अब उस गोदाम व पता लगाना था। उसने एक दिन अपने मुक्किल्ल के कारखाने के सम्मुख गड पर एक टुकड़े के जाकर मग्न कर दिया टुक पर 'बिट्स साउड-मार्किंग' किया हुआ

। अब यह कुछ बच लेकर उनके
रीक्षण करने का नृत्य करने लगा।
। पहले ही आत हो चुका था कि,
न का साक्षेदार नित्य ही आतमाल
की पीने के बरताने बारताने से बाहर
जल जाता है। बारताने से कुछ
: आगे उसी ओर उसे एक मोटर राड़ी
लगी है। मोटर के चालन से वह कुछ
ते करते पुन बारताने लौट आता है।

स्मिथल ने अपनी दूध मोटर अपने
स्थान के ठीक सामने, राटन की दूसरी
र लगी थी। जैसे ही साक्षेदार
ट में बैठे चालन से बाते करने लगा,
। ही स्मिथल ने अपना एक विशेष
। 'पैराबोलिक माइक्रोफोन' चालू कर
या। इस 'माइक्रोफोन' के बह गुण होता
कि, बिना विद्युत् और तारों के सम्मन्ध
। बेतार की तरह दूर ही रहते बाते दाते
लबुल साफ-साफ सुनायी पड़ती है।
। स्मिथल ने इस 'पैराबोलिक माइक्रोफोन'
साथ एक 'टैप-रिजार्डर' का भी सम्मन्ध
। दिया था।

साक्षेदार ने अपनी जेब से बागज का
। गुल्लक निकाला और मोटर-चालन
बाते करने लगा। 'पैराबोलिक माइक्रो-
फोन' के कारण स्मिथल को सारी बातें
। पट गुतायी पट रही थी, मानों वे तीनों
। ही कमरे में बैठे बातें कर रहे हों।
। ५ मिनट की इसकी बातचीत से स्मिथल
। मोहम और उन आहनों का पता
ल गया, जिनके हाथ यह खोरी का

माल बेचा गया था। साथ ही 'टैप-
रिजार्डर' पर सब अक्षित भी हो गया था।
। स्मिथल ने सारे प्रमाण अपने मुरजिल
को दे दिये। साक्षेदार को ४० हजार
। डालर की रकम लौटानी पड़ी, ताक़ा रकम
करना पड़ा और स्मिथल को पीत-
। १२ हजार रुपये-भी उगे ही देनी पड़ी।

उन नवीन यन्त्रों में छोटी-सी दूध
। बैटरी से चलनेवाला दियागार्ड के
आकार का 'रेडियो-ग्रेप' , गैर-टाटिकोन
के तारों के जाल में से किसी भी टैकफोन
के तारों को खोज निकालनेवाला 'विद्युत्-
। अन्वेषक', स्वचालित 'टैप-रिजार्डर',
'जातरिय फोटो यन्त्र', 'जादन मेरियर
रेडियो-ग्रेप' और 'पैराबोलिक माइक्रो-
। फोन' आदि मुख्य हैं।

'रेडियो ग्रेप' वही भी लगा दिया
। जाये, वो बड़ ज़िना विद्युत् के ही उस स्थान
के सभी तारेको को भेजता रहेगा। एक
। करोड़पति ने इसी 'रेडियो-ग्रेप' को
अपनी प्रेमिका के पलक से लगाकर बातें
कर लिया था कि, वह जितनी चरित्र-
। हीन है। इस 'रेडियो-ग्रेप' को किसी
स्थान पर लगाना उतना ही सगुन है,
। जितना रिजली का बरत फिट परना।

'विद्युत्-अन्वेषक' तारों-द्वारा सम्मन्धित
। ३६ छोटी छोटी 'नियत गीत' की
वस्तियों का एक समूह होता है। प्रत्येक
। वस्ती के तारों से सम्मन्धित रहती
है। ३६ वस्तियों से सम्मन्धित तारों के
। ७२ बिरे एक 'आतकत म मुरजित

होते हैं। इस 'शाम-बक्स' को जब टेलिफोन में सम्बन्धित किया जाता है, तो टेलिफोन का इस्तेमाल किये जाने पर उन ३६ बत्तियों में एक बत्ती जल उठती है। उस पर एक अंक अंकित हो जाता है। इस अंक द्वारा इस प्रकार, मोलों दूर पर लगे टेलिफोन का पता बड़ी आसानी से लगाया जा सकता है।

स्वचालित 'टैप-रिवाइंडर' भी बड़ा विचित्र यंत्र है। इस यंत्र के साथ 'ध्वनि-सक्रिय एजेंट' होता है। इस 'ध्वनि-सक्रिय एजेंट' को मिजली के बल्ब, होल्डर या बही भी लगा दिया जा सकता है। यह इतना छोटा होता है कि, जल्दी दिखायी तक नहीं देता। मन्त्रिम इतना है कि, मात्र-ध्वनि से सम्पाद्यमान हो उठता है। जैसे ही 'ध्वनि-सक्रिय एजेंट' सम्पाद्यमान होता है, बैसे ही मोलों दूर रखा हुआ 'टैप-रिवाइंडर' उससे द्वारा भेजे हुए संदेशों को 'टैप' पर अंकित करना आरम्भ कर देता है, जिन्हें एक बटन दबाकर रेडियों की तरह सुना जा सकता है। कुछ 'ध्वनि-सक्रिय एजेंट' तो इतने तेज होते हैं कि, वे विद्युत्-नारों द्वारा संदेश भी भेजते हैं।

जहाँ पर इन एजेंटों का लगाना सम्भव नहीं होता, वहाँ पर टेलिविजन के जो

'एनेटा' तार इमारतों के बाहर निकले होते हैं, उनमें एक विद्युत्-बल्ब लगा दिया जाता है। यह बल्ब जब कमरे में लगे 'माइक्रोफोन' में कोई शक्ति-विद्युत् प्राप्त करता है, तो उस समय अदृश्य 'इन्फ्रा-रेड' किरणें फैलता है। जब कोई व्यक्ति कमरे में यातचीत करता है, तो बिजली के इस बल्ब से निकली तरंगें सड़क की दूसरी ओर किसी अन्य इमारत पर लगे 'विद्युत्-नेत्र' से जाकर टकराती हैं। यह 'विद्युत्-नेत्र' अनेक मील दूर रखे 'टैप-रिवाइंडर' को संदेश भेजता है। इस 'विद्युत्-नेत्र' का वैज्ञानिक नाम 'फोटो-एलास्टिक सेल' है, जो ध्वनि-तरंगों को विद्युत्-तरंगों और विद्युत्-तरंगों को ध्वनि-तरंगों में बदल देता है।

इस प्रकार के कार्यों के लिए 'इन्फ्रा-रेड' किरणें बड़े काम की हैं। एक विशेष प्रकार के 'इन्फ्रा-रेड बल्ब' और 'इन्फ्रा-रेड फोटोग्राफिक फिल्मों' के द्वारा गहन अंधकार में भी वही आसानी से चित्र लिये जा सकते हैं। 'इन्फ्रा-रेड बल्ब' चित्र लेते समय उतनी ही चमक पैदा करता है, जितनी चमक जलती हुई एक मिशरेंट के अगले सिरे से निकलती है। इसके लिए एक विशेष फोटो-यंत्र होता है, जिसे 'इन्फ्रा-फोटो-यंत्र' कहते हैं।

★

उस व्यक्ति में अधिक और वीर इस सत्ता में अभिमानों होगा, जिसने अपनी वर्षगांठ पर अपनी माँ की वधाई का तार भेजा था!

—'तरंगवली' से

✱



डालडा
मेरे लिये
अच्छा है

हर एक के लिये अच्छा है...

* क्योंकि यह शुद्ध है
* क्योंकि यह पौष्टिक है



डा ल डा व न स्य ति

३ पौंड, १ पौंड, २ पौंड, ४ पौंड और १० पौंड के डिब्बों में
आसत में उपलब्ध मिलता है



ऐसी सुगन्ध जिससे आपका दिल भूम उठेगा

मोहिया हो जा 'जय' साबुन आपके स्नातन को सुखमय बना देता है, इसकी प्यारी
मीठी सुगन्ध से धातकी सपूर्ण सुसज्जा प्राप्त होती है। 'जय' के गजमन-जैल
सुनावन पैरा, शक्ती प्यारी मीठी सुगन्ध और इसकी अधिक दिन धातन की दूरी के ॥
सुखमय सुगन्ध का मिलनोत्साह एक रसता साबुन सिद्ध कर दिया है।

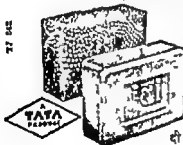
जय

, नहाने का साबुन

दादा का उत्पाद

भारतीय सूती से भारतीयों की धारणा के
धर्मा भारत में ही बनाया गया है।

दी दादा ऑइस मिस कंपनी लिमिटेड



पतझड़ के दिनों में आपने बागों से गुजरते हुए देखा होगा कि, हर तरफ वीरानी-ही-वीरानी नजर आती हैं—न पेड़ों पर हरे-भरे पत्ते दिखायी देते हैं, न चौधों पर रंग-बिरंगे फूल नजर आते हैं। बहार का मौसम आने तक बागों का यही हाल रहता है।

सैयद जमालु-द्दीन अफगानी

के दुनिया में आने के पहले, बिल्कुल यही पतझड़ की ही हालत पूरे मध्य-पूर्व की हो रही थी। यही वजह थी कि, दुस्मन-हुकूमते पूरे दक्षिणी-एशिया के भू-भाग में खुलकर मनमानी कर रही थी।

अफगानिस्तान, जो सैयद साहब का बतन था, उस समय अमीर दोस्तमोहम्मद के हाथ में था, लेकिन सल्तनत पर अंग्रेजी साया फैलता जा रहा था। हिन्दुस्तान में मुगलिया सल्तनत का खातमा हो चुका था। 'ईस्ट-इंडिया-कम्पनी' बड़ी तेजी से मुल्क पर कब्जा करती चली जा रही थी। मिस्र में भी अंग्रेजों का जोर बढ़ता जा रहा था। ईरान के हिस्से बँटने की तैयारियाँ हो रही थी। टर्की की हालत भी खराब थी।

ऐसे हालात में सैयद जमालुद्दीन-



सैयद जमालुद्दीन

इस्लामी जगत का विस्फोटक व्यक्तित्व

मित्रा अदीब बी. ए.
सम्पादक, 'अदवे-सतीफ'

बल-हुसैनी-अल - अफगानी १८३९ में अफगानिस्तान के बोनर नामक इलाके में पैदा हुए। उनके पिता सैयद सफ़दर हुसैनी बहुत बड़े आलिम और वरमूल (पहुँचवाले) आदमी थे। उन्होंने सैयद साहब की तालीम के लिए ८ साल की उम्र से ही इतजाम कर दिया। उन दिनों अफगा-

निस्तान में सैयद फकीर बादशाह से बड़ा कोई विद्वान न था। अतः उनके पिता ने सैयद फकीर बादशाह पर ही उनका शिक्षण-भार सौंप दिया। सैयद साहब की बहानत (मेधा-शक्ति) का अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि, दस साल की उम्र होने तक वे तबारीख (इतिहास), फलसफा (दर्शन), रियाजी (भौतिक विज्ञान), तिब्ब (चिकित्सा-शास्त्र), हिंदसा (गणित) और गहब (व्याकरण) में माहिर (पारंगत) हो चुके थे। यह इस्म आज तो तीस साल की उम्र तक में भी नहीं सीखे जा सकते।

अठारह साल की उम्र तक सैयद साहब नरमुल् में अपन वालिद (पिता) के साथ रहे। उनके देहांत के बाद सैयद साहब अपनी तालीम (शिक्षा)

जारी रखने के लिए हिन्दुस्तान आये। यहाँ उन्होंने पारचाय साइस (विज्ञान) और रियाजी (भौतिक विज्ञान) की तालीम पूरी की। एक साल यहाँ गुजारन के बाद वे हज करने के लिए मक्का चले गये और वहाँ से इराक तथा फारस होने हुए वापस अफगानिस्तान लौटे। इस यात्रा के अन्त में उन्हें इन मुल्कों का हालान का काफी तजदीब से देखने का मौका मिला।

उनके अफगानिस्तान लौटने पर अमीर दोस्तमोहम्मद खा ने उन्हें अपना दरबारी बनाया और साथ ही उन्हें गहजादे मोहम्मद आजम की तालीम व तर्जियन (शिक्षा-दीक्षा) की जिम्मेदारों सौंपी। १८६४ में अमीर दोस्तमोहम्मद के मरने पर उसकी बत्तीबत के मुनाबिक उसने छोटे लड़के मीरजली ने हुक्मन की दागधोर अपने हाथ में ले ली। छोटे भाई का दादशाह होना दोस्तमोहम्मद के बड़े लड़कों-मोहम्मद आजम, अस्लम और अमीन-को बहुत बुरा लगा और तत्काल के लिए भाइयों में सपर्ष की तैयारियाँ होने लगी। पर सैयद साहब के ही कारण सभी बड़े भाई, छोटे भाई के हक में तत्काल से अलग हो गये। अफगानिस्तान में यह सैयद साहब का पहला कारनामा था।

अमीर मीरजली ने भी अपने बाप की तरह सैयद साहब को अपना मुगीर (परामर्शदाता) और मुसाहिर (दरबारी) बनाया। और, सैयद साहब मुल्क की तरफ़ी में लगे गये। चोटी ही मुह्त

में उन्होंने अपगानिस्तानियों में जिदगी की एक नयी लहर दौड़ा दी।

इसी बीच उन्होंने एक अस्खार निमाला, जिसका नाम 'शमसुन्नहार' था। सैयद साहब अफगानिस्तान में पहले आदमी थे, जिन्होंने लोगों में अस्खार पढ़ने का शौक पैदा किया। अपने कार्यकाल में सैयद साहब ने शासन में भी काफी सुधार किये। उन्होंने न केवल गना की ओर ध्यान दिया, बल्कि नयी पाठशालाएँ खुलवायी तथा अस्पताल और डाकखाने कायम कराये।

अमीर का बजौर मोहम्मद रफीर सैयद साहब के कारनामों को और उनके बख़्त प्रभाव को देख कर डरा कि, किसी रोज सैयद साहब अफगानिस्तान के बर्ता बर्ता बन जायेंगे। खुनाचे, सैयद साहब के अस्तर को कम करने के लिए उसने अमीर को उसके भाइयों के खिलाफ भड़काना शुरू किया। आपस में, उनमें भाइयों से जग करने का पैंगला अमीर से करा लिया।

सैयद साहब को इस गृह-युद्ध पर बहुत दुःख हुआ। उन्होंने अपनी ओर से मामले को सुलझाने की बड़ी कोशिशें की, पर इसमें वे बिल्कुल असफल रहे। तब उन्होंने अमीर के भाइयों को खबर कर दी कि, उनकी जिदगी खतरे में है।

भाइयों में जग शुरू होने के पहले ही अपना मुन् छोड़कर वे हिन्दुस्तान चले आये। उधर भाइयों की लड़ाई के जर्नीजे में मोहम्मद अमीन मरत हो गया और मोहम्मद आजम हार कर हिन्दुस्तान

की तरफ चला आया। शेरअली का बड़ा लड़का भी मारा गया, जिसके सदर्मे से उसकी बमर टूट गयी। मौका देखकर मोहम्मद आजम ने फिर हमला किया, जिसमें शेरअली हार कर फगार भाग गया। मोहम्मद आजम ने काबुल पहुँचते ही पुराने वजीर मोहम्मद रफीक को फौसी पर लटकवा दिया और सैयद साहब को वापस बुलाकर अपना वजीर बनाया।

सैयद साहब डेढ़ साल तक मोहम्मद आजम के वजीर रहे। इस बीच शेरअली ने अंग्रेजों से साठ-गांठ की और उनकी मदद से काबुल पर हमला कर दिया। मोहम्मद आजम को हारकर मशहद की तरफ भागना पड़ा, जहाँ वह कुछ महीने बाद मर गया और शेरअली दुबारा जमीर बनकर काबुल में दाखिल हुआ। शेरअली के कोष से बचने के लिए सैयद साहब १८६६ में पुनः अपना मुल्क छोड़कर हिन्दुस्तान के रास्ते से मक्का के लिए रवाना हो गये।

हिन्दुस्तान आने पर अंग्रेजी हुकूमत ने उनकी बड़ी इज्जत की, पर वह सैयद साहब से बड़ी सत्कार भी रही। और, कुल एक महीने बाद ही, उन्हें एक सरकारी जहाज में सवार कर स्वेज पहुँचवा दिया, जहाँ से वे काहिरा चले गये।

काहिरा में वे ४० रोज ठहरे। किन्तु अंग्रेजों ने खदीव (मिस्र के नावसाह की उपाधि) के जरिये उन्हें मजबूर किया कि, वे कौरन मिस्र छोड़ दें। अतः सैयद साहब मिस्र से निकल कर टर्की चले गये। मिस्र से निकलकर सैयद साहब टर्की तो चले गये, लेकिन उनके भक्त शेख मोहम्मद अब्दुल ने बाद में भी मिस्र में उनका 'मिशन' जारी रखा।



[मककाभिराज का तत्कालीन वजीर दोस्तमुहम्मद सा]

सैयद साहब टर्की पहुँचे, तो अलीपाशा, वजीर आजम (प्रधान मंत्री) और दूसरे बड़े लोको ने उनका स्वागत किया। वह जमाना टर्की के लिए बड़ा नाजुक था। हुकूमत सख्त चलान में गिरफ्तार थी और मुस्लिम कमाल और उसके साथी यूरोप के जंगल से देश को मुक्त करने के लिए एड़ी-नोटी का पसीना एक कर रहे थे। सैयद साहब के व्याख्यानों ने सोयी हुई मुर्तों को जगाना शुरू कर दिया।

लेकिन मुर्तों के पुराने खयालात का मुस्लिम-दर्ब यह बर्दाश्त न कर सका कि, सैयद साहब इज्जत और पोहरत में उससे आगे निकल जाये। अतः टर्की से निकल कर सैयद साहब को फिर मिस्र आना पड़ा। मिस्र का खदीव इस्माइल पाना बड़ा फिजूल-खर्च था। रियाया भूलो मर

रही थी और वह यूरोप की हुकूमतों से बर्ज लेकर ऐयानियों कर रहा था। उसने इसकी सातिर स्वेज के हिस्से भी बेच दिये थे। मिश्र के देशभक्तों ने दुश्मनों का दखल हटाने के लिए एक मस्या कायम कर ली थी। सस्या की ओर से सैयद साहब का निहायत जोरदार स्वागत किया गया। म्लुद बजीर आजम रियाजी पाशा मिलने आये और उनसे मिश्र में रहने के लिए प्रार्थना की।

उन्होंने सबसे पहले अल-अजहर की शिक्षा-मदति की तरफ ध्यान दिया। अपने इसी प्रवास-काल में उन्होंने 'मिह-किन्द-बतन' नामक एक सस्या बनायी और दो नये सभाधारपत्र निकाले—एक का नाम था 'मिश्र' और दूसरे का 'अबू-नजारा'।

उन्हीं दिनों बर्तानिया ने इस्माइल पाशा को तन्म में उतार दिया और २६ जून, १८७९ को तोषीव की मिश्र का सदीव बना दिया गया। तोषीव के मदीव हो जाने ने मिश्रियों को बड़ी खुशी हुई। उन्हें उम्मीद थी कि, तोषीव इस्माइल की तरह मिश्र को मरौ के हाथ में नहीं देगा। लेकिन मामला उलटा ही हुआ। तन्म पर बैठने के एक माह बाद ही, उसने सैयद साहब को दख के मरीफ पाशा की बजीर आजम के ओहदे में हटा दिया। तोषीव जर मरीफ पाशा को ही बजीर न देना सवा, तो फिर सैयद साहब को मिश्र में क्यों कर देना सवना था? सैयद साहब गिरफ्तार करने स्वेज भेज दिये गये।

स्वेज में वे हिन्दुस्तान आये और बम्ब होते हुए हेंदराबाद पहुँचे। यहाँ अपना सारा वक्त लोगों की तालीम और मुषार में व्यय करने लगे। उन्हीं प्रयास से हेंदराबाद में उर्दू शिक्षा का माध्यम बनाया गया।

मिश्र में १८८२ में अर्बो पाशा ने जो सैयद साहब के ही आदमी थे, सदीव के खिलाफ बगावत कर दी, जिससे नतीजे में सिक्दरिया पर गोलघारी हुई। मिश्र की इसी घटना के कारण हिन्दुस्तान की अंग्रेजी हुकूमत ने सैयद साहब को हेंदराबाद से बलवताले जाकर नजरबंद कर दिया। सन् १८८४ में उन्हें हिन्दुस्तान छोड़ने की इजाजत दे दी गयी।

बलवता से खाना होकर सैयद साहब लदन होते हुए पेरिम पहुँचे। उनसे पेरिम आने की खबर सुनकर उनके मिस्त्री शागिद खेत अम्बुल और सैयद जागलोल पाशा भी पेरिम आ गये। पेरिम में उन्होंने इन दोनों के साथ मिलकर एक जमाअत 'उबंतुल-दुस्वा' (मजबूत रस्मी) बनायी और इसी नाम का एक शाखाद्विष पत्र भी निकाला, जिसकी पहली प्रति १३ मार्च, १८८८ को प्रकाशित हुई।

उसी जमाने में मिश्र के मदीव तोषीव के जुल्मों के खिलाफ मूदान में मेहदी मूदानी के नेतृत्व में बगावत (विद्रोह) हो गयी। २६ जनवरी, १८८५ को मेहदी की फौजों ने जनरल गार्डेन की फौजों को हराकर गर्नुम पर बग़्दा कर लिया।

इस घटना पर अंग्रेजों का स्वयं जानने के लिए सैयद साहब पेरिस से लौटने लगे। शब्द साक्षात्कारी ने उनसे मुलाकात की और दर्शाया कि, वे बर्तानिया और इरानी में मुलाकात कर दें। सैयद साहब ने अपने पहली बात यह रखी कि, बर्तानिया भेज छोड़ दें। लेकिन बर्तानिया ने इस बात को स्वीकार न किया।

बर्तानिया से सैयद साहब आरम्भ और ४ साल तक में रहे। १८८७ में सैयद साहब के पेट्रोपात्र होने पर स्वयं आने उनसे मुलाकात की। इस में कुछ दिन रह कर १ जर्मनी होते हुए पेरिस आये। वही उनकी ईरान के शाह से मुलाकात हुई। शाह ने बड़ी खुशामद-मिलान के साथ

उन्हें ईरान आने के लिए कहा। अतः कुछ अर्से बाद वे ईरान जा पहुँचे।

ईरान की रियासत मुझे घर रही थी। सजाया जाली या और बर्तानिया और इस को साथ रियासतें मिली हुई थी। सैयद साहब ने इन सभी बातों में विरुद्ध आवाज उठानी शुरू की। ईरान का प्रधान मंत्री सैयद साहब का विरोधी था। सैयद साहब की बढ़ती हुई लोकप्रियता से

उन्होंने शाह को बराबा और भजवूर किया कि, शाह उन्हें ईरान से बाहर भेज दें। इसी बीच सैयद साहब बीमार हो गये और बीमारी की हालत में ही ईरान-सरकार ने उन्हें गिरफ्तार करवा बसरा भेज दिया।

उनके जाते ही शाह ने एक यूरोपियन कम्पनी को पूरे ईरान के तम्बाकू का ठेका दे दिया। सैयद साहब ने ईरान के मौलवियों और मुजतहिदों (धर्मगुरुओं) को संदेश भेजा कि, वे खुद की तरफ से



शिराज में महाकवि 'शक्ति' की समाधि
[चित्र फासीसी पर्यटक चार दुर्ग के स्केच-बुक का एक पृष्ठ]

मुसलमानों के पक्ष-प्रदर्शक हूँ। अतः ईरान के सुवर्ण और ऐमाद बाद-शाह से ईरान को बचाना उन्हीं का फर्ज है। सैयद साहब की यह आवाज जंगल के आग की तरह फैल गयी। ईरान के उल्लेखार्थी (विद्रो-

गी) ने फतवा दिया, जो सिर्फ एक लाइन का था—“आज से तम्बाकू का इस्तेमाल जाहे किसी शूरत में हो, इस्लामी कानून के खिलाफ है।” ईरानी नौजवानों ने तमाम मूल-अर या तम्बाकू फौरन ही बरबाद कर दिया और शाह को मजबूर हो यूरोपियन कम्पनी से किया हुआ ठेका छोड़ना पड़ा। यह सैयद साहब की बहुत बड़ी कामयाबी थी।

बसरा से संपद साहब लदन चले गये और वहाँ से उन्होंने अरबी और अंग्रेजी में एक अखबार 'जिया-उल-खाफिनी' के नाम से निकालना शुरू किया। इस अखबार में उन्होंने ऐसे-ऐसे मजमून लिखे कि, ईरान का बादशाह नोप उठा। उनकी अन्ध्राज बिजली की तरह चारों तरफ फैल गयी और अखिर ६ मई, १८९६ को जब साह, शाह अब्दुल-अजीम की दरगाह में बाखिल हो रहा था, मिर्जा रजा खा बरमानी की गोली में मारा गया।

मंसूर साहब के लदन जाने का बहुत गे लोगो को बड़ा अपमोस था। उन्ही में टर्की का सुल्तान भी था। टर्की के सुल्तान के आमरण पर मंसूर साहब टर्की चले गये। वहाँ सुल्तान उनमें बड़ी इज्जत में पेश आया। रहने के लिए एक बड़े महल के अलावा दो मो पींड महीना वजीफा (वृत्ति) भी मुकरर कर दिया।

सुल्तान के दिर में चूँकि खलीफा बनने की बड़ी इच्छा थी, इसलिए वह संपद साहब को चुन रखने के लिए हर तरह की कोशिश करता था। इमी सिलसिले में उसने उन्हें एक घाटी तमगा (पदक) भेजा, जो वह वजीरों को दिया करता था। उन्होंने वह तमगा अपनी बिल्ली के गले में ढाल दिया और कहा कि, इसकी सबसे अच्छी जगह यहाँ है; क्योंकि ऐसी चीजें आम तौर पर बेईमान लोगो के गले में ढाली जाती हैं।

उमी जमाने में मिय का मदीव अव्वाम

हलीमी पाशा टर्की आया हुआ था। वह उनसे मिलने आया और बहुत देर तक बातें होती रही। वजीर के बाद-मियो ने सुल्तान से जा लगाया कि, संपद साहब मिस्र के खदीव को अपनी जगह खलीफा बनाना चाहते हैं।

यह सब जानकर सुल्तान ने उन पर पुलिस और जामूमो को निगरानी बिठा दी। अब उनकी उम्र साठ साल की हो चुकी थी। बहुत ज्यादा काम की वजह से सैहत (स्वास्थ्य) गिरती जा रही थी कि, टर्की हालत में सुल्तान ने उन्हें नजरबंद कर दिया। इन्ही दिनों उनके जबड़े में कंसर निकला। डाक्टर जमील पाशा ने छ दौख निकाल दिये; लेकिन फिर भी कुछ फर्क न आया।

कहा जाता है कि, चूँकि उनमें और सुल्तान में काफी चल रही थी, इसलिए उसने बहुत-से खिलाल (दौख साफ करने का तिनका) भेजे, जिनमें जहर लगा हुआ था। वे खाने के बाद हमेशा खिलाल करते थे। चुनावे इन खिलालो के इस्तेमाल ने बीमार हो गये और ९ मार्च, १८९७ को उन्होंने दुनिया से हमेशा के लिए भूँह मोह लिया।

उन्हे बचरस्ताने-शयूत, मोहल्ल माचवा में दफन किया गया। उनकी बह बापी अमें ना-मालूम रही; लेकिन १९१९ में एक अमरीकी ने अपने रार्च में उसे पकवा करा दिया और आज वह मध्य-यू ने युवको तथा स्वातन्त्र्य-प्रेमियो के लि निगी तीर्थस्थान मे श्री बदकर हो गयी है।

इतनी संवेदनशीलता भी बुरी है

रॉबेल एच. बेरन के एक प्रेरक लेख का संक्षिप्त हिन्दी रूपांतर

★

अतिमवेदनशील व्यक्ति अपने-आपने सदा एक प्रकार की बुरी अनुभव करने के कारण प्रत्येक परिस्थिति को अयकार-मय ही देखता है। चूंकि उसका ध्यान हमेशा इसी बात पर लगा रहता है कि, कोई वही उसका अपमान तो नहीं कर रहा है—यह यही सोचता रहता है कि, अमुक व्यक्ति ने ऐसा क्यों कहा? वह वही मुझ पर हँस तो नहीं रहा या?

प्रख्यात मानसशास्त्री डा. कारेन होर्नी के मतानुसार यह एक ऐसी प्रवृत्ति है, जो अपने भीतर का भाव दूसरों पर लादना चाहती है। कुछ परिस्थितियों अवश्य ऐसी हो सकती हैं, जब सामने के व्यक्ति में अकहेलना या तिरस्कार की भावना मौजूद हो, लेकिन अधिकतया बिना किसी वास्तविक कारण के ही, अत्यधिक संवेदनशील व्यक्ति अपने मन का भाव दूसरे के साथ जोड़कर, कल्पना में ही अपना अपमान भाग बँटता है और दूसरों पर व्यर्थ ही दोषारोपण करता है। इसका कारण यह है कि, ऐसा व्यक्ति जल्दघिन सम्मान का भूखा होता है। जब उसे कोई विशेष रूप से नहीं पूछता, तो वह

जपना तिरस्कार हुआ समझता है।

वास्तव में, इससे उसने मिथ्या गर्व को आमात लगाता है और यह दुखी होता है। लेकिन यह समझना चाहिए कि, असार में सभी लोग अपनी उधेड़बुन में व्यस्त रहते हैं। उन्हें अपनी ही चिंता या कार्यों से इतनी गुरुत्वा नहीं कि, वे सबके साथ आदर या विनय का व्यवहार कर सके। हो सकता है कि जिसने आपकी भावना को आघात पहुँचाया हो, वह स्वयं प्रसन्न हो और उसने इस 'छले' व्यवहार का कारण आपके प्रति दुर्भावना या तिरस्कार न हो।

एक बार किसी बैंक का एक पलक एक प्रतिष्ठित व्यक्ति के साथ कुछ अभद्रता का व्यवहार कर बैठा। उसने जाकर बैंक के मैनेजर से शिकायत कर दी। चूंकि उसका सेन-देन बैंक से काफी बड़े पैमाने पर था, मैनेजर ने क्लर्क को बुला कर डाँटा। लेकिन उसने बड़े व्यवहार का कारण क्या था, यह जानन की विनती में चेष्टा नहीं की। वह तो तब विदित हुआ, जब उक्त क्लर्क ने कुछ दिनों बाद आत्महत्या कर ली। मरते समय वह एक

‘नोट’ लिखकर छोड़ गया था—“अपनी अस्वस्थता और असमर्थता से तंग आकर मैं आत्महत्या कर रहा हूँ।”

इसलिए जब कभी आप यह सोचें—अमुक व्यक्ति ने मेरी अवहेलना की, तो

आप अपने मन को भी टटोले कि, उस भावना का कितना अंश स्वयं आपके मस्तिष्क की उपज है। फिर इस बाल्य-निष्ठ अंश से स्वयं को मुक्त करने का प्रयास कीजिये।

आपके लिए अपनी अच्छाइयों पर ध्यान देना भी बहुत जरूरी है। यदि आप अपनी गामियों के बजाय अपनी गूरियों की ओर ध्यान देना शुरू करें, तो महज ही कोई आपके दिल को दुस्ता न मरेगा।

दूसरा तरीका यह

है कि, जो भी गुण आपके स्वाभाविक रूप में वर्तमान हैं—जिस कार्य की ओर आपकी रुचि हो—उसका विकास कीजिये। इससे आपको आनंद तो मिलेगा ही, साथ-ही-साथ मानसिक बल की भी वृद्धि होगी।

नवनीत

शेर से भी भयानक

बुरे विचार शरीर में अधिक भयानक होते हैं। मातृपक्ष रूढ़िचार जगली जानवरों से तो स्वयं को दूर रख भी सक्ता है, किन्तु बुरे विचार हर समय और हर स्थान पर अपना शरत्ता बना ही लेते हैं। उनमें बचने का तिरंग एका ताना है। जिन प्रकार ऊपर तब तानाबाना भरे प्याले में शिमी दस्तू के प्रवेश की मुताबक गूनी रहती, उगो प्रकार आप अपने मस्तिष्क को सद्-विचारों से भर कर रखिये—बुरे विचारों को उनमें प्रवेश पाने का मार्ग ही नहीं मिलेगा। बुरे साथ बुरे विचारों का ही फल है, अतः यह भलीभाँति स्मरण रखिये कि, तिरंग बुरे कामों का त्याग करने से ही काम नहीं चलेगा। अगर आपने बुरे विचार खींचे ही मुक्त रह गये, तो आपकी तारी नैतिक शक्तियाँ समाप्त हो जायेंगी।

—वेबो पारचुराण

एक उपाय और भी है। आप लोगों के साथ दिल सौल कर मिलिये।

साधारणतया अत्यंत भावुक व्यक्ति अपनी ही नाद में छुपे रहना पसंद करते हैं ;

लेकिन वे दूसरों के साथ मिले-जुले, जलसों

और तमा-सोसाइ-

टियों में आये-जायें,

तो उनकी हिवक

दूर हो जायेंगी और

तब वे देखेंगे कि,

लोग उनसे मिल-

कर और वे लोगों

से मिल कर कितने

खुश होते हैं !

सहज ही बुरा

मान बैठने की आदत

अच्छी नहीं। यदि

किमी ने आपका

जानबूझ कर भी

अपमान किया हो,

तो आप उस व्यक्ति

की बात पर अधिक

विचार मत कीजिये।

अपने मन को कष्ट

पहुँचा कर, व्यर्थ ही

आप उसे या उसकी

बात को महत्व क्यों देते हैं ? अपने

मन को थोड़ा मजबूत बनाइये।

आप स्वयं दूसरों का तिरस्कार न

कीजिये। सामान्यतया यह देखा गया है

कि, जो लोग महज ही बुरा मान जाते हैं, वे

हमेशा एक ऐसा रस बनाये रखते हैं, जिससे दूसरे लोग बुरा मान जाते हैं। ऐसा वे इसीलिए करते हैं कि, लोग उनकी उपेक्षा या अनादर करे, इससे पहले ही वे यह बता दें कि, उनको किसी की परवाह नहीं है। उनके इस रस या व्यवहार से जो भी उनके सम्पर्क में आता है, वह उन्हें घमंडी समझ कर बदले में उनका तिरस्कार करता है। इससे अत्यधिक सवेदनशील पुरुष और भी आहत होते हैं और अपने मन में सदा यही सोचा करते हैं कि, सारा ससार ही उनकी उपेक्षा करने पर तुला हुआ है।

आलोचना लाभदायक भी हो सकती है। प्रत्येक आलोचना से चिकना नहीं चाहिए। हो सकता है कि, आलोचक की दृष्टि में आपके कुछ ऐसे दोष या भ्रष्टियों शटकती हैं, जिन्हें आप स्वयं नहीं देख सकते। बुरा मानने के बजाय यदि आप शांति से अपनी आलोचना पर विचार करे, तो आप अपनी बहुत-सी बुराइयों या कमियों दूर कर सकते हैं।

अगर आप अपना जीवन बस्तुतः आनंदमय बनाना चाहते हैं, तो एक काम

आपको और करना होगा। थड़ा का साथ बन्नी मत छोड़िये। यदि आप ईश्वर या किसी दैवी शक्ति में विश्वास करते हैं, तो आपकी थड़ा उस पर अटूट होनी चाहिए। ऐसी अवस्था में, आप किसी की भी बात या हँसो की परवाह नहीं कीजिये। लोग चाहे आपकी अवहेलना, तिरस्कार या निरादर करे, फिर भी आप अपनी थड़ा का सहारा ले अगने पथ पर सदैव आगे बढ़ते रहिये।

साथ ही, अपने आदर्श उच्च रखिये, लेकिन अम्बर के तारे तोड़ने की भी मत सोचिये। अत्यधिक सवेदनशील व्यक्ति सामान्यतया इतनी ऊँची उड़ान भरना चाहते हैं कि, वहाँ तक पहुँचने की उनकी सामर्थ्य ही नहीं होती। यह आप निश्चित जान रखिये—भावुकता से कोई व्यक्ति कभी सुखी नहीं हो सकता। धीरे-धीरे इरादे दूर होने की आदत अपने-आपमें डालिये। अगर आप तुनक मिजाजी या सहज ही बुरा मानने की आदत से छुटकारा पा जायें, तो ससार आपके लिए इतना नैराश्यपूर्ण नहीं रहेगा। और, तब आप जीवन का गूरा-गूरा आनंद उठा सकेंगे।

★

“साहब, मैं अभी-अभी एक जोड़ा जूता बेचा है। दाम उसका तो १८ रुपये था, पर खरीददार के पास सिर्फ ६ रुपये ही थे। इसलिए मैंने वे रुपये बतौर जमानत ले रख लिये।” नये सेल्समैन ने दूकान-मालिक से कहा।

“अश्लील बेवकूफ हो, वह अब कभी लौट कर आयेगा भी?”

“जरूर आयेगा, साहब। .. मैंने उसे दोनों जूते एक ही पैर के बंध दिये हैं।”

★

—‘हास्य विनोद’ से



जमीनी जल स्रोत

नवीनतम वैज्ञानिक शोधों के आधार पर लिखित एक रोचक लेख

★

उष्ण प्रदेशीय किसी सागर या 'गल्फ-स्ट्रीम'-सरीसौ किसी धारा का जल प्राप्त हो तो वह, नहीं तो कोई भी स्वच्छ, निर्मल जल लेकर उसमें थोड़ा-सा 'एसिड' (तेज़ाब) और कार्बन-डाइ-आक्साइड मिलाइये। फिर थोड़ा-सा नमक, चूँड़ के बुझ की रात, ज्वालामुखी पर्वत की रात, रेगिस्तान की रेत में किसी कारखाने के धुँए के बग उसमें मिलाइये और ऊपर से 'स्टार-बस्ट' (उत्काषात में गिरे किसी प्रस्तर-कण्ड का धूर्ण) डालिये। तब खुब जोर से उसे हिटाइये। और, आप देखेंगे कि, बादल बनने लगें हैं।

घनमाइये मत। यह किसी भूत की बुलाने का ज़रूर-अंतर नहीं, न किसी महात्मा की दी हुई जड़ी-बूटी है। यह तो वैज्ञानिक मुस्मा है, वर्षा का। आप इससे वर्षा की बूँदें तैयार कर सकते हैं। वर्षा की बूँद आकार में अत्यंत छोटी होने हुए भी, पृथ्वी के सभी अंगों, बल्कि पृथ्वी के परे, ग्रहमांड के तत्व भी अपने में समाये रखती हैं। ऐं, एक बूँद की ज़बले कोई विज्ञान नहीं, लेकिन यही बूँद जब बड़ी बूँद के साथ वृष्टि में गिरती है, तो वह पर्वतों तक को समतल

कर देती है, जमीन के फटने का कारण बन जाती है और बड़े-बड़े प्राकृतिक उपद्रवों में सहायक होती है।

वर्षा की बूँद का निर्माण किस प्रकार होता है, इसका सम्पूर्ण रहस्य तो अभी प्रकट नहीं हो सका, लेकिन वैज्ञानिकों में हाल ही में इस सम्बन्ध में कुछ नयी बातों का पता लगाया है। वर्षा की बूँद बनने की तीन विभिन्न अवस्थाएँ हैं। पहले तो सागरों से भाप उठकर वायुमंडल में फैलती है, उसके बाद भाप से बादल की बूँदें बनती हैं और अंत में, ये ही बूँदें मिलकर वर्षा की बूँदें बन जाती हैं।

मसाल के सभी समुद्रों पर से भाप की अनंत राशि आकाश की ओर उड़ती है। मूमध्य रेखा की ओर बहनेवाली 'ट्रेड हवाएँ' इसमें सहायक होती हैं। गरम, गीरी भाप आकाश में मील-भर ऊँचा जल-मन्म बनानी है। यह क्रिया रात-दिन, निरंतर चलती रहती है। आपको यह जानाएँ शायद आश्चर्य होगा कि, आपकी घड़ी की प्रत्येक 'टिक्' शब्द के साथ—अर्थात् एक सेकेंड में—७,५०,००,००,००० गैलन पानी सातों समुद्रों में भाप बन कर आकाश में ऊपर उड़ता है।

यह अपार वाष्प-राशि जब वायुमण्डल में फैलती है, तो बादल बनना प्रारम्भ होता है। भाप के रूप में जो जल ऊपर उठता है, वह निर्मल और विशुद्ध होता है। लेकिन बेचल विशुद्ध जल से बादल का वर्ण गही हो सकती। इसके लिए प्रकृति उसमें धूल, समुद्र-पेन का लवण, राख और प्राकृतिक अवसाद मनुष्यकृत

अग्निबाह के अवशेष मिलाती है। बादलों के निर्माण के लिए इन अशुद्ध पदार्थों का रहना अत्यंत आवश्यक है। जितने प्रकार बर्फ से भरी गिलास के बाहर जब हवा टकराती है, तो उसमें की भाप जम जाती है—उसी प्रकार वायुमण्डल में उठते हुए बणों से टकरा कर समुद्र से लड़ी हुई भाप उन पर जम जाती है। करोड़ों वाष्प-परमाणु मिलकर एक मेघ बूंद बनाती है, जिसका व्यास एक इंच का हो जाता है। इसके बीच में बीज की तरह एक बण होता है। लेकिन बादल की ये बूंदें इतनी छोटी होती हैं कि, इनसे वर्षा पड़ होना असम्भव है।

द्वितीय महापुद् ने बाद एक दिन अनायास ही वर्षा के विषय में एक महत्वपूर्ण शोध 'जंगल इलेक्ट्रिक' की प्रयोग-

शाला में हो गयी। विस्फोट सेफर नाम के एक वैज्ञानिक ने कुछ फ्रीजर (साद्य पदार्थ को अच्छी हालत में रखने की ठंडी आल-मारी) में बाले मसमल का पर्दा लगाकर आकाश का प्रतिरूप बनाया। फ्रीजर में सौंसे से हवा फैकने से छोटे-छोटे बादल तैयार हो जाते हैं, लेकिन वर्षा नहीं होती थी। एक सेन गरमी इतनी अधिक की कि,



भीजे चुनरी सेरी

[विषय पहाड़ी सेरी, 'भारत कला-भवन,' काशी में संगृहीत एक चित्र की सरल रेखाचित्रित]

फ्रीजर में बादल स्थिर न रह गये। इसलिए उसने फ्रीजर में सूखी बर्फ डालकर दम बिखा। सूखी बर्फ डालते ही बादल असह्य हिम-बणों के रूप में परिवर्तित हो गये। जब उसने फ्रीजर में पूर्व सारी, तो सौंसे की आदता जमकर वर्षा की बूंदें बन गयीं। इससे यह सिद्ध हुआ कि, बर्फ के बण द्वारा पानी भरसाया जा सकता है। इसी से ऐसे बादलों पर, जिनमें वर्षा

जल की सम्भावना रहती है, सूखी बर्फ डालकर कृत्रिम रूप से पानी भरमाने के आधुनिक प्रयोगों का सूत्रपात हुआ।

हवाई सेना ने इस विषय का अध्ययन प्राकृतिक परिस्थितियों के बीच दिया। एक छोटा-सा बादल, जिसकी भीतरी हवा बाहर की हवा से अधिक गरम और आर्द्र होती है घुमें की तरह आकाश में

ऊपर उठता चला जाता है। लेकिन कुछ ही मिनटों बाद उस बादल के बीच और भी अधिक गरम हवा भर जाती है और वह छोटा-सा बादल तीन मील लम्बा एक विशाल मेघराशि बन जाता है। आर्द्रता ऊपर की ओर उठती रहती है—जब तब कि, वह धुन्य या उससे भी कम अल्प तापमान की ऊँचाई पर नहीं पहुँच जाती। 14,000 फुट की ऊँचाई पर पहुँच कर वह जम जाती है। 24,000 फुट की ऊँचाई पर धुन्य से तीन या चार अल्प कम और 40,000 फुट की ऊँचाई पर धुन्य में करीब ६० अल्प कम तापमान होता है। पहुँचे तो यह आर्द्रता जमने के कारण बर्फ बनती है और उससे भी ऊँचे पहुँचने पर हिम-बण। मेघ-बूँदें इन बणों के चारों ओर एकत्र होती हैं और आपस में मिल कर वर्षा की बड़ी-बड़ी बूँदें बन जाती हैं।

बादल में वर्षा का पानी भरा रहने पर भी वर्षा नहीं होती। प्रारम्भ में तो बादल की बूँदें, हिम-बण-सभी हवा के माध्यम से, करीब-करीब तो ७० मील प्रति घंटे की रफ्तार से, बहने रहते हैं। जैसे-जैसे अधिक घादन की बूँदें एकत्र होती जाती हैं, वर्षा की बूँदें अधिक भारी और बड़ी बन जाती हैं। जमीन पर जो वर्षा की बूँदें गिरती हैं, उनका म्याम सामान्यतया एक इंच का पचीसवाँ भाग होता है। वर्षा की एक बूँद करीब पाँच लाख मेघ-बूँदों के जितनी बड़ी होती है। उसके बाद ये बूँदें बादलों के बीच

जमीन पर गिरनी शुरू हो जाती हैं।

वर्षा का एक महत्वपूर्ण रहस्य, उसके हिम-बण है। इन हिम-बणों को, यदि के लिए एक 'बीज' चाहिए और यही 'स्टार-डस्ट' का उपयोग होता है। अन्य साधारण धूल-बण मोटे होने से इस काम के लिए उपयुक्त नहीं होते।

पृथ्वी जब सूर्य के चारों ओर घूमती है, तो उसके चारों ओर रेत की वर्षा होती रहती है। यह धूल या तो यह मडल के निर्माण के पश्चात् धचा हुआ अवशेष है या यह वही वस्तु है, जिससे तारे बनते हैं। उसके सूक्ष्म-बण नीचे उतर कर, अधिक ऊँचाई पर जो बादल रहते हैं, उनमें मिल जाते हैं और ऐसे बणों का निर्माण करने में सहायक होते हैं, जिनके द्वारा वर्षा होती है। इस प्रकार हिम-बण और वर्षा की बूँदों का निर्माण अंतर-नक्षत्रीय पदार्थ के धूल-बणों के इर्द-गिर्द होता रहता है।

डा ई जी ब्राउन का, जो आस्ट्रेलिया के एक उत्कृष्ट भौतिक विज्ञान-वेत्ता है, कम-से-कम यही मत है। दूसरे विद्वानों ने भी इसे स्वीकार किया है। ज्योतिषियों का कहना है कि, प्राम्य १०,००० टन, अर्थात् लगभग २,८०,००० मन अदृश्य बण प्रति दिन पृथ्वी पर गिरते हैं। ऐसा मालूम होता है कि, आकाश में पर्याप्त 'स्टार-डस्ट' है। इन अदृश्य बणों के ही कारण जितनी बार पृथ्वी पर जबरदस्त तूफान आते हैं।

अमेरिका की 'बेदर-भ्यूरो' की गणना के अनुसार तीन साल पहले केलिफोर्निया प्रांत में ओपिड्स केम्प में एक मिनिट में सर्वाधिक वर्षा हुई थी। उस वक़्त २/३ इंच वर्षा उस एक ही मिनिट में उस स्थान पर हुई। इसका अर्थ यह हुआ कि, ६० सेन्टेड में १ वर्ग मील के घेरे में १,००,००,००० गैलन पानी वर्षा के रूप में गिरा। औसत आकार की वर्षा की सूक्ष्म से हिसाब लगाया जाये, तो ४,००,००,००,००,००,००० बूँदें एक मिनिट में वहाँ गिरी।

साधारणतया लोग यह नहीं जानते कि, गिरती हुई वर्षा की बूँदों के कारण बिजुत् भी पैदा हो सकती है। बहुत-सी बड़ी-बड़ी बूँदें गिरते समय फेन फैलती हैं। फेन के साथ 'इलेक्ट्रॉन' उड़ते हैं, जिससे बूँदों में 'पॉजिटिव' बिजली पैदा हो जाती है। यह तब जब अधिक देर तक चलती रहती है, तो तूफान के बादलों के नीचे बिजली का 'पॉजिटिव चार्ज' काफी जमा हो जाता है। इसीसे नीचे की जमीन पर बिजली का 'निगेटिव-चार्ज' तैयार होता है। विपरीत बिजुत्-शक्ति चूँकि एक-दूसरे को आकृष्ट करती है, धरती और बादल के बीच तनाव बढ़ता जाता है। अंत में बिजली, दोनों के बीच में जो अंतर है, उस ओर दौड़ती है और उसी से शुन्य में हथें बिजली चमकती हुई दिखायी पड़ती है।



वर्षा में शव
[बिज 'व' से साधार]

वर्षा की बूँदों का प्रभाव इतना धीरे-धीरे होता है कि, हम उसे स्पष्टतया देख नहीं सकते। सगरासी, पर्वतों, समुद्र-तट इत्यादि की परिधि-रेखा को बदलना, छोटी-छोटी छेनी की भाँति पर्वतों को काटना—सब काम बूँदें करती हैं, लेकिन हम उन्हें ऐसा करते देख नहीं पाते। अलावे, वर्षा की बूँदों में वायुमंडल का 'नाइट्रोजन' और कार्बोनाट से निकले हुए धुँएँ की कुछ जहरीली गैसें भी पायी जाती हैं।

वर्षा की बूँदें एक बड़ी मात्रा में पृथ्वी पर की गंदगी और ककड़-पत्थर को बहा ले जाती हैं, यह तो निर्विवाद है। वर्षा के जल से प्ररित, मिसीसिपी नदी प्रत्येक वर्ष ६०,००,००,००० टन पदार्थ मेक्सिको की खाड़ी में बहा कर ले जाती है। प्रायः प्रत्येक चौपी शताब्दी पर वर्षा के कारण धरती की सतह एक इंच नीचे हो जाती है। भूतत्व-विशारदों ने पता लगाया है कि, भूपाल और उनके भाने के काल पर भी वर्षा का प्रभाव रहता है। हार्वर्ड के प्रोफेसर स्टी कोनराड का कहना है कि, वर्षा के कारण जो जमीन बटती है, उसकी रेत और दूतनी वस्तुएँ जमा होने रहने से जब नीचे की चट्टान की परतों पर अधिक वजन पड़ता है, तो वे गिर पड़ती हैं और धरती कोप जाती है।

यह एक विचित्र बात है कि, अगर पृथ्वी पर वृष्टि होना बंद हो जाये, तो वही भी अनावृष्टि या सूखा तभी पड़ेगा। भले ही चाहे कुछ काल के लिए, वही-वही हवा उष्ण और सैन् नष्ट हो जायें, लेकिन अनावृष्टि की अवस्था अधिक देर तक नहीं टहर सकती। उस समय भी वृष्टि-सूक्ष्म जल के वायुमंडल में आर्द्रता काफी मात्रा में उपस्थित रहेगी। समुद्रों में जो भाप हवा में ऊपर उठती है, उसके कारण वायुमंडल में उपस्थित आर्द्रता को, वर्षा की श्रेयस् बूंद बन जाती है। यदि वर्षा न हो, तो वायुमंडल की आर्द्रता जमी-की-संसी हो घनी रह। उसका फल यह होगा कि, वायुमंडल गाढ़ा और भरा हुआ रहेगा। जमीन भीली मिट्टी का एक समुद्र बन जायेगा। चलने-फिरने के

लिए आपको घुटनों तक के ऊँचे जूते पहनने पड़ेंगे और आपके कपड़े हमेशा बुरी तरह गीले और बदन से चिपके हुए रहेंगे। प्रत्येक वस्तु गरम, गीली और टपकनेवाली बन जायेंगी। आर हमेशा नहा रहे हैं, ऐसा मालूम होगा।

वर्षा आने पर यदि आपको बाहर जाने में तकलीफ हो और सम्भवतया आपका काम भी बिगड़ जाये, तो आप अवश्य अप्रसन्न हो सकते हैं, लेकिन यह भी याद रतिये कि, इसी वर्षा के कारण अग्नि का मौसम स्वच्छ होगा। वर्षा प्रकृति की एक महत्त्वशाली कार्यकर्त्री है। अन्य कार्यों के अनिर्वहण यह सतार-भर के वायुमंडल का तापमान ठीक करती है और इस परिवर्तनशील सतार को हमारे रहने के अधिकाधिक योग्य बनाती है।

★

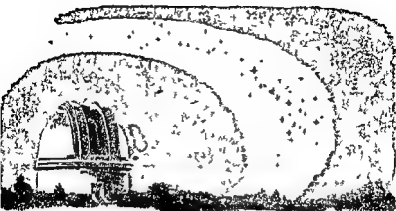
एक अश्वेज महोदय ने किनी प्रीति-भोज के अवसर पर कहा—“हम अश्वेज वस्तुन, ईश्वर के बहुत ग्यारे हैं। ईश्वर ने हमारा निर्माण बड़े धन और स्नेह में किया है, तभी तो हम इतने गौरे हैं।”

डा। राधाकृष्णन् भी वही उपस्थित थे। यह गवोंकिन् गुन मुखराये और सभी व्यक्तियों को सम्बोधित करते हुए बोले—“मित्रो! एक बार भगवान की रोटी पचाने की इच्छा हुई। वे रोटी सेपने तो बँडे; किन्तु पहली रोटी जरा कम मिकी और परिणामस्वरूप अश्वेज जाति का जन्म हुआ। दूसरी रोटी के अधिक देर तक भजते रहे और इससे नीचो लोगो की पैदाइश हुई। अपना इन दो भूला से सतर्क हो, भगवान ने जो तीसरी रोटी सेयी, तो वह मिलतुल टीक थी—यह न कम मिकी थी, न ज्यादा। फलस्वरूप हम भारतवासियों का जन्म हुआ.....।”

उक्त अश्वेज महोदय ने भेष कर सिर झुका लिया और काफी लोग उन्मुक्त भाव में हँस पडे!

—आर. पी. वर्षा

★



अतिरिक्त सम्बन्धी आधुनिकतम जानकारी के आधार पर श्रीगोपाल नेवटिया द्वारा लिखित
एक रोचक लेख

★

तुलसीदासजी ने राम के रूप में बोधल्या को, रोम-रोम न कोटि-नोटि ब्रह्मांड दिखाया थे। वह निरी भक्त की दृष्टि नहीं थी—आजकल की विशालकाय बेधशालाएँ और विज्ञान का महान् ज्ञान भी यही देखते हैं, कहते हैं। यह प्रचंड मार्गंड, जो हमें ब्रह्मांड के राजा के समान दिखायी देता है, वह भी अरबो-खरबो तारों के समान एक तारा है। सूर्य हमें ताप प्रदान करता है, जीवन-दान देता है—हम उसकी पूजा करते हैं, उसको बड़ा मानते हैं। जिस प्रकार हमारा सूर्य हमारी पृथ्वी से सम्बन्धित है, न-जाने कितने सूर्य कितनी पृथ्वियों से सम्बन्धित होंगे।

और, हमारे सूर्य और उससे सम्बन्धित तारों के समूह का

विस्तार भी क्या कम है? हमारे इस तारा-समूह के इस पार से उस पार प्रकाश को पहुँचने में एक लाख वर्ष लगते हैं और दूसरों के सम्बन्ध में भी उनके इतने ही बड़े तारा-गुज होने का अनुमान किया जाता है।

ये तारा-गुज या निहारिकाएँ हमसे और एक-दूसरे से बहुत दूर हैं। दो के फासले की जगह में किसी प्रकार का कोई घनीभूत पदार्थ नहीं है। सर्वथा शून्य में भ्रमण करनेवाले एकाकी पक्षियों के समान ही वे हैं।

इन पक्षियों की बाल भी मार्ग की है। एक पक्षिक दूसरे पक्षिक की ओर नहीं,

कहि न जानय का कहिये

किन्तु एक-दूसरे में घरे-उससे दूर की ओर-चलता रहता है। हमसे भी ये तारा-यूज दूर.. और दूर होते चले जा रहे हैं। उनसे हमारी पृथ्वी पर पहुँचनेवाली रोशनी के रंग की तुलना करके, आज के वैज्ञानिक उनकी चाल का पता लगाने में अभी तक असमर्थ हैं।

प्रत्येक तारे का अधिकांश भाग 'हाइड्रोजन'-मात्र होता है। गरम 'हाइड्रोजन' एक विशेष रंग का प्रकाश देता है। 'हाइड्रोजन' का अणु यदि एक जगह स्थायी रहने की अपेक्षा चलनेवाले से दूर की ओर जा रहा हो, तो अधिक लाल दिखायी देता है और अगर देखने-वाले के समीप जा रहा हो, तो अधिक नीला।

इसी रहस्य की

जानकारी के कारण वैज्ञानिक दूर जाते हुए तारों के हाइड्रोजन की आलिमा को नापकर उनकी चाल का पता लगाते हैं।

नजदीक के कुछ नित्हारिकाओं को छोड़कर बाकी सब नित्हारिकाएँ हमसे दूर होती जा रही हैं। जिस गति में वे हमसे परे हो रही हैं, उसका सीधा सम्बन्ध उनके और हमारे बीच की दूरी से है। दो नित्हारिकाओं में से जो नित्हारिका हमसे दुगुना दूर है, वह नजदीकवाली नित्हा-

रिकाओं की अपेक्षा दुगुनी चाल से हमसे दूर होती जा रही है।

अब हम ज्ञान की सहायता से हमारे विश्व की आयु का पता लगाने के लिए इन नित्हारिकाओं की चालों के पुराने काल का अनुमान कीजिये। आज जब हम उन्हें एक-दूसरे से दूर होते देखते हैं, तो किसी अति प्राचीन काल में वे आज के और भी नजदीक ही रही होंगी—प्रारम्भ में तो बिल्कुल एक ही रही होंगी। तब से अब तक अपने-अपने यात्रा-

प्रकाश और कलंक

चन्द्र बड़े, विश्वे आने दिवेंछि छइये,
बलर जा आठे, ताहा आठे मोर गायें।

—ब्रह्मा बहना है—“मेरे पास जा प्रकाश जा, उसे तो मारे विश्व में बिखेर दिया, किन्तु जा बन्द है, उसे मने अपने ही पास रक्का है। —ग्योन्द्रनाथ टगोर

पथों पर वे एक-दूसरे से दूर...और दूर बढ़ती चली जा रही हैं। जैसा ऊपर बताया गया है, उस के अनुसार उनकी दूरी और गति मालूम होने पर, उल्टा हिसाब लगाने में पता चल

ही जाता है कि, कब वे सब एक जगह पर थी, एक साथ जनमी थी। हिमाव लगाया जाये, तो मुहूर्त पा-४ अरब वर्ष पूर्व। और, उस समय यदि वास्तव में, विश्व का पदार्थ धनीमूव था, तो उस विश्व का जन्म-समय मानना ही होगा।

अभी कुछ समय पूर्व तक विश्व की आयु दो अरब वर्ष ही मानी जाती थी, किन्तु दूसरे तरीकों में हमारी इस पृथ्वी की आयु तीन अरब वर्ष प्रायः सर्वमान्य

भोजन स्वादिष्ट बनानेके लिये



**प्रताप
छाप**

हिंग

इस्तेमाल किजीये

गोपालजी एण्ड कंपनी

२६ सिम्पसन स्ट्रीट मुंबई ३

बिस्ती भी प्रसार के सांख्यिक दर्द पर

‘हक्सली’ का

विन्टोजिनो

अवश्य
इस्तेमाल करिये

पीठ का दर्द, कमर का दर्द, वातरोग, गठिया, सिर बेदना, शूल, छाती की
सर्दी आदि हर प्रकार के सांख्यिक दर्द पर ‘हक्सली’ का विन्टोजिनो निश्चित
गुणकारी है।



प्रमुख

वितरक

सभी प्रमुख दवाई
बेचनेवाले और
स्टोरो में मिलता
है।

पी. एम. जेरी

एण्ड कंपनी, दवावाला,
प्रिन्सेप स्ट्रीट, मुंबई २

“क्या ही मतवाली,

निराली सुगन्ध है!”

शाहीकला

फहती है

‘सबसे टॉपसेट साबुन की नयी फूत ही
मरक ने मुझे माद लिया है”



सम्भार की सौन्दर्य महिलाओं
की तरह आप भी सफ़ेद व शुद्ध
सबसे टॉपसेट साबुन की
अद्भुत सुन्दरता की रक्षा के
लिए प्रति दिन प्रयोग कीजिये।
इस का सुतावन, सुगन्धित
काग़ज़ की रचना को साफ़
और सुन्दर बनाएगा और आप
का स्नान सित फूत की तरह
निगल जाएगा।

संपूर्ण शारीरिक सौन्दर्य के
लिए बड़े आकार की बड़ी
इस्तेमाल कीजिये।



लक्स

टॉयलेट साबुन

विश्व तारिकाओं का सौन्दर्य साबुन

LTS 631-60 HX



आप में बना हुआ

हो गयी है। फिर पृथ्वी की आयु ही जब तीन अरब वर्ष की है, तो विद्वद्दशने अधिप आयु का होना ही चाहिए।

माउंट पेलोमार पर नये लगे २०० दश व्यास की दूरबीन की क्षमता के कारण प्रकाश-वर्षों में द्वारा दूरी नापने का और भी सही माप-दंड धर्मानिकों को मिल गया है। उसी ने ये नये तथ्य खोज निकाले हैं।

कुछ अन्य तरीकों से भी इसी निर्णय पर पहुँचा जाता है कि, हमारे विश्व की आयु ४ से ५ अरब वर्षों के बीच होगी चाहिए।

अब यह धर्मानिक सत्य सिद्ध हो चुका है कि, विश्व में 'हाइड्रोजन' के अणुओं के रूप में गिने गये पदार्थ पैदा होते रहते हैं। उनके निर्माण का परिमाण बहुत कम है; किन्तु यह विश्व भी इसका विशाल है कि, कुल मिलाकर नये निर्माण का परिमाण, फिर भी बहुत कम हो जाता है।

इस नये निर्माण के ऊपरांत भी, विद्वद्-प्राप्त पदार्थ का परिमाण नहीं बढ़ता। कारण, जो निहारिकाएँ विश्व की सीमा पर पहुँच गयी हैं, वे विखीन होती जाती हैं और जगहों का पदार्थ बिस्व की पदार्थ-राशि में से कम होता जाता है।

निहारिकाओं के बिखीन होने पर

यह तथ्य आपुनित विद्वद्-विद्या का एक बहुत ही आश्चर्यप्रद ज्ञान है। हमसे दूर होने की उनकी गति में निरंतर बढ़ि होने के नियम का ही यह विखीन होना स्वाभाविक नहीं है।

जिती दीराली या महाराज होती चीज की पाल प्रकाश से लेज गयी है। निहारिका के, प्रकाश की पाल से भी

लेज पाल प्राप्त करने पर, हों बाध्य होकर बनी-बना पड़ता है कि, हमारे क्षुब्ध आकाश की सीमा पर पहुँचकर यह निहारिका बड़ी तिरोहित हो गयी।

नये पदार्थ के निर्माण तथा पुराने पदार्थ के तिरो-हित होने के कारण हमारे विश्व में दिवस पदार्थ के परिमाण में कोई विशेष अंतर नहीं पड़ता। बड़ी बात सारी की भी है। 'हाइड्रोजन-बीज' के जम कर बनी-बनी पदार्थ के रूप में

एक होने रह। त ही तो एक नये तारे का जन्म होता है। इसका नियम यह सिद्ध कि, न-बाने वहाँ से 'हाइड्रोजन' के नये अणु उत्पन्न होने हैं और ये सम्मिलित होते-होते एक तारे का रूप धारण करते हैं। और, ये तारे मिलकर एक धारण करते हैं—निहारिका का, जो गति में धुँदिल जाती हुई पर फिर हमारे क्षुब्धराश से दूर



[पेलोमार सिद्ध विधाला की २०० व व्यास की दूरबीन, निहारिका २८,००० मील की दूरी पर अलदेमाली भोगवली की देखी जा सकती है।]

भालकर निरोहित हो जाती हैं। नर-निर्माण और विनाश का यह क्रम चलता ही रहा है, चर रहा है और चरता रहेगा। विश्व-मरुत पर इन ताग्रिा, निहारिका-रूपी पायों का अभिनय चर रहा है, चरता रहेगा। नये पात्र आने हैं, पुराने चले जाते हैं। इस अभिनय का न कोई आदि था, न कोई अन्त है। हाँ, एव-एव पात्र का आदि-अन्त अवश्य रहा है और रहेगा। विश्व में हम रहस्य का क्या बाला-इस गद्य की अनुमति गामने शीमते-शेमते-मरते एव प्राणों की अपेक्षा विद्वत्ता अधिक रोमाञ्चकारी है।

यह गद्य अनुमति की ही कल्प है। हमारे विश्व के जन्म-जीवन-मरण का इमारा मान, अधिमान हमारे मस्तिष्क की उपज ही तो है। विज्ञान उसे ओम् देता है जहर, रिक्त उस पर्वत को दबने के लिए एक बीटी-जिलनी घड़ी ओम् भी तो उगवे पाय नहीं है।

००० ००० ०००

हमारे विश्व की आयु का तो ऊपर कुछ पत्रा क्या; पर यह है जितना बच, जितना रिमाऊ-इमे नाया है जिमी ने? अवश्य ही, हमें सामन भगवान ने अपने परानों में नाया था..... पर इस युग के यन्त्रियों की दूरबीने १,८६,००० मील प्रति सेकेंड चलनेवाले प्रमाण के क्रांति-अरवों वर्ष की इया भी नापने लगी है। चार वर्ष पूर्व इस विमान विश्व में दृष्टि दीने का कार्य प्रारम्भ करनेवाला,

पेंगेमान की दूरबीन ने तो कई नयी बातें गोज निगरी है, जिनमें हमारे विश्व के नाप का पत्रा चरता है। गवने प्रो बान तो हमने यह की है कि, विश्व को नापने के हमारे पीते को ही गन्त साधन कर रख दिया है।

पहले जिस दूरी को ज्योतिर्विद एक अरब प्रमाण-वर्ष मानते थे, वही दो अरब प्रमाण-वर्ष पायी गयी है। नाप-रह के इस गुहार के कारण हमारे विश्व का नाप, जो हम पहले मानते थे, उगने दुगुना हो गया है। नाप बड़ा नहीं है, बल्कि पहले का नाप गलत साधन होकर गले नाप पहले की अपेक्षा दुगुना छिड़ हुआ है। यह क्या नाप हमारे सारा-गुज के पत्र के सारा-गुजों पर ही लागू होता है।

पहले की १०० इंच व्यास वाली दूरबीन की उपग्रह यन्त्री २०० इंच व्यास वाली दूरबीन में ऐसे कम प्रमाण-मानताओं को दिनामा है, जिनमें विश्व का मानचित्र बनाने पर, विश्व की विभिन्न निहारिकाओं की पारम्परिक दूरी को गही नापना सम्भव हो सारा है। कौन कह सकता है कि, २०० इंच के बाद ४०० इंच व्यास की दूरबीन के बन्नी आने पर, यह माप-रह भी गन्त न हो जाये? अगरी प्रमाण-वर्षों में नापे जाने-वाले विश्व का गली नाप-गही उग्र-पिर भी विज्ञान के लिए कोट्टर-प्रद तो है ही। अपने इस विश्व की देमने-गमने और उनका कुछ भी परिवर्तन प्राप्त करने में गवमुच ही, जितना आनन्द है!

★



भयानक भयानक प्रतिशोध

गुप्त गिर के रह प्राण उपामक भवेरकद मेवाणी की एक लोक-वार्ता का संक्षिप्त हिन्दी-रूपान्तर

★

एक हजार वर्ष पूर्व, पाटन महानगरी के सरिता-तीर पर मध्याह्न के समय दो रमते जोगी भ-जाने कहीं से आ उतरे। उनके तन में तेज था और मन में मगद के भोक्ति-साधनों के प्रति निर्गुण उपेक्षा थी। मोना उनकी दृष्टि में मिट्टी के समान भी न था। रान और जगहूर की बात पूछे। वे भोग का जग-आवन का रोग जान कभी का त्याग चुके थे। जीवन में जाने कर, अनजाने उनके कोई दोष हो गया था, जिसने प्रशान्त के निमित्त के समस्त तीर्था के पुण्य-भरावरों की बारम्बार शरण ले रह थे।

दोनों साधुओं की वाया-भाया अयन मोहिनी थी। उनमें से एक, जो कथ में वनम्भ था, अथा था। वह उसे प्रच्छन्न नैत्र प्राप्त थे, जिनके द्वारा अथा भी शिराङ्गन हो जाता है। दूसरा साधु शान में नहीं, पर बाहुनट में अद्वितीय था।

जिस सरिता-नट पर ये दोनों साधु स्नान

कर रहे थे, वहाँ समीप ही एक पुढमदार अनाई घाटी का पानी पिगने का प्रयत्न कर रहा था। विन्दु घाटी जग के निकट जागी हो नहीं थी। पुढमदार ने कुछ होकर अयन निर्दयतापूर्वक उस घाटी को तीन-चार धातुक मारे। धातुक की आवाज सुनकर वयवान अथ तापन का हृष्य कथा में भर आया और वह शीघ्र में वाग-“यदि यह घाटी मेरी जानी, तो इस संयम को मैं मार दान्ता।”

“किमिति?” छाटे साधु न पूछा।

“इस घाटी के पेट में पचा-पाणी वम है। इस व्यक्ति ने धातुक से प्रहार के उसकी एक और पान दी है।”

पुढमदार ने यह बात सुन ली और अब वह नगर के राजप्रासाद में पहुँचा, तो अपने मारा वृत्तात् अपने स्वामी-वहाँ के महाराजा-वा बताया।

राजाज्ञा हुई कि, उन सत्रों को सादर महङ में ले आया जाये। राजा ने स्वागत-

संनार के उपरान्त साधु से नदी-तटवाले बचन का रहस्य पूछा, तो साधु ने सहज भाव से उत्तर दिया—“महाराज ! यह भेद मैंने अपनी पिता से जाना है।”

“यदि वह मस्तक निरखे तो ?”

“तो इस पद पर मेरा सिर न रहे।

साधु और धर्मिक अपना मस्तक सदैव अपनी हृदयों पर केवर चलाते हैं।”

“बड़ी होश। इन दिन बाद पोरी बल्वा देगो, तब आपनी हत विद्या की बरामान देगो आयेगो।”

“और, महाराज ! यदि मेरा बचन शब्द निरखे तो ?”

“तो आपा राजपाट और अपनी बहन आपकी दे दूंगा।”

इन दिन बाद सचमुच साधु की शान्ति खल हुई और मगर में शोर हो गया कि, योगी खीन गया, योगी खीन गया।

राष्ट्र का यह राजा राजपुत्र था। उसके लिए बचन की पूर्ति जीवन में बड़कर थी। अतएव, उसने अन्धपुर में आदिना भेजा कि, मेनाबाई के शुभ विवाह की राजनी तैयारियों की जायें। उत्तर मिला कि, मेनाबाई ऐसे अछे भूतछान में विवाह करता अर्थात् करता है, जिनने गोप-बसा का पना नहीं है।

साधु-बधु इस अग्रमान को न मह गये और उन्हें राजतमा में अपनी अवस्था और वन का परिचय देना पड़ा कि, दोनों साधु गोल्ही-गुल के मूरका हैं और निर्वा-सि राजपुत्र हैं। अनजाने में किये अपराध

मन्वीन

के प्रायश्चित्त में मना ने क्षमा की थी जो तैयार किये द्वारा जा रहे हैं।

राजा इनका परिचय पारर प्रमत्त हुआ। बड़े साधु ने कहा—“महाराज ! मैं तो अथाय बहमनारी हूँ—मर्जी हो, तो मेरे छोटे भाई को अपना बामाना बनाइये।”

बनी हुआ। छोटे साधु का, जिनका नाम राजा था, मेनाबाई ने रिपाट हो गया।

कालान्तर में मेनाबाई की योग ने एक पुत्र-रत्न उत्पन्न हुआ। उन समय एक ज्योतिषी साहजिक प्रभूतिगुह के बाहर बैठा था, ताकि सिन्धु-जन्म पर तत्काल समय जानकर अपना गणित निशा सके। सिन्धु दागो की समावधानी के कारण पंडित की गूचना देने में दो घंटे की देर हो गयी। इसका प्रभाव ज्योतिष की गणना पर भी पड़ना ही था। और गणना करते ज्योतिषी ने यह बताया कि इस सिन्धु का दर्शन इसी पिता के लिए मृत्यु का वाहन होगा।

परिणाम में, मेनाबाई ने अपने मातृ हृदय को बन्ध कर उन बालक को घुरवान वन में चारा दिया।

जिन अथवा बालक रत दिया गया था, उसने पाग हो एक सिट्नी अपने दो नवजात सिन्धुओं को पाली थी। इन तीनों सिन्धु की अनहम और भूरा ने रोष देना उनके मन में दया उदयी और उनमें इस मानव-सिन्धु को अपना राजदान दिया।

घोरे-घोरे यह बापन उन दुगुल सिंह-शायकों के मध्य, गिट्नी का पनवान कर

बड़ा होने लगा। एक दिन दो पक्षिक उस मार्ग से निकले। उन्होंने मनुष्य और पशु का यह अद्भुत प्रेम-मिलन देखा, तो विस्मित हुए और उस बालक को अपने साथ उठा लाये।

राज-दरबार में वह बालक लाया गया। राजा ने इस रहस्य उद्घाटन के लिए बीज नामक उस बच्चे साधु से निवेदन किया—
‘महाराज! आप ही कुछ बताइये।’

बीज ने उस बालक को उठाया, तो वह सुरत चुप हो गया। बीज हठात् बोल उठा—‘मेरा हृदय गर-गर बर्फ बनता जा रहा है। अवश्य ही यह बालक मेरे वश का है।’

बीज मरने पर वास्तवि-मत्ता ज्ञात हो गयी। बीज बोला—‘यद्यपि मैं अपने वश-पुत्र को पहचानने में बलती घर सपता हूँ? इस शिशु के रोग-रोग पर मेरे सोलवी-कुल का नाम लिखा हुआ है। यह मेरे भाई का होनहार सपूत है।’

उसने उस बालक का नाम मूलराज-सोलवी रख दिया।

मूलराज के दसौ क्वाकाल में कच्छ के केराकोट नामक रम्य राजनगर के अधिपति वीरवर लाखा फुलाणी की कीर्ति चारों ओर फैली हुई थी। सेनावाइ से विवाहित राज और उसका बड़ा भाई बीज द्वारा जाते समय दसौ लाखा की

सीमा में से निकले। बीज का नाम लाखा की सभा में पहुँच चुका था। अपने यहाँ इस प्रकार उन्ह अनाहूत आया देख लाखा प्रसन्न हो गया और उसने दोनों को रोक लिया। बीज के कार्य-बलापो के चमत्कार से लाखा इतना प्रभावित हुआ कि, उसने अपनी बहुत रायाजी का ब्याह राज से कर दिया।

रायाजी गर्भवती हुई और सुभद्रा के पेट से भानो अभिमन्यु जन्मा हो, इस प्रकार एक पुत्र का जन्म हुआ। उसका नाम

लाखाइश रखा गया। इन दिनों उसका पिता राज उसके ननिहाल में ही रहता था। बात-बात में एक दिन उसकी अपने सारे लाखा से अनवन हो गयी। यह सोचकर कि, मैं अपने समुदाय की रोटी खाता हूँ, जो अपमान भरी है, वह लाखा का नगर छोड़कर अपनी प्रथम पत्नी

सेनावाइ के नगर पाटन चला गया।

राज के चले जाने से लाखा को बड़ा पछतावा हुआ। रायाजी का वियोगवत रुदन देखकर लाखा का मन पिघल आया और वह पाटन की ओर संसन्ध चला। नगर के बाहर उसकी राज से भेंट हुई और वह दूर से चिल्लाया—‘हे राज, रायाजी तेरे लिए निरन्तर रोती है। मेरे अपराध क्षमा कर और केराकोट लौट चल।’ किन्तु राज ने लाखा की



[कवेरचंद मेघाणी]

वात इसलिए न मगो कि, वह मेना के साथ आया था। राज ने लामा को ललकारा। दोनों में युद्ध हुआ और अन में राज को अपने प्राणों का बलिदान देना पड़ा। रामाजी विधवा हो गयीं। उसका विरह-विलाप अर्ध-अम्बर में छा गया।

लामा के लिए अपनी प्रिय बहन का यह दारुण दुःख असह्य हो गया। अपने अपराधी मन को शांति देने के लिए रामाईश का वह बड़े प्यार से लालन-पालन करने लगा। दुःख-यश के चढ़ते चढ़ते चौद की तरह रामाजी की गोदों का चौद रामाईश दिन-प्रति-दिन बढ़ने लगा।

एक दिन रामाईश ने अपनी माँ से पूछा—“माँ! मेरे पिता की हत्या किसने की?” माँ ने लामा और राज के युद्ध का हाल सुनकर रामाईश अपने पिता का बदला लेने की तैयारी हो गया। उसकी माँ ने उसे समझाया कि, तुमने अपने मामा का अप्रत्याशा है, अतएव हम-तुम उसके शत्रु हो।

रामाईश अब रात-दिन चिन्तित रहने लगा कि, अपने पिता का प्रतिशोध कैसे लिया जाये? अनेहिलपुर (पाटन) में उसका सौतेला भाई मूलराज सोलही अपने पराक्रम की प्रशिक्षण रहा था। रामाईश ने अपने उस भाई के सहाय्य से मामा लामा की मार डालने का आयोजन किया।

उसकी माँ रामाजी ने उसे बहुत समझाया, परन्तु वह न माना और एक रात लामा की पूर-भाट नामक घाटी पर

चढ़ा कर, रातों-रात अनेहिलपुर जा पहुँचा। राजदुर्ग के बाहर से ही उसने ओर से पुकारा—“मूलराज, भाई मूलराज!”

रात्रि का समय था। सब लोग नींद की मगुर सोद में बेसुध थे। रामाईश ने पुन पुकारा—“मूलराज, भाई! अपने पिता का प्रतिशोध लेना रोग है और तुम इस प्रकार नींद में बेसुध पड़े हो?”

दुर्ग के राजनौरण पर अंधे तपस्वी बृद्ध बीजराज का आवाग था। अर्द्धरात्रि में यह आवाज सुनकर वह बाहर निकल आया और बोला—“यह तो मेरे प्रिय पुत्र की वाणी है।”

“बापूजी! आप सोमें थे क्या?”

“मैं कैसे सो सकता हूँ, बेटा! अपने भाई की स्मृति को साकार देखने के लिए मैं आज पिछले अठारह वर्षों में एक-एक पल गिन रहा हूँ।”

अब तब मूलराज भी जग गया था। दोनों भाई आदुलतापूर्वक मले मिले। रामाईश ने कहा—“भाई! अपने पिता का बदला लेना है।”

“बदला! मामा ने! तेरे आश्रयदाता से?” मूलराज ने विस्मित हो पूछा।

“बिता न करो। मैं तुम्हें इसी लिए निमन्त्रण देने आया हूँ। सोमवार के प्रभात में बेराकोट के प्रमुख शिवालय में मामा पूजा करने आयेंगे। उसी समय हमारा महारथ जायेगा। प्रव्रज मन जाना, भाई! तुम पिता की ओर से आश्रमण करने आओगे और मैं मामा की ओर से

उत्तरा उतर दूंगा। मैं सदैव उनकी रक्षा में आगे-आगे चलूँगा। अपने बाणों के समक्ष, अबली की चट्टानों के समान अटल मेरे सीने को देखकर, तुम वही विचलित मत हो जाना।”

मूलराज और राखाइश की बातें सुनकर उनका ताऊ अथ तापस बीजरज प्रसन्न हो गया और उसने दोनों को गले लगाकर आशीर्वाद दिया।

निश्चित समय पर सोमवार के दिन लाखा महादेव के शिवालय में पूजा के लिए सेना-सहित आया। जब वह पूजा-घाट में तल्लीन था, मूलराज सोलकी की सेना ने आगमन कर दिया।

दोनों सेनाओं में घमासान युद्ध होने लगा। किन्तु लाखा शिवमूर्ति के सम्मुख पूजा के अपने आसन से न हटा।

जब लड़ते-लड़ते सोलकी सैनिक उसके अति निकट आ गये, तो वह धितव्य हुआ, क्योंकि पूजा में वह निरस्त बैठा था। उसने सैनिक इधर-उधर उलझे थे, मूलराज समीप आकर उसे बारम्बार ललकार रहा था। तभी राखाइश ने निवट आकर कहा—“मामा, मैं आपके अन्न पर पला हूँ। प्राण रहते आपकी रक्षा करूँगा।”

लाखा और राखाइश तल्वारें लेकर मूलराज के सैनिकों पर टूट पड़े। किन्तु विजय मूलराज सोलकी की ओर थी। लाखा के बीर मृत्यु का वरण कर चुके थे।

मूलराज सोलकी ने तभी तल्वार खींच-कर ललकारा—“मामा ! सावधान !”

इसके पूर्व ही लाखा की रक्षा में राखाइश के तीर मूलराज की ओर उड़ चले।

मूलराज ने चिल्लाकर कहा—“भाई, भाई राखाइश !”

राखाइश ने बाणों की वर्षा करते हुए उत्तर दिया—“भाई नहीं, दुश्मन कहो ! दुश्मन ! और, खुलकर वार करो !

मूलराज ने लाखा पर प्रहार किया, परन्तु राखाइश बीच में आ गया। भाले के प्रखर प्रहार से राखाइश की देह बड़े बृक्ष के समान घराशायी हो गयी। मूलराज न दुगुने क्रोध से वार निमा। इस वार लाखा बीर-व्रति को प्राप्त हुआ।

अपन पिता के वंशी से बबला ले मूलराज सोलकी राखाइश के लिए शोक मनाता हुआ अन्वहिलपुर रवाना हो गया।

युद्ध-क्षेत्र में मामा लाखा और राखाइश की याद रख देह पड़ी थी। दोनों बड़ी-दो-पड़ी के मेहमान थे। मामा तड़प रहा था, पर पापाप-से कठोर प्राण छूटते ही नहीं थे। उन्हें अब भी सत्कार के युद्ध-क्षेत्र का मोह था। राखाइश भी रक्त के फौव्वारों में छटपटा रहा था।

तभी राखाइश ने देखा कि, एक बड़ी-सी चील मामा की ओरों निकाल ले जाना चाहती है। उसने चील को उड़ाने के लिए अपना हाथ उठाना चाहा, पर हाथ तो बड़ जगह से कटा था। किसी प्रकार अपनी बटी पसली का एक अंग चील को दिखा-कर उसने मामा की ओरों को रक्षा की। और, काल आने पर दोनों चल बसे।



‘रियताइरन’ में प्रकाशित भी डेनियल हम्बेल के एक लेख के आधार पर

★

दुसरे पाठ दे हम मानचित्र को देखिये।

६, दक्षिण अमेरिका का यह एक गणप्य देश आज कुछ भी बरों में सत्तार के देशों में एक ‘सिड-देश’ बन गया है—उगी की भौति, जिये मगवान छप्पर फाटार बन दे। इस देश को घसी फाटार आज के जमाने का ‘बहता वाला सोना’—तेल—मिला है। इस देश का नाम है, वेनेज्वेला।

गाम्बर, १९५० के ‘मक्नीत’ में आप ऐसे ही घरदान की कृपा से समूह कुन्त का हाल जान चुके हैं; पर वहाँ की समृद्धि अतिरागित बेचल वहाँ के लोग की है। वेनेज्वेला में जो यह ‘बहता वाला सोना’ मुदरमुदर मये भवानों, बीजों से भरी दूगानों, गड्ढों पर मोटरों की भीड़, घर-घर टेलिविजन व मक्कागानों में मराय के दोरों के रूप में पद-पद पर प्राद हो रहा है। मानों किसी मनुष्य का वही मनी बोलत गाऊ-उगाऊ बंटे के हाथ लग गयी हैं और वह पारों और भावी साह-सार्थी की घोंगल मक्का रहा है।

दक्षिण अमेरिका के देश—फारामा, ब्रिटिश गिनी, फॉर्मोसिया, फ्रांज़ोड—इस देश की सीमा पर है। १९४८ में जब ब्रिटिश

फोर्म्बरा मर्रांवे-नट पर आया था, तो उनके इस देश में फोड़ी दुई नहरों और छिछरी झीलों को देगावर, इनके सौंदर्य से मूग्ध होकर, इसे नाम दिया था ‘वेनेज्वेला’, अर्थात् ‘छोटा घेनिस’। उगे क्या पता था, वरतों पर का पानी नहीं; बल्कि इससे गर्भ का तेल अत्यन्त ही किसी दिन इसे बहा बनायेगा।

आज वहाँ प्रति दिन १७ लाख घंरत—अर्थात्, ७ करोड़, १४ लाख गैलन—तेल का उत्पादन होता है। वेनेज्वेला दुनिया में सबसे एगरा बड़ा तेल उत्पादन और उतारा सबसे बड़ा निर्यात करने वाला है। उससे बड़ा तेल-उत्पादक गैरत अमेरिका है। वेनेज्वेला में ११,००० तेल के कुएँ हैं, जिनमें दुनिया का ११ प्रतिशत तेल निर्यात होता है। वहाँ के १७ लाख घैरलों के परिवार का इसी में अगुमान बन लीजिये कि, गारे हिदुगाल की पारमा जम्बरत ७०-७५ हजार घंरत में अधिक नहीं है।

वेनेज्वेला के तेल के कुएँ देश के दो भागों में बिभरा है। एक तो मर्रांवे-नट के जम्मागों में एक झील के बीच, दूसरा पूर्वी प्रदेश में। देश की राजधानी है,

सराकास-२,५०० फुट की ऊँचाई पर पहाड़ों के बीच-जहाँ तक सुख, सुविधा और गति से पहुँचने के लिए २५ करोड़ रुपया खर्च कर शानदार सड़क बनायी गयी है-३० महीने के भीतर।

अब भी वहाँ की एक-तिहाई आबादी पहाड़ी ढलानों पर लकड़ी की ओपडियो में बसती है, किन्तु भवन-निर्माण की ऐसी प्रगति वहाँ की राजधानी में चल रही है, जैसी आज तक नहीं देखी गयी—सैकड़ों-हजारों मकान बन रहे हैं। इमारतों सामानों से लदी कारियों से सड़कें भरी पड़ी हैं—कहीं होटल बन रहा है, कहीं नाचघर, तो कहीं 'स्विगिंग-गूल'। अभाव-धुंध 'प्रगति' हो रही है। वहाँ की राजधानी सराकास में ही नहीं, वेनेज्वेला देश के किसी भी भाग में पदार्पण कीजिये, तो ऐसा मालूम देगा कि, सरी-सूरी किसी पैली का मुँह खुल गया है और चारों ओर मौज शोक की धूम मची हुई है।

वेनेज्वेला-निवासी तेल के सिवाय और किसी वस्तु के उत्पादन से खास सरोकार नहीं रखते। धरती के गर्भ से प्रसू 'काले बहते सोने' को धूस-धूस कर देश-देशांतर में भेजते हैं और बदले में अपनी सब तरह की आवश्यकताओं का आयात करते हैं। करोड़ सवातीन अरब रुपये की चीजें वे हर साल आयात करते हैं—मशीनरी, मोटर, रेफ्रिजरेटर, रेडियो, सिलाई की मशीन, हवाई जहाज, लोहा, 'कॉन्सुड' दूध, लड्डू, सोडा, फल, कागज, शराब, कपड़ा, सिगरेट,

सभी-कुछ। २२ करोड़ रुपये की अमरीकी मोटरे ही वे हर साल खरीदते हैं और जबहु-जबहु चींटियों की तरह उनकी लम्बी-लम्बी पंक्तियाँ लगी रहती हैं।

जहाँ-कहीं भी जाइये, जिस-किसी से जो-भी बात कीजिये, वह होगी तेल के बारे में ही—जैसे वहाँ के वातावरण में तेल समाया हुआ हो। जहाँ ११,००० कुएँ जर्हिनस तेल उगल रहे हो, जहाँ के प्रायः सभी उस तेल के गुलाम हो, वहाँ और बात हो भी क्या सकती है?

पर देश के समझदारों को यह गुलामी चिंतित किये हुए है। किसी दिन यह स्रोत बंद हो गया, तो? अनुमान तो है कि, जमी ५० वर्ष तक यह स्रोत अबाध रूप से बहेगा। पर देश का जीवन ५० वर्ष का ही तो नहीं होता? अतः अब वहाँ खेती का प्रचार किया जा रहा है—खाद व अच्छे बीज बाँटे जा रहे हैं। खेती भीतरी भागों में सम्भव है, पर वहाँ का जलवायु ऐसा है कि, वस्ती बढ नहीं पाती—सभी

[वेनेज्वेला का भौगोलिक मानचित्र]



महरो की ओर बढ़ते चले आते हैं। वहाँ वे जीवन का आनंद भी ता बहुत है।

ऐसे 'धनी' देश की छोटी आवादी उसी मोति हैं, जैसे सम्पन्न पिता ने एक-दो सतान का ही होना। वेनेज्वेला की आवादी बढ़नी चाहिए, बाहर से लोगों को आकर वहाँ बसना चाहिए। सफेद चमड़ीवाले वहाँ आकर वहाँ के भीतरी भू भागों में बसते नहीं, रंगीन चमड़ीवालों को परे रखने का ही प्रयत्न किया जाता है। गोरी चमड़ी, भूरे बाल और नीली आँखें वालों ने बसा-बसाया देश देखने की महत्वनाशी सरकार ओरो के वहाँ आकर बसने में रोड़े ही अटवानी रहती हैं।

जहाँ धन, वहाँ भय। जहाँ भय, वहाँ पहरा। सारा देश गानो मिलिट्री-बैम्प हो। देश में पाँव रखते ही, वहाँ के जीवन में घुले-मिले, पद-पर पर छावी शस्त्र व पिस्तौल धारी, निरपराध पुलिस-वर्मचारी पड़े हुए हैं। सबकी बड़ी जाँच रखते हैं। कोई वहाँ तेल-देवता का दुरुस्मन तो नहीं है न? कोई वहाँ दूर तक फेंकी लम्बी तेल की 'पाइप-लाइन' में छेद करने की फिराक में तो नहीं है न? ३२-३३ पृष्ठों के मोटे दैनिक पत्रों का एक-एक पन्ना बगैर से सेंसर की हुई हॉली है। ५ हजार राजनैतिक नजरबंद हैं—एक टापू में। राजधानी का विरवविद्यालय पिछले दो वर्ष से बंद कर दिया गया है।

ऐसे देश का शासन भी ऐसा ही है। ४० वर्ष का एक पौजा बर्नल पीरेज जिमेनेज,

डिप्टेटर बना बैठा है। १९५९ में चुनाव हुए थे, उसका विरोधी-दल चुनाव में जीता था, पर निर्वाचन के फल की परवाह किये बिना वह आज भी एक्छन राग्य कर रहा है। वह तो साफ कहता है—“स्वतंत्रता का क्या मतलब है? देश की आर्थिक स्थिति सुधारने के लिए तो बठोर शासन चाहिए।”

उसके सहयोगी भी उसके-जैसे ही हैं। सारा देश अपरिपक्व बूढ़ेवाले व्यक्तियों से भरा पड़ा है। जीवन के मूलमूल सद्गुणों का तो वहाँ पता ही नहीं। पुराने निवामी तो अपनी गरीबी के कारण दुर्गुणी और नये कमाऊ पूत अपने धन के कारण दुर्गुणी। नवजात शिशुओं में ७० प्रतिशत मिली जुली रक्त के होते हैं। ऐसे देश को वहाँ का 'बहता वाला सोना' सद्गुण प्रदान कर पायेगा क्या?

वेनेज्वेला में अमेरिका का १५ अरब रुपया लगा हुआ है, जिसमें उसे सालाना सवा अरब की आमदनी है। अमेरिका अपने तेल को जितना हो सके, बचाकर रखना चाहता है—जितना हो सके, उतना वेनेज्वेला के कुओ को सोच रहा है। वेनेज्वेला देश के हित की बात कोई नहीं सोच रहा है। ओरिनोको-क्षेत्र के छोटे, निकटस्थ गोनी के शास्त्रादृष्ट, कारोनी के जडप्रधान, वहाँ के प्राकृतिक गैस, मीने और हीरो को भी लोग भूते हुए हैं। फिर मीने करके स्वावलम्बी होने की बात ही क्या कोन सोचना-ममलना है।

भारतीय के नवीन चमत्कार



नवीन शल्यक्रिया के प्रकाश में सचरी के कुछ भद्दुन चमत्कारों का संक्षिप्त विवरण



दिसम्बर, सन् १९५२ की यह घटना है। बेरित में मारियस रेनार्ड नाम का एक लड़का किसी तिमजिली इमारत में नीचे गिर पड़ा। उसके गुद में भयानक घोट आयी। उसने शरीर से बड़ी देर तक इतना ज्यादा खून बहता रहा कि, उसे रोकने का प्रयत्न शीघ्र ही नहीं कर लिया जाता, तो उसकी मौत निश्चित थी।

रोगी की अवस्था अत्यन्त गम्भीर थी। डाक्टर कुछ देर तक तो आपस में विचार-विमर्श करते रहे और फिर मत में आपसरेखन करके मारियस के शरीर से गुद का सारा भाग—जो घोट लगने से बिल्कुल चढ़ा-बूढ़ हो चुका था—निकाल देने का निश्चय किया गया। लेकिन जब आपरेसन किया गया, तब डाक्टरों ने देखा कि, अपने जन्म के समय से ही मारियस के शरीर में सिर्फ एक ही गुदा था।

मारियस की मौ न अपन बच्चे की

जान बचाने के लिए डाक्टरों से अनु-रोध किया कि, वे उसके शरीर से एक गुदा निकाल कर मारियस के शरीर में जोड़ दें। डाक्टरों ने आपरेसन करके उसने शरीर से एक गुदा निकाला और मारियस के शरीर में जोड़ दिया। उक्त सारी क्रिया में कुल ६ घंटे लग, लेकिन रोगी अब सतरे से बाहर था।

न्यूयार्क में भी इसी तरह नवम्बर, सन् १९५० में एक आपरेसन हुआ था। एक महिला के गुद में खराबी थी और उसकी चिकित्सा के लिए उसे अस्पताल में भर्ती होना पड़ा। डाक्टरों ने आपरेसन करके किसी अन्य महिला के शरीर से—जिसकी हाल ही में मृत्यु हुई थी—गुदा निकाल लिया और उसे इस रोगिणी की गुद की जगह लगा दिया। परिणाम आशातीत रहा। कुछ दिनों बाद ही वह बीमार महिला बिल्कुल अच्छी हो गयी। उक्त आपरेसन के

५ दिन बाद ही उसकी स्थिति यह थी कि, वह बिना तकलीफ उठ-बैठ सकती थी। २० दिनों बाद तो वह अपने-आपको चलने-फिरने में भी समर्थ पा रही थी और उसके लगभग १ सप्ताह बाद वह पूर्णरूपेण स्वास्थ्य-प्राप्त कर चुकी थी।

शल्य-चिकित्सा-विज्ञान (सर्जरी) के क्षेत्र में इन्हीं तरह के और भी न-जाने कितने नये और सफल प्रयोग इधर हुए हैं। एरिजोना में मई, सन् १९५० में एक लड़का आग की लपटों से बुरी तरह झुलस गया। उसके बचने की कोई उम्मीद नहीं रही। लेकिन तब भी, डाक्टरों ने उसके शरीर पर एक नया प्रयोग और परीक्षण शुरू किया। किसी दूसरे व्यक्ति के शरीर का बमझा लेकर, जहाँ-जहाँ में वह जल गया था, वहाँ-वहाँ ऊन्होंने उसे जोड़ना शुरू किया और इस नवीन प्रयोग में उन्हें सफलता भी प्राप्त हो गयी।

जिस तरह गुलाब के पौधे की एक बलम काटकर, दूसरी जगह लगाने पर वह उग आती है और उसमें 'जीवन' पुनर्वाही हो बराम रहता है, ठीक उसी तरह, दूसरे व्यक्ति के शरीर में काट कर लिये हुए चमड़े की भी, जले हुए व्यक्ति के शरीर में इस तरह आत्मसात् कर लिया, जैसे वह वही 'पराया' रहा ही न हो! अपने स्थान पर, लगातार रक्त के मितन में उक्त नया चमड़ी भी मुर्दा नहीं हो पायी और धीरे-धीरे शरीर का ही एक अंग बन गया—पूर्णतया सजीव और कार्यरत!

नवनीत

सर्जरी के क्षेत्र में इस तरह के प्रयोगों पर विशेषज्ञों का ध्यान सिर्फ एन्-बोयार्डे सदी पूर्व ही गया है। इस दिशा में सबसे पहले, सन् १९०६ में, 'व्यूड-बैंको' (रक्त-कोषों) की स्थापना हुई थी, जब विशेषज्ञ अपने अनुमान और नये परीक्षणों में इस निष्कर्ष पर पहुँच चुके थे कि, एक व्यक्ति के शरीर का रक्त आवश्यकता पड़ने पर किसी दूसरे व्यक्ति के शरीर में भी पहुँचाया जा सकता है। उक्त खोज के लगभग ३९ वर्ष बाद, सन् १९४५ में, चतु-कोषों की स्थापना हुई और अब तो हड्डों व शरीर के अन्य अवयवों का भी, विशेष तापमान में स्थित सग्रहालयों में सहे रखा जाने लगा है।

कभी-कभी ऐसा होता है कि, हृदय के निवृत्त, किसी व्यक्ति की रक्त-प्रवाहिनी शिराओं में खरबों आ जाने में, उसके हृदय की घड़घड़ाने रुकने लग जाती है। यदि ऐसे व्यक्ति की तत्काल यथोचित चिकित्सा न की जाये, तो उसके जीवित बचने की कम उम्मीद रहती है।

न्यूयार्क में डाक्टर ब्राड एस ब्रैक के पास एक बार एक ऐसा ही मामला आया। हृदय की घड़घड़ाने रुक जाने से एक अन्य डाक्टर अपनी जिदगी की आखिरी घड़ियाँ गिनते हुए उनकी आप-रेसन-मेज पर लेटा हुआ था। लेकिन हृदय-रोग विशेषज्ञ डाक्टर ब्राड मरीज की यह स्थिति देखकर विशेष चिंतित नहीं हुए। हृदय का आपरेसन करते हुए

उन्होंने-जिस रक्त-प्रवाहिनी शिरा के रुक जाने से उक्त सारी बड़बड़ी पैदा हुई थी-उसे काट कर उसने स्थान पर एक नयी नली जोड़ दी। फलतः देखते-ही-देखते, बीमार के हृदय तक शरीर की रक्त-संचालन-क्रिया पुनः आरम्भ हो गयी। डा. क्लाड ने सतोष की साँस की-स्पष्ट था कि, बीमार अब खतरे से परे है।

कई बार वन्चेदानी में सराबी आ जाने से, औरतों में गर्भ धारण करने की क्षमता नहीं रह जाती।

लेकिन 'गले मेडिकल कालेज के प्रोफेसर, डाक्टर हेंरी ग्री तथा डाक्टर व्हाइटनी ने इस सम्बन्ध में बड़े ही आशाजनक परीक्षण किये हैं। अब निपट भविष्य में ही, शल्य क्रिया से औरतों की वन्चेदानीयों की बदला-बदली सम्भव हो सकेगी और इस तरह किसी भी औरत की गर्भ धारण करने की अक्षमता को आसानी से दूर किया जा सकेगा।

इसी डाक्टर भी इस दिशा में काफी आगे बढ़ चुके हैं। मास्को स्थित 'चिकित्सा-विज्ञान एकादमी' के डाक्टर वी पी डेमीखोव ने वर्षों की कठिन तपस्या के बाद आपरेशन-द्वारा बच्चों के 'हृदय और 'पेफडे' की, आपस में बदला-बदली करने में सफलता प्राप्त कर ली है। एक शरीर से दूसरे शरीर में स्थानांतरित होने के

बाद भी उक्त हृदय और पेफडे पूर्ववत् ही कार्य कर रहे हैं।

कोलम्बिया विश्वविद्यालय के 'मेडिकल कालेज' में भी वहाँ के कुछ प्रमुख डाक्टरों ने बिस्लियो के दाँत एक-दूसरे के दाँतों से बदला-बदली करके देखे हैं और परिणाम सदैव आश्चर्यजनक रहा है। कई बार तो उन्हें किसी बिल्ली की ऊपर की दाढ़ निकाल कर नीचे लगा देने में भी सफलता मिल चुकी है।



[जीवाणु सिखात के सुप्रसिद्ध विश्लेषक राबर्ट कोश]

इसी तरह, मनुष्यों के मस्तिष्क तथा हृदय परिवर्तन के भी अनन्त नये प्रयोग चल रहे हैं। आपरेशन कर किसी मृत व्यक्ति की आँख को पुतली किसी अर्धे व्यक्ति की आँख में जोड़ कर उसे भी देखने योग्य बना देने की कहावती तो अब बहुत पुरानी हो चुकी है। चिकित्सा विज्ञान ने तबसे बहुत प्रगति की है। इन दिनों जो अनुसंधान और परीक्षण चल रहे हैं, यदि वे सफल हो गये, तो फिर निश्चय ही किसी दिन ऐसी स्थिति भी ससार के सामने आ सकती है, जब इस धरती पर कोई व्यक्ति अपना अथवा जसुंदर नहीं रह जायेगा।

चिन्तु इन नये प्रयोगों के रास्ते में कोई रुकावट न हो, ऐसी बात नहीं। प्रकृति पर इंसान की जीत या यह महान् स्वप्न उतना सरल नहीं है, जितना सोचने

पर प्रतीत हो सकता है।

इन प्रयोगों के रास्ते में जो सबसे बड़ी बाधा आज अनुभव की जा रही है—वह यह है कि, कई बार शरीर किंगो 'पराये' तत्व अथवा अवयव को स्वीकार करने या उसे आसानी से अपना करने को तैयार नहीं होता। 'अपने' और 'पराये' के उक्त भेद के बीच कभी-कभी, किसी दूसरे व्यक्ति के शरीर से लेकर जोंग हुआ अंग कारगर नहीं हो पाता और उस स्थिति में वह लाभ के स्थान पर हानि ही पहुँचाया करता है।

पिगी मशीन का एक पुर्जा रागव हो जाने पर, आप उसी नाम का दूसरा पुर्जा आसानी से, बाजार में तुरीय घर ला सकते हैं। लेकिन एक मनुष्य के हृदय के किंगी भाग में खराबी आ जाने पर, उसे काटकर, उसकी जगह ठीक उसी नाम का दूसरा हृदय आप वहाँ में लायेंगे? ऐसा आप कर नहीं सकते कि, जिस नाम का हृदय वहाँ पर जोड़ना है, ठीक उसी नाम का हृदय जोड़ने के लिए हजार-दो हजार आदमियों का कारगर बन दें अथवा हजार-दो हजार ताजे नव आपों अपने उस प्रयाग के लिए प्राप्त हो सके। छाटी-छाटी नमा और नाडियों में निर्मित

मानव-शरीर की मशीनरी लोहे और इस्पात की छोटी-मे-छोटी और बड़ी-मे-बड़ी मशीनरियों से भी अधिक पेचीदा है।

चिन्तु धुन के घने मानव ने इनकी आसानी में पराजय स्वीकार करना नहीं सीखा है। चिकित्सा-शास्त्र के विरोध और वैज्ञानिक इन अडचनों की विविध मात्र परकाह न करते हुए अपने प्रयोगों में पूरी लग्नयता से जुटे हैं। उन्हें अपने उक्त प्रयोगों में पूर्ण सफलता प्र मिलेगी—मिलेगी भी या नहीं—इस सम्बन्ध में अभी कुछ नहीं कहा जा सकता। लेकिन क्यों न ये जा स्वप्न देख रहे हैं—कौन दावा कर सकता है कि, वह कभी पूरा होगा ही नहीं?

मानवता की मेधा में तत्पर इन उप-स्त्वियों को अपनी साधना की शक्तता का पूर्ण विश्वास है। निश्चय ही एक दिन गता भी आवेगा, जब मानव-शरीर के विभिन्न अवयव—हृदय, पेशे, गुदा, निम्बी, धमड़ी, हड्डी, धमनियों, छाटी-बड़ी नसे और रक्त-प्रवाहिनो सिराएँ तर-रक्त-कोष (प्लेट-लेट) की तरह ही बड़े-बड़े अणुताण में समूहीत पिये जा सकेगे और जिन किंगी व्यक्ति को इनमें से जिन चीज की आवश्यकता होगी, उसे वह आसानी से उपलब्ध हो जायेगी!

✱

दो बार प्रधानमंत्री

प्रास की पार्समेंट में एक सदस्य लम्बी बहस मुनने-मुनने को गया। जब वह जगा, तो उसके मित्र ने बताया कि, द्रवनी देर में वह दो बार प्रधान मंत्री बनाया जा चुका था।

—'परी मैच' (फार्मोमी साप्ताहिक) से

✱



महासागर की जन्म-गाथा

डा. एस. के. कल्याणसुंदरम् द्वारा लिखित एक अनुसंधानात्मक लेख



हमारी इस पृथ्वी पर इतना पानी कहाँ से आया, इस प्रश्न का उत्तर देना बहुत कठिन है। यह बात तो ठीक है कि, भाप के ही ठंडो हो जाने से पानी की उत्पत्ति हुई होगी, पर यह कैसे हुआ कि, भूमि का कुछ भाग जल बन गया और कुछ जल ? वे बड़े-बड़े सड़्ड, जिनमें इस समय पानी भरा हुआ है, कैसे बने ? सूखी जमीन कैसे निचली ? यह बहुत सम्भव है कि, जहाँ इस समय पानी है, वहाँ कभी थल रहा हो—थल और जल का जो अनुपात इस समय है, वह कालांतर में स्वयं ऐसा बन गया हो। पर ऐसा भी तो हो सकता है कि, किसी समय समस्त भूमंडल पर समुद्र-ही-समुद्र हो, थल का वही नाम भी न हो। भूमि पर इतना पानी तो इस समय है ही, जिससे समस्त पृष्ठ-तल ढक जाये। पृष्ठ-तल में थोड़ा-सा परिवर्तन होने से ही यह सम्भव है कि, समस्त थल-भाग पानी के नीचे आ जायें।

भूमि के थल-भाग की औसत ऊँचाई २,२५० फुट है और समुद्रों की औसत गहराई १३,८६० फुट। समुद्र-तल का

क्षेत्रफल थल-पृष्ठ की अपेक्षा २११-गुना से भी अधिक है। समुद्र-तल का क्षेत्रफल लगभग १४,४०,००,००० वर्ग मील और थल-पृष्ठ का क्षेत्रफल लगभग ५,५०,००,००० वर्ग मील है। इससे स्पष्ट है कि, समुद्र-तल से ऊपर जितनी भूमि है, उसकी अपेक्षा समुद्र-जल की मात्रा १३-गुने से भी अधिक है। इसके आधार पर यह बखूबी कहा जा सकता है कि, यदि भूमि की आकृति सुझोल मड़े की-सी होती, तो इसके समस्त भाग पर दो मील गहरा समुद्र फैला होता।

समुद्र के तल में थोड़ा-सा उठाव या गिराव होने से ही बहुत अधिक भौगोलिक परिवर्तन हो सकते हैं। यदि इस समय की अपेक्षा समुद्र-तल ६०० फुट कम हो जाये—अर्थात् यदि पानी ६०० फुट नीचे खिसक जाये—तो कास और इंग्लैंड एक-दूसरे से सयुक्त हो जायेंगे, एशिया और अमेरिका बर्हिग-डमरूमध्य पर जुड़ जायेंगे, भारतवर्ष और लका एग हो जायेंगे, पेपुआ और टिमोनिआ आस्ट्रेलिया से मिल जायेंगे एवं सिडनी से पेरिस और पेरिस से ब्रिस्बेन तक स्थल-

मार्ग से ही जाना सम्भव हो जायेगा। पानी के ६०० फुट दिसाने में १,००,००,००० वर्ग मीटर के लगभग नयी सूखी जमीन ऊपर निकट आयेगी।

पर यदि समुद्र का पानी २,००० फुट और ऊपर उठ जाये, तो भूमि का अधिकांश भाग पानी में विलीन हो जायेगा। महाद्वीपों की आकृति, रूप और विस्तार इस बात पर निर्भर है कि, महासागरों को कलहटियों चित्तनी गहरी हैं और चित्त प्रकार की हैं।

पृथ्वी के भौग-भिन्न इतिहास में बड़े-बड़े परिवर्तन हुए हैं। जहाँ इस समय हिमालय की आराधचुम्बी उसुग पाटियों हैं, यहाँ भी एक समय पानी यह रहा था। पृथ्वी के

ऊपर और धरा-भाग में अनेक बार विभिन्न हुआ। पर बड़े-बड़े महासागरों के सृष्ट बने, इनके अनेक रहस्यमय कारण हैं। कहा जाता है कि, भूमि का एक भाग टूटकर पुनर्बुद्ध हुआ और चट्टान बना, तो जो सृष्ट बने रह गया, वही पैगिफिका या प्रशांत महासागर कहलाया। पर यह कथना नहीं तो सत्य है, यह कथना कठिना है। सम्भव है,

नवनीत

कुछ सृष्ट इस प्रकार अवश्य बने हो, पर उनमें से बहुत-से तो अब तप मि-गुल मुँद भी गये होंगे।

प्रारम्भ में पृथ्वी लघुगोली और गोम-थी। तेजी से चकार राने के कारण इसने छेद मुँद अवश्य गये होंगे; पर बखतर नाचते रहते व कारण इसका नासपाती वा-मा आधार हो गया होगा। नासपाती की गर्दन व निचट समुद्र-भाग आकर जमा हो गया

मानव-मन

होगा। नासपाती की मोत पृथ्वी के समान निचली हुई दिशा में देती होगी। दूसरी ओर वा गोल गीटा भाग एक महाद्वीप बन गया होगा।

यह प्रारम्भिक समुद्र तो अब भी प्रशांत महासागर के रूप में विद्यमान है; पर उन प्रारम्भिक महाद्वीप के अटलटिक् और भूमध्य सागरों ने कई टुकड़े कर दिये हैं। अति प्राचीन काल में उत्तरी अमेरिका, ग्रीनलैंड और उत्तरी यूरोप, इन तीनों में मिला हुआ, एक बड़ा महाद्वीप था और यह महाद्वीप एक चट-भाग द्वारा एक दूसरे प्राचीन महाद्वीप से मजबूत था, जिसका नाम गोटवाना-लैंड रखा गया है। इस गाटवाना-लैंड में आजकल के

—अरत्तुचंद्र

FAMOUS

The Quth Minar,
Delhi

throughout

INDIA



कुतुब मीनार समय की चार की सहज करने
में सक्षम हुआ तथा अपनी सुन्दरता व शान्ति
के लिए प्रसिद्ध है।

काली इन्हीं कारणों से 'वेस्ट एंड की वॉच' की
भी प्रसिद्ध है—क्योंकि ये उच्चतम सामग्रियों
तथा कुशल कारीगरों द्वारा बननी हैं जो कि
भारत के बाजार की मांग को जानते हैं।

West End Watch Co.

BOMBAY • CALCUTTA

Write for FREE
Catalogue.

SONAR PRIMA SPECIAL
CENTRE SECOND

Patent Everbright Steel Rs 180



सौंदर्य निखरता ही गया—
ज्यों ज्यों रेक्सोना का
उपयोग किया...



...क्यों कि फैंडिल
मिले रेक्सोना से सोई
हुई सुंदरता जाग
उठती है !

इसलिए मिले रेक्सोना से सुंदर
बनना सम्भव आसान है—रंग
के दैनिक उपयोग से आप देखेंगी
कि आप की गिरावट गिन ५ गिन
क्याण्ड छत्र और मुलायम बा रही
है और आप का आँसू हल की
बाँटि सिल रहा है !

बड़े आकार में भी
मिलता है



रेक्सोना

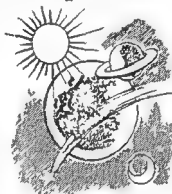
फैंडिल युव पद मात्र साबुन

• ५ दिन बिन्दु की मुलायम बननेवाले और त्वचा-दोष
केलों के पल विशेष निवारक यह साबुनकीपत्री नाम है।

रेक्सोना प्रोप्रायटरी लि० के लिए भारत में बन्दारा एजेंट

आ.ए. 120-24.543

अफ्रीका, दक्षिण अमेरिका, अरब, दक्षिण भारत और आस्ट्रेलिया, सब संयुक्त और सम्मिलित थे। दक्षिण यूरोप का अधिकांश भाग एक पुराने टेथिस समुद्र में डूबा हुआ था। इस टेथिस सागर का एक भाग उत्तर में यूरोप को एशिया से पृथक् करता था और दूसरा भाग उस स्थान पर फैला हुआ था, जहाँ आजकल हिमालय की श्रृणियाँ हैं। यह भाग भारत और मलया प्रायद्वीपों को, जो गोंडवाना-लैंड के भाग थे, शेष एशिया से पृथक् करता था। इस प्रकार भारत, यूरोप और अफ्रीका से पृथक्, जो उत्तर-पूर्वी एशिया था, वह एक विशाल द्वीप था, जिसका नाम 'अंगारा' है। अटलांटिक सागर तो एक



[ध्रुव के मरुभिन्ने से मिलन होगे हुए दृश्य
एक ग्रहों को व्यक्त करनेवाला एक चित्र]

शील के समान था, जिसे 'लारामी' कहा जाता है। यह प्रशांत सागर से स्वेज-स्थल-डमरूमध्य स्थान पर जुड़ा हुआ था। भौगोलिक इतिहास के माध्यमिक काल (मैसोनोइक युग) में पृथ्वी की ऐसी अवस्था थी। उस से अब तक तो बहुत परिवर्तन हो गये हैं।

इस समय निम्नलिखित सबसे बड़ा समुद्र

प्रशांत महासागर है। इस अकेले का क्षेत्रफल ६,७७,००,००० वर्ग मील है, अर्थात् हमारे समस्त चल-भाग से भी अधिक। इसमें बहुत-से द्वीप भी हैं, पर फिर भी इसने बहुत-से ऐसे भाग हैं, जो निवटस्थ महाद्वीप से भी २,५०० मील दूर हैं।

प्रशांत सागर अटलांटिक महासागर में अधिक गहरा है। इसका अधिकतम भाग

१४,००० फुट से भी

ज्यादा गहरा है।

५,२८० फुट का एक

मील होड़ा है,

अर्थात् अधिकांश

गहराई २७ मील

की है। बहुत-सी

जगह तो गहराई

और भी अधिक है।

पेरू-तट में थोड़ी दूर

पर समुद्र की गह-

राई २८,००० फुट

(५४ मील) है।

जापान के पूर्वी

तट से कुछ दूर

समुद्र का एक इतना बड़ा भाग है,

जो क्षेत्रफल में न्यूजीलैंड के बराबर

होगा। इसे 'टुस्कागेरा-द्वीप' कहते

हैं। यह २८,००० फुट से भी अधिक

गहरा है। सबसे अधिक गहराई फिली-

पीन के पूर्वी तट से कुछ दूरी पर एक

जहाज 'प्लेनट' ने मापी थी। यह गहराई

३२,०८९ फुट, अर्थात् ६ मील के लगभग

को निकले। प्रवाल महासागर के बेहरींग-डमरूमध्य की गहराई केवल ३०० फुट है। एशिया और फिलीपीन के बीच का समुद्र और फिलीपीन और आस्ट्रेलियन द्वीपों के बीच का समुद्र ६०० फुट में गायब हो रही अधिर गहरा हो।

अटलांटिक महासागर की दो मुजाई है—एक तो उत्तरी महासागर और एक भूमध्यसागर। अटलांटिक का इस प्रकार समस्त क्षेत्रफल ३,४७,००,००० वर्ग मील है। यह एक प्रकार से मरिचका का समुद्र है, क्योंकि मरिचका की अधिकांश छोटी-बड़ी नदियाँ इसी महासागर में गिरती हैं—अमेज़न, मिसिसिपी, ओरिनोको ए-पलाटा, उरुबे, पराना, वागो, नाइजर, नील, सेंट लॉरेंस, डन्यूब, राइन, रोन, आदि। यह उत्तना तो गहरा नहीं, जितना प्रवाल महासागर है, पर तब भी बहुत गहरा है। अधिकांश स्थानों पर गहराई १८,००० फुट में अधिक है। इस महासागर के दो भाग हैं, जिनके बीच में, उत्तर-दक्षिण की ओर एक जलगाँवों के छोटे-डोलपिन-रिज नामक—है। इस

छोटों पर १२,००० फुट पानी है। अटलांटिक महासागर की अधिकतम गहराई पोर्टो-रिचो में ७० मील उत्तर की ओर नापी गयी है। यह २७,९७२ फुट है।

हिन्द महासागर अटलांटिक के आधे से कुछ अधिक है। इसकी औसत गहराई १५,००० फुट है। इसका सबसे अधिक गहरा नाम जावा और उत्तर-दक्षिण आस्ट्रेलिया के बीच में है। यह लगभग १८,००० फुट गहरा है।

भूमध्यसागर अटलांटिक की ही एक मुजा है, जो जिब्राल्टर-डमरूमध्य पर जुड़ी हुई है। यह उपला समुद्र है। यह ६०० फुट नीचे पस जाये, तो डाटेंनली और वास्तपोरम, सूरे बल-आग निराम आर्थे-एड्रियाटिक समुद्र प्रायः लुप्त हो जाये—मेडोखा मेनोखा ॥ मिला आ और माल्टा सिसली में। भूमध्यसागर की अधिकतम गहराई—१३,८०० फुट—पूर्व की ओर है।

बैसपियन सागर मध्य मील के समान है, किन्तु फिर भी गहराई का नहीं है—यह १८,००० फुट गहरा है।

✱

एक बार मगधा अन्तर की तानमेन के गुरु स्वामी हरिदास का शरीर गुनने का मुमकुर मिला। कुछ दिनों बाद उन्होंने उन गुनने वालों की याद करते हुए तानमेन में कहा—“तानमेन, तुम भी तो बहुत मुदर गाने हो; किन्तु तुम्हारे गुन के गनीन में मुझे त्रिभुज आनन्द का अनुभव हुआ, वंसा आनन्द तुम्हारे गनीन में मुझे आज तक नहीं मिला...”।

तानमेन जब खुद रहनेवाले थे। छूटने ही बोले—“जहोपनाह! इसका कारण तो स्पष्ट है। मेरे गुरुजी अपनी इच्छा और अपनी भोज में गाते हैं; किन्तु मुझे जहोपनाह की आज्ञा पर माना पटना है।” —पी. चन्द्र

✱



भय के राज्य में प्रथम प्रवेश

सुप्रसिद्ध शिकारी कर्नेल मर्दान अली की रीति ही प्रकाशित होनेवाली पुस्तक "द'लाइट आव डूडे डिड नाट रीच देथर" के कुछ रोचक पृष्ठों का संक्षिप्त हिन्दी रूपान्तर। पार्श्व में, भक्तीका के भयकर वन्य प्रदेशों में निवास करनेवाले एक 'भेत-नतक' का चित्र।



बहुत-से लोगो की यह धारणा है कि, वर्तमान जगत में ऐसे स्थान अब नहीं बचे हैं, जहाँ सम्म पुरुष न पहुँचा हो। लेकिन कहना होगा कि, यह धारणा पूर्णरूपेण भ्रम है। अफ्रीका में सैबडो मील लम्बा-बीड़ी भूमि अभी ऐसी है, जहाँ सम्म जगत की पहुँच नहीं के बराबर है—न केवल सम्म जगत के व्यक्ति, वरन् वहाँ के निकटवर्ती आदिवासी भी उस वन्य प्रदेश के अधिवास भू-भाग से अपरिचित हैं। यह भू-भाग उत्तर में मूडान प्रदेश के सीमांत से लेकर टाग्यानिका मील के प्रायः मध्य भाग तक फैला है।

एक बार मुझे इस हजारों मील लम्बे-चौड़े भू-भाग में जाने का अवसर मिला, जहाँ सम्भवतः सम्म जगत का कोई व्यक्ति पहले पहुँचा ही न था। जब मैंने निकटवर्ती क्षेत्र के पिगमियो से अपनी यात्रा का प्रस्ताव किया, तो अधिकांश

ने स्पष्ट इनकार कर दिया। केवल १० युवक—जिन्हें मेरे साथ शिकार में जाने का कई बार अवसर मिल चुका था—किसी प्रकार साथ चलने को तैयार हुए।

उस जंगल में दो दिनों की यात्रा करने के बाद, एक दिन ऐसा हुआ कि, मेरे उन साथियो ने अचानक अपना-अपना बोझ नीचे गिरा दिया। उनके बालकोचिद सरल-मुख-मडल पर चिंता एवं भय स्पष्ट दृष्टिगोचर होने लगा। उनके इस प्रकार भीत होने से मैं समझ गया, किसी गम्भीर खतरे की आशंका है, पर जब मैंने उनसे पूछा कि, आखिर इस प्रकार भयग्रस्त होने का कारण क्या है, तो बजाय उत्तर देने के वे मालुजो-सरीखे जोर-जोर से अपनी नाक खुरचने लगे।

बहुत सात्वता देने पर वहाँ के आदिवासी पिगमियो ने बताया कि, इस क्षेत्र में मुलाहू नाम का एक जानवर होता है, जिसके

सारे शरीर पर लम्बे और घने बाल होते हैं। यह जानवर बड़े-बड़े बूझों के कोटरों में रहता है। इस जंतु का शरीर इतना विपाक होता है कि, जिस वृक्ष के कोटर में यह जंतु रहता है, वह वृक्ष ही सूख जाता है। मुलाहू किसी आदमी को देख लेता है, तो वह पीरन अपने चेहरे से एक मुट्ठी बाल नोच कर—जिससे इसका चेहरा पूर्णतः ढका रहता है—एक छूँ के साथ मनुष्य की ओर फेंक देता है। ये बाल आदमी की आँख और नाक में प्रवेश कर जाते हैं और उनके विष-प्रवेश के फलस्वरूप वह व्यक्ति तत्काल मर जाता है। उनका बहना था कि, निवट ही किसी मुलाहू के छिपे होने की सम्भावना प्रतीत हो रही है।



ओकापी

[चित्र - वाल्ड गिरने]

इस प्रदेश में नदेंगी नामक एक अति विशाल जलमय पथी भी होता है, जो एक मिनट में मानव-शरीर को लोचों में परिणत कर सकता है। इसकी स्थल घटियाल की स्थल-भरीली मजबूत होती है और इसका पूरा शरीर बालों से ढका होता है। गर्दियों में इतना दुर्बल प्राणी शायद ही कोई और होना हो।

इनके अतिरिक्त सफेद बौना हाथी, ओकापी, लाल रंग के बालों में ढके जंगली भैंसे आदि ऐसे कितने ही जंतु होते हैं,

जो मानव के लिए प्राणघाती सिद्ध हो सकते हैं। इनमें ओकापी, जिसे एक प्रकार का हिरन कह सकते हैं, थोड़ो-मोटो पैरों से भी अधिक भयंकर जंतु है। यहाँ के आदिवासियों ने इन जंतुओं की भयानकता की अनेक वचान्ते मुझे सुनायी।

इस जंगल के अज्ञात प्रदेश के भीतर भाग में मैंने लगभग ६ मास बिताये। परन्तु इस अवधि में, मैं जितने भाग्यशाली लम्बा सवा, वह भाग इस विस्तृत

य भयानक पन का एक नगण्य अंश-सा ही था।

कुछ दुर्लभ जंतुओं के पकड़ पाने की आशा है एक बार हम लोगी। जंगल में एक गड़ड़ा घो दिया था। एक दिन जब हम लोग उस तरफ के पास पहुँचे, तो देखे कि, उसमें एक जानवर फँसा हुआ है। इस

रूप-रंग का जानवर मैंने पहले का नहीं देखा था। वह लगभग २ फुट ऊँचा और सिर के दुम तक लगभग ४।५ लम्बा था। मुझे देखते ही यह दौगता। बिटबिटा कर हम भयंकर रूप से उछले कि, हमारे साथ के सभी व्यक्ति के मे भान कर पेड़ों की आड़ में छिप गये।

पेड़ की आड़ में ही एक पिगमी चिल्ला कर बोला—“अरे, यह चीते से भी भयंकर जानवर है। इसे जल्दी मार डालो

तब तक दूसरा बोला—“इसका दण्ड सर्प-
दण्ड से भी अधिक विपाक्य होता है।
चिकारी ! इसे जल्दी मारो।”

पर मैं उसकी उछाल देखकर समझ
चुका था कि, वह गड्ढे में बाहर नहीं
निकल सकता। अतः मुझे एक खेल सूझा।
मैंने ‘गैस-मास्क’ निकाल कर पहन लिया
और क्लोरोफार्म में रुई डुबो कर उस
गड्ढे में फेंकना शुरू कर दिया।

कुछ ही मिनटों बाद वह जानवर
सिधिल-सा हो लेट गया और उसके कुछ
ही क्षण बाद वह ऐसा श्वेसुध हो गया,
मानो उसे गोली लगी हो। मेरे साथ
के आदिवासी दूर से ही यह सब देख
रहे थे। उनकी समझ में ही नहीं आ
रहा था कि, मैं यह क्या कर रहा हूँ।
जानवर गड्ढे में था, अतः वह भी उनकी
दृष्टि से परे था। इसलिए जब मैं गड्ढे
में उतरने लगा, तो वे बड़े जोर से चिल्ला
उठे और जब मैं उस अचेत जंतु को
पकड़े गड्ढे से बाहर निकला, तो उन्होंने
विस्मययुक्त मौन से मेरा स्वागत किया।

बड़ी सावधानी के साथ, धीरे-धीरे वे
मेरे पास आये और डरते-डरते उनमें से
कुछेक व्यक्तिगो ने अपने भाले की नोक
से उस जानवर का स्पर्श किया।

“यह मरा हुआ है ?” एक नुई
आदिवासी ने पूछा।

तब तक दूसरा बोला—“चिकारी ! मुझे
इस जानवर को खाने के लिए दे दो।”

“नहीं।” मैंने सम्भीर होकर कहा—

“तुम इसे खा नहीं सकते—यह जीवित है।”

मेरी इस बात पर विश्वास न कर
वे सभी खिलखिला कर हँस पड़े।

उन्हे अपनी बात समझाने के लिए मैंने
कहा—“देखो, मैं किसी भी जानवर को
इस प्रकार मार दे सकता हूँ और फिर
जिला भी सकता हूँ।” और, मैं इस
अनुकूल अवसर से लाभ उठाने के
लिए उसके शरीर पर इस तरह हाथ
फेरने लगा, मानो मैं कोई जादू की
क्रिया कर रहा हूँ। मेरी इस क्रिया से
उस जानवर का शरीर सक्पकाने लगा।

फिर क्या था ? एक क्षण में वे सभी
आदिवासी मासपास के पेड़ों पर चढ़ कर
गायब हो गये। लेकिन इस समय मैं
जो कृत्रिम उदासीनता प्रकट कर रहा
था, उसके खतरे से भी अवगत था।
मैं जानता था कि, यदि वह पुनः शक्ति
प्राप्त करके भूझ पर उछल पड़े, तो मैं कुछ
न कर सकूँगा। मेरी बड़क इतनी दूरी पर
रखी हुई थी कि, जहाँ तक मैं पहुँच नहीं
सकता था। उस समय एक ही चीज
थी, जिससे मुझे सहायता मिल सकती थी।
वह था मेरा ‘गैस-मास्क’ ।

जानवर को अधिक सक्पकाता देख
मैंने अपना ‘गैस-मास्क’ पहन लिया। मैं
यह क्रिया सम्पन्न कर ही पाया था कि,
मैंने देखा, वह जानवर अपने चारों
पैरों पर खड़ा होकर मेरी ओर मुखातिब
है। उसके दाँत खुले हुए थे और अपने
शरीर को वह इस रूप में झुकाये था,

देस मेरा पंजाब नी

सुप्रसिद्ध कवयित्री अमृता प्रीतम का एक पंजाबी गीत हिन्दी रूपान्तर सहित

*

देस मेरा पंजाब नी, होर वस्ते कुल जहान
गमक मेरे देस बा, बाबा छैल जवान
हूँ पजाली ऐस दी, देवे खेत खिलार
मेहनत ऐस जवान दी, सोना दये पसार ।
खेत जू मोहे खेत जू योजे, लये मोहल हूँ सा
खेत चहुँदवे दत्ताशिरावा, नबी दत्ता बा च्चा
येलीया ! नबी दत्ता बा च्चा ।

नहुँदी देस पंजाब नी, हीरा बिचो हीर
जिअँ बौंदी सोहणी मिरमणी जगल बेले नीर
पाले लागी घुरा दी, जिंदगी देवे घोळ
हरफ बोलदी एक बा, मुँहों बंदो बोल ।
मरी कणक दी रोटी सावा, दग मलाई बा,
घुरी मेहवा दुप धुपायी शक्कर देवा पा
बेलीया ! शक्कर देवा पा

देस मेरा पंजाब नी, होर वस्ते कुल जहान
गमक मेरे देस बा, बाबा छैल जवान
तिर ते घीरा रांगला बुझता नया मुआ
मोहँ बाहर लखवी, मेला लये मना ।
दत्त मसती ऊँतो बेल भरी जवानो बा
माल मुहदा बेतर लपिया गयी बेसाली आ
येलीया ! गयी बेसाली आ

सुंदरतम प्रदेश । इस पृथ्वी पर और
भी बहुत-से देश हैं, किन्तु पंजाब के
जैसे सजीले और स्वस्थ जवान अन्य
नहीं दिखायी पड़ते । मेरे देश का पुका
अपने हल और पजाली पर ही मगुद
रहता है—उसे इन पर गर्व है । इन्हीं की
सहमयता से वह अपने खेत बोता है—
पगल उगाता है । जिस ओर आँख उठती
है, हरियाली का ही साम्राज्य दिखायी देता
है—मानो धरती प्रसन्न हो चारों ओर सोना
बिखेर रही है । गुमा है मेरा देस ।

मेरे देश का
निसान अपने
मेठ जोवता
है, बोता है
और धंत के
महीने में जब
उसके कटिन
धर्म के दान-
स्वरूप पगल
पावर तैयार
हो जाती है,
ता वह खुशी
के पारे पूरा



माध्याह्न

[चित्र अमृता प्रीतम के
नहीं समझता । चित्र की सरल रेखाशुद्धि]

—मेरा देश पंजाब है—विश्व का

जार्ज डोन्लान् छंदों से छाते करता है

‘सर’ में प्रकाशित ज्ञान पात्र के एक मनोदंजक लेख का संक्षिप्त सारांश

★

तीस साल पहले दक्षिण के किसी रेल
पर जब डेढ़ सौ बैयूनों (बड़ी जाति के
एक प्रकार के बदर) का दल बहुत उत्साह
गवाने लगा, तो वहाँ झुंडझुंड पुलिस
भेजी गयी। पुलिस और उसकी बहूबो
की आवाज से डर कर बैयून भाग पड़े
हुए, लेकिन उन्हीं से एक अपने साथियों
से बिछुड़ गया। तबाल ही उसे पाव
लिया गया। पुलिस ने जब उसे नज़दीक
से देखा, तो मालूम हुआ कि, वह बैयून
नहीं, बल्कि आदमी का बच्चा है। उसकी
अवस्था उस समय पंद्रह साल की थी।
उसने गूँटे-गूँटे बाल, जगली
आँखों की भयावुर दृष्टि और
बैयूनों की भौंति गले से निकलने-
वाली आवाज को देखाकर वह
अनुमान लगाता मुद्विल का कि,
चौदह वर्ष पूर्व कुछ बैयून उसे
उसकी अजीबी माता से छीनकर
जंगल में ले गये थे। लेकिन
पुलिस की कार्रवाई में इस घटना
का पूरा-पूरा ज़िद था।



[जार्ज डोन्लान्]

अल्फ्रेड डोन्लान् नाम के एक
विज्ञान ने अपने पास रखकर

उसे सम्भ और शिक्षित बनाने का बीड़ा
उठाया। लेकिन यह काम इतना आसान
नहीं था। बैयून-कडवा-जैसा कि, उसे
बाद में पुराना जाने लगा—किसी मकान
में रहने में लिए तैयार ही नहीं हुआ।
रात में तो उसे ताले में बंद रखना पड़ता।

प्रारम्भ में उसने मिस्टर डोन्लान्
अपना उनकी पत्नी के हाथ से खाना
भी अस्वीकार कर दिया। उसे रेल और
मशीने में घूम-घूम कर बच्ची सम्झौती,
पीछे और कीड़े-मकोड़े खाना अधिक
पसंद था। खुराक भी उसकी तगड़ी
थी। कई वर्षों के बाद उसने जार्ज
डोन्लान् (अपना गया नाम)
उच्चारण करना सीखा। उसने
बाद दैनिक व्यवहार में आनेवाले
अनेकों के कुछ शब्द उसने
सीख लिये। लेकिन बैयूनों की
भाषा वह अब भी बड़े गंजे से
बोलता था और बहुधा जंगल
में जा-जाकर उसने पटो पार्ती-
लाप किया करता।

बैयूनों से पार्तीलाप कर खाने
के कारण वह काफी प्रतिष्ठ हो

गया। प्राणि-शास्त्र के विशेषज्ञ उसे देखने आते लगे। उन्हें आभा थी कि, इस लम्बे के जरिये बंबूनो की रहस्यमयी भाषा के बारे में वे कुछ जानकारी प्राप्त कर सकेंगे। अब तक यह विषय सभी के लिए अभेद्य ही बना हुआ था।

बंबून-लम्बे से उन्हें बहुत-सी बातें ज्ञात हुईं। उसके बताने हुए बंबून-भाषा के कुछ मूल शब्द इस प्रकार हैं—

ऊँच=यह शब्द भोजन के लिए प्रयोग होता है और बंबून-भाषा में सर्वाधिक महत्व रखता है।

झू-की=इसका अर्थ है, जल अपरा और कोई तरल पदार्थ।

ऊँ-ने=जब कोई तरण बंबून प्रणय-विभोर हो जाता है, तो अपनी प्रेमिका से वह इसी शब्द द्वारा प्रेम-भावना करता है।

ऊम्फ-बाग=इसका अर्थ है, बहुत अच्छा।

एा रोड जार्ज डोन्लान् बाहर से आये हुए कुछ प्राणि-शास्त्रियों को जंगल में अपने साथ यह दिखाने के लिए ले गया कि, वह बंबूनों से किस प्रकार बात-चीत करता है। एा पहली पर ८५ बंबून घेरे थे। जय से लोग वहाँ पहुँचे, तो तत्काल ही सारे बंबून भाग कर बब-रात्री तथा दरारों में छिप गये। लेकिन जब जार्ज डोन्लान् ने उन्हें उनकी भाषा में समझाया कि, भय का कोई कारण नहीं है, सब ठीक है ("होआ-जेओम, होआ-जेओम, होआ-जेओम"), तो सारे बंबून धीरे-धीरे फिर से बाहर निकल आये।

इसके बाद डोन्लान् ने बंबूनों से बात चीत करना आरम्भ किया। बंबून भी उसने प्रश्नों का उत्तर देते रहे। डोन्लान् की बातों में अपनी रुचि प्रदर्शित करने के लिए बीच-बीच में वे अपनी नाक भी खुलवाते। प्राणि-शास्त्र-विशेषज्ञ इन सारी बातों को नोट कर रहे थे।

इतने में आकाश में काले बादल भिर आये। डोन्लान् ने आकाश की ओर इशारा करते कहा—"ऊँ-जाप, ऊँ-जाप।" अर्पान्—"बरसात आनेवाली है।" बंबूनों ने इसका उत्तर दिया—"ऊम्फ-बाग, ऊम्फ बाग।" याने—"बहुत अच्छा, हम स्वयं देख रहे हैं।" और, वे मुफाओ एा दरारों में दौड़ गये।

दूसरे दिन डोन्लान् उन विशेषज्ञों को मध्या के पश्चात् यह ब्रिगलाने के लिए ले गया कि, बंबून सोते किस प्रकार है। जिस बट्टान पर बहुत-से बंबून रहते थे, उसके आसपास काफी ऊँचे पेड़ थे। यही पेड़ बंबून-परिवारों के शयन-स्थल थे।

सत्रमे ऊँची छालियों पर नादा बंबूनों सोती हैं और उनके ठीक नीचे की छालियों पर नर। बुध के नीचे एा बंबून रात-भर पहरा देता है और किसी भीले, सोंप या आदमी के नजदीक आने पर ऊपर सोंपे हुए अपने साधियों को सावधान कर देता है, ताकि ये उसका मुकाबला करने को तैयार हो जायें। सतरे की आसका होते ही पहेदार बंबून चिल्लाते लगता है—"ऊम्-ऊम्-जोआल, ऊम्-ऊम्

जोआल ।" इसका अर्थ है—“सावधान हो जाओ, खतरा है ।”

ऊपर सोये हुए सभी बंदून जग जाते हैं और खतरे का सम्मना करने को तैयार हो जाते हैं। जब खतरा दूर हो जाता है, तो पहरेदार बंदून चिल्लाता है—“ऊम्फ-काग, ऊम्फ काग ।” याने—“सब ठीक है ।” और, बंदून परिवार फिर से शांत हो गहरी नींद में सो जाते हैं ।

डोन्लान् अब ४५ वर्ष का हो गया है और जीविका-निर्वाह के लिए खेती करता है। एक बार उसने बताया कि, न्यूजी-लैंड से आये हुए एक व्यक्ति मिस्टर आस्टिन लेमसन ने एक बार ट्रांसवाल के घने जंगलों में कुछ बंदूनों को एक साथ गाते हुए देखा। लेमसन की एक चिट्ठी भी उसने बतायी, जिसमें लिखा था कि, लेमसन



[बंदून भी भी गीत में बालक डोन्लान्]

को किरा प्रकार बंदूनों के उस सामूहिक संगीत को सुनने का अवसर प्राप्त हुआ। एक रोज शाम की, जब वह जंगल से अपने कैंप में लौट रहा था, तो एक पहाड़ी पर उसने बहुत-से बंदूनों को निश्चल बैठे हुए देखा। वे सभी बिलकुल शांत थे; लेकिन थोड़ा-सा नीचे एक स्थान पर, एक दूसरा बंदून सड़ा

था, जो अपने हाथ ऊँचे कर ऊपरवाले बंदूनों को अपनी भाषा में कुछ हिदायतें दे रहा था। सभी बंदूनों की दृष्टि अपने मुखिया पर गड़ी थी। लेमसन ने तत्काल ही अपनी दूरबीन आँखों पर लगा ली।

उसके बाद मुखिया बंदून ने ऊँची आवाज में गाना शुरू किया। उसके पीछे-पीछे सभी बंदून गाने लगे। बड़ा विचित्र संगीत था वह। एक खास बात

लेमसन ने लक्ष्य की कि, कुछ बंदून द्रुत गति से गा रहे थे और कुछ मध्यम लय से। इससे उनके सामूहिक संगीत में एक विशेष स्वर दिव्याप्त पैदा हो गया था।

बंदून और बदरो की भाषा के विषय में बहुत-से विशेषज्ञों ने अपने विचार प्रकट किये हैं। आर एम मेकर्स ने अपनी किताब में लिखा है—“सभी बंदून और

वनमानुष ठीक मनुष्य की ही भाँति तरह-तरह की बारीक, तेज, जैसी या नीची आवाज कंठ से निकालने में समर्थ हैं।”

रिचार्ड एल यार्नर ने सम्युक्त राष्ट्र अमेरिका के सभी चिडियाखानों में जा-जाकर सभी प्रकार के बदरो की फोनोग्राफ-रिकार्डें तैयार करवायी हैं। उस विषय पर काफी अध्ययन करने के बाद,

गार्नर वा बहना है कि, चिम्पाजियो वा पूरा शब्द-कोष कुल २५ या ३० शब्दों का है। ये शब्द मनुष्य की भाषा से बहुत-बहुत मिलते-जुलते हैं।

गार्नर ने सिनसिनाटी के चिटियाखाने के बदरो की आवाज के रिकार्ड तैयार करके उन रिकार्डों को शिवायो के चिटियाखाने के बदरो के सामन बजाया। शिवायोवाले बदरो ने रिकार्डों की भाषा को बेबल समझा ही नहीं, बल्कि उससे उत्तर में वे स्वयं भी बोलने लगे। इस

प्रकार बहुत-से चिटियाखानों में प्रयोग करने के बाद गार्नर की धारणा है कि, बदरो की भी अपनी एक भाषा है।

प्राचीन काल में मिस्र के लोग बैबूनो को पवित्र मानते थे। अरबी बैबूनों की वे पूजा करते थे और अपने कीर्ति-स्तम्भों एवं स्मृति-चिह्नों पर उनकी मूर्तियाँ अंकित करते थे। प्रातःकाल में बैबून जो बहुत अधिक आवाज करते हैं, वह उनके बघनानुसार बैबूनों की सूर्योपसन्ना का एक भग है।

★

..... गवैये बने हैं !

एक बार 'निराला'जी और 'नबीन'जी के वासी आने पर प्रसादजी ने कुछ लोगो को ब्यालू के लिए घर बुलाया। स्वर्गीय मुसी अजमेरी भी मेरे साथ थे। हम लोग सध्या को ही जा जमे। 'निराला'जी सुंदर गायन भी है। अजमेरीजी का बहना ही क्या ! बालकृष्णजी का भी बट मधुर है। कविता और गन्ध-शोभा से जातावरण गूंज उठा। 'निराला'जी से भी कोई हिन्दी या बंगला गीत गाने को कहा गया, तो उन्होंने कहा—“मे क्या गाऊँ ? मृदंग न सही, तबला बजानेवाला भी तो कोई हो।” साज बजानेवाला कोई साहित्यिक वही न था। प्रसादजी चाहते, तो तुरत किसी को बुला सकते थे, परन्तु वे मुस्कराकर रह गये। एक-दो बार फिर 'निराला'जी से कहा गया—“ऐसे ही होने दीजिये।” परन्तु वे गुरु-गम्भीर बनकर अपनी पहली ही बात दुहराते रहे। 'नबीन'जी ने न रहा गया, सहसा बोल उठे—“बड़े गवैये बने हैं। अजमेरीजी बिना तबले के गा सकते हैं, तुम नहीं गा सकते...?” क्षणभर सन्नाटा हो गया। 'निराला'जी हँस, फिर तुरत उन्होंने गाना आरम्भ कर दिया।

—मैथिलीशरण गुप्त

★

कोलगेट विधि से ही ये तीनों गुण हैं !
 आपकी श्वास की स्वच्छता के
 साथ-साथ दाँतों की सफ़ाई
 और दंत-क्षय से सुरक्षा !



“माहिम का हलवा”

१३० वर्ष पुराना व प्रख्यात

केवल भारत में ही नहीं ! विदेश में भी प्रख्यात है !!

* विविध भाँति के हलवे

* तिर्गुनी बरफी

* शुद्ध भाँवे का पेडा

तथा अग्न्याय भाँवे की मिठाइयों के लिए पुराने और प्रसिद्ध

जोशी बुड्ढा काका माहिम
 के हलवे वाला

▼ कापड बाजार, माहिम, बम्बई १६

फोन - ६२९०७.

▼ सोनावला बिल्डिंग, बम्बई, ७

फोन - ४०३६५.

▼ गारसी कोलोनी दादर, बम्बई, १८

फोन - ६०५०६.



लोमा

मस्तिष्क को शांत रखता है।

लोमा

अधिक बाल उगाता है।



लोमा

सुफंद वालोंको श्याम बनाता है।

लोमा

बड़ी प्यारी खुशबू देता है।



सुफंद वालोंको श्याम बनाता है।

काह एन्ड एन्ड मेसर्स, मेसर्स, मद्रास, बम्बई, कोलकाता, १.

एन्ड एन्ड सी मद्रास, बम्बई, कोलकाता, २.

दिल्ली एन्ड मेसर्स : दिल्ली मेडिकल स्टोर्स चार्जर्स चौर, दिल्ली

बम्बई एन्ड मेसर्स : राहु बायोसी थ्रेडर्स.

१२९, राधा बजार स्ट्रीट बम्बई १

स्टोकिस्ट्स : आर. पी. मेहता अंश प्रथम मोनेमा रोड, अजमेर.

कुरुक्षेत्र-युद्ध आरम्भ होने में अभी बीस-पच्चीस दिन बाकी थे। महाराज युधिष्ठिर रातों की इस मुहावनी बेलों में अपने शिविर में बैठे थे और सहदेव

उन्हें सगृहीत वस्तुओं की सूची पढ़कर सुना रहे थे। अर्जुन उस वक्त पांचाल-शिविर की मंत्रणा-सभा में उपस्थित थे। नकुल सेना की कवायद का निरीक्षण कर रहे थे और भीम, बिशेष रूप से आर्द्ध देवर बनवायी गयी सौ गदाओं की देख-भाल में व्यस्त थे। प्रत्येक गदा को वे उठाते और उसे हाथ में उछाल कर इस बात का अंदाजा लगाते कि, किस गदा से धृतराष्ट्र के किस पुत्र को मारना उचित होगा। ९९ गदाएँ सागवान की लकड़ी की बनी थीं। सिर्फ १ गदा कपड़े की थी। भीम ने कपड़े की इस गदा से दुर्योधन के १८-वें भाई विकर्ण को मारने का निश्चय किया था। सौ भाइयों में यही एक लड़का ऐसा था, जो 'सम्भ' कहला सनता था। शीपदी-बीर-हरण का अकेले इसी ने विरोध किया था।

सहदेव पढ़ते जा रहे थे—“जौ का सत्तू १२ सौ मन, बंसन ८ लाख मन, घना ५० लाख मन ।”

युधिष्ठिर का धैर्य साथ छोड़ गया। मुझ से ही यह सब सुनते-सुनते वे बुरी तरह घबड़ा उठे थे। किन्तु आग्रह न दिखाना भी उचित नहीं कहा जा सकता। इसी सोच-विचार में पड़े थे कि, प्रतिहारी

एक लक्ष-शिविर - की नजर में क्रोध-पीड़ितों की दूत-क्रीड़ा - परशुराम

ने उपस्थित होकर निवेदन किया—“महाराज की जय हो। एक कुम्भ पुरुष आपके दर्शनार्थ बाहर सहे हैं। उन्होंने अपना परिचय नहीं दिया। कहते हैं—महाराज से कुछ गुप्त बातें कहनी हैं।”

सहदेव झुंझला पड़े—“महाराज इस समय आवश्यक कार्य में व्यस्त हैं। उनसे कदो, कभी और आयें।

किन्तु युधिष्ठिर हिसाब-किताब की इस श्रद्धा से मुक्ति पाने का यह मुझवसर सोचना नहीं चाहते थे। प्रतिहारों को रोकते हुए बोले—“नहीं, नहीं। उन्हें सम्मानपूर्वक यहाँ ले आओ।”

एक शौड सज्जन ने भीतर प्रवेश किया—बक शरीर, शीर्ष-मुद्रित मुँह, सिर पर बड़ी पगड़ी और गले में नीलवर्ण रत्नहार। दोनों हाथ जोड़ कर उन्होंने अभिवादन किया—“धर्मराज की जय हो।”

युधिष्ठिर ने उनकी ओर देखते हुए पूछा—“बाप कौन हैं, सोम्य?”

“धृष्टता समा वरे, महाराज।” जान तुम ने उत्तर दिया—“मुझे जो कुछ निवेदन करना है, वह परम गोपनीय है।”

युधिष्ठिर सकेत समझ गये। बोले—“सहदेव! अब तुम जा सकते हो। चने के जितने बोरे आयें हैं, उन्हें सोलकर देस

लेता—वही उनमें घुन न लगे हा।

सहदेव स्पष्ट होकर, बक दृष्टि से आगतुन का देखने हुए, बचने में बाहर चले गये। आगतुन न एक बार चारा और देगदर एकात होने का बिस्वास कर लिया और तब धीमे स्वर में बहा—‘महाराज। मैं गुप्त-गुप्त मत्सुनि हैं—शत्रुनि मेरा मोनेला भाई है।’

क्या कहते हैं आप?’ धर्मराज आश्चर्यचकित होकर बोले—‘फिर तो आप मेरे पूजनार्थ आतुल हुए। प्रणाम, प्रणाम। आइये, मिहामन पर विराजिये।’

‘नहीं महाराज। मैं आपकी इन सवर्धना के अयोग्य हूँ। मेरा आगत नौने ही हूँ—मैं बामी-गुप्त हूँ।’

‘अच्छा, अच्छा। तब आप इन गुणाल-धर्मयुक्त वेदी पर विराजिये। अब, कृपाकर बताइये कि, आपका आना किम उद्देश्य के हुआ है?’ यह भी बच आश्चर्य की बात नहीं है कि, मैंने इसके पूर्व आपकी कभी नहीं देगा।’

मत्सुनि ने गिर हिलाया—‘कैसे देखेंगे, महाराज। मैं अतराल में ही रहता हूँ। अन्तर्गत, १३ वर्ष विदेश में रहा। बुद्ध होने के कारण शास्त्र-धर्म का पालन करने में तो मैं समर्थ हूँ नहीं, अब जन्म-जन्म की सिद्धि कर दिन ध्यानि कर रहा हूँ। विश्वकर्मा ने मुझे कर्मान भी दिया है। धर्मराज। मैंने मुना है कि, छूत-प्रोडा में आपकी प्रतिभा जगामान्य है?’

मुषिष्ठर ने विरक्ति के गिर हिलाने

नवनोन

हुए स्वीकार किया—‘हैं।.....छे कहते तो ऐसा ही है।’

‘फिर भी आप शत्रुनि ने क्या हर गय, जानते हैं?’

धर्मराज के श्रोत्रों पर बल पड़ गये। बोले—‘शत्रुनि ने धर्म-विप्लव मण्डल, न आश्रय लेकर मुझे हराया है। लोग की धारणा है कि, शत्रुनि के अश के अन्वयतर में स्वर्णपट्ट रखा है। इन पञ्च के कारण यह भार हमें सारी की ओर झुक जाता है और ऊपर गरिष्ठ विदु नस्था दीर्घमं लग जाती है। वह’

मत्सुनि ने बाँध में ही पाग बाट दी—‘इन बातों में कोई शर नहीं है, पादकराज। स्वर्णगर्भ और पारदगर्भ वाले पात्रों में रत्नमेवाते हमें ही नहीं जीते—शे बर बार उनकी हार निश्चित है। आप लोगों ने जाने बितनी बाजियों रंली-कभी एक बार भी जीते आप?’

दीर्घ निश्वास लेकर मुषिष्ठर ने सिर झुका लिया—‘नहीं, एक बार भी नहीं।..... विन्तु अब इन बातों में क्या रखा है?’ युद्ध के इने-गिने दिन बाकी रह गये हैं। अब न तो मुझे छूत-प्रोडा करने का अवकाश है और न ही मैं छूत-प्रोडा में शत्रुनि को कभी हरा सकता हूँ।’

‘निराश न हो, पादकराज।’ मत्सुनि ने शांत स्वर में कहा—‘यह तो मेरी मात्र-भूमिका थी। युद्ध जाने तो मैंने आपसे कही ही नहीं। कृपया ध्यान देकर मुझे। शत्रुनिवादे अश का निर्माता मैं ही हूँ।’

उसके भीतर मन्त्र-सिद्ध यन्त्र ह इसा से
 उसका दाव कभी बन्धन नहीं जाता।
 उसन मुन आन्वासन लिया था कि आप
 पोंचो नाइयो क निवासन के पश्चात
 दुर्पोषन से कहकर वह मन इन्द्रप्रस्थ का
 राज्य दिलवा देगा। किन्तु यन्त्र-कौशल
 शीघ्रन के पश्चात उस दुर्पोषन न मे-
 साथ छल किया। आप लोगों के वनवास
 के बाद जब मन दुर्पोषन स गकुनि के
 आन्वास की बात कहा तो उसन कहा-
 'मुन कुठ नहीं मालूम। आपा से मिलो।'
 गकुनि से मित्र ता उसन भा स्पष्ट
 टाल दिया- 'म कुछ नहीं कर सकता-
 दुर्पोषन से मिलो। इतना हा नहा अन
 म उन दोनों पापिया न धाल से मुझ बाह
 लाक आप के कारागार म बंद कर दिया।
 तेरह दण पश्चात किमी सुरत से भा
 निस्स हूँ और
 अब आपकी गरण
 म आया हूँ।

दुर्धरिष्ठ का
 मुलमुद्रा कठोर हो
 गयी। गम्भीर
 स्वर म बाले-
 हूँ। तो अब
 आप भुव अर्ध-रूप
 म चलकर राज्य
 प्राप्त करना चाहत
 ह-क्या ?

धनपुत्र मेरे
 दूत-अपराधो को

क्षमा कीजिये। इस वक्त म आपका भित्र
 हैं। मन बीना होकर इन्द्रप्रस्थ स्त्री चौद को
 पकड़न की इष्टा का थी। आप नाराज
 न हो। मय पर विन्वास करे और विजया
 होवर गकुनि को मौन के धात उतार द।
 मय बाधार राज्य दे दाजियगा बस।

धर्मराज का मुलमुद्रा अभी तक कठोर
 था- 'इसलिए कि आपके द्वारा निमित्त
 अप मेर सबनान का कारण बना ?

क्षमा धर्मराज। मत्कुनि के स्वर
 म कातरता थी- बाता दाता को भूल
 जाइय। परमात्मा बाधा ह म इस समय
 आपके भले कावान कह रहा हूँ। विवस्त
 सूत्र से मुझ पात हुआ कि सत्य वृत्तपाट
 की आज्ञा से अभी आपकी सेवा म उप
 स्थित हुआ हा चाहते ह। दुर्पोषन और
 गकुनि का मन्त्रणा मे वनराष्ट्र पुन आपको



[दुर्धरिष्ठ ने कहा- 'पवन विषये-
 'धर्मराज जी अब हो'] ॥ ८८]

धूत-नीला का निमग्न भज रह हूँ। दुहाई है, महाराज—इस मोके को किसी प्रकार भी हाथ से जाने न दीजियेगा।

धर्मराज के कुछ कहने के पूर्व ही, बाहर से रख के पहियों की पर-पर ध्वनि सुनायी पड़ी। मल्लुनि ने चौंकर कहा—“सजय आ पहुँचे। महाराज।” बिनती करता है, इस प्रस्ताव को अस्वीकार मत कीजियेगा। कहियेगा—‘मैं सोचकर जबान ब्रिजया दूँगा।’ सजय के पाने के पश्चात् में सारी बातें समझा दूँगा। तब तब मैं बगल के कमरे में छिप जाता हूँ। दुहाई है, महाराज।”

००० ००० ०००

सजय के विदा होते ही मल्लुनि बगल वाले कमरे से बाहर निकल आया—“आपने उपयुक्त उत्तर दिया है, धर्मराज। अब मेरा राय मानिये। शाम को ही कुरुज के पास अपना एक विद्वत् भूत भेज दीजिये जि, पूज्य ज्येष्ठ तात। आपकी आज्ञा शिरो-पाय है। अति अग्रिम होने पर भी हम इस तृतीय धूत-नीला में सम्मिलित होने के लिए प्रस्तुत हैं। आपके द्वारा निमित्त अक्ष की कोई आवश्यकता नहीं—हम अपने ही अक्ष से सेलेंगे। आपको शर्त भी स्वीकार है। सिर्फ एक शर्त हमारी है—शत्रुनि और हम केवल तीन बार अक्ष देंगे। जिसके अक्ष की विदु-समष्टि अधिप होगी—वही विजेता माना जायेगा।”

मुद्रिष्ठिर गम्भीर भाव से मुखराये—“हे सुबल-नदन! आप मेरे मातुल

(मामा) हैं, किन्तु इस क्षण यातुल श्रोत हो रहे हैं। जिस विद्वत् पर पुन शत्रुनि से मैं जुआ खेलने को तैयार होऊँ। सिर्फ तीन ही बार अक्ष-क्षेपण करूँ। और, इस बात का क्या प्रमाण है कि आप दुर्घोषन के गुप्तचर नहीं हैं?”

“ज्ञात भव, धर्मराज!” मल्लुनि ने अविचल भाव से कहा—“मैं आपने सभी सजयों का नियंत्रण कर रहा हूँ। अगर आप धूतराष्ट्र वाले अक्ष से सेलेंगे, तो आपकी हार निश्चित है, क्योंकि धूत शत्रुनि इस अक्ष को हाथ में लेकर अवश्य ही अपने अक्ष में बदल लेगा। बाह्यीय हीन मैं मैं खुपपाय बँटा नहीं रहा हूँ। आपी गवेषणा के पश्चात् शत्रुनि के अक्ष से भी प्रचटतर अक्ष का मैंने निर्माण किया है। आप मेरे इसी नव-निमित्त अक्ष से सेलियेगा—शत्रुनि की हार सुनिश्चित है। एक बात और—मेरे नव-निमित्त अक्ष का मन बहुत सूक्ष्म है, अतः एक दिन मैं अधिप बार क्षेपण करना उचित नहीं। शत्रुनि के अक्ष में भी वही बात है। फिर विजय प्राप्त करने के लिए तीन बार क्षेपण करना ही पर्याप्त है।.. आप चाहे, तो अपने भाइयों को सब-कुछ बता दीजिये; किन्तु उनकी भ्रमना पर अपना निश्चय नहीं बदलियेगा। हाँ, यह रहा मेरा नव-निमित्त अक्ष—स्वयं परीक्षा करने देता दीजिये।”

मुद्रिष्ठिर ने हाथी-दंत निमित्त उक्त अक्ष को हाथ में लेकर देता—टीक शत्रुनि के अक्ष के समान सुमण्डित और पृष्ठ-भूमि



THE choice

OF THE HOUSEWIFE

AMRANG

THE IDEAL HOME DYE

AMRITLAL & CO., LTD.

POST BOX NO 256,

BOMBAY, 1.



इसके
इस्तेमाल से
कमज़ोर
और दुबले
बच्चे ताकतवर
बनते हैं

डोंगरे बालामृत

के. टी. डोंगरे एन्ड कं. लि. बम्बई ४



शाखाएं : कानपुर और वंगलोर

गोलाबार प्रत्यक्ष बिंदु में सूक्ष्म छिद्र।
मत्कुनि के कहने पर उन्होंने क्षण भरके
देखा—आश्चर्य ! तीनों बार छ बिंदु आय।

युधिष्ठिर ने कहा— अक्ष विश्वास के
योग्य है किन्तु आप विश्वासघात नहीं
कीजियेगा इसका दायित्व कौन लेगा ?

मत्कुनि मुस्कराया— आप मुझ अभी
से बंदी कर लें महाराज ! जब आपकी
पराजय का समाचार यहाँ आय तो मेरे
पहरे पर नियुक्त सैनिक मेरा सिर उतार
ले। आप उन्हें अभी से आदेश दे दें।

ठीक है ! युधिष्ठिर ने स्वीकार
किया और कुछ क्षणों तक विचारमग्न
रह कर बोले— किन्तु शकुनि का अक्ष मेरे
अक्ष से पराभूत हो गया तो इसका अर्थ
है कि यह खल धर्म विरुद्ध होगा—कपटता
होगी एक प्रकार की ?

हाय ! हाय ! महाराज ! मत्कुनि
ने सिर पर हाथ दे मारा— आप भी कितने
भोले हैं ! आप दोनों का ही अक्ष मंत्र
पूत है—इसमें कपटता का प्रश्न ही कहा
उठता ? धर्मराज ! इस तृतीय द्यूत क्रीडा
में मैं ही उभय पक्ष हूँ—आप और शकुनि
तो निमित्त मात्र हैं !

युधिष्ठिर पुन विचारमग्न हो गया।
थोड़ी देर बाद बोले— मातुल ! आपका
वक्तव्य सुनकर मेरी अजीब स्थिति
हो गयी है। धर्म की गति काफी सूक्ष्म
है—मैं तो दुविधा में पड़ गया हूँ। आपका
साधारण जीवन मेरे हाथ में है—जब कि
मेरी बुद्धि धर्म राज्य सब-कुछ आपके

हाथ में है। फिर भी अभी आपका
आज्ञा का पालन करना ही उचित प्रतीत
होता है। लाइयें अण मञ्ज दे दीजिये !

धर्मराज की जय हो ! मत्कुनि
ने प्रसन्न होकर कहा— किंतु महाराज !
अक्ष अभी मेरे पास ही रहने दें। उचित
परिचर्या के अभाव में आपके पास रहने
से इसके गण नष्ट हो जायेंगे। द्यूत क्रीडा
में जान के दिन मञ्जसे ले लीजियेगा।

००० ००० ०००

बड़ समागोह के साथ द्यूत-सभा का
कायवाही आरम्भ हुई। युधिष्ठिर ने
मत्कुनि से मुलाकात के दूसरे ही दिन अपने
भाइयों से द्यूत क्रीडा की बात कह दी थी।
भाइयों ने विरोध किया था भुनभुनाय
व किन्तु अंत में अपनी सम्मति दे
दी थी। हाँ द्रौपदी ने अवश्य ही कुछ
नहीं कहा था। उल्टे सहदेव को भजकर
उसने द्वारिका से वासुदेव को बर्बाद लिया
था। अपने बड़े भ्राता बजराम के साथ
कृष्ण भी सभा में उपस्थित थे।

सबसम्मति से बजराम सभापति बनाय
गया। बलरामजी ने आसन ग्रहण करते
हुए कहा— विलम्ब से कोई लाभ नहीं।
खल आरम्भ है। इस द्यूत में कुछ पक्ष का
ओर से शकुनि और पांडव पक्ष में युधिष्ठिर
एक-एक अण लेकर खल प्रारम्भ करेंगे।
तीन बार अक्ष क्षण होगा। जिसका
बिंदु-समष्टि अधिक होगी वही विजेता
माना जायगा। हारे हुए पक्ष को राज्य
सौंपकर बनवासी होना पड़ेगा। गुबल



जील्हास

साधुनिक कहानी में कौतूहल और जिज्ञासा के तारों से बंधे
सन्निवेशनिक परिणति देनेवाले सुप्रसिद्ध चरित्रों की कथाएँ
और ही लूकम की एक कहानी का अतिरिक्त हिस्सा

*

“हम अनधिकार चप्पल के लिए मुझे
क्षमा करेंगे—” बोलने के अघोर से एक
आवाज आयी—“आप लोगों की धार्मिक हो
कुछ ऐसी मनोरंजक है कि—”

समय के सामोसो छी गयी, जैसे
बोझनेवाला तय नहीं कर पा रहा हो
कि, आप जो कुछ कहने जा रहा है, वह
क्यों तक उचित है। उस छोटे-से रेश्मा
में रात्रि के इस यकन आयो से अधिक मेजे
मार्ग पड़ी थी। हम पौच-छ, मित्र आपमें
में जाने करते हुए गरम-गरम बाफो की
बुस्बियाँ लेकर बड़ाके की ठंड की भूलने
का प्रयास-मा कर रहे थे।

अपने में भौंसे गड़ा कर हममें हममें
की चेष्टा की—वस्त्र-गोरे शरीर पर
हल्के नूरे रंग का आंगरकोट, कपास
पर घुपछले बालों की बिसरी मट्ट-
जाने बब और वहीं से आकर वह हमारी
मेक की उस ओर मेट गया था। यो एक
अजनबी का बीच में हस्त देना हममें
में किसी को न भाया, बल्कि उसके
ध्वनित्व में कुछ ऐसा प्रभाव था—वहने
का लहजा इतना आकर्षक था—कि, हम
नयनीत

नभी मिन मोस राखकर उनके कुछ झग
कहने की प्रतीक्षा करने लगे।

अपनी जेब में सिगरेट-बेस निकाल,
एक सिगरेट होंठों में लगाते हुए उसने
सिगरेट-बेस हमारी ओर बढ़ाया।
फिर उसे मुलगा कर पुर्ण के मोल-मोल
छल्ले छोटके हुए उसने कहना शुरू किया—

“अगर मैंने समझने में भूल नहीं की,
तो आप अपने जीवन में आयी हुई विपत्त
परिस्थितियों की खर्चा कर रहे थे। ऐसी
स्थितियों की, जब आप किसी अजीब-
सी उलझन में घेम गये थे। किन्तु माफ
कीजियेगा—” अजनबी ने सिगरेट का
एक लम्बा बस खींचा—“आप लोगों ने
जितनी घटनाओं का उल्लेख किया है,
हरजनत ये उसकी तुलना में कुछ भी नहीं
है, जो मेरे माथ पड़ी। फिर आपमें
ने हर किसी ने एसी ही परिस्थिति की
कहानी सुनायी है, जब उन्हें अपनी कठिनाई
में छुटकारा पाने के लिए अपनी शारीरिक
शक्ति का महाराज लेना पड़ा था। अविश्व
स्पष्ट करने के लिए आप यो कह
सकते हैं कि, वह शारीरिक दुष्प्रिया का

शिवार या। परन्तु मेरी कहानी मेरा अनुभव सर्वथा निराला है। एक ऐसी जटिल समस्या का एक बार मुझे सामना करना पड़ा कि 'शायद आप लोग उसे सुनना पसंद करेंगे?'

'जहर, जहर।' बरबस ही हमारे मुँह से निकल पड़ा।

अजनबी ने बड़ी घेतकल्लुफी से अपने पैर मेज के नीचे फैला दिये। हाथ का सिगरेट फेककर दूसरा सिगरेट सुलगाया और कहने लगा—

"क्रिस्टी के मसहूर नीलामघर का नाम तो आप सबने सुना ही होगा? मेरी कहानी का सम्बन्ध वहीं से है।"

क्रिस्टी के नीलामघर के नाम से हमारी उत्सुकता और भी तीव्र हो उठी। प्रस्तर-प्रतिमाओं की तरह अपने-अपने स्थानों पर स्थिर होकर हम मानो अपनी समस्त इन्द्रियों से सुनने का काम ले रहे थे।

अजनबी ने कहानी आगे बढ़ायी—
"तीन वर्ष पहले की बात है। सेंट जम्स स्ट्रीट के एक बलबघर में मैं अपने एक मित्र के साथ जाना साबर विंग स्ट्रीट से गुजर रहा था। क्रिस्टी के नीलामघर के सामने से निकलते समय अनायास ही मेरे पैर मुड़ गये। नीलामघरों में जाने का मुझ पर धौंक रहा है। किसी एक ही वस्तु के लिए जब कई खरीददार भिन्न-भिन्न शैलियों लगाते हैं और उनमें से कोई एक सबसे अधिक कोमत देकर उसे खरीद लेता है, तो हारनेवालों का चेहरा उस

समय देखते ही बनता है।

'तफरीह' ने लिए मैं भी कभी-कभी बोली बोल देना का आदी रहा हूँ। किन्तु इस बात की मैं तदा सावधानी बरती हूँ कि, मुझे वह चीज किसी भी रूप में खरीदनी न पड़ जाय।

जब की यह घटना है उन दिना मेरी कुल जमा-खूजी तिरसठ पाँच एक बैंक में जमा थी। बस, इसके अलावा कहीं से पाँच सौ पाँच उधार लेन लायक दस्तावेज भी मेरे पास नहीं थे। मगर मुझे कुछ खरीदना तो था नहीं। अतः लापरवाही से पेंट की जड़ों में हाथ डाल, नीलामघर के भीतर वहाँ जा पहुँचा, जहाँ बोलियों लगायी जा रही थी। वे बैरबिजों के चित्र बेच रहे थे। जैसा कि, आप लोग भी जानते होंगे, क्रिस्टी के नीलामघरवाले काफी पैसे ऐंठते हैं। बैरबिजों का महज-भामूली चिन भी दो-या हजार, तीन-तीन हजार या बड़ी भासानी से बिक रहे थे।

'कुछ देर तक तो मैं चुपचाप खड़ा रहा, फिर आदतन मैंने भी बोली लगानी शुरू कर दी। मेरे मित्र ने समझाया—'देखो, व्यर्थ ही फँस जाओगे।' किन्तु मुझे स्वयं पर भरोसा था। मैं जानता था, ऐसी स्थिति उत्पन्न होने के पहले ही मैं अपनी बोली बंद कर दूँगा। और, काफी देर तक ऐसा ही हुआ भी। मैं किसी भी वस्तु के लिए बाकी लगान में पूरी-पूरी सावधानी बरत रहा था।

मरने हे, क्या हुआ होगा?"

हमारे चेहरे पर स्त्री के चित्त उभर आये। स्पष्ट था कि, अजनबी जानबूझ कर हमारी उल्टुना बढा रहा था, किन्तु हम चुपचाप उनके आगे कहने को प्रतीक्षा करने के अडावा और क्या कर मरने में?

अजनबी फिर मुस्कराया—'आप लोगों का अधिक समय नहीं लेगा। तो मैं कह रहा था, इस वक्त ऐसी घटना घटी कि, मुझे पक्की हो आया—'कहीं कोई ऐसी अजीब-गिरी शक्ति है अवश्य, जो इन विषट् परिस्थितियों में हमारी मदद किया करती है....!'

"मैं धीरे-धीरे मेज के निकट होता जा रहा था कि, एक आवाज मुनारी पड़ी—'क्षमा करेंगे, श्रीमान्! क्या आपने ही महान् 'आविर्गती' को खरीदा है?'

"मैंने फिर हिदाकर बनाया कि, उमका अनुमान ठीक था।

"उमने बड़ी नम्रतासे कहा—'श्रीमान्! जिन मन्त्रों ने चार हजार गिनी की

बोलों लगायी थी, उन्होंने पूछा है कि, क्या आप अनिश्चित पचास गिनो केर वह चित्र उन्हें दे सके है?'

"पचास गिनो! मैं तो उस वक्त पचास पादिय भी लेकर चित्र देने देता। जरा मेरी खुसी का अडावा लगाइये। किन्तु हमारे भीतर जो दीप्त छुटा है, वह ऐसे मौकों पर और भी प्रबल हो उठता है। किन्तु मकराई भरी रहता है हम लोगों में भी!

"मैंने अपनी गम्भीरता कायम रखे हुए पूछा—'गिफ्ट पचास गिनी?'

"बहु फिर नम्रता से झुका—'यह मैं कहने की बात नहीं है, किन्तु थोड़ा बौ पाने के लिए प्रयास करने में मेरा समझ में कोई नुकसान नहीं है।'

"मैंने मानों अनिच्छापूर्वक कहा—'उमने कह दो, मैं गिनी से कम में यह भीडा नहीं हो सकता।'

"और, आप यकीन करेंगे, मेरी भीम स्वीकार कर ली गयी—'अजनबी उठ नडा हुआ—'मुझे भी गिनी मिड गयी?'

★

आदर्श के नेता डॉक्टर एच बाग समझौता-मन्व्यारी बातों करने के लिए ब्रिटेन के प्रथम मंत्री लार्ड आर्च के पास गये। अपनी गच्छीयता के उम्राह में वे लार्ड आर्च में 'मैरिज' नामा में बने करने लगे, जिसे कहीं उन्मिक्त व्यक्ति में मैं कोई भी नहीं समझ रहा था।

मन्त्राण ही, किन्तुदिय लार्ड आर्च ने उठ केन्व नामा में धोखा आगन्ध कर दिया। वेन्ग मौक मटे रह गये। उनकी समझ में कुछ नहीं आ रहा था। ओर नड, कुछ धाने बाद लार्ड आर्च ने गम्भीर स्वर में कहा—'दिवसे, यदि कन्वुत बात किसी मनमौज पर पड़ेवता चाहते हैं, तो उस नामा का प्रयोग बोलिये, जिसे मनी व्यक्ति समझ गये।' —'परेनाटिडी' से

★



पुरुष और नारी के सम्बन्धों के आसपास अनन्त चक्र की तरह घूमनेवाले इस भक्त चेतन-समुदाय का नाम ही 'सत्सार' है। "वामन भगवान् के तीन कदम भी पुरुष-नारी के सम्बन्ध विस्तार को नाप नहीं सकते हैं"—व्यासजी ने स्पष्ट लिखा है। प्रसूत कल्पवृक्ष में बबला के वंशरही जब न्यासकार श्री भगवान् मोहन ने पुरुष-नारी स्वभाव की कुछ तरह भूमिमात्रों को बड़े ही मनोहारा ढंग से बिज्रित किया है। ऊपर चित्र में शक्तिनिकेतन के 'बीजरोपण महोत्सव' की एक सुन्दर स्मृति है—गुरुदेव पार्ष्व में खड़े ऋषि मनीषी वाणी में आशीर्वाचन का अमृत वर्षण कर रहे हैं।

चित्र नदबाबू की तूलिका का पावन प्रसाद है।

✱

चिढ़ी पढ़ना समाप्त करके ओर से उसे दारी नीलाय हुए बिना न रहेगी, इतना मेज पर पटक गरजकर उठा न निश्चय समझ लो। अब भी तुम मेरी बात नहीं सुनते, तो देखना, क्या होता है। जंगल के भीतर लो इजोकेयर पर बैठे हुए जान कौन-सी किताब लेकर सतीचात

आशा

तन्मय हो रहे थे। लटकी के बठ-स्वर की तेजी ने उनको चबित कर दिया। विताब को आँख के सामने मे हटानर स्नेह-स्निग्ध स्वर में वे बोले—“आखिर बात क्या है? तपन ने क्या लिखा है?”

“हर बार जो लिखता हूँ, उसमें भ्रम कुछ नहीं। बाढ़ में धनेक गोंब वह गये हैं, रिआयो के पास अपने खाने की भी नहीं रह गया है, जिससे लगान बढ़ा करना असम्भव हो गया है—बल्कि ‘स्टेट’ से ही कुछ रुपया उनकी सहायता के लिए दे देना अत्यंत प्रयोजनीय है।”

विताब बंद करके रसते हुए सनीवान सीपे होकर बैठ गये। कुछ चिंतित भाव में बोले—“बहुत दिनों से तपन यह बात कह रहा है। ऊपर बाढ़ के कारण नुकसान भी पहुँचा हुआ है। मुझे है, बापी लोगो का सर्वस्व डूब गया है। ऐसी अवस्था में ”

ऊपा के पासवाली घुँसी पर पैठा हुआ विजन चुपचाप पिता-पुत्री की बातें सुन रहा था। मृदु विद्रूप के स्वर में छूटते ही वह बोल उठा—“ऐसी अवस्था में ‘स्टेट’ से उनकी सहायता करना अत्यंत प्रयोजनीय है—क्या ऊपा ?”

घात, नीले आसमान में अबस्मात् बादल छा जाने से जैसी अवस्था होती है, वैसे ही, सनीवात के प्रमत्त मुख पर क्षणभर के लिए विरक्ति की रेखा गाढ़ी हो उठी। किन्तु उनमें बोलने में पहलेही ऊपा बोली—

“आप क्या समझते हैं, विजन दादा कि, बादा ऐसा नहीं करना चाहते हैं? बाबा

नयनीत

के मन की भी नितात यही इच्छा है। केवल हम लोगों के कारण उतावले नहीं होते। सच कहना, बाबा! हम लोगों की बात क्या ठीक नहीं? तुम्हारे द्वारा इतना प्रयय पाने के कारण ही भूनेजर..

उत्तनी बात खत्म होने से पहले ही लुब्ध स्वर में पिता बोले—‘यह क्या, ऊपा! सम्म्यता से बातें करो। माना, वह तुम्हारा नौकर है, फिर भी उससे पीछ-पीछे उसके सम्बन्ध में इस तरह की बातें करना तुम्हारे लिए बदापि उचित नहीं।’

ऊपा भी बृटिन हो पड़ी। जब अपिक् विरक्ति से चित्त भर हा, तब बात करने में विचार-विवेचना के लिए मनुष्य के मन में बोर्ड स्थान नहीं रह जाता। अतएव जोष के आवेग में उस तरह बात परके ऊपा का सिखा-भाजित भद्र मन तपोप में भर आया। पिता के अनुयोग से उसकी माया और भी बढ़ गयी।

उसके मन की बृठा देख, तुरत ही सनीवात का लक्ष्य करके हँसते हुए विजन बोला—“आप चाहें जो मौजे, किन्तु निश्चय ही यह अस्वीकार करने से काम नहीं चलेगा कि, वह अपना नौकर है। उसके सम्बन्ध की बातचीत में साधारणतः ऊँच-नीच में ह में निबल जाने में बोर्ड खास अन्याय नहीं हो जाना।”

सनीवात के मुख पर विरक्ति की छाया और भी घनीभूत हो उठी। वह बोले—“तुम्हारी ओर से इस प्रकार की बातें सुनने की आज्ञा मुझे नहीं दी, विजन।

९६

सितम्बर

किसी भी मनुष्य का अपमान करने का अधिकार किसी को नहीं है। अपने को मनुष्य कहकर अपना परिचय देनेवाले को मनुष्य की धृष्टा करना पहले सीख लेना आवश्यक है।”

विजय का मुख लाल हो उठा। वह कुछ कहने जा ही रहा था कि, ऊपा बोल उठी—“अच्छा, वह बात छोड़ो। यह तो बताओ, इसमें करना क्या होगा, बाबा।”

किताब फिर खोलकर सतीश्वर बोले—

“अब और निश्चेष्ट होकर बैठना उचित नहीं। सोचता हूँ, कुछ दे ही देना चाहिए।”

“रक्षा दोगे ? तुम भी अगर इस तरह चलोगे बाबा, तो सब कहो न, क्या हमें पय का भित्तारी बनना होगा ? तुम उसको लिख दो—‘लगान का हिसाब करके जितनी जल्दी हो सके, भेजे।’ उते बहुत प्रथम दे चुके, अब रहने दो।”

“ऐसा तो नहीं है, किन्तु अधिकांश रिआया का तो सर्वस्व नाश हो गया है—लगान कहाँ से देने बेंचारे ?”

“इसकी जिंता करना हम लोगों का काम तो है नहीं।”

ऊपा की बात का समर्थन करते हुए सभी विजय बोल पड़ा—

“इकजैकली ! ठीक कहती हो तुम।”

अपने मन की बात सुनकर सबको खुशी होती है। ऊपा का मुख भी दीप्त हो उठा। विजय की ओर एक बार देखकर उसने कहा—“आपके कहने से क्या होगा ? बाबा जो यह बात स्वीकार करना नहीं चाहते।”

सतीश्वर अन्तर्गत भाव से बाहर की ओर देखते रहे। एक अमागलिक नीरवता से घर का वायुमंडल मानो भारी हो उठा। विजय ने विभुषण भाव से



[भूख और अज्ञान]

कगरे में बैठे इन दो प्राणियों को एकाधिक बार दया के भाव से देखा। उसके बाद मीन भग करते हुए वह बोला—“अच्छा, एक काम कीजिये। बलिमें, कुछ दिनों के लिए आप लोगों के देश चला जाये। क्या राय है ?”

ऊपा का मुख जिस प्रकार एक आकस्मिक प्रकाश से चमक उठा, ठीक उसके विपरीत सतीश्वर के मुख पर ग्लानि की एक आभा छा गयी। दूसरी ओर देखकर उन्होंने कहा—“ना, अब वहाँ में नहीं जाऊँगा। मेरा जो वहाँ ठीक नहीं रहता।

बुझनेवाली दीप-शिक्षा की भौति ऊपा का मुख घूमिल हो उठा। फिर भी वह पिता से इस सम्बन्ध में कुछ बोली नहीं।

उनकी व्याथा का लक्ष्य वहाँ है, यह वह

भलीभाँति जानती थी। उन्होंने दीर्घ दस वर्ष पूर्व अपनी जीवन-सगिनी को नदी-तीर के समान पर चिता के सुपुर्द कर दिया था और तभी से देस का घर छोड़ आये हैं। फिर नभी वहाँ जाने का नाम नहीं लेते। पढ़ें भी उपा को इसी तरह अनेक बार निराश कर चुके हैं। और, बराबर मनीषात में यही उत्तर पाकर वह चुप रह गयी हैं।

विन्तु प्रस्ताव का मो खता हा जाना विजन को अच्छा नहीं लगा। सम्भार मुग करके क्षणभर तक वह चुप रहा। फिर सहसा उपा को लक्ष्य करते बोले—

“अच्छी बात है। आपकी यही रहने दिया जाये, हम-तुम चले, उपा। फिर कुछ दिनों में वापस आ जायेंगे। हमें अतिरिक्त मैनेजर ने जो समाचार दिया है, उसकी सत्यता की भी जाँच हो जायेगी। मरे भी मन में होता है कि, सब बगैर ठूठ है। यमूरी निरुद्ध ही दीव पढ़ें ही-नी होती है, विन्तु यहाँ न भेजी जाकर अपने घर में जमा की जाती होगी। अवश्य यही बात है।”

मनीषात ने एक बार विजन की ओर देखा। इनने ही में उपा बोल उठी—

“मेरे भी मन में यह बात दीव जैवनी है, विजन दादा। उनकी वही नियुक्ति होने में पढ़ें भी बाढ़ आती थी, प्रजा को दुग और कष्ट नी में; विन्तु पढ़ें तो कभी हम लोग अपनी आयदनी में वजित नहीं हुए। जाने यह क्योंकर होता है?”

सदनीत

“देस द' थिग। वे समझते हैं, उनका नाम देखने नोई जायेगा नहीं। उनके ऊपर अटल विश्वास है और इसी का अनुचित लाभ वे उठाते हैं। इसमें उनका कोई दोष भी नहीं है। निरुद्ध ही नहीं; क्योंकि इतना होने पर भी यदि वे अपने भविष्य के सम्बन्ध में सचेत नहीं बने—इतने विश्वास पर भी यदि अपनी ओर ध्यान न देकर उदामीन बने रहें—तब लोग उन्हें मूर्ख ही तो कहेंगे और उन्होंने यह प्रमाणित कर दिया कि, वे मूर्ख नहीं हैं। स्वाउड्ड” विजन हँसा।

पिता की ओर देखकर उपा बोली—
“जो भी हो, बाबा, विजन दादा के साथ में वहाँ हो जाऊँ? गलासपुर जाने की इच्छा भी बहुत दिनों में है। तुम नहीं जाँ हो, इसलिए मैं भी नहीं जा पाती हूँ और बाबा खूब साथ में विजन दादा जाना चाहते हैं, इसलिए हमारे जाने में अब कोई बाधा नहीं हो सकती। इतने दिनों तो यह कहते थे कि, जिसने मग जाओगी, वही तुम्हारी देख-रेख करेगा? अब तो देख-रेख करने के लिए विजन दादा साथ में रहेंगे। अब तुम आपत्ति न करो, बाबा।”

मनीषात ने चिन्ता-भाव में लहरी की ओर देखा। हृदय की प्रचट विरक्ति और अनिच्छा आँखों में और मुँह पर छा गयी, तथापि प्रचट रूप में विजन के सामने यह न कह सके कि, वह जिन प्रकार दम पर वे साथ घनिष्ठ में घनिष्ठतर हो

उठा था—उससे निकट भविष्य में ही इस घर से उसका सम्पर्क अभिन्न होकर रहेगा—इस सम्बन्ध में जैसे उनको कोई संशय नहीं था, वैसे ही औरों के मन में भी नहीं था ! इस विशाल भवन और विपुल सम्पत्ति से लेकर यह छड़की तक एक दिन उसी के हाथ समर्पित होगी, यह बात बहुत दिनों से प्रायः तय हो चुकी थी। सतीयात की राय स्पष्ट रूप से किसी दिन यद्यपि प्रकट नहीं हुई थी; फिर भी भावभगी देख राखने अनुमान कर लिया था। इसी कारण सम्भवतः दृच्छा होने पर भी बात उनके झूठ से न निकल सके।

ऊषा ने उनके मुख की ओर नहीं देखा। देखती, तो उनके अंतर की बाणी वहाँ पूर्णतः परिस्पृष्टित देख पाती। किन्तु पिता के इस मौन को स्वीकृति समझकर वह सानंद धोली—

“तो फल ही चला जाये, विजन दादा ! कल सबेरे की ट्रेन से ही।”

—२—

दीर्घ दस वर्षों के बाद ऊषा ने अपने यक्षपन के परिचित गाँव पलाशपुर में कदम रखा है। राण ही भर पहले तार द्वारा उसके आने का समाचार जानकर कर्मचारियों का दल, दासियों और गौकरो की सहायता से व्यस्त भाव से उसकी अभ्यर्चना की योजना में लगा हुआ है। जमींदारी की होनेवाली स्वामिनी के इस आकस्मिक आगमन से कर्मचारीगण कुछ भयभीत ही हैं। जिस उद्देश्य से

वर्षों बाद वे गाँव आयी हैं, इस सम्बन्ध में नाना प्रकार के वाद-विवाद चल रहे हैं।

विजन को ऊषा के साथ देखकर वे लोग विस्मित अवश्य हुए; किन्तु बहुत कम। इस बीच जो लोग फलकते में जमींदार के घर जा-आ चुके थे, वे विजन का परिचय जानते थे। सम्मन है, एक दिन ये ही सज्जन उनके स्वामी बन जायें—यह बात भी लोगों को अज्ञात नहीं थी। फलतः विजन के मनोरंजन के लिए भी उन लोगों ने अत्यधिक व्यग्रता प्रदर्शित की।

पुरानी दासी शोत्रमणि ऊषा के साथ आयी थी। उसकी सहायता से राफर के कपड़े बदलकर थोड़ी ही देर बाद ऊषा बाहर के एक कमरे में आ बैठी। विजन कुछ पहले ही वहाँ आ चुका था। घर के भीतर से, बाहर के रास्ते बूआ ने दो थप चाय और कुछ जलपान भिजवा दिया था। चाय के प्याले को पाली कर हाथ के सिंगार का एक लम्बा काशी चोते हुए विजन बोला—“आज की रात ‘रेस्ट’ लिया जाये, ट्रेन की ‘जर्नी’ से बुरी तरह ‘टायर्ड’ हो गया हूँ।”

दरवाजे पर पड़े परदे को हटाकर वह बाहर हो गया। ऊषा भी उठ ही रही थी कि, सहसा उसकी दृष्टि पड़ी दरवाजे के ठीक विपरीत दिशा में—दीवार पर टँगे अपनी माता के आदमकद चित्र के ऊपर। उज्ज्वल आलोक की दीप्ति में चित्र की मुस्कान-रेखा मानो राजोप हो उठी थी। ममतामय नेत्र-मुण्डल से बैठी ही

स्निग्ध ज्योति बरस रही थी। गले में पडे तनिक मुरझाये फूलों की माला बरसाती रात की सजल हवा में मृदु-मृदु डोल रही थी।

उषा का विस्मय अपनी सीमा को भूल गया। इसी बेप म उसकी माँ की तस्वीर बलबत्तेवाले घर में भी रखी हुई है। यहाँ यह चित्र कौन लाया और नित्य पुष्प-हार से कौन इसकी अर्चना करता है? इस घर की अधिवासिनी बुआ, चाची आदि में क्या इतनी उदारता है? कौन जाने?

निर्निगेष नेत्रों से उषा देख कर तस्वीर की ओर देखती रही। माँ की याद आज भी उसके मन में अत्यन्त ताजी है, यद्यपि तब वह केवल ८-९ वर्ष की बालिका ही थी। इन १० वर्षों के व्यवधान में एव भी बात उसके मन में चिस्मृत न हो पायी है। आज भी इस घर के कौने-कौने में उनका स्पर्श विजडित है। जिधर देखा जाये, उधरही उनका निदर्शन है। अनजाने ही उषा की आँखों में दो बूद आँसू आ गये। दरवाजे के सामने परदे की आड़ में कोई आकर खड़ा था। मधुर स्वर में प्रदत्त गुनार्पा पडा—“भीनर आ सजना है?”

आँखों की पोंछ उषा बोली—“आइये।” कमरे में प्रवेश करके जिन व्यक्ति ने उषा की ओर देखा, दोनों हाथ जोड़कर नमस्कार किया, उगे उषा ने मानो पहचाने भी बड़ी देखा है—ऐसा प्रतीत तो हुआ, पर बहुत दिनों पहले का देगना स्वप्न ही मयनीत

जैसा होता है। टीक यह पहचान न सकी। जो सज्जन आये, उनकी उम्र २५-२६ के लगभग होगी—लम्बा, गठ्ठा हुआ धरीर। रस साफ नहीं बहा जा सकता, किन्तु टीक सावला भी नहीं। फिर भी उनके मुख और आँखों में एव ऐसी मम्मीरता, एव ऐसी विशेषता थी, जिससे एव बार उनकी ओर देखाकर फिर दृष्टि फेरने में कुछ क्लिप्त हो जाना ही स्वाभाविक है।

उषा नमस्कार का जवाब भी मानो भूल गयी। अत्यन्त साधारण भाष से मोटे वगड़े और कुर्द-घोती में भी वे बड़े सुंदर लग रहे थे। तुरन्त मुख-राबर उन्होंने अपना परिचय दिया—“मेरा नाम है तपन राय—आप लोगो का कर्मचारी।”

विह्वल भाव से व्यस्त होकर उषा ने नमस्कार किया और बोली—“बैठिये, बच छीटे है?”

एक कुर्मी खींचकर बैठते-बैठते तपन बोला—“अभी-अभी। आते ही सबर मिली रि, आप लोग आये है। किन्तु कलकत्ता छोड़कर आप किसी दिन यहाँ भी आ सकेगी, ऐसी हम लोगो की धारणा बिलकुल नहीं थी। जिस घर भी ऐसा अवस्थान्। याज्ञ-मा पहटे गबर देकर यदि यहाँ पर आप आती, तो आपका विशेष कष्ट न होने देने की जिननी भी सम्भव व्यवस्था हो सकती है, कर दी जाती। इस प्रचार आ जाने में निश्चय ही काफी अगुविधा सहन करनी पड़ी होगी। इससे अलावा

में भी तो यहों नहीं था।”

मनुष्य का मन विचित्र है। क्षणभर पहले ही ठगा निश्चय कर चुकी थी कि, तबल में भेंट होने ही कठार स्वर में उसकी अनुपस्थिति में निम्न संस्थित नृत्य करेगी। इसके पहले कोई और बात पुरु नहीं करेगी। नई रथों में वह जमी

दारी का कपो नरगल कर रहा है, इसका ज्ञान भी वह माय ही भोगी। किन्तु तबल की धान के माय-ही-माय उमरे शानाज्ज्वर भुल के ठपर जय उमकी दृष्टि पड़ी, तब मन-ही-मन निश्चय की हुई उठोर जाने जाने किम निगुड कारण में, चबड हवा के साथ में हिम-पुजित मेघ-मनूप की भौति, वही छिप गयी।

उपा बोली—“ना, अमुविधा हम ओगों को कुछ विगप नहीं हुई।

किन्तु गुना, आप वही रोमी देखने गय थे। सच? किन्तु आपने डाक्टरों विद्या भी मौल ली है, यह तो आज तब इस लोगो ने कभी गुना ही नहीं।”

तबल हँसा। क्षणभर उपा की ओर देख दृष्टि झुकाकर बोला—“ना, डाक्टर होने का सुयोग मुझे कभी नहीं मिला।

तो भी “

बाल वह सत्य न कर सका कि, कीतुहट में भरकर उपा बोली—“तब डाक्टर न होकर भी डाक्टरों करने है, होगा लगना है। या कविगानी करने है?”

“ना, यह भी ठीक नहीं। शमियारों-विनायें दगलर दवाएँ देता हूँ।”

“होमियारों की ?

यानी उनमें भी लोग अच्छे होते हैं?”

केवल मुटु मुक्कान में ही इस बात का उत्तर देकर तबल पूछ बैठा—“आपका होमि-यारों की में विश्वास नहीं है क्या?”

“तबिल भी नहीं।

बीमार पड़ने पर मैं दिना दवा रहना पसंद करूँगा, किन्तु ‘होमि-यारों’ किमोट वमी न कर सकूँगी।”

तबल फिर तबिल हँसा, मुटु बाग नहीं।

अविश्वास की भित्ति जहाँ इतनी दृढ़ है, वहाँ दागल बानों में उमे शिपाने की चेष्टा एक विडम्बना ही होती है।

उमकी नीरव दम ऊठा ने पूछा—“किन्तु आपने बतलाया नहीं कि, शमियारों की में रोमी अच्छे भी हो उठते हैं या नहीं?”

“निश्चय किसी आयु शेष रहती है,



[“मेरे कहने में अनुमार काम करोगी ? तो अच्छी बात है, उन सज्जन को भाग ही बिदा करे।” छ १०३]

ऐसे ही कोई-नोई अच्छे हो उठते हैं। सम्भव है, बिना दवा के जो मर जाते हैं, वे भी इस तरह अच्छे हो उठते हों। आप लोग जमींदार हैं, दूर रहते हैं, रिआया की दुख-सुदृशा, अभाव-अभियोग कुछ भी आप लोगों के सामने नहीं आता-बानो में नहीं पड़ता। उनके साथ आप लोगों का सम्बन्ध केवल रजान-बमूली तक ही है। कितने ही गोंधों के बीच में एक भी डाक्टर नहीं है, एष भी दवाखाना नहीं है—बीमार पड़ने पर भाग्य के ऊपर निर्भर रहकर पड़े रहने के अतिरिक्त और कोई उपाय ही उनके पास नहीं है। इसलिए मेरी होमियोपैथी उनके लिए विलंब न होने दे, कुछ होने के कारण मर जाते हैं।”

बात के साथ मूढ़ मुस्मान भी थी, किन्तु मुस्मराहट के भीतर कितनी घृणा नीहित थी, ऊपा की आँखें भी स्पष्ट दस सक्ती। सणभर के गिर उतरी नीरवदृष्टि तपन के मुख पर गड़ी हो रह गयी।

बाँदी के एक ट्रे में नवविनिमित्त घेरा के फूंगे की एक माला लेकर नीरर घर में आया और उसे तपन के पास रत गया। ऊपा की ओर देखकर स्थिर भूँह में तपन बोला—“आज आप ही मों की तस्वीर के ऊपर से मूर्ती मात्रा उदक दीजिये।”

“ओह! मों की तरवार पर, लगता है, आप ही रीज पूर चढ़ाने है। अच्छा, तस्वीर आपने यहाँ पामी, बनाने के तो?”

“अपने एक आर्टिस्ट-मित्र को देकर उतरवा ली है। सम्भव है, आप न जानती

हो—आपकी मों मेरी भी मों थी।”

तपन का बँट स्वर तुरत भर्रा आया। ऊपा ने नीरव भाव में मों की तस्वीर को माला पहना दी।

—3—

तीन-चार दिनों बाद, एक दिन सबेरे विजन ने ऊपा को गुवास्वर कहा—

“आज बल्लवत जाने की मोन रहा है।”

अत्यन्त विस्मित हो ऊपा बोली—“क्या?”

चाय के टेबुल पर बैठकर ही बातचीत हो रही थी। उदाम भाव में बाहर की ओर देखकर विजन बोली—“और वामों का हर्ज करों जकारण यहाँ बने रहने का तो मैं कोई कारण नहीं देगना। हमने अच्छा तो”

अधीर भाव में बमचे को प्याले पर पटककर ऊपा बोली—“इसमें अच्छा जो भी हो, यह मैं नहीं जानना चाहती, किन्तु हर्ज करती स्वीकार करती हूँ तो आप क्यों जायेंगे? कुछ दिन रहेंगे, यह भी रहा था अपने।”

“यह बात मैं जम्बीरार नहीं करता, ऊपा! मैं जो अपना काम हर्ज करते भी यहाँ आया था, जगता कारण था। मैंने समझा था, यहाँ भी मुझे काम करना होगा। निगाह भाव में यहाँ बैठे रहने के लिए मैं नहीं आया था, किन्तु यहाँ आकर देखता हूँ कि, मानो कुछ भी करने की आवश्यकता नहीं। लगता है, तुम्हें भी बाद दिगनी होगी कि, तुम भी यहाँ गिरफ घूमने नहीं आया हो। घूमने के

लिए वही जाने की आवश्यकता यदि हो भी, तो मेरी समझ में बगाल के गाँव इसके उपयुक्त नहीं है। अवश्य ही यह मेरी राय है, तुम्हारी राय इसके विपरीत होना असम्भव नहीं है।”

स्वच्छ सलिल की तलहटी में स्थित उपल-खड की तरह ये बातें कितने अतराल में निहित थी, यह स्पष्ट होकर ऊपा को दृष्टिगोचर हुए बिना न रहा। वह अप्रतिभ भी कुछ हुई। जिस उद्देश्य को लेकर वह आयी थी, उस सम्बन्ध में कुछ नहीं करके खूब निश्चित भाव से चारों ओर घूमती-फिरती ही वह दिन काट रही है। मृदु स्वर में हँसकर बोली—

“हाँ, कुछ भी यहाँ किया न जा सका, किन्तु एक बात मेरे मन में आती है। विशेष कुछ शायद हम लोगों को करने की जरूरत भी न होगी। जहाँ तक समझ पायी है, तपन बाबू सचमुच ही खरे आदमी हैं। लगातार कई सालों से याद आती है। उससे प्रजा की जो अवस्था हो गयी है, उसे मने देखा है। इसलिए ”

बात खत्म होने से पहले ही असहिष्णु भाव से विजन बोला—“तुम्हारी चाल-ढाल, भाव-भंगी देखकर ठीक ऐसी ही बात तुम्हारे मुँह से सुनने की आशा भी थी। मुझे इस सम्बन्ध में कुछ नहीं कहना है। सम्पत्ति तुम्हारी है, रहे या जाये। उससे न मेरा नुकसान होता है, न फायदा ही। तब भी एक व्यक्ति के अवोष होने से इसरा खूब अच्छी तरह से अनुचित लाभ

उठा रहा हो, यह देखकर ही मने इसका प्रतिकार करना चाहा था।’

ठीक स्थान पर चोट कर पाने से कुछ सघता ही है। अपने का अवोष कहा जाना सुनकर आदमी दुरत हो धर्म सा बैठता है। ऊपा का सुखी-सम्पन्न मुख लाल हो उठा। आँख फाड़कर विजन की ओर देखती हुई वह बोली—‘क्या करने को आप कहते हैं मुझे?’

“मेरे कहने के अनुसार काम करोगी? तो अच्छी बात है, उव सज्जन को आज ही विद्या करो यहाँ से।’

मूर्तन भर के लिए वह सिहर उठी। पर दूसरे ही क्षण अपने को सयत करके बोली—“तपन बाबू की बात कहते हैं? किन्तु यह क्या ठीक होगा?”

सान धराई छुरी की तरह प्रदीप्त दृष्टि मिलाकर कई मूर्तन तक विजन मानो ऊपा के अतस्तल तक की खान लेकर गम्भीर भाव से बोला—‘किन्तु यह काम करने ही के लिए क्या हम यहाँ नहीं आये हैं?’

ऊपा विव्रत हो पड़ी। दूसरी ओर देखकर केवल इतना बोली—‘हाँ, किसी हद तक। तब भी क्या’

“काम करने के स्थान पर यह या, ‘तब भी’, ‘किन्तु’ आदि छोड़ देना होता है, ऊपा। अवश्य ही मैं इसके लिए तुमसे अनुरोध नहीं करता—तुम्हारी इच्छा हो, तो उसे रहने दो।’

दरवाजे से मोवर बोला—“मनेजर बाबू

मिलना चाहते हैं।”

ऊपा का सारा शरीर अवारण ही कोप उठा। विजन ने जवाब दिया—
“उन्हें यही भेज दो।”

तपन ने कमरे में बाहर दोनों व्यक्तियों को नमस्कार किया। जिज्ञासुओं को ऊपा की ओर देखकर वह बोला—“अपने दादा को उन रूपों के लिए चिट्ठी लिख दी आपने क्या?”

ऊपा तुरन्त ही उत्तर न द सकी। अत्यंत विस्मय में भरकर विजन ने प्रश्न किया—“विमला क्या? किन रूपों के लिए चिट्ठी लिखनी होगी?”

ऊपा अब भी भानो कुछ कठिन हो पड़ी, क्योंकि गाँव के निवासियों की दुर्दशा देखकर महात्मनार्थ कई हजार रूपों ‘स्टैंड’ में बिकवाने का वह एक प्रकार में वचन दे चुकी है। किन्तु इच्छा रहने हुए भी यह धान क्यों वह विजन को बतला नहीं पा रही है, यह तो बर्ती जाने।

तपन ने विजय की बात का उत्तर दिया—
“विपन्न ग्रामवासियों की गहायता के लिए इन्होंने अपने धान की कुछ रुपये देने के लिए चिट्ठी लिखी है।”

दीप्त दृष्टि क्षणभर के लिए ऊपा के मुँह पर फैल कर विजन के वचन का ध्यान बाँट गया—“हूँ!”

चौट बानेवाला यदि निपुण हो, तो एक मुँह में भी भर्भेद कर सकता सम्भव है। कुछ के भाव को पराभूत करके महज भाव से ऊपा बोली—“बाग की

चिट्ठी लिखने की दरफार में नहीं समझनी। यह रुपये देना इस समय सम्भव नहीं होगा।”

“सम्भव न होगा?”

अप्रयासित आधात से आहत होकर जैसे कोई तिलमिला उठ, उगी तरह तपन तिलमिला उठा। ऊपा की ओर उसने देखा। ऊपा ने भौंह दूसरी ओर फेर लिया। विजन ने ही जवाब दिया—
“ना, सम्भव न होगा?”

क्षणभर कुछ स्वस्थ रहकर तपन बोला—
“इतनी दुरवस्था आपने देगी ही है। कुछ उपाय न करने में मृत्यु के अतिरिक्त और इनका कोई चारा न होगा, यह भी आप जानती ही हैं। इनके लिए यह साधारण धन देने में आपत्ति न करे।”

“किन्तु यद्यपि ही तो इसी तरह के लोग दुराभवत पाते हैं और स्वयं उसका प्रतिकार कर लेते हैं। इसके लिए जमींदार की सहायता की आवश्यकता तो कभी नहीं होती। इसी बार ऐसा क्यों होगा? आपने पहले जिन लोगों ने इन ‘स्टैंड’ में धान बिचा है, उन लोगों ने कभी इनके दुःख-दर्द की भावना में इन प्रकार अभीरता नहीं प्रदर्शित की है। इनके लिए आप ही इतना गिरदने क्यों मोठ लेते हैं?”

तपन का भौंह खिन्न हो उठा। वह कुछ कहने जा ही रहा था कि, अचानक न देकर विजन फिर बोली—

“आपका धान शायद खत्म हो गया!”

“क्या?” एक दीर्घ निश्वासा छोट

तपन बोला— ना, काम और रह ही क्या गया है ? एक बात

ऊषा को लक्ष्य करके ही वह बोला था । मधुर स्वर में ऊषा ने कहा— क्या कहना है कहिये ।

आप लोगों से मासिक वेतन के नाम पर मैं जो खर्च पाता हूँ, दया करके वह दो साल का आप पगारा दे दीजिये । कह तो इसके लिए मैं हड़नोट लिख दूँ ।

ऊषा ने विपन्न भाव से विज्ञान की ओर देखा । विज्ञान भी क्षणभर के लिए कुछ विवृत हुआ तब भी उक्त भाव पर विपन्न बन कर मैं उसे बहुत देर न लगी । सरल भाव से ही वह बोला— हाँ यह बात पहले ही से कहने को सोचा था । यहाँ काम करने की सुविधा आपको और न होगी । कहीं और काम करने की चेष्टा कीजिये ।

ऊषा के झुके हुए मुँह की ओर देखकर तपन बोला— अच्छी बात है । आज ही मैं काम को छोड़ देता हूँ—अभी । जमा-खानों का क्या आप ही देखेंगी ?

उसकी ओर बिना दस हाथीग स्वर में ऊषा बोली— विज्ञान दादा का हाँ वह सब समझा दीजियेगा ।

अच्छा आप जरा कष्ट करके एक बार कचहरी घर में चलेग क्या ?

सुनोच स भरकर विज्ञान बोला— वह न होगा शाम को

देखा जायगा— अभी रहने दीजिये ।

औ आप लोगों की इच्छा ! नमस्कार !

तपन दो कदम वापस बढ़कर सहसा ही लौट पड़ा । ऊषा विस्मित दृष्टि से उसकी ओर देखने लगी । वह बोला— आपसे एक प्रार्थना है । मैं खर्च हम चाहिये है । आपको छोड़कर और कोई दे नहीं सकता । इसीलिए आपको कष्ट देता हूँ ।

उसका बात ने समझकर ऊषा और विज्ञान दोनों ही के मुँह पर विस्मय की रेखाएँ खिच गयी ।

तनिक हसकर तपन बोला— यही मेरा एक घर और कुछ सम्पत्ति है । कुछ न हान पर भी उसका खाम १० हजार रुपये होगा । उसने बदले में दया करके आप मुझे ५ हजार रुपये दे दीजिये । बचक नहीं मैं एकदम बच देने के लिए तैयार हूँ ।



अज्ञानम् अज्ञानम्

[चित्र हरेन्द्रदास द्वारा निर्मित बरक साहनीकट]

“समस्त ? आप सर्वस्व अत कर देये ?”
इच्छा न होते हुए भी ऊषा के बड़-स्वर
में वेदना का आभास जाग उठा।

तबिब हँस कर तपन फिर बोला—
“सत्तार में मैं एवदम जवेअ हूँ। मुझे
इन सबकी जरूरत नहीं। तो रुपये
देने में आपकी आपत्ति तो नहीं है ?”

ऊषा के कुछ कहने में पहले ही बिजन
बोला—“बिलकुल ही नहीं। तब भी देखना
होगा कि, सम्पत्ति सचमुच बितने दाम
की होगी . . .।”

“देखेंगे क्या नहीं ? निश्चय ही देंगे।
बिना देखे रुपया कैसे देंगे ?”

“देख-मुनकर यदि समझे कि, रुपया
दिया जा सकता है, तो आपकी रुपया
मिल जायेगा।”

“अन्य धन्यवाद।”

तपन कमरे के बाहर चला गया।
अत्यंत तृप्ति के साथ बिजन बोला—
“... जाये। पर यह आदमी इतनी
आगामी में चला जायेगा, ऐसा मन अभी भी
स्वीकार नहीं करता।”

“कारण ?”

एतनी देर बाद ऊषा ने झूठ उठाकर
देना। बिजन ने उत्तर दिया—“कारण
और क्या ? ऐसा भयकर आदमी !”

“बिल्कुल उगवे भीतर में भयकरता कुछ
विशेष प्रकट हुई है क्या ?”

—८—

सारी रात गुन चुकने पर मनीकांत
ने दीर्घ निश्वास भरकर कहा—“बहुत

बड़ा अन्याय कर आयी, ऊषा !”

ऊषा के अंतर में कुछ समय से यह
बात सुईकी तरह चुभ रही थी—“वह अन्याय
कर आयी है—अन्याय कर आयी।” मन के
सामने प्रतारणा नहीं चलती। इसलिए
उसके अनेक खल करने पर भी प्रबल
हवा में तृणसह की भाँति उसकी सारी
युक्तियाँ—सारे प्रयोग—उड़ जाते थे। वह
सगत काम कर आयी हूँ—मन इसे किसी
तरह स्वीकार करना नहीं चाहता था।
और, आज हमने ठीक उसी पीड़ित
मर्मस्थल पर मनीकांत का यह आघात।

पुष्पी के पास मुल की ओर देख पिता
बोले—“सम्भव है, तुम समझ गयी हो कि,
यह हम लोगों के सर्वनाश की योजना
बनाया करता था। परन्तु याद यह है
कि, हम लोगों का जो वर्तव्य था, वह
हम लोगों ने तो किया नहीं—हैं, यह
अवश्य हम लोगों के बढ़ते रहता जाता
था। उगवे ऊपर अवधारण ही तुम लोगों
का बिड़प था। इसीलिए उस दिन मैंने
अत्यंत अनिच्छा में तुम लोगों को पलाशपुर
जाने दिया था। गोवा मा—यहाँ जाकर,
उमका काम देकर, उगवे सम्बन्ध में
तुम्हारी धारणा बढ़ जायेगी; बिल्कुल मेरे
समझने में भूढ़ हुई थी। ऊषा ! मैंने
एक बार भी न सोचा था कि, सचमुच
तुम लोग उसे काम में छुन दोगी। सम-
मन-मन इस तरह का कुछ करने के पहले
मेरी अनुमति लेने की आवश्यकता होगी—
यह भी मेरी धारणा थी।”

ऊपा का सिर झुकता जा रहा था। मन को जितना ही समझाया जाये, अपराधी मन अपने को निर्दोष करने सब समय सड़ा नहीं हो सकता।

सतीकात बोले—“उसने एक बार भी नहीं पूछा कि, किस अपराध पर उसका काम छूटा ? कोई बात ?”

“ना, एक बात भी न बोले।”

ऊपा का कंठ स्वर भर्राया प्रतीत हुआ। भरे गले से सतीकात बोले—“मुझको भी एक बार न बतलाया उसने। सम्भव है कि, सोचा हो, मेरे इशारे से ही सब-कुछ हुआ है ? घर-द्वार जो-कुछ भी था, सब-कुछ बेच दिया है और कुछ नहीं। किन्तु अब वह गया कहाँ ? पलामपुर में नहीं है—ठीक जानती हों ?”

“हाँ, वहाँ से आने के दिन भी उनको खोज लिया था। घर-द्वार बेचकर जो रुपये मिले थे, वह सब अपने सेवा-सध को दे गये थे। उन्होंने जिस दिन घर-बित्री के रुपये पाये, उसके दूसरे ही दिन देश छोड़कर चले गये।”

“किन्तु वह गया कहाँ ? मेरे पास भी तो एक बार नहीं आया। किन्तु आता भी क्यों ? यहाँ उसके आने का मार्ग भी तो बंद है। बिना दोष के ही इतने बड़े अपमान का बोझ जब तुम लोगो ने उससे माथे पर ढाल दिया।”

बात सतम होने से पहले ही सतीकात दृष्टि फेरकर दूर मेघाच्छन्न आकाश की ओर देखने लगे। ऊपा ने स्तब्ध भाव

से पिता के व्याधा-आहत मुँह की ओर देखकर दूसरी ओर दृष्टि कर ली।

दरवाजे पर पड़े परदे के पीछे से आने की सूचना देते हुए विजन कमरे में आ गया। सतीकात ने पूछा—“आज धूमने नहीं जा रहे हो, विजन ?”

ऊपा की ओर इशारा करके विजन बोला—“इनसे कहता था, कितने दिन बाद आज कलवत्ते आये हैं—एक बड़ा-सा ‘ट्रिप’ कर आये। चलो, ऊपा।”

पुनी की ओर देख सतीकात बोले—“बहुत अच्छा तो है। जाओ, धूम आओ।”

पिता की ओर बिना देखे ही ऊपा बोली—“मुझे अच्छा नहीं लगता, यावा।”

सतीकात ने विस्मय से भरकर सड़की के गम्भीर मुख की ओर देख मानो कुछ समझने की चेष्टा की। ऊपा विजन के रुष्ट मुँह की ओर बिना देखे ही कमरे के बाहर हो गयी।

विजन का मुँह काला हो उठा। बोला—“कई दिन से यह देख रहा है कि, ऊपा में एक बड़ा परिवर्तन हुआ है। मन की गति उसकी बहुत बदली जा रही है। यह तो ठीक नहीं है।”

सतीकात ने जवाब नहीं दिया। क्षण-भर प्रतीक्षा करके अधीर भाव से विजन बोला—“उसका कारण आप कुछ अनुमान कर सकते हैं ?”

उसके बात करने के ढंग से विचलित होकर भी सतीकात ने स्वाभाविक प्रशान भाव से ही जवाब दिया—“ना।”

होनी हं, वहाँ शुभ के ऊपर वाले धन्य की तरह बिंदुमात्र धृति भी बहुत बड़ी होकर सामने आती और मन को धुव्य करती हं। विस्मित मुख से वह बोला— 'भाय्य ही से आज आपके साथ भेंट हो गयी। न होती, तो . . . "

"न होती, तो बाबा के सम्बन्ध में यह गलत धारणा आपके मन में रह जाती। अन्याय मंने किया और दोषी हो बाबा ! क्या ही अच्छा विचार आपने किया था ! "

घात करते-करते वह अप्रसर हो रहा था। थोड़ी ही दूर आगे सतीकात का घर था। घर का कुछ भाग दिखायी भी पड़ने लगा था। एक दुविधा के साथ तपन बोला— "मुझे क्या सचमुच ही आपके घर जाना होगा ? "

"वाह ! इतनी देर बाद यह बात ? आप भी अच्छे आदमी हैं ! "

"किन्तु लगता हूँ यह ठीक न होगा । "

"क्यों, बतलाइये तो सही । " ऊषा कुछ विस्मय और कुछ विरक्ति के साथ उसकी ओर देखने लगी ।

क्षणभर चुप रहकर तपन बोला— "विजन बाबू क्या मुझे देखकर लुश होंगे ? "

ऊषा रकी ! कटस्वर में तनिक शक्ति भरकर बोली— "आपको अपने घर में चलने को कह रही हूँ—विजन बाबू के घर में नहीं । "

तपन कुछ बोला नहीं। विजन के इच्छा-नुसार ही वह काम से छुड़ाया गया था, यह बात कहना याद करके भी वह रुक

गया और ऊषा के साथ-साथ चलता गया ।

—६—

घर के सामने ही लान पर बैठकर सतीकात अपने एक पुराने मित्र के साथ बातचीत कर रहे थे। विजन भी अनुपस्थित न था। तभी उनकी मित्रवार्ताकार पोष्टिकों में हकी और ऊषा व तपन के ऊपर कितनी ही आँखें एक साथ जा पड़ी। विजन का सारा मुख लाल हो उठा। उच्चस्वसित स्वर में ऊषा निकट आकर बोली— "तपन बाबू को पकड़ लायी, बाबा ! कहते थे, आने की इच्छा न थी। यदि मैं न जाती, तो न-मालूम कितने दिनों तक यहाँ न आते। कालेज से लौटते-समय इनके घर चली गयी थी । "

स्नेहभरे स्वर में सतीकात ने कहा— "ऐसी बात ! तपन तुम्हें हुआ क्या है ? इतने दिनों तक आये क्यों नहीं ? "

"कहिये, कहिये कि, समय नहीं था। जानते हैं बाबा ! मुझसे कहा था, आने का समय न मिला, किन्तु इनके घर से खबर मिली कि, समय के अभाव में केवल सोये रहकर ही उन्होंने ये कई दिन काट दिये हैं । "

सतीकात हँस पड़े। विजन को छोड़कर सबके मुख पर हँसी की रेखाएँ खिंच गयी। ऊषा ने एक बार पिता की ओर देखकर कहा— "बाबा ! मालूम होता है, तुम्हें चाम नहीं मिली ? मैं अभी आयी । "

तेजी से वह घर के भीतर चली गयी। सतीकात के पास ही खाली नुर्ती खीचकर

तपन बैठ गया।

ऊपा थोड़ी ही देर बाद वापस आ गयी।
नींदर चाय का सामान रख गया था।

ऊपा खाली कपों में चाय डालने लगी।
विजन एकाएक ही उठकर बोला—“मुझे
काम है, मैं चला।”

“चाय तो पीते जाओ। ऊपा, विजन
को सबसे पहले दे दो।” उसके व्यवहार में
सतीकात या मन विस्मय के भाव से दया
हाने पर भी वे सहज भाव में ही बोलें।

जोर में तिर हिलारर विजन बोला—
“ना, मैं देर नहीं कर सकता। चाय रहने
दीजिये और देखिये।” सतीकात
की ओर देखकर ही वह बोला—“मैं
ने आपको एक बार बुलाया है। आज
शाम तक या सबेरे न आप?”

सामने के टी-ब्याच पर गे हँट उठकर
वह चला गया। उसके इस भौंति जाने से
सबसे मन में विरोध आगन् हुआ। तपन
का माया और भी नीचे झुक गया।

अस्पृष्टि स्वर में ऊपा बोली—“अभद्र!”
बातचीत फिर उस तरह न चल सकी।
चाय पीकर अपने मित्र के विदा हो जाने
पर सतीकात बोले—“विजन की मौं ने
मुझे बुलाया है, न हां अभी ही मिल आऊँ।”

पिना की ओर देखकर दान स्वर में
ऊपा बोली—“हटानु तुम्हें अपनी मौं के
पान जाने को कहने का कारण क्या है?”

“वह विजन की शादी के लिए अत्यंत
हो व्यग्र हो उठी है।”

“बिन्तु उसके लिए उन्हें तुम्हारी
गयनीय

आवश्यकता क्यों होगी, यावा।”

सतीकात हँस पड़े—“मेरी आवश्यकता
न होगी? तुम्हीं उसकी बहू जो होगी।”

वात सत्य होने के पहले ही तीक्ष्ण
स्वर में ऊपा बोली—“ना, यावा। ना,
यह होगा नहीं। तुम उन लोगों में कह दो।”

थोड़ी देर तक निर्वाण हो पुत्री की
ओर देखने रहकर सतीकात बोले—“क्या
बहुनी हा ऊपा? यह कौन होगा? यह
दान ता प्रायः स्थिर हो चुकी है।”

“ना, ना। क्यों नहीं होगा? तुमने
तो सभी उन्हें वचन नहीं दिया?”

“वचन तो नहीं दिया, बिन्तु
बिन्तु तुम्हारा विजन को पसंद नहीं करती?”

पिना की ओर फिर देखकर स्थिर
स्वर में ऊपा बोली—“ना, बिलकुल नहीं।”

विजन के जाने के व्यवहार को ही
सबसे कारण समझकर एक बार हँसकर
बात को छोटी करने के लिए सतीकात
बुछ कहने जा ही रहे थे कि, पुत्री का
पत्थर की तरह बटोर मुरा देकर दस
गये। कारण जो भी हो; बिन्तु वह
आपत्ति अविचल रहेगी—यह समझने में
उन्हे तनिक भी देर न लगी।

—३—

तपन चलते के एक स्कूल में मास्टर
है। सतीकात यावू के आग्रह करने पर
भी पलायनपुर जाने की बात उसके स्वाभि-
मान को स्वीकार नहीं थी। उनके पर
पर भी उनमें मिलने वह कभी-बदाव हो
जाता। उस दिन भी जब वह वहाँ

पहुँचा, ऊपा कालेज जाने के लिए घर से बाहर निकल रही थी। प्रसन्नमुख से उसका स्वागत करते हुए वह घर के भीतर आ गयी। अकारण ही उसका मुँह दीप्त हो उठा। तपन बैठ गया। ऊपा के कुछ बोलने से पहले ही वह बोला—“कुछ दिन के लिए बाहर जा रहा हूँ। न आने से डरना बाबू चितित होगे—दसों-लिए उनकी सूचित करने आया हूँ। वे घर में हैं तो ?”

ऊपा का प्रसन्न मुख सहसा म्लान हो उठा। वह बोली—“कहाँ जा रहे हैं ?” सहसा बाहर जाने की क्या आवश्यकता हो आयी . ?”

“आवश्यकता ?” तपन क्षणभर तब इधर-उधर करके बोला—“मैंने तो कुछ दूर पर एक गाँव में चेषण का भारी प्रकोप फैला हुआ है, ऐसा सुनने में आया है। हैजा भी फैल रहा है। वहाँ के रहनेवाले बहुत ही गरीब हैं, इसलिए भगवान का नाम लेकर पड़े रहने के अतिरिक्त उनके पास और कोई चारा नहीं है।”

बात सत्य पड़े तपन हँसा। प्रकाश के नीचे छिपे अधरार की तरह इस हँसी के अंतराल में जो घनीभूत वेदना निहित थी, उसे समझने में ऊपा को देर न हो सकी। बोली—“इसीलिए क्या आप उनकी सेवा करने जा रहे हैं ?”

“एकदम सेवा तो नहीं, विन्तु में जा रहा हूँ . . .”

“एकदम सेवा तो नहीं, फिर भी

आप जा रहे हैं ! अच्छी बात है। . . . विन्तु क्या आपका जाना बिलबुल तय है ?”

“तय ही है। और, लगभग घंटे ही भर बाद मेरी गाड़ी है।”

ऊपा क्षणभर मौन रहकर न-जाने क्या सोचती रही। फिर बोली—“जरा बँटिये, तपन बाबू ! मेरे आने से पहले चले न जाइयेगा।”

व्यस्त पद से वह कमरे से बाहर हो गयी। तपन ने टेबुल पर से अखबार उठा लिया। ऊपा को लौटने में देर न लगी। उगरे पाँव के दाबों से चीनकर मुँह उठाते ही बेसीम विस्मय से तपन स्तम्भित रह गया। बीमती साड़ी, ब्लाउज आदि को त्याग कर नितात सीधी-सादी एक काले किरारे की साड़ी और साधारण ब्लाउज ऊपा ने पहन रखा था। हाथ में था गूटबैग। बोली—“चलिये, तपन बाबू !”

तपन आश्चर्य के साथ बोला—“कहाँ ?”

“कहाँ ? यह तो आप जानें। जहाँ चल रहे थे, वही ?”

अबाम् होकर कई क्षण उरली और देखते रहकर तपन बोला—“दिमाग सराव हो गया है न क्या ? आप कहीं जायेगी ?”

“आपके साथ। आप जहाँ जायेगे।”

“मेरे साथ ?”

“हाँ, आपके साथ। आपने क्या सोच रखा है कि, मैं आपको इतने भयानक अगुस्त के बीच अकेले छोड़ दूँगी ? आपने मुझे कौसी समझ लिया है ? एव

दिन जो बर चुकी है, उसी लिए आपने क्या मुझे अत्यंत हीन समझ रखा है ?

उसकी घातकीय और बोलने के ढंग, दोनों ने तपन को हतबुद्धि कर दिया। थोड़ी देर बाद बोला—“यह सब आप क्या कर रही हैं ? आपके सम्बन्ध में किसी दिन मैंने कोई भावना नहीं बनायी। किन्तु ये सब घण्टा आठ के दिन जरा सोचिये तो—तनिक भी बिचार करने पर आप स्वयं समझ सकती हैं। क्षणिक उत्तेजना ही जीवन का चरम सत्य है क्या ? ना, ना ! आकाश में इन्द्रधनुष देखकर यदि कोई उसको चिरम्पारी समझ ले ”

कम्पित स्वर में उषा बोली—“हम, हम ! किन्तु कितने प्रकार में तथा कितने आपस और आप मुझे देना चाहते हैं ? याग्ये !”

क्षणभर स्तम्भित रहकर तपन बोला—“आप क्या कह रही हैं ? इस बात पर ठहरे बिना मैं जिस समय विचार करूँगी, उस समय स्वयं ही आपकी बूढ़ा की मौमा न रह जाऊँगी ! एक दिन आपने मेरे ऊपर कुछ अनिचार किया था, वह मान भी लिया और उसी पदचोलाप में स्वयं झुका वहाँ त्याग स्वीकार करने में भी आप दुविधा नहीं कर रही हैं। किन्तु मैं तो आपकी इस क्षणिक दुर्बलता का अनुचित लाभ न उठा सकूँगा ?”

“बिना मेरी दुर्बलता ?”

जाने कौनो दृष्टि में उसकी ओर देखकर

सहसा रोते-रुने उषा ने दोनों हाथों के आवरण में अपना मुख छु लिया। विस्मय से भरपूर तपन बोला—“यह क्या ? आप रो रही हैं ? चोट पहुँचानेवाली कोई बात तो मैंने कही नहीं !”

मुख के ऊपर में हाथ हटाकर उषा बोली—ना, आपने और कुछ कहना मैं नहीं चाहती। आपको मैंने गलत समझा था। आप पत्थर के बने हैं। नहीं तो, इस तरह कभी मुझ अपमानित नहीं कर सकते। जाइये, आप जाइये ”

अपमान करता हूँ ? विह्वल भाव में तपन ने उषा की ओर देखा।

अरी हुई दानों ओसों को पीछती हुई मरामी हुई बाबाजी ने उषा बोली—“कर ही ना रह है। कौन समझ रहे हैं आप मुझ ? आपन मुख अत्यंत हीन समझ गया है नभी तब इस तरह छोड़ जाना चाहते हैं अन्धधारा ”

उषा ने अपनी गज्ज दृष्टि दूसरी ओर पर ली। व्यस्त भाव में तपन ने कहा—“यह सब क्या कह रही हैं आप ? जानती नहीं हैं, आपका मैं किन्तु . . .”

बात समाप्त बिना ही वह रुक गया। उषा का मुख सहसा उज्ज्वल हो उठा। बोली—“बोलिये, नय बला जायें।”

“और, बाबा शब्द ?”

“बाबा में मैं कह आयी हूँ।”

तपन नीरव भाव में पर के बाहर निकला। ऊपर के चरामदे से सतीषात हैमवर बोले—“तुम्हारी यात्रा शुभ हो !”



या पूरन

बालकोकी

तन्दुरुस्ती और
बढाता है. ताकत

हरेक केमिस्ट और स्टोर्ससे मिलता है

GUJARATI

बी. ए. ऐन्ड ब्रदर्स : वम्बई-२

फळरुत्ता, पटना और गौहाटी

साड़ी भारत के घर-घर में पहनी जाती है।
छोटे छोटे-बड़ी हर महिला को मन भाती हैं।



दी
विड़ला काटन स्पनिंग
एंड वीविंग मिल्स लि०

दिल्ली
की
प्रसिद्ध साड़ियां
व छोटे
मीडियम
खुर्तों में

पंजाब की सर्वश्रेष्ठ रूई में बनाई जाती हैं
टिजायने विशेषों द्वारा तैयार की जाती हैं
व्यापारी व उपभोक्ता दोनों को लाभ पहुंचाती हैं

तार: विड़ला

टेलीफोन . २३३११-१२-१३



Sulaym Nera Oil

दी वल्कन इन्शुरेंस कं., लिमिटेड

(भारत में संस्थापित)

नं. ७३, चर्चगेट के सामने, बम्बई.

स्थापना १९१९

व्यवस्थापक श्री. जे. सी. सेटलवाड द्वारा स्थापित

हेड ऑफिस : फोर्ट, बम्बई

*

निम्नलिखित बीमा निदेशालये

आग, जहाज, दुर्घटना और मालिक के उत्तरदायित्व का बीमा

*

बी. सी. सेटलवाड

डायरेक्टर इन्सुरेंस

के. सी. देसाई

जनरल मैनेजर

सारे भारत में शाखाएँ और एजेन्सियाँ

कर्णोपदेश!

309/67



अपन पिताजी से
ज बी मंधाराम के
रायन ग्रीम विस्कुट का
एक पकेट परीख गल
के लिए रहिए।

उन विस्कुट का
ग्रीम आपका वण
स्वादिल उमगा।

विनामितो से समुद्र
उच्च कोटि के विस्कुट

य विस्कुट रंगीन आवरणवाले
बामुरहित पकटा में बंध होते ह।
मंधाराम के रायन ग्रीम विस्कुट
सर्वोत्तम उपहार ह।



जे. बी. मंधाराम ऐंड कम्पनी

होस्ट्रीब्यूटस नेशनल फूड एजेंसी, ३१५, चनीरोड, बम्बई ४



हमसे परामर्श करें
निम्नलिखित विषय बावों के सम्बन्ध
में —

- * वाइब्रो और प्रोवास्ट वाइल
पाउडरिंग्स
- * धार सी सी. सिनोड
- * पानी की टर्बी
- * रिजर्वार्स
- * ट्रेक्टर, ट्रालियाँ
- * हीटिंग बेग्स
- * एम्बुलेस, रेडियो और एक्सेल्सो-
जिब की गाड़ियाँ
- * मेल-मलीहा निवालेनेवाली
गाड़ियाँ
- * सहरें, बोंध और पुल
- * वाटरप्रूफ छतें
- * भीतरी सजावट
- * आयुनिव कर्नीज
- * मोटर गाड़ियों के इंजिन (सभी प्रकार,
मल्टीमिनियम और कम्पाजिट)

मेकेन्जीस लिमिटेड

प्रधान कार्यालय

मीरपुरी, बम्बई

(टे. न. ६०००७/८/९)

देश के बीमा व्यवसाय में
रुबी जनरल
इश्योरेंस कं. लि.

को
अपनी सेवा और सरक्षता
के लिए एक विशेष प्रिय
पद प्राप्त है।



* जीवन

* आग

* मोटर

* सामुद्रिक

* हवाई

इत्यादि.

चेयरमैन श्री पित्रमोहन बिरला

प्रधान कार्यालय

९, बेबीन रोड, कलकत्ता

बम्बई कार्यालय :

इन्डस्ट्री हाउस, १५९, बंबे रोड सिने.

क्या ड्यूमेक्स महंगा है?

नहीं।

आप देखेंगे कि बाजार में मिलनेवाले आम बेसी कूड की तुलना में ड्यूमेक्स के लिए एक पाई भी ज्यादा राखे नहीं करनी पड़ती। इसका टिन कुछ छोटा सो होता है, लेकिन मांस का वजन पूरा होता है। इसका कारण यह है कि ड्यूमेक्स बेसी कूड परिष्कृत महीन पाउडर के रूप में मिलता है और इसीलिए स्वाभाविक रूप से कम जगह में बस जाता है। यह अत्यधिक महीन इसलिए होता है ताकि आप इसे आसानी से घोल सकें और आपका बच्चा भी आसानी से पचा सके।

और याद रखिए, ड्यूमेक्स केवल 'ट्रबरसुलिन-टेस्टेड' गावों के दूध से ही तैयार किया जाता है। इसमें विटामिन अधिक और चर्बी कम होती है। इसका अर्थ है आपके बच्चे के लिए विशेष रूप से निरापद एक विमुद्ध पदार्थ-विशेष रूप से निरापद पोषण और वह भी बिना किसी अतिरिक्त चर्च के। इसीलिए इसमें अवरज की कोई बात नहीं कि ड्यूमेक्स बच्चों को स्वस्थ रखता है।

ड्यूमेक्स बेसी कूड

बच्चों को ड्यूमेक्स दीजिए और उन्हें फलता-फूलता देखिए।

हुकुमचंद जूट मिल्स लिमिटेड

(स्थापित १९१९)

हाजीनगर, नईहाटी (ई० रेल्वे), पश्चिमी बंगाल

सर्वोत्तम धेनी के हेमियन, बोरे, किरमिच, तम्बू, ट्वाइन, डेविंग

तथा ऊनी कम्बलों आदि के उत्पादक

मैनेजिंग एजेंट्स रामदत्त रामकिशनदास

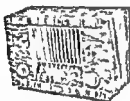
प्रधान कार्यालय : बंबेनं रोड, कलकत्ता-१

टेलिफोन ।

तार का पता ।

बैंक ३१९५ (साइस)

JUTIFICIO, कलकत्ता



मार्केल

टाइप एन सी ए-ए सी, एम सी
ए-ए सी/डी सी, एन सी बी-
ड्राई बंटरी ५ बाल्व ३ बंडम
मुख्य ४ ३२५)

हमारे अन्य मॉडल 'मेमोर' 'बी' 'एम' तथा गुपर-बब ए सी/ए सी/डी सी
तथा ड्राई बंटरी/इनव अनिरिक्त ८ बाल्व के बंड एंड होलकस
रेडियोग्राम भी उपलब्ध हैं

इंडियन प्रेस्टिजुम लिमिटेड

पोयतर ब्रिज, बान्निबली, बम्बई

संसार रेडियो पर स्वर का

माधुर्य निखर जाता है

उत्तम कटिबंध के लिए पूर्ण
उपयुक्त तथा उत्कृष्ट सामानों
से बना हुआ सकार रेडियो
यहाँ तक बिना किसी कष्ट
के काम देता है

- मोहक
- रुचिकर
- तृप्ति-पूर्ण



आपके क्वार भोजन की
इसी तरह के हों—
आप भी

वनसदा

वनस्पति में पकाइए

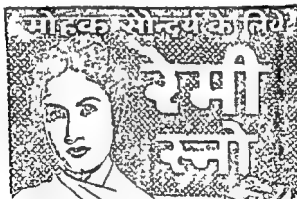
क्वार भायल एवबस्ट्रीज—मन्नोला

दुग्ध विनाशा



दाद, खाज, खजली, डक्जोमा
इत्यादि रोगों में सुपरीक्षित
दवा। तीन दिन में फायदा

PARTABNUL
GOBINDRAM
PO. BOX NO. 2490, CALCUTTA



रेमी स्नो सौन्दर्य में हृदि हर
स्त्रियाको चोमलता तथा फूलों की सी
साजगो प्रदान करता है।

ए. वी. आर. ए. एण्ड कं.
बम्बई २-मद्रास १.





विटामिन 'ए'

" 'बी १'

" 'बी २'

" 'सी'

गोल्डा

मिठाइयाँ और टॉफियाँ

इसके अलावा एक और नया मिठाई के
मिलाने विशेषताये मिलती हैं।

विटामिन 'ए' - मिठाई १५ टुकड़ों का १५ पैक
का १० पैक है

विटामिन 'बी १' - मिठाई १० टुकड़ों का १५ पैक
का १५ टुकड़ों है

विटामिन 'बी २' - मिठाई १० टुकड़ों का १५ पैक
का १५ टुकड़ों है

विटामिन 'सी' - मिठाई १ टुकड़ों का १५ पैक
का १ टुकड़ों है

गोल्डा
मिठाइयाँ
टॉफियाँ

दी हिन्दुस्थान, गुजरात लिमिटेड

५०, कल्याण रोड, चेन्नई, तमिल नाडु



दी युनाइटेड कमर्शियल बैंक लि०

[१९४३ में रजिस्टर्ड]

प्रधान कार्यालय २ रायल एक्स्पोज़ेन प्लेस, बलनता

अधिकृत पूंजी ८ करोड़
 स्थापित पूंजी ४ करोड़
 घुबती पूंजी २ करोड़
 सुरक्षित बोध ८६६ लाख

शाखाएँ

भारत : सभी प्रमुख नगरों तथा औद्योगिक और व्यावसायिक
 प्रसिद्धि के शहरों में—
 पाकिस्तान : चटगाँव तथा कराची
 पर्मा : रतून, मोलमिन, अक्काब, माडला तथा बपीर
 मलाया : तिरापुर तथा केनाब
 यू० ई० : लन्दन
 अन्य : हावफाय,
 यूरोप, अमेरिका, अफ्रीका, एशिया, आस्ट्रेलिया,
 आदि सारे विश्व में एजन्ट

व्यवसाय व सेवा

बैंक लिमिटेड ऐसी है, मान्य जामिन के एक्ज में एडवांस देती
 है, विल सरीदती है, ड्राफ्ट तथा तार के द्वारा फर बेचती है तथा सभी
 प्रकार के विदेशी बदले के व्यवसाय का काम करता है। अपनी शाखाओं
 व विदेशी प्रवर्ग द्वारा हर प्रकार की बैंक-सम्बन्धी सेवा करती है।



सपट

लोशन

दाद, स्याज, खुजली पर



Manufacturers **SAPAT & CO.** Bombay 2

नमूने के लिए धी. पी. पी आर्डर लिए जाते है

मूल्य मयपोस्टेज-३ पोतल रु. २।।

कलकत्ता स्टोकिस्ट : दोशी मेडिकल स्टोर्स

१७३, हरीसन रोड कलकत्ता-७

जल्द तथा विनयशील सेवा के लिये



बैंक ऑफ जयपुर लि.

ब्रान्च कार्यालय-इलाहबाद, गोरखपुर, मुंबई, कोलकाता

शुद्ध चीनी

शरीर की प्रथम आवश्यकता
 वैजिक धम के लिए हमारे शरीर को
 शक्ति को प्रकृत होती है। यह शक्ति
 चीनी से हमें बड़ी सुगमता से मिल
 सकते हैं। किन्तु यदि चीनी शुद्ध न हो,
 तो वह हमारे लिए हानिकार हो सकती
 है। अत्यधिक शर्करा मिश्रित छि. की चीनी
 शक्त प्रति शक्त बढ़ होती है। यही कारण
 है कि घरों से लोग इसे ही पसंद करते
 जा रहे हैं।

क्या उनाएजल्लसालि

ચેમ્પિયન ફાઉન્ટેન પેન



(રજિસ્ટર્ડ)

ચેમ્પીઅન ઇમ્પીરલ

ચેમ્પીઅન ૧૦૧

ચેમ્પીઅન ૧૦૫
ટીલક્સ

ચેમ્પીઅન ૧૫૧

એક્સક્લુઝિવ ટાઇપ
૧૨૧

ચેમ્પીઅન
૧૦૨-૧૦૩

એરોમેટીક
પેન્યુમ

મેન્યુફેક્ચરર્સ:-

ગુજરાત ઇંક સ્ટ્રીજ

લાઈવો માર્કિટ વિલિંગ, મોહાર પાલ, અમદાવાદ-૨

ધી રાજાના જોશો દ્વારા 'નવનીત પ્રવાસન' લિ., ૩૪૧, વારદવ, અમદાવાદ ૭, કે. સિ. એ. સ્કે. ૨૦૨૨

Carelessness Costs Lives

इसका उपयोग के दिनों
क बगैर सिगरेट क जलते
हुये ट्रेकर न चेंडिये।

आपने सिमेंट के बंदर स्टोर
न जलाइये।

विलोडक सततताक प्रौर जलने
आवा पकड़नवाली यन्त्रियों को
आपन (मोटर) के आला में ले
जाया गया है।

✱ यह वर्ष बम्ब और परिपम लेखों को सेंट्रल गाइडें में
४३ वां आवा लगी जिलों बहुत अधिक हानि के इतिहास एक
मुताबिक की कलु भी हो गई।

उसको चारों ओर चिन्ता है।

लेकिन



उसने अपने आपको संभाला है।

आतंकवादी हथकौड़ी बरतते हुए शासक कारण आत्मशुद्धि कर भय
लगाने में विवश है। फिर कोई अनपेक्षित घटना होती है
जिससे कि हमें जरा लचका करना पड़ता है। यह कितनी
शुभीक्षण है। हिम्मत न हारी हथकौड़ी भयावह बनती है।
जबानुशुनक अनिष्ट आपस में दिमाग की शक्ति रखनेसे मजबूत करेगा।
पाद रक्षितगा, पदी मजबूत मंदिरबद्ध है।

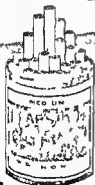
जवाबुलमुल्
वेब नेस
आपका बाला और  दिमाग के निचे बेहतरीन

सी० के० सेन एण्ड कंपनी लि०

जवाबुलमुल् हाउस, १४, चित्पवन चण्डेणू, बमबम्ब - १०

CV 18314

रोमाञ्चपूर्ण कौशल



के फ़टे न
दूसरों से मीलो आगे
क्यों न केफ़टेन सरीटें
इसका मिश्रण अच्छा है

CAF/3048

* चाकेरी के गुणों से अब कोई अज्ञान नहीं *



'चरक' की चाकेरी (कम्पाउण्ड)

टेब्लेट्स (स्वर्णपुस्त)



‘चाकेरी’ अनेक रोगों में उपयोगी है।
मापही बीमारी में निम्न तरह उपयोग
होसकती है इसके लिये अपने कमिनी
डायटर से पूछिये या हमारे बंदरान
से स्वयं मिलिये अथवा लिखिये

चाकेरी आतु, मोने के बर्त प्रवाल
पिष्टी मृग दुग्-शक्ति गोदली आदि
भजन, गिलोय सत्व तथा नीबू पत्राण
को वनस्पतिपत्रों के रस की भावना
देकर सात तौर से तैयार किया
जाता है...

अपने दवावाले के पास में ‘चरक’ की
‘चाकेरी-कम्पाउण्ड टेब्लेट्स विद-
गोल्ड’ मागिये।

चरक भंडार बम्बई ७

छमाही जिल्दें

‘नवनीत’ की निम्नलिखित छःमाही
जिल्दें सठरणी बलारामक जेबेट के
साथ मिलती हैं:

जुलाई-दिसम्बर ५२ जनवरी-जून ५३

जुलाई-दिसम्बर ५३ जनवरी-जून ५४

जुलाई-दिसम्बर ५४ जनवरी-जून ५५

साथ ही, फरवरी ‘५२ से जून ‘५२
तक के पृष्ठपर अंश भी मिल सकते
हैं। मूल्य-प्रति खंड १) मात्र

नवनीत प्रकाशन लिमिटेड

३४१, तारदेव, बम्बई ७

**साहज प्रवाही
चिरकाल स्थायी**



कैमल स्क

कैमलीन लिमिटेड बम्बई १९

सस्ता साहित्य मण्डल का नवीन प्रकाशन गांधीजी की छत्रछाया में

इस पुस्तक में गांधीजी के जीवियों ऐसे अनमोल पत्र हैं जो अग्नय नही मिलेंगे। इसके अतिरिक्त पुस्तक के लेखक श्री धनदयामदास बिडला ने इसमें बताया है कि वह किस प्रकार गांधीजी की ओर आकर्षित हुए किस प्रकार उनके निकट संपर्क में आकर उनकी बहुमुखी प्रवृत्तियों में उनका हाथ बटाया और किस प्रकार भारत के स्वतंत्रता संग्राम में देश के एक सेवक के नाते अपना योगदान दिया।

पुस्तक की भूमिका राष्ट्रपति
डा० राजेन्द्रप्रसाद ने लिखी
है। हिंदी में अपने छग
का यह विशेष प्रकाशन है।



अनेक ज्ञातव्य बातों से
परिपूर्ण रोचक शैली में
लिखी, सुंदर छपी इस
पुस्तक का मूल्य
(सजित २॥)
(अजित १॥)

अपनी प्रति नीचे लिखे पते पर लिखकर शीघ्र
मंगवा लीजिए

सस्ता साहित्य मण्डल
नई दिल्ली

भारतीय उद्योगों की

सेवा

के लिए

- (A) कापट पेपर सादा और धारीदार
- (A) धातुप्रकाश पेपर
- (A) थोई-सिम्प्लेक्स, डुप्लेक्स, ट्राइप्लेक्स
- (A) और रगोन ट्राइप्लेक्स



कापट के रोल



रगोन व कापट



फैक्ट्री



प्रिंटिंग प्रेस



एयरल

ओरियंट पेपर मिल्स लि०

मैनेजिंग एजेंट्स

मिडल्टन ग्रुप लि०

C, रॉयल एक्मचेंज प्लेस, बडनता

जैमिनी

की सगर्व भेट
महान कलाकारों का
महान चित्र

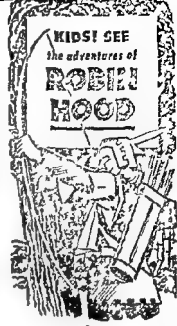


इन्सानियत

दिलीप कुमार

देव आनंद बीना राय
विजयलक्ष्मी जयलक्ष्मी शोभा समर्थ
कुमार बांद्राप्रसाद आगा मोहना
और हॉलिवुड से जिप्पी
शीघ्र ही अखिल भारत में
प्रदर्शित होगा





टांजन

ए रामाञ्जयुग कोणठ तथा नमानव
जानवरीं ए माय धुठ-जगता पगता
ए मज्जाव चित्त

रायिन हुड

बा बारता ए अदमृत दुय-मनगती
पूण ज्ञाप्ता ए मोत ए मुह न
बन निरगता

दुनिया भर के विषयों पर ६०० न अधिक राना में न कुछ

* नगनउपाह * साजमहल * बाहमोर * बनारस ए घाट
* मुनाइद नगन * अलहौन ए जाहु बा चिराग
गौर की गिरि तथा धम जानवारा ए गिरि निगिर
नये स्थानों ए गिरि बिचना चाहिए

पटेल इंडिया लिमिटेड

१६० हार्नबी रोड, ५ निरुले स्ट्रीट, ७९० बलाननाह रोड, भायफ मती रोड
बम्बई कलकत्ता मद्रास नयी दिल्ली

श्री स्वयंराज जागा द्वारा 'भवनाथ प्रकाशन' लि०, ३४१, तारदेव, बम्बई ७, के लिए प्रका-
शित तथा एम्पायर्स एडवर्गाइज्ड प्रिंटिंग लि० ५०५, वाबेर रोड बम्बई में मुद्रित



अतद्गुरु

नवनीत [हिन्दी डाइजेस्ट]

१९५५





आप
कोई भी
हों...

पर स्वभावतः आप चाहेंगे कि
आपके व्यक्तित्व तथा पोषाक को सब सरा-
हनापूर्ण नज़रोसे देखें।

रायपुर कपड़े इस्तेमालसे आपकी
यह इच्छा सहर पूरी होगी। हर एक की
रुचिके अनुसार विभिन्न रंगोंमें तथा अनोखे
डिजाइन्समें प्राप्य यह सुंदर पुनारवस्था
कपड़ा हर व्यक्तित्वको आरुपक बनाता है।

भाकर्यक व्यवस्थाके लिए सुंदर कपड़ेकी
नियमित जरूरत है—जो फैशनके अनुसार
हो। इसके लिए—खरीदिये।

रायपुर कपड़ा



पुरषों, लियों तथा बालभ्रं के लिए खास
विल्समें मिलता है।



सॅन्फोराइज्ड

पॉपलिन—शर्टिंग—कोटिंग

छापी हुई

साडियाँ—यायल—केमरिक

और

प्लाडमज़ कपड़ा—पेंड—रूमाल

रायपुर मिल्स लि.

अहमदाबाद

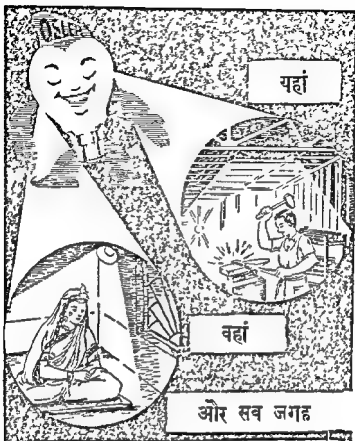


DELI AP 2 MIN

अपनी
रक्षा काजिए



ICI 340



सोल होस्टेलियर्स—

एफ. एण्ड सी. ओसलर (इंडिया) लि०

कलकत्ता ▽ बम्बई ▽ न्यु दिल्ली ▽ मद्रास ▽ कानपूर ▽ गौहती

(ज्योंही वे मिलती..)



बेल्वेमिबो वे केस्टरोल
पी चर्चा करती है
हल्की पुरानी गुणवत्ता केस्टरोल



बबो दि य जानती है कि केस्टरोल
से आकषक तरंगें निखर आती हैं-
वे सच बिप दुप केस्टरोल से
भनाया जाता है।



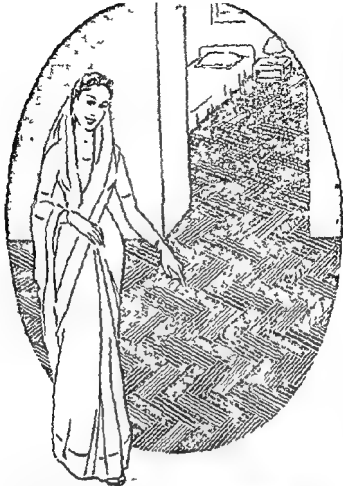
दि कैलकटा केमिकल को. लि.
कलकत्ता-२६

५ और १० घोंस की बोतलों में

बर्दई बार्मान्य देवप्रकाश मोशन, प्रिसेंग स्ट्रीट बर्दई-२



REGISTERED TRADE MARK



इन्डिया लिमिटेड हमारे घर
अधिक चमकदार बनाये जा सकते हैं।

अगर की सजावट के लिए अडिनीव,
अस्पताल, स्कूल, होटल, मिनेम,
दरबार, बगीचा, रेस्तरां को अधिक सुव
वित्त चमकदार और आसमंदे बनाया है
इन्डिया लिमिटेड लिमिटेड
८, राधक शक्ति रोड, बल्लार, बल्लार, १



२५००-११३

चेम्पियन

काठ न्यूज एज



(रजिस्टर्ड)

चेम्पीअन एडमीरल

चेम्पीअन १०१

चेम्पीअन १०५
हीलक्स

चेम्पीअन १५१

एवरशार्प टाइप
१२१

चेम्पीअन
१०२-१०३

अरोमेटिक
घेयुम

मेयुफेर चरत —

गुजरात इंडस्ट्रीज

लालजी मानसिंह बिल्डिंग सोदर बाट, बम्बई-२

रामतीर्थ बाह्यो तैल (स्पेशल नं. १)



आयुर्वेदिक ओषधि (रबिस्ट्रॉ)

स्मरण-शक्ति बढ़ाता है, मादी निद्रा जाती है तथा बाल बाले होते हैं। आँखों में डालने से आँखों की दृष्टि बढ़ती है। कान में डालने से कान के सब रोग मिटते हैं। गजापन दूर होता है। सब कष्टों में उपयोगी। कीमत बड़ी शीशी ३॥ छोटी शीशी २) रु

प्रत्येक स्थान पर मिलता है।

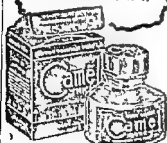
५॥॥) का मनोआर्दर बड़ी शीशी के लिए तथा ३॥॥) का मनोआर्दर छोटी शीशी के लिए (डाक-व्यय मिला कर) भेजे।

आसन चार्ट . स्वस्थ और प्रसन्न रहने के लिये हमारा योगिन आसनो का आदर्श चार्ट (नक्शा) मंगाइये जो डाक सर्व सहित रु १-१२-० में प्राप्य है। यह आसन सरलता से घर पर बिये जा सकते हैं।

श्री रामतीर्थ योगाश्रम बाबर (सेण्डल रेलवे) यमुन-१४

टेलिफोन : ६२८९९

सहज प्रवाही
चिरकाल स्थायी



केमल ब्रैंड

केमल लिमिटेड, यमुन-१४



पाबुलिन

बालकों की

तन्दुरुस्ती और
बढ़ाता है ताकत

वी.ए.एल. ब्रिजर्स, यमुन-१४, कलकत्ता-१

साजगी और जीवनी शक्तिके लिये . . .



चारलेट, लौलीपोप, ताजे
फलों के जाम, टमाटर-संजी-
वनी तथा रस, आम, पेथा,
इत्यादि व्यवहार करें, ये
स्वादिर और पुष्टिकर होते
हैं।

जी० जी० साथ दुग्ध, फावलेट, टाकेट
तथा मिश्रणों आदि का पैकिंग
आधुनिक ढंग से होता है। यही कारण
है कि ये हर समय ताजी रहती हैं।



जी० जी० इगडस्ट्रीज - आगरा

अन्यान्य कारखाने—दिल्ली - हल्द्वानी - बंगलोर ४

स्वादिष्ट रसोई के लिए



अमी ही एक प्रति मैगाइये !

कुसुम पाक-मशाली के विरु निहिते—

२. डेढ़ से ३ ग्राम

एक से डेढ़ और एक ग्राम के लिए का। अडे का

दोहरा से। बर्तन का धोती, किन्तु बर्तन का

कड़ेर, भी धो लिये

कुसुम खाद्य-पदार्थों की पोषण-शक्ति बहुत



शुद्ध चीनी

शरीर की प्रथम आवश्यकता
 दैनिक धम के लिए हमारे शरीर की
 गति को ज्वरित होती है। यह गति
 चीनी से हम बड़ी सुगमता से मिल
 सकती है। किन्तु यदि चीनी शुद्ध न हो
 तो वह हमारे लिए हानिकर हो सकती
 है। अग्रज शुगर मिल्स लि की चीनी
 बात प्रति गलत गढ़ होती है। यही कारण
 है कि बरतों से लोग इसे ही पसन्द करते
 आ रहे हैं।

अग्रज शुगर मिल्स लि

फैक्ट्री, राजपुरा, बलरघाट, बिक्रमगढ़, हरदोई

दी युनाइटेड कमर्शियल बैंक लि०

[१९४३ में गजियर्ड]

प्रधान कार्यालय २ रायल एन्क्वैर स्क्विन, कलकत्ता

अधिकृत पूंजी.....	८ करोड़
साधारण पूंजी .. .	४ करोड़
छुट्टी पूंजी	२ करोड़
कुल निधि बैंक.....	८९१ लाख

आमरें

- भारत : सभी प्रमुख शहरों तथा औद्योगिक और व्यावसायिक प्रोविन्स के शहरों में—
- पाकिस्तान : कराँची तथा कलकत्ता
- बंगाल : राय, नागपुर, अहमदाबाद, माडरा तथा बर्मान
- मलया : मद्रास तथा चेन्नै
- सू. के. : लखनऊ
- अन्य : हाफरा,
मुंबई, अमेरिका, बर्मा, सिंग, जम्बुंग,
अदि भारी विश्व में दूरस्थ

व्यवसाय व सेवा

बैंक डिपॉजिट बैंक के, नकद बर्मान के एवम में एवम देना है, बिना मजबूती है, कलकत्ता तथा लखनऊ के दूरस्थ बैंकों के तथा सभी प्रकार के विदेशी व्यापार के व्यवसाय का काम करते हैं। अपनी सेवाओं व निवेशों के द्वारा ही प्रसारकों बैंक-व्यवसाय में करते हैं।

शानदार प्रगति का एक और वर्ष

नये बीमे

१९५२	२ करोड़ ८० लाख
१९५३	३ करोड़ से ऊपर
१९५४	४ करोड़ २५ लाख से ऊपर

*

बो न स

३१ दिसम्बर से घोषित
१५ रु. प्रतिवर्ष पुरे जीवन-बीमा पर
१२ रु. प्रतिवर्ष एन्डोवमेन्ट बीमा पर



न्यू एशियाटिक इन्श्योरेन्स कं० लि.

हेड आफिस नयी दिल्ली
पश्चिम भागीय ऑफिस

इंडस्ट्री हाउस, १५९, चर्चगेट रिक्लेमेशन बन्दर्.

शाखाएँ और एजन्सियाँ समस्त भारत में

आप गर्म चाय पिए



या ठंडा शर्बत



स्वादिए मिठाइया खाएं



या चाकलेट-टाफियां



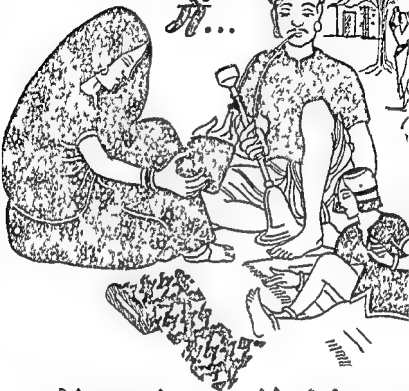
हर चीज में शफर मौजूद है



न्यू इंडिया शुगर मिल्स आपके लिए सर्वोत्तम
दानेदार सफेद शकर बनाता है

न्यू इंडिया शुगर मिल्स
लखनऊ, पुराना बाजार

गाँव-गाँव में...



ग्रामवासिनी भारतमाता की गृह लक्ष्मियाँ पिछले पचास वर्षों से हमारे मिल में निर्मित सुन्दर और टिकाऊ वस्तुओं का व्यवहार करती

आ रही है। गाँव की भ्रम सलज्ज दिनचर्य के लिए, वास्तव में इससे अधिक विफायती और मज़बूत कपड़ा अन्यत्र सुलभ नहीं है।

पुलगाँव काटन मिल्स लि.

पुलगाँव (मध्यप्रदेश)

५९ अपोलो स्ट्रीट, बम्बई



भेजिए एजेण्ट

श्री हरदयाल सन्त

मील - प्रति - मील

आपके श्रम को हल्का करने अथवा साइकिल की सैर को अधिक आनन्ददायक बनाने के लिए मजबूत व टिकाऊ हिन्द साइकिलें सब प्रकार की समस्याओं से मुक्त और पूर्णरूपेण निर्भर-योग्य सेवा प्रस्तुत करती हैं।



वर्ष

प्रति

वर्ष

बिना अन्य 'सिगल मेक' की अपेक्षा हिन्द साइकिलें वहीं अधिक तादात में बिबती हैं - भारतीय वातावरण के बिल्कुल अनुकूल होने के साथ-साथ यह उनकी श्रेष्ठता और लोचप्रियता का प्रमाण है।



मीलों आगे

हिन्द साइकल्स लि०, २५०, बली, बम्बई-१८.

ASP/HIC 87



There are 4 in the WILSON Family

विस्मन "जुनोअर"
वेकाफिल
विस्मन USA नीब के साथ
रु १-१२-०

विस्मन "मेजर"
वेकाफिल
विस्मन USA नीब के साथ
रु १-१२-०

विस्मन "ही रुक्ष"
वेकाफिल
1 1/2 करेट गोल्ड नीब व ली
रु १-१२

विस्मन "अडमोरल"
वेकाफिल
बडी साइज की 1 1/2 करेट
गोल्ड नीब कलौर 12-६-०

REGD
Wilson
VACOFIL PEN



विस्मन पन रेगुलर, लीवर
दौर कमोफिल मे भी प्राप्त है

Sole Distributors for India

KIRON & CO. LTD.

73-75, CHHIM CHAWL, BOMBAY 2
BRANCHES IN CALCUTTA &
MADRAS

विस्मन पेन में घोसना याहीना उपयोग
करे



अधुरा संरक्षण

पूल, छिदायुओं और भयान
रिवाज के अन्ध विचारों के अन्ध
के अन्ध 'कारणों' और अविश्वस
विश्वस का उपयोग अत्यन्त
होता है। लोदी, सदी, गले
की सुजलाइट, शोकार्डिस
आदि बीमारियों के कारण
उपयुक्त है। आजही एक
होता है परीक्षित। हर
बयद मिलती है।



फाल्गुनी

लौरी का मरुत इलाज



अधुर्वेदाग्रम,
फार्मासी लिमिटेड
अहमदनगर



○ सोहक
○ रुचिकर
○ तृप्ति-पूर्ण



आपके वनाए भोजन भी
इसी तरह के होंगे—
आप भी

वनस्पदा

वनस्पति में पकाइए

बारा भाईल इण्टस्टीट—भक्तोना

ASP-9934

दी वल्कन इन्शुरेंस कं., लिमिटेड

(भारत में संस्थापित)

नं. ७३, चम्पेड के सामने, बम्बई.

स्थापना १९१९

स्वामी भी डी. सी. सेटलवाड द्वारा स्थापित

हेड ऑफिस - फोर्ट, बम्बई

★

निष्ठावर्धित भीमा निवारणे

आग, जहाज, दुर्घटना और मालिक के उत्तरदायित्व का बीमा

★

पी. सी. सेटलवाड

डायरेक्टर इन्चार्ज

के. सी. देसाई

मैनेजर

सारे भारत में शाखाएँ और एजेन्सियाँ

दि
पंजाब नेशनल बैंक लिमिटेड

(स्थापित १८९५)

प्रधान कार्यालय दिल्ली

हर प्रकार के

बैंकिंग और एक्सचेंज

कारोबार का सुविधा प्रस्तुत करता है।

टिपाजिट्स ८६ करोड़ रुपये से अधिक

लेनदारी १०४ करोड़ रुपये से अधिक

(३० जून, १९५५ के अनुसार)

शान्तिप्रसाद जैन

चेयरमैन

बी० एन० पुरी

मैनेजर

३१७ शाखाओं द्वारा देश
 की सेवा का रहा है



सारे भारत में
अभूतपूर्व सफलता!

एक आश्चर्यजनक आदर्श की
कहानी, जिसकी हँसी सारे
शहर के मुकाबले में भी
कायम रही।



श्री ४२०



निर्देशक

राज कपूर

• नरगिस • राज कपूर • नदिरा •

मीमो - ललिता पवार - कुमार

संगीत शंकर जयकिशन * कथा के. ए. अग्नास

शुक्रवार ७ आक्टूबर से

रीगल * स्वस्तिक * ब्राडवे

रोज १-४५, ३-१५ और ८-४५ बुकिंग चालू

— जयसिंह प्रकाशन —

घर में सिलाईका काम

यही मेरा शौक
और साज ही क्यत भी!

जरा में सिलाई करन में
सबसे प्रमथना होती है
मेहर प्रकार के मुई के
काम आसानो में कर
सबनी है और दर्जों के
एन का काफी बचा
वनी है।



आशा
सिलाई मशीन

आशा
सिलाई स्कूल में
सिलाई सीखिये

दां जप इंजीनियरिंग वर्क्स लि. कन्नूचा



अक्टूबर

नवनीत

[हिन्दी डाइजेस्ट]

१९५५

संचालक
श्रीगोपाल नेवटिया

प्रबंध-संचालक
हरिप्रसाद नेवटिया

चित्र शिल्प गोपालकृष्ण भोवे



सम्पादक
रतनलाल जोशी

सहकारी
रमेश सिन्हा : ज्ञानचन्द्र

लेख-सूची

१	आत्म-विराट	महर्षि रमण	१
२	जाकी रही भावना जैसी	योगवासिष्ठ से	२
३	स्वर्ग सौख्य	रवीन्द्रनाथ ठाकुर	५
४	मेरे पिताजी	मोतिराम नाल	७
५	अमृत पुत्र	मैथिलीशरण गुप्त	८
६	वधा-वहानियों की आदि जननी	भुवनेश्वर झा	११
७	मुझ मेरे गुरु मिले	महात्मा गांधी	१८
८	मह मिट्टी का सब खेल है	जूलियन हक्सले	२१
९	ब्रह्मपुत्र हमारी राष्ट्रमाता	शास्त्रिक सामग्री से	२५
१०	जब प्राणदीप बुझ ही गया था	'सोवियत' मेडिसिन से	२९
११	अफीका प्रवास मे	चेस्टर वाउल्स	३४
१२	हार्मोन - स्थायी शांति के उपासक	सेरा रीजमों	४०
१३	मानिये या न मानिये	नारायण भक्त	४३
१४	ढोल खरीदा मुनादी करो	महावीर त्यागी	४७
१५	मृत्युञ्जय	सत विनोद	५१
१६	पेड़-पौधों की परिक्रमा	के रामनाथन् कुट्टेया	५३
१७	न्याय-इड	रवीन्द्रनाथ ठाकुर	५४
१८	बंदीगृह में लक्षपति बननेवाले	एथानी वेल्स	५६
१९	उत्खापात	रिचर्ड एफ किश	५९

२०.	हमारा स्वभाव	अर्निन्ड हट्मनीवर	६२
२१	सुदा आवाद रज लखनऊ को	अमृतलाठ नाथर	६५
२२	अपनी शक्ति का सदुपयोग	'सादकोलाजिस्ट' मे	७०
२३	असाध बच्चे : व्यापार की सामग्री	एटन मेसन	७२
२४	बाइल नदियों जलवती पनौरी	बी बी पाटनकर	७५
२५	आत्म-निर्माण की प्रयागगान्वा	महाराज, बी ए	७८
२६	छून के औसू	बनेत्र जोगवर सिंह	८१
२७	अमृत का सत्कार (कहानी)	लक्ष्मणराव सरदमाई	८३
२८	बारोबार चलता ही रहा (कहानी)	जकी बनवर	८८
२९	आत्मलिपि (कहानी)	राजगोपालाचार्य	९१
३०	सफर और शिबार (पुस्तक-महाप)	डा० मुहम्मद अली शाह	९३



बहनें

[चित्रकार अहमदाबाद सिंह]

चित्रलिपि

देश-विदेश के मनीषी विचारकों एवं साहित्य-ग्रन्थकारों की शब्द-भाषना से विमिश्रित 'नवनीत' का दीपान्तो-विशेषांक भारतीय पत्रकारिता के इतिहास का एक स्वर्ण-मुष्ट होगा। जीवन के प्रत्येक अंग-प्रयोग का स्पष्ट चरने-दारी उत्पत्तम सामग्री के प्रतिनिधि इस सग्रहणीय विशेषांक से आप वहीं बचिन ॥ हो जायें; अन्य: अपनी प्रति आज ही सुरक्षित करवा लीजिये। मामाग्य अरों की भौति इस अंक का मूल्य भी सिर्फ १) ही है।

मूल्या: 'नवनीत' में प्रकाशित प्रयोग रचना, चित्र एवं सूत्र पर नवनीत प्रकाशन लि० का वाणीरूप रूपा है। यह पुस्तक-प्रति के दिना किसी भी रूप में इनका उपयोग नहीं किया जाना चाहिए।

कार्यक मूल्य: दस रुपये नवनीत प्रकाशन लि० श्री १८१ ए० हाजी
विशेष संस्करण - बट्टा रुपये ३४१, तारदक, बम्बई ७ निदेश मन्तरण: देव हाजी

नवनीत

[हिन्दी डाइजेस्ट]

संचालकः
श्रीगोपाल नन्दिद्या

सम्पादकः
रतनलाल जोशी

पर्य ४ : : अंक १०

अक्टूबर, १९५५

आत्म-विराद

एक मेड़ की गार्ग में एक अनाथ सिंह-शावक मिल गया। उसका मातृ-आसक्त कमरा। अपने बच्चों के साथ उसे भी वह दूध पिलाने लगी। सिंह-शावक बड़ा हुआ; किन्तु सिंह के व्यक्तित्व में नहीं, मेड़ के स्वचित्त में। मेड़ों की तरह वह भी पास चरता और जाली जानवरों को देखकर समीत भागता। एक दिन सिंह ने मेड़ों पर छापा मारा। मेड़ों के साथ सिंह-शावक भी भागा। भागते-भागते जब वे एक खलशय के पास पहुँचे, तो शावक ने घाटी में अपना प्रतिबिम्ब देखा—वै, मैं भी सिंह! तत्काल एक वन-धनावर-प्रकम्पिनी गमना उसके कठ से फूट पड़ी।

जात्मज्ञान होने पर व्यक्ति भी अपने भीतर के विराद को इसी प्रकार पा जाता है।

—महर्षि रामाय



हमकी रही भातना जैसी

योगबलिष्ठ की परम तपस्विनी कथा सुकोपारमान का सरल मधुर हिन्दी-रूपांतर

*

एक समय की रात है कि, मदरासल पर्यन्त पर भृगु ने उग्र तप करना प्रारम्भ किया। उनकी समीप उनकी देव-माल और सेवा करने के लिए उनके प्रिय और सर्वगुणसम्पन्न पुत्र धनुज रहने लगे। भृगु ने निर्धारित समाधि लगायी, तो धनुज को सेवा-भार्य से थोड़ा अवकाश मिला।

एक समय जब धनुज घात चित्त बैठे हुए प्रकृति की सोभा का निरीक्षण कर रहे थे, तो उनकी आगाध-भार्य से जाती हुई एक सपनावस्थ-साम्राज्ञी अप्सरा दिखायी पड़ी। उसे देखते ही धनुज के मन में कामवासना उदय हो आयी और उर्ता अप्सरा को प्राप्त करने की उन्हें परम बेगमनी दृष्टि हुई। उन्हें ध्यान आया कि, यह अप्सरा देवलोका की है। अतः उन्होंने सोचा कि, देवलोक जाना चाहिए। एक मरत्य के होने ही उनका मूढम दरीर स्थल दरीर का छौड का देवलोक पहुँचा और धनुज ने अपने-आपको दृष्टशून्य में पाया। वहाँ पर चांग और एन्दर्य और भोग, मोदर्य और आनन्द का साम्राज्य दिखायी पड़ता था। दृष्ट न दानुज का यश आदर-महार किया और उन्हें स्वर्ग में रहकर वहाँ के आनन्द का भाग करने के लिए निमन्त्रण दिया।

पर धनुज का मन तो उसी अप्सरा पर लगा था, जिसे देवगर्भ के कामप्रसूत हुए थे। अतः स्वर्ग में वे उतारी तलाश में फिरने लगे। आगिर एक दिन वह एक खाटिका में विहार करते हुए मिल गयी। ओपे चार हाँते ही दोनों में परस्पर स्नेह का उदय हो गया और आनन्द से एक-दूसरे के साथ रहने लगे। इस प्रकार उता विश्वाची नाम की देवसुदरी के साथ आनन्द का उपभोग करते-करते धनुज को देवलोका में बहुत समय बीत गया।

इस तरह भाग-लपटा के कारण जब उनके पूर्व-अचित्त पुण्यों का दाय हुआ, तो वे स्वर्ग में गिर पड़े और वह अप्सरा भी पुण्य क्षीण होने के कारण गिरी। कुछ समय तर दोनों के मूढम दरीर चद्रमा की तरियों पर रहा। फिर अनाज के पीषों में आवर रहे।

उस पीषे के धान्य को, जिनमें धनुज का जीव था, दसावस्थ देन के एक ब्राह्मण ने गायी और उमरे धान्य को, जिनमें विश्वाची का जीव था, मान्य देन के राजा ने गायी। अतः धनुज का जन्म उस ब्राह्मण के घर हुआ और विश्वाची राजकन्या के रूप में जन्मी।

जब राजकन्या बचकरा हुई, तो माय्य-

नरेश न उसे स्वयंवर-द्वारा वर चुनने की आज्ञा दे दी। दययोग से वह ब्राह्मण पुत्र भी स्वयंवर में आ गया था। दोनों में पूर्व-स्नेह अदृष्ट रूप से उदय हो आया और उस पत्नी ने निधन ब्राह्मण पुत्र का अपना पति बना लिया।

कुछ समय पश्चात् मालव-नरेश अपने जामाता को राज्य सौंप कर वन में चले गए। इस प्रकार बहुत दिनों तक राज्य और राज तनया का उपभोग करने पर युग्म के जीव में उस देह का त्याग कर दिया।

तब वह धर्म देश में एक धीवर हुआ। फिर सूर्यवती राजा हुआ। फिर घडा ही विद्वान् गुरु हुआ। फिर विद्याधर हुआ। फिर मद्रास में राजा हुआ। फिर धामुदेव नाम का तपस्वी बालक हुआ। फिर विध्याचल में एक विराट् हुआ। फिर सौवीर और विराट् देश में मंत्री हुआ। फिर त्रिगर्त देश में एक गधा हुआ। फिर विराट्

देश में बौस का पोषा हुआ। फिर चीन के जंगल में हरिण हुआ। फिर ताड के वृक्ष में वास करने वाला सप हुआ। फिर एक वन में मुर्गा हुआ। इस प्रकार अपनी वासना और कम नियमानुसार शुक्र का

जीव बहुत-से रूपों को धारण करता हुआ एक ब्राह्मण-कुमार होकर गंगा-तट पर तपस्या करने आया। उसका पुनः-शरीर विकृत होकर क्षीण होन आया।

इधर बहुत काज पीछे जब भगु की समाधि टूटी तो उन्होंने शक्र को अपने



[विवाङ्मुर के पञ्चनाभपुरम् मन्दिर में अशक्ति धनुर्धारी राम के एक अभिलिखित की देखातुकृति]

पास न पाया। तलाश करने पर जब उसके शरीर को मृत अवस्था में पाया तो उन्हें काल के ऊपर बहुत क्रोध आया और वे काज को शाप देने के लिए तयार हो गए।

रत्न ही न काज न स्थूल रूप धारण कर न भगु को प्रणाम किया और कहा— महाराज! यह आप क्या कर रहे हैं? मैं काज तो भगवान् का निवा विद्या हुआ हूँ और सदा अपने धर्म का पालन करता हूँ। मुझ आप शाप नहीं दे सकते। मैं सब प्राणियों की वासना और कर्मों के अनुसार उनके स्थूल शरीर का परिवर्तन किया करता हूँ। आपका पुत्र पुत्र अपनी वासनाभा और लक्ष्मणों के अनुसार ही अगण्य योनियों में ग्रमण करता फिर रहा है। नाल न सब जन्मों का वृत्तान्त सुनाकर भगु का बताया कि शुक्र का जीव इस समय ब्राह्मण-बालक बना हुआ

गंगा-तट पर तप कर रहा है। विश्वास न हो, तो चलकर आप स्वयं देख लें।

भृगु मुनि बाल को लेकर उमके समीप गये। ब्राह्मण-बालक ने दोनों को देखा, पर पहचाना नहीं। भृगु ने उसे ध्यान लगा कर देखने को कहा। तब उसे अपने पूर्व-जन्मों का स्मरण हो आया। पिता ने आशानुसार उसने फिर ब्रुह होने की तीव्र वासना की और उमके फलस्वरूप ब्राह्मण-बालक के शरीर को छोड़कर उमकी पुरुषार्थ (मूढम देह) ने ब्रुह-शरीर में प्रवेश करके उसे जीवित दिया।

बलिष्ठनी ने राम से कहा—“बला! ब्रुह

ने जो रूप धारण किया, अपनी वासना के अनुसार किया। हर एक जीव की हर वासना उसे बाँधनेवाली होती है, जो कुछ काल के लिए अवश्य ही उसे उम विषय में बाँधेगी, जिसकी उसे वासना होती है। बटोपनिषद् में इसी कारण से कहा गया है—

यदा सर्वे प्रभुच्यन्ते कामा येऽयं हृदि धिता ।

अथ मत्तोऽमुना भयस्यैव महम ममन्तुते ॥

—जब इस जीव के हृदय में वाग करने-

वाली कामनाओं का परि त्याग हो जाता है,

तभी मर्त्य (मरनेवाला) जीव अमृत होता

ब्रह्मत्व को प्राप्त होता है।”

★

मैं नहीं चाहता या कि.....

महान् वैश्वानर लूई पास्त्योर ने जैमे ही निश्चित योजना के अनुसार बन्धुओं को गरम करके ‘प्रार्थन’ करने की विधि (‘वाल्फोराइजेशन’) का आविष्कार किया, वैसे ही भागे हुए उसे ‘पेटेंट’ कराने के लिए गये। और, ज्यों ही उनके नाम ने उक्त आविष्कार ‘पेटेंट’ होने की श्रुति उन्हें मिल गयी, त्यों ही उन्होंने अपनी विधि को प्रचार में लाने हुए घोषणा कर दी—“जो भी इस विधि का इस्तेमाल करना चाहे, वह हमें बे-गोर-दोर इस्तेमाल कर सकता है।”

उनके मित्रों ने आश्चर्य-स्पर्शित हो पूछा—“यदि आप इस विधि के इस्तेमाल पर किसी प्रकार का प्रतिबंध नहीं लगाना चाहते थे, तो आपने इसे अपने नाम पर ‘पेटेंट’ क्यों कराया?”

पास्त्योर गम्भीर भाव से मुस्कराये—“मैं नहीं चाहता या कि, कोई दूसरा व्यक्ति अपनी जेब भरने के लिए इस प्रकार के आविष्कार का ‘पेटेंट’ अपने नाम पर करा ले....।”

—“द ग्रेट मैक् ऑफ लाइव देट” में

★

स्वर्ग-यौग्य हमें यहीं खिलानी है

स्वर्ग क्या है ? कहीं है ? रवीन्द्रनाथ की कवि चेतना के सम्मुख एक दिन ये प्रश्न आकर आये। और, धन करण के द्वार पर आयी भिक्षात्मा का कवि ने भी अन्याय नहीं किया। हृदय का मधु देकर उन्होंने उनको सुख दी। इस लेख में इसी 'मधुदान' की व्याख्या है।

*

एक समय मनुष्य के मन में स्वर्ग-प्राप्त करने की कल्पना आयी। उसी की चिंता में वह न जाने कितने सीधों बिता मे वह न जाने कितने सीधों की खाक छानता फिरा, ब्राह्मणों की चरण-तुम दोनों मिल कर ही स्वर्ग गढ़ोगे। बाकी सारी सृष्टि मने अकेले गढ़ी है, लेकिन तुम्हारे ही कारण मेरी स्वर्ग-सृष्टि आज भी अधूरी पड़ी रह गयी है।

रज समेटता फिरा और न जाने कितने घत-अनुष्ठान उसने कर डाले। केवल यही एक विचार सदा उसके मन में बना रहता कि, आखिर अपने किस कर्म के प्रताप से वह स्वर्गलोक का अधिकारी हो सकता है ? लेकिन बना-बनाया स्वर्ग तो कहीं है नहीं—उन्होंने स्वर्ग गढ़ कर कहीं भी तो नहीं रख छोड़ा—धर्मराज बुद्धिधर की स्को-यात्रा बल्कि मनुष्य से उन्होंने यही [विश्व नदलाऊ बसु के एक को कितनी सुंदर, कैसी कहा कि, स्वर्ग तो तुम्हें विश्व की सरल रेखातुच्छति] शस्त्र-श्यामला देख रहे हैं, खुद ही बनाना पड़ेगा। इसी सत्कार ने किन्तु कितने बाण-बहन के भीतर म स्वर्ग बना डालना होगा। गुजरकर ही प्रमथ शीतल होते होते, तरल होते-होते, पृथ्वी इतनी दृढ़ हो सकी कि, आज उसकी छाती पर अद्भुत



जब तक उनकी सर्वांगीण दुर्बल सत्ता अपने समस्त उपकरणों को हाथ में लेकर सामने उपस्थित नहीं होती, तब तक स्वर्ग की रचना अधूरी ही पड़ी रहेगी। इसी-लिए वे युग-युगांतव्यापिनी प्रतीक्षा किये हुए हैं। इस पृथ्वी के लिए क्या वे अनंत काल से प्रतीक्षा नहीं कर

स्यामलता दिखायी दे रही है।

पृथ्वी युग-युग में तिल-तिल धरके रक्षित होती आयी, लेकिन स्वर्ग की रचना आज भी बाढ़ी पड़ी है। जिन दिनों धरती वाष्प के रूप में थी, उन दिनों ता उममें ऐसा सौंदर्य अभी प्रस्फुटित नहीं हुआ। किन्तु आज नीलावान के तल उसका रस अरुण्य सौंदर्य विखरा पड़ा है। इसी प्रकार स्वर्गलोक भी वाष्प के आवार में हमारे हृदय में विराजमान है, लेकिन उसके कणों ने मिलकर ठाम होना—गावार होना—आज भी शुरू नहीं किया। अपने इस रचना-कार्य के लिए वे तो हमारे साथ आ विराजे, लेकिन हम हैं कि, आज भी लाने-महाने-बटोरने की चिंता में ही सब-कुछ भूल कर हाथ-भर-हाथ धरे बैठे हैं। तथापि मरने से पहले इतना कहने-योग्य तो हमें बनना ही होगा कि, इसी पृथ्वी पर, इसी जीवन में, स्वर्ग का तनिक आभास में छोड़े जाता हूँ।

मेरे अपराधों के स्तूपों की तो अभी नहीं हैं और समय की बर्बादी भी कम नहीं की है; लेकिन सब भी बीच-बीच में क्षण-भर के लिए सौंदर्य भी छिन ही उठा था। दुनिया की क्या एवधारणें बचिन करके जाऊँगी? नहीं। यह जरूर कह सकूँगा कि, हमारे अभाव की तनिक-सा भी पूरा किया ही है, अज्ञान की

तनिक-सा ता दूर कर ही पाया हूँ।

आज के ये दिन अभी बीत जायेंगे। यह प्रकाश निमी दिन पलकों पर बिलीन हो जायेगा। ससार अपने द्वार बंद कर लेगा और में बाहर ही रहूँगा। तो क्या हमने पूर्व इतना भी नहीं कह पाऊँगा कि, यत्सामान्य कुछ घाटा-बहुत ता ससार का दे ही पाया हूँ?

शिल्पी क्या किया करता है? वह क्यों शिल्प की गूढ़ि करता है? विधाता वह क्यों है—समूचे आकाश में मैंने उल्लास के प्रदीप जला कर झुग रहे हैं, क्या तुम चौक पुराने नहीं आजाँगे? मेरी रोशन-चौकी तो यज्ञ ही रही है, तुम क्या अपना तानपूराया वह नहीं, तो एतारा ही छोड़ोगे नहीं? शिल्पी ने कहा—हाँ, छोड़ेंगा क्यों नहीं? गायक के गान के साथ जहाँ विद्वद के प्रश्न मिलते हैं, वहीं यथार्थ गान की गूढ़ि होती है। जो आदमी मानव-समाज के बीच इसी आशा में खड़ा रहता है कि, मनुष्य सब उगे जयमाला पहनायेंगे, वह आदमी तो कुछ भी न टहरा। किन्तु शिल्पी ने केवल रेखा के सौंदर्य को ही स्वीकार कर लिया, कवि ने केवल गुरु में—रग में—ही सतोष कर लिया। ये लोग कोई भी पुरा-पूरा न ले सकें। पुरा-युग तो पाया जा सकता है, जीवन को पुरा-पूरा देखें ही। उन्हीं की वस्तु उन्हीं के साथ मिश्रित हमें उपभोग करनी होगी।

हम लोग वर्षों की मुनियों बनाते हैं और जब वे पिघलने लगती हैं, तो बंझर होने लगते हैं।

—नवियर आटेन

मेरे पिताजी

“इस पीढ़ी के साहित्यकारों में मान की तरफ झुकाव न था। लिखनेवाला मुझे और कोई नहीं दीख पड़ता।” सन् १९२५ में सुप्रसिद्ध आलोचक ज्ञान मेके द्वारा प्रबल प्रिये गये थे उद्गार मान के अंतिम क्षणों तक सच प्रमाणित हुए। अभी हाल ही—१२ अगस्त को—श्वग के देवदूतों ने श्री श्यामस मान को हम धरतीवासियों के बीच से अपने पास बुला लिया है। इस दुःखान्वय साहित्य स्रष्टा की पुनीत स्मृति को अद्यावधि अर्पित करते हुए ‘गवनीत’ उनकी पुत्री मोनिका मान द्वारा लिखित एक सम्यक्शी समरण यहाँ प्रस्तुत कर रहा है।

गत ६ जून को मेरे पिताजी की ८०-वीं वर्षगांठ थी। उनकी एक एक स्मृति मेरे मानस में आज भी अवित है। जब कभी मैं शरात वरती, तो वे शात भाव से एकटक मेरी ओर देखते। सीधी अतस्तल को स्पर्श करनेवाली उनकी पैनी निपाहे—मैं स्वयं शर्म से सिर झुका लेती।

उनकी इन आँखों की कल्पना आज भी मुझ पर एक विशिष्ट प्रभाव रखती है। मेरे पिताजी का व्यक्तित्व कुछ ऐसा ही प्रभावशाली था। यहाँ तक कि, उनके व्यवहार में आनेवाली सभी चीजों में उनके व्यक्तित्व की छाप स्पष्ट प्रतिबिम्बित हो उठी थी—उनकी मनोली कार्यक्षमता, स्वच्छता, विलक्षण दृढ़ता और उनके अंतर में निर्बाध रूप से प्रवाहित होनेवाला सहस्रोत—इन सबकी झलक निहित थी। आभूषणों व पात्रों से मरी हुई उनकी दरार भी मानो, सुनहरी कमानिदार चश्मा पहने उनके चौड़े व स्वप्निल चेहरे का प्रतिरूप थी। उनकी पीले रंग की कुर्सी,

उनके सिगार से निकलती हुई धूम्र-वस्ति, उनकी मंगीतमय तीव्र सीटी की आवाज, उनकी चाय का प्याला और पूर्ण आराम के साथ उसकी चुस्की लेने का उनका ढंग—इन सबम मुझ अपने पिताजी के अनोखे व्यक्तित्व की झलक स्पष्ट दीख पड़ती थी।

उनकी हर वस्तु का उनसे मलग रहकर मानो कोई अस्तित्व ही नहीं था। उनका छाता, उनकी छड़ी, वाटरमैन कलम, बिजुर-केक—सब जैसे उनकी बाट जोहते रहते थे। नीना जब उनके जूतों पर पालिस करती रहती — साधारण-से जूते—तो मुझे ऐसा प्रतीत होता, मानो वे जूते भी सजीव हो उठे हो। मैं इस कल्पना में खो जाती कि, जिस प्रकार वे जूते सबको पर एक तीव्र गति और बंधी हुई लय में बढ़ते चले जा रहे हैं।

उनक कमरे में टेंगो वाले व सुनहरे रंग की पेंडुलमवाली घड़ी भी जैसे उस क्षण की प्रतीक्षा ही करती रहती, जब पिताजी की आत्मनिर्भर व स्नेहिल बाँहें

उसे अपना स्वर्ग द। जय बभी पिताजी
अस्वस्थ हो जाने, ता ऐसा भास होता,
मानो उस गढी पर भी उदामी का आवरण
छा गया हो। उस क्षण पिताजी भी कम
उदास नजर नही आते, बसकि उनके
नियम में हमने अ-

व्यवस्था आ जानी
थी-बहु प्रति दिन की
तरह काम नहीं कर
पाते थे। यही हुई
दाहीगाले उनके दुर्ग-
व कुछ क्षणोंमें चहने
पर, एक धूमिल-सा
रंग घिर आता था।

मेरे पिताजी सदा
काम करते रहना
चाहते थे। काम-उत्तरा
एक ऐसा अभिमान
था, जिससे पत्र-भर
वा भी बिछोड़ उन्हें
सह्य नहीं था। जय
से मैंने होश में आया,
एक दिन भी ऐसा
नहीं बीता था, जय
मेरे पिताजी अपने
इस उपास्य मित्र की
बेतर ध्यान न रहे हैं।

प्रत्येक दृष्टा में आनंद की भावना
निहित रहनी है। जिना आनंद-प्राप्ति
की कला बिये, आप किसी प्रकार की
इच्छा नहीं कर सकते। उदाहरणार्थ,
नवनोत

जीवित रहने की इच्छा को ले लीजिये।
स्पष्ट करने के लिए इसे मो कहा जा सकता
है कि, आप जीवन से प्यार करते हैं, तभी
जीवित रहने की इच्छा भी करते हैं।
इसी प्रकार कार्य करते रहने की इच्छा का
अर्थ है, कार्य में प्यार!

भयान पुत्र

जमा पुत्र यशस्य तुम
पात्र तुम्ह पुण्याभ -
हृदये बल व मृत्यु-
नन्द्य जोगन-जान ।
हम तुम्हारे स्वयं
तुम जाय हमारे अर्थ ।
मन-गुप्त तुम, आज के
शिव व स्वयं मम ।
जानन उमुधा म मुद्गारा
मोह-मुक्ता ममान,
जानि-दग्गी, मिद तुम्हारे ।
श्रेष्ठ वग मम ।
मन्य निभुज-जय ॥
तुम वर रहे ता जान ।
और जिना मन,
मरने श्रेष्ठ एक ममान ।
-मैयि-मैयि मम

यह इच्छा मेरे
पिताजी के जीवन में
प्रवेग पा गयी थी
और अतः उनकी
आदत बन गयी थी।
अनर से वे चले ही
मरल और विनोदी
थे। यह यही भी रह
सकते थे और किसी भी
वस्तु के प्रति उनके
हृदय में प्यार उमड़ता
रहता था। जब वे
लिगना आरम्भ करते,
तो जीवन की गहरी
अनुभूतिषी में मानो
को जाते थे।

जीवन के प्रति उन-
का दृष्टिकोण, एक
गह्वर पक्षी के प्रति
किसी गिरारी के

दृष्टिकोण के समान ही था। वे इस जीवन-
पक्षी गह्वर पक्षी का गिरार कर उगरे
रक्त म आनी कार्य की नोर हुरो पर
जिगने थे, किन्तु ऐसा वे इसके प्रति
अपने असीम प्यार के वशीभूत होकर

ही करते थे। यद्यपि इस सुवसूरत बहदुर की मृत्यु अवश्यम्भावी थी, किन्तु इसका रक्त पिताजी की पुस्तकों के पृष्ठों पर अमिट हो जाता। और, यही कारण है कि, मेरे पिताजी की रचनाओं में उनके जीवन की सभी अनुभूतियों एक धृष्टता में गिरोशी हुई मिलती है।

जब कभी मैं अपने पिताजी के साथ बैठती थी, तो मुझ सदैव उनकी गहरी आंतरिक उत्सुकता प्रकाशित देखने को मिलती थी—उनके जिज्ञासु स्वभाव की एक झलक। निश्चय ही, यह बिल्क्षण था। वे बहुधा चुप्पी साथ मेरी बातें सुनना ही पसंद करते थे, किन्तु उनकी यह चुप्पी बहुत स्पष्ट कर देती थी कि, जो-कुछ वे सुन रहे हैं, उसे पहले से ही जानते हैं। वे उस भोले व अधोध बच्चे की तरह बन जाते थे जो पहली बार किसी वस्तु को देख रहा हो और उसकी जानकारी प्राप्त कर रहा हो।

एक बार हम लोग ने हेमलेट के उस दृढ़ युद्ध का अभिनय देखा था, जिसमें हेमलेट की बोझ में घायल होने से खून बहना लगता है। खेल की समाप्ति पर मेरे पिताजी ने हेमलेट का अभिनय करनेवाले अभिनेता से पूछा—“तुम्हारी ओह ने वह

खून ही बह रहा था न?” अभिनेता आश्चर्यचकित हो मुस्कराया—“वह तो ‘ट्रूपेस्ट’ था। मेरी समझ से मेरे पिताजी ने उस दृष्टि एक मर्म-जाल से मुक्ति पाने के सच्चे आनंद का अनुभव प्राप्त किया। यद्यपि अभिनय-कला के इस ‘टेक्निक्ल स्टेटो’ से वे भलीभाँति परिचित थे फिर भी उन्होंने उसे पूरे विश्वास के साथ वास्तविक रूप में ग्रहण किया था



नोबेल पुरस्कार-सम्मानित
धामत मान

[चित्र की पत्र छोके]

और इसी से अभिनय के जवाब से उन्होंने स्वयं को छले ज्ञान का अनुभव किया। किन्तु अभिनय के सत्य स्वीकार कर लेने से उन्हें हार्दिक सतोष की भी अनुभूति हुई थी।

मेरे पिताजी सिर्फ कीमियागिरी के एक विशेषज्ञ ही नहीं थे, बल्कि उन्होंने जीवन को सही अर्थों में समझा भी था। उनके सामान जीवन को

प्यार करनेवाले बहुत कम ही व्यक्ति होते। दूर देहारी की ओर प्रकृति की गोद में घुमना, किसी शिशु की उन्मुक्त हँसी, किसी बुद्ध महिम्न का आश्रय या किसी बच्चे का मधुर संगीत सुनना, विनम्र-सुगन्धित पुष्पों का माधुर्य भाव से निहारना उन्हें बहुत ही पसंद था। किन्तु वे इसने कण-कण में बसी एक अव्यक्त सी उदासी से भी परिचित थे।

मेरे पिताजी जब भी लिखने बैठते थे, तो समय कुछ ऐसा रहा कि, मैं कभी उनके सामने न रह सकी। फिर भी मुझे ऐसा प्रतीत होता है, मानो अपने लेखन-कार्य के लिए वे किसी जादुई चायज का प्रयोग करते थे, जो उनके कुछ गरत लिखते ही, उसका बोध करा देता था, क्योंकि जिस चायज पर वे लिखते थे, उससे प्रति उनके दिल में अपार धड़का थी। उनकी लिखावट बड़ी ही स्वच्छ और मुदर हुआ करती थी और वे जो कुछ भी लिखते थे, उसमें कभी गमोघन करने की जरूरत उन्होंने नहीं समझी। प्रथम प्रयास में ही वे अपने भावों की सही रूप में व्यक्त कर लेते थे।

उन्होंने लेखन-कार्य के लिए कभी टाइपराइटर की सहमति नहीं ली—उन्होंने कभी कोई मोटर स्वयं नहीं चलायी—बिन्तु इसका यह अर्थ नहीं कि, मेरे पिताजी प्राचीन परिपाटी के थे। वे तो इतने साहसी और आधुनिक विचारों के थे कि, एक बार मंगल ग्रह की यात्रा पर जानें में भी न हिचकते।

मेरे पिताजी को कभी किसी युद्ध में जाने का अपमर् भी नहीं मिला, बिन्तु उनका उम्माह, उनकी स्मृति किसी घोड़ा से कम नहीं थी। निश्चय ही, बग में मौर्दर्श की स्थापना के लिए उन्हें अपने ही अतर्द्धों के युद्ध करना पड़ा होगा। एक बार किसी मज्जन के दम बाल के लिए

उनकी बड़ी प्रशंसा की थी कि, किसी भी काम को वे बड़ी धीरता और धार्ति से सम्पन्न करते थे। पिताजी का जवाब मुझे आज भी याद है —“धैर्य ही शौर्य है।”

समय मेरे पिताजी पर कभी अपना प्रतिबन्ध न लगा सका—न ही उन पर अपना प्रभाव डाल सका। बृद्धावस्था में भी किसी युवक के समान ही घरीर में वे पूर्ण स्वस्थ थे—उनका मास्तिज गदा की भाँति गुल्ला हुआ और उनकी आवाज विलुप्त स्पष्ट और स्थिर थी। सम्भवतः समय बीतने के साथ-साथ जीवन के प्रति अपने दृष्टिकोण में उनकी आस्था दृढ़तर होती चली गयी थी।

बिन्तु उनके अंतिम दिनों में ही उनके जीवन और उनके कार्यों का पूर्णरूपेण गठबधन हो पाया था और वे एक हो गये थे। सम्भव है कि, इनके पूर्व उनके हर प्रयास के बावजूद, उनके जीवन और कार्य में एक-दूसरे के प्रति एक प्रकार की ईर्ष्या और दुराय रहा हो। परन्तु एक लम्बे असें तक दोनों का अस्तित्व साथ-साथ वायम रह जाने में ही अन्त में वे दोनों एक हो गये थे। उन दोनों की समझ में आ गया था कि, वे एक-दूसरे के लिए ही निर्मित किये गये हैं—जीवन के लिए कार्य और कार्य के लिए जीवन। और, एक अनुभूति में ही अन्तिम दिनों में पिताजी की आँखों में आन्तरिक मनोप की लहर थी।

✽

योग्य शिक्षक महोदय अवश्य होते हैं, लेकिन अव्यक्त शिक्षक तो उनसे भी अधिक महोदय रहते हैं।

✽

—मेडिन बाबर

बृहत्कथा

कथा कदाविशो की आदि जन्मी

'बृहत्कथा' सारा के कथ-साहित्य का आदि-स्रोत है। 'कादम्बरी,' 'वेताल पचर्बिंशति,' 'पञ्चनभ्र और हितोपदेश' आदि विषय विख्यात ग्रन्थों का ही मदी, बरन् मन्त्रभूति के 'मालती-माधव,' विशालदत्त के 'मुद्राराक्षस' एवं श्रीहर्ष के 'नागानन्द' का उद्गम स्रोत भी 'बृहत्कथा' है। 'बृहत्कथा' के एक भग—उदयन-कथा—की व्यापकता का उल्लेख तो स्वयं कालिदास ने अपने 'मेघदूत' काव्य में किया है। महाकवि आस के 'प्रतिष्ठापयोगधरायण,' 'रत्नवासवदत्ता' एवं भीष्म की 'प्रियदर्शिनी,' 'रत्नावली' आदि रूपों के आधार स्रोत भी 'बृहत्कथा' के ही संग हैं। यही कारण है कि, संस्कृत साहित्य में 'बृहत्कथा' के प्रणेता गुणादिर की प्रतिष्ठा पारम्परिक एवं व्यास के ही समकक्ष है। 'भार्याशतशती' में गोवर्धनाचार्य ने गुणादय को अपनी अज्ञाजिह्वा अभित करते हुए लिखा है—

“रामायण, महाभारत और 'बृहत्कथा' के प्रणेताओं को मैं नमस्कार करता हूँ।”

इस महामहिम 'बृहत्कथा' का प्रणयन क्यों और कैसे हुआ, इसका रोचक वृत्तान्त सोमदेव भट्ट ने 'कथासरित्सागर' में दिया है। 'कथासरित्सागर' 'बृहत्कथा' के ही आधार पर प्रणीत है।

श्री गुणेश्वर शा ने 'कथासरित्सागर' के इसी वृत्तान्त को संक्षेप में यहाँ प्रस्तुत किया है।

एक दिन जगत्पिता महेश्वर जगद-
म्यिका के साथ हिमालय के बल्लस
नामक शिखर पर बैठे हुए थे। एकाएक
अम्बिका ने कहा—

“हे नाथ ! आप हमें एक ऐसी अपूर्व
कथा सुनाइये, जो अद्युतपूर्व हो और जो
मिसी की अवगत नहीं हो।”

शायरजी ने कहा — “भूत, वर्तमान
और भविष्य का ज्ञान रखनेवाली तुम्हारे
लिए बोन-सी बात छिपी हुई है ?”

पार्वती फिर भी अपने हठ पर अड़ी
रही और एक नवीन कथा कहने का आग्रह
करती रही। अतः में देवाधिदेव ने कहा—

“प्रिये ! अच्छी बात है। आज मैं
तुम्हें एक अत्यन्त रोचक कथा सुनाता हूँ।
यह देवताओं की कथा नहीं होगी। कारण
वि, देवताओं की कथा एकात्मिक गुरामय
हुआ करती है। मानवा की कथा तो दुःस-
मूलक है ही। अब इसे कथा कहें। आज मैं
तुमसे विद्याधरो की कथा कहूँगा। इसमें

पाँचिव ओर अपाँचिव दोनों प्रकार की घटनाओं का मिश्रण होगा।”

परन्तु क्या प्रारम्भ करने के पहले भूतनाथ ने नदी को द्वार पर बिठा दिया और यह आदेश दे दिया कि, जब तक क्या समाप्त नहीं हो, तब तक मेरे पास कोई भी नहीं आ सकेगा।

हमारी घोष, पुण्डन नामक एक ‘गण’ वहाँ पहुँच। नदी में उन्हें द्वार पर ही गोक दिया। पुण्डन गोकने लगे—शकरजी के पास मेरा जाना तो कभी निषिद्ध नहीं था। आज क्यों? अलक्ष्य रूप में वे वहाँ आ पहुँच और शकरजी के मुख से बोली गयी मानी क्या को मुन लिया।

क्या की रोचकता और मनोहारिता ऐसी थी कि, पुण्डन को इसे दूसरे को मुनाने की इच्छा जाग्रत हुई। भला अर्धांगिनी के मित्र और दूसरा उपयुक्त पात्र वहाँ मिलता? ‘अथ’ में ‘इति’ तब उसी रात उन्होंने अपनी पत्नी को शकरजी के मुख में मुनी हुई क्या को मुना दिया।

पुण्डन की स्त्री पार्वती को भविष्यवाणी। उन्हें भी इस क्या को दूसरे में कहने का कौतूहल हुआ। वह दूसरे ही दिन जगदम्बिका के पास पहुँची और पतिदेव में जिन रूप में क्या को मुना था, उसी रूप में साक्षात् पार्वतीजी को मुना दिया। पार्वती को बड़ा प्रीत हुआ। वे आदेश में आकर शकरजी के पास पहुँची। कहने लगी—“हे देवाधिदेव! क्या आप मुझे भी अमर्य नापन करते हैं? आपने तो मुझमें यह कहा

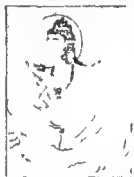
था कि, जा क्या मेने तुमको मुनायी है, वह विलकुल नहीं है। परन्तु बात तो ऐसी नहीं है। दूर में क्यों जाऊँ? मेरी प्रतिहारी जया तब को इस क्या की जानकारी है।”

शकरजी ध्यानस्थ हो गोकने लगे। अलक्ष्य भाव में पुण्डन ने क्या के समय उपस्थित होकर जिस तरह इसे मुना था, उसका सूतान पार्वती को धतलाया। पार्वतीजी पुण्डन के इस अगिष्टाचरण पर बहुत अप्रसन्न हुई। उनकी मोषाग्नि में मानो आहुति डाल दी गयी। पुण्डन युद्धये गये। वे उन पर बरम पड़ी। और, अन में यह वह बार शाप दे दिया—
“पुण्डन! तेरा अपराध बहुत बड़ा है। जा, तुझे मनुष्य-योनि में जन्म लेना पड़ेगा और वहाँ मानव-जीवन की सारी बिनाओं को सहना पड़ेगा।”

पुण्डन का भाई मान्यवान भी वहाँ उपस्थित था। अपने भाई के प्रति दिये गये इस शाप को मुन कर यह बड़ा निप्र हुआ। जगन्माता ने भाई के अपराधों को क्षमा करने के लिए विनय करने लगा। पार्वतीजी का शोक बहुत अधिक बढ़ा हुआ था। इस हृन्मक्षेप को भी वे नहीं सह सकी। मान्यवान को भी उसी तरह शापित होना पड़ा। अथ जया में नहीं रहा गया। वह विलम्बनी हुई माना पार्वती के चरणों पर गिर पड़ी और क्षमा की याचना करने लगी। उसकी दयनीय अवस्था देख पार्वती का शोक मान हो गया। वे आश्वासन के स्वर में कहने लगी—

“जये । कुवेर के शाप से अभिशप्त सुप्रतीक नामक यक्ष विध्वारण्य म पिशाच-योनि में रहता है । पिशाच-योनि का उसका नाम बाणभूति है । बाणभूति से साक्षात्कार होने पर पुण्डित को पूर्व-जन्म की सारी बातें स्मरण हो जायेंगी । जब पुण्डित बाणभूति को शंकरजी के मुख में सुनी हुई कथा को कहेगा, तो उसकी मानव लीला समाप्त हो जायेगी । और, जब बाणभूति पुण्डित से सुनी हुई इस कथा को माल्यवान से कहेगा, तो उसे पिशाच-योनि से निष्कृति मिल जायेगी । और, माल्यवान जब इस कथा का प्रचार करेगा तब उसे पुन दिव्य शरीर की प्राप्ति होगी ।”

कालांतर में पुण्डित ने वीणास्वामी नगरी में सोमदत्त नामक सद्-ब्राह्मण के घर जन्म लिया । वररुचि के नाम से वे प्रसिद्ध हुए । आगे चल कर उनका नाम कात्यायन पड़ा । वे श्रुतिधर थे । जिस विषय को एक बार सुनते, वही उनके स्मृति-पट पर सदा के लिए अंकित हो जाता । कहते हैं कि, वीणापाणि ने उनके समक्ष प्रत्यक्ष हो, उन्हें आशीर्वाद दिया था । उन्हीं के कृपा-कटाक्ष का फल था कि, नदवरा के अंतिम सम्राट् योगानन्द का मन्त्रित्व भी उन्होंने किया ।



विषयवाच

[विश्व आचार्य नदवल्लभ वसु के एक चित्र का सरल रेखाचित्र]

नदवरा का उच्छेद होने पर उन्हें विराग हो गया और विध्वारण्य में प्रविष्ट हो गये । बाणभूति वही पिशाचो की मडली में रहा करते थे । बाणभूति से साक्षात्कार होने के साथ ही वररुचि को पूर्व-जन्म की सब बातें स्मरण हो आयी । वररुचि ने सात लाख स्त्रियों में सात पिशाचधरो की कथाओं को बाणभूति को सुना दिया । साथ-ही-साथ यह भी कहा कि, आप कुछ

दिनों तक यही रह कर माल्यवान की प्रतीक्षा करें । आप हमसे सुनी हुई यह समस्त कथा जब माल्यवान को कहेंगे, तो पिशाच-योनि से आपको मुक्ति मिल जायेगी ।

यह कह कर वररुचि ब्रह्मीकाश्रम की ओर चले पड़े । जगदम्बिका का ध्यान करते हुए उन्होंने अपनी मानव-लीला का स्मरण किया और पुन दिव्य शरीर उन्हें प्राप्त हो गया ।

इधर, कात्यायन प्रतिष्ठान देशातर्गत सुप्रतीक नगर में गुणादय के नाम से पृथ्वी-मण्डल पर अवतीर्ण हुए । सोमदत्त शर्मा नामक सद्ब्राह्मण की कुमारी कन्या श्रुतार्था के गर्भ से इनकी उत्पत्ति हुई । गुणादय की वाल्यावस्था में ही श्रुतार्था परलोक सिंघार गयी । गुणादय निस्सहाय हो गये । वे विद्योपार्जन के लिए दक्षिण के

देशों की ओर चले गए। पूर्व-जन्म के मस्कारा न साथ दिया। थोड़े ही दिनों में सब विद्याओं में निष्णात हो गए और दक्षिण के देशों में बड़े म्यानि प्राप्त की। बहुत दिनों तक वहाँ रह कर अपने दा पट्ट शिष्यों—गुणिदेव और मदिदेव के साथ मुप्रनीम नगर में लौट आये।

इस बीच में गानवाहन सार्वभौम सम्राट की पदवी प्राप्त कर चुके थे। सर्व्वर्मा उनके प्रधानामान्य के पद पर मुनोभिन थे। गुणादय का यश मोरम सानवाहन के यहाँ तक पहुँच चुका था। वहाँ इनका वडा आदर-सन्धार हुआ और गुणादय भी मजिमहट में ले लिये गये।

यों सानवाहन वडे तेजस्वी और पराक्रमी थे, परन्तु उनका विद्या-विषय ज्ञान गती के बराबर था। विद्वान्मात्र में वे अन्यतही गममें जाने थे। महाराज की एक महारानी, जो विष्णुशक्ति की कन्या थी, बड़ी विदुषी थी। उसे अपने विद्या-वंश के वडा अभिमान था। इस बात को लेकर महाराज और भी विश्व रग्न करने थे।

एक दिन समन का मुहूर्त सप्तम था। प्रकृति अपनी लाजस्तर शोभाओं के साथ राजोद्यान की रमणीयता को बडा गती थी। महाराज अपने मटिपी-महट के साथ प्रसादोद्यान में विहार कर रहे थे। उद्यान में एक मुदर मरोवर था, जिसके एक पार्श्व में जगज्जननी महामाया का मंडप था। मरोवर मटिपीम जल में भरा हुआ था। महाराज महाराज को जल-

विहार की इच्छा हुई और वे प्रमदाओं के साथ जल में प्रविष्ट हो गये। जलप्रोताएँ होने लगीं। एक-दूसरे के ऊपर जल के छोट दिम जान लगे। विष्णुशक्ति-दुहिता जल की इस माग का नहीं सह सरी। दानो हाया में अपनी आँसों का मूँद लिया और विश्व स्वर में कहने लगी—

“मोदक देव ! परिताड्य ।”

‘मोदक’ इस पदम महाराज को श्रम में डाल दिया। उन्हें लहदुओं का बोध हुआ। ममोपम्य दासियों का लहदुओं का लाने का आदेश दिया गया। विदुषी रानी महाराज की इस अल्पज्ञता पर बहुत दुस्मिन् हुई और हँस पड़ी। रानी ने कहा—“देव ! जलप्रोता के गमय लहदुओं का क्या प्रयो-जन है ? मैंने तो यह कहा था—

“मा उदक देव ! परिताड्य ।

अर्थात्, जलों में मूँद न मारें।”

सभी रानियों हिलमिलाने लगे पड़ीं।

महाराज सानवाहन को यह हँसी बहुत लगी। इस अपमान को वे नहीं सह सके। तत्काल त्रीश-मगेवर में निरल पडे। मुममुद्रा मर्मोर हो गयी। गोपे अत-पुर में जाकर पल्लव पर लेट गये। लोगों में खोडना बढ कर दिया। भोजन तर का परिग्याय कर दिया, मानी आभरण अनयन का धन ले लिया हां। उनके हृदय में भवकर अनडंड मचा हुआ था। गोवा वि, इस प्रसार को उमी दना में धारण कन्या, जल विद्वन्महली में बैठने की योग्यता हां, अन्यथा इस शरीर का पात

ही समुचित है।

राजमहल में हाहाकार मच गया। शव बर्मा के पास यह वृत्त पहुँचा। जब उसे यह समाचार मिला कि विदुषी महारानी के परिहास ने महाराज को पीड़ा पहुँचायी है तो वे उसके प्रतिकार के उपायों के विषय में सोचने लग।

शव बर्मा गुणादय को साथ लेकर अंत पुर में पहुँचे। डरते डरते महाराज के बल्लग के पास तक गये। बहुत देर तक मौन रहने के बाद कहने लग—

देव ! एक दिन श्रीमान ने मुझसे पूछा था—क्या हम पंडित बन सकते हैं ? इसी प्रश्न को अपने ध्यान का विषय बना कर मन स्वप्न साधना की ओर स्वप्न में उत्तर की प्रतीक्षा की। उसी रात में एक स्वप्न देखा। देखा कि आकाश मंडल से एक श्वेत कमल पृथ्वी-तल पर गिरा। थोड़ी देर के बाद एक तेजस्वी रूपवान राजकुमार वहाँ आया। उसने हाथ में उस श्वेत कमल को जो अविचलित अवस्था में था उठा लिया और उसे प्रस्फुटित कर दिया। उस कमल के गर्भ से एक श्वेताम्बरा दिव्य रमणी निकली। वह महाराज के मुखमंडल में प्रविष्ट हो गयी। तत्पश्चात् मेरी निद्रा भी भंग हो गयी।

इस स्वप्न के फलाफल पर बहुत देर तक मैं सोचता रहा। अंत में इस निष्कर्ष पर पहुँचा हूँ कि, महाराज अवश्य सरस्वती के कृपापान बनयें।

यह सुन कर महाराज कुछ आश्चर्य

हुए। सतोप के स्वर में गुणादय से पूछा— यदि लगन से पढ़ा जाय तो पंडित बनने में कितने दिन लगय ?

करबद्ध हो गुणादय ने उत्तर दिया— महाराज ! सब विद्याओं को समझने के लिए व्याकरण ही प्रवेश द्वार माना गया है। एक व्याकरण का ही ज्ञान बारह वर्षों में प्राप्त किया जाता है। परन्तु प्रभो ! मैं इससे आध काल अर्थात् छ वर्षों में आपको व्याकरण शास्त्र में प्रवीण बनाने की प्रतिज्ञा करता हूँ।

इस पर शव बर्मा बोल उठ— छ साल की अवधि बहुत बड़ी है। श्रीमान से इतना परिश्रम नहीं उठाया जा सकता। मैं छ महीनों में महाराज को पंडित बना दूँगा।

गुणादय को यह बात बहुत लगी। उन्होंने इसे चुनौती समझा। वे आदेश में आ गये और सहसा बोल उठ— सम्म मानव-समाज में तीन प्रकार की भाषाएँ बोलੀ जाती हैं—संस्कृत प्राकृत और धामीण। यदि छ महीनों की अवधि में महाराज को कोई पंडित बना दे तो मैं तीनो भाषाओं में बालना बंद कर दूँगा।

शव बर्मा भी आवेग में आ गये। उन्होंने उत्तजित होकर कहा— यदि छ महीनों में महाराज को पंडित नहीं बना पाऊँ तो आपकी चरण पादुकाओं को बारह वर्षों तक मस्तक पर धारण किया रहूँगा।

बात यही समाप्त हो गयी। शव बर्मा अपने निवासस्थान पर लौट आये और अपनी प्रतिज्ञा के पालन में जुट गये।

वे वातिवेद्य की आराधना में लग गये। साधना फलपत्ती हुई और स्वाधि-वातिव के प्रसाद से उन्होंने एक मक्षिप्त, परन्तु पूर्ण व्याकरणशास्त्र की रचना कर डाली। इसका नाम उन्होंने 'बालापत्र' रखा। और, इसी व्याकरण की सहायता से महाराज सातवाहन को उन्होंने सचमुच ही छ महीनों में विविष्ट व्याकरण बना दिया।

गुणादय के आत्मसम्मान को गहरा धक्का लगा। वे अपनी प्रतिज्ञा में आवद्ध थे। उन्हें मौन धारण कर लेना पड़ा। मुप्रतिष्ठानपुर को छोड़ दिया। पूमते-पूमते विष्य-क्षेत्र में पहुँचे। विष्याचल की अधित्यवाओ में पिनाचो के मिलने का सुयोग हुआ। उनकी बोल-भाळ की भाषाओं को सुनकर उन्हें सहसा यह प्रेरणा मिली कि, 'मस्तुत-भ्रातृ-देविठ' भाषाओं में भिन्न यही हमारी बोल-चाल की भाषा है।

वे पिनाचो में हिममिल गर्भ : उनके साथ रह कर पैनाची भाषा सीख ली। पिनाचो की-सी वेप-भूणा बना ली। एक दिन उन्हीं के साथ यात्रा कर रहे थे कि, वाणभूति में भेंट हुई। गुणादय ने उन्हें अपना परिचय दिया। वाणभूति तो उन्हीं की प्रतीक्षा में बाढ़-यापन कर रहे थे। वररक्षि ने उन्हें समस्त वृत्त अवगमन हो चुका था। उन्होंने बड़े प्रेम और उल्लाह में गुणादय को पूर्व-जन्म की मारी घटनाओं में परिचित करा दिया। सात लाख श्लोको में वररक्षि ने सुनी हुई मान विद्यापरी की कथाओं को पैनाची भाषा में गुणादय को सुना

दिया और स्वयं मुक्त हो गये।

जगन्माता पार्वती ने यह कहा था कि, इन कथाओं के प्रचार और प्रसार करने पर मातृवान की मुक्ति होगी। यह मोक्ष कर गुणादय ने वाणभूति में सुनी हुई इन कथाओं को पैनाची भाषा का बनेवर पहना कर सज्जलतात्मा एक कथा-ग्रन्थ अपने शरीर के शोणित में लिख डाला। विद्यापर-गण इन ग्रन्थ की चुरा न ले, इस शय में शोणित में ही यह विद्यान्तराय ग्रन्थ लिखा गया था।

'बृहत्कथा' बन कर तैयार हो गयी। परन्तु इसका प्रचार कैसे हो, यह चिन्ता गुणादय को सताने लगी। यह ग्रन्थ बिने समर्पित किया जाये, यह भी एक निता का विषय था। गुणादय के दोनों विष्य गुणिदेव और नदिदेव गुन्देव के साथ थे। विपत्ति के दिनों में भी उन्होंने गुरु का साथ नहीं छोड़ा था। बराबर एसात भाव में उनकी सेवाएँ करते आ रहे थे।

गुणादय ने सोचा कि, महाराज सातवाहन को ही यह ग्रन्थ समर्पित किया जाये। 'बृहत्कथा' के साथ गुणिदेव और नदिदेव को महाराज सातवाहन के पास भेजा। उनका रहन-साहन भी पिनाचो की तरह बन गया था। वे इसी वेप-भूणा में मुप्रतिष्ठानपुर पहुँचे और अपने गुन्देव का सम्वाद महाराज को सुनाया। सातवाहन ने गव्य गुन कर तिरस्कार के स्वर में कहा—“सात लाख श्लोको में लिखिय यह कथा-ग्रन्थ अवश्य

सप्रहणीय हैं, परन्तु शोणित के द्वारा पैशाची भाषा में लिखी हुई होने के कारण सम्य-समाज में इसका समादर कौन करेगा? अरे! इसे तो कोई स्पर्श भी नहीं करना चाहेगा।”

गुणादय इस सम्वाद को सुन कर बहुत दुःखी हुए। विध्याद्रि की तलहटी में एक बड़ा-सा कुंड बनाया और उसमें अग्नि प्रज्ज्वलित किया। अपन इस विशाल-काय प्रय को होम करने का सकल्प कर लिया। एक-एक पत्ता पड़ कर वन्य पशु-पक्षियों को पहले सुनाते और उसकी समाप्ति पर उसे अग्निबुड में होम कर देते। असह्य पशु-पक्षी श्रोता के रूप में वहाँ इकट्ठे हो गये। यह द्रम जवाब गति से चलने लगा। धीरे-धीरे समाचार महाराज सातवाहन के पास तक पहुँचा। महाराज को बौतूहल हुआ और वे शर्ष वर्मा को साथ लेकर वहाँ पहुँचे। लेकिन तब तक प्रय का अधिकांश अग्निशिखा में भस्मीभूत हो चुका था। केवल लक्षश्लोकात्मक ‘नरवाहनदत्त-चरित’ शेष बचा हुआ

था। गुणादय ने सातवाहन को आया हुआ देख कर उनका सत्कार किया और कहा—

“राजन्! यह अवशिष्ट ग्रंथ में सप्रम आपको समर्पण करता हूँ। मेरे दोनों शिष्य इसकी व्याख्या करके इसे आपको समझा देंगे। सातो कथाओं में यही कथा मेरे दोनों शिष्यों को अधिक प्रिय थी। इसी कारण से यह अब तक बची हुई भी है।”

सातवाहन ने इस उपहार को सहर्ष स्वीकार कर लिया। गुणादय ने योगाखण्ड हो बही अपने नखर शरीर को छोड़ दिया। गुणदेव और नदिदेव को साथ लेकर महाराज अपनी राजधानी में लौट आये और उनसे आद्योपात्त इस कथा को सुना। उन्हीं दोनों शिष्यों से इन भवतारण कथा को पैशाची भाषा में लिखवा कर प्रय के साथ सन्निविष्ट करवा दिया और ‘बृहत्कथा’ का नाम देकर ससार में प्रसिद्ध करवाया।

यही ‘बृहत्कथा’ संकटों वपों तक विद्वज्जनमंडली में समादृत हो जन-समाज का मनोरंजन करती हुई अत म, काल के मुख में तिरोहित हो गयी।

★

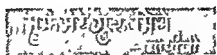
छः विचार

सुप्रख्यात वैज्ञानिक अल्बर्ट आइंस्टीन के पास एक बार एक महिला-कलय की अध्यक्षता ने निम्न आशय का पत्र भेजा—“मैंने सुना है, आप विश्व के माने हुए विचारक हैं। अगर अपने छ विचार आप हमें लिख भेजें, तो बड़ी कृपा होगी।”

आइंस्टीन ने जवाब में जो पत्र भेजा, वह यह था—‘ईश्वर, देश, पत्नी, गणित, मनुष्य और शांति।”

—‘इत्स टू’ से

★



नरसीवन-यशोवन्त मन्दिर, अहमदाबाद द्वारा मकलिन बायीं ओर के आधुनिक-प्रकाशित लेखों की सुमिरनी का मुद्रण

★

एक विविध गुणनाम पत्र मुझे मिला है। जो बापें लोचमाय्य को प्राणों में भी प्रिय था, उसे उठा लेने के लिए पत्र-लेखक ने मेरी प्रशंसा की है। इसके बाद मुझे इस पत्र में हिम्मत न हार कर स्वराज्य के कार्यक्रम में आगे बढ़ने जाने का उद्देश्य दिया गया है। और, अंत में मुझे राष्ट्र-गुणनाम दिया है कि, मैं राज-नैतिक क्षेत्र में हमेशा जो योगदान दे रहा हूँ उसे याद कर रहा हूँ, यह शिर्ष मेरा दम्भ-मात्र है।

मैं चाहता हूँ कि, पत्र-लेखक गुणनाम पत्र लिखने की भयपूर्ण गलती में मुक्त हो जाये। स्वराज्य का जोन अपने भीतर बसा रहे। हम लोग यदि अपने आंतर-निर्भरतापूर्ण अपने मन की बात स्पष्ट कह देने की हिम्मत नहीं दिखा सकते, तो हम अपना काम कैसे करेंगे?

तो भी इस पत्र में उठायी हुई बात मार्गदर्शक महत्त्व की होने के कारण मैं उसका उत्तर देना जरूरी मानता हूँ। स्वर्गीय लोचमाय्य के अनुयायी-पद के सम्मान का दावा मुझसे किया ही नहीं जा सकता। लोगों-नरेशों भारतीयों की

तरह में भी उनके अनेक मनोरत, उनकी अथाप विद्वत्ता, उनकी देशभक्ति और उनके सर्वोच्च चारित्र्य और स्वार्थ-त्याग के लिए उन्हें पूजता हूँ। इस बात के सारे राष्ट्र-गुणों में सबसे ज्यादा स्थान जनता के हृदय में उन्होंने ही पाया है। अतिस गाय ही, मुझे इस बात का भी पूरा-पूरा भाव है कि, मेरी कार्य-गति लोचमाय्य की कार्य-गति नहीं है। तो भी मैं सच्चे दिल से मानता हूँ कि, लोच-माय्य की मेरी गति में अथवा नहीं थी। मुझे उनका विद्वान् प्राण था।

अपनी दूरी की गति में भी मैं अन्त-जान नहीं हूँ। विद्वत्ता का मैं कोई दावा नहीं कर सकता। लोचमाय्य में जो योजना-शक्ति थी, वह भी मुझमें नहीं है। फिर भी हम दोनों में दो बातें एक-जो नहीं जा सकती हैं—देश का प्रेम और स्वराज्य के लिए गत प्रयत्न। और, इस आधार पर मैं उन गुणनाम लेखक को बिल्कुल दिवंगत हूँ कि, लोचमाय्य के प्रति अपने पूज्य भाव में किसी से पीछे न रहकर मैं स्वराज्य की गति के मार्ग में उनके समान अथवा निम्न के बदलो-न-बदल

मिलाकर आगे बढ़ता जाऊंगा।

लेकिन शिष्यत्व निराली ही वस्तु है। वह एक पवित्र वैयक्तिक वस्तु है। ठेठ १८८८ में मैं दादाभाई के चरणों में बैठा। लेकिन मुझे वे अपने से दूर मालूम हुए। मैं उनका पुत्र हो सकता था।

लेकिन शिष्य का पुत्र से अधिक निकट का सम्बन्ध है। शिष्य हुंसा नया जन्म लेने-जैसा है। वह स्वेच्छा से लिया हुआ आत्मसमर्पण है।

१८९६ में मुझे दक्षिण अफ्रीका के अपने कार्य के निमित्त हिन्दुस्तान के तत्कालीन सभी प्रसिद्ध नेताओं के सम्पर्क में आने का मौका मिला। न्यायमूर्ति रानाडे ने सागने तो मैं एकदम हतप्रभ हो गया था। उनके समक्ष खोलने में भी मैं कौपता था। स्व. बदरहीन तैयबजी ने मेरे ऊपर पिता-जैसा स्नेह दिखाया, मुझे रानाडे और फीरोजशाह की सलाह के अनुसार चलने की सलाह दी। सर फीरोजशाह ने तो मेरे साथ घर के बजुर्ग जैसा ही बर्ताव किया। उनका शब्द तो बानून ही था—“गोधी, तुम्हें २६ सितम्बर को भाषण देना है। और देखो, वक्त की पाबंदी रखना।” मैंने आज्ञा स्वीकार की। २५ की शाम को फिर मिलने का आदेश था।

२५ की शाम आधी धीर में हाजिर हुआ।

“भाषण लिखा है कि, नहीं?”

“नहीं साहब।”

“गले आदमी, यह नहीं नलेगा।

बाज रात को लिख डालोगे?”

“भूषी, तुम भाषी के यहाँ जाना

और ये जो भाषण दें, उसे रातो-रात छपवाकर उसकी एक नकल मुझे देना।” फिर मेरी तरफ मुड़कर कहा—“देखो गांधी, बहुत गहराइयों में मत जाना। तुम्हें साफ पता नहीं होगा कि, बम्बई के लोग सम्ये-सम्ये भाषण नहीं सुनते।”

मैंने फिर सिर झुका कर उनकी बात स्वीकार की। बम्बई के सिंह ने मुझे आज्ञा पालन करना सिखाया। उन्होंने मुझे शिष्य नहीं बनाया, बनाने का प्रयत्न भी नहीं किया।

वहाँ से मैं पूना गया। बिल्कुल अपरिचित था। जिनके यहाँ ठहरा, वे भाई पहले मुझे तिला महाराज के घर ले गये। मैंने उन्हें मित्रों से पिरा हुआ

देखा। मेरी बात उन्होंने ध्यानपूर्वक सुनी और कहा—“तुम्हारे काम के लिए हमें एक सभा तो बुलानी ही चाहिए। लेकिन साफ तुम नहीं जानते होगे कि, दुर्भाग्य से हमारे यहाँ दो पक्ष हैं। तुम्हें ऐसा समापति खोज देना चाहिए,



गोरले

[चित्र - बम्बई स्थित एक अभिनव शिल्प का सरल रेखाचित्र]

जो दो में मे किसी पक्ष का न हो। तुम डाक्टर भाडारकर से मिलोगे?"

उसके बाद मैं डा. भाडारकर के गहरे पहुँचा। जिस तरह काई बुद्ध गुरु सिष्य का स्वागत करता है, उसी तरह उन्होंने मेरा स्वागत किया—

"तुम उत्साही और लगनवाले युवक मालूम होते हो। मैं आजकल सार्धजनिक सम्भाओम विलुप्त नहीं जाता। लेकिन तुमने जो बात सुनायी, वह इतनी हृदयद्रावक है कि, मुझे इनकार नहीं हो सपता।"

गम्भीर मुद्रावाले इन ज्ञानवृद्ध विद्वद्वचन की मन ही-मन मैंने पूजा की। लेकिन अपने हृदय सिंहासन पर मैं इन्हें नहीं बिठा सका। वह अभी रानी ही रहा। अभी तक सत तो बहुत मिले, परन्तु मेरा गुरु मुझे नहीं मिला था।

किन्तु गोपाले की बात इन सबसे निराली थी। क्यों, यह मैं नहीं बता सकता। परम्पूतन बालेज के बम्पाउंड में उनसे पर मैं उनसे मिला। मुझे ऐसा अनुभव हुआ, मानो किसी पुराने मित्र से मिलान हुआ हो अथवा इससे भी ज्यादा सार्धक शब्दों में कहूँ, तो मानो, वर्षों से बिछुटे हुए मौ-बेटे मिले हो। उनकी प्रेम-भरी मुसमुद्रा ने एक क्षण में मेरे मन का सारा भय दूर कर दिया। जब मैंने विदा ली, तो उस समय मन में एक ही ध्वनि उठी— "यही है मेरा गुरु।"

उस घड़ी से गोपाले ने किसी दिन भी मुझे भुलाया नहीं। सन् १९०१ में

मैं दक्षिण अफ्रीका से दुबारा हिन्दुस्तान आया और हम लोग ज्यादा निवृत्त समा-गम में आये। उन्होंने मुझे अपने हाथ में लिया और गड़ना लुह किया। मैं बैसे मोलता हूँ, बैसे लाता-भोता हूँ—हर बात की चिन्ता वे रसते थे। मेरी माँ ने भी साथ-ही मेरी इतनी चिन्ता की हो।

वे स्पष्टिक के समान निर्मल, गाय-जैसे सोम्य और सिंह-जैसी धूर थे। उदार इतने कि, उसे दोष भी मान सकते थे। हो सपता है, किसी को इन गुणों में मे एक भी गुण नजर न आया हो। मुझे उससे कोई मतलब नहीं। मेरे लिए तो इतना ही परा है कि, मुझे उतने-वही उँगली दिखाने के लायक भी सामी नजर नहीं आयो। मेरी दृष्टि में तो राजनैतिक क्षेत्र में आज भी वे आदर्श पुरुष ही हैं।

इसका अर्थ यह नहीं कि, हमारे बीच कोई मतभेद नहीं था। ठेठ १९०१ में भी हमारे बीच सामाजिक सुधारों के सम्बन्ध में मतभेद था। मेरे अहिंसा-सम्बन्धी कठिन आदर्श से भी उनका स्पष्ट मतभेद था। लेकिन ऐसे मतभेद हममें से किसी के मार्ग में बाधक नहीं हुए। हमें एक-दूसरे से अलग कर देने, ऐसी कोई चीज नहीं थी। आज ये जीवित होते, तो क्या करते, इस प्रश्न को लेकर बरपना की तरफें दोड़ाना में पाप और नास्तिकता समझता हूँ। मैं तो इतना ही जानता हूँ कि, आज भी मैं उसी ही छत्रछाया में काम कर रहा हूँ।

शङ्ख

मिट्टी का स्रष्टा रहते हैं

सुप्रसिद्ध नैशनल जूज़ियन हक्सले ने अपनी रोचक लेखमाला "रिमेकिंग द वर्ल्ड" (भरती का पुनर्निर्माण) में लिखा है—“जरा मृमि का चमत्कार देखिये। अफ्रीका के सिंघों को आप कैलिफोर्निया प्रात या साइबेरिया में भेज दीजिये। वे अपनी हिंसक वृत्ति भूल जायेंगे और गाय बकरी की भोति पालतू बन जायेंगे।” नीचे हम इसी लेखमाला के एक अध्याय का सविन दिन्दी रूपान्तर प्रस्तुत कर रहे हैं।

★

विनोदजी द्वारा लिखी गयी 'पृथ्वी सूक्त' की नयी व्याख्या को पढ़कर मन-ही-मन धरती को नमस्कार कर हो रहा था कि, अचानक एक बृद्ध सज्जन (बेड-भूषा से तो ऐसा ही मालूम पड़ता था) सामने खड़े दिखायी दिये। सर्जनी के लक्ष्य से वे मुझसे पूछ रहे थे—

“बच्चे मिट्टी क्यों खाते हैं, जानते हो?”

“बच्चे नासमझ होते हैं, इसलिए।” मैंने चिड़कर कहा।

“और जानवर देह में मिट्टी क्यों पोतते हैं?” उनके दृढ़, परन्तु शांत स्वर से मैं चौंक उठा।

“इसलिए कि, जानवर भी नासमझ ही होते हैं।” मैंने सरल कटाक्ष के साथ कहा। मगर वे अब

भी शांत एवं अविकलित थे।

“मैं झुककर क्या देखते चलता हूँ?”

प्रश्न शुद्ध वैयक्तिक था। मैं भी अतः तक सयमित हो चुका था।

“यह तो आप ही जानें। अगर यही प्रश्न मैं आपसे कहूँ, तो क्या उत्तर दूँगे?”

“मेरे बच्चे, इसका उत्तर मैं तुम्हें क्या दूँ?”

इस धरती की महिमा को कोई कभी या सवा है क्या? कदम-कदम पर मैं तो इस भूमाता का स्तवगान करता चलता हूँ—भगवान ने भी जिसके धारणा-स्तव बोलेवर अपनी देह बनायी, उस भूमि को अपने प्रणाम पड़ाता चलता हूँ। महाकाल की बेला निकट है। उस समय यही स्नेहमयी भूमि मुझे आत्मरूप बना लेगी।”



अथर्व

भारत भूमि में जन्मा, भारतीय वनस्पति के मातृत्वपूर्ण सत्त्वों का यह प्रियदर्शी प्रतिनिधि [चित्र: तिब्बत में प्राप्त एक प्राचीन चित्र की सरल रेखानुकृति]

उनका एव-एव शब्द मुझे हृदय की एक ऐसी गहराई में डबो रहा था कि, मैं दिव्-बाल की समस्त चेतना ही भूल गया—इतना आत्मस्थ हो गया कि, मुझे स्मरण ही नहीं रहा, शब्दों की ध्वनि के साथ वे भी मेरी आँखों से अतर्पित हो चुके थे। धड़ा-विह्वल मन से मैं उछा और उनके चरणों-तले पड़ी मिट्टी माथे से लगा ली।

मिट्टी से हमें प्रेम भी होता है और पूजा भी। उसी से हम जीते हैं और उसी के लिए मर भी मिटते हैं। यह सब क्यों होता है? इसका उत्तर जानने की घायल हृदयें जरूरत नहीं समझीं। किन्तु उत्तर यह है। जैसी मिट्टी होगी, वैसे ही हम होंगे। वास्तव में, भूमि की भिन्नता से ही हममें भिन्नता है, नहीं तो समस्त पृथ्वी की मानव-जाति एक ही रूप होनी।

जितनी मिट्टी मैंने चरणरज के रूप में शिरोधार्य की थी, यदि उसकी भाषा मेरी समझ में आ सक्ती, तो यह अपनी कहानी यों कहती— 'बेचल तुम्हारे दृष्ट-रस एव आहार-प्रकार को ही नहीं, तुम्हारी भाषनाओं को भी मैंने सवारा है। तुम्हें सोचने की शक्ति भी मुझसे प्राप्त हुई। सरहद्दी पटान को लम्प्य-तटन मैंने बनाया और नैपायी को टिना। प्रताप को प्रण-शीर्ष की घुट्टी मैंने पिलायी थी। शिवाजी को देश-भुक्ति का स्तनपान मैंने कराया था। 'घुट्टरन घल्ल रेनु तनुमदित' में श्रीकृष्ण के संकेत से मूरदास ने मेरी ही महिमा गायी है। दाही-मार्थ के लिए गांधी

नयनोत

को मैंने ही पैदा किया था। मैं अनतस्पा हूँ। अयोध्या में मैं राम हूँ। गोवुल में कृष्ण हूँ। हस्तिनापुर में धर्मराज हूँ। बंगाली में बुद्ध हूँ। अवधिका में बालिदास हूँ। दक्षिण में शंकराचार्य हूँ। पानी में गुलामी हूँ। बंगाल में रवीन्द्र हूँ—पग-पग पर मेरे सह्य-सहस रूप हैं।"

आज के भू-वैज्ञानिकों ने भूमि की इन भाषा को अपने ढंग से समझा है। अमेरिका के भू-वैज्ञानिक डा. चार्ल्स बैलान्ग अमरीकी गृह-युद्ध का कारण 'भूमि' को ही मानते हैं। उत्तर अमेरिका की भूरी मिट्टीवाली जन-स्वाधी, जहाँ जाबर-साल-भीली होना आरम्भ करती है, वही उत्तर और दक्षिण की वास्त-विष सीमा है। इन दो भूमियों में सदैव सघर्ष एक स्पर्धा चली है। आज भी आप इनमें यहाँ देख लीजिये। अश्वहम लिबन को उत्तरी भूमि के खिलाफ दक्षिणी भाग से ही संनिव मिले थे।

हमारे पञ्जाब की तरह न्यू-इंग्लैंड (अमे-रिका) की भूमि पर सघ-युद्ध पैदा किया जा सकता है। वहाँ के निवासी स्वय-सम्पूर्ण हैं। विनोयज्ञो का मत है कि, सम्पूर्णता में ही अनुदार भावना पैदा होती है। यही कारण है, वहाँ के लोग भी भारत के पञ्जाबियों की भाँति बाकी महिष्णु नहीं हैं। इससे विपरीत प्रेयरीज के बंदानों में बेचल गेहूँ की ही पगल हो जाती है। वहाँ के विगत मह-कारी भावना को अधिक प्रथय देने है। नदें, तो नर भी क्या? गृहकारी-आदीन को जीवन रगने के लिए सघ-युद्ध होना



दाते

[इंग्लैंड की भूमि सदैव ही कला
मेरणा का अलङ्कार हो रही है।
शुद्ध ईसाई धर्म इस प्रपञ्च उसके
स्वभाव के अनुकूल नहीं रहे। अमर
काव्य 'दिव्यारन कामेजी' का प्रचेता
दाते इसी भूमि का शुक्रान्त है।]

आवश्यक है। सभ्यता राजनीतिक चेतना
के बिना असम्भव है। यही कारण है कि,
वहाँ वामपक्षी आंदोलन अधिक सफल
होते हैं। नेत्रास्क में ही जार्ज नारिस पैदा
हो सकता है, जिसे जनता 'जनार्दन' से भी
ऊपर दिखायी दी और कोई आश्चर्य की
बात नहीं, यदि महान् रूसी नाटिका जनक
लेनिन भी वहाँ की आगार भूमि उल्लिपा-
नोव्स्का में पैदा हुआ व माव्याज्जुग सिर्फ
चावल की अन्नपूर्णा भूमि यालू घाटी में।

कुछ भूमि वैज्ञानिकों का तो यहाँ तक
कहना है कि, वन-मरम्परा वधवा कुडली
मिलान के पहले भावी वर-वधू के प्राता
या नवरो की मिट्टी का परीक्षण कर

लीजिये। मिट्टी-से मिट्टी न मिली, तो
शेष सारी शोष ताक में रखी रहेगी।

मिट्टी को हम बड़ अथवा मृत मानते
हैं—पूर्णतया अचल, स्पन्दहीन। परन्तु
सत्य इसके विपरीत है। पेंसिल की तोक
से जितनी मिट्टी उठ सकती है, उतन में
२ अरब कीटाणु होते हैं। पृथ्वी पर मानव
भी तो स्वयंभू इतन ही है। किन्तु इससे
भी महत्वपूर्ण है—मिट्टी में स्वयं चालित
प्रकृति के प्रयोग, जो इतन जटिल एवं विशाल
हैं कि, आज इस अणु युग में पहुँचकर
भी मानव अपनी अन्वेषणशालाओं में घँसे



विरमार्क

[और, जर्मनी की धरती !
इसे तो नीतरो ने 'प्रचंड
धटिरा' के नाम से सम्बोधित
किया है। इतिहास साक्षी
है, वह भूमि कितनी बार
इश्वरानुज्ञा नहीं बनी
है। विरमार्क इसी भूमि का
माओलिक निवासक था।]

प्रयोग नहीं कर सकता।

वैज्ञानिकों का मत है कि, भूगर्भ में प्रतिक्षण एक अरब में भी अधिक स्पन्दन एवं परिवर्तन हुआ करते हैं। इन प्रक्रियाओं को हम अपनी आँखों में नहीं देख सकते। एक छोटा-सा ही उदाहरण ले लीजिये। वर्षा, वायु में निहित कार्बन-डाइ-आक्साइड को तेजाब में परिवर्तित कर देती है, जिससे विद्यालये चट्टानें पीले-धीरे गलती जाती हैं और मिट्टी बनती जाती है। पेड़-पौधे पत्थर का कार्य करते हैं। जहाँ ये भूगर्भ में जीवन-मृत्यु खींच कर अपने अंग-प्रत्यंगों का निर्माण करते हैं, वहाँ ये मृत होने पर अपनी पत्तियों-द्वारा मिट्टी को उपजाऊ भी बना देने हैं। प्रकृति में विनिमय का सिद्धांत कितने आश्चर्यजनक रूप में चरितार्थ होता है। प्रचरित के मैदानों और दोभाग की मिट्टी की उत्पत्ति-शक्ति इसीलिए अधिक है कि, वहाँ हजारों वर्षों में घास और छोटे-छोटे पौधे मरने आ रहे हैं।

१७-वीं शताब्दी में हाउंड के एक वैज्ञानिक डा. जॉनसन हेन्समैट ने मिट्टी दिया कि, एक पाँपा आने पाँच वर्ष के जीवन-काल में केवल दो औंस भू-मृत्त अपने जीने के लिए खर्च करता है। लगभग एक शताब्दी-याद जर्मनी के बाव गिब्स ने इसी अन्वेषण को आगे बढ़ाकर यह मिट्टी दिया कि, मनुष्य जहाँ पेड़, पौधे, माछा, इत्यादि पैदा कर घनी की उर्वरा-शक्ति को नष्ट करता है, वहाँ वह उसमें भाद केर उमकी क्षतिपूर्ति भी करना पड़ता

है। परन्तु जब वह ईन्धन की तराई में अनुसंधान करते-करते पहुँचा, तो उसे अपने बागजों अन्वेषण मलत मालूम पड़े, क्योंकि बिना साद के ही वहाँ फसले होनी आ रही हैं। उसने हिमाचल में तो रोमन साम्राज्य के अंत होते ही इस तराई को बर हो जाना चाहिए था। ऐसा क्यों नहीं हुआ? इसका कारण वह मोच नहीं सका।

अखिर, एक शताब्दी-परवान् उत्सवारण को न्त के भू-विशेषज्ञ डोकुमोन् ने बताया। डोकुमोन् ने अपना अनुमान बलम में नहीं, फावड़े में दिया। भूमि का एक-एक स्तर हटाते हुए वह चट्टानों तक पहुँचा, जहाँ प्रकृति की रसायनशास्त्र में अनवरत प्रयोग हो रहे थे—बिना किसी वैज्ञानिक ग्राह्यता के। उसने देखा कि, मानव-युग के समान ही मिट्टी के स्तर भी जन्म लेते और मरने लग रहे हैं। ये चट्टानें बाबा आदम के समान अनेक प्रकार की मिट्टियों के बम तैयार करती जा रही हैं। परीक्षण के बाद उसे पता पड़ा कि, यूरोप और भारत के गेहूँवाले क्षेत्रों की मिट्टी करीब-करीब एक ही है। यद्यपि ये अनुमान १८७० में ही पूर्ण हो चुके थे, फिर भी भाषा की दोवारों को अच्छर के अन्य देशों तक ग पहुँच गये। विद्वानों द्वारा ज्ञान योगवी गरी में आकर हुआ। भूमि-विज्ञान या मिट्टी-विज्ञान की नींव तभी में पड़ी। आज तो १०,००० प्रकार की मिट्टी का अन्वेषण पूरा हो चुका है, जिन्हें ५० बुद्धों या मनुष्यों में विभक्त कर दिया गया है!

ब्रह्मपुत्र आसाम परबारी

तिब्बत की एक जनश्रुति के अनुसार ब्रह्मपुत्र नदी जगदम्बा भगवती दुर्गा का अवतार है। इस पूर्वांचल पर जगदम्बा एक बार नदी प्रसन्न हुई और वहाँ के निवासियों की वर-याचना के अनुसार यही नदी-रूप में प्रतिष्ठित हो गयी। प्रस्तुत लेख में ब्रह्मपुत्र के भौगोलिक व्यक्तित्व पर विशेष प्रकाश डालने का प्रयत्न किया गया है।

★

गत वर्ष की भाँति इस वर्षा में भी पूरे आसाम प्रांत में हाहाकार मचा हुआ है। ब्रह्मपुत्र की बाढ़ ने पिछले दो वर्षों में आसाम प्रांत को जितनी क्षति पहुँचायी, उतनी उसने इस पूरी शताब्दी में भी कभी शायद ही पहुँचायी हो।

पर यह सब होते हुए भी जवाहरलालजी ने इस बार फिर गोहाटी की एक सभा में भाषण करते हुए कहा है — "यह भारत देश ब्रह्मपुत्र की मंत्री का सदैव श्रेणी रहा है और रहेगा। इस बाढ़ के बावजूद ब्रह्मपुत्र नदी हमारे लिए प्रकृति का महान् वरदान है।" पंडितजी के उक्त कथन में विचित् मात्र भी अतिशयोक्ति नहीं है।

नदियों की भारत पर कुछ ऐसी कृपा रही है कि, हिमालय के उत्तरी ढाल का कुल पानी समेट कर वे अनन्त काल से भारत की भूमि को सींचती हैं। सिंधु, उसकी शाखाएँ तथा ब्रह्मपुत्र का उद्गम हिमालय के उत्तर में है। पर उनका प्रवाह भारतीय सीमा

में है और उनमें ब्रह्मपुत्र सबसे बड़ी है — १,८०० मील लम्बी, अर्थात् गया से २५० मील अधिक लम्बी।

आसाम में चावल, चाप, जूट, तेलहन आदि की जो भी खेती है अथवा आसाम में जो भी उपजाऊ भूमि है, वह सब ब्रह्मपुत्र की ही कृपा का फल है। यदि ब्रह्मपुत्र न होनी, तो आसाम भी बँसा ही ऊबड़-खाबड़ होता जैसा कि, तिब्बत अथवा भारत-वर्मा-सीमा का भाग। ब्रह्मपुत्र ने ही मिट्टी ला-लाकर उस पहाड़ी भाग में २४,२८३ वर्षा मील की वह उपजाऊ पट्टी बनायी है, जिसे 'आसाम की घाटी' कहते हैं और वही अपने जल से उक्त भाग का सिंचन करके उसमें लाख-बदार्थों का उत्पादन कराती है। इसीलिए यह नदी आसाम की 'प्राण-नयस्विनी' कही जाती है।

ब्रह्मपुत्र केवल सबसे बड़ी नदी ही नहीं है, उसकी कुछ अपनी अन्य विशेषताएँ भी हैं। यही एक ऐसी नदी है, जिसमें

४०० मील तक बड़ी विशिष्टी समुद्र-तट मे १०,००० फुट की ऊँचाई तक चली जाती है। इसकी दूसरी विशेषता इस नदी का भजुली द्वीप है—५६ मील लम्बा और १० मील चौड़ा। अच्छे मोटे पानी में इनका बड़ा द्वीप विरज में बड़ी भी नहीं है। और, इसकी तीसरी विशेषता है कि, धरतल इस नदी पर फुट ही नहीं बन सता है—जगा पर लघुभग आये दर्जन रेडवे के फुट है, निच पर चौप बन गया है, पर ब्रह्मपुत्र अभी तक पूर्ण स्वच्छद है। मैन्य-मरक्षण की दृष्टि में पिछली दोनों विशेषताएँ भारत की पूर्वी सीमा के लिए ब्रह्मपुत्र की मरमे मूल्यवान देन है।

यह नदी तिब्बत के दक्षिणी-पश्चिमी भाग के कुयी गाफरी नामक हिमाग्य के उत्तरतम शृङ्खला के एक 'स्नेमियर' में निकली है। लगभग ७०० मील यह नदी तिब्बत में बहती है, जिनमें लगभग १०० मील तो इसका बहाव हिमाग्य के समानांतर है। तिब्बत में इसका नाम 'सांगपो' है, जिसका अर्थ होता है—'पवित्र करनेवाली'। तिब्बत में ही हमने कई महापत्र नदियों भी आ मिली हैं, जिनमें सबसे प्रमुख एरा-माग्यो है, जो ब्रह्मपुत्र के सिंगले के पश्चिम में मिलती है। दूसरी प्रमुख महापत्र नदी है यशोचु, जो टेन्ग के इनकी चोटी और उगने वाली स्थान है। तिब्बत का पवित्रतम नगर ल्हासा इसी के तट पर बसा है। तीसरी महापत्र नदी है—ज्यांगचु, जिनके

तट पर जाल्मी का व्यापार-केंद्र तथा सिंगले नगर हैं, जो तामी लामा के बिहार से केवल आधा मील दूर है।

ल्हासा में लगभग ५० मील दक्षिण-पश्चिम की दूरी पर स्थित ले-नाग के निरट ब्रह्मपुत्र बड़ी शक्तिशाली के आने-जाने योग्य हो जाती है। ब्रह्मपुत्र को छोड़-कर ऐसी बड़ी नदी नहीं है, जहाँ इनकी ऊँचाई पर विशिष्टी चर गतनी हो।

ले-नाग-ज्याग नामक स्थान पर उगने वाला नामक एक नदी मिलती है, जो अपने मुहाने पर लगभग २ मील चौड़ी है। फिर आगे 'ए' नामक स्थान के निरट भी ब्रह्मपुत्र लगभग ६६० गज चौड़ी है। वहाँ आगानी में विशिष्टी चलायी जा मरती है। फिर जाल-नेटी (३१,७६० फुट) तथा नामबातरवा (२५,६४५ फुट) की चोटियों की श्रृंखला में होती हुई ब्रह्मपुत्र मदिया के निरट आगाम में प्रवेश करती है।

मगारकी मदिया के इतिहास में ब्रह्मपुत्र 'सहस्र नामवाली' नदी के रूप में प्रसिद्ध है। वाका काटेश्वर ने अपनी माथा-मुन्गल 'मगट्ठानो बानद' में ब्रह्मपुत्र के नामों का विस्तृत उल्लेख किया है— "... अपने प्राग्भिन्न अवस्था में ब्रह्मपुत्र गानपो, लिहाग, लोहित आदि नामों से विख्यात है। जहाँ वह गया में मिलती है, वहाँ उसका नाम 'समुता' है। प्रसिद्ध है कि, जब नृत्ती-राम मुदावन गये, तो उन्होंने इसमें कहा—"तुम्हो सम्मर तर नये, धनुष-याग लो हाय"—उसी प्रकार जब ब्रह्मपुत्र गया

से मिलने बड़ी, तो गंगा ने भी कहा होगा कि, यदि मुझसे मिलना हो, तो तुम्हें हमारी सही यमुना बनना पड़ेगा। आगे वह पचा नाम से विख्यात है और समुद्र में गिरने के समय उसका नाम मेघना हो जाता है।'

ब्रह्मपुत्र जन्म, 'ब्रह्मकुंड' का विवृत रूप है—कहा जाता है कि, परमुराम ने इसी स्थान पर एक वृत्त पत्त किया था, तभी से उस स्थल को 'ब्रह्मकुंड' कहते हैं।

सहायक नदियों ने इस विवरण से

ही स्पष्ट है कि, ब्रह्मपुत्र कितनी सबल नदी है और कितना पानी वह लाती होगी। विशेषज्ञों का कहना है कि, अपनी सहायक नदियों-समेत सिंध नदी प्रति सेकेंड अधिक से-अधिक ३,८०,००० घन

फुट पानी समुद्र में पहुँचाती है, पर यह ब्रह्मपुत्र की तुलना में नगण्य है। ब्रह्मपुत्र प्रति सेकेंड ५ लाख घन फुट पानी समुद्र में गिराती है—सिंध नदी से १ लाख २० हजार घन फुट प्रति सेकेंड अधिक।

ब्रह्मपुत्र बहुत दिनों तक बड़ी रहस्यमय नदी रही है और इससे सम्बन्ध में भूगोल-वेत्ताओं में तरह-तरह के विश्वास रहे हैं।

तटवर्ती आदिवासियों और पहाड़ी दुर्गम रास्ते के कारण इस नदी के उद्गम तक भूगोलवेत्ता बहुत दिनों तक पहुँच ही नहीं सके। काफी ज़सें तक भूगोलवेत्ताओं का यह अनुमान रहा है कि, ब्रह्मपुत्र इरावदी का दूसरा स्रोत है।

सबसे पहले १८८४ में ब्रिडुप नामक एक सर्वे-कर्ता ने मेमाकोचुंग नामक स्थान पर ब्रह्मपुत्र का 'सर्वे' किया। फिर १८८६ में नीडहर्म नामक एक यूरोपीय

डिहंग तक गया। फिर १९०४ में कैंप्टन सी जी. रोलिंग, कैंप्टन सी एच डी राय-डर, कैंप्टन एच नुड तथा लेफ्टिनेंट एक बली की टोली साम्यो तक गयी। इस टोली के किसी सदस्य को उसके आग



[ब्रह्मपुत्र पोखित भूखंड का मानचित्र]

जाने की हिम्मत ही नहीं पड़ती थी। लोगों का अनुमान था कि, आगे पहाड़ी क्षेत्र में भयंकर झरन होय। पर १९१३ में कैंप्टन एक एम बली तथा कैंप्टन एस टी मोर्चहेड की टोली कुछ आगे गयी और उसने अपनी यह रिपोर्ट दी कि, यद्यपि नदी की धारा उस क्षेत्र में तेज अवश्य है, पर एक भी झरना ३० फुट से अधिक ऊँचा नहीं है। फिर भी ब्रह्मपुत्र के उद्गम का लगभग

५० मील अनदेखा ही था। ब्रह्मपुत्र के उद्गम तक पहुँचने का थोड़ा कष्ट विगडम बाई नामक एक पाखी को प्राप्त है, जिन्होंने १९२४ में उस क्षेत्र की यात्रा की थी।

१९५० में जो भूकम्प आया, उसमें इस नदी में बड़े परिवर्तन आये। आसाम के लगभग २०० मील और ६० मीटर चौड़े सड़ में बहुत जगह पहाड़ टूट गये। आसाम के उत्तरी-पूर्वी भाग के ६,००० वर्ग मील के क्षेत्र में पहाड़ बहुत ही भयंकर रूप में टूटे। वेपगात्र के सबात्रव डा एम के धनजी का कहना है—“इस भूकम्प ने लगभग ६० अरब घन गज मृत्ति ही विसर्ज कर दी, जिसका पता यह हुआ कि, ब्रह्मपुत्र १० फुट और गहरी हो गयी तथा ब्रह्मपुत्र की घाटी भी १० फुट नीचे धँस गयी।”

इस भूकम्प के बाद पहाड़ों ने टूटने में ब्रह्मपुत्र की सहायक नदियों का भी अबाध हो गया। जिन विमान-मार्ग-

वेधकी ने इस क्षेत्र को देखा, उनका कहना है कि, एक स्थान पर टिंडिंग तटों के भाग में ४ मील लम्बी और १/४ मील चौड़ी एक ही चट्टान आ गिरी थी। इस चट्टान के गिरने के कारण ब्रह्मपुत्र की धारा न भी स्थान-परिवर्तन किया। चट्टान गिरने से पानी की धारा में तेजी आयी और उस समय ब्रह्मपुत्र का प्रवाह लगभग ५० मील प्रति घंटे था।

वस्तुतः इस भूकम्प का ही यह फल है कि, गत दो वर्षों में ब्रह्मपुत्र ने इतना विकट रूप धारण किया है।

ब्रह्मपुत्र प्रामाणिक इस सारे विवरण की दृष्टि में सरसर अरु आप जवाहरलालजी के शब्दों पर विचार कीजिये। ब्रह्मपुत्र बिराट शक्ति की शक्ति है। जहाँ छोटी नदियों पर बांध बांधने में अभूतपूर्व लाभ के स्वप्न गजों में जा रहे हैं, तब ब्रह्मपुत्र को नियंत्रण में करके क्या नहीं किया जा सकता!

★

एक ही पेड़ में मौसमी, नीबू और संतर

कान्हेगिया में जात्रिया के अर्द्ध-शीष्म वटिवर्धीय क्षेत्रों की मामूली और मक्का की कुपिमाताओं के बागों में मौसमी, नीबू और संतरों में लड़े हुए पेड़ देखे जा सकते हैं। ये मौसमी के पेड़ हैं, जिन पर नीबू और संतरों की कटमें लगी हुई हैं। इन पेड़ों में एक ही साथ मौसमी, नीबू और संतरों के फल लगा सकते हैं।

मौसमी के ऊपर नीबू और संतरों की कटमें लगाने में बड़े परिमाण में पत्तों की पगल पैदा होती है। कलम लगाने के दो-तीन साल के अंदर उनमें बड़े-बड़े और रसीले फल लगने लगते हैं। इस प्रकार के हर पेड़ में एक हजार से ऊपर फल तोड़े जा सकते हैं।

—मोबियन् ममाचारन

★

जब प्राणदीप धुंक ही गया था...

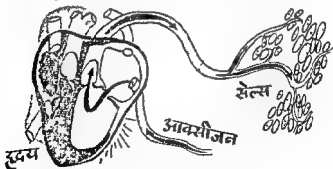
रोगों के विरुद्ध मानव-बुद्धि के उत्तरोत्तर विनय विभूषित अभिवान की एक महाविरूद्ध मजिल का इस लेख में विवरण है। इस 'सोवियत मेडिसिन' से साधार उद्धृत है।

★

ल्येनोव कुट्रपाशेवा नामक उस छोटी-सी बातूनी लड़की से मेरा परिचय उससे जीवन के सबसे महत्वपूर्ण दिन—आपरेसन से फौरन पहले—हुआ।

वह छोटी-सी बच्ची बहुत बीमार है। किसी भी दिन किसी भी घड़ी, उसकी मृत्यु हो सकती है। ल्येना चार वर्ष की है, पर उसका वजन १५ पाँड ही है—सिर्फ दस महीने के बच्चे के बराबर। उसने अभी तक चलना नहीं सीखा है और वह सहारे के बिना चारपाई से उतर भी नहीं सकती। पिछले कई वर्षों से उसका शरीर विकृत ही नहीं बड़ा है। और, इन सबका कारण उसका हृद पिंड है।

। भास पेन्थियो वा बना हुआ हमारा यह हृद पिंड अंदर से चार भागों में विभाजित है—दाहिना हृत्तवर्ण (आरि-बिल) तथा अषक-कोष्ठ (वेन्ट्रिकिल) तथा बाया हृत्तवर्ण तथा अषक-कोष्ठ। नसों में से हस्तेमाल किया हुआ खून, जिसमें कार्बन-डाइ-आक्साइड गैस मिली होती है दाहिन हृत्तवर्ण में बहकर जाता है। जब हृद-पिंड सिकुड़ता है, तब यह रक्त बहकर दाहिन अषक-कोष्ठ में पहुँच जाता है, जहाँ से यह चौड़ी फुफ्फुसीय धमनी के रास्ते फफुडों में पहुँचता है। यहाँ रक्त में से कार्बन डाइ-आक्साइड फौरन श्वास के साथ शरीर के बाहर निकल जाती है और श्वास के साथ,



[आक्सीजन ग्रहण करनेवाली शिराएँ, रक्तवाहिनी नालियाँ और हृदय]

जो आक्सीजन हम शरीर के भीतर सींचते हैं, वह शुद्ध रक्त में मिल जाती है। हृद-पिंड के फंखे पर बायें हृत्पुष्प में आक्सीजन-युक्त रक्त पहुँचता है। जब हृद-पिंड द्वारा सिबुडता है, तब यह रक्त दबाव के कारण बायें शोष-शोष में पहुँच जाता है, जहाँ से वह स्वयं अपने दबाव में, धमनियों के रास्ते, पूरे शरीर में मचारित होता है और वायुमण्डल का नितात वायुस्थान आक्सीजन प्रचुर मात्रा में प्रदान करता है।

जब डाक्टरों ने स्पेना के हृद-पिंड की जाँच की, तो उन्होंने वही विलुप्त ही दूसरा नमूना देखा।

एक प्रकृत स्वस्थ हृद-पिंड में दाहिने और बायें शोष-शोषों के बीच एक आवड परदा होता है। स्पेना के उदाहरण में इस परदे में एक दरार थी। एक स्वस्थ व्यक्ति की पुष्पुमीय धमनी इनकी चौड़ी होती है कि, उसमें का उँल्लियों का सक्ता है। स्पेना के शरीर में पुष्पुमीय धमनी चिन्न थी और उसमें रक्त के निबलने के लिए बँका का छँडा-सा छँड था। इसके फलस्वरूप शरीर के रक्त-मचार में समरर अनरोध था और पुष्पुमीय धमनी में जाने के बजाय, नमो का बहूत-ना मून परदे की दरार के रास्ते बायें शोष-शोष में पहुँच जाता था। इस प्रकार फँकड़ों में होकर गुजरे बिना आक्सीजन-रहित रक्त बहूत धमनी में गे होकर पूरे शरीर में फँड

नदनीत

जाता था। और, केवल रक्त की वही अल्प मात्रा, जो मरुचित पुष्पुमीय धमनी के उग छाट-में छँड में से निबल कर फँकड़ों में होती हुई जाती थी, शरीर में प्राणों का बनाये लगती थी।

फक्त हृद-पिंड की अपनी क्षमता से नाफी अधिक् रक्तार गे काम करना पड़ता था। उगें प्रति मिनट १४० बार सिबुडना पड़ता था। रक्त की रक्ता बढल गयो थी। साल रक्ताणुओं (आक्सीजन-वाहकों) की मात्रा घड गयो थी और रक्त गाढा होकर जम-सा गया था। इसके कारण त्वचा का रग कुछ नीलवर्ण हो गया था। हृद-पिंड के लिए इस गाढे रक्त की मचारित करना कितना कठिन था?

पिछले वर्ष जनवरी में स्पेना बुद्धमा-शेरा को 'लिनमशाद सजिवल कौनिय' में भरती कराया गया, जिनके प्रधान प्रोफेसर आन्ड्रेवेविच पुद्रियागोव हैं। डाक्टरों ने यह फैसला कर लिया कि, कोई भी दवा या इलाज हृद-पिंड को दुबारा स्वस्थ नहीं कर सकता और न रक्त-मचार की दिशा ही बदल सकता है—केवल आरोग्य के द्वारा ही यह सम्भव है। सना है।

धर्मी के प्राप्ति बचाने के लिए एक नया मार्ग मान्यता आवश्यक था। ऐसा करने के लिए पुष्पुमीय धमनी तथा बहूत धमनी को दीवारों को एक-दूगरे में सिग्नर उनमें एक दरार बनाने

जी जरूरत थी। उस दशा में रक्त दबाव के कारण बृहत् धमनी में से फुफ्फुसीय धमनी में बहना (फुफ्फुसीय धमनी में दबाव बृहत् धमनी की अपेक्षा कम होता है) और इस प्रकार अतन्त वह फफुड़ों में पहुँचना और वहाँ उसमें आक्सीजन मिलेगी। परन्तु वृद्धों का शरीर, जो आक्सीजन के अभाव के कारण शिथिल हो गया था इतना लम्बे और जटिल आपरेशन को सहन नहीं कर सकता था। बहोशी की दवा के प्रभाव में वक्षस्थल को चीर देने के कारण लडकी आघे घटे में मर जा सकती थी।

अतः जय एव महीना गुजर गया तब डाक्टर किरा पल्लिवोवना शियोववा को ल्युना की माँ से कहना पड़ा—

“आप इसे घर ले जाइये। हम लोग कुछ नहीं कर सकते।”

अतः ल्युना फिर घर ले आयी गयी। उसने माता पिता में उसने जीवन की अवधि को बढ़ाने का प्रयत्न किया— कुछ महीनों कुछ सप्ताहों या कुछ दिनों के लिए ही सही।...

एक वर्ष तक वह आक्सीजन के यंत्र पर जिंदा रही।

प्रायः इसी समय क्लीनिक की वैज्ञानिक प्रयोगशाला में शोध और प्रयोग होने लग और दिसम्बर के

आरम्भ में ही प्रोफेसर ब्रुमियानोव ने पहली बार कृत्रिम हृत् से शरीर का तापमान घटाकर (हाइपोथर्मिया) हृद-पिंड का आपरेशन किया।

उस रोगी की उम्र तीन वर्ष थी और उसका नाम लुदा मेदवेदेवा था। वह विलकुल बगी होकर क्लीनिक से घर गयी। उसने चारों में एक और भी दिल-वस्था बात मने सुनी थी। तीन वर्ष की उम्र तक लुदा न तो बोल सकती थी और न चल सकती थी। आपरेशन के तीन सप्ताह बाद वह बोलने और भली प्रकार भागने दौड़ने लगी।

दूसरा आपरेशन १५-वर्षीया बाल्या स्तेपानोवा पर किया गया। वह भी अब विलकुल स्वस्थ अनुभव करती है।

तीसरी ल्युना कुदयाशवा थी, जिसे दुबारा क्लीनिक में ले जाया गया। यह आपरेशन शल्य चिकित्सा के इतिहास की बड़ी महत्वपूर्ण घटना है। इसका पूरा व्योरा यहाँ दिया जाता है—

..... ल्युना को बहोशी की दवा दी



[वैज्ञानिकों ने मुर्गी का हृदय लेकर अपनी प्रयोगशाला में २० वर्षों तक उसे जीवित रखा और, हवन वर्षों तक उसकी चककन पूर्ववत् बनी ही रही।]

जा रही हैं। यह काम बड़ी सावधानी से किया जा रहा है—आपरेशन के कमरे में नहीं, बल्कि अस्पताल के बार्ड में। पहले फेफड़ों में शुद्ध आक्सीजन पहुँचायी जाती है और इस जीवन-दायिनी गैस की प्रचुरता के कारण बच्ची पर नशा-सा छा जाता है और उसे नींद-सी आने लगती है। इसके बाद आक्सीजन में धीरे-धीरे ईश्वर मिलाया जाता है। ल्येना गहरी नींद में सो जाती हैं।

१०॥ बच्चे नब्ज प्रति मिनट की रफ्तार से चल रही है और श्वास की गति ३६ है। हाइपोथर्मिया का प्रभाव होने लगा है। बड़ी सावधानी से बच्ची को पानी के एक होज में उतारा जाता है, जिसकी सतह पर बर्फ के छोटे-छोटे टुकड़े तैर रहे हैं। दो थर्मामीटर इस्तेमाल किये जा रहे हैं—एक पानी का तापमान देखने के लिए और दूसरा ल्येना के शरीर का।

प्रोफेसर लिथोव बिना बिगो उतावली के अपने हाथ धोते हैं। वल उन्होंने स्वयं एक-एक औजार और एक-एक गुई करने के तमाम चीजें अमा की थी, जिनकी इस आपरेशन के समय जरूरत पड़ सकती थी।

११॥ बच्चे पानी का तापमान शून्य में छ डिग्री ऊपर है और शरीर का तापमान २०.५ डिग्री ऊपर।

ल्येना को होज में से निकाल लिया जाता है। वह निश्चित सो रही है।

नयनोत्त

पर उसकी नब्ज की रफ्तार १४० के घटकर ९८ हो गयी है। श्वास की गति और भी धीमी हो गयी है। इसका मतलब है, हर चीज प्रवृत्त रूप में चल रही है। में बड़ी सावधानी से उनसे नन्हें-मे मापें को अपने हाथ में धूना हूँ। वह असाधारण रूप में ठंडा है।

११॥ बच्चे शरीर का तापमान अपने-आप घटकर शून्य में २६ डिग्री ऊपर रह गया है। नब्ज और श्वास की गति और भी धीमी हो गयी है। बूद-बूद करने एव पतली-मी नली में से रक्त एक नस में पहुँच रहा है। रक्त-वाहिनियों में प्रवृत्त दबाव बनाये रखने के लिए यह नितात आवश्यक है। एक डाक्टर बड़ी चौकसी के साथ बच्ची की श्वास-गति को नियंत्रित किये हुए है। एक विशेष यंत्र की सहायता से वह उसे घटाता-बढ़ाता भी जाता है। एक दूसरा यंत्र—एलेक्ट्रोकार्डियोग्राफ—हृद-पिंड की क्रिया पर नियंत्रण रखता है। एक छोटे-मे परदे पर हम स्पष्ट देखते हैं कि, ल्येना के हृद-पिंड में रक्त किस प्रकार पहुँच रहा है।

११ बजकर ३७ मिनट—सारी तैयारियाँ पूरी हो चुकी हैं। सॉईं लियानो-दोबिन आपरेशन आरम्भ करते हैं।

११ बजकर ४५ मिनट—तापमान में अष्टा डिग्री की कमी और हो गयी है। नब्ज की गति घटकर ५५ प्रति मिनट और श्वास की गति १० प्रति मिनट रह गयी है। अब श्वास का स्वर सुनायी

‘क्या ही प्यारी सुगन्ध है,
फूल जैसी भीनी-भीनी!’

मीना शोरी

कहती हैं

‘मैं लक्स टॉयलेट साबुन की नयी
शहानी सुगन्ध पर मुग्ध हूँ।’



आप भी वही कीजिए जो कि चिन्तारिक्तार्थ
और दुनियाभर की सुन्दर महिलाएँ करती
हैं—शुद्ध व सज्जद लक्स टॉयलेट साबुन
का इस्तेमाल कीजिए। इसके विपुन और
छागिण भाग से आक्का रूप-रंग लिले
फूल की तरह निकल आवना।

आपने दैनिक सौन्दर्य-रत्नान के लिए बड़े
आकार की बूटी का इस्तेमाल कीजिए।



लक्स

टॉयलेट साबुन

चिन्तारिक्तार्थों का सौन्दर्य साधन

भारत में बना हुआ

L.T.S. 458-50 H1

“सुंदरता का यह साबुन निराला है”
नया! भुगंधित!

ब्रीज़



“इस में ऐक्टमर मिला है”


* शरीर-गंध को
रोकता है

आप को तरोताजा
रखता है!

* जिल्द के कीटाणुओं
का नाशक

जिल्द को तंदुरुस्त
रखता है!

ऐक्टमर (बायविमॉल) मोनोफोस्फोरेट का महान नया
'डिस्टिर्मोस्टेंट' है—यह एक ऐसा स्नायनिक पदार्थ
है जिस की वीर्याणुनाशक शक्ति अन्य सोपों की है
और साथ ही इस की बिना नरम
और शक्तिशालक है।

केवल  आने

स्थानीय डेक्स प्रतिरिक्त

ब्रीज़-ऐक्टमर युक्त सौंदर्य साबुन

ED 1-50 211

इतिहासिक क० लि० लखनऊ के लि० में बनाया गया है।



नहीं देता, वक्षोदर-मध्यस्थ पेशी के क्षीण स्पन्दन से उसका नेचल अनुमान लगाया जा सकता है।

प्रोपेसोर हृद्-पिंड के निवट आपरेशन कर रहे हैं। मुझे दिखायी दे रहा है कि, हृद् पिंड बंधे सिबुटता है, वैसे वह उनबे हाथ से छू जाता है।

तीसरे पहर, २ बजकर ५ मिनट-रक्त के लिए नया मार्ग खोल दिया गया है। वस, अब नेचल जल्म में टाबे लगाना बाकी रह गया है।

आपरेशन सफल हो गया है। बिजली के हीटर जल्दी से स्पेना के शरीर का तापमान बढ़ाकर प्रवृत्त कर देते हैं। थर्मामीटर में पारा ३६.८ डिग्री पर है। स्पेना न अपनी आँखें खोल दी है।

वह आक्सीजन के तम्बू के अंदर

लेटी थी। उसने फफड़े ताजी हवा अंदर खींच रहे थे और उगवा पुनर्जीकृत हृद् पिंड नयी शक्ति के साथ उसने शरीर में रक्त संचालित कर रहा था, जिसमें अब आक्सीजन घुली हुई थी।

मैंने स्पेना से पूछा कि, उसका जी बंसा है अब ?

“बहुत दर्द हो रहा है”—उत्तर मिला। निःसंदेह दर्द होता है। सचमुच बहुत दर्द होता है। लेकिन कुछ दिन बीतने पर दर्द खत्म हो जायेगा। और, तब स्पेना उठकर चलने लगेगी—नहीं, भागने-दौड़ने लगेगी। कुछ वर्षों बाद वह स्कूल जायेगी और भूल जायेगी कि, कभी उसके हृद् पिंड में पीड़ा होती थी।

स्पेनोथ बुद्धिमानोवा, तुम्हारा जीवन सुखी हो!

★

व्यापारी सूझ

प्रख्यात वैज्ञानिक रोमैई चापलिंगिन को एक बार बार-बार की ओर से महिलाओं के हाई स्कूल की इमारत बनवाने की इजाजत मिल गयी। उनके पास इमारत बनवाने के लिए एक अधेला भी न था, किन्तु वे निर-त्साहित न हुए। स्कूल के प्रिंसिपल की हैसियत से उन्होंने इमारत के लिए दी गयी जमीन बैंक की गिरवी रखकर इमारत बनवानी शुरू कर दी, पर इस प्रकार प्राप्त धन से सिर्फ दो मंजिले ही बन पायी। अब चापलिंगिन ने इस अधवनी इमारत को गिरवी रखकर पूरी इमारत बनवाने लायक धन प्राप्त कर लिया। इमारत बन जाने के बाद उसकी सजावट का प्रबन्ध था और वैज्ञानिक चापलिंगिन ने इसके लिए भी धन की व्यवस्था कर ली—उन्होंने गिरवी के दस्तावेजों को ही इस बार गिरवी रख दिया।

★

—‘बैन यू टू दिस’ से



अमेरिकी राजनीति में प्रकाश

मुझे अमेरिका में बहुत परिवर्तन हो रहे हैं। 'अधिकारों ने भाँखें खोलीं' शीर्षक एक लेख में सरदार पणिकर ने अमेरिका के इस चतुर्दिक चेतन्य के बारे में लिखा है—“... भारी काल गति की प्रत्येक पदचाल पर अमेरिका के नवजागरण चेतन्य की छाप रहेगी। अमेरिका की मानव के अन्तर्प्रदेश की अवस्था करके कोई वाणी विश्व पंचायत में अपना ध्येय सिद्ध नहीं कर पायेगी।” यही हम इसी संबोधित अमेरिका महाद्वीप के विषय में चैरटर वाउन्स (भूतपूर्व भारत-विषय अमेरिकी राजदूत) का रोचक गूस्वानन दे रहे हैं।

*

हाल ही में मैंने अपनी पत्नी के साथ अमेरिका की यात्रा की है। अपनी इस यात्रा के दौरान मैंने कई देशों से गुजरने का मौका मिला। हर देश ने यूरोपीय व अमेरिकी अधिकारियों ने इसे स्वीकार दिया कि, युद्ध से पूर्व और अब की स्थिति में काफी परिवर्तन हो गये हैं। उनकी जिम्मेदारियों का रूप भी बदल गया है। युद्ध से पूर्व उनकी जिम्मेदारी थी, कर बसूल करना और अपने मुख्यस्थित वासन के जरिये अमन-चैन बनाये रखना, पर अब उन्हें अधिक अनान्य उपग्राना, पाठ-शागर्ष खोदना, कुर्र सुदवाना, बीमारियों से सुरक्षा, टी गी मक्खियों का विनाश और गोंब के सामान को वाजार तब भेजने के लिए मजबूत सबके धनवाना—आदि गुपार-कार्यों की ओर अपना सारा ध्यान—अपनी सारी शक्ति व्यय करनी पड़ती है। 'अपराधरम्य अमेरिका' में होनेवाले महत्वपूर्ण परिवर्तनों का इसमें अधिक ठोस प्रमाण

और क्या हा सबता है ?

उसकी इस नयी जाग्रति का राजनीतिक महत्व भी कुछ कम नहीं है। निरवध ही, वह दिन अधिक दूर नहीं है, जब अमेरिका के निवासी नागरिकता के समान व सम्पूर्ण अधिकारों की ज़रदार माँग करेंगे। आज ही हर जगह अमेरिकी यह प्रश्न पूछने लगे हैं कि, जब अमेरिका की बहुमूल्य निधियों के बल पर यूरोप-निवासी दिनों दिन सन्-प्रता की ओर अग्रसर हो रहे हैं, तो स्वयं अमेरिका-निवासी ही दारिद्र्य की छाया में घुट-घुट कर जीवित रहने के लिए क्यों बाध्य किये जा रहे हैं ? जय ईसाई-धर्म मानव-मान को भाई-भाई बताता है, तो उगी धर्म के उपागम अधिकार यूरोपीय और अमेरिकी, आधिक व राजनीतिक मामलों में अमेरिका-वासियों से भेद-भाव क्यों रखते हैं ?

अमेरिकावालों ने उनकी विशेष रूप से निम्नलिखित हैं—“आप लोग सदा से ‘उपनिवेश-

वाद' के विरोधी रहे हैं, फिर भी आपकी सरकार अफ्रीकी स्वतन्त्रता की समस्या पर मौन क्यों है? आप लोग राष्ट्रसंघ में यह प्रश्न क्यों नहीं लाते? उनके इन प्रश्नों को उपेक्षित नहीं किया जा सकता, किन्तु इनका उत्तर देना भी इतना आसान नहीं है।

अफ्रीका-निवासी इस बात को स्वीकार करते हैं कि, यूरोप की सहायता के अभाव में वे प्रगति-मय पर अग्रसर नहीं हो सकते। किन्तु वे इस सत्य से भी अपरिचित नहीं हैं कि, यूरोप को अफ्रीका के सहयोग की उतनी ही आवश्यकता है। और, उनकी माँग उचित ही है कि, यूरोपवासी इसे मुक्त कठ से स्वीकार करे। यूरोप-अफ्रीका का परस्पर सहयोग नितात आवश्यक है।

उत्तर और दक्षिण अफ्रीका की समस्याएँ—जो एक-दूसरे से बहुत दूर और भिन्न-सी हैं—आज बहुत ही जटिल और विस्फोटक हैं। उत्तरी फॉच अफ्रीका की स्थिति—जहाँ २५,००,००० यूरोपीय तथा २,२५,००,००० अरब-बर्बर निवासी बसते हैं—बहुत ही अशा-

तिपूर्ण है। दक्षिण अफ्रीकी संघ में उतनी ही संख्या में रहनेवाले यूरोपियों की स्थिति भी आज अफ्रीकियों व एशियावालों के बीच चिंता का विषय बन बैठी है।

लाइबेरिया, एबिसीनिया, मिस्र तथा लीबिया के स्वतन्त्र राज्यों में कई प्रकार की जातियाँ बसती हैं। अन्य अशांत क्षेत्रों की अपेक्षा यहाँ की स्थिति कुछ भिन्न है। पर महाँ भी कई समस्याएँ मौजूद हैं। तीन भूतपूर्व ब्रिटिश उपनिवेश, सूडान, गोल्ड कोस्ट व नाइजीरिया स्वतन्त्रता प्राप्त करने के लिए बेचैन हो उठे हैं। शीघ्र ही इनकी समस्याएँ भी उपर्युक्त स्वतन्त्र राज्यों से संयुक्त हो जाएँगी। सोमालीलैंड पर इटली की ट्रस्टीशिप की अवधि समाप्त होने में अभी ५० वर्षों की देरी है। पश्चिमी फॉच अफ्रीका, मध्य अफ्रीका तथा बर्जिनियन राज्यों के उपनिवेश अमेरिका से बड़े हैं, परन्तु उनकी राजनीतिक प्रगति बहुत ही कम हो पायी है। पूर्वी तट पर मोजम्बिक तथा पश्चिम व एंगोला पर आधिपत्य जमाये हुए पुर्तगालियों का कथन है कि, वे सबसे पहले यहाँ आये थे और सबसे अंत में ही अफ्रीका छोड़ेंगे।

दक्षिण रोडेसिया का केन्द्रीय फंडरेशन,

[मध्य, भूल और शोषण से पीड़ित अफ्रीका के निवासियों को श्वेतान्त्रिकवादियों के अत्याचारों से जंगलों में भी शरण नहीं मिलता।]



उत्तरी रोडेसिया, न्यासालैंड, टेंग्यानिना, दूगाहा, येन्या तथा जजीबार की समस्याएँ भी धीरे-धीरे उभर होनी जा रही हैं। दक्षिण रोडेसिया में यूरोप-वासियों और अफ्रीका-वासियों के बीच सदैव झगडा होता है।

अफ्रीका में ईसाई-धर्म का काफी प्रचार हुआ है। यहाँ की १/८ जनमस्या ईसाई है और महारा से दक्षिण के लगभग हर अफ्रीकी नैना ने क्रिश्चियन स्कूल में शिक्षा प्राप्त की है। क्रिश्चियन मिशनरियों ने ही अफ्रीका में सबसे पहले जाति पैदा की और लोगों को गुलामों के व्यापार, बीमारी और अज्ञान के प्रति सचेत किया। उन्होंने ही व्यक्तिगत स्वतंत्रता, आत्म-सम्मान तथा स्वराज्य की भावना अफ्रीका-वासियों में जाग्रत की।

किन्तु इन जाति की अभी कई कठिनाइयों का सामना करना है। बहुत छोटे अफ्रीका-वासियों को ही सतुलित भाजन प्राप्त हो पाता है। अधियों ने छुटकारा पा लेनेवाले अफ्रीकियों की सख्या भी नगण्य-भी है। फिर अफ्रीका-वासियों को उनकी प्राचीन परम्पराओं में अलग कर, शहर के सन्निय जीवन व नौतरी के अनुकूल बनाना बड़ा ही कठिन है। अपने जातीय भय, रीति-रिवाज, धर्म आदि में अविश्वास पैदा होने पर अफ्रीकी उनमें अलग तो हो जाते हैं, पर साथ ही, उनमें एक निराशा और जीवन के प्रति आसक्ति भी घर कर लेनी है। यूरोप निवासी इन्हीं बातों का महारा लेकर अपने तर्कों की पुष्टि करने

हैं कि, अफ्रीकियों में सामन-भार संभालने की क्षमता नहीं है। पर वे यह सम्भवतः देखकर भी नहीं देखते कि, जिन-जिन क्षेत्रों में अफ्रीकियों को कार्य करने का मौका दिया गया है, उनमें वे अपनी योग्यता सिद्ध करने में असफल नहीं रहे हैं।

हो, पश्चिमी ब्रिटिश अफ्रीका में निरन्तर ही यूरोपवासियों और अफ्रीकियों में ऐसी कोई प्रतिस्पर्धा नहीं है। पहले यह प्रदेश बोमारिया के कारण 'श्वेत लोगों की बर्' कहलाता था। यूरोप-वासी यहाँ गुलामों और माल के व्यापार के उद्देश्य से जाते थे। प्रारम्भ में कुछ असें तक रहने के बाद वे गुन अपने देश लौट जाते थे। किन्तु आज यहाँ १०,००० ब्रिटिश निवास करते हैं और यहाँ के ३,८०,००,००० अफ्रीकियों में उनके सम्बन्ध बहुत ही मंशोपूर्ण हैं।

यहाँ के ब्रिटिश अधिकारी अपने गुमोय्य शासन तथा बटिन परिस्थितियों का सामना करने की क्षमता के बल पर पश्चिमी अफ्रीका के उपनिवेशों की दिनों-दिन प्रगति-मय पर आये बढा रहे हैं। गोल्डकोस्ट और नाइजीरिया में सभी राजकीय विभागों के प्रमुख अधिकारी अफ्रीकी ही हैं। गोल्डकोस्ट के प्रधान मंत्री वरामे शूमा ने अमेरिका के लिन्कन विश्वविद्यालय में शिक्षा प्राप्त की है और अमरीकी श्रमिक-मण के सदस्य भी रह चुके हैं। उनका यह दृढ़ विश्वास है कि, दो वर्षों में ही उनका देश स्वतंत्रता प्राप्त कर लेगा। नाइजीरिया भी आन्तरिक प्रयत्नों के बावजूद स्वतंत्रता

की ओर अग्रसर हो रहा है।

ब्रिटिश पूर्वोत्तरी भाग में अच्छे जवाबों के कारण काफी यूरोप-वासी बस गये हैं। उन्होंने यहाँ अपना व्यापार भी जमा रखा है। इन यूरोपवासियों में गिनती के व्यापारियों को छोड़कर सोपे अपने कार्मिक और राजनीतिक महत्वपूर्ण स्थान को किसी हालत में नहीं छोड़ना चाहते। दक्षिण रोडेशिया की पॉपुलेशन एंड अर्थ्स बहुत ही उर्वर जमीन यहाँ के सिर्फ २५ ०००

यूरोपियों की सम्पत्ति है और इस भूभाग का केवल दस प्रतिशत हिस्सा ही रोली के काम आता है। यो यहाँ के साहसकार अफ्रीकियों के पास लगभग तीन करोड़ ६० लाख एकर जमीन है, किन्तु इस भूभाग का अधिकांश रेतीला और बजर है। अफ्रीकी किसान यूरोपियों की इस नीति से भीतर-ही-भीतर काफी क्षुब्ध हैं और उनका असंतोष बढ़ता ही जा रहा है।

उत्तरी रोडेशिया में ताम्बे की सदाबहार काम करनेवाला एक अफ्रीकी मजदूर किसी यूरोपीय मजदूर की तुलना में उससे थोड़ा बड़ा सिर्फ बीसवें हिस्सा पाता है। बेनिया और दक्षिणी रोडेशिया के यूरोप-निवासी कुछ सुखरुख अवस्था में हैं, पर वे भी राजनीतिक और आर्थिक मामलों



['मजदूरों' का रोडेशिया के नेता ओशो के निवास]

में दुरदर्शिता की नीति नहीं अपनाता चाहते। अपना महत्वपूर्ण स्थान बनाये रखने के वे भी उत्तरे ही दृष्टान्त हैं। परिणामस्वरूप बेनिया में हिंसा व शोष की जबरदस्त भावना फैली हुई है। आज यहाँ के ४०,००० यूरोपीय व १२०,००० एशियाई ५०,००,००० अफ्रीकियों के बीच सदा संघर्षित रहते हैं। दक्षिण के लिए भी वे स्वयं को अपनी पिस्तौल से अलग रखने का साहस नहीं कर पाते।

बेनिया में अच्छी व उर्वर जमीन केवल छ मांसात हजार यूरोपीय परिवारों के अधिपति में है, पर उसका अधिकांश भाग बरार ही पड़ा रहता है। एक सिग्नल रिडुपु नव-युवक ने मुझे कहा—“ये यूरोप निवासी हजारों एकर जमीन के मालिक बने, हमें कोई एतराज नहीं है किन्तु वे पारी जमीन का उचित उपयोग तो करें। आधी से बड़ी अधिकांश जमीन तो वे बेकार ही रखते हैं और दूसरे हम लोग सीमित-व्यवसीली जमीन पर ही अपना खान पानी एक कर अन्न उपजाने का व्यर्थ प्रयास-ता करते हैं।” बात सरसगत है। यूरोप-निवासियों को समय रहते पेत जाना चाहिए, अन्यथा यहाँ के निवासियों का विरोध और भी उग्र हो उठेगा।

मध्य अफ्रीका में फ़सल अपनी ससृष्टि व निराला के प्रसार में जुटा हुआ है। फ़ैच माया की निराला प्राप्त करने पर अफ्रीकी, प्रासीसी विदेश-विभाग के नागरिक भाग लिये जाते हैं और उन्हें पूर्ण सामाजिक अधिकार प्राप्त हो जाते हैं। कुछ वर्षों के लिए स्वतंत्र पुनाब भी हुए हैं जिनमें फ़ार लास लोगों से मतदान दिया। पर फ़ैच लोग वहाँ की जनता से समानता का श्व-हार करतने को अभी भी तैयार नहीं हैं।

बेल्जियम लोगों में आर्थिक उत्पत्ति की बहुत सम्भावनाएँ हैं। बेल्जियम सरकार वहाँ की आर्थिक उत्पत्ति में जो-जान में लगाने लगी है। वहाँ अफ्रीकियों को विवाह का पूरा-सूरा अवसर दिया जा रहा है।

अफ्रीका-वासियों का ध्यान बाहरी दुनिया की ओर भी आकर्षित हो उठा है। 'बाहुग-मम्मेल्म' दुनिया लोग प्रमाण है।

एक राज में गोल्लवोस्ट-मन्नि-मडल के अफ्रीकी मददगारों के साथ भारतीय समिन्तर के निवासास्थान पर कुछ भारतीय चलचित्र देख रहा था। एक पित्र में भारत के प्रधान मंत्री जवाहरलाल नेहरू ने लन्दन में एक रिपोर्ट प्रस्तुत कर रहा था—“क्या माफ़नी यह धारणा है कि, भारत के प्रधान मंत्री को हैमिन्द से अफ्रीका की स्वतन्त्रता का प्रश्न बार-बार उठाकर आप अफ्रीका की समस्या मुझ्झाने में सहायता कर रहे हैं ?” श्री नेहरू का उत्तर था—“मैं अफ्रीका में वर्तमान असंतोषपूर्ण स्थिति नहीं बनी रहने देना चाहता हूँ और यदि मैं भारत का

प्रधान मंत्री न होता, तो इस सम्बन्ध में अपनी आवाज़ खीर भी बुलंद करता।”

गोल्लवोस्ट-मन्नि-मडल के मददगारों को इस बात में बहुत प्रसन्नता हुई कि, आसिर बिसी एन्ग्लोई देश के नेता ने उनके विचारों व आकांक्षाओं को समझा तो नहीं।

दूसरे चर्च-विचार से इटोनेगिया के प्रधान मंत्री अली साह्यमिजोजो का दिली मन्त्री नेहरू द्वारा मध्य स्वागत का दृश्य था। भारतीय नेता उन्हें सलाह दे रही थी। मुदुब-गबल भारत के कुछ आत्मविश्वास की प्रतिनिधित्व करनेवाले इस दृश्य से अफ्रीकी दर्शन बहुत प्रभावित हुए।

नीसरी पिन्म में उत्तरी भारत में दामोदर नदी के बहते पानी ने सरपादी का दृश्य दिखाया गया था। दृश्य घटला और अब यह दिखाया जा रहा था कि, किस प्रकार भारत अपनी नदी-पाटी-घाटवासी-द्वारा प्रकृति के इस कोप के विरुद्ध सपत्तापूर्वक लड़ रहा है। अफ्रीका-निवासियों पर इस चित्र का आशानुबल प्रभाव पड़ा। उनमें कुछ आत्मविश्वास की एक लहर बोल गयी। उनके सामने यह प्रत्यक्ष हो उठ था कि, एगिया का एक नव-जागरित राष्ट्र किस तरह प्रगति-मय पर अग्रसर हो रहा है।

इस बड़ने अफ्रीकी-एगियाई सम्बन्ध के कस्म्यरूप दो वर्ष के भीतर ही ब्रिटिश मताधारियों के सामने एक समस्या सटी हो जायेगी। गोल्लवोस्ट स्वतन्त्रता प्राप्त करने ही ब्रिटिश साम्राज्यत्व की सदस्यता

वी माँग करेगा। रण-भेद के पक्षपाती दक्षिण अफ्रीका का कथन है कि, यदि गोल्डवोस्ट को कामनवेल्थ में स्थान दिया गया, तो वह अपनी सदस्यता त्याग देगा।

ब्रिटन के लिए वस्तुतः यह कठिन परीक्षा का अवसर उपस्थित होगा। दक्षिण अफ्रीका एक ओर होगा और दूसरी ओर, गोल्डवोस्ट, भारत, पाकिस्तान तथा लडा होग।

अफ्रीका आज अमेरिका की ओर आशा-भरी दृष्टि लगाये है। हमें भी अफ्रीका की ओर ध्यान देना ही चाहिए।

इस सम्बन्ध में मुझे यह स्वीकार करने में कोई हिचक नहीं है कि, अफ्रीका के सम्बन्ध में हमारी अब तक कोई नीति नहीं है। वहाँ से हमारी यह धारणा रही है कि, अफ्रीका ब्रिटेन, फ्रांस, पुर्तगाल और बेल्जियम का विस्तारित रूप है और उसके सम्बन्ध में यूरोपीय नीति ही उपयुक्त है। इसी तर्क के अनुसार हमने यह मान लिया था कि, हिंदचीन एकमात्र फ्रांस की समस्या है, पूरे एशिया की नहीं। अब अगर यही नीति हमने अफ्रीका में बरती, तो वहाँ भी हमें काफी महँगी कीमत चुकानी पड़गी।

अफ्रीकी एक दिन अपनी शासन-नीति स्वयं निर्धारित करेंगे, यह तय-सी बात है। यदि अमेरिका, अफ्रीकियों के हृदय में यह विश्वास दिना देता है कि, वह उनकी स्वतंत्रता-प्राप्ति के पक्ष में है, तो हम अफ्रीकियों की उन माँगों को, जिनके योग्य अब तक वे नहीं बन पाये हैं, वापस ले लेने की बात भी समझा सकते हैं।

यदि गोल्डवोस्ट और नाइजीरिया भारत के समान स्वतंत्र गणतंत्र राष्ट्र के रूप में अपनी योग्यता प्रमाणित कर देते हैं, तो अफ्रीकियों की शासन भार संभालन की योग्यता में अविश्वास प्रकट करनेवाला को वपन विचार बदलन होगा। इन पश्चिमी अफ्रीकी राष्ट्रों को अपन उद्देश्य में सफल होने के लिए अमेरिका जो भी सहायता करेगा उसका परिणाम निश्चय ही उत्तम और अनुकूल होगा।

हम आज एक ऐसे नातिकारी युग में रह रहे हैं, जिसमें आर्थिक तथा सामाजिक प्रगति का किसी प्रकार नहीं रोका जा सकता। एक अस्त्रियन अधिकारी ने कहा था—“हम अफ्रीकियों की माँगों को पूर्ण रूप से पूरा करना होगा, अन्यथा वे क्रांति की आग में हमें भस्म कर देंगे। उनकी माँगों को पहले से ही समझ लेना बुद्धिमत्तापूर्ण नीति होगी।”

इस दिशा में अमेरिका को भी महत्वपूर्ण कार्य करना है। हम सूक्ष्म की नीति से यूरोप तथा अफ्रीका, दोनों में प्रगतिशील सौहार्द स्थापित करने में काफी सहायक हो सकते हैं। इससे स्वतंत्र क्षेत्रों का विस्तार बढ़ेगा और सबकी आर्थिक उन्नति होगी।

जो लोग केवल अपन स्वार्थ के लिए अफ्रीका से भैंसी बनाए रखना चाहते हैं, उन्हें भी यह नहीं भूलना चाहिए कि, अफ्रीका की बहुमूल्य खनिज सम्पत्ति उन्हें सभी तक प्राप्त हो सकती है, जब तक कि, वहाँ के महान् निवासी उनके मित्र हैं।

हार्मोन्स स्थायी शांति के स्थापक

मेरा रीकमी द्वारा लिखित 'डिस्कमरान ग्रेड' नामक ओप्यूर्थ बुक की भूमिका का
सबिष्ठ हिन्दी रूपांतर

*

पिछली ८ जुलाई का तुमुल-वस्तु-
ध्वनि के बीच दलित के जीवतत्व-
विशेषज्ञ डा. शक्कान ने 'जीवतत्व-विज्ञान-
परिपद' के अध्ययन-पद से घोषित किया-
"मेरा विश्वास है, राजनीति, व्यापार
एक धर्म जहाँ असफल हो गये हैं, वहाँ
हार्मोन्स विश्व-शांति की स्थायी परि-
स्थितियों पैदा करने में सफल रहगा।"

एक विश्वमन्य जीव-विशेषज्ञ के मुख
से निकले इन शब्दों ने सारे वैज्ञानिक
एक गौरव-मानव विश्व को हर्ष-प्रेरित
आश्चर्य में डाल दिया-क्या वह
मरिच्यवाणी सम्भाव्य है?

लेकिन ये हार्मोन्स वस्तुतः हैं क्या?
शरीर की कुछ ग्रन्थियाँ अपने छिद्र-
द्वारा एक प्रकार का ग्राव शरीर के बाहर
बहाती हैं। मनुष्य के शरीर में इस
प्रकार की सर्वाधिक ग्रन्थियाँ पत्तीने की
हैं। लेकिन कुछ ग्रन्थियाँ ऐसी भी हैं,
जो छेद न होने के कारण अपना ग्राव
शरीर के भीतर ही रक्त में प्रसारित
करती हैं। इनमें थाइरायड, मुत्रारोमल
एव बफ-प्रधान ग्रन्थियाँ मुख्य हैं। ये
ग्रन्थियाँ एक अंग के दूसरे अंग तक

नवनीत

रक्त प्रवाह के द्वारा कुछ रासायनिक
द्रव्य भेजती हैं। इसी ग्राव को
हार्मोन्स कहते हैं।

ये हार्मोन्स रक्त-जालियाँ में इतनी कम
संख्या में पाये जाते हैं कि, वहाँ उनको
ढूँढ़ निकालना मुश्किल है। लेकिन निमी
ग्रन्थि को शरीर से बिच्छेद कर देने
पर या ग्रन्थि-रक्त को इजेक्शन द्वारा
शरीर में पहुँचाने पर रोगी के स्वास्थ्य
में जो परिवर्तन होना हैं, उससे इन
ग्रन्थि-ग्राव की उपस्थिति मालूम होती है।
सिद्ध की जा सकती है।

वैज्ञानिकों को इस अद्भुत ग्रन्थि-
ग्राव (हार्मोन्स) पर अनुसंधान करने
हुए पतास में भी अधिक वर्ष हो गये हैं
और आज भी इस विषय पर अधिकाधिक
संशोधन हो रही है। सबसे पहले तो उन्होंने
यह मालूम किया कि, रक्त में पाचन-रस
का जो ग्राव होता है, वह भी हार्मोन्स
के ही कारण होता है। उगने बाद
एड्रेनेलिन ग्रन्थि, जो गुर्दे में ऊपर रहती
है, उससे रक्त का इजेक्शन देकर उन्होंने
यह बताया कि, उससे घमनिधों में रक्त
का दबाव बढ़ जाता है। थाइरायड

४०

अकबर

प्रथि से जिस हार्मोन्स का स्राव होता है, उससे शरीर को पोषण-सत्त्व मिलता है, यह भी अब सिद्ध हो चुका है।

गत महायुद्ध के पूर्व वैज्ञानिकों ने यह खोज कर ली थी कि, नारी के अंडाशय से जिस हार्मोन्स का रक्त में स्राव होता है, उससे केवल स्त्री-मात्र के ही शरीर की गठन एवं अभिवृद्धि नहीं होती, बल्कि पौधों तथा मनुष्य में भी पोषण देता पाया जाता है। अल्प मात्रा में इस हार्मोन्स को पौधों की जड़ों पर डाले खूब बढ़ते हैं। पौधों की वृद्धि सुधारने में प्रयोग करते समय ही वैज्ञानिकों को-पौधों के निष्कट जो फलदार घास उग आती है और जो पौधों की वृद्धि के लिए अत्यंत ही हानि-कारक है—उसे नष्ट करने में हार्मोन्स की सहायता लेने की बात सूझी।

सन् १९४० में तीन अंग्रेज वैज्ञानिक जर्डी की फसल पर जब हार्मोन्स का प्रयोग कर रहे थे, तो उन्होंने देखा कि, अधिक मात्रा में यही हार्मोन्स यदि बेकार घास पर डाल दिये जायें, तो जर्डी की फसल को तो कोई नुकसान नहीं पहुँचता, लेकिन घास नष्ट हो जाती है।

गत वर्ष आक्सफोर्ड में, सर राबर्ट

रोबिन्सन के तत्वावधान में कुछ वैज्ञानिकों ने 'डायसन वेरिन्स लेवोरेटरी' में रासायनिक (सिंथेटिक) पुरुष-हार्मोन्स बनाने में सफलता प्राप्त कर ली है। औषध-आविष्कारों के क्षेत्र में यह निर्माण सर्वोपरि महत्त्व का है। इससे हार्मोन्स का उपयोग समाज के प्रत्येक स्तर के लोग कर सकेग—यों कहिये कि,

हार्मोन्स केवल कुबेरों का ही बल्पवृक्ष न रहकर साधारण-से साधारण मजदूर के रोगों की भी अब दवा बन गया है।

सर रोबिन्सन का विश्वास है कि, भविष्य में तपेदिक, कैंसर, हृदय-रोग—जैसे साधारण रोगों के प्रतिकार में ही नहीं, बल्कि हार्मोन्स मानस-रोगों पर भी रामबाण साबित होंगे। 'लेसेट' में इसी प्रसंग पर लिखते हुए उन्होंने घोषित किया है—“युद्ध की जड़ें, मनुष्य के स्वभाव में हैं



[जीवन और मृत्यु की गुल्मी मुल-
भाने में तल्लीन स्वीडिश वैज्ञानिक
डा० टॉमस जे० कैसपरसन]
चित्र हार्वर्ड साइमन

और वहाँ के इसलिए हैं कि, पुरुषों के भीतर नारी-हार्मोन्स की कमी है और महिलाओं के भीतर कुछ खास प्रकार के पुरुष हार्मोन्स की। हम इसी बन्धन को पूरा करने की दिशा में जाने बढ़ रहे हैं। इस ध्येय की पूर्ति के बाद मेरा तो अनुमान है कि, गृहस्थी के ही झगड़ों से नहीं, बरन्

साप्ताहिक झगड़ों में भी यह नर-नारी-जगत मुक्त हो जायेगा।”

डा राविन्सन का स्वप्न चाहे जितना दूरस्थ हो, किन्तु हार्मोन्स की वर्तमान देन भी कम महत्वपूर्ण नहीं है।

इसपर, हार्मोन्स की सहायता से अधिक अन्न-उत्पादन में बहुत सफलता मिली है। बहुत सम्भव है कि, वनस्पति एवं प्राणियों की मरुद्धि में भी यह

बहुत लाभदायक सिद्ध हो।

सयुक्त राज्य अमेरिका में तो कहा जाता है कि, भेड़ों की पुरप-हार्मोन्स के इजेक्शन देन पर वे साल में दो बार बच्चे देती हैं। इसके अलावा गाय के बच्चा देने पर कुछ काल तक जो बीज-अवस्था रहती है, हार्मोन्स के इजेक्शन से यह अब नहीं रहती और शूकरियों का बीजपन भी अस्ती प्रमाणित भिन्न गया है।

★

तुम्हीं बता दो न !

आल्बिन हरफोर्ड का नाम अमेरिका के विख्यात हैंगोदों में मदा अमर रहेगा। एक बार उसने सम्मान में एक प्रकाशक ने पार्टी दी। पार्टी एक शानदार होटल में हुई थी। वह स्थान हरफोर्ड को इतना पसंद आया कि, पार्टी खत्म होते और हमारे सभी मेहमानों के खले जाने पर भी वह वहीं टिका रहा। कुछ दिन रहने के बाद, जब वह वहाँ से जाने लगा, तो होटल के कर्मचारी ने उसे पार्टी के पक्षान् बहाँ छहरने का बिल पैदा किया। हरफोर्ड हँसता था। उसने सोचा था कि, मेरा सर्व प्रकाशक बर्दाश्त करेगा। लेकिन पार्टी खत्म होने के बाद उसने वहाँ छहरने का सर्व प्रकाशक क्यों देना? होटलवालों ने कहा कि, वह स्वयं तो उसे ही चुकानी पड़ेगी।

“लेकिन मेरे पास इतने रुपये नहीं हैं।” हरफोर्ड ने कहा।

“कौन जान नहीं-आप चेक लिख दीजिये।” होटल-मैनेजर ने कहा।

“लेकिन चेकबुक भी मेरे पास नहीं है।” हरफोर्ड ने बताया।

होटल-मैनेजर ने अपने पास में एक सादे चेकबुक का पन्ना निष्काट कर दे दिया। हरफोर्ड ने चेक पर अपने हस्ताक्षर कर दिये। स्वयं भी लिख दी।

“लेकिन जनाब ! आपने बैंक का नाम नहीं लिखा।” मैनेजर ने आपत्ति की।

हरफोर्ड का जवाब था-“तुम्हीं किसी अच्छे-मेरे बैंक का नाम बता दो न !”

★

—“न्यूयार्क” से

प्यालियो आ ल प्यालियो

एह साहित्य का प्रेरणास्रोत है

" सोचने और लिखने के बीच में जितना अंतर है, उतना जमीन आसमान के बीच में भी नहीं। मन का निरानार जगत कधरों में साकार होकर बोलने लगे, मान्ने एक समूचे विश्व का निर्माता है। मनुष्य-सृष्टि के निर्माता और इस शब्द सृष्टि के निर्माता में बौन थोड़ा है, क्या कभी किसी भी मनुष्य मृत ने शम्भु तुष्टिजनक उत्तर दिया ?" साहित्य स्रष्टाओं के विषय में ये हैं महर्षि शमसेन के उद्गार। अब आ नीचे इन स्रष्टाओं की स्मृति की देख लीजिये। इस लेख के लेखक हैं श्री नारायण भक्त।

*

फ्रांस का अद्वितीय कथाकार बाल-जाव तडफ-भड़क खूब पसंद करता था। जिस समय वह लिखने बैठता था, नाना रंगों की रबीन पोशाक और लाल रंग का जूता पहन लेता था। दिन में वह बिल्बुल नहीं लिखता था। शाम होते ही सो जाता और रात में बारह बजे उठता और उस समय, जब मारा पेरिस शहर निद्रा की मोद में सोता रहता, वह लिखना शुरू-कर देता।

लिखते समय उसकी मेज पर छ मोम-बत्तियाँ जलती रहती—छीक छ—न एक कम, न एक अधिक। लिखने के लिए बढिया कागज सुंदर कटा हुआ वहाँ रखा रहता। इसके साथ पाँच-छ बोतलों में स्पाही और पाख के दस-बारह फलम।

एक-दो रात बीतती, उसकी बुद्धि का स्फुरण होता और विचार-धारा के मोती अविराम गति से प्रवाहित एव लेखनी द्वारा लिपिबद्ध होते रहते। हाँ, लिखते समय काफी का प्याल भी अवश्य

होना चाहिए। नहते हैं कि, सारे जीवन में उसने कम-से-कम पचास हजार काफी की प्यालियाँ को गटका होगा। इस प्रकार काफी की प्यालियाँ के साथ भोर तक लिखना चलता रहता। कमरे में प्रकाश पहुँचने पर नौकर उसमें प्रवेश करता और मेज पर लिखे हुए कागज के पन्नों को समेटकर ठीक से रख देता।

जो भी प्रिन्टले उन प्रसिद्ध लेखकों में से है, जो लिखते समय बहुत ही सिगरेट पीने के आदी हैं। जान इरविन ने एक बार बताया कि, जिस प्रकार मैंने प्रिन्टले की नकल करनी चाहिए। रेकिन पहली ही बार धुँवाँ मेरी आँखों में धुस गया और मैंने उसी क्षण तम्बाकू सहित पाइप हमेशा के लिए बाहर फेंक दिया।

अंग्रेजी साहित्य का घुरघुर विद्वान जानसन जब रास्ते से होकर गुजरता, तब सड़क के दोनों तरफ के प्रत्येक लॉम्प-पोस्ट का स्पर्श किये बिना नहीं रहता। यदि स्पर्श करने से कोई छूट



[बिश्वर दूगो]

जाता, तो फिर लौटकर उसे छूता और तब आगे बढ़ता। इससे भी बदकर एक विचित्र बात उसमें यह पायी जाती थी कि, वह जिस समय लिखने बैठता, मेज पर एक बिल्ली को अवश्य बैठा लेता।

एल्बर मक्केन ऐसे वातावरण में बहुत अच्छा लिखते थे, जब रेडियो श्रवण जोर से बज रहा हो—पर वे आदमी गोर भचा रहे हों। लेकिन ठीक इसने विपरीत धामस वालाईल थे। उनके लिखते समय बिल्ली भी आ जाये, तो वे सारा मानसिक शक्त उसी से बँटते थे।

ए. डी. डज्यू मैसन की स्मरण-शक्ति बहुत तेज थी। वर्षों की लिखी हुई चीजों की वे ग्योनी-रगो लिख देते थे। लार्ड मायरन कहा करते थे कि, मैं अपनी सभी रचनाएँ जबानी सुना सकता हूँ। लेकिन सर वाल्टर स्काट का हाल बिल्कुल उल्टा था। उनकी स्मरण-शक्ति बहुत कमजोर थी। यही तब कि, एक बार अपनी ही लिखी

नमनीत

एक कविता को वायरन की रचना समझ उन्हीने उसकी बड़ी प्रशंसा की।

लार्ड वेबन के बारे में कहा जाता है कि, वे अपनी एक पूरी पुस्तक स्मृति के बल पर लिखते गये। लेकिन 'रिप-वान बिगिल' नाटक के रचयिता जोसेफ जेफमेन की स्मृति इससे उल्टी थी। वे प्रायः बारह साल तक इस नाटक का अभिनय करते रहे, पर निरुप इसकी पक्तियों भूल जाते थे।

विश्यास नाट्यकार इंगन अपने सामने नाना प्रकार के जीव-जंतुओं के चित्र रखकर तब लिखने बैठते। अंग्रेज उपन्यासकार डिबेन अपने कमरे की अच्छी तरह सजाकर तब उसमें लिखने बैठते। उन्हें जवाहरात के पहने पहनने का बड़ा ही शौक था।

फामीसी उपन्यासकार अलेक्जेंडर ड्यूमा की आदतें तो और भी विचित्र



[ड्यूमा]



प्रेमचन्द

[चित्र-एक जापानी चित्र-
कार द्वारा निर्मित स्केच]

थी। जब कुछ लिखने की तरफ उनके मन में उठती, तो वे अपने कमरे में प्रवेश करते और कपड़ा-जूता खोलकर दरवाजा बंद कर लेते। केवल एक कमीज और पाजामा पहने रहते। नौकर को सावधान कर देते—“लाख बार चाहने पर भी मुझे कोट और जूता नहीं देना।” इसका मतलब यह था कि, इच्छा करने पर भी वे बाहर न जा सके। इस प्रकार वे घर में रुकने पर लगातार चार-पाँच दिनों तक बाहर नहीं निकलते और लिखते चले जाते। वे सपेंद कागज पर कभी नहीं लिखते। उनका विश्वास था कि, वे उपन्यास सिर्फ नीले, कविता पीले और लेख गुलाबी कागज पर ही लिख सकते हैं।

ह्यूमा के ही देशवासी विक्टर ह्यूगो ने लिखने के लिए कपे तक की उँचाई की एक मेज तैयार करवायी थी।

सदा रहकर लिखने का उन्हे अभ्यास हो गया था। इस रूप में ही उन्होंने अमर उपन्यास—‘ला मिजरेबुल’—की रचना की थी। जब वे लिखना शुरू कर देते, तो बाहरी दुनिया के साथ उनका सम्बन्ध सम्पूर्ण विच्छिन्न हो जाता। कभी-कभी वे लगातार चौदह-पंद्रह घंटों तक लिखते ही रहते।

जमरोकी हास्पिरस के लेखक मार्क ट्वेन बिछौने पर लेटे हुए लिखते रहते थे। वे दिन में देर तक सोते रहते। बिछौने के पास ही लिखने के सारे सामान रखे रहते। उठते ही लिखना शुरू कर देते।

मुनते हैं कि, शरत्चन्द्र ने भी अपनी अधिकांश रचनाएँ एक ही आरामकुर्सी पर बैठकर पूरी की थी। ऐसी ही आइत के बिकार सामरसेट माम भी है। अभी तक अपना सारा लेखन-कार्य वे उस पुरानी कुर्सी पर बैठकर ही करते हैं, जिस पर बैठकर सन् १८९६ में उन्होंने अपना पहला उपन्यास ‘लिजा आंव सैम्बेथ’ पूरा किया था।



[शुभित्रप्रेमचन्दन पत]

‘गोदान’ के अमर सेख भुओं प्रमचन्द्र के बारे में कहा जाता है कि, उनके लिखने का कोई खास समय नहीं रहता था। यो तो उन्होंने लेखनी को सभी विधाय ही नहीं लेने दिया और मृत्यु-अंश पर पड़ गए भी साहित्य-मर्जन में दत्तचित्त रहे। शोरगुल कितना भी रहे, उनके लिखने में बाधा नहीं पहुँचनी थी। ऐसा सुना जाता है कि, उनकी अधिवास रचनाएँ गुराती साठ पर बैठकर लिखी गयीं।

भारतेंदु हरिश्चन्द्र की आदतें यही विचित्र थीं। वे लिखने के समय अपने कमरे को सूब मन्दावर राजसी वस्त्र धारण करने और घूब जलाने एकांत में लिखना पसंद करते थे। धारो और पुस्तकों के ढेर लगे रहने और उभो के बीच वे साहित्य प्रणयन में ध्यानमग्न रहते।

बबोन्द्र रवीन्द्र विमो शीत की पक्ति को धुनगुनाते हुए लिखने के आदी थे। मीन होकर उनमें लिसा नहीं जाता था। थोड़ा देर लिखने के उपरांत लेखनी अवरद्ध हो जाती थी। उनके मस्तिष्क में जब लिखने का विचार आता, तभी उन्हें लिख देने का अम्प्राण था। दूसरों को मोल्कर लिखाना भी उन्हें पसंद था, परन्तु गणतियों निरागने पर लिखनेवाले का

उनका मधुर डोट भी सुननी पड़ती थी। उपन्यासकार बनिमचन्द्र चट्टोपाध्याय अपने लिखने के कमरे को सूब तस्वीरो से सजाकर रखते। नीतरों को एकदम मनाही रहती थी कि, लिखने के समय कोई भी बाहरी व्यक्ति वहाँ पर नहीं पहुँचने पाये।

बकिबर गुमिश्चानन्दन पत धलम पर सेटकर लिखते हैं। प्रकृति के शुभे वातावरण में मद गति ने लिखने का उनका अम्प्राण है। इसी प्रकार महाकवि ‘निराला’ को जब लिखना होता है, तब वे कुटी से सटी हुई गली में चहलकदमी करने लगते हैं। किन्तु अब नहीं; क्योंकि इन दिनों वे चलने-फिरने से लाचार हैं।

मगर विविध आदतों में सबसे बारी मार गये हैं, प्रसिद्ध फागीसी लेखक पियर लोनी। उनका दृढ़ विश्वास था कि, उच्च विचारों के लिए उच्च आसन चाहिए। इसलिए पेट की मयंगे ऊँची डाल पर बैठकर यदि लिखा जाये, तो मस्तिष्क को पूरी ख़ूब मिला सकती है। इसके लिए उन्होंने अपने घर के अंदर ही एक नक्की पेड़ तैयार करा लिया था और उगवी एक ऊँची डाल पर बैठकर वे लिखा करते थे।

*

कहते हैं कि, डा० हजारीप्रसादजी का पहला नाम रंजनप्रसाद था। एक बार आपके पिताजी को बड़ी में अवानक एक हज़ार रुपये प्राप्त हो गये। पिता ने इसे बच्चे का मोक्षाय समझा और तभी ने आपका ‘हजारीप्रसाद’ कहने लगे। — रामनारायण उपाध्याय (‘सरस्वती’ में सामार)

*

एक डोल खरीदो और मुनादी करो

नचिकेता और एकलव्य की मन्त्रदीक्षा प्रसिद्ध है। आर्यभट्टन प्राप्त करने के लिए नचिकेता को यमराज के पास जाना पड़ा और एकलव्य को श्रुतिका की गुरु मूर्ति बनाकर अनुर्वेष्टा ॥ अभ्यास करना पड़ा। गांधीजी ने भी श्री महावीर त्यागी को ऐसा ही व्यग्र वैचित्र्यपूर्ण काम सौंपा था—
“एक डोल खरीदो और मुनादी करो” प्रस्तुत लेख में स्वयं श्री महावीर त्यागी ने इस मन्त्रदीक्षा का विवरण दिया है।

★

आज राष्ट्र-निर्माण की बहुत चर्चा है। नेतागण बड़ी आसानी से कह देते हैं कि, आपस में मेल कर रचनात्मक कार्य में जुट जाओ। मेरी राय में, यह सब व्यर्थ की बात है। भला, प्रस्तावों द्वारा आज तक कभी आपस में मेल हुआ है? क्या मेल और मंत्री पर मनुष्य का ऐसा अधिकार है, जैसे उसको अपनी जवान या कलम पर है कि, चाहे जब लिख दिया और चाहे जब नाट दिया? मैं बहुत पढ़ा-लिखा नहीं हूँ; पर मेरा अनुभव है कि, मनुष्य को व्यक्तिगत रूप से अपने चलन पर पूरा अधिकार प्राप्त नहीं



[चौराहे पर श्री महावीर त्यागी अपने डोल के साथ]

हैं। करोड़ों व्यक्तियों का किसी एक मार्ग पर चलाने के लिए एक विशेष प्रकार का वातावरण बनाने की आवश्यकता है। सहयोग जन-समूह का स्वाभाविक लक्षण है, इसलिए देशवासियों में मेल और सहयोग को साधना जाग्रत करने के लिए हमें उपयुक्त वातावरण बनाना पड़ेगा। और, उस वातावरण के अनन्त हममें स्वभावतः मेल हो जायेगा।

यह समझ लीजिये, मनोविज्ञान के शास्त्र के अनुसार यह खयाल बिल्कुल गलत है कि, व्यक्तिगत रूप से हम लोग जानबूझकर झगडा या मेल करने हैं।

हिन्दी डाइजैस्ट

यदि आप पूरी छान-बीन करें, तो यह सिद्ध हो सकता है कि, आपमें से कोई भी अपने विचारों में स्वतंत्र नहीं है। जो लोग अपने को स्वतंत्र मानते हैं, उन्हें भी आंतरिक दिग्दर्शन करने पर यह मानना पड़ेगा कि, वे १६ आने स्वतंत्र नहीं हैं। अथवा तो जिन्हें वे विचार कहते हैं, उनमें ऐश्यास उनका योग नहीं है। उनके सब विचार और सारी बुद्धिमत्ता तथा ज्ञान या तो दूसरों से मोंगे हुए, घुराये हुए या उधार ली हुई सम्पत्ति है। विचार, व्यवहार और चलन की स्वतंत्रता तो सिवाय पागल के इस दुनिया में किसी दूसरे मनुष्य को प्राप्त नहीं है। हमारे व्यक्तिगत चलन को मर्यादित करनेवाली एक शक्ति है, जिसे 'सामूहिक व्यक्ति' कह सकते हैं। इस 'सामूहिक व्यक्ति' के व्यवहार और चलन हमारे भिन्न है। 'सामूहिक व्यक्ति' की सम्पत्ति और नैतिक स्तर भी हमारे भिन्न है।

मोटी मिसाल के तौर पर आप किसी कुटुम्ब-मैत्र का ध्यान करें, जहाँ हजारों की भीड़ जमा हो। उस भीड़ या नैतिक शास्त्र आप लोगों के नैतिक शास्त्र से बिल्कुल भिन्न होगा है। कुटुम्ब के मैत्र में तो प्रमेर व्यक्ति शामिलों बना सकता है। "गो ओन", "वेल्फेयर" वगैरह चिल्ला सकता है, अपनी टांगी तक उछाल सकता है। घड़े-मे-बड़ा नेता या मिनिस्टर मों गुर्गोंपर लडा होकर तरह-तरह की आवाजें कर सकता है, चिल्लाकर आवाजी दे सकता है।

सबता है—बिना इस डर के कि, लोग उसकी सिलस्ती उठा देंगे। लेकिन अगर उन रसकों में से कोई भी गडब पर थकेला हुआ बिछाकर "गो ओन", "गो ओन" चिल्लाने लगे, तो लोग समझेंगे—कोई पागल है।

मेरा तात्पर्य यह है कि, जब हम सब मिलकर एक समूह बनाते हैं, तो तुरत ही हमारे चलन के ढंग और नियम बिल्कुल बदल जाते हैं। दुकियों के निजी ढंग में और बिना किसी परिधम या आदर्श के हमारा चलना-फिरना, हँसना-बोलना एकदम बदल जाता है तथा हम उस सामूहिक अंत-करण के गुलाम बन जाते हैं। 'कूँ' इस तरह के व्यवहार में हमें बड़ा मजा आता है, इसलिए हमें आति हो जानी है कि, हम जान-बूझकर अटपटी बात पर रहे हैं।

इसलिए आप मानें कि, व्यक्तिगत जीवन सामूहिक जीवन से पृथक् है। सामूहिक जीवन में व्यक्तिगत जीवन का समावेन तो है; परन्तु उसका हिसाब जमा-खर्च के अनुपात से नहीं बनता। उसमें व्यक्तियों का समावेन तो है; पर यह मत समझिये कि, 'सामूहिक व्यक्ति' में सब अच्छे-बुरे, पढ़े-लेपढ़े, नैव और बुरे व्यक्तियों का सत जोड़कर औसत निकाला जाता है। जमा-खर्च के हिसाब से जो औसत निकलेगा, उतने जही अधिक दूर की छटाएँ 'सामूहिक व्यक्ति' में मिलेंगी। यह व्यक्ति भावना-प्रधान, अत्यंत उदार, महावीर, त्यागी, दयालु और माय ही वैसा-विष कृतिया-

डालडा
मेरे लिये
अच्छा है



हर एक के लिये अच्छा है...

★ क्योंकि यह शुद्ध है
★ क्योंकि यह पौष्टिक है

डालडा वनस्पति

२ चम्मच, १ चम्मच, १ चम्मच, १ चम्मच और १० चम्मच के तेलों में भारत में सर्वत्र मिलता है

सौंदर्य निखरता ही गया
ज्यों ज्यों रेक्सोना का
उपयोग किया...

...क्यों कि
कैंडिल*मिले
रेक्सोना से सोई हुई
सुंदरता जाग
उठती है!

कैंडिल मिले रेक्सोना से छुद बनना
सम्भव आसान है—इस के दैनिक
उपयोग से आप देखेंगी कि आप की
चिन्त दिन ब दिन ज्यादा भाफ
और मुलायम बन रही है और
आप का रूप वृष की भांति
मिन्न रहा है।

*कैंडिल चिन्त को मुलायम
बातोंसों और त्वचा-पांख
तेनों के एक विशेष निम्नण का
मातृपिनी नाम है।
बड़े आकार में भी मिलता है।



रेक्सोना

कैंडिलयुक्त एक मात्र साधन

रेक्सोना मोनोपरी लि० क लिमिटेड द्वारा बनाया गया।

NP 101 50 111

चाला होता है। दलीलो से इतना दूर कि, वकील भी इसके प्रभाव में आकर भावात्मक हो जाते हैं। थड़ा और विश्वास इस व्यक्ति की जान है और भय और आशा के सौस भरता हुआ यह व्यक्ति सब पर अपना जादू किये रहता है। वैसे इस व्यक्ति का स्वभाव बालको जैसा खेल-कूद, हँसी-ठट्ठा और दिल्लगीवाला होता है। जितना ही यह व्यक्ति हम पर अपना आधिपत्य जमाये रहता है, उतना ही यह हमारे इशारों पर भी चलता है। पर केवल उन इशारों पर, जो मौके पर दिये जायें और इशारा करनेवाला व्यक्ति सर्व-साधारण से बरा ऊँचा हो।

‘सामूहिक’ व्यक्ति का शासन जिस ‘कोड’ के अनुसार होता है, उसकी धाराओं का उल्लंघन सिवाय पागल के दूसरा नहीं कर सकता। हम कैसे कपड़े पहने, भाई-बहन का सम्बन्ध कैसा हो, दोनो पक्षों में एक-से जुते हो और बाजार में नुगे न धूमें—इस प्रकार की छोटी-छोटी बातों पर भी ‘सामूहिक व्यक्ति’ का आधिपत्य है।

यह सब वातावरण का खेल है। जैसी आवहवा होगी, वैसा ही व्यक्तियों का चलन होगा। आजकल भारत का

वातावरण राजनीति-प्रधान है। एक जमाना था, जब धार्मिक मेले, ब्याथो और धर्म की चर्चाओं का जोर था। इन दिनों इस दिशा में लोगों की दिलचस्पी फीकी पड़ गयी है। कभी विज्ञान और कभी साहित्य की ही चर्चा जोर पकड़ जाती है। कभी त्याग के दिन आते हैं, तो कभी भोग की प्रवृत्ति हो जाती है।

आजादी की लड़ाई के बमाने में गांधीजी



[लय और ताल]

ने एक अजीब युग त्याग-तपस्या का उत्पन्न कर दिया था जिसके अतर्गत लाखों व्यक्ति अपनी जान और माल को खतरे में डालकर देश-सेवा के कार्य को महत्व देते थे, जेलखाने जाते थे और पुलिस की लाठी-डंडे खाने में गौरव समझते थे। पंडित गोविंदवल्लभ पंत और जवाहरलाल नेहरू को रखनऊ की पुलिस के धुड़सवारों ने ‘साइमन-कमीशन’ के बायकाट के समय इनने डंडे मारे कि, उम्भ-भर याद रखगे। जवाहरलाल की कमर पर लगी चोट के निदानों के फोटो अखबारों में छपे थे। उन दिना यही रिवाज था। सन् १९२१ में मुझे भी भरी अदालत में थप्पड़ों से पिटाया गया था। पर अब यह रिवाज बद हो गया है। उन दिनों थप्पड़ में मान था, आज अपमान।

इसलिए मेरी धारणा है, हमें कोई तरीका निवाटना चाहिए, जिससे वातावरण ऐसा बन जाये कि, आपस में मिलकर देश-सेवा करने या पेंशन बन जाये। आज जो भतभद नज़र आते हैं, उनका असली कारण क्या है? पुराने जमाने में हम सब मित्रवर जो आदालत करते थे या रचनात्मक कार्य करते थे, उनमें किसी की भी स्वायं भावना नहीं थी। सब काम सामूहिक था, स्वराज्य-प्राप्ति के लिए था। जैसे छप्पर उठाते समय जो भी हाथ लगा दे, सब लोग मिलकर उसका आदर और स्वागत करते हैं—बाई किसी से ईर्ष्या नहीं करता।

जब तब गांधीजी जिदों थे, ये हमारे सामने कोई-न-कोई ऐसा कार्य रख देते थे, जो सार्वजनिक हित का है। जब-जब हम सार्वजनिक हित का कार्य करेंगे, हममें निश्चय ही आपसी मेल, मोहभरत और सहयोग की भावना बढेगी, क्योंकि वातावरण ही इस प्रकार का होगा।

हमारी आपस की घट का मूल कारण है, सार्वजनिक आदालत की कमी। आजकल जो व्यक्ति परोपकार का कार्य करते हैं, उनके अलग-अलग कार्यक्षेत्र बन जाते हैं और एक के क्षेत्र में दूसरे का प्रभाव पड़ जाने से कार्य में बाधा पड़ती है। इसलिए सार्वजनिक कार्य करनेवालों में भी अपने-अपने क्षेत्र के लिए मोह उत्पन्न हो जाता है और वही झगड़े का कारण है। हम यह स्वीकार

कर लेना चाहिए — स्वराज्य होने के बाद राजनीतिक दलों के नेतागण इस बात में विफल हो गये हैं कि, वे अपने कार्यकर्ताओं के लिए कोई ठोस कार्य १, २, ३ करने बता सके। केवल यह उपदेश देना कि, रचनात्मक कार्य करो—इसमें काम नहीं चलेंगा। कोई ऐसा काम निवाटना लीजिये कि, जिसमें हम सब लोग जुट सकें, ता फिर उपदेश और प्रस्तावों के बिना ही दलबंदी बंद हो जायेगी।

जब मैं मुम्बई-मुम्बई में कांग्रेस में आया था, तो महात्मा गांधी ने मिलने के लिए इलाहाबाद पहुँचा। 'आनन्द-भवन' में वे ठहरे थे। अभी मुझे एहसास है बपड़े सिलवाने का अवकाश नहीं मिला था, क्योंकि मैं पहली लड़ाई के सिलसिले में फौजी नौकरी पर ईरान भेज दिया गया था और समानाचारियों में महात्मा गांधी की अपील पढ़कर इस्तीफा देकर लौपे बही में आया था। 'आनन्द-भवन' में पंडित मोतीलाल नेहरू, महात्मा गांधी, मौलाना मुहम्मद अली और मोरारजी अली आपस में परामर्श कर रहे थे, तभी मुझे उन तम पहुँचने की आज्ञा मिल गयी। मुझी पर बँटने ही मैंने महात्माजी ने अपना सब वृत्तांत कहा और प्रार्थना की कि, मुझे कुछ काम बताइये।

महात्मा गांधी ने हँसकर उत्तर दिया— "जो काम बताऊँगा, करोगे?"

"जो, वहाँ।"

तब गांधीजी ने आमा दी— "जाओ,

एक ढोल खरीदो और मुनादी करो।”

मैं नमस्कार किया और लौट आया। अपने मन में सोचा कि, काम तो बहुत आसान है। इसमें कोई अक्ल की बात भी ज्यादा नहीं है—सिर्फ एक ढोल खरीदने की देर है मुनादी करना शुरू कर दूँगा। पर जिस बात की मुनादी करूँगा, वह सोचता हुआ मैं अपने घर बसा आया।

गांधीजी के आज्ञा-

नुसार मुनादी करना आरम्भ कर दिया। तब से आज तक निरंतर मेरा काम वाप्रस में मुनादी करने का रहा है।

अब मैं यह सोचता हूँ कि, यह काम भी बहुत जिम्मेदारी का और अच्छा काम था, जो मुझे सौंपा गया था। मैं इसी काम के द्वारा ‘लीडर’ बन

गया। काम ‘पापुलर’ (लोकप्रिय) भी है। पुराने जमाने में गरीब मेहतर लोग मुनादी किया करते थे। जब से मैंने मुनादी शुरू कर दी, मुनादी के काम में महत्व आ गया। आहिस्ता-आहिस्ता देहरादून के सभी लोग मुझे जान गये। हर चौराहे पर एक भोटा या कुर्सी बिछा कर और उस पर सड़ा होकर या तो ढोल बजाकर या घंटा या

बिगुल द्वारा कुछ भीड़ इकट्ठी कर ली और महात्मा गांधी के आदेशों का प्रचार आरम्भ कर दिया। जब भीड़ ज्यादा इकट्ठी होने लगी, तो एक मोपू खरीद लिया, तानि उससे द्वारा दूर-दूर तक आवाज पहुँच जाये। इस तरह थोड़े दिन में मेरे शहर के लोग मुझे पहचानने लगे। बाजार के लोग तो मेहरे से पहचानते थे,

मृत्युंजय

औरते जो छत पर से देताती थी, वह मेरे गजे सिर से मुझे पहचानने लगी। ‘लीडर’ के लिए इससे अच्छी क्या बात है कि, चारों तरफ से लोग उसे पहचानें। मेरी ‘लीडरी’ का आरम्भ मुनादी से हुआ।

सन् १९२१ में तब १२ गिरहार्ज का होता था और उत्तर प्रदेश की

औरतो को मोटा बातने की आदत थी। इसलिए हम सब घुटने तक की धोती पहनते थे, जिसे महाने के बाद निचोड़न के लिए या तो किसी साथी की मदद लेनी पड़ती थी या एक सिरा पेर के नीचे दबाकर ५ इंच मोटा रस्सा मरोड़ना पड़ता था। उन्ही दिनों की बात है कि, महात्मा गांधी न कांग्रेस के एक बरोड सदस्य बनाने और

—विनोबा

एक करोड़ रुपये 'तिलक-स्वराज्य-फंड' में जमा करने का आदेश दिया था। उस साल हमारी प्रार्थीय कांग्रेस-नमेटों के मंत्री थे—स्वर्गीय पण्डितदेव मालवीय, श्री गोरामानर मिश्र, श्री जियाराम सक्सेना और जवाहरलाल नेहरू। उन दिनों मेरा कार्य-क्षेत्र, जिला विजनौर था। जवाहरलाल नेहरू हम अपने ज्यादा 'फैजनेबुल' समझे जाने थे। जब वह दोरे पर विजनौर आये, तो हमने देखा कि, उन्होंने डेढ़ पाट की धोती पहन रखी थी। यानी १२ गिरह के अर्ज के थान में ६-७ गिरह का एब और पाट जोड़ दिया, जिससे उनकी धोती लगदीनुमा हो गयी थी और घुटने से नीचे तक आनी थी। उनको देखकर हम लोगों ने भी अपनी-अपनी धोतियों पाटकर डेढ़ पाट की सिलखा ली थी।

मुझे ठीक याद है, कांग्रेस का सदस्य बनने में लोग बहुत धवडाते थे और औसतन ५० घरो में ४ या ५ सदस्य बन पाते थे। गुरुह-ने-शाम तक घूमकर ४ या ५ सदस्य भी बन जाते, तो हम अपने को धन्य ममझते। जवाहरलाल के आ जाने से हमारी हिम्मत बढ़ी और वे हमारे सदस्य बनाने के लिए बाजार में निकल पड़े। एक हूवाज पर जाकर जवाहरलाल ने पदे के लिए कुराना गामने फेंग दिया, जंगे मिडा मोगने है। इसका अमर इतना पड़ा कि, हम पागल-ने बन गये। दिन-रात निरंतर काम करते थे। उन दिनों मोटरों का रिवाज तो था नहीं,

अधिकतर पैदल ही जाते। अभी वे अंतो जिदा है, जिन्होंने प्रधान मंत्री नेहरू को रायबरेली, प्रतापगढ़ आदि क्षेत्रों में मामूली चप्पल पहने गौद, जंगल और झाड़ियों में पैदल सफर करते देखा है। क्या जोख था, क्या उमंग थी?

मेरा यह कहना है कि, बिगो तार्वजनिक आंदोलन उठाने के लिए यह आवश्यक है कि, हम उस आंदोलन के निमित्त किसी भी छोटे-मोटे काम के करने में अपमान न समझें। दुनिया-भर में घूमकर देखिये, जिनने महत्वपूर्ण आंदोलन मगार में हुए, चाहे पैगम्बरों ने चलाये हों या राजनीतिक नेताओं ने—वह सब भिक्षुओं द्वारा चले हैं, त्याग के बल पर चले हैं। मोटरों, होटलों और मटन-चाप-डाप भी देश-निर्माण का प्रचार हो गवना है; पर यह प्रचार मार्बजनिव प्रचार नहीं हो सकता और न यह सामूहिक आंदोलन का रूप ले गवना है। मैं इस बात का उदाहरण है कि, मुलादी-जंगे निरुष्ट कार्य-द्वारा भी एक व्यक्ति ऊँचे-ऊँचा पद प्राप्ति कर गवना है, यहाँ यह हम निरुष्ट कार्य में रत हो जाये।

मेरी यह धारणा है कि, मुलादी करने का काम में जीवन-भर बन्गेगा। मुलादी महान्मा गापी का दिया हुआ 'पोटफोलियो' है, 'मिनिस्ट्री' का 'पोटफोलियो' जवाहरलाल का है। अगर इन दोनों में जगडा बायेगा, तो मैं जवाहरलाल का 'पोटफोलियो' छोड़ देगा, गापीजो का नहीं!

पौध-पौधों की आरिक्ता

श्री के. रामनाथन् कुरैया के एक शोधपूर्ण कज्ज लेख ॥ संविज्ञ दिव्यी-रुपांतर

★

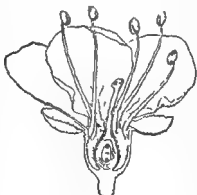
पशुओं और वृक्षों में एक बड़ा अंतर यह है कि, वृक्ष एक स्थान पर ही रहते हैं, जब कि, पशु इधर-उधर भा-जा सकते हैं। परन्तु यह बात सदा ही सत्य नहीं है। बहुत-से ऐसे जीव-जन्तु हैं, जो पूरी उम्र एक ही स्थान पर पड़े रहते हैं। उदाहरण के लिए, हम समुद्री 'एनोमीन' (एक प्रकार का पोषा) को ले सकते हैं, जो जीवन-भर समुद्र की तह में किसी चट्टान पर पड़ा रहता है। अगर इसको कोई केकड़ा या कछुआ अपनी पीठ पर न उठा ले, तो यह आजीवन किसी दूसरी जगह नहीं जाता। इसके पिपरीत, वृक्ष-बीज इधर-से-उधर भाते-जाते रहते हैं। एक वृक्ष के बीज उड़कर बहुत दूर तक चले जाते हैं। पानी में होनेवाली कई घासे, जिनमें जड़ें नहीं होती, दूर तर तर कर चली जाती हैं। वही

क्या? अभी-अभी कई ऐसे पोषों का पता चला है, जो पूरे-पूरे एक स्थान से दूसरे स्थान पर चलते रहते हैं।

बहुधा सड़क पर ऐसे बीज बँचनेवाले मिलते हैं, जिनके पास बहुत-से रंगों के बीज होते हैं और उन्हें पानी में डालने से उनमें से छोटे-छोटे कृत्रिम फूल निकल आते हैं। इसमें भी अधिक आश्चर्य की वस्तु है, एक सूखी और भूरी गेंद की आकृति का पदार्थ, जो पानी में डालते ही एक पोषे के रूप में विशिष्ट हो जाता है और उसमें सिरम-वृक्ष नी-नी पत्तियाँ निकल आती हैं। यह

वृक्ष बहुत दिन तक सूखा रहने के बाद भी फिर से हरा हो जाता है।

इस तरह के दो वृक्ष और होते हैं, एक तो 'रिजरे-क्वसन' - वृक्ष, जो एक प्रकार की काई होता है और दूसरा 'गैरिको' वा गुलाब', जिसमें



[बीजकुर]

बीज होते हैं। यह दोनों ही मरस्यल के वृक्ष हैं, जो वर्षों सूखे रहने के बाद भी अनुकूल स्थिति पाते ही हरे हो जाते हैं।

अमेरिकी का गुलाब तो बहुत घूमने-वाला पौधा है। मूल समय में जब कि, उसके बीज पकते हैं, तो पत्तियाँ गिर जाती हैं और डाले पड़ो की रक्षा करने के लिए अंदर की मुड़ जाती हैं। जहाँ भी सूख जाती है और उखड़ा हुआ

वृक्ष मरभूमि-भर में इपर-मे-उपर लुडकता रहता है—जब तब कि, हवा उसके किसी कम स्थान में नहीं पहुँचा देती है अथवा वर्षा आरम्भ नहीं हो जाती। और, वर्षा होने ही यह फिर सरसज्ज हो जाता है। इसी प्रकार

ऐसे बहुत-से बीजों का भी पता चला है, जो वर्षों गड़े रहने के बाद फिर से उगे हैं।

एक शासीमी वैज्ञानिक की खोज में ज्ञात हुआ है कि, कुछ ऐसे बीज भी हैं, जो अम्मी में अधिक वर्ष तक रहते रहने के बाद उग आया करते हैं। यह भी कहा जाता है कि, भारत का सुप्रख्यात पमर जिन बीजों से अशुरित होता है, वह भी-सो वर्षों तक उगने की

क्षमिता रखते हैं।

अक्सर ऐसा होता है कि, कुछ वृक्ष अपने बीज अपने पास ही गिरा देते हैं। उदाहरण के लिए, 'पीपी' के फूल की लीजिये। इसका बीज-कोष बहुत बड़ा होता है और उसमें ऊपर छंददार ढक्कन होता है। यह फूल अपने बीजों को नीचे घुसा देता है, जिससे सब बीज गिर पड़ते हैं। इसमें से कुछ बीज वायु-द्वारा

उड़कर दूर भी चले जाया करते हैं।

न्याय-दंड

अन्याय ये करे आर अन्याय ये सहै,
तब घृणा घेन तारे तृणसम बहै।

—जो अन्याय करता है और जो अन्याय सहता है, हे भगवान! उन दोनों को तुम बर्फी क्षमा न करना। आप जैसे तृण को जलाकर भस्म कर देती हैं, उसी प्रकार तुम भी अपनी घृणा की अग्नि में उन दोनों को भस्म कर देना।

—रघुनाथ ठाकुर

प्रकृति का न्याय बड़ा सधा हुआ होता है—यदि वृक्षों के सभी बीज वृक्ष के पास ही पड़े रह जायें, तो वे बीज उग कर एक-दूसरे को नष्ट कर देंगे। इसीलिए प्रकृति ने बीजों की यात्रा का विधान किया है। ये बीज

कभी-कभी तो अकेले यात्रा करते हैं और कभी कोप में बंद रह कर। बीजों को दूर भेजने का एक मार्ग यह भी है कि, जब फल जोर से पड़ता है, तो उससे अंदर के बीज छिटक कर दूर चले जाते हैं। अमेरिका में एक ऐसा वृक्ष होता है, जिसके फल को जला-सा दवाने से ही उससे बीज बाहर निकल पड़ते हैं। गर्मी के दिनों में ऐसे बहुत-से

वक्ष है जिनके बीज-बाप धप-गन म
जार की आवाज करके फट जाते हैं और
उनके अंदर के बाज दूर-दूर तक छिन्न
जाते हैं। स्वान या विगनियम पक्षी
और वायलेट के बीज बहुत उछल-छमी
भाति आचरण करते हैं।

जंगल वन-म बीज वाय-द्वारा उछाय
जाते हैं। वन-स्वयं उछल के गिर
विभिन्न अंग प्रत्यक्ष की आवाज-सुना पत्ता
है। मध्य एशिया में एक ऐसा वन भी
है जिसके बीज परदार होते हैं। बहुत-से
वन-जम भाजपन गांधी गारवमडो
आदि के बाज बिना हट-त-पल्लवाके
भी होते हैं। बिलो नामक बाल के बीज
में भा पर होते हैं। भारतीय मेवा
आव-भारतिसी आदि के बीजों में भा
एसे रोप लग रहते हैं जिनके द्वारा व

स-वर बहुत दूर-दूर चले जाते हैं।
यों राय सा-सुनु परागट का काम
देते हैं। बाज वाय में दूर-त-तरना जाता
है और उछल अत-म यह पृथ्वी पर गिर
जाता है तो उसके रासा-नतु इस नम
पृथ्वी पर स्थिर कर देते हैं।

इससे पग-भ अधिकतर बीजों की इधर-
उधर-ल-चान में सत्यायन होता है। कभी-
कभी जानवरों के परो-म-ग-हूए बीजों
में बीज भा छिन्न रहते हैं और उनके एक
स्वान में अपने स्थाव-पर जान में बाज
भा साय-गी-माय चले जाते हैं। पत्नी
प्रकार विन्ध-भा बीजों का दूर-दूर-त-
ल-जामी = व-उ-व-रा पर अक्सर
जा एक प्रकार का बल उगा हुई मिलती
है उससे बाज भा इन्हीं विन्धिया द्वारा
ब-ल-पहुंचाये जाते हैं।

★

भगवान के नाम का पत्र

एक डाकघर के ह-नेटर आफिस में एक क्लर्क पत्रों को उछल-पलट रहा था
कि उसे स्वगवासी भगवान के नाम एक पत्र मिला। उसमें लिखा था-
है भगवान यदि आपन पाल पीन का पाछ प्रथम नहीं किया तो मैं
अपन घर से बाहर निकाल दूँगा। वह करण सम्मान एक बड़ा
का था। वधारे क-व न परिस-च-न-रा चार पा-द-म गिरि-गिर तक
च-न-जमा कर उस बड़ा का भज दिया। कुछ समय बाद फिर एक पत्र
आया। उसमें लिखा था-भगवान आपन जा पने भज का बि-द-ग-य-ध-य-व-न।
अबिन विनती है कि इस बार पने परिस-च-न-द्वारा न भज कदाकि
पिछरी वक्त-होन दस गिरि-गिर आपन लिख रख गिय थ

— परा मच (कच साप्ताहिक) में

★



फोनी पेलम द्वारा लिखित एवं 'बस्टा प्रेस सर्विस' द्वारा प्रकाशित 'दे मेड पार्जुस इन प्रिन्स'
का संक्षिप्त हिन्दी रूपान्तर

★

कुछ समय पूर्व अमेरिका में एक पुस्तक प्रकाशित हुई थी—'बावर हिज'। प्रकाशित होने ही पुस्तक की अच्छी प्रतियाँ हाया-हाय निक गयीं। सभी लेखकों की अपूर्व ऐयन-मोली में प्रभावित थे, किन्तु मजूरों की बात तो यह थी कि, उस पुस्तक का लेखक एडमिन् ज बेयर, फोन है, नहीं रहता है, क्या करता है—यह किसी को शान नहीं था। साहित्यिक सम्मानोपाधियाँ में भी वह कभी नहीं देगा गया था। मिस दा-मोन वॉर पहले उनकी रचना एक प्रमुख पत्र में प्रकाशित हुई थी। सभी ने उनकी रचनाओं की माँग करनी ली थी और इस छान्दसे जहाँ मैं ही यह एक व्यक्तिप्राप्त हो गया।

ऐसे उत्कृष्ट साहित्यिक के जीवन में अपरिचित रहना साहित्य प्रेमियों को खाने लगा। वे इस सम्बन्ध की आवश्यकता मबनीत



बेयर

विशेष शोध के रोचक तथ्यों से पूर्ण विवरण प्रकाशित [विषय-वी. वन कोक]

छान-बीन में जुट गये और एक दिन उन्हें पता चला कि, बेयर ने अपनी सारी बहानियाँ व उपन्यास कारागार में ही लिखे थे। मयाग की बात तो यह निकली कि, बेयर का लिखने का काम बेयर ही सजा मिली थी। और, वह काम था, जालसाजी—जाली बेच देना।

उपन्यास या कहानियाँ लिखना मुश्किल करने के पहले बेयर जालसाजी में अपराध में बार बार जेल जा चुका था। दाम्नि में, उसे सराव पीने की लत थी और नशे में जाली बेच लिखने का लोभ वह गवरण नहीं कर पाता था।

जेल में रहकर उगने समय बादने के लिए अपनी जमान-प्रतिभा का उपयोग निमा और परिणामस्वरूप गारा अमेरिका उगा प्रमया वन बंधा। किन्तु जालसाजी की आदत छूटी नहीं और एक दिन अपनी

इस आदत से तग आकर क्षोभ के मारे इस प्रतिभा-पुत्र ने आत्महत्या कर ली। उस वक्त उसकी उम्र ३८ वर्ष की थी।

जल जीवन का सफ़दुयोग कर इस प्रकार लाखों की सम्पत्ति अर्जित करने के कई उदाहरण मिलते हैं। जर्मनी के एक जेल में सन् १९२० से लेकर सन् १९३० के बीच एक बंदी ने जेबी विश्वकोश तैयार किया था। उसको इस पुस्तक के ३० सस्वरण प्रकाशित हुए और उसका अनुवाद कई विदेशी भाषाओं में हुआ।

सुप्रसिद्ध उपन्यास 'सेल २४५५, डेय रो' की रचना भी जेल में ही की गयी थी। इस पुस्तक का लेखक था एक ३४-वर्षीय व्यक्ति साइरिल बेसमैन, जिसे हत्या के अपराध में फाँसी की सजा दी गयी थी। अपने अंतिम क्षण की प्रतीक्षा की घड़ियों में

उसने इस उपन्यास की रचना कर डाली। उसकी इस वृत्ति ने उसके जीवन का स्वर ही बदल डाला। इस पुस्तक से जनता इतनी प्रभावित हुई कि, उसे मृत्यु-दंड से बचाने के लिए कई लोगो ने अपील की। अपील मंजूर कर ली गयी और साइरिल फाँसी के तख्ते से बच गया।

रॉमर्ट स्ट्राउड नामक एक अमरीकी

भी साइरिल के समान ही हत्या के अपराध में आजीवन कारावास भोग रहा था। अपने एकाकी जीवन से ऊबकर उसने जल-अधिकारियों से प्रार्थना की कि, उसे कुछ पशु-पक्षियों को पालने की अनुमति दी जाये। अधिकारियों ने प्रार्थना स्वीकार कर ली और स्ट्राउड ने कुछ केनेरी व अन्य पक्षी पाल लिये।



सर्वेटीस

व्यव्य कटाक्ष की अमर-प्राण पुस्तक 'डात क्यूबोट' का लेखक [चित्र की धन ओके]

३३ लम्बे वर्षों तक उन पक्षियों में दिलचस्पी लेते रहने से वह उनसे जीवन से भरी-भौंति परिचित हो गया। उसे कई रोषक जानकारी और अनुभव प्राप्त हुए। स्ट्राउड ने इन पक्षियों के सम्बन्ध में एक पुस्तक लिखने का विचार किया और 'स्ट्राउड्स डाइजस्ट ऑव डिजी-जब आव बर्ड्स के नाम के जब उसके द्वारा लिखी कोई ५०० पृष्ठों की पुस्तक प्रकाशित हुई, तो

उसकी ख्याति का बया कहना। एक स्वर से इस विषय के विशेषज्ञों ने पुस्तक को सर्वोत्कृष्ट करार दिया। स्ट्राउड देखते-ही-देखते एक बड़ी-सी धनराशि का स्वामी बन बंठा।

किन्तु डाक्टर विलियम सी माइनर की कहानी इन सब कहानियों से कहीं अधिक रोचक है। पागल्पन के दोरे में

हिन्दी डाइनेस्ट

डाक्टर माइनर ने सन् १८७२ में एक व्यक्ति को वटूर से मार डाला था। उस अपराध के कारण उन्हें ब्राडमूर के पागल अपराधियों के बारागृह में बंदी बना दिया गया। कुछ समय बाद ही उनका पागलपन दूर हो गया, किन्तु एक तो इसे प्रमाणित करना कठिन था, दूसरे हत्या का अपराध। डाक्टर माइनर न समय काटने के लिए पुष्पको को अपना साथी बनाया।

एक दिन उन्हें ज्ञात हुआ कि, सर जेम्स मरे को 'आक्मफोर्ड डिक्शनरी' तैयार करने के लिए शब्दों के प्राचीनकालीन उपयोग-नामवर्धा उद्धरणों की आवश्यकता है। डाक्टर माइनर ने अपने अध्ययन में लाभ उठाकर कई ऐसे उद्धरण सर मरे के पास भेजे। पत्र-व्यवहार करते समय अपने बंदी होने की बात को गुप्त रखने की पूरी सावधानी उन्होंने धरनी। अधिकांशियों की मित्रता पर डाक्टर ने उन्हें इस बात के लिए राजी कर लिया था कि, थोपार्न (ब्राडमूर के निवृत्त का गाँव) के पते पर आनेवाले सभी पत्र उनके पास पहुँचा दिये जायें।

सर जेम्स मरे को जब डाक्टर माइनर ने आठ हजार उद्धरण प्राप्त हो गये, तो उन्होंने इन विशाल प्रतिमा-पुत्र में मिलने का निश्चय किया और जब उन्हें यह पता चला कि, भाषाशास्त्र का यह विचारद पागल अपराधियों के जेल में रखा है, तो उन्हें जर्जर आघात लगा। फिर भी उनके हृदय में डाक्टर माइनर के

प्रति किसी प्रकार के असम्मान का भाव नहीं आया। कई बार वे डाक्टर माइनर से मिलने बंदीगृह गये और दण्डयोग के प्रकाशन में डाक्टर माइनर के प्रति अपनी वृत्तज्ञता उन्होंने मुकाबल में स्वीकार की।

अमेरिका के दक्षिणी राज्यों में "द प्रिजनेरीज" नामक पॉप गायकी की धुन ही ग्याति फँजी हुई है। ये पॉप गायक रेडियो और टेलिविजन के कार्यक्रमों में भाग लिया करते हैं। इन्हें अपार धन और धन दोनों की प्राप्ति हुई है। किन्तु यह इनका दुर्भाग्य ही है कि, उन अपार धन का उपयोग नहीं कर सकते, क्योंकि ये हत्या व बलात्कार के अपराध में आजीवन बारावास का दंड भोग रहे हैं।

एंड बर्मन, जानी ब्रेग, विली स्टुअर्ट, जानी डू और मार्गरेट साहर्म नामक ये पॉप अपराधी टेनेसी राज्य के बारावास में अपनी सजा के दिन पूरे कर रहे हैं। जेल की मोटरवादी इन्हें रेडियो और टेलिविजन-स्टूडियो तक पहुँचानी है। वहाँ पहुँचने तक ये कैदियों की पोशाक पहने रहते हैं, किन्तु रेडियो व टेलिविजन पर जाने के समय अन्य मुक्त नागरिक के समान वेष्टभूषा धारण करने की इच्छा इन्हें दे दी जाती है। रेडियो व टेलिविजन के कार्यक्रमों के अन्तर्गत इनकी गायी हुई गीतों के प्रामोत्तेज-रिपोर्ट भी तैयार किये गये हैं। ये रिपोर्ट इनके लोकप्रिय हुए हैं कि, राबर्टी ने प्राप्त रूप में ही काफी बड़ी धनराशि एकत्र की गयी है।

उल्कापात

रिचर्ड एफ. विल्फ की सुप्रसिद्ध पुस्तक 'मिस्टोन आव इयेन' के एक अध्याय का संक्षिप्त आयात



३० जून १९०८ प्रातःकाल ७ बजे का समय । साइबरिया के यनि शायी प्रदेश के आश्चर्य चकित लोगो न आकाश में एक अत्यंत उदीप्त प्रकाश राशि देखी और प्रत्यक्ष न समझा जैसे वह प्रचंड प्रकाश ठीक उसी के सिर पर गिरेगा। उधर इरुटस्क के भूकम्प योतन में भी उसी समय पृथ्वी के कम्पन का आलेखन हुआ।

पर वह करिस्मा था क्या और वह प्रकाश-पुंज गिरा कहीं यह किसी को भी पता नहीं चल सका।

प्रथम महापुंज के बाद वैज्ञानिको न पुन उस प्रकाश-मत्तन के सही स्थान की खोज शुरू की। कुलिब नामक एक रूसी वैज्ञानिक खोज करनेवाले दल का नेता था। उस खोज में कुलिक को बित्तही उल्काखंड मिले पर जिसकी खोज थी वह उसे नहीं मिला।

१९२७ में फिर दूसरी बार वह उसे खोजने निकला और भाग की अनक बठिनाइयो को झलता हुआ अंत में उस स्थान पर पहुंच ही गया, जहाँ

१९०८ में वह भयंकर उल्कापात हुआ था। उसमें अपन यात्रा वृत्तांत में लिखा है—
उम उल्कापात से वह घना जंगल एकदम नष्ट हो गया और आज भी वहाँ की धरती तण रहित है। कई मील तक वहाँ की धरती इस रूप में फट गयी है मानो एक प्रचंड भूकम्प ने उसको चीरफाड़ दिया हो। यन्-तन् बित्त ही गड्ड ज्वालामुखी के मुख के समान बन गया है—ठीक वैसे ही जसा चंद्रमा में हम दिखलायी पड़ते हैं। इस क्षण के एक आदिवासी ने बताया कि जहाँ उल्कापात हुआ था वहाँ उसका एक सम्बन्धी रहता था जिसने पास १५०० मक्खो था। उल्कापात के बाद उनमें से एक का भी पता नहीं चला।

किन्तु इस सफ़र यात्रा में भौतिक को उल्का का मूल प्रस्तर-खंड नहीं मिला। उसका अनुमान है कि वह मूल उल्का प्रस्तर जमीन में काफी नीचे धँस गया है।

वैज्ञानिको ने अमेरिका के अरिजोन नामक स्थान पर भी एक ऐसे ही भयंकर उल्कापात का पता लगाया है। उस जगह

४,००० फुट व्यास का एक गड्ढा बन गया है, जिसकी दीवारें बाहर से १५० फुट और गड्ढे के पेंदे से लगभग ६०० फुट ऊँची हैं। मगर उस जगह भी वैज्ञानिकों को उत्खा-प्रस्तर नहीं मिले। वैज्ञानिकों ने वहाँ की जमीन की मिट्टी नीचे से निवाल पर जाँच की। उनका कहना है कि, उत्खा के वेग से वहाँ की मिट्टी बिलबुल जलभुन गयी है।

२३ सितम्बर, १९२८ के 'भारत' में भी एक ऐसे ही उत्खापात की घटना छपी है। घटना २० सितम्बर की है। जालौन (उत्तर प्रदेश) के बत नामक गाँव के पास उत्खापात से, शत सापने में व्यस्त एक भूमि और उसके सहायक की मृत्यु हो गयी और एक तीसरा व्यक्ति भी घुरीतरह घायल हुआ। उस उत्खा-प्रस्तर का वजन ५० मन का और उसके गिरने के समय आकाश में भयंकर गड़गड़ाहट सुनायी पड़ी थी।

प्राचीन ग्रंथों में भी उत्खापात के बितने ही उल्लेख आये हैं। बाइबिल में एक स्थान पर उल्लेख आया है कि, ईश्वर ने आकाश में बड़े-बड़े पथर गिराये। यह सबके भी सम्भवत उत्खापात की ही ओर है। इसके अतिरिक्त रोमो शब्दकार लेवी ने ६५० ई पूर्व में एक उत्खापात का उल्लेख किया है। उसने लिखा है कि, जब राजा से दरबारियों ने एन्वेन पर्वत पर पत्थर बरसने की बात कही, तो उसे विश्वास ही नहीं हुआ। उसने कुछ व्यक्तियों

को जाँच के लिए भेजा, तो उनके सामने भी पत्थर आकाश से गिरे और भयानक नाद सुनायी पड़ा।

चीनी ग्रंथों में एक स्थान पर उल्लेख आया है कि, २३ मार्च ६८७ ई पू को वर्धरात्रि के समय आकाश के तारे पानी की तरह बरसने लगे थे। आलिबर नामक विद्वान का मत है कि, आकाश से गिरे इन पत्थरों की बहुत प्राचीन काल में पूजा हुआ करती थी। उसने लिखा है—

“अमेरिका के आदिवासियों की बस्तियों में बहुत से उत्खा-प्रस्तर मिले हैं। एक उत्खा-प्रस्तर अजरेवो के मंदिर में है, जिते वहाँ की अर्धसम्य जातियों आज भी पूजती हैं। २०४ ई पू में जो 'देवताओं की माता' की मूर्ति रोम में लायी गयी थी, वह उत्खा के पत्थर की है। द्राय का पलेडियम, रोम-स्थित नूमा की प्रतिष्ठ छाल और साइप्रस-स्थित वीनस की मूर्ति भी उत्खा प्रस्तर की ही हैं। एक्विता नगर की टिमाना की मूर्ति भी उत्खा-प्रस्तर ही रही होगी, क्योंकि उसके वर्णन में आता है कि, वह बृहस्पति से गिरी थी।”

आलिबर ने यह भी लिखा है—“यह अच्छी तरह से मालूम है कि, वह पवित्र पत्थर जो बाबे के उत्तर-पूर्व में लगा हुआ है, उत्खा प्रस्तर है। यह प्रस्तर सन् ७०० से पूर्व गिरा होगा।”

सबसे पुराना उत्खा-प्रस्तर, जिसके गिरने की तिथि वैज्ञानिकों को ज्ञात है, चेकोस्लोवाकिया के एल्बोगेन नामक

नगर के दाऊाहात में रखा हुआ है। यह उल्हापात १४०० के लगभग हुआ था।

अतसेस के एनसिसहादम के गिरजापर म भी एक उल्हा-प्रस्तर है, जिसके सम्बन्ध में उक्त गिरजापर की पुस्तिका में लिखा है — "१४ नवम्बर, १४९२ को एक आश्चर्यजनक पगलवार हुआ। मध्याह्न के ११-१२ बजे के बीच अचानक बादल गड़गने लगे और नगर में १३० सेर का एक पत्थर गिरा। एक लड़के ने इसे गिरते देखा। जहाँ यह गिरा था, वहाँ ५ फुट गहरा गड्ढा हो गया था। वहाँ के तलाशी-गरेस मैक्समिलियन ने उस पत्थर के दो टुकड़े करवा दिये। एक राउ आरिट्रिया के एक राजपुत्र के पास भेज दिया और द्वारा गिरजे में लटकवा दिया।"

ये उल्हा-प्रस्तर एक-दो की संख्या में ही गिरते हैं, यह बात गहरी। १८३० में पास में एक ही स्थान पर २-३ हजार पत्थर गिरे थे। पोलैंड के गुल्दुरन नगर में एक बार एक लात के बरीब पत्थर के टुकड़े घरों और दूरी प्रान्त की प्रस्तर-पर्या एक बार हगरी में भी हुई थी। १९ जुलाई १९१२ को अरिजोना में लगभग १४,००० प्रस्तर गिरे थे।

कभी-कभी आग का उल्हाओ से भर जाता है और घटी एक उल्हाओ की वर्षा हुआ करती है। एलियट नामक विद्वान ने लिखा है— "१२ नवम्बर,

१७९९ को तीन बज लड़के लोगों ने मुझे उल्हापात देखने के लिए जवाया। दूरव बड़ा गया था। सारा आकाश ऐसा दिखायी पड़ता था मानो आतिशबाजी के बानों से प्रकाशित हो उठा हो।

पहले लोगों का ऐसा विचार था कि, उल्हाएँ पृथ्वी से अत्यन्त निचट दिखायी पड़ती हैं और पृथ्वी से गिाली गंता के जल उठने से आती हैं। पर १८-वीं सताब्दी में दो जर्मन वैज्ञानिकों ने उल्हापात की ऊँचाई नाप कर यह पता लगाया कि, छोटी उल्हाओ की औसत ऊँचाई ७० मील होती है और उनका अत लगभग ५० मील की ऊँचाई पर होता है।

वैज्ञानिकों का कथन है कि, सभी प्रकार की उल्हाएँ छोटे छोटे पत्थर के टुकड़े हैं। जब ये चलते-चलते पृथ्वी के पास आ जाते हैं, तो पृथ्वी उनको आकर्षित कर लेती है और भयंकर धेग के कारण वायु-मंडल के घने भाग में पहुँचते ही, उनमें दहन की बरसी पैदा हो जाती है कि, वे या उनसे निकली हुई गैसें जल उठती हैं। इस प्रकार उल्हाओ की कुछ जीवन-सीला साधारणतः एक या दो तीरे में ही समाप्त हो जाती है।

अभी तक की उल्हाओ में जो सफेद बड़ी उल्हा हैं, वह म्यूयार्न के 'अमेरिका म्यूजियम ऑफ नेचुरल हिस्ट्री' में रखी हैं। उसका वजन लगभग एक हजार मन है।

★

हॉम में जोता जायेवाला थोडा भी कभी-कभी विद्रोह कर बैठता है।

—शरणा

★



जुगमूल श्री: हुलाहल श्री

आर्नेल्ड हट्मन्सोकर लिखित पुस्तक 'सब ऐंड दैट व्हाट धूमन नेचर' के आधार पर

*

सन् १९४० में जर्मन-मेना ने जब फ्रांस पर आक्रमण कर दिया, तो स्वभावतः ही हम लोगों की चर्चा का मुख्य विषय वही हो गया। हमारे मित्रों में एक व्यक्ति भूतपूर्व जर्मन-मेना में अफसर रह चुका था। एक दिन जब हम आपस में बैठे बातें कर रहे थे, तो अचानक ही वह कुछ बेंटा—“यदि आपने सामने एक ऐसा बटन रखा हो, जिसे दवाने-मात्र में ही पूरे जर्मनों का सारना हो जाये, तो क्या आप यह बटन दवाना पसंद करेंगे? साफ-ट्टी-साम, मोड़ी देर के लिए यह भी मान ले कि, आपने सभी मनु-यागव क्षमनी में हैं।”



[अद्वार मोष से भी बड़ा बताया जाता है। जब वह अपने दर्प में चरितार्थ होता है, तो परापर-दृष्टि तो क्या, साथ ही भी चुनौती देता है।]

सभी ने अपने-अपने विचारों के अनुसार उत्तर दिये। अधिकांश व्यक्तियों के उत्तर आवेगपूर्ण थे। यद्यपि उन्होंने अपने उत्तर के समर्पण में स्पष्ट तर्क भी उपस्थित किये, लेकिन स्पष्ट था कि, वे

भावनाओं के ज्वार में बह रहे थे। जो बटन दवाने के पक्ष में थे, उनका तर्क था—“सिद्धांतों की रक्षा के सम्मुख किसी के जीवन का प्रश्न कोई महत्व नहीं रखता। किसी महान् एक असीम शक्ति की सिद्धि

में गिनती के कुछ निर्दोष व्यक्तियों का भी पट्ट पड़ने, तो यह बिलगुल नगण्य-मा है।”

एक परील साहब ने तो यहाँ तक कह दिया कि, विश्व-अल्पाण के लिए बटन दवाना परम आवश्यक है। जब तक जर्मनी का विनाश नहीं हो जाता, शांति की आशा दुरासा है। विनाश के बाद ही निर्माण सम्भव है। इनके विपरीत, कुछ लोगों की दृष्टि में

यह घोर अपराध एक निरुपेक्षतम कार्य था।

जिन लोगों ने बटन दवाना उचित समझा, उनके निर्णय के पीछे वास्तव में, न्याय, तर्क या बुद्धि कार्य नहीं कर रही थी, बल्कि नाजियों के प्रति उनकी प्रति-

हिंसा की भावना ही प्रबल थी और वे किसी प्रकार भी अपनी घृणा को नियंत्रित नहीं कर पा रहे थे। जो लोग बटन दवाना अनुचित समझते थे, वे अधिक दयावृत्ति के थे और नाज़ियों के प्रति उनकी घृणा या तो इतनी प्रबल नहीं थी या वे उसे नियंत्रित करने में समर्थ थे। सम्भवतः उन वकील साहब को, जिन्हें बटन दवाना परम कर्तव्य जान पड़ा, सदैव से मार-काट, खून आदि कार्यों के प्रति एक आकर्षण सा रहा था।

मनुष्य यह सोचकर भले ही अपने मन को सन्तुष्ट कर ले कि, जो कुछ वह सोचता या करता है, वह न्याय बुद्धि और तर्क के राजा परतीलकर, ऐश्वर्य वास्तव में उसका आचरण बहुत कुछ उसकी भावनाओं से रजित रहता है। हिंसा और निर्दयता के प्रति आकर्षण केवल असभ्य व जंगलियों में ही नहीं पाया जाता, बल्कि अपने को अति सभ्य कहनेवाले जज, वैरिस्टर, वैज्ञानिक, राजनीतिज्ञ और धड़े-बड़े विद्वानों में भी पाया जाता है। जिसने भावों का जितना बल विकास

होगा, उतना ही अधिक क्रूर और हिंसा-प्रमी उसका स्वभाव होगा। वगैरे में से पोष उखाड़ना, पेड़ों को काटना, गेंद को जोर से मारना या सिनेमा, नाटक अथवा उपन्यास के कल्पित पात्रों को दुष्ट-मायाजी में खो जाना—य सभी कार्य हमारी आंतरिक हिंसा भावना को निर्दोष व अप्रत्यक्ष रूप से सन्तुष्ट करते हैं।

भाव विनाश बौद्धिक विनाश का अनु-



‘जो तोरो बँडा दुजे, ताहि भेष दूँइल’
[विश्व विक्रम]

यायी नहीं कहा जा सकता। कभी-कभी अत्यंत बुद्धि के लोग भी भावशून्य पाये जाते हैं। न्याय और औचित्य—यहाँ तक कि, अश्व सनीम सिद्धांतों की ओट लेकर भी वे अपनी

क्रूर हिंसा-वृत्ति को सन्तुष्ट करते हैं। हमारे भीतर प्यार और घृणा की भावनाएँ उसी समय धर धर जाती हैं, जब बाल्यकाल में हमारे व्यक्तित्व का निर्माण होने लगता है। बाद में धर धर अक्षर उनकी जड़ों को उखाड़ फेंकना कठिन हो जाता है। वे हमारे अचेतन मन में निरंतर वास किया करती हैं और जाने-अजाने हमारी चेतना पर

प्रभाव डालती रहती है। फलतः हमारे अधिकांश निर्णय और आचार-विचार इन्हीं भावनाओं से प्रेरित होते हैं।

अतः हमारी स्वाभाविक प्रवृत्ति का सामाजिक औचित्य में समर्थन यदि अत्यंत प्रयत्न हो जाये और बार-बार होता रहे, तो हम या तो सामाजिक निराशा के शिकार बन जायेंगे या अस्वस्थ-अथवा हममें कोई एक ऐसी मक्क भो पैदा हो सकती है, जिसके कारण आग लगाने, उठात मचाने, चोरी करने या अन्य किसी गैर-सामाजिक कार्य करने की तीव्र इच्छा हमारे मन में घर कर जाये।

निर्माण और विध्वंस की विरोधी प्रवृत्तियाँ प्रत्येक व्यक्ति, समाज और राष्ट्र में पायी जाती हैं। तानाशाहों तो लोगों की घृणा-प्रवृत्ति को उबसा कर ही राष्ट्र का शासन अपनी सुट्टी में रखते हैं।

फिर भी यह हर्ष का ही विषय है कि, विध्वंस या विनाश की प्रवृत्ति मनुष्य में प्रमुख नहीं। इन समार में एक और जड़ एटम बम के छेड़ लगाये जा रहे हैं, तो दूसरी ओर 'सेट लुट्टे फ़स्त्वशन कम्पनी' नामक एक मस्या में ५,००,००० डॉलर की रायत का भ्रान्त बनाना कुछ दिनों के लिए मिर्च उमरिष्ठ रोंग दिया या कि, भ्रान्त के कोने में एक विडिया ने अडे दे रोंगे ये। जड़ तब बल्वे नहीं निरुद्ध आये, निर्माण-कार्य पूर्ण स्वगित रहा।

ज्राणिक मनोविज्ञान में नायद मकवे यशो गोज जो हुई है, वह यह कि, वास्त-

विक भाव को दबा कर जब हम ऊर्ध्व विपरीत आचरण करते हैं, तो हमारा स्वभाव उग्र और विद्रोही बन बैठता है। अभी तक इस विपरीताचरण में उत्पन्न रोगों को मिटाने का सम्पूर्ण ज्ञान हमें प्राप्त नहीं हुआ है, किन्तु इस विषय में अनुसंधान चल रहे हैं। पक्षाघात, कैंसरों, बेहोशी इत्यादि जानमनु विषयक अनेक रोगों में पीड़ित बीमारों की मूत्र व्वाधि समझने और चिकित्सा करने की ओर अब तक काफी उन्नति की जा चुकी है।

आज तो दिन-भर-दिन हमें इस बात के ठोस प्रमाण मिलते जा रहे हैं कि, हम तभी किसी बीमारी का शिकार बन जाते हैं, जब अपराध, भय या विश्वास की भावना प्रबल रूप में पैदा होकर हममें एक अमाधारण मानसिक तनाव की स्थिति खदा कर देती है। हमारा भाव-मनुस्मृतिविगाट जाता है और परिणामस्वरूप स्वास्थ्य।

इस प्रकार बुद्धि और भाव-जगत की बारीकियों को जैमे-जैमे हम समझते जायेंगे, बेंगे-बेंगे हमें साहूम होगा कि, घृणा की भावना किस प्रकार हमारे प्यार की भावना को दबा देती है। मानव-स्वभाव को अधिक समझने से ही हम सामाजिक अथवा नैतिक मान्यताओं का सही मन्था-बन कर मनेगे और स्वयं तथा सत्तार को तटस्थ होकर निष्पक्ष भाव में देख मनेगे-गमन सर्वेगे एक भावी मनुष्य के लिए हिमाविहीन स्नेहमय समार का मध्यस्तापूर्व निर्माण कर लनेगे !

★



હોમા

मस्तिष्क को शांत रखता है।

लोमा

अधिक बाल उगाता है।



होमा

सुफेद बालोंको श्याम बनाता है।

लोभा

बड़ी प्यारी खुशबू देता है



सफ़ेद वालोंको श्याम बनाता है।

श्रीत एकांशः श्रीश्च श्रीश्च श्रीमादेवीता, अहमहावाक् ।

दम्पत्यु. श्री. नरोत्तम चोपडा कपजी, अम्बई २.

दिल्ली एजन्ट : मेसर्स : दिल्ली मेडिकल स्टोर्स प्राइवेट लि., दिल्ली
कलकत्ता एजन्ट : मेसर्स : शाह बाबोरी अगेन्ट्स क १२९, राधा बजार स्ट्रीट
कलकत्ता १ स्टोकिस्ट्स : म्मार्. जे. मेरुता अगेन्ट्स ब्रथर्स सीनियर रोड, ब्रजमेर.



अपने बालों की आकर्षक तरंगों को कायम रखिए!

टॉम्को का सुगन्धित नारियल का तेल आपके बालों को अपनी जगह सुव्यवस्थित रखता है—साथ ही यह इतना हल्का भी होता है कि आपने बालों की प्राकृतिक तरंगें निखर आती हैं। चमेली, गुलाब, लैबेण्डर—इन तीन मोहक सुगन्धों में से कोई भी पसन्द कीजिए।

१५ से भी अधिक वर्षों से भारत का लोकप्रिय बेच तेल

सप्ताह में एक बार अपने बालों को टॉम्को द्वारा निर्मित नारियल के तेल के शैम्पू से धोइए। यह आपके बालों को कोमल और प्राकृतिक रूप से तरंगित रखने में मदद पहुँचाता है।



**टॉम्को द्वारा निर्मित बालों के लिए सुगन्धित
नारियल का तेल और शैम्पू**

खुदा आवाद सर्वे सखनऊ को

खुदा के वैभव विलास और जीवन के आनंद मधुर पद को लेकर सखनऊ की अपनी निजी शान है, अपना खास तौर-तरीका है, अपनी जिराली आन बाज है। नीचे की पंक्तियों में अमृतलालजी नागर ने सखनऊ के 'तीन लोक से न्यारे' व्यक्तित्व की जो सतरंगी रेखाएँ खींची हैं, वे उन जैसे एक सिद्ध 'सखनवी' की ही पेंखनी से प्रसृत हो सकती हैं। इस लेख के लिए हम आकशवाणी, सखनऊ के आभारी हैं।

★

खुदा आवाद रखे सखनऊ को, फिर गनीमत है ये मौजूदा जमाने में जब कि, चारों तरफ मारो-काटो का शोर मच रहा है, रियासती घट्टे चोचे

लड़ा रहे हैं—अब ये बस आया और अब वो आया।

हम फला को अपनी जमात में बँटने देंगे, फला को नहीं—इस बात पर बड़े-बड़ों की चोचे खुलने लगी और बातों की रफ्तार इस बदर तेज हुई कि, अब तो खबरों की दुनिया पक्काई में नहीं आती। ऐसे वक़्त में यह सखनऊ या ही रंग है कि, जमाने को टगड़ी मार कर थोड़े वक़्त के लिए जहाँ-ना-तहाँ रोक दे। आज अद्वारह रोज से

सखनऊ की एब खबर ने सारे आलम को बच्चे धागे से बाँध रखा है। गली-सड़क, बाँले-मुहल्ले, पड़ोस, सात समुंदर पार

तक, ज़िधर देखिये, उधर इस बात की खर्चा छिड़ी हुई है कि, सखनऊ में शाही खजाना निबल रहा है।

इन अद्वारह दिनों में हर दिन में जाने कितनी बार हमारे यह चौक, नख्खास और हुसैनाबाद में यह सनसनीखट खबर फैली है कि, खजाना निबल आया। किसी ने नौ लाख निबाल कर दिखा दिये, तो किसी ने नौ करोड़। जमाना चूँकि साइटिफिक है, इसलिए शाही खजाना भी साइटिफिक तरीके से ही निबल रहा है—यानी अपनी हिस्ट्री के साथ-साथ।

यकीन न हो, तो सखनऊ तनारोक लावें, चारबाग स्टेशन पर किसी दफ्तेवाले का दामन धामें, चौक आयें। रास्ते-भर में दफ्तेवाला, जो यकीनन बोर्ड नवाब



[‘किसरो न दे मौला
उसको दे आमदुसला
—इसी रूप में प्रसिद्ध थे
आमदुसला, सखनऊ के
एक लोकप्रिय नवाब।]

होगा, आपको शाही सजाने का सब हाल बतला देगा—“आसफुद्दौला के जमाने के पूरे एक दर्जन तो हुजूर, ऐसे होंगे निकले हैं, जिनका बज्रन ढाई-ढाई सेर है। और सरकार, याजिदअली शाह के जमाने का एक बटेर है, बदामबाज, लाले यमन का बग़ा हुआ। देखने में तो सरकार, छटकी-भर का लगता है, मगर उसमें कोई ऐसा जादू का जोर है कि, हर बाटे को भारी पड़ता है—तोला माया, रस्ती की तो बात ही क्या अजों, मनो में तुल गया, मगर नवाबी जमाने का रस्सनवी बटेर अब भी सारी दुनिया के लिए भारी है। और, फायदा चलाता है, हुजूर कि, हर चौट पर एक नीलसा हार निकल आता है। आज अठ्ठारह राज से दिन और रात सुदाई हो रही है, गरीबपरवर। जिधर देखिये, उधर दीप्ति ही-दीप्ति बिलरी है। दस्तावेजों निकली हैं, नक्शे निकले हैं। हर नक्शे से एव-एव सजाने का पता लगता है और हर सजाना हुजूर, मुदा झूठ न बोलवाये... आपने बंटे जीते रहें, पहले सजाने से बड़ा होता है। अब तो मुना है, बदामबाज कि, पूरा रस्सनऊ सुदने आता है, क्योंकि बल्कले में एक बगाली नजुमी आया है, जो उल्लू की आँस का मुरमा आबबर हर तरफ सजाने ही-सजाने देखता है।”

रस्सनऊ की तहजीबो-नमदुन के बड़े तो दरअसल यहाँ के इक्के-नींधाले हैं, जो चारबाग स्टेशन से बाहर निकलते

ही परदेसी मुसाफिरो की अपनी लच्छेदार जवान के जाल में पंसा घर उसके मजिन्ने-मकमूद तक पहुँचते-पहुँचते अपने किराये की चबूत्री में अपने बीड़ी-टैम्स की इक्की भी जोड़ ही देते हैं और रसीद के तोर पर दुआए-तौर देकर बहते हैं—“अन्ना आपको जीता रखे, सरकार! हम सलामत रहे, परिवार में बेला-मुलाय फूले। आप ही की जूतिया के तुर्कल से रस्सनऊ आबाद है, बदामबाज ।”

और, अपने ठहरने के ठिकाने तक पहुँचते-पहुँचते परदेसी मुसाफिर रस्सनऊ के बागे में अपना जो बल्मना चित्र बनाता है, वह बाफी हद तक नयी इमारतों में भरा-भूरा न हाकर खडहरो के आलम में सजना है। इक्केवाला हरषद कोशिस करके उसके मन में यह बँडा हो देता है कि, आज का रस्सनऊ रस्सनऊ ही नहीं। जो शहर था, वह सन् ५७ में तबाह हो चुका—अब तो फकत उसका नाम का साइनबोर्ड चारबाग स्टेशन पर लगा रह गया है। इसके अलावा वह यह समझता है कि, लखनऊ के रहनेवाले सब नवाबों की औदाद है।

यहाँ की गली-गली में टायरों का हुजूम है, सवामफों की भट्फिन् है। जिधर देखिये, रस्को-मीत का आलम है। यहाँ तीतर लपेटे हैं, बुलबुल अड़्डो पर पहुँचहानी हैं और यहाँ बटेरों की बादशाहत है। यहाँ के बोबे ऐसे हैं कि, एव-एव उस्ताद का नाम रस्को-मुनात सब रंगान है

और उनके पट्टे चीनो-जापान तक सर-
नाम हैं। यहाँ के कनकौवेबाजो का
यह हाल है कि, दुनिया के सात परदो
में ऐसे हुनरमंद न निकलेगे। बड़े-बड़े
हिटलर, मुसोलिनी तक उनका लोहा
मान गये। यही एक ऐसा शहर है, जहाँ
अफीमचियों का मेला-का मेला लगता
था और नबाइयो में आलसियों की पर-
वरिश के लिए एक अहदीखाना भी
आबाद किया गया था।

इन तमाम बातों को समेट कर गौर
करने पर जो नतीजा निकलता है, वह
यह है कि, लखनऊ की सम्पत्ता बदचलनो,
धेकारों और आकारागदों की सम्पत्ता
है। मगर जनाब हम भी किस फिलासफी
के चक्कर में पड़ गये। जमाना अगर
हमारे खिलाफ सिर उठा रहा है, तो क्या
यह मुनासिब है कि, हम भी अपने ऊपर
उँगली उठाये? चबूखानो ने जमाने से
आज के काफी हाइसो तक, घाही चौक
की रौनक से लेकर आज
के हजरतगंज के शबाब
तक, लखनऊ से हमें यही
सीखने को मिला है कि,
मिया इस्म न देखो दिल
देखो। यह दिल जो कि,
जरा जोश में आकर हिस्ट्री
को लतरानी बना देता है।

हमसे जब कभी कोई
लखनऊ की हिस्ट्री के बारे
में कुछ पूछता है, तो यकीन

मानिये, हम झुंझला उठते हैं। मला
पूछिये कि, लखनऊ का हिस्ट्री से क्या
काम? हिस्ट्री अपने कामदे और कानून
से बनती रहती है। हम तो उससे भी
घड़ी-मर को जी बहला लेते हैं—हिस्ट्री
को भी लतरानी बना लेते हैं।

एक बार एक परदेसी दोस्त न सवाल
किया कि, भाई साहब, लखनऊ की
इमारतों पर मछलियाँ क्यों बनी हुई
हैं? हम चक्कर में पड़ गये। अगर हम
इतिहास के जानकार होते, तो गुजा-
उद्दौला, आसफुद्दौला की पच्चीस पीढ़ियों
का पीछा कर डासते और मोहनजोदड़ो
के खड्गरो में से लखनऊ की मछली
खोज निकालते। मगर यह कि, हम
छहरे लखनऊ के नाविल-नवीस—बिस्ते
बहना हमारा काम, लतरानियों उड़ाना
हमारा पेसा। एक सूँव आयो, एक शेर
पाद आयो। हम उड़ घले।

इतिहासकार की बम्भीरता अपने चेहरे



मुर्गों की लड़ाई

[नवाबों के शासक में सरसम्ब लखनऊ
का यह भी एक आम शगल था।]

पर लाद कर हमने कहा कि, भाई साहब, लखनऊ की हिस्ट्री सिर्फ दो जगह ही मिल सकती है—एक तो यहाँ के दिलफेन जवानों की आह में, दूसरे परियों की सुरमीली-कटीली निगाह में। और, मछलियों के बारे में कहा जाता है कि, वाजिदअली शाह के पुरखे जब दिल्ली के काम से थकवा कर लखनऊ की नवाबी करने आये, तो गोमती में परियों की रेम हुई। जूल्फे मौजों में अठखेलियाँ करने लगीं। उस वक़्त की मीनरी देखकर एक शायर येसाल्ता दिल धाम कर चोख उठे—

“नहाने में जो सहराती
है, जूल्फे-मार दरिया में।
तैदपने लगती है पानी में
मौजें मछलियों बनकर ॥”

सुनते हैं और आँही-निगाहों की तबा-रीख में पढ़ा भी है कि, वाजिदअली शाह के पुरखे अपने खानदान में आनेवाले बौहेनूर-इस्क का खयाल करके कुछ इस कदर मुग हुए कि, जूल्फे-मार की मछली घनावर पर-पर में तटपा दी।

खैर, जाने दीजिये। नया जमाना हिस्ट्री को लखरानियों के रूप में नहीं देखता चाहता और अफीम की जगह भी अब बाफी में ले ली है। लिहाजा, मजबूर होकर हमें भी नये जमाने के साय-माय तरक्की-ममद होना पड़ता है। हिस्ट्री को हिस्ट्री के ही रूप में देखना पड़ता है। नवाबी में क्या होता था, इस किस्से को छोड़िये। और, जो कुछ भी होता रहा

नवनीत

हो; मगर यह सच है कि, दिल-दिमाग और जिस्म की बरबादी होती थी और दोलत के सजाने गोमती के पानी की तरह बहते थे। अपने बुजुर्गों की बरबादियों को हम आज तक ढोते घले आ रहे हैं।

पचास साल पहले बाफी का चलन गो नहीं चला था, मगर आज के बाफी पीनेवालों के बुजुर्ग नये पंखन में ढलने लगे थे। अफीम के अट्टे बहुत कम हो गये थे। अंग्रेजी के स्कूल नये जमाने के मस्माने बनकर लखनऊ में आबाद हो चुके थे। अंग्रेजी पर इतना जोर दिया जाता था कि, दर्जे में जो न बोले, उस पर फाइन। अंग्रेजी के याद उर्दू फारसी का बोलचाल था, उगी तरह जैसे साहब के याद मेम का रतवा होता है। हिन्दी खानसामी की तरह बही पड़ी हुई थी। पढ़नेवाले लड़कों को अखबार में उतनी ही दूर रखा जाता था, जितना मग्ने-मुग्ने बच्चों को आग में रखा जाता है। और, मिडिल-मास की खान उस वक़्त में सबसे निराली थी। घरों में औरतें ढोलक के बीत जोड़-जोड़ कर गाती थी—
“मेरा हमारे मिडिल पास अंग्रेजी बिगुल बजाने है।”... जिसके घर का लड़का मिडिल पास हो जाता था, उस घर की खान बढ जाती थी—दावने हुआ करती थी।

अंग्रेजों की ताकत पर गैबी अखौदा था। हिन्दू बहने थे कि, अशोक-वन में भीताजी ने त्रिजय को वरदान दिया था कि, कलजुग में तुम्हारा राज होगा,

६८

शिवदूबर

तो इसीलिए सात समुद्र पार वाली भत्ता टूरिया सीता-राम के देश में राज करने आयी। मुसलमानों में भी राज-भक्ति कुछ कम नहीं थी। हिन्दू-मुसलमान इस मामले में करीब-करीब एक-से थे।

और, यही नहीं, उनमें हर तरह के आपस में बड़ा इत्फाक था। सन् सात की बात है—मुहर्रम के दिन थे। हिन्दू की बारात उठने लगी थी। लोगों ने समझाया कि, न उठाइये—दिलानारी होगी। हिन्दू मान गये। मुसलमानों की खबर लगी, तो डेपुटेसन लेबर पहुँचे कि, बारात जहर निवालिसे, साहब।

पहले की तो बात ही जान दीजिय सन् उन्नीस तक यही हाथ था। म्यूनिसिपैलिटी के इलेक्शन में चौक के खरील केदारनाथ और नयाब फिद्न साहब लड़े हुये। जीते फिद्न साहब और वह भी हिन्दुओं के बोटों से। वैसे पालिटिक्स चर्चा कोई आम चर्चा न थी। लोग दूर ही रहते थे। फिर भी जमाना आम तो घट ही रहा था और बढ़ते हुए जमाने में आजादी की आवाज भी घट रही थी।

साहब के पेशे के तौर पर यहाँ बदला, तारकशी, नदनी, उत्तू, सोजनवारी, बसुड़ी, मिट्टी के खिलौने, फर्नी, आतिश-बाजी बंगरह का काम खूब चम्का था। लखनऊ के कदले में यह एक खास बात थी कि, छ मास सोने में कई सौ गज बदला निकल आता था। नदनी गोटे की किस्म की चीज होती थी, जिसका

बनानेवाला आखिरी खानदान मुहम्मद इसहाब, मुहम्मद इस्माइल और मुहम्मद इब्राहिम के साथ चला गया। नया लखनऊ इस फन को नहीं जानता।

पशों आतिशबाजी ऐसी बनती थी कि, बपड़े या हाथ पर रत कर जलाओ, मगर बपड़ा या हाथ न जले। भोंटो में खिलौना और फजले इसमें मशहूर थे और नक़्क़ाली में बड़े पेट घाले बंदर और मुक़दूर।

पचास बरस पहले लखनऊ की आँखें आधी खुली हुईं और आधी सुमारी से बंद थी। फिर भी जनता में जोश था। सन् १९०२ के प्लेग में यहाँ के हेल्थ-अफसर डाक्टर विश्वोरीलाल ने जनता की सेहत का खयाल करते यह हुक्म निवाला कि, लोग मोमती पर जाकर रहें। हिदायतुल्ला तवायफ का भाई था। उसने इसने खिलाफ बड़ी जोर से आवाज उठायी। जहाँ आज मेडिकल कालेज बना हुआ है, उसी जमीन पर उसने घड़ी भारी सभा की। डाक्टर साहब के हुक्म के सिगफ रेजोल्यूशन पास किये। गीत जोड़ कर मखोल उठामा—'रिती में बगला छावा दे विश्वोरीलाल।' सरकार ने इस आंदोलन को अहमियत न दी। हाँ, हिदायतुल्ला कोई बाबेला न मचा रहे, इससे लिए पुलिस-स्टाटिक्स उसने साथ कर दिये। मियाँ हिदायतुल्ला बहा बरते

'मत्वा मेहरवान है, दो मोकर दिये हे।'

अपनी शक्ति का सदुपयोग आप किसना करते हैं ?

जीवन एक व्यापार है, सीसों का सौदा है। इसे व्यापार के रूप में ही ग्रहण करना चाहिए। शानि-साम सतुलित रहे और व्यापार चलता रहे—इसकी दिशा प्रकृति से अधिक और बोन दे सकता है ? छप निर्मास का शास्त्रन ब्रम यहाँ कमी दूरता नहीं। इसलिये तो यहाँ मस्तिष्क है, शक्ति है, सृजन है और जीवन है !

★

जीवन का आनंद एवं उपस्थितियों सम्भव है, जब अपनी शक्ति का आप सदुपयोग करें। शक्ति का अपव्यय करने वाला व्यक्ति सदा आवाग के तारे गिनन की ही कोशिस करता हुआ दिमागी देता है। अपने ध्येय की वह कभी पूर्ति नहीं कर सकता। भाग्यवश उसे कभी सपना मिली भी, तो वह इतना जीण-शीर्ष एवं अस्थिर होता है कि, उसमें प्राप्त सुख का उपभोग वह कर ही नहीं सकता।

मीचे दी हुई प्रस्तावनी के आप स्वयं अपनी परीक्षा कीजिये कि, आप अपनी शक्ति का सम्पूर्ण सदुपयोग कर रहे हैं या नहीं ? प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 'हाँ' या 'ना' में निवाले लीजिये।

✓ क्या आप नवनीत



[शक्ति संचालन]

प्रत्येक कार्य के लिए एक निश्चित अर्थ निधारित करते हैं और उसी समय में उस कार्य का मध्यम करने की चेष्टा करते हैं ?

२ क्या आप अपना पार्यक्रम एवं दिन पढ़के बना लेते हैं ?

✓ क्या आप काम करते समय आर-राम सामग्री अपने पाग लेकर बैठते हैं, ताकि बार-बार उठना न पड़े ?

✓ क्या आप कार्य की बाह्यता में न पड़कर उगे शानिपूर्ण एवं स्थिर-चित्त रह कर करते हैं ?

✓ आलोचना, दापारोपण—अपने काम की दिशा के प्रणाली में भी क्या आप अपने आपको सतुलित रख पाते हैं ?

✓ ६. क्या अपनी महत्ववाशाओं को आप विवेक में

नियमित रखते हैं और अवसर की बमी या साधारण असफलताओं से मन को निराशा होने से बचा लेते हैं ?

७. क्या आप बातचीत करते समय स्थिर रहते हैं ?

८. सोने के समय क्या आप अपने दिमाग को चिन्ताओं से मुक्त कर पाते हैं ?

९. क्या आप अपने क्रोध या चिड़-चिड़ेपन को दबा सकते हैं ?

१०. क्या आप दूसरों की प्रसन्नता या अप्रसन्नता से स्वयं को चिंतित अथवा दुःखी होने से बचा लेते हैं ?

११. क्या आप अपनी सामर्थ्य-भर चेष्टा कर सतुष्ट हो जाते हैं और आगे क्या होता है, इस चिन्ता से मुक्त रहते हैं ?

१२. क्या आप दूसरों के मामलों में तटस्थ रह पाते हैं ?

१३. क्या आप साधारण कष्ट या मामूली मतभेद को असाध्य रोग और

गम्भीर स्थिति न समझ कर छोटी-छोटी बातों से मन को दुःखी होने से बचाते हैं ?

१४. क्या आवश्यकता से अधिक प्रसन्नता अथवा निराशा से आप बचते हैं ?

१५. मौसम या वातावरण प्रतिकूल होने पर क्या आप प्रसन्न रह पाते हैं ?

प्रत्येक स्वीकारात्मक उत्तर के लिए आप ५ अंक गिन लीजिये । यदि आपके भ्रको की संख्या ५० या उससे अधिक है, तो आपकी शक्ति का अच्छा उपयोग होता है । ४५ से ५० अंक भी सतोपजनक हैं और ३५ से ४५ सामान्य, लेकिन यदि आपन ३५ से भी कम अंक प्राप्त किये हैं, तो आपको अपनी शक्ति बरबाद करने से बचना चाहिए । शक्ति का सदुपयोग सभी सम्भव है, जब आपकी इच्छाएँ ब मनुष्य-काक्षाएँ आपकी सामर्थ्य के योग्य हों । ध्यर्थ ही आकाश के तारे गिनने की चेष्टा करने में आप दुःखी व निराशा ही होंगे ।

★ कविवर पंतजी का नामकरण

पतंजी ने स्वयं अपना नामकरण किया । एक बार उनके बड़े भाई श्री हरदत्त पतंजी मेरे मेहमान थे । उन्होंने बताया कि, पतंजी के बचपन का नाम था—श्री गोसाईदत्त पतंजी । इनके और दो भाई थे, जिनके नाम थे—श्री रघुवरदत्त पतंजी और श्री देवीदत्त पतंजी । श्री हरदत्त पतंजी के कोई विहारो मित्र थे, जिनका नाम था—सुमित्रानन्दन सहाय । उनके पुत्र अक्सर आया करते थे । गोसाईदत्त पतंजी को यह नाम इतना पसंद हुआ कि, उन्होंने अपने को 'सुमित्रानन्दन पतंजी' लिखना शुरू कर दिया और अब तो लोग इनके पुराने नाम को जानते भी नहीं ।

—'वल्गन'जी ('सरस्वती' से सामार)

अर्थ व व्यवसाय की सामग्री

पलेन मैसन द्वारा लिखित, युग की दृष्टिपूर्ण समस्या का एक विशालकोकन देनेवाले से।
सक्षिप्त हिन्दी रूपान्तर

★

रोम और मिस्र में गुलामों के वय-विषय की कहानी तो आज सम्भवतः बहुत पुरानी हो चुकी है, किन्तु आज के इस 'मुसम्म' युग के 'मुसम्म' कहलान का शायद करनेवाले राष्ट्रों में भी मनुष्य का वय-विषय अन्य विषयों व्यापार के समान ही जारी है। पूर्व के जापान, चीन, इटाली, ईरान, अरब आदि देश तो वच्चों, विधवाओं व युवतियों के लुपे-लुपे व्यापार के लिए घटनाम है ही, पर पश्चिम के देश भी इस दोष में मुक्त नहीं हैं। विधवा-पिगी रूप में वही वच्चों का वय-विषय आज भी चलता ही है।

इंग्लैंड, अमेरिका और यूरोप में वच्चों को गोद लेना इतना आसान नहीं, क्योंकि गोद लेनेवालों की मर्यादा अधिक होती है और वच्चों बहुत कम मिलते हैं। इसी कारण यहाँ कोई ऐसी समस्याएँ हैं, जो वच्चों को गोद देने का व्यापार ही करती हैं। अपने इस व्यापार का वे नाजायज लाभ उठाने से नहीं चूकती। वच्चों को गोद लेनेवाले इच्छु व्यक्तिओं में वे समस्याएँ ऐसे व्यक्तियों का चुनाव करने में काफी सावधानी करती हैं, जो मुँहमाँगी रख देंगे। और, जब तक गोद लेनेवालों की मर्यादा अधिक होगी

और वच्चों की मर्यादा कम, तब तक सम्भवतः इन समस्याओं का यह बोर-बाजार का व्यापार चलता ही रहेगा। यह कहने की आवश्यकता नहीं कि, वच्चों को गोद देनेवाली समस्याएँ कानूनन कोई रखम गोद लेनेवाले इच्छु व्यक्तियों से अपने स्वयं के लिए नहीं भोग सकती-न ही वच्चों की कोई कीमत आँकी जा सकती है। परन्तु कानून अपनी जगह है और इन समस्याओं का व्यापार अपनी जगह!

इंग्लैंड की एक महिला इस तरह के व्यापार में अन्य सभी व्यक्तियों से बाज़ी मार ले गयी है। वह तो मुलुआम के सब के साथ कहती है कि, उसने '४००' में भी अधिक वच्चों की बिक्री की है।

इस महिला ने अविवाहित माताओं के लिए एक 'आरोप्य-वेद' थोड़ा रखा था और इस तरह इसे काफी वच्चों मिल जाया करते थे। इस 'आरोप्य-वेद' में कोई भी बिना किसी पूछताछ के निम्न तरीके सचता था। यह स्वाभाविक ही है कि, कोई अविवाहित माता अदालत में इस महिला के विरुद्ध शवाही देने के लिए तैयार नहीं होती थी और इसी कारण इस महिला के विरुद्ध अब तक कोई कार्रवाई नहीं की

जा सकती। बुंवारी बन्पाएँ अपनी नाजायज सतान से छुटकारा पाने के लिए, इसी 'आरोग्य-वेद्र' का सहारा लेती थी, क्योंकि वे जानती थी कि, उनके बच्चे यहाँ मोद ले लिये जायेंगे। पर उनमें से किसी को भी यह नहीं मालूम हो पाता था कि, उससे बच्चे को 'मोद' देने के लिए कितनी रकम इस महिला ने बगूल की।

इस महिला के 'आरोग्य केद्र' की सबसे बड़ी खूबी यह थी कि, मरीजों से लेकर परि-वारिवाएँ तक अविवाहित माताएँ ही हुआ करती थी। यह महिला मुसीबत में पड़ी हुई युवतियों की सहायण होने का बोग 'रक्षक' बड़ी होशियारी से अपने जाल में फँसाकर उन्हें अपनी इच्छा पर चलने के लिए मजबूर कर देती थी। स्थानीय डाक्टरों व पार्लमेन्ट के सदस्यों को भी धेक्कूफ बनाने में यह पीछे नहीं रहती। समय-समय पर बदे के नाम पर काफी रकम ऐंठ लाया करती थी।

इस महिला को अपने इस अनैतिक व्यापार से काफी आमदनी थी। प्रति बच्चे पीछे कम-से-कम ५० पौंड यह कमा लेती थी। कई बार तो यह रकम २०० पौंड तक पहुँच गयी थी। किन्तु पुलिस को अतल तक हो ही गया। जाँच-पड़ताल आरम्भ हुई। 'आरोग्य-वेद्र' का चप्पा-चप्पा छान मार गया। फाइले उलटा कर देखी गयी, परन्तु यह महिला अपने इस व्यापार में इतनी चतुर है कि, पुलिस को कोई प्रमाण नहीं मिल सका। आजकल यह एक ऐसे

कलब का संचालन कर रही है, जहाँ बुंवारी माताएँ घरेलू नामकाज में हाथ बटाने की नींवरी पा सकती हैं।

पश्चिम के कई देशों में यह घृणित व्यापार जारी है। यह सत्य है कि, ऐसे व्यापार में स्त्रियों की सख्या अधिक है, किन्तु ऐसे पुरुषों की भी कमी नहीं है, जो पुलिस की आँखों में बड़ी सफाई से घल शोबकर बच्चों, किशोरों व बन्धियों का वय-विश्रय किया करते हैं।

पूर्वी एशिया बच्चों के व्यापार की बहुत बड़ी मंडी माना जाता है। यहाँ बच्चों के दाम भी बहुत कम हैं। सिंगापुर में बच्चे अकसर इसलिए बेचे जाते हैं कि, उनसे माता-पिता अपनी गरीबी के कारण उनके भरण-पोषण का भार वहन करने में असमर्थ होते हैं। सिंगापुर में लगभग ८,५०,००० चीनी व्यक्ति अपनी सतानें प्रति वर्ष बच डालते हैं। बच्चों की खरीद-फरोख्त की इस मंडी में बालक या बालिका की कीमत १२ पौंड से लेकर ५ पौंड तक होती है। कभी-कभी तो इससे भी कम मूल्य में बच्चे मिल जाते हैं।

सिंगापुर में इस व्यवसाय को रोकने के लिए कोई कानून नहीं है। पर उपनिवेश-दफ्तर इस विषय में आवश्यक जाँच-पड़ताल कर रहा है, ताकि इस अमानुषिक व्यवसाय को बंद किया जा सके।

सिंगापुर में बन्धियों को इस विप्री को 'स्थानांतर करना' कहते हैं और जहाँ तक सम्भव होता है, इनकी खरीद-बिक्री का

पूरा विवरण रखा जाता है। बानूनन ऐसा करना आवश्यक है। यह बानून मुई साई (नन्ही परिचारिकाओं) की बिन्नी को रोकने के लिए बनाया गया है, क्योंकि घर का काम करनेवाली इन बालिकाओं से उनके मालिक व मालकिन बड़ा ही बुरा व्यवहार करते थे।

इस बात के भी प्रमाण प्रमाण अब प्रमाण में आये हैं कि, कई निरुद्ध प्रवृत्ति के लोग मोद लेने के काम पर बालिकाओं को वैश्यावृत्ति बनाने के विचार में ही गरीबने हैं। वैश्याएँ भी बालिकाओं का इसी इरादे में खरीदती हैं कि, वे बड़ी होने पर उनके व्यापार को आबाद करेंगी। इन तरह वैश्याएँ अपनी गार ली हुई पुत्रियों की बर्माई पर जीवन-निर्वाह करती हैं। वे मुबतियाँ उन पत्थाजा के घर में रहती हैं और अपनी इन 'मत्थाजा' का काफी बड़ी खर्च देन पर ही उनसे छुटकारा पानी है।

यह कुछ आश्चर्य की ही बात है कि, छोटे लड़कों की बिन्नी पर यहाँ कोई नियंत्रण नहीं है। मन्नि अधिरारियों का कहना है—छोटे बच्चों का घर विप्रय मन्त्रियों की अपेक्षा अधिक होता है। यह बात भी

छिपी नहीं है कि, भीस भोगने का पेशा अपमान के लिए ही अधिकतर बच्चे खरीदे जाते हैं। इनका मालिक प्रति दिन इन्हे विभिन्न स्थानों पर भीस भोगने के लिए भेजता है और इसके बदले इन्हें वैश्या भोजन देता है। इस तरह भीस भोगने से बच्चे बहुत पैसे या अनाज एवम् घर लेते हैं, जो इनके मालिकों को धनपान पना देने के लिए पर्याप्त है।

बिन्नी के लिए बाजार में पेश किए जानेवाले बालकों की उम्र अधिक-से-अधिक बारह बरस की होती है। बीनी लोग बहुत छोट बच्चे खरीदना पसंद नहीं करते। पर मलया-निवासी छोटे-छोटे बीनी बच्चों का ही खरीदते हैं। बालक को खरीदने के लिए दी गयी खर्च के सम्बन्ध में बीनी व्यक्तियों की धारणा है कि, यह खर्च भी के प्रगति-गृह में रहने के खर्च के बदले दी गयी है, अतः इसे नाशायज नहीं कहा जा सकता।

बच्चों का त्रय-विप्रय वैश्या तितापुर में ही मीमित नहीं, माने मगया में प्रचलित है। कुछ हिन्दुओं में तो खरीद मौ-बाप बारह मन्त्रि और छ पैत-जंगी छोटी खर्च में ही बच्चों को बंध देते हैं।

*

आदर्श पंथी

आदर्श मर्मी यह है, जिनकी साक भेंसे-सरींगी हो तथा उट के समान भोजन करता हो, गंध के समान काम करता हो और कुत्ते के समान सोता हो।

—एम की कृष्णता (उप-खाद्य-मयी)

*

धांफ नदियों जलवाली जलवाली

सरकारी गणना के अनुसार बरसात के बाद इसी पक्षी रहनेवाली नदियों की समस्या ३४६ है। कितनी बड़ी तादाद है वह। इनको वर्ष-भर जलपूर्ण बनाये रखना देश की समृद्धि एवं जलवायु के लिए कितना हितकर है। प्रस्तुत लेख में श्री वी. वी. शायनकर ने इसी दिशा में कुछ उपयोगी सुझाव रखे हैं।

★

संसार के विभिन्न प्रदेशों में बहुत-सी 'सूखी' नदियाँ हैं। जो नदियाँ बड़े-बड़े रेगिस्तानों में बह कर बिलीन हो जाती हैं, वे भी इसी श्रेणी में आती हैं। लेकिन रेगिस्तान में बालू बहुत जल्द पानी को सोख लेती हैं और अत्यधिक गरमी के कारण भी उन नदियों का जल भाप बन कर बड़ी तेजी से उड़ जाता है। उत्तर-पश्चिम पाकिस्तान के 'घार' रेगिस्तान में संसार में सबसे अधिक गरमी पड़ती है। वहाँ का तापमान १४८ डिग्री फ़ारेनहाइट (६४ डिग्री से.) हो जाता है जब कि, उत्तर-अफ्रीका और मध्य आस्ट्रेलिया में १२० से १३० डिग्री फ़ारेनहाइट का ही 'रिकार्ड' है। फिर भी रेगिस्तान की नदियों से अधिक मात्रा में जल प्राप्त करने के कई तरीके हैं, जिन्हें आज की सरकारें और वैज्ञानिक मूर्त रूप में देखने का विचार कर रहे हैं।

दक्षिण-भारत की पलार नदी का उदाहरण लेकर हम इन तरीकों को समझने की कोशिश करेंगे। दक्षिण-भारत की ओर सभी नदियों की तरह पलार

का भी मुख्य जल-स्रोत वर्षा है। समुद्र-स्तर से २००० फुट ऊँचे मंसूर के पठार पर इसका उद्गम है। ३०० मील से भी अधिक दूरी का चक्कर काट कर वह मद्रास राज्य में बहती हुई बंगाल की खाड़ी में गिरती है। उसने आसपास करीब २० से ३० इंच तक वार्षिक वर्षा होती है और जून में ९६ डिग्री फ़ारेनहाइट के करीब तापमान हो जाता है।

वर्षा ऋतु में बरसात अधिक होने पर उसमें कई बार अचानक बाढ़ आ जाती है और उसके कारण काफी नुकसान पहुँचता है। स्वयं नदी का प्रवाह भी इतना तेज है कि, उसका जल खींचातिशीघ्र समुद्र में पहुँच जाता है। किन्तु उसका तला गहरी बालू का होना के कारण जमीन के ऊपर और भीतर भी काफी जल जमा रहता है। इस प्रकार बेल्लोर, चिगलपुर इत्यादि कई नगर और बहुत-से गाँव जो उसके तट पर बसे हैं, उनको जमीन से छना हुआ यह पानी मिलता है। इसे प्राप्त करने के लिए वे नदी

हिन्दी डाइजेस्ट

के तले पर ढालू ब्यारियों घोंघते हैं और उसके तले में काफी धम कर बहुत-से कुएँ भी खोद डालते हैं।

लेकिन जमीन के भीतर का पानी समुद्र की ओर ओर भी जन्दी बहता है—साधारण ऐसे स्थानों पर, जहाँ नदी के तले में गहरी खाई रहनी हो। इसका परिणाम यह होता है कि, जो गाँव और शहर ऐसी नदी के किनारे पर बने होंगे

हैं, उन्हें गरमी के दिनों में, जब पानी की सतहें ज्यादा जल्ल रहनी हैं, दिलकुल पानी ही नहीं मिलता।

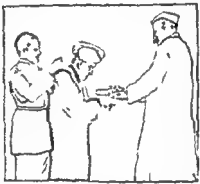
जमीन के भीतर का यह पानी तेजी से समुद्र की ओर दौड़ने के कारण नदी की सतह भी नीची हो जाती है। इन नदियों में पानी की गतह बने भी

नीची होती है और प्रति बरमान में समुद्र की तरफ का बहाव भी काफी पानी के दबाव के कारण ज्यादा नीची होनी जाती है। ऐसी नदियों पर ऊपर में बौघ बौघना भी किसी रूप में हितकर नहीं हो सकता।

किन्तु इस लेख के लेखक की दृष्टि में इन नदियों में अधिक मात्रा में जल प्राप्त करने का अधिक लाभदायक और सफल

तरीका, नदी के नीचे—स्थान-स्थान पर जमीन के भीतर—बौघ बौघना है। इसमें पानी की सतह भी ऊँची हो सकेगी और जमीन के भीतर का जो पानी समुद्र की ओर दौड़ता है, वह भी रुक जायेगा। फलतः उस नदी पर बने गाँव और शहरों को काफी अधिक पानी मिलना निश्चिन हो जायेगा।

दो बौघों के बीच जमीन का पानी



[७ मिनट १०९ को राष्ट्रपति से 'भारतरत्न' का सम्मान ग्रहण करते हुए ६५ वर्षीय अर्जुनसिंह मिश्रावर्य]

जब रुक जायेगा, तो वह दोनों ओर बहेगा और जमीन की सड़ी-नरम होने के अनुसार जमीन के भीतर भी जायेगा। इस प्रकार एक ओर तो आस-पास के कुओं-तालाबों का ज्यादा पानी मिलेगा तथा दूसरी ओर, पानी के और नीचे घँसने के कारण उठाया

समुद्र की तरफ का बहाव भी काफी हद तक नियंत्रित हो जायेगा।

दूसरा फायदा जमीन के भीतर इन बौघों की बौघने का यह होगा कि, नदी का बहाव धीरे-धीरे कम हो जायेगा। फलतः उसके आस-पास बने तालाबों और बौघों में अधिक पानी रहेगा। गणित-द्वारा यह बात अधिक स्पष्ट हो जायेगी।

मान लीजिये कि, बाँध १० मील या ५०,००० फुट के फासले पर बने है, नदी को चौड़ाई १०० फुट है और

वालुमय परत करीब १० फुट गहरी है। रोका हुआ जल जलहीन स्थानों के केवल १० प्रतिशत भाग में फैला है। याने पचास लाख क्यूबिक फीट या तीन करोड़ गैलन पानी वहाँ प्राप्य होगा।

हमारे दक्षिण-भारत की ही अधिकांश सूखी नदियाँ ५०० से १,५०० फुट या अधिक चौड़ी हैं। इनका वालुमय तला ही १० या ३० फुट या उससे भी अधिक गहरा होता है और जलहीन स्थान १० फी-सदी से भी अधिक होते हैं। इसी से अनुमान लगाया जा सकता

है कि, इन नदियों की गोद में कितना पानी प्राप्य है।

कोई शायद यह कहे कि, जमीन के अंदर ऐसे घंसे बाँध बनाने में बहुत खर्च होता है, लेकिन नदी का रेतीला तला इतना मुलायम होता है कि, केवल सीमेंट भीतर डालने से ही काम चल सकता है।

इसके अतिरिक्त ऐसे बाँधों के दोनों ओर समान ढवाव होने के कारण उनके अधिक चौड़े होने की भी आवश्यकता नहीं। ५ से लेकर २० फुट तक इनकी चौड़ाई हो सकती है। इन योजनाओं को और भी अधिक सस्ती बनाने के लिए बालू और सीमेंट के अनुपात में नी फेर-फार किया जा सकता है।

★

कुछ साल पहले गुजरात के कई समाचार-पत्र अपने दिवाली-अंक का सम्पादन करने के लिए प्रमुख साहित्यकारों को आमंत्रित किया करते थे। ऐसे ही एक पत्र के दिवाली-अंक के प्रथम पृष्ठ के लिए उसके साहित्यिक-सम्पादक ने एक विख्यात और जनप्रिय कवि की रचना भंगवायी। गत वर्ष भी वही साहित्यिक सज्जन सम्पादक थे।

रचना आते ही प्रेस में बम्पोज होने के लिए भेज दी गयी। रात में अत्र यह फर्मा मशीन पर जानेवाला था कि, समाचार-सम्पादक की दृष्टि उस कविता पर पड़ गयी। उन्हे यह देखकर आश्चर्य हुआ कि, यह तो वही कविता थी, जो पिछले दिवाली-अंक में, उसी पत्र में छपी थी। उनको यह कविता अस्वीकार करने का अधिकार तो नहीं था, लेकिन यह फर्मा उन्होंने रात में छापे जाने से रोक दिया। सवेरे जब उन्होंने पिछले दिवाली-अंक में वही कविता छपी हुई सम्पादक को बताया, तो सम्पादक महोदय अत्यंत लज्जित हुए। कविजी को लिखा गया, तो उन्होंने उत्तर दिया—
“मैं तो यह देखना चाहता था कि, आप लोग अपने काम के प्रति कितनी ईमानदारी बरतते हैं!”

—‘अखट आनंद’ से साभार

★

आत्म-निर्माण की प्रयोगशाला

“दुनिया एक बखीम अकल है और इंसान एक बतती मोमबत्ती। कुछ मोमबत्तियाँ जल कर जलाकर चारों तरफ दोऊस्र पैदा करती हैं और कुछ खब खलकर अधरे में भटकनेवालों के मार्ग को रोशन करती हैं। साधु और भक्तापु दोनों में यही फरक है।” सच परीक्षीन भक्तार का यह रूपक दुःख के ‘अप्य दोषो भव’ वृत्त का एक स्पष्टीकरण है। नीचे की पंक्तियों में संतरायनी ने ऐसे ही महापुरुषों की छिटपुट जीवन रेखाएँ प्रस्तुत की हैं।

★

मनुष्य एक शून्य के सदृश्य है। उसका तन तक कुछ भी मूल्य नहीं, जब तक उसके आग कोई अक् न रखा जाये। और, वह अक् सदा कोई ऐसी चीज होती है, जिसका वह प्रतिनिधि होता है। महात्मा गांधी ने उस पान को अलग कर लीजिये, जिससे वे प्रतिनिधि है। घेप कुछ नहीं रह जायेगा। न उनमें शारीरिक सौंदर्य था, जिससे लोग आकर्षित होते, न कोई विलक्षण प्रतिभा थी, जिससे लोग उनका सम्मान करते। उनकी सत्यनिष्ठा और पर-दुःख-वातरता ही उनकी महत्ता का मुख्य कारण था। जिन प्रकार एक साधारण-सा तार बिजली की धारा से चमक उठता है, उसी प्रकार यह मुट्ठी-भर हड्डियों का पजर अपनी देग-मेवा के प्रताप से चमक उठा था।

ऐसे महान् व्यक्तियों में हमारे द्वारा सिद्धांत की क्रिया को देखना कठिन नहीं। परन्तु हममें से अधिकांश के लिए इसमें भी अधिक महत्व की बात यह देखना है कि, हममें बहुत ही छोटे मनुष्य भी बड़ी-बड़ी बातों के प्रतिनिधि हो सकते हैं।

जल् एक आवश्यक पदार्थ है। समूचे

ससार को सर्वरता इसी पर आश्रित है, परन्तु इसके प्रतिनिधियों के परिमाण एक-दूसरे से बहुत ही भिन्न हैं। न केवल महासागर, न केवल बड़े-बड़े सरोवर और महानद, वरन् प्रत्येक छोटा नाला, प्रत्येक पहाड़ी, प्रत्येक झरना और प्रत्येक वर्षा-बिंदु इस आवश्यक पदार्थ का जल-रूप में प्रतिनिधि हैं। इसी प्रकार हममें छोटे-से-छोटा बड़ी-से-बड़ी बातों का प्रतिनिधि हो सकता है।

व्यक्तित्व का निर्माण कोई स्वयंपरता की बात नहीं। इसलिए इसकी प्राप्ति के लिए अहतामय विधियों का विफल होना अवश्यम्भावी है। कुछ लोग जीवन को एक व्यवसाय समझते हैं और कुछ इसे एक कला समझते हैं। पहले प्रकार के मनुष्य जितना कुछ हो सके, जीवन में नै निबोड़ कर निवाल लेना चाहते हैं और दूसरे, जितना कुछ हो सके, उसमें लगा देना चाहते हैं। पहले प्रकार के लोग दिन पर-दिन छोटे-एक सर्वांग होते जाते हैं, दूसरे प्रकार के फैलते और बड़ते जाते हैं।

जीवन में सबसे गहरा आनंद निर्मापक

या रचनाकारी होने में हैं। किसी अव्यक्त स्थिति को ढूँढना, सम्भावनाओं को देखना, किसी ऐसी चीज के साथ जो करने योग्य हो, अपने को मिला देना, अपने को उसमें डाल देना और उसका प्रतिनिधि बन जाना—यह एक ऐसी सतुष्टि है, जिसकी तुलना में बाह्य मुख तुच्छ है।

यह बात उस दशा में भी सत्य ही रहती है, जब निर्मायकता को वायु पर विजय पाने जैसी भौतिक बातों की ओर फेर दिया जाता है। कुछ समय हुआ, एक अमरीकी उदाकू पेनसिलवेनिया के पर्वतों में गिर कर मर गया। उसकी मृत देह पर एक पक्ष मिला। यह वायुयान-खालको और सहवासियों के नाम था। उस पर चिह्न दिया हुआ था—“मेरे मृत्यु के बाद ही खोला जाये।” मुनिव, उसमें उसने क्या कहा था—

“मैं पश्चिम जा रहा हूँ, परन्तु मेरा हृदय आनन्दपूर्ण है। मैं आशा करता हूँ कि, जो भी थोड़ा-सा आत्मोत्सर्ग मैंने किया है, वह इस कार्यके लिए उपयोगी सिद्ध होगा। जब हम उड़ते हैं, तो लोग कहते हैं, ये भूर्ख हैं, परन्तु वायुयान द्वारा इस आश्चर्यजनक उड़ान में वही मनुष्य जगत का सबसे अधिक उपकार कर सकता है—जितना कि, जनता उसका उपकार

मान सकती है। हम अपने प्राणों को जोखम में डालते हैं, हम अपना जीवन दे देते हैं। हम अपने उड़ने की कला को मनुष्य-यात्रा के लाभार्थ पूर्ण जानते हैं। परन्तु मित्रों! हमको छोड़ना मत। मैं अभी तक तुम्हारे साथ हूँ। तुम सबसे एक बार फिर मिलूंगा।”

आपने हृदय में क्या उस साहसी युवक के लिए करुणा का भाव उत्पन्न होता है?



क. पशुपति

[ये हैं चीन के पक्षजलि, जिन्होंने ग्राम-घर की ओर आने से चीन के मानव समाज को यम-निबन्ध का महत्व समझा-कर अश्रमस्थिती बनाया।]

मेरे हृदय में तो विलकुल नहीं। उसने छोटे-से जीवन में, उन सब उबड़े हुए आनन्द के खोजको से कहीं अधिक रसिकता थी, जो अपनी आत्मा को छिछली पैन से तृप्त करने का यत्न करते हैं। उसे अपने से बाहर किसी बात में दिलचस्पी ही नहीं। उसने लिए उसने साहस किया और आत्म-त्याग भी किया।

इस लेख के कई पाठक ऐसे होंगे, जिन्हें इस लेखको पढ़कर अपने-आपसे सज्जा

होने लगेंगी। इन लोगों का मस्तिष्क ठिकाने नहीं रहता और इनके चित्र-विचारों में गड़बड़ी हो जाती है। बहुधा ये लोग गरीब और तग हारतवाले नहीं होते, वरन् खाते-पीते, सुख-सम्पदशाली, स्वार्थी एवं अपने तक ही सीमित रहनेवाले परावर्तकीय होते हैं। इनको अपने से परे कभी भी कोई बात ऐसी नहीं मिलती, जो इनके विचारों

को इनके अपने-आपसे बाहर ले जाये। मनुष्य उतना ही बड़ा होता है, जितने बड़े कामों के लिए वह अपने-आपको निवेदित करता है।

जिनको अपने सिवा और किसी बात में दिलचस्पी नहीं, ऐसे जीवन से ऊरे हुए और बहने हुए आधुनिक स्वार्थी लोगों के विपरीत और उनसे उच्चतर एक और प्रकार है। इंग्लैंड के सुप्रसिद्ध राजमन्त्री विलियम पिट्सफोर्ड ग्लेडस्टोन की मृत्यु नब्बे वर्ष की आयु में हुई थी। वे कहा करते थे कि, यदि मैं ७० वर्ष की आयु में मर जाता, तो मेरे जीवन-यार्थ का उत्तम अर्धार्थ अधूरा ही रह जाता। बुढ़ापे में उन-जैसा उल्हास रहना एक बड़ी धान की बात है। उन्होंने अपने व्यक्तित्व को फैलाकर उन पायों से अभिन्न बना दिया था, जिनमें

उनका विश्वास था और जो उनको प्रिय थे। दूसरे शब्दों में, हम स्त्रियों और पुरुष बहुत-बहुत पताना के बास के सदृश्य हो। कई बास बहुत ऊँचे होते हैं और कई छोटे। परन्तु झड़े की बत्ती की महत्ता उसकी छटाई और ऊँचाई पर नहीं, बल्कि उस पर लगी हुई पताका पर है। ठीक पतानावाला छोटा बास, गलत पताना-वाले बहुत ऊँचे बास से कहीं अधिक मूल्यवान होता है। जब मनुष्य अपना जीवन प्रायः समाप्त कर चुके, तो मैं समझता हूँ, उसने लिए सबसे अधिक सतोषजनक बात यह है कि, वह यह कह सके—“मुझे लग्जा है, मैं अधिक उत्तम व अधिक ऊँचा और अधिक सीधा बास नहीं था। पर मुझ पर जो पताका लहराती थी, उसके लिए मैं किसी भी हालत में लज्जित नहीं।”

★

खोयी हुई आँख

हम लोगों का काम भी बड़ा ही दिलचस्प है। गत वर्ष की एक घटना तो मुझे आज भी स्मरण है। एक महिला मेरे दफ्तर में आयी और बोली—“इसपेक्टर! अभी-अभी जब मैं तैर रही थी, तो मेने लोगों की घनी अपनी एक ओर पही रो दी। क्या मैं यह आशा रखूँ कि, आप इसे ढूँढ़ निकाल-वाने का प्रयास करेंगे?” अब आप स्वयं सोचिये—इस धान की पित्तनी पत्र आशा थी कि, वह और सहरो-द्वारा विनारे पर ले आयी गयी हो? किन्तु नहीं, दो दिनों बाद ही, मेरे एक सहकारी ने मुझे बताया कि, समुद्र-विनारे उसे एक सूरमुखत समरमर मिला है परन्तु यह तो उस महिला की खोयी हुई आँख थी!

. -ई. एम. बील्स, 'बीच एंड बोट-इन्वेस्ट', पारमाउथ

★

मैं टूथ पेस्ट

व्यवहार करता हूँ



मे टूथ-पावडर व्यवहार करती हूँ

हुआ मंजन व्यवहार करता हूँ



मैं तो अपना
ही बनाया

लेकिन हम सभी



टूथ ब्रश व्यवहार करते हैं

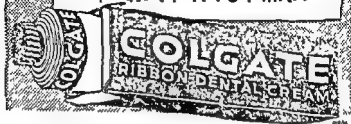
दांतों को अत्यधिक स्वच्छ करता है—अधिक दिन चलता है

निर्माता : आर्यन ब्रश कं. लि लेन्डन चेम्बर्स दलाल स्ट्रीट बम्बई-१

वितरक : मेसर्स बलापो स्टोर्स, कालबा देवी रोड, बम्बई २

अब एक ही बार ब्रश करने से कोलगेट डेण्टल क्रीम

दंत-क्षय तथा दुर्गंध-प्रेरक जीवाणुओं
के ८५% तक को नष्ट करती है !



“माहिम का हलवा”

१३० वर्ष पुराना व प्रख्यात

केवल भारत में ही नहीं ! विदेश में भी प्रख्यात है ! !

* विविध आंति के हलवे

* तिरंगी परफ़ी

* शुद्ध मावे का पेड़ा

तथा अन्यान्य मावे की मिठाइयों के लिए पुराने और प्रतिष्ठ

जोशी बुड्ढा काका माहिम
के हलवे वाला

▼ बासड याजार, माहिम, बम्बई, १६

▼ सोनाबाला बिल्डिंग, बम्बई, ७

▼ पारमी बोलोनो दादर, बम्बई, १८

फोन - ६२९०७.

फोन - ४०३६५.

फोन - ६०५०६.

सृष्टिकृत आँखें

कर्नल जोरावर सिंह की शीघ्र ही प्रकाशित होनेवाली पुस्तक 'आँखें सा देम' के एक अध्याय का सविन्य हिन्दी रूपान्तर

★

आँखों में खून उतर आया—यह बात तब कही जाती है, जब किसी को बहुत क्रोध आता है और क्रोध के कारण आँखें सुर्ख हो जाती हैं। परन्तु हाल ही में एक अद्भुत प्राणी का पता चला है, जो सताये जाने पर अथवा क्रुद्ध होने पर आँखों से खून की वर्षा करता है। इस प्राणी का नाम 'हार्नटोड' ('शृंगी मेंढक') है। यह लाखों वर्ष से उसी आकार प्रकार का है। किसी प्रकार का परिवर्तन अभी तक इसमें नहीं हुआ है।

इस प्राणी का सिर बड़ा भयानक दीखता है। उसमें काटे लगे होते हैं और सारे शरीर पर बिंदु बिखरे होते हैं। इसकी आकृति भयानक अजगर की-सी है और लम्बाई केवल ३-४ इंच होती है।

यद्यपि इसका

रूप बड़ा भयानक होता है, तथापि इस प्राणी-सा धोखे में डालनेवाला जोड़) शायद ही ससार में कोई दूसरा होगा। इसके सिर पर के काट या सींग देखने भर के ही होते हैं। यदि कोई मासाहारी इसे समूचा निगल जाये, तो भी उसे किसी प्रकार की हानि न होगी। इसकी त्वचा डाल की-सी प्रतीत होती है, किन्तु वस्तुतः बड़ी कोमल होती है। चोटी, नख्खली, अच्छर-अक्षि प्राणियों के मारे इसका सदा नाक में दम रहता है।



[आँखों से खून की वर्षा करनेवाला 'शृंगी मेंढक']

इच्छा अनुसार 'हार्नटोड' फूलवर बुगुना हो जाता है। यह विचित्र प्रकार का 'पफ-पफ' शब्द या बड़ी तीव्र फुकार भी कर सकता है। जब यह अपनी पूछ हिलाता है, तब ऐसा मालूम होता है कि, 'रेंटिल-स्नक' चल

रहा है। चौकने पर या त्राघ जान पर यह प्राणी ओंखों में खून फेंक कर मारता है। कभी-कभी तो इतनी ओंखों में चौयार्द चाय-जम्मक खून निकलता है और वह उसे १५ इंच की दूरी तक फेंकता है। आश्चर्य यह है कि, इस कार्य में 'हार्न-टोट' को किसी प्रकार की हानि नहीं पहुँचती। न-जान उसकी ओंख में कौन-सा ऐमा पद है, जिससे रधिर की बीछारे इतनी दूर तक फेंकी जा सकती है। इस 'घम' का पता लगाने के लिए काफी प्रयत्न किये गये, किन्तु 'प्रवृत्तिजयी मानव' को प्रकृति ने इस रहस्य-भेद में अब तक सफलता नहीं मिल सकी है।

परीक्षण करने देगा क्या है कि, निचले तृण रधिर में किसी प्रकार का विष नहीं होता। किन्तु जर आजमणकारी के मुँह पर रधिर के छीटे पड़ने हैं, तो यह स्वाभाविक है कि, वह रगति का अनुभव करे और इन जीव में बड़े।

सूक्ष्म अध्ययन एवं प्रयोगों में पता चला है कि, मृगी-मँडव की ओंखों के किनारे-किनारे चारों तरफ लम्बी-लम्बी बेमि-बाएँ होती हैं, जिनमें रधिर बहता है और जो इन प्राणी के इच्छानुसार खूब बूँद सकती हैं। जब यह प्राणी भयभीत या क्रुद्ध होता है, तो इसका हृदय वेग में धड़कने लगता है। जल्द रधिर का दबाव बढ़ जाता है और स्वभावतया रधिर इन बेमिबाओं में भरने लगता है। इस प्रकार रवर के समान लचीली ये बेमि-

बाएँ बहुत-सा खून ग्रहण कर लेती हैं-यंगे तब कि, खून के भरने में बेमिबाओं की दीवार फँलार पट जाती है और रधिर ओंग के कान की एव नाली में आकर, जिधर यह प्राणी देखता है, उनी दिशा में पिचवागे के पानी की भीति गिरने लगता है। प्रायः 'मृगी मँडव' आजमणकारी के मुँह की ओर तावता है। अतएव आशमक के मुँह पर ही खून के छीटे पड़ते हैं। यह खून ऐसा चिपचिपा और दुर्गन्धयुक्त होता है कि, मनुष्य ता क्या, गूबर-जैसा गदा प्राणी भी उगने दूर भागता है। किसी विचित्र सीला है प्रकृति की। निर्मल-मै-निर्वल प्राणी का भी उगने आभरता के साधन में सुसज्जित कर दिया है। इसकी बेमिबाओं के चिपचिपे रधिरमें ऐस ताव रहने हैं, जिनके द्वारा बेमिबाओं का पाव पीरन ही भर जाता है।

लदन के टा किंगली तांत्रिक ने इन मँडवों की कई वर्ष तक वैज्ञानिक जाँच की थी। उनका बयान है कि, एक बार तो एक मँडव ने १५ इंच की दूरी तक खून फेंका था। एक मिनट बाद उसने दूसरी ओंग में फिर खून फेंका और इस प्रकार ३ मिनट के भीतर ही उगने ५ बार उनके ऊपर खून पड़ा।

उनका वृत्ता एक मँडव के पास गया और उगे भूफने लगा। किन्तु इतने में ही उसके मुँह पर खून का एक फव्वारा आ गया। वृत्ता वहाँ में पयदावर ऐसा भाषा कि, फिर इस जनु के निवट नहीं गया!



अमृत का संस्कार

—लाला गणेश सरदसाई—

मुकुद ने जब देखा कि, उसकी लह-
लहाती फसल का कुछ हिस्सा डोर
चर गया, तो वह आये से बाहर हो गया।
दिन-रात परिश्रम कर उसने बीज बोये
थे और पहरा दिया था। आज वह किसी
कार्यवश बाहर चला गया था। आने पर
फसल की यह हालत देखते ही उसका
खून खौल उठा। आँख छाल-पीली बरते
हुए उसने शाति से पूछा—“तुम्हारे रहते
हुए डोर अनाज कैसे खा गये? तुम्हें
अपने घर की कोई चिंता नहीं है?”

शाति से गलती अवश्य हो गयी थी,
लेकिन उसे मुकुद का इस बुरी तरह पेय
आना अच्छा नहीं लगा। जवाब देने में
वह पीछे हटनेवाली नहीं थी। उसने मानो
आत्मरक्षा करते हुए कहा—“दिन-भर
ढोरो को सँभाल कर रखना सरल काम
है क्या? बच्चे नदी पर भाग जाते हैं।
उनकी सँभाल रखें या ढोरो की? इसने
अलावा घर का काम भी पूरा करना
ही चाहिए। काम पूरा न हो, तो फिर
तुम्हारी बातें जो गुननी पड़ें।”

“फसल न होगी, तो बर्ज कैसे चुका-
ओगी? है तुम्हारे पास पैसे?” मुकुद

उसी स्वर में बोल रहा था।

‘मैं क्या पैसे जोड़ती हूँ?’ जबसे तुम्हारे
पास रहन लगी हूँ, एक पैसा नहीं बचता।”
शाति न उत्तर दिया।

“शायद तुम्हें अपन पुराने जमाने की
याद आ रही है।” मुकुद ने व्यग्य कहा।

“याद क्यों न आये? सुख पाने के लिए
तुम्हारे साथ रहन ली थी। ब्याही
औरत की तरह तुम्हारे साथ रही, लेकिन
भाग्य में तो लिखा था दुःख।”

दोनों में बहुत देर तक झगडा होता
रहा। मुकुद जब इस झगडा से ऊब गया,
तो उसने मछली पकड़ने का जाल तया
अन्य सामान लिये और भूले पेट घर से
बाहर निकल गया। जाते समय दुःखी
होकर उसने शाति से बेबल इतना कहा—
‘रह तू अब इस घर में। समझ ले, मैं तेरा
अब कुछ नहीं लगना।’ रोप और दुःख
से भरा मुकुद नाव में बैठ गया। उसने
सोचा कि, बड़ी दूर—बहुत दूर—चला
जाना चाहिए। इतनी दूर कि, जहाँ घर,
औरत, बच्चे—सब भुला दिये जा सके।

टेंवड़ी के नीचे वह छोटा-सा गाँव
बसा हुआ था। तीन दिनाओं में सरिता

बलबल-छलछल करती हुई बहती थी। नदी के किनारे ही मुकुंद का घर था। उसने चार बच्चे थे। तीन बच्चे नदी-किनारे खेल रहे थे और चौथा घर में रह रहा था। मध्याह्न हो चुकी थी। गांव में दीये टिमटिमा रहे थे और नदी में तीम-बालीम नावें चल रही थी। मच्छीमार इन नावों में बैठे हुए थे और जाल पानी में फेंक-फेंक कर मछलियों पकड़ रहे थे।

मुकुंद भागे घड़ रहा था, लेकिन उसे मालूम नहीं था कि, वह वहाँ जा रहा है। जब नदी में कुछ ज्वार आने लगा, तो वह नाव में सीढ़ी लैट गया। ऊपर नौला नम था, दोनों तरफ नारियल के झाड़ और झाड़ो के पीछे मनोहर देवद्वियों। उसे अपने पुराने दिन याद आने लगे। उस समय वह बीस वर्ष का नवयुवक था। भौ-बाप कोई न थे। मछलियों मार-मार कर वह अपनी जीविका अत्यंत आनन्दपूर्वक चलाना। एक दिन जब वह मछलियों पकड़ रहा था, उसकी दृष्टि एक बामल बदना कुमारिका पर पड़ी। वह किशोरी— शांति-पानी में पैर धो रही थी। उसका अनुपम भौंवर्य निहार मुकुंद मन्त्रामुग्य बन गया। धीरे-धीरे दोनों का परिचय हुआ। परिचय की सीढ़ी पार कर दोनों प्रेम के प्राण में झेलने लगे। सभी मुकुंद को मालूम हुआ कि, शांति ने कुछ दिन पहले ही वेदयावृत्ति स्वीकार की थी।

दोनों पति-पत्नी की तरह रहने लगे। शांति ने वेदयावृत्ति छोड़ दी। ममाज को मधनीत

तिलाजलि देने में मुकुंद ने भी आपा-पीछा नहीं किया। लगभग दो वर्ष तब बँन की बसी बजी। मुकुंद मछलियों बेच कर लाना और दोनों आनन्दपूर्वक रहने। लेकिन जैसे-जैसे बच्चे होने लगे, उनका भुख-स्वप्न बालू की दीवार बन गया। दोनों में झगड़े होने लगे, कई बार दोनों एक-दूसरे से धोखे नहीं, सभी हाथापाई भी हो जाती और सभी खाना ही नहीं खाते। कई बार मुकुंद उससे बहना रि, मैं घर छोड़ कर चला जाऊँगा, मैं इस घर से तब आया हूँ। शांति भी तब पीछे नहीं रहती—“मे नदी में जानर डूब मर्गी। तुम्हारे लिए मैंने अपनी भी, माँगों और माया का छोड़ा। मैं ही उनके जीवन का आधार थी। तुम्हारे पास व आवर यदि मैं उनकी सेवा करती, तो मुझे कम-से-कम मानसिक सुख तो मिलता। तुम्हारे साथ रहकर मेरे झूलो-परशो दोनों ही विगड़ गये।” और, इसके बाद वह बँटार घटो रोनी। मुकुंद भी इसका करारा जवाब देता। वह बहना—“तुझे आने-आनेवाली की आवभगत बन्नी लगनी थी। अब वह आवभगत होती नहीं, इसलिए तू तब रह रही है। मैं भी एक बेध्या मे विवाह कर डूब गया। लोग दीव बहने थे, लटके की जल्दी ही ओम्मे खुलेगी। कोई साडो लानेवाला मिल जायेगा, तो यह हमने पाग छोड़े ही रहेंगे।”

शोध के आवेग में मुकुंद अनाप-सनाप जाने बचा-बचा चोच जाता था। लेकिन

जब वह होश में आता, तो उसे अपनी गलती मालूम हो जाती। शांति भले ही प्रथम मुलाकात से अब तक अनेक बार मुकुद से झगड़ी हो, शायद कभी बालियाँ भी दे दी हो, अपने पुराने जमाने की याद भी की हो लेकिन पर-पूरण वे सम्पर्क में वह कभी खड़ी नहीं रही। मुकुद भी उतना ही सच्चरित्र था। पैसे उसके हाथों में खलते थे, लेकिन उसने कभी शराब का नाम नहीं लिया। अन्य औरतों की तरफ वह खींच उठा घर भी नहीं देखता था।

इस प्रकार कई अच्छे-बुरे प्रसंग आकार की ओर देखते-देखते मुकुद को इस धण याद हो आये और उसका मन अस्वस्थ हो गया। अस्वस्थता से मुक्ति पाने के लिए



[मुकुद पर छोड़कर चले जाने की अपेक्षा देता और शांति बढ़कर पटो रोती।]

उसने अपना जाल पानी में फेंक दिया और मछलियों पकड़ने लगा। वह सोच रहा था कि, वहाँ जाना चाहिए? शांति और उससे अच्छी की क्या दशा होगी? अचानक उसे याद आया कि, पिछले दो-तीन वर्षों में शांति और उसके बीच अनेक बार झगड़े हुए और जब-जब वह घर से बाहर गया, पुन लौट भी आया। इस समय उसे अपनी इस प्रवृत्ति पर वास्तव

में आश्चर्य हुआ। उसने ऐसे कई घर देखे थे, जिनमें एक बार झगड़ा हुआ और पति-पत्नी सदा के लिए अलग हो गये। लेकिन उसका अपना घर ?

किनारा पास आने लगा। मुकुद पीलगाँव पहुँच गया। मछलियों से भरा हुआ टोकरा उसने एक तरफ रखा। इस गाँव में उसका एक धनिष्ठ मित्र रहता था—श्यामू। इस बार बाढ़ आने के कारण श्यामू के खेत नष्ट हो गये थे।

मुकुद जब किनारे पर पहुँचा, तो ऊपा की लाली गगन को मोहक बना रही थी। सूर्यदेव आने की प्रतीक्षा में थे। मुकुद ने ज्योंही मछलियों का टोकरा सिर पर रखना चाहा, एक व्यक्ति अचानक

उसके सामने आकर खड़ा हो गया। इतनी सुबह श्यामू को वहाँ देखकर मुकुद को आश्चर्य हुआ। घर के झगड़े और अपने निर्णय के सम्बन्ध में क्या कहा जाये, यही उसकी समझ में नहीं आ रहा था।

“इतनी मछलियाँ किस लिए लाये हो? क्या किसी ने तुमसे कहा है कि, मेरे घर मछलियों की कमी है?” श्यामू ने प्रश्न किया। मुकुद ने श्यामू के चेहरे को देख

कर ताड़ लिया कि, वह बेहद दुखी है।
 “घर पर जिनकी मछलियों की जरूरत होगी, उनकी रख लेग और बाकी बेच देंगे।”
 मुकुंद ने जवाब दिया।

“लेकिन तू इनके सबसे यहाँ आ बँगे गया? मादूम होना है, सारी रात पानी में बिना दी है।” श्यामू ने कहा।

“मुझे तो आश्चर्य होना है कि, फिर भी मैं जीवित बच गया हूँ।”

“ऐसे क्यों बालूना है, रे? कहीं पागल तो नहीं हो गया?” श्यामू ने आश्चर्य-विस्फारित नेशों में उनकी ओर देखते हुए कहा।

“पागल हो जाना, तो भी छुट्टी मिलनी” मुकुंद ने दुःख-भरे स्वर में कहा—
 “सब कहना है, दुनिया में मन नहीं लगना। घर में तो ऊब गया हूँ।”

“अरे, घर-घर में मिट्टी के चून्ने हैं। इस तरह पागल बनने में घर चटना है?” श्यामू ने बुजुर्गों की तरह माबना बी।

“लेकिन मैं तो घर छोड़ कर आ रहा हूँ। कुछ दिन तेरे यहाँ रहूँगा और इसके बाद कहीं और... एक जान की बिना भी क्या हो सकती है मला?”

“अरे-अरे! तू क्या बोल रहा है? कहीं मेरा मजा तो नहीं कर रहा? हमारे घर के भगड़े की बात तो तुझमें किसी ने नहीं कह दी? ऐसा ही हुआ होगा। नहीं तो दूनी मुर्खायों का मामला क्या रात-भर जग कर तू मेरे यहाँ क्यों आता? यहाँ बात है।— मुकुंद! मैं घर में तग आ गया हूँ। सारी रात नदी के

नवनीत

बिनागे घूमता रहा हूँ। मस्तिष्क में तरह-तरह के विचार आते रहे हैं। एक बार ऐसा भी सोचा कि, यहाँने-भर तुम्हारे दरों आकर रहे जाऊँ। कल रात गोपी में बहुत लड़ाई हुई— बहुत।” श्यामू एक मिनट में बोझता जा रहा था और धीरे-धीरे दोनों घर के समीप पहुँच रहे थे। घर आते ही श्यामू ने थोड़ी-सी मछलियों नदुन पर रख दीं और बाकी हुई बाजार में बेचने के लिए लेकर निरान गया।

चतुर्थे घर रानी मछलियों की बहुत एक छुरी में साफ कराने लगा। कुछ ही देर में घर के सब बच्चे मुकुंद के पान आकर बँठ गए और आश्चर्य में मछलियों की ओर देखने लगे। थोड़ी देर में ही श्यामू की पत्नी—गोपी—एक बच चाय और पीठे-पीठे चारकेले ले आयी। बोली—“माईजी! पहले चाय पीजिये। मछलियों का बाद मैं कर लेनी हूँ।”

मुकुंद ने गर्दन उठा कर देखा, तो मानून हुआ कि, गोपी की आँखें सूजी हुई हैं, बाज और बरब अन्न-व्यस्त फँसे हुए हैं तथा चेहरा मलिन है। उसे श्यामू की बातें याद आ गयीं और वह तत्काल समझ गया कि, गोपी ने भी सारी रात बिछोने पर रो-रो कर बिनापी है। उसने गोपी में कहा—“बहन! मादूम होना है, मुम्हारी तबोयन कराव है।”

मुकुंद के झूह में महानुमति के ये शब्द सुनने पर गोपी के गपम का सौंप टूट गया। वह बोली—“माईजी! अब महन नहीं

होता। मैं इस घर से ऊब गयी हूँ।" गापी के होठ काँप रहे थे। हिचकियाँ लेते हुए उसने कहा—“आपके भाई मुझे घर में नहीं रहने देते।” मुकुद के दिमाग में विचारों का तूफान-सा आ गया। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि, किस तरह वह गोपी को धीरे-धीरे बंधाये। जहाँ जाओ, वही वस यही बात। क्या यही अमृतमय संसार है? लेकिन इतना होम पर भी बच्चे हाते हैं और गृहस्थी झलती रहती है।

केले वह छील चुका था लेकिन अब उसने लिए खाना मुश्किल हो गया। किसी तरह उसने धाय पी और गोपी को धीरे-धीरे बाजार की ओर चल पड़ा।

लेकिन सभी शांति की स्थिति का

कल्पना-चित्र उसके सामने आ गया। अचानक उसने मस्तिष्क में आया कि, यदि वह अभी बाहर बिलौने पर रोती हुई शांति को अपने बाहुपाश में आवद्ध कर ले, तो प्रलय-काल, शांति-काल में बदल जायेगा। शांति का वही मुस्कराता और प्रसन्न मुखड़ा दिखायी देगा। इस कल्पना-मात्र से ही मुकुद का सर्वांग पुलकित हो उठा। उसके हृदय पर छापी विषाद की घटाएँ छित-भित हो गयीं। जल्दी जल्दी नाव लेकर उसने नदी पार की और उसके पौवतेजी से पर की ओर उठने लगे—उसकी आँखों के सम्मुख अपने अंतर के समस्त स्नेह की आभा से प्रज्वलित शांति का मुस्कराता हुआ चेहरा नाच रहा था।

★

... ..उस तरफ, महाशय!

एक आदमी तार देने के लिए पोस्ट-ऑफिस गया। अपने पास कलम न होने के कारण उसने पोस्ट-ऑफिस की कलम से तार लिखना शुरू किया। दो-तीन फार्म फ़िलाडने के बाद उसने तार भेजनेवाले क्लर्क से पूछा—“क्या यह वही कलम है, जिससे कलाइव ने मुगल बादशाह के साथ संधि-पत्र लिखा था?” क्लर्क ने जवाब दिया—“पूछताछ की खिडकी उस तरफ है, महाशय।”

★

डाक्टर, पहले अपना इलाज कीजिये!

अपनी कक्षा के विद्यार्थियों की बाफियों जाँचने के बाद शिक्षक ने कहा—“अपनी-अपनी बापी में मेरा लिखा हुआ नोट पढ़कर विद्यार्थी अपनी भूले सुधार ले।” एक विद्यार्थी ने डरते-डरते पूछा—“साहब, आपने मेरी बापी में क्या लिखा है?” शिक्षक ने बापी देखने के बाद कहा—“तुम यह भी नहीं पढ़ सकते? मैंने लिखा है कि, अपने अक्षर सुधारो।” —आर पी कपूर

★

सिरोधार्य चरित्र ही रहा सत्यदेव

धूप निकलते ही, उसने एक बड़ी दूरान के सामने घुटघाप पर अपनी दूरान फैला दी। एक घूमघूमती-सी शाल कंधे पर डालकर, दूसरी शाल हाथ में लेकर उसे हिला-टिगा कर चिल्लाने लगा—“मेरा नाम सत्यदेव है बाबूजी, सत्यदेव। मुझे शहर में कौन नहीं जानता? एक बार आजमाइया बातें हैं, फिर आप इस गुलाम को कर्मी नहीं मूलेंगे।” और, यह अपने आगे पीछे हुए शाल, सनकर और भोजा की तरफ इंगारे कर-कर के बहने लगा—“वाग्मि ऊन की शाले हैं, सरकार—आ-हा! जितनी नरम और कितनी गरम! बस, एक नजर देय लीजिये, सरकार—हैं देखने की चीज, इसे बार-बार देख . . .”

जब कोई लड़की पास से गुजरती, तो वह पुकारता—“मम साहब, अजी माल-बितनी—ओ बहनजी, यह शालें देखिये। पाउडर, स्नो और लिपस्टिक एक तरफ। जो मेरी गाठ आंठ ले, अपना जग्गा आप ही देखे, लेकिन कामन। हँ-हँ! बहने गर्म आये, गुनने गर्म आये, लेने गर्म आये, देने गर्म आये—मेरे माग्मि। ३५ रुपये—सिर्फ ३५ रुपये।”

देखने-ही-देखने लगा इसटूटे होने लगे और चीजें उठा-उठाकर देखने लगे। सोफा की सीट में वे सिमी ने कहा—

“सत्यदेव की ता बस बोलियों बितने है, माल-बाल ता साफ नहीं होता...”

सत्यदेव ने कोई जवाब नहीं दिया, उनी तरह चिल्लाता रहा, लेकिन तभी दूमेरे आदमी ने कहा—“आजकल सत्यदेव की बोलियों भी ठण्ठी पड़ गयी हैं। सत्यवनी ने तो इमका दिवाला निराल दिया है।”

“रिम चुडेल का नाम जिया, बाबूजी।” सत्यदेव ने एवदम से नाच-झों सिरोंदकर कहा—“हरे राम, राम, राम! अभी मेने एक सूत भी नहीं बेचा और हुजूर ने उस मनहूस का नाम ले दिया। मगर वह आज था नहीं सबनी, सरकार। आज ये यहाँ हैं और उमने परिसनी की भी मेरी गयर नहीं है।”

“किम्मा क्या है?” विमी ने पूछा।

“किम्मा पूछने हैं, मालिन।” सत्यदेव ने एक ठड़ी मोत लेने हुए कहा—“इमके मित्रा थोर कुछ नहीं जि, दुस्मनी के हाथ-पोंन नहीं होने और आदमी दुस्मनी में आने दुस्मन को सतरीक पहुँचाने के लिए मुद मुर्मादन और नुस्मान सह लेता है। बाबूजी। एर ओमन है। नाम तो उमना हमनी है, पर मेरे नाम में फायदा उठाने के लिए मुद का मयवनी बहनी है—यो त्रिदगी में नापद हो कभी गब ओमन हो। तो

बाबूजी ! मेरी रोजी मारने के लिए वह पच्चीस का माल पट्टह में बेच देती है। उसका माल हाथो-हाथ फिर जाता है और वह आपका गुलाम, आपके शहर का पुराना ध्यापारी रात को पेट पर पत्थर बोधरर सोता है।”

“मगर तुमसे उसे दुस्मनी क्यों है ?”

“यह न पूछिय, बाबा ! वह चाहे मेरी रोजी पर हनका करे लेकिन मैं भरे बाजार में उसकी इज्जत पर हाथ नहीं उठा सकता — मेरा मतलब है, बाबूजी ! जवान नहीं उठा सकता।”

“मैं कह दूँ, तसूपावा ? मैं सब जानता हूँ — कह दें ?” भीड़ में से एक १२ साल का लड़का चिल्लाया।

“भाग दे, तसू पावा के बच्चे !” सत्यदेव ने उसे जोरो से बोला।

“मारोगे, तो कह देंगे — सब जानता हूँ।” लड़का कुछ पीछे हट कर बोला —

“मैं कह दूँगा, तुम उससे प्रेम करते थे।”

“भाग, प्रेम के बच्चे !” सत्यदेव उसकी तरफ लपका, लेकिन भीड़ में से एक आदमी ने उसे रोक लिया। लड़का फिर बोला — “मारोगे, तो मैं कह दूँगा कि, तुम उससे मोहब्बत करते थे और वह तुमसे ज्यादा करना चाहती थी। पर ज़र गोंब से बाकी

आ गयी, तो उसने तुम्हें भी मारा और सत्यवती को भी।”

‘भाग दे, बाकी के बच्चे !’ सत्यदेव ने लगन कर लड़के के गालों पर एक चपल लगा दी। लड़का भागा और कुछ दूर जाकर चिल्लाने लगा — “तसू पावा ने सत्यवती को घर से निकाल दिया और उसने वसम खायी कि, अगर मैंने भी

तेरे घर को होंडियाँ न उलटी करा दी, तो मुझे सत्यवती नहीं, कोई बमारिन बहना-हों !”

बच्चे ने ‘हों’ कुछ इस तरह कहा कि, सब लोग हँस पड़े और सत्यदेव लड़के के पीछे भागा; लेकिन वह भाग कर एक गली में घुस गया।

सत्यदेव वापस दूकान पर आया और बहने लगा — “गोली मारिये, सरबार उस चुड़ैल के जिफ़ को। यह देखिये, सरबार ! कितना अच्छा मफ़र

है — जान है तो ज़हान है, मेरे मालिक — सर्दी की हवा बड़ी सराब होनी है और गले की हिफाजत ज़रूरी है, मेरे हुनूर !”

भीड़ बढ़ने लगी थी और सत्यदेव पूरे जोश से अपनी और अपने माल की तारीफ़ किये जा रहा था। अचानक एक आदमी ने पूछा — “क्या



[सत्यवती चिल्लाने लगी — “सोन्ही ज़िगार एक तरफ़ मलकिन ! और बंद मुदर शास एक तरफ़ ...।” १४००]

वह बड़ी लूचकूरत है, मत्स्यदेव ?”

मत्स्यदेव ने भीड़ की तरफ हाथ जोड़कर कहा—“मेरे सरपार ! अब उम जहर की पुडिया का जिक्र नहीं कीजिये। उमे गोली मारिये—मेरे स्वेटर देगिये, मेरे हुजूर ! अगली बरसमीर की मेडो के अगली उन ”

अनी मत्स्यदेव की बात भी पूरी नहीं हुई थी कि, पाव हो मे एव घादीक और लांचदार आवाज आयी—“मोलह सिगार एव तरफ, मेरी घाल एव तरफ—अपनी बहनो के लिए मोलह सिगार—अपनी मगियों के लिए मोलह सिगार ।”

लोगों ने घूम कर देखा, नामने के फूटपाय पर एव औरत उनी घाल, मोने और मपहर वगैरह फैलाये गडी थी। उनने एव घाट मुद भी ओद रानी थी। मत्स्यदेव के आमपाग गटे हुए लोग एव-एव बरवे उस ओरत की तरफ जाने लगे, तो मत्स्यदेव ने घरडायी हुई आवाज में पुकारा—“माइयो, यह मत्स्यदेव भागवा पुराना मुन्नाम है—जया नी दिन, पुराना मो दिन। हममे रिहता न तोहो, बायूरी ! यह मत्स्यदेव”

“हूँह !” औरत विन्नापी—“जमाने भर का मूठा और नाम मत्स्यदेव ! दूधर आइये, बायूरी ! दूधर देगिये, गेट ! यह माठ कहो—जहाँ मे लगी हूँ आपकी यातिर, मेरे सरपार ! और, आपके उम पुराने टग की नीचा दिगाने के टिए, मेरे

नवनीत

हुजूर—हूँह ! बडा आया था प्रेम करने—जन्म-जन्म का साथी बनाने ! दगावान ! जाऊ की मंडिल मे टर गया... !”

‘एव औरत !’ मत्स्यदेव चिल्लाया—“तू मोदा बेचनी है या अरे बाजार मे किमी का गालियाँ देने आयी है ? मे तुज पर हत्तवे-इन्जन की गालियाँ बर दूंगा !”

“अरे चल-चल”—ओग्त जहरीली हेली हँसते हुए बोली—“तुझ जेमे न-जाने कितने जूतियों चटगाते फिरते हैं ! मे तेरे पर मेंकाबामस्ती का तान फँसाकर दम लूँगी ! तब तुझे मासूम होगा कि, प्रेम क्या है !”

“अच्छा !” मत्स्यदेव ने कहा—“तो आज तू भी देग ले कि, एव बहादुर आदमी किग तरह अपनी आन पर जान दे सकता है ! उनर नीचे, कितना बम भरती है !”

दो तील लडकियों गरमवती मे पान आकर गडी हो गयी, तो वह चिल्लाते लयी—“मोलह सिगार एव तरफ मा—किन ! और यह मुदर घाल एव तरफ ! जरा हाथ में लेकर तो देरिये !”

एव लडकी ने घाल देगवर पीमन लूठी ! “वीगन !—हूँ-हूँ ! क्या यत्ताऊँ, मा—किन ! गर्म आनी है बहते हुए, यह मा—और यह दाम ! २४ रुपये, मिर्फ २४ रुपये, मेरी मायानि !”

“बहनजी !” मत्स्यदेव चिल्लाया—“जरा माठ देगवर लेना। मेरे अगली दी प्योर उत्र-जम्पनी के बने हुए है ! घाट का नम्बर देगवर लेना, बहनजी !”

“बम-बम”—मत्स्यदेव की चीन्गी—“देगिये,

अक्टूबर

मालकिन ! दी प्योर ऊल-बगनी ! और, यह नम्वर देखिये ! वहाँ २५ रुपये और यहाँ सिर्फ २४ रुपये—वहाँ मर्द और यहाँ एव अबला नारी—एव नमजोर औरत की मदद कीजिये, मालकिन !

"तो फिर आइये, बहनजी ! तेईश रुपये—बटा-पटा देखकर लीजिये। देखता हूँ, आज भूली धेरनी वहाँ सब नीचे उतरती हैं ।

"यह बात है !" औरत मुस्कराने लगी— "बहनजी ! २२ रुपये—बाबूजी ! २२ रुपये। अब तो घर-घर अपने ये छाल पहुँचा कर ही दम लूँगी मैं ।"

सत्यवती सत्यदेव की तरफ देख-देखकर मुस्कराने लगी और सत्यदेव का मुँह लटक गया। फिर जैसे उसने अपनी आँखिरी पेंजी दाव पर लगा दी। एक-दम चिल्लाया— "तो फिर आइये, बहनजी ! आइये, मेरे हुजूर ! सिर्फ इक्कीस रुपये। असली आस्ट्रेलिया की भेंडो की ऊन की बाल की कौमल, सिर्फ २१ रुपये। इससे नीचे उतरे, तो थोरी का माल जानिये— २० रुपये १२ आने की खरीदी हुई छाल सिर्फ २१ रुपये में।"

"हा हा हा-हा !—सत्यवती हँसी— "भिरा नाम सत्यवती है, बाबूजी ! यह रहा कंश-मेमो !" उसने कंश-मेमो एव नव-जवान के हाथों में घसा दिया।

"२१ रुपये, सरकार ! सिर्फ २१ रुपये !" सत्यदेव किसी ग्राहक को अपनी छाल का दाम बता रहा था।

सत्यवती कंश-मेमो वापस लेते हुए बोली— "देख लिया न, मेरे मालिक— २० रुपये सिर्फ २० रुपये। सत्यदेव चौककर देखन लगा, फिर जैसे बराहती हुई आवाज में बोला— 'तो फिर २० रुपये ही दे दीजिये, मेरे मालिक ! आपके शहर का पुराना व्यापारी—आपका पुराना खादिम ...

"वही भाल, वही भेंड—" सत्यवती की आवाज आयी— "सिर्फ १९ रुपये, मेरे मालिक ! यह नमी और यह गर्मी और सिर्फ १९ रुपये !"

"लेकिन तेरी बेसर्मी तो असल देखने की चीज है।"

"देख, सत्यदेव !" सत्यवती ने चिल्ला-कर कहा— "मुवाबला करना है तो सीधी तरह कर—गाली देगा, तो बुरा होगा। मैं अपना सौदा मुफ्त छोटा दूँ, तुझे क्या ? हिम्मत है, तो नीचे उतर !

यह एव नमजोर औरत का इतकान है बाबू . . . !"

"किस्सा क्या है जी ?" लहवियों में से एव ने पूछा।

"वही पुराना किस्सा, मालकिन ! वही औरत की बेबसी और मर्द की दगाबाजी को पुरानी कहानी है। यह मुझसे प्रेम करता था, झूठे वायदे करने इराने मुझे वही का न रखा और फिर जोर से पिटवाकर घर से निकाल दिया। खैर, यह भी क्या याद करेगा कि, किसी मे पाला पड़ा था ! मैंने एव जगह शादी

कर ली है और मेरा पति बड़ा मालदार है। अब देखती हैं कि, बंसे १५-२० रुपये रोज़ का घाटा उठाता है। दाने-दाने को न तरासा दिया, तो सत्यवती नाम नहीं—बड़ा आया मुकाबला करने। २० रुपये पर आकर घम गया। मुझमें सौजिये, बहनजी! यह नर्म-ब-नर्म शाल सिर्फ १९ रुपये में ।”

उसी वक्त पटापर की घड़ी ने आठ बजाये और सत्यदेव अपना माल समेटने लगा। सत्यवती ने एक जोरदार बहबहा लगाया और उससे साथ दूसरे आदमी भी हँसने लगे। सत्यदेव धूपचाप गठरी बमर पर लाद कर एक तरफ़ को चला गया और सत्यवती का माल विपने लगा।

एक ही घंटे में सात घाले, तीन स्वेटर और आठ भफन्डर गिर गये। कुछ देर बाद जब वह पश्मीनाफ़रोश महाजन की दूबान पर से हिमाव करके लौटी, तो जगती जेब में बमोजन के नौ रुपये पड़े हुए थे।

इसी तरह सत्यदेव और रामजी दोनों पति-पत्नी थोड़ी-सी मेहनत करके नौ-दस रुपये रोज़ कमा लेते थे। थोड़ी-सी मेहनत उनका १२ साल का बच्चा भी करता, जो लोगों का सत्यदेव के प्रेम की कहानी सुनाता और इस मेहनत का बदला उसे रोज़ चार रमगुल्लो की धान में मिल जाता। आपस की मेहनत से उनका यह कारोबार बूँही चलता रहा—आज यही, तो बल बहो....!



आपत्ति का कारण

स्मशान के चारों ओर दीवार खड़ी करने के लिए जब नगर-पालिका में प्रश्न उठा, तो प्रधान ने कहा—“जो भी व्यक्ति इससे पक्ष में नहीं हो, कृपया वे अपना हाम ऊँचा करें।” और, उसे यह देख कर आश्चर्य हुआ कि, सचमुच ही एक व्यक्ति ने हाम ऊँचा कर दिया है।

प्रधान ने उससे पूछा—“क्यों, आपको इसमें क्या आपत्ति है?”

उस व्यक्ति ने बड़ी गम्भीरता से जवाब दिया—“मेरी राय में स्मशान के चारों ओर दीवार नहीं करना निरर्थक है। इसमें कुछ हासिल नहीं होगा और गर्वाँ बेकार ही लगेंगे; क्योंकि जो लोग स्मशान के भीतर हैं, वे कभी बाहर नहीं आ सकेंगे और जो लोग बाहर हैं, वे कभी अंदर जाने की कोशिश ही नहीं करेंगे.!”

— 'लहरे' से



दुल भी स्वामीनाथ न पचन दिया नि,
पुत्र-प्राप्ति के बाद वे यँसूर अवश्य जायेंगे।

और, एव गुप्त रात्रि में जीवन की
महती साध का पूरा करन हुए अखिल-
न्दामा न एक मुदर बालन को जन्म दिया।
स्वामीनाथ के हर्ष का क्या कहना ?
उन्होंने अम्पनाल के सार कर्मचारियों
का उपहार देने का वचन दे दिया।

नियमानुसार एव नर्म ने उसी समय
बादल का नहलाया और उसे तौलने के
लिए दूगरे कमरे में ले गयी। उस रात,
लगभग उसी समय, वहाँ तीन बादलों
का जन्म हुआ था। बाती के दोनों
बच्चा का भी यथावत् नहलाकर तौलने
के कमरे में लाया गया।

तीनों बच्चों में से एक कुछ मोकड़े रंग
का था। दूसरे दोनो बच्चे मोरे थे — जगमग
एव ही लप-रंग और एव ही तौल के।

जो नर्म अखिलन्दामा के बच्चे को लायी
थी, वह निभी आवश्यक कार्यक्रम उसे
दूगरी नर्म के अधिकार में सौंप कर चली
गयी। तौलनेवाले कमरे में लाने समय
प्रायः रोज ही बच्चा की कमर में उनकी
माँ के नामों के काई घोष दिये जाते हैं;
पर उमरान नर्म ऐसी धर्ती थी नि, उन्हें
इनका स्मरण ही न रहा। अतः कुछ
समय पश्चात् उनके लिए यह तय करना
कठिन हो गया कि, अखिलन्दामा का
बच्चा कौन-सा है ? उन मोकड़े बच्चे का
तो प्रश्न ही नहीं उठा था। दूसरे दोनो
बच्चों के विषय में भी अतः, उन्होंने

नबनीत

कुछ अधिक धारे रंग के बच्चे को अखिल-
न्दामा का बच्चा मान लिया। आठवें
घाई में जिन मुसलमान औरत ने प्रसव
किया था, उसका रंग थोड़ा कागज का,
अतः नर्मों ने निश्चय लिया नि, कम-गो-
रगवाला बच्चा ही उसका होना चाहिए।
और, बच्चों के हाथ पर नखर बोंदकर
उन्होंने उस अधिक मोरे रंग के बाइक को
अखिलन्दामा के पास लाकर मुका दिया।

"तुम्हारा बच्चा कितना मुदर है !
बचन भी सात पींड है ! क्या यह तुम्हारा
पहला बच्चा है ?" उम अखिलन्दामा के
पास खिटात हुए नर्म ने पाम ही पाम
स्वामीनाथ में पूछा।

"हो !" स्वामीनाथ ने मुस्कराते हुए
उत्तर दिया। पत्र पर लेटी अखिलन्दामा
भी मुस्करायी और फिर अपने पति की
ओर देख जर्मा कर ओलें नीची कर ली।
उमके अंगर का आनंद आज घोष नांड
बाहर निकलने को मानो मचल उठा था।

इसी बीच वह नर्म, जो बच्चे को तौलने-
वाले कमरे में ले गयी थी, वहाँ आ गयी।
उमने बच्चे को बाँद में उठा लिया और
कुछ देर तक उसे प्यार में उछालती रही।

बाई में बाहर आने ही पहली नर्म ने
दूगरी में कहा — "साज्जु है। बच्चे को
नाभि के गाम जो निकल था, वह इनकी
जन्दी कैसे मिट गया ?"

"ओह गाड !" दूसरी नर्म आश्चर्य-
स्मित हो बोली — "क्या यह बच्चा
इस औरत का था ? हमने तो उसे बाँद

न बाई में भेज दिया। उसकी बाँह पर उस मुस्लिम औरत का नक्कर बंधा था।

'भगवान् ही रक्षक हैं।' चिन्तु अज इस सम्बन्ध में चुप रहता ही ठीक है। पहली नर्स ने सम्भीर स्वर में कहा।

चिन्तु दूसरी ने विरोध किया—“यह तो गुनाह होगा। हम अभी भी बच्चों को बदल कर अपनी भूल सुधार सकते हैं।’

‘पागल मत बना।’ पहली नर्स ने

मट्टु स्वर में कहा—
“अस्पताल के अभिपारी सब निरपेक्ष ही इस छोटी-सी भूल में तिए हम नीतरी से अलग कर देंगे। फिर उा माताओं की भी बलाया करो—सदेह के झूले में उतारा मन हमारे लाल बहने पर भी जोषा-पर्यंत झूलता ही रहेगा। नहीं, हम इस विषय में

बिस्तुल्ल चुप रहेगी—बिस्तुल्ल ही चुप।’

बारह दिनों के बाद आठवें बाई की यह मुसलमान औरत—अब्दुल तैयबजी की बीबी—अपने घर पत्ती गयी और अति-रुन्दावा अपने घर आ गयी। गेट तैयबजी के घर में अपार घन था, तो स्वामीनाथ अम्बर के घर में असीम प्रेम और सतोंप।

दोनों चिन्तुओं के छात्र-मात्र में किसी भी प्रकार की नुटि नहीं थी।

जब स्वामीनाथ का पुन लय बर्ण का हुआ तो उसकी चाची उसे देखन आयी। देपते ही बोली—‘बच्चे की आँखें टीन मेरे बाई मुद्दुस्वामी की तरह हैं। हँ, इसरी ताब अवश्य ही अपने पिता पर गयी हैं।’ स्वामीनाथ और अतिलन्दावा मोन मुस्कराते रहे।



[ज्योतिषी ने उड़की देकर भविष्यवाणी की—स ल भर सदा पिता के के भेद ही उसकी सुनी सोर भर आवेगी। १९६१] नामों में उताने बड़ी योग्यता और दक्षता से हाथ बँटाया। इधर स्वामीनाथ का पुन अस्वरण नारायण अनक प्रयत्नों के बाद भी मंद्गिर से आये नहीं पड़ सफा। नीतरी पाने के लिए उसने जी-तोड़ चेष्टा की। बर्द ‘इट-रब्बू’ दिये, सिफारिश पट्टचायी, चिन्तु अभी तब सफाजता नहीं भिन्न सगी है।

स्वामीनाथ का असंतोष बढ़ता जा रहा

समय अपनी तीव्र गति से बढ़ता गया। गेट तैयबजी की मृत्यु के बाद उनका बाईत-बपीय पुत्र मुतेमान आज शहर के अग्रवर्ष ध्याना-रिषों में गिना जाता है। बचपन से ही वह बड़ा होनहार था और

हैं और एक दिन पत्नी के समक्ष उनका यह अनयोप खुल ही गया — “अखिला ! तुम्हें ज्योतिषी की भविष्यवाणी याद है न कि, हमारा पुत्र एक भयंकर व्यवसायी बनेगा ? समाज में उसकी प्रतिष्ठा होगी — मान होगा, किन्तु” — ब बटुता में मैंने — “विचारा अवश्य ! कितनी सिफारिशों के बावजूद वह एक छाटो-नी नौकरी तक नहीं पा सके हैं । मान-प्रतिष्ठा की तो बात ही भूल्य है । . . . तुम ठीक कहती थी, अखिला ! ज्योतिषशास्त्र निरर्थक बात है — भाले-भाले लोगों का ठगने का एक अच्छा जरिया और ज्योतिषियों के

पेट पाने का साधन !”

किन्तु अभिप्रेत्यामा ने तत्काल ही विराग किया । बड़ी तत्परता से बोली — ‘छि, छि ! ऐसी भावना उचित नहीं। ज्योतिषी की भविष्यवाणी क्या सच्ची नहीं हुई ? हमें क्या पुत्र नहीं मिला ? फिर ? आप क्यों कह सकते हैं कि, ज्योतिष एक प्रपञ्च है ? हो सकता है, अवश्य कुछ ही समय बाद एक सच्चा व्यवसायी बन जायें—उन्हें आप पहले किमी चेडिटियर (दक्षिण भारत के जन्मजात व्यापारी) के पास तो कुछ मालों के लिए रखकर देखिये.....!”

★

सम्मान

एक प्रतिष्ठित विद्वान को साहित्यिकों की समझ में भाषण देने के लिए बुलाया गया । भाषण के पदचान् सभा के मेम्बरों ने फीस के रूप में उसे एक चेक देना चाहा । विद्वान ने सौजन्यपूर्ण कहा—“रहने दीजिये—इसे किसी पड़ में दे दीजियेगा ।” मेम्बरों ने पूछा—“क्या हम उसे अपनी सोनाइटी के पड़ के लिए रख लें ?” “अवश्य !” विद्वान ने कहा— “लेकिन आपका यह पड़ है किसलिए ?” मेम्बरों ने उत्तर दिया—“इसलिए कि, हम अपने माऊ अधिा अच्छा भाषण सुन सकें ।”

★

सफलता का रहस्य

एक सच्चा व्यक्ति ने निर्भीक विज्ञापु ने सादर पूछा —“आपकी सफलता का रहस्य क्या है ?”

“मही निर्णय पर काम करना ।” उसने उत्तर दिया ।

“लेकिन सही निर्णय आप कैसे निश्चय कर सकते हैं ?”

“अनुभवों के आधार पर ।”

“और अनुभव आपको किस प्रकार प्राप्त होते हैं ?”

“मलन निर्णय पर काम करके ।”

—‘तरगावरी’ से

★

डा मुहम्मदअली शाह-लिखित ग्रीसवीं सदी की श्रेष्ठतम शिकार-यात्रा-पुस्तक सफर और शिकार [संक्षिप्त-रूपांतर]



यह उन दिनों की बात है, जब मुझ डेंटिस्टो (दंत चिकित्सा) सोवत का बड़ा शौक था। मेरे एक डेंटिस्ट (दंत-चिकित्सक) दोस्त ने राय दी कि, मैं अमेरिका जाकर बाकायदा तालीम हासिल करूँ। इसके लिए कम से कम पाँच हजार रुपये होना जरूरी था। मेरे वालिद (पिता) के पास नकद रुपया नहीं था। उन्होंने रुपयों के लिए साफ इत्फाक कर दिया था और मेरे पास सिर्फ चार पाँच सौ रुपये थे। लेकिन मैंने हिम्मत न हारी। सिंगापुर तक का 'पासपोर्ट' बनवाकर सफर की तैयारी करने लगा। और, २४ दिसम्बर, १९०८ को पूरे कुतब (परिवार) की भर्जों के खिलाफ अपने गाँव के एक लड़के इनायत को साथ लेकर घर से खाना हो गया।

मेरे पास चूँकि पैसे काफी न थे, इसलिए मैं जानता था कि, सफर में तिवारत (व्यापार) का सिलसिला रखना पड़ेगा। अतएव बलुगत्त से सिंगापुर के लिए चलन में पहले मैंने कुछ भण्डियों धुस्मे और कुछ दूसरा फेंमी सामान खरीद लिया। एक जापानी कम्पनी के कोलम्बो नामी जहाज के जरिये तीन दिनों बाद रबून जा पहुँचा।

रात को जहाज रबून से सिंगापुर के लिए खाना हुआ। सिंगापुर और आरुपास के इलाकों में मत्स्यी जवान बोली जाती हैं। बम्बई के एक निवासी 'पीपोंग' वापस जा रहे थे, जहाँ उनका काफी बड़ा कारोबार था। मैंने उनसे 'मत्स्यी' जवान सीखनी शुरु कर दी और खास-खास लफ्ज नोट-बुक में लिख गिये।

मुबह होते ही लोगों को पता चला कि, नानवाई का छोटा भाई सस्त बीमार है। डाक्टर आये, हकीम आये, मगर कुछ फायदा न हुआ। तीसरे रोज नानवाई के रोने-पीटने से लोगों को मालूम हुआ कि, छोटा भाई खल बसा। जब कोई मुर्दे को देखने के लिए अदर जाता, वह अपनी सौंसे रोक लेता, जिसकी उसने खूब मरक कर ली थी। ठीक पौने दस बजे उसका जनाजा तैयार कर के बूकान के बाहर रख दिया गया।

नानवाई का रोते-रोते बुरा हाल हो गया था। लोगों के छट लगे हुए थे।

दस बजते ही एक शोर मच गया—“फकीर साहब आ गये।” फकीर साहब ने आते ही डोट कर पूछा—“क्या है?” लोगों ने कहा—“हुजूर, इस पर-देसी का जवान भाई मर गया।” उधर नानवाई

फकीर के पैरो पर गिर पड़ा। फकीर ने कहा—“हमारे पैर छोड़, तेरा भाई जिंदा हो गया।” फिर कुछ बड़बड़ा कर एक छोटा-सा पत्थर उठाकर लाश पर फेंक दिया, जिसके लगते ही मुर्दा उठकर बैठ गया। लोगों ने जस्दी से कफन खोला, दोनों भाई गले मिले। अब जो देखते हैं, वो फकीर साहब गायब!

पूरी रियासत में यह करामत मशहूर

हो गयी। राजा ने सुनकर सिर पीट लिया कि, ऐसे ऐसे योगी रियासत में हो और हम बे-बैज (निस्सतान) रहें। फौरन तलाश का हुक्म दिया गया। बड़ी तलाश के बाद मिले, तो बोले—“हम राजा के नौकर नहीं हैं, नहीं जाते।” लेकिन राजा के आदमियों ने भी हिम्मत नहीं हारी। आखिर, एक रोज फकीर ने कह ही दिया—“तुम्हारे राजा ने नाक में दम कर दिया है—अच्छा, बल तो बजे जंगल में माड़ी भेजो।”



[सुप्रसिद्ध शिकारी-लेखक ल० रा० मोहम्मद अली शाह]

राजा की मुराद पूरी हुई। ठीक वक्त पर माड़ी भेजी गयी। महल के एक बड़े शानदार कमरे में उन्हें लाकर उतारा गया और राबा-रानी हाथ बांध कर सामने खड़े हो गये। फकीर ने बड़े गुस्से से कहा—“राजा, तूने हमारे नाक में दम कर दिया—अच्छा, भाग क्या भोगता है?”

राजा ने कहा—“हुजूर, हमारे ऐसे भाग कि, आप यहाँ आयें और हम ओलाद से महरूम (वंचित) रहे?” जवाब मिला—“अच्छा, तुमको बेटा मिलेगा—लेकिन जैसे हम कहे, वैसे दान दो।” राजा ने कहा—“हुक्म दीजिये।” बोले—“कल इसी वक्त दो सोने की गायें, जिसका वजन ५,५०० तोले से कम न हो, एक सोने का बछड़ा, जो २०० तोले

का हो, २ सेर भाग और २ सेर तिल तैयार रहे। कल इसी वक्त फिर गाड़ी भेजी।" इतना कह कर फरीर साहब उठकर भाग गये। यहाँ तो हुसम की देर थी, सब सामान तैयार हो गया।

अगले रोज फिर भाड़ी भेजकर फरीर को महल में बुलवाया गया। सब चीजें पेश की गयीं। इतने में महल के नीचे से आवाज आयी—“राम गंगा, राम जमुना, राम साहूवार है।” पूछा—“यह कौन है?” राजा ने जवाब दिया—“दो परदेसी ब्राह्मण हैं।” फरीर के कहने पर उन्हें ऊपर बुलाया गया।

फरीर ने पूछा—“कौन हो तुम?” दोनों रोते हुए बोले—“दोनों गरीब परदेसी हैं और तीन महीने के इस अंधेर नगरी में भूखे-झ्यामे घूम रहे हैं।” फरीर ने कहा—“अच्छा, आगे आओ-अपनी चादर बिछाओ।” दोनों ने अपनी चादर बिछा दी और फरीर ने दोनों माँने की गायें, बछड़ा और गिल-भाग चादर में डालकर उन्हें ढँका—“बलो, उठाओ इसे और भागो यहाँ मे-अरदूद वही के।”

बोली देर मय चुप रहे, फिर फरीर ने कहा—“अच्छा राजा, दान हुआ—अब पूजा का सामान बने। कल इसी वक्त फिर गाड़ी भेजी।” इतना कह कर फिर उठकर भाग गये। अगले दिन गाड़ी भेजी गयी, तो फरीर साहब का पता न था। दोनों ब्राह्मण और नानवाई भी गायब थे। पुर्जिम दौड़-धूप करती नवनीत

रही, लेकिन जामू कामयाब होकर अपनी ‘पाटी’ के साथ बतन पहुँच चुका था।

सिंगापुर में एब हफ्ता गुजर चुका था, लेकिन स्पष्टा न होने की वजह से मैं सीधा अमेरिका न जा सकता था। नूनोचे भेने कुछ सामान—जैंग कोलम्बो के बने हुए मोलफ, पुखराज, बाबून वगैरा और कुछ दूसरा सामान—बापी खरोद लिया और ‘सिडीकन’ का टिकिट लेकर बोनियो के लिए रवाना हो गया। चार रोज चढ़ने के बाद जहाज लावोन पहुँचा। हम सब घूमने के लिए शहर में गये। यहाँ पञ्जाबी बहुत दिगारी देते हैं और खास तौर से पुलिम में। कुछ पञ्जाबी सिपाही मुझे अपनी बैरों में ले गये और खाने की दावत की।

‘सिडीकन’ पहुँचकर भेने निजारत का सिलसिला भी शुरू कर दिया। उसमें मुझे बहुत नफा हुआ। कुछ दिन के अंदर ही सारा सामान लान हो गया और मेरे पास एक हजार रुपये नकद आ गये।

यहाँ आसपास के जंगलो में हिरन, मोमर, शेर, चीते, रीछ, जगली हाथी खूब मिलते हैं। इनके अलावा एब और जानवर होता है, जो बदन में मेंढे हैं। वे तरह भारी; लेकिन कद में उराने छोटा होता है—मुँह पतला और लम्बा होता है, जिग पर एक लम्बी-सी नाक होती है। कान छोटे होते हैं। सारे बदन का रंग काला होता है; लेकिन बमर का हिस्सा सफेद होता है। इसकी ‘टंगर’ बहने

हैं। यह सिर्फ घास, फल और पेड़ों के पत्ते खाकर ही रहता है।

इसी बीच एक रोज 'कलब' में एक अश्रेय से मुलाकात हुई, जो 'कीनावालू' पहाड़ के करीब 'सीगामों' नामी जगह में तम्बाकू के एक 'फार्म' के मैनजर था। उन्होंने मुझे सीगामों आने की दावत दी, जो मैंने कबूल कर ली, क्योंकि तिजाराती फायदे के अलावा शिकार की भी उम्मीद थी। अगले रोज मैनजर साहब 'फार्म' पर वापस चले गये और उसके चार रोज बाद मैं भी सामान ठीक करके इनायत को साथ लेकर सीगामों के लिए चल पड़ा।

चारह बजे ट्रेन चली और एक घंटा चलने के बाद जोर-

जोर में सीटी देते लम्बी। फिर आगे जाने के बजाय एक मोड़ के करीब पीछे हट आयी। मालूम हुआ कि, 'लाइन' पर दो जगली हाथी बैठे हुए हैं। गाड़ी में एक छोटा सा एजेंट और ५ डब्बे लगे थे। अगर गाड़ी चलती ही रहती और खड़ी न होती, तो हाथी टक्करे मार कर गिरा देते।



[शिकार की टोह में]

यह आज ही कोई नयी बात न थी। यहाँ ऐसा हमेशा ही होता रहता था। थोड़ी देर के बाद गाड़ी आगे बढ़ी, लेकिन एक हाथी तब भी बैठा हुआ था। गाड़ी को फिर वापस लाना पड़ा। आखिर, ढाई बजे जब 'लाइन' साफ हो गयी, तो गाड़ी आगे चली। 'लाइन' के दोनों तरफ के

जंगलों में जानवरों के गोल-बेल-गोल फिर रहे थे। शाम को गाड़ी सीगामों पहुँची और हम मैनजर के बगले पर गये। वे हमें देखकर बहुत खुश हुए।

एक हफ्ते में ५६ सौ रुपये का कारोबार हो गया। शिकार की गरज से एक हफ्ता टहरने का और इरादा किया।

और, एक दिन में सुबह होने से पहले ही इनायत और दो

कुलियो को साथ लेकर शिकार के लिए चल खड़ा हुआ। चढ़ाई के पने जंगल में दाखिल होने के बाद एक जगह नदी-सी दिखायी दी। मे यहाँ नास्ता करने के इरादे से रुक गया। इनायत कुलियो के साथ पीछे जा रहा था। मैं जमी रुका ही था कि, पास की झाड़ियों में सरसराहट-भी सुनायी

दी और फिर फौरन ही एक जगली हाथी चिगाडता हुआ मेरी तरफ लपका।

इनामत और कुली जो पास आ चुके थे, उल्टे पैरों भागे। मैं हाथी के बिलकुल सामने था, इसलिए भागकर जान बचानी मुश्किल थी। दूद कर पास के एक पेड़ पर चढ़ गया। हाथी गुस्से में बभी पेड़ को टक्करे मारता और बभी रौंड उठाकर मुझे पकड़ने की कोशिश करता। जब आधे घंटे तक उसकी सारी कोशिशें नाकाम हो गयीं, तो अपनी मुर्ख-मुर्ख औखों से घूरने लगा और थोड़ी देर बाद पेड़ से कसर लगाकर बैठ गया। एक घंटा इसी तरह गुजरा। आखिर, धक्कर वह अगले पैर पंजावर, उन पर तिर रखकर मो गया। मैं इस घुघटे में था कि, वह सोया नहीं, बल्कि मुझे धोखा देने की कोशिश कर रहा है।

तीन घंटे जब मैं भूल से बेहाल होकर तंग आ गया, तो एक तरलीय सूझी। मैंने पेड़ की गूँधी हुई लकड़ियों कोड़कर एक बटल-भा बनाया। फिर जेब से रुमाल निकाल कर उसी धम्रियों करके रस्मी बनायी। उनमें बडल को घोंपा और 'मार्चिन' की कुछ तीलियों बडल में रखकर आग लगा दी। फिर उसे हाथी की पीठ पर रख दिया। वह एकदम उठ मठा हुआ और भीतता हुआ ऐसा भागा कि, मुखर भी न देता। मैं जल्दी में नीचे उतरा और तेज कदमों से 'फार्म' की तरफ लपका।

नवनीत

दस-बारह बुलियों और कुछ गगाओं का इतनाम करके अगले रोज सवेरे ही हम लोग सिवार के लिए फिर चल पड़े। जंगल बहुत घना था और कुछ जगह पर नरम जमीन होने की वजह से ताल निशान दीख रहे थे। एक निशान गेंद के निशान से मिलता हुआ था। उस दिन के मेरे साथी डाक्टर जोस ने बताया कि, यह 'टेपर' के पैरों का निशान है।

आधे घंटे के बाद एक सूबसूत-भा भालू मेरे सामने से गुजरा। मैंने 'फायर' नहीं किया। कुछ देर के बाद तीन 'टेपर' पहाड़ से उतरते हुए दिखायी दिये। जद पर आते ही, मैंने नर पर दो 'फायर' किये, जिनमें वह जम्मी होकर जरा रुका। मैंने दो 'फायर' और किये, जिससे वह फिर गया। पर बाकी जान बचाकर भागने में कामयाब हो गये। कुछ देर बाद डाक्टर जोस की सीट्री की आवाज सुन कर हम उनसे पास पहुँचे। दो भालू और एक सैमर उन्होंने मारे थे।

दूसरे दिन मैं डाक्टर जोस के साथ राहद-राह वापस आया और एक रोज उनका मेहमान रहा। यहाँ से मैंने ५०० रुपये सिडीयन के एक बँक को अपने हिसाब में भेज दिये।

यहाँ से अगले रोज कश्मी में 'टेबाड' होते हुए हम 'मिनाब-ताम्बायू-स्टैंट' पहुँचे। यहाँ अंग्रेजों की आवादी बहुत थी। एक ही हफ्ते के अंदर ५०० रुपये का माल बिक गया। हमने अलावा, छोटे

हिरन का शिकार भी रहा।

यहाँ से मैं 'भितेरी' गया। वहाँ कारो-बार उम्मीद से ज्यादा अच्छा रहा। दस-बारह रोज मैं ही मेरे पास एक हजार रुपये नकद आ गये। मैं सिंगापुर से नया माल लाने के लिए तैयार था। अतः एक रोज एक वादवानी बस्ती के जरिये लाबोन के लिए रवाना हो गया, ताकि वहाँ से स्ट्रीमर-द्वारा सिंगापुर जा सकूँ।

उन दिनों तमाम समुद्र में एक चीनी डाकू बर्गों की बड़ी घूम थी। आसपास के तमाम मुल्कों में उसके जासूस मौजूद थे, जो जहाजों के चलन के बारे में उसको सबरे भेजा करते थे। डच और ब्रिटिश सरकार न कई बार उसे गिरफ्तार करने की कोशिश की, लेकिन उसका एक आदमी भी अब तक उनसे हाथ न लग सका था।

हमारा जहाज भी जासूसों की नज़र से न बच सका। दूसरे दिन सुबह की रोशनी फैलते ही, लोगों में खोर मच गया। दो जहाज बड़ी तेजी से हमारे जहाज की तरफ आ रहे थे। मूरज निकले-निकलते वे हमारे करीब आ गये और 'फायरिंग' शुरू कर दी। मत्लाहो ने जहाज को रोक कर वादवान उतार लिये, जिसका मतलब यह था कि, जहाजवालों ने

हथियार डाल दिये हैं।

हमारा जहाज रुकते ही 'फायर' बंद हो गये और उनके जहाज हमारे जहाज से आ लब। डाकू हमारे जहाज में कूद आये और सबको बंदूक के कुदो से मारना शुरू कर दिया। मेरे सिर और कंधों पर सख्त चोटें आयी।

मैंने और कुछ अपरोकियों न जा सके। साथ ही सिंगापुर जा रहे थे, हाथ ऊपर



[गरबिन के अनुसार मनुष्य का निकटतम पूर्वज 'ओरंग उटान']

उठा दिये। अब उन्होंने सामान लूटना शुरू किया। जहाजवालों की चाबला की बोरियाँ, अपरोकियाँ का सब सामान, मेरा ट्रंक, जिसमें मेरे सब नबद रुपये थे, उठा कर अपने जहाज में फेंक दिया। इसवे अलावा मेरा सूट-बूट, दूसरे कपड़े, हूँट—यहाँ तक कि, खाने की टोकरी भी उठा ले गये। शलाई पर से घड़ी भी उतार ली। मेरे

पास सिर्फ बर्गीज, पाजामा और पैरो में स्लीपर-भर रह गये।

दो घंटे के बाद डाकू रफूचक्कर हुए और यह छूटा हुआ बाफग फिर वापस लाबोन की तरफ चला। जरूमो तो सब ही थे, लेकिन मुझे बहुत ज्यादा तकलीफ हो रही थी। सिर से खून जारी था, जिससे सारे कपड़े तर हो गये थे। धीरे, किसी तरह मूरज छिपने के बकन लाबोन

पहुँचे। पुलिस में बयानात हुए और फिर मैं वहाँ मे पजाबी सिपाहियों की बंदियों में आया, जहाँ पहले भी उनका मेहमान रह चुका था। हालात मालूम होकर उन्हें बहुत अफसोस हुआ। डाक्टर को बुलाकर इलाज कराया और खाने वगैरा का इतजाम किया।

सिगापुर जाने की अब कोई मूरत न थी, इसलिए हालत जरा सँभलने पर उन लोगों से कुछ पैसे वज्र लेकर सिडोवन वापस आया, जहाँ दो हफ्ते तक विस्तर पर पड़ा रहा। तबीयत ठीक होने पर, वैन में जमा किये हुए ५०० रुपये निकाले, कुछ रुपया इनायत में माल बेचकर जमा किया था—सब लेकर सिगापुर में भाग लाने के लिए रवाना हुआ, जहाँ मे २० रोज के बाद वापसी हुई।

मिगापुर में वापस आते हुए, रास्ते में मालूम हुआ कि, स्थान डाकू और उसके कुछ साथी गिरफ्तार कर लिये गये हैं। हमारे जहाज के बाद उन्होंने गव और जहाज का नुटा था, जिसके फौरन बाद रियासत 'सारावाक' और रियासत 'बरानी' की फौजों ने उसे समुद्र में ही धेर दिया। आखिर, स्थान और उसके कुछ जमी भागी पकड़े गये। डाकूओं की गिरफ्तारी के कि रियासत बरानी ने समुद्र में डूँ दी थी, इसलिए उन्हें मुल्तान-बरोनी के हवाले कर दिया गया।

मैंने जो बताया था, वह सच था।

नवनीत

था। अब फिर बमर बाँधी और सिगापुर में लाया हुआ सामान ठीक करके लाते पहुँचा। पजाबी सिपाहियों से मिला, कुछ चीजें उनकी भेंट की। वहाँ मे मेरा डरादा मेमेरी जाने का था। इसलिए मेमेरी जाने के रास्ते में, मैं भी स्थान के मुकदमे का पंचमला सुनने और नतीजा देखने के लिए बरोनी पहुँचा।

मुल्तान-बरोनी के मुगीर और डाक्टर दोनों अंधेज थे। उनसे मुलाकात हुई, फिर उनके जरिये मुल्तान में मिलने का मौका मिला। मुल्तान मुझसे मिलकर बहुत खुश हुए और महल में मरवायी मेहमान के तौर पर ठहराया। मेरे अपोका के सिवार के हालात सुनकर उन्होंने कहा कि, रियासत के जगलों में भी शिकार खूब मिलता है। अगर मैं चाहूँ, तो वह इतजाम कर दूँगे। मैंने मारावाक में वापस आने के बाद हाजिर होने का वादा किया।

एक रोज बालो-बालों में स्थान डाकू का जिन आ गया और मैंने मुल्तान की अपने लुटने का हाल बताया। मालूम हुआ कि, उसे और सब साधियों को मौत की सजा दी जायेगी। मेरे यह पूछने पर कि, मौत की सजा का यहाँ क्या-क्या तरीका है—फौजी दो जायेगी या गोली मार दी जायेगी—मिर्ष दतना बताया गया कि, इन दोनों तरीकों में मे कोई तरीका यहाँ चालू नहीं—हमारा प्राग तरीका अपनी बाँगी में देखना।

राजा देनेवाला दिन आ गया। ठीक वक़्त पर दरिया के किनारे बने हुए एक मकान के सामने सब लोग जमा हो गये और बोल-ताशें करैरा बजाये जाने लगे। सुल्तान अपने मुसीर और डाक्टर के साथ आये और कुछ शाय लेकर ऊपर की मजिल पर पहुँचे। उस वक़्त दरिया में पसील के नौके निहायत खोर हो रहा था। मैंने झोंक कर देखा, तो दिल लरज गया—दरिया में छोटे-बड़े सबड़े घड़ियाल जमा थे, जो मैं हूँ खोले शोर मचा रहे थे। कुछ देर बाद नौ बंदी जज़ीरों में जकड़े हुए लाये गये, जिनको मैदान में रक्का कर दिया गया। सुल्तान ने अपनी जयान में एक तबरीर की (भाषण किया)। उससे बाद सब लोग पसील



[घर और]

पर जमा हो गये। सिपाहियों ने एक बंदी की जज़ीरे सोलकर उसे दरिया में फेंक दिया। गिरने के साथ ही घड़ियालों ने तिता-बोटी करके रक्त दिया। बाकी ठाणुओं का भी यही हथ्र हुआ।

दूसरे रोज मैं इनायत को साथ लेकर मेसेरी के लिए रवाना हो गया।

यहाँ कारोबार इतना अच्छा रहा कि, मुझे दो हल्ले के बाद सिगापुर में

दोबारा माल खाना पड़ा। लगभग एक महीना मैं यहाँ ठहरा। इस वक़्त मेरे पास काफी रकबा था। मैंने कुछ रकमे खर्च के लिए रखकर बाकी तमाम रकमा सिटीवन-बैंक को भज दिया।

मुश्तान से वादा कर चुका था, इसलिए इनायत के साथ बरोनी वापस आया। यहाँ आकर मालूम हुआ कि, सुल्तान बीमार हैं। मुलाकात होने पर मैंने शिबार

का जिक्र करना मुना-सिब नहीं समझा, लेकिन उन्हें खुद याद था। दारोगा ए शिबार को मुलाकर हमारे लिए फौरन ही इतजाम करने का हुक्म दिया।

शाम को दारोगा ने मुझसे पूछा कि, कम-से-कम कितने आदमी होने चाहिए? मेरे खयाल में चार-पाँच आदमी काफी थे।

लेकिन उसने कहा कि मुश्तान की हिदायत है कि २० आदमियों में कम न हो। दो घोट मेरे लिए और पाँच घाटे रखद और चारबंदारी के लिए हा। इसी अन्वाया तीन सरपारी शिबारी, जिनके पास उनकी बंदी और घोटें होम बह भी साथ होग।

अगले रोज बह सब सामान तैयार था। शाम के वक़्त मैं मुश्तान से मिलने गया।

उन्होंने मेरी 'राइफल' की तरफ स इतमी-
नान जाहिर किया, लेकिन फिर कहा कि,
जंगल में निकल एव हथियार बांधी नहीं
होता-इसलिए एव अमरीकी पिस्तौल
और उसका 'मगेजीन' मेरे हवाले किया।

दूसरे दिन हम सोम शिकार के लिए
चल पड़े। साथ कुल २४ आदमी और
१० घोड़े थे। जंगल में पहुँचने पर दो
रोज आराम करने के बाद मरचारी
शिकारी अहमद की राय के मुताबिक
एक घरे के बितारे मचान बनाये गये।

यहाँ चार-पाँच रोज 'कैम्प' रहा।
लेकिन कोई बड़ा शिकार न हो
सका। आसपास के जंगली भी 'कैम्प'
में आने लगे थे। उनमें मालूम हुआ
कि, इस जंगल में कोई बड़ा जानवर
नहीं-सिर्फ हिरन, सोंमर, चींटा और
जंगली मूँदर वगैरा मिलने हैं। चुनौचि
यहाँ में 'कैम्प' उठाया और आगे बढ़े।

घने जंगल और लगे घाटियों में
गुजर कर 'मोन्गे' गहाट के दक्षिणी भाग
में पहुँचे, जहाँ में करीब ही टाया नदी
बहती थी। यहाँ एक खुले मैदान में
'कैम्प' लगा दिया गया। रात-भर शेरों
और चींटों के बोझों की आवाजें
आती रही। जंगली बंद भी मालूम
होते थे। सुपह के वक़्त पास ही एक
सोंमर के बोलने की आवाज आयी,
जिसे अहमद शिकार कर लाया और
नास्ता करने में तीनों शिकारियों के
साथ चल सड़ा हुआ। कई रीछों के

हमन शिकार विय और बहुत-से रीछों
को इधर-उधर चल राते हुए पाया।

दूसरे रोज आठ बजे जंगल के निचले
हिस्से में बहुत-से जानवरों के शोर और
एक सोंमर की चीरा की आवाज सुनेली
दी। दूसरा सरकारी शिकारी इस्लाम
दा आदमियों के साथ शिकार के लिए
जा चुका था, इसलिए मैं तीसरे मरचारी
शिकारी जालू और अहमद को साथ
लेकर चला। रात मील चलने के बाद
झाड़ियों में कोई जानवर हिलता हुआ
नजर आया। हम धीरे-धीरे पेड़ों की आड़
लेकर पास पहुँचे, तो एक शेर को सोंमर
लाते हुए पाया। मैंने सीने का तिसारा
लेकर 'फायर' किया, लेकिन हाथ हिल
जाने की वजह से गोली पेट में लगी।
गोली लगते ही वह उछला और गलत
हुआ हमारी तरफ लपका। अहमद ने
फौरन 'कैम्प' का 'शामर' किया, जालू ने
भी गोली चलायी। आखिर, जस्सी
होकर वह नाले में बूद गया।

उसका पीछा करते हुए हम जंगल में
घुसे चले गये। आधा मील चलने के बाद
सामने बड़ी घनी झाड़ियाँ थी, जिनमें
धुसरा बड़ा मुस्तिल या और शेर को जम्मी
छोड़कर जाया भी न जाता था। आखिर,
अहमद को बाहर छोड़कर मैं और जालू
अंदर घुस ही गये। काफी दूर जाने के
बाद एक नाला सामने आ गया। मैंने
आगे बढ़कर देखा, तो शेर मौजूद था
और मुर्दा मालूम होता था। मैंने

एहतियान के तौर पर चार में 'हू' की आवाज निकाली, जिसके साथ ही वह कूद कर नाले से बाहर आ गया। अगर बीच में झाड़ियाँ न होती, तो वह हमारे ऊपर ही था। खैर, मेने सिर का निशाना लेकर गोली चलायी, जालू ने भी सिर पर ही गोली मारी, क्योंकि उसका सिर ही हमारे सामने था। 'फायर' करते हुए मरी औखों के सामने अंधेरा-सा आ गया था। कुछ मिनट के बाद होश में आया, तो घेर सिर्फ गज भर के पासले पर मुर्दा पड़ा था। पीछे घूम कर देखा, तो जालू गायब था। मैं आहिस्ता आहिस्ता झाड़ियों में बाहर निकला, तो दोनों मौजूद। 'कैम्प' वापस आ कुछ आदमी भेज खाल उतर-वाकर भेगा ला।



[अध्यक्षव]

दूसरे दिन, जहाँ दूर का श्रावण था। 'मेने' इनायत और तीनों शिकारियों के अलावा दो आदमी और साथ लिये। रास्ते में नाइला करने के बाद, दस बज के करीब एक नदी के किनारे पहुँचे। यहाँ जंगल घना था और घास के नीचे पानी बह रहा था। इनायत और जालू को दोनों कुत्तियों के साथ एक ऊँची-सी जगह पर पत्थरों की ओट में बिठाया

और इस्लाम और अहमद का साथ लेकर खुद जंगल में घुसा। बारह बजे के करीब कुछ पासले पर एक जानवर दिखायी दिया, जो खीखी से घास हटाता हुआ आ रहा था। वह एक जंगली बंदर था।

निशाना लेकर मंत्र 'फायर' दिया। गोली लगते ही, वह उछला, कूदा और एक तरफ को भागा। उसको उछल कूद में, मैं दूसरा 'फायर' भी न कर सका। खून के निशानों पर उसका पीछा करते हुए,

हम आगे बढ़े और कुछ दूर पर झाड़ियों में ताजे निशान दिखायी दिये। अहमद ने झाड़ियों पर एक 'फायर' 'पैप' का किया, जिसके साथ ही ज़मी बँल झुंझला कर बाहर निकला। मैं 'फायर' करने के लिए 'राइफल' उठा ही

रहा था कि, वह हमारे तरफ मरदा और, इससे पहले कि, मैं 'फायर' करूँ, उसने मुझ अपने सींगों पर उठाकर १०-१५ गज दूर फेंक दिया, लेकिन अहमद और इस्लाम ने चार 'फायर' करके उसे गिरा ही लिया।

मेरे सिर, कमर और पैरों में इस कदर चोट खायी थी कि, मैं बहोस हो गया। होश आया, तो खुद को छुते हुए मंदान

में पाया। इनायत मेरे सिर के जस्म साफ कर रहा था। मैंने हाथ-भूँह धो कर पानी पिया। गाम बरौब थी, इसलिए वापस हुए। मेरे लिए दूर तक चलना मुश्किल था, इसलिए रास्ते में त्रगलियों की एक बस्ती में ठहर गये। वहाँ मे १५-२० जगली घघाले लेकर गये और बेल के टुकड़े करके से आये।

मुबह की किन्नी-न-किन्नी तरह 'बैम्प' में पहुँचे। मैं किन्नी बाधिल न रह गया था, इसलिए बिस्तर पर पड़ गया। अगले रोज तीनों शिबारियाँ को बुली के साथ उगी जगह भेजा, जहाँ वह बेल मारा गया था। मुझे उम्मीद थी कि, वहाँ एक-आध घेर जरूर मार लेंगे।

शाम के बक्ल 'बैम्प' में कुछ जगली आ गये और उनमें बातें होनी रहीं। वे 'बादन' वीम के थे। उन्होंने बताया कि, दूसरी जगली वीम, जो 'बिली' बहलानी है, बहुत मतरनाक होती है और यह दोनों आपस में लड़ती भी रहते हैं। कुछ दिन पहले दो जवान लड़कियों के ऊपर मूब जग हो चुकी थी, जिसमें 'बेन्नी' पूरी तरह से हारे थे।

मूरज छानने के बाद जगली वापस चले गये और मैं गावर मोने के दिष्ट लेट गया। ग्यारह बजे के करीब पाम हो घेर के थोड़ने की आवाज आयी। थोड़े बाहर मंदान में बैठे हुए थे और मैं जम्मी था। इनायत को जगा रहा था कि, पोंछी की भाग-दौट की आवाज

आयी। इनायत बाहर गया और वापस आकर खबर दी कि, घेर एक बारबारी के घोंडे की गर्दन मार, उमका पुर पोवर भाग गया। बाकी रात 'बैम्प' के आदमी बारी-बारी में जागते रहे।

दूसरे रोज मुझे इस्लाम बगरह के वापस आने की उम्मीद थी, लेकिन वे गाम नव भी न आये, जिसमें मुझे बहुत चिन्न हुई। तीसरे रोज मुबह को ९ बजे के करीब 'बैम्प' में किन्नी के आने का हगामा-या हुआ। छडी के सहारे दरबाजे तक आकर जो-मुँह मेने देखा, उसमें सबता-या तारी हो गया (मूर्छी भी आ गयी)। तीन बुली एवं जस्मी की बंधों पर उठाये ला रहे थे। साथ में अहमद और जालू भी थे। मालूम हुआ कि, इस्लाम जस्मी हो गया है। निर, गर्दन, बाजू—गव बुरी तरह जस्मी थे। छोनदारी में लिटाकर उसकी मरहम-मर्दी की गयी। कुछ देर बाद होना में आने पर सोरवा पिलाया गया। उसने निपट कर अहमद ने मुझे अपने हाजात मुनामे।

वे हमसे मगमत होकर, उस दोष में पहुँचे, जहाँ मेने रात गुजारी थी। वहाँ मे पहाड की चढ़ाई तय करके दूसरी तरफ के जगली में पुगे। वहाँ एक मोभर का शिबार करके उमका गोन्न भूतने के लिए आस पर रखा। इतने में दो जगली, जो 'बिन्नी' थे, वहाँ आये और गोन्न भोगा। अहमद ने बाकी बचा हुआ मोभर उनके हवाडे कर दिया, जिने

लेकर वे बस्ती में चले गये, जो वहाँ से तीन मील दूर थी।

रात गुजारने के लिए वे चरमे के किनारे मचान बनाकर बैठ गये। आधी रात के बाद एक नर शेर किसी तरफ से आकर चरमे के किनारे पर आ लड़ा हुआ और इधर-उधर देखने के बाद एक बार जोर से दहाड़ा। कुछ देर के बाद, एक नर-खेद, एक मादा और दो बच्चे दूसरे किनारे पर आकर पानी पीने लग। दोनों नर-शेर एक-दूसरे को घूरने लगे। फिर पहला नर घूमकर दूसरे किनारे पर पहुँचा। कुछ देर तक घूरने के बाद दोनों एक-दूसरे पर टूट पड़े।

अहमद के साथियों ने दन-दन छ 'फायर' करके तीनों को मिरा दिया। दोनों बच्चे अपनी मुर्दा माँ के पास बैठे रहे। सुबह को अहमद बर्गरा मचान से उतरे और बच्चों को पकड़ने की कोशिश की, लेकिन वे हाथ न आये। भूख मिटाने के लिए एक हिरन का शिकार करके उसका गोष्ठ भूतने के लिए आग पर रमा। इतने में ही कलवाले दोनों जगली आ मीजुद हुए।

ब शेरों को मुर्दा देखकर बहुत गुस्सा हुए। कहने लग कि, सरदार के पास चलो। एक जगली एक बटूक उठाकर भागा। अहमद ने फौरन दूसरी बटूक से एक पर गोली और दूसरे पर छर्रे का बार किया। एक तो गोली लगते ही गिर पड़ा, लेकिन दूसरा जस्मी होकर भाग निकला। वहाँ टहरने में खतरा था,

इसलिए अहमद और उसके साथी शेरों की साल उतारे बगैर ही वापस हुए।

घन जंगल में भयानक शोर सुनकर सब रूक गये। एक बहुत बड़ा 'ओरंग-उटांग' उछलता-कूदता उनकी तरफ आ रहा था। उसके नूदन से पहले ही, उन्होंने एक साथ उस पर छ 'फायर' किये। वह जस्मी हो गया, लेकिन उसने फौरन कूद कर इस्लाम को पकड़ लिया और गुस्से में उसने बाजू सिर, सीना, रदन-सब चबा डाले। वह इस्लाम को लेकर भागना चाहता था कि, अहमद ने उसके पैरों पर दो 'फायर' 'ग्रेप' के किये, जिससे वह बिर गया, लेकिन फिर भी जिंदा था, इसलिए एक 'फायर' सिर पर और किया गया, जिसमें वह मर गया। तीनों इस्लाम को उठाकर आहिस्ता-आहिस्ता वापस जंगलियों के गाँव में पहुँचे। रात वहाँ गुजार कर सुबह को दा और आदमियों को साथ लेकर 'कम्प' तक आये।

यह हालात सुनकर मुझे बहुत फिक्र हुई। इस्लाम के बचने की कोई उम्मीद नहीं थी। उसका सारा धन नीला हो गया था। मैं सोच रहा था कि, मुल्तान-बराणी जबकि तलब करेगा, तो क्या होगा? इसके अलावा जंगलियों के हमले का भी हर क्षण डर था, जिसका एक आदमी मारा गया था।

रात-भर इस्लाम बहुत बचन रहा। 'आखिर, सुबह को उसने हम दुनिया से बच कर दिया। उसकी दफन करने के

बाद मेरा इरादा बापमी का हुआ, लेकिन अहमद की राय थी कि, खानगी अगले दिन हो। इसलिए मैं मेरे में आकर लेट गया। ५ बजे लोगों का गोर मुनकर मेरी ओंम झुल गयी। इनापन ने आकर खबर दी कि, जगलियों ने 'बैम्प' को घेर दिया है। मैंने जल्दी से शीचिय-मूट पहना, शंको पेटियों में गोळियाँ और कारतूस भरें, पिम्नोड भर कर पेटी में लगाया और 'राइफ' में 'मैगेजीन' डालकर बाहर आया, तो हाथ उड़ गये। पार-पौच सौ जगलियों की पौच 'बैम्प' को घेरे हुए थी। इनने आदमियों से जान बचाना मुझिन् था, मुबारक ही बेकार था, इसलिए 'राइफ' गाली करके मैंने उनके गामने पेंच की। उन्होंने मेरे हाथ-पौच रम्मी से मजबूत बाँधकर एक तरफ डाल दिया। 'बैम्प' के कुछ आदमी मारे गये, कुछ जम्मी हुए। आखिर 'बैम्प' को छूट कर एक घंटे के बाद वे मुझे लेकर अपने गौब की तरफ चले गये। मुझे नहीं मालूम हो गया कि, इनापन और अहमद वगैरा का क्या हुआ।

गौब में पहुँचकर, मुझे जगलियों ने एक लम्बे-सोढ़े झोले के एक छोटे-से कमरे में बंद कर दिया। झोला जमीन से बहुत ऊँचा था, जिसका फर्श बाँम का था। बँधा हुआ होने की वजह से मुझे बड़ी तकलीफ हो रही थी। थोर, किमी तरह मुबह हुई और ओरलों और बच्चों के बोलने की आवाजें आने लगीं। एका-नवनीत

एक कमरे का दरवाजा खुला और एक मूबमूरत नवजवान, जिसकी उम्र १७-१८ साल की रही होगी, अंदर आया। उसे देखकर मुझे बड़ा ताज्जुब हुआ; क्योंकि वह जगली नहीं था—एक गौरा था, छाटा-सा कोट और एक धपटे का पाजामा पहने हुए था। मुझे देखकर उसे भी ताज्जुब हुआ। वह मेरे पास आकर बैठ गया और पूछा—“अन्ना हिन्दी? मुस्लिम?” (क्या तुम हिन्दुस्तानी हो? मुसलमान?)। अकीबा में रहने की वजह से मुझे काफी अच्छी आ गयी थी। मैंने उसी तरह टुकड़ों में जवाब दिया—“अन्ना शरीफ-हिन्दी।” (मैं मैसूर हैं—हिन्दुस्तानी)। वह ताज्जुब से बोला—“अन्ना शरीफो!” और, फिर इकट-अरी नजरो से देखता हुआ चला गया।

दम-भारह बजे के करीब कुछ लोग मेरी कोठरी में आये, जिन्हें देखकर मैं समझ गया कि, मौन की घड़ी आ गयी। वे मेरी रस्मियों सोलहर उर्मा ममान के बड़े हिस्से में लाये, जहाँ बहुत-से जगली जमा थे। उनमें बीच में एक बहुत ही बदनूर जगली सवार ने टेक लगाये बैठा था। मुझे देखकर वह मुझे से ग्ला हो गया और दोन पोंमने हुए कुछ कहने लगा। वहीं मुझे एक बूढ़ी औरत दिखायी दी। वह भी जगली नहीं मालूम होती थी, बल्कि अरबी ममल से मालूम होती थी। इनमें से यही लड़का, जो मुबह मेरे पास आया था, मेरे पास आकर गया हो गया और मादर के कहने से

उठाने मुझसे पूछा कि, मैंने जंगल में उनसे आदमी को क्यों मारा और ज़रमी किया ?

मैंने जवाब दिया कि, मैं तो बर्द दिनों से बीमार और ज़ख्मी पड़ा हूँ—उस जंगल में कभी नहीं गया । साथ ही मैंने अपने ज़ख्म भी खोलकर दिखाये । वह लड़का देर तक सरदार को समझाता रहा । उनकी बातें सुन मैं न समझ सका, अलग-अलग मैंने वह अदालत ज़रूर लगा लिया कि, वह लड़का मेरी यथार्थता कर रहा था, क्योंकि सरदार का गुस्सा कम हो चला था ।

कुछ देर बाद वह चहरी साम हो गयी । बार हथियार-बंद सिपाही मुझे लेकर बस्ती से बाहर चले, तो मुझे यकीन हो गया कि, अब मुझे बराल कर देंगे । लेकिन मुझे इस बात पर बड़ा अश्मना था कि, न तो उन्होंने मेरी सलाही की और न बदन पर से कोई चीज उतारी । गिस्तान, पेटी, कारतूस, चाकू—यहाँ तक कि, मेरी जेब में कुछ मसद 'डालर' और कुछ 'नोट' थे, वह भी न लिये ।

बस्ती से बाहर एक मील चलने के बाद एक बड़ी झील नज़र आयी । वहाँ उन्होंने मुझे एक बस्ती में सवार होने का इशारा किया । मैंने समझा कि, साथ-ब-सा भी रियासत बरोनी की तरह भीत की राजा पानी में फँस कर दी जाती होगी । इस-के साथ श्योंग की मोत मेरी आँखों के सामने घूम गयी । लेकिन झील में कुछ दूर आगे जाकर एक ज़ीरे (डीप) के बिना—उन्होंने मुझे उतरने का इशारा किया । वहाँ उतरने के बाद मालूम हुआ कि, उन्होंने

मुझे बंद कर दिया है और यह ज़ीरा (डीप) उनका बंदखाना है ।

अब मुझे जान बचने की पुरी के साथ यह फिर भी थी कि, इस बंद से किस तरह पीछा छूटेगा ? मैंने हिम्मत में काम लिया और ज़ीरे (डीप) में घूम-फिर कर देखा । यह एक बहुत ही छोटा ज़ीरा था । कहीं-कहीं पत्थरों के बीच से मोटे पानी के चरम तकल रहे थे । पेड़ पत्तों से लदे हुए थे—जैसे बटहल, अनन्नास बगैरह । भूख से बेताब तो था ही, एक बटहल तोड़ कर खाया और चरम से पानी पिया । शाम हुई, तो रात गुजारने की फिर हुई । लकड़ी काटने का कोई सामान न था न रस्मी ही थी, जिससे भोजन बनाकर रात गुजार सकते । चरम से थोड़े-से फासले पर एक बड़ा-सा पेड़ था । उस पर चढ़कर अच्छी तरह देख-भाल की । फिर चाकू से एक पेड़ की हरी छाल उतारी और कुछ लकड़ियों जमा करके उनी पेड़ पर उन लकड़ियों को छाल से बाँधकर भोजन बना लिया । उसी पर रात गुजारी । झील और ठंडी हवा की वजह से बड़ी राई लगी ।

रिती तरह गुवह हा गयी । चरम पर हाथ-भुँट धोकर एक बटहल और अनन्नास से नास्ता किया । सज़ूर की तरह वे बहुत-से पेड़ यहाँ देख चुका था । उनकी साल काटकर खाया और बर्द बटाइयाँ बनायी । अपने लिए पत्तों की एक 'हैट' भी बनायी । बटाइयों को भोजन पर बिछा दिया । इसी काम में दोपहर हो गयी और भूख सताने लगी । पहले चरम पर खूब नहाया ।

बढ़ करके नमाज पढ़ी। मुमीबत में मुदा की याद भी खूब आती है—देर तक नमाज में लौट रहा। फिर कुछ बटहड़ और अनप्राप्ति साकर चश्मे के बिना रह बैठा रहा। मूरज छिपने में पहुँचे एव अनप्राप्त और खाबर मवान पर चला गया। वहाँ देर तक खयालों में जकड़ा रहा और फिर नींद आ गयी।

बारह बजे के करीब, मेरी आँख खुद गयी। चारों तरफ मन्नाटा छाया हुआ था। एवाएन दूर में गाने की घड़ी मीठी आवाज आयी और फिर कुछ देर बाद एव साथ की अपनी तरफ घटने देखा, तो दिट में बहुत डरा। पाँच मिनट के बाद, विलकुल पाम ही में आवाज आयी—“शरीफो—शरीफो—शरीफो।” अब मैंने पहचाना—यह वही नवजवान था, जिसकी बोगिन्द्र में मेरी जान जगलियों में बची थी। मैं एकदम निड में बूढ़ पड़ा और दौड़कर उसके पाम पहुँचा और मैंने में लगाकर लिपटा लिया। फिर मैंने उमंग कहा—“बह क्या गजब बिषा कि, अरे के ही हम मन्नाटे में जगल और झील को पार करके यहाँ आये?”

वहने लगा—“आपकी गोहज्जत गोचकर में आयी।” तब, हम दोनों मवान पर आये और मेरे पूछने पर कि, वह कौन है, यहाँ क्या और वैसे इन जगलियों के हाथो पड़ गयी, उमंग अपने हाथों बगल में।

उमंगे कहना शुरू किया—“मेरा नाम अबदुर्रहमान है; लेकिन गज लोग मुझे ईवू कहते हैं। बिम्भन में छ. माल में इन जगलियों का बँदी बना रखा है। मेरे दादा

और वालिद ‘बहालू’ में, जो मेमेरी और खारावान के बीच में समुद्र के किनारे पर हैं, बारोबार करते थे। मेरे दादा ने भाई बहुत दूर रहते थे, जहाँ वह जगलों का टेवा लिया करते थे। जब मेरी उम १३ साल की हुई, तो उन्होंने मेरे दादा को मजबूर किया कि, हम सब साल-६ माह के लिए उनसे पास जाकर रहें। मेरे दादा ने उनकी खुशी के लिए मेरी दादी, वालिदा, वालिद और मुझ कुछ नौकरों के साथ उनके पाम रवाना कर दिया। खुद बारोबार की देख-भाल के लिए बहालू ही रह गये।

“हम लोग घोड़ों पर सवार बने जा रहे थे और जगल में सिर्फ एक दिन का सफर बाकी रह गया था कि, एक तरफ से अचानक जगली ‘बिलियो’ ने निकलकर हमला कर दिया। वालिद और नौकरों ने तुरंत मुकाबला किया, लेकिन जगलियों में बच न सके। जगली मेरी दादी, वालिदा और मुझे पकड़ कर यहाँ ले आये। वालिदा इन मुमीबत को न गृह मकी—एक साल बाद ही मिघार गयी। लेकिन मैं और मेरी दादी अब तक जिंदा हैं और दिन-रात इन जगलियों की निदमत करते हैं।”

मैंने भी उमंग अपनी रामबहानी सुनायी। उसके बाद मैंने कहा—“भाई ईवू! यहाँ में निबन्धन की कोई तरकीब करनी चाहिए।” उमंगे जवाब दिया—“आज जो देर हो गयी, बट फिर आज्ञा, सब कुछ मोतेगो।” मैं उमंग झील के किनारे तक छोड़ने गया। वहाँ उमंगे बस्ती में मे एक कुन्हादी और

धैली मुझे दे, विदा ले ली।

दोनों धैलियों लिये हुए, मैं मंचान पर आया। धैली को खोल कर देखा, ता उसम भुने हुए चावल थे, जो मेरे लिए एक कीमती चीज थे। ईबू के आ जाने से दिलको बहुत हिम्मत हुई। रात-भर सो न सका, तरह तरह के खयाल दिल में आते रहे।

सुबह होते ही नमाज पढ़ी, देर तक दुआ माँगता रहा। नाश्ते के बाद कुल्हाड़ी लेकर चला और बहुत-सी लकड़ियों, खजूर को पाखें काट लाया। मंचान को ज्यादा आराम देह बनाया। इससे निपट कर आराम करने के लिए लेट गया। सोकर उठा, तो अन्ननाम खाये। फिर ईबू के इतजार में घरमे के बिनारे आ बैठा।

आधी रात के बाद उसकी बहती बिनारे से आ लगी। दोनों बगलबीर होकर मिले। देर तक घरमे के बिनारे धँटे हुए बाते करते रहे। उसने कहा कि, यह और उसकी दादी दिन-भर भागने के बारे में साचने रहे। लेकिन यह बात मुश्किल नजर आती है, क्योंकि एक तो यह जगली ही मौका ही नहीं देंगे, फिर अगर इनकी गैर-मौजूदगी में—जब वे लोग लूट-मार के लिए हफ्तो बाहर रहते हैं—निक्ल भी भागें, तो रास्ते में जगली जानवर भरे हुए हैं।

मैंने कहा—'ईबू, मौत बाएक वस्तु मुकरर है। अगर वह आ गया है, तो हम यहाँ भी नहीं बच सकते और अगर नहीं आया, तो दुनिया की कोई ताकत हथें नहीं मार सकती। इस निश्चित की कंद से तो मौत

ही हजार दजें अच्छी है।'।

मेरी बात सुन कर ईबू को आंख आ गया। बोला—“हम जहर किस्मन आजमायेंग, नतीजा आ-बुख भी हो।

दूसरे दिन दोपहर की नींद पूरी कर के उठा तो चारों तरफ अधरा फँस चुका था। मैं मंचान मे उतर कर बीचिस की जब मैं पिस्तौल डाले झील के किनारे की तरफ चल दिया। ईबू के आने की पूरी उम्मीद थी। आधी रात के बाद चौर निकला, तो दूर से बहती आती हुई दिखायी दी। बिनारे पर आते ही ईबू ने मेरी 'राइफल' पकड़ा दी, जो जगलियों ने मुझसे ले ली थी और फिर खूद खूद कर आ गया। मेरी जान बचाने के बाद ईबू का मुँह पर यह दूसरा एहसान था। बिनारे से हम लाग मंचान पर आये।

ईबू ने बताया कि, कल रात नर जगलियों में एक हगामा रहा। वे लोग 'कायना' पर हमला करने की तैयारी कर रहे हैं। यकीन है कि, जल्द ही चले जायेंग। मैंने कहा—ईबू, यही मौका है। इसको हाथ स आने न देना चाहिए। लेकिन कहीं ऐसा न हो कि, ये लोग तुम्ह भी अपने साथ ले जायें। ईबू ने बताया कि, ऐसा नहीं होगा, क्योंकि लगाई वगैरह में ये लोग सिर्फ अपनी ही कौम को शरीक करते हैं।

उसके बाद दो हफ्ते तक ईबू मिलने न आ सका। एक रोज रात को सफ़्त तूफान आया, जोरदार बारिश हुई। सब चटाइयों या तो टूट गयी या उड़ गयी। मैं पैड के नीचे बैठा हुआ, रात भर भीगता रहा।

मुसह को धूप नियलने पर कपड़े मुगाये, घटाइयाँ तलाश करके लाया, जतनी मर-
म्मत की और मचान दुआरा बनाया।
दो रोज तन सन्त बूसा रह। आगिर,
तीसरे रोज तनीयत सैमली।

एक रोज मचान पर मो रहा बा, बिभी
ने मुदगदावर जमा दिया। ओग गोलवर
देखा, तो ईबू सिरहाने बंटा हुआ मुस्करा
रहा था। मुसह की रोसनी बंद रही थी।
मैंने पूछा—“ईबू, आज इस वकन यहाँ
कौन?” मालूम हुआ कि, रात जगली सफर
पर चले गये। उनसे जाने के कुछ देर बाद
वह इधर चला आया। मैंने कहा कि, उमे
दादी को राय ले आना चाहिए था। उमने
बताया कि, वे नीचे मौजूद हैं।

मैं जल्दी से नीचे उतरा, गलाम किया।
बुआ देने के बाद उन्होंने कहा—“अज
देर न बरानी चाहिए।” मैं जल्दी से
कुछ बटहल और अनम्राम तोड़ लाया,
दादी के थैले में कुछ भुना हुआ गोस्त
और भुने हुए चावल थे। नास्ते के
बाद चलने की तैयारी की। मैंने कोट
पहनपर पिस्तौल और पेटी लमायी,
‘राइफल’ और कूल्हाड़ी हाथ में ली। ईबू
ने मगाल सैमली, दादी ने धैला पकड़ा।
मैंने अपनी मेहनत से बनाये हुए मचान पर
आगिरी नजर डाली और हम लोग सुदा
का नाम लेकर रवाना हुए।

एक घंटे में बरानी झील की दूगरी तरफ
जगडियों के गाँव से बहुत पामनेपर बिनारे
जा लगी। मुदसी पर पहुँचकर मैंने एक मज-

मयनीत

बूत रस्मी में ‘राइफल’ कंधे पर लटकाया।
कूल्हाड़ी और एक मगाल हाथ में ली।
ईबू ने नीर-नमान कंधे पर लटकार हाथ
में भाला और एक मगाल सैमली। दादी
ने धैला बगल में दबा कर रस्मियों बर
से लपेटे और बाकी एक मगाल हाथ में
ली। भूरज काफी ऊँचा हो चुका था—उमरी
तरफ पीठ कर बरये हम सावधानी से
पने जंगल में दागिर हो गये।

दो घंटे के सफर के बाद एक ठैली पहाड़ी
पर पहुँचे। वहाँ से नीचे देखा, तो मैदान में
सैकड़ों रीछ और दूगरे जगली जानवर जमा
थे। इसलिए पहाड़ी पर दूर तन चलने के
बाद नीचे उतरे। कुछ दूर चलने के बाद
फिर चढ़ाई शुरू हो गयी। चढ़ना शुरू
ही किया था कि, झाड़ियों में बिगी की
जानवर के उतरने की आहट मालूम हुई।
सिर उठाकर देखा, तो जगली बेल दिमायी
दिये। जल्दी से ईबू की मदद से दादी को
एक पेठ पर चढ़ाया, फिर हम दोनों भी
चढ़ गये। एक घंटे तक उनसे दूर जाने का
इंतजार किया। इगवे बाद उतर कर कुछ
दूर ही चले थे कि, अचानक एक तरफ से
एक जगली गूभर ने ईबू पर हमला कर
दिया। गाम आने ही ईबू ने उसकी गर्दन पर
आठे का बार किया और फुर्ती से एक पेठ
की आड़ में हो गया। मैंने पिस्तौल में उगारे
सिर पर दो पापर बिये, जिनसे जग्मी
होकर वह कुछ दूर तन चला गया, लेकिन
फिर वही तेजी से पलटा। इतनी देर में मैं
‘राइफल’ तैयार कर चुका था। वह हमारे

भोजन स्वादिष्ट बनानेके लिये



**प्रताप
छाप
हींग**

इस्तेमाल किंजालिये

गोपालजी एण्ड कंपनी

२१८, सैम्युअल स्ट्रीट, मुंबई-३

कविता-कौमुदी

सम्पादक श्री पं. रामनरेशजी त्रिपाठी

पहला भाग प्राचीन हिंदी कविता,

तीसरा भाग ग्रामगीत

चौथा भाग उर्दू



छपकर तैयार हैं

तीनों भागों के परिवर्द्धन में सम्पादक ने प्रशस्ततया धन किया है।

८००-९०० पृष्ठों के सजिस्त प्रत्येक भाग का मूल्य ८)

आपेंर सीधे हम भेजिय अथवा नजदीक के

पुस्तक विक्रेता से सरोदिय

— नवनीत प्रकाशन लि० —

३४१, तारदेव, बम्बई-७

साण्ड

बालक

नन्हे बच्चों के लिये

बालामृत

(विटामिनयुक्त) दैनिक



दत्तात्रेय कृष्ण साण्ड ब्रदर्स, चेम्बर लि०

पेंटरी और हेंड ऑफिस : चेम्बर, बम्बई ३८

बम्बई शाखा ठाणुरदार, बालवादेवो, परेल और दादर.

: बम्बई के मुख्य विप्रेता :

प्रामाणिक स्टोअर्स मोंगल बिल्डिंग, हॉलार्ड रोड, बम्बई ११

पास भी न पहुँचा था कि, एक गोली ने उसे ठड़ा कर दिया।

थोड़ी देर एक जगह सुस्ता कर हम फिर आग बंदे। शाम होने तक सब बुरी तरह थक गये थे। इसलिए एक ऊँची-सी जगह पर लकड़ियों काट कर दो पेड़ों पर—जो एक-दूसरे से मिले हुए थे—दो मंचान बनाये। एक पर ईंटू और उसकी दादी रहे और दूसरे पर मैं। रात होते ही जंगली जानवरों की आवाज से जंगल गूँजने लगा। मैंने इस खयाल से कि, वह दोनों डरे नहीं, अपने शिकार के बिस्ते सुनाने शुरू कर दिये।

११ बजे के करीब वे दोनों सो गये। नींद मुझे भी आ रही थी, लेकिन मैंने सोना मुनासिब नहीं समझा। आयी रात के बाद देखा कि, दो चीते खेलते हुए आ रहे हैं। मंचान के नीचे आकर वे ठहर गये।

कुछ देर बाद एक ने ईंटू वाले मंचान पर चढ़ने की कोशिश की, लेकिन कुछ दूर चढ़कर उतर गया। दादी के सर्राटों की आवाज जोरों से आ रही थी, इसलिए उसने फिर चढ़ना शुरू कर दिया और मंचान के करीब पहुँच गया। मैंने 'राइफल' उठाकर एक गोली दिमाग पर दी, जिससे वह नीचे गिर पड़ा। 'फायर' की आवाज सुनकर दादी और ईंटू दोनों उठकर बैठ गये। झोंक कर देखा, तो नीचे एक चीता दम खोड रहा था और दूसरा उससे सिर की तरफ खड़ा था। मैंने एक गोली उसके सोने पर लगाकर उसे भी पास ही लिटा दिया। रात का बाकी हिस्सा सो-जाग कर गुजार दिया।

सुबह होने पर नास्ते के बात फिर चल पड़े। रास्ते में एक तग दरें से गुजर रहे थे कि, दस-बदह रोछो ने वावा बोल दिया। मैंने 'राइफल' संभाली और ईंटू ने तीर-बमान। दादी ने भी जल्दी से एक मशाल जला ली। पाँच रोछ हमारे हाथ से मारे गये और बाकी जल्मी होकर भाग गये। हममें से कोई जल्मी तो नहीं हुआ, लेकिन पसोने में सब सराबोर हो गये। यहाँ से आगे बढ़े, तो 'औरंग-उटाग' के बोल्ने की आवाज सुनायी दी। हमने फौरन रुक बदल दिया और अपनी राह चलते रहे।

एक घंटे के बाद एक पेड़ पर कुछ काली-सी चीज नजर आयी। मुझे शक हुआ कि, बनमानुस हैं। मैं नशाले जलना चाहता ही था कि, मालूम हुआ, एक नहीं बल्कि दो हैं। अब तो मुझे बहुत फिक्र हुई। लेकिन थोड़ी देर बाद जब वे पास आ गये, तो मालूम हुआ कि, वे रोछ हैं। हमें देखते ही वे लपके, लेकिन खातिर गोलियों से की गयी।

चार रोज इसी तरह जंगल में सफर करते हुए गुजरे। आखिर पाँचवे रोज यह पना जंगल खत्म हो गया। अब हमारे सामने सिर्फ कई-एक छोटी पहाड़ियों और छोटे-छोटे नदी-नाले थे।

ब्यारह बज के करीब एक हिरन का शिकार करके पाँच दिन के बाद पेट भरकर खाया। तीन बजे के करीब हम एक 'कायम'-वस्ती में पहुँच। वे हमारे साथ बहुत अच्छी तरह पेश आये। हमारे लिए एक शोपड़ी

खाली करके साफ कर दो। ईबू और दादी उनकी जवान समझते थे। उन्होंने बताया कि, आगे एक नदी है और उसने इस तरफवाले किनारे पर खतरनाक दलदल है। फिर उन्होंने एक तरफ इशारा करके बताया कि, उस तरफ एक बस्ती है, हम वहाँ जायें। वहाँ के छाग हमें नदी पार करा देंगे।

नदी पार कर के हम लोग बलोड-टून पहुँचे। एक होटल में ठहरने का इतजाम करके ईबू और उसकी दादी के लिए बपड़ा का बंदोबस्त किया। महा-घोबर आराम किया। अगले रोज वहाँ से मेसेरी के लिए चल पड़े। मेसेरी पहुँचकर मेरा इरादा जल्द-मे-जल्द रियासत बरोनी जाने का था। लेकिन ईबू और दादी की जिद से मुझे उनके साथ बटालू जाना पड़ा।

बटालू पहुँच कर मैंने दोनों को एक होटल में छोड़ा और खुद ईबू के दादा की तलाश में चला। मुझे ईबू ने उनका नाम अबु-बत्र बताया था। इरान पर अब्दुस्सत्तार नामी एक अरब नवजवान में मुलाकात हुई, जो दादा अबु-बत्र का भतीजा था। अब्दुस्सत्तार की लेकर होटल में आया। अपनी बच्ची की जिदा देखकर वह हैरान रह गया। तब आपस में गले मिलकर गूँघ रोये। मगरिव (सच्चा) के बाद मेरे बहनें पर वह उन दोनों का अपने साथ मकान पर ले गया।

अगले रोज दम-म्यारह बजे मैं भी वहाँ गया। शंग माहव ने मुलाकात हुई। खूब बात हुई। इतने में बड़ी की भी आ गयी।

नयनीत

मैं ईबू को गैरहाजिर देखकर हैरान था। आखिर, दादी से पूछा। वे बोली—‘तुम ऊपर कमरे में आराम करो, ईबू आता है।’

ऊपर जाकर कमरा देखा, तो काफी बड़ा कमरा था और सूच सजाया हुआ था। मैं कमरे में अच्छी तरह घूम-फिर कर एक आरामनुर्ती पर लेटा हुआ सोच रहा था कि, ईबू की मुहब्बत पर पहुँचते ही खन हो गयी। एकाएक सोडियों पर किसी के आने की आहट गुनायी दी। देखा, तो बूढ़ी दादी के पीछे एक नवजवान लडकी हाथ रग के अरबी ‘फंशन’ के बपड़े पहने हाथ से मुँह छिपाये खड़ी थी। दादी बोली—“लो शरीफ, यह तुम्हारा ईबू आ गया। लेकिन अब यह ईबू नहीं, बल्कि ‘पातिमा’ है।” मेरी समझ में कुछ न आया और थोड़ी देर बाद समझा भी, तो यह कि, घायर पर पहुँचने की खुशी में ईबू मजाक के तौर पर जनाने बपड़े पहनकर आया है।

मैंने उठकर उसके दोनों हाथ बेहरे से हटाये और कहा—“बस्लाह ईबू! तुम तो जनाने बपटो में बड़े हो हमीन मालूम होते हो! अगर तुम सचमुच लडकी हो, तो मैं तुमसे शादी कर लेता।” दादी यह सुनकर मुस्कराने लगी और ईबू झट हाथ छुड़ाकर नीचे भाग गया।

मुझे हैरान पाकर दादी ने कहा—‘मुनो शरीफ, बात यह है कि, ईबू असल मलटकी ही है। इतनीती आगाद हाने की बगह में हम इसे मरदाने बपड़े पहनाते थे। जिग वक्त हमें जगलियों न गिरफ्तार किया था,

तब भी यह लडकों के कपड़े पहने थी, इसीलिए जगली भी इसे लडका समझते थे।”

फिर शाम तक फातिमा नजर न आयी। मेरे रहने का बदोबस्त भी यही कर दिया गया था। रात को पेट में गरानी की वजह से मैंने खाना नहीं खाया। इसे फातिमा ने बहुत ही महत्त्व दिया। मुझ को वह खुद नाश्ता लेकर ऊपर आयी और दोनों ने साथ ही नाश्ता किया।

दस-बारह रोज की मेहमानदारी के बाद मैंने रवानगी की इजाजत चाही, तो दादी ने कहा—“तुम अमेरिका क्यों जाते हो?” यही हमारे पास रहो, यहाँ खुदा का दिया सब-कुछ है।” यह गोवा मुझे फातिमा से खादी का पैगाम था। फातिमा के दादा के पास काफी ज़पदाद थी, हजारों ‘डालर’ नकद बैंक में थे, कारोबार भी खूब चल रहा था और इन सबकी वारिस फातिमा थी।

मैंने उन्हें समझाया कि, मैं परदेसी, बाल-बच्चों वाला धादमी, अपने देश और भोजी को छोड़कर किस तरह यहाँ रह सकता था। इसके अलावा मेरा अमेरिका जाने के इरादे को छोड़ना नामुमकिन था। इसका मैंने उन्हें यकीन दिलाया कि, अमेरिका से वापस होते हुए अगर मौका मिला, तो जरूर मिलूँगा। यह सुनकर उन्होंने कहा—“अच्छा, कुछ दिन और ठहर कर चले जाना।” चुनौति में एक गया।

एक रोज बड़ी बी ने मेरे कपड़े घोड़ी के यहाँ धुलने के लिए भेजे, तो बीचिसकी जेब

में से कुछ पत्थर के टुकड़े निकाल कर मेरे पास भेजे। ये पत्थर मुझे कंद के दिनों में जजीरे में मिले थे। मैं टहल रहा था कि, यह धूप में चमकते हुए दिखायी दिये। कुल्हाड़ी से उस जगह को खोदा, तो ओर बड़े पत्थर निकले। मुझे खयाल हुआ कि, शायद यहाँ सोने की खान हो, इसलिए पत्थरों को उठाकर जेब में डाल लिया था। इन पत्थरों को मैं एक चीनी सुनार के पास ले गया, जिसने सोना भलग करके एक गोली-सी बनाकर मेरे हवाले की। मेरे बेचने के इरादे को देखकर उसने उम सोने के ६२ डालर मेरे हवाले दिये।

फातिमा हृद से ज्यादा मेरी छातिर में लगी हुई थी। उसने बहुत कोशिश की कि, मैं किसी तरह रुक जाऊँ, लेकिन मैं भी मजबूर था। आखिर रवानगी का दिन आ गया। शेख साहब ने मेरे लिए बड़ा सामान तैयार किया था—विस्तर, बम्बल, तकिये और एक ट्रक में बहुत सारे सूटो के कपड़े, भोजे, ख्याल और स्लीपर वगैरा भरे हुए थे। चलने के वक्त दादी और फातिमा बेइस्तिबार रो रही थी। मेरा खुद का भी बुरा हाल था, लेकिन मजबूरी।

दूसरे रोज जहाज मेसरी पहुँच गया। यहाँ एक होटल में टहरा। अगले रोज धरोनी जाने का इरादा था। वहाँ धोकर धुला हुआ बीचिस-सूट पहन कर जेब में हाथ डाला, तो जेब में ५०० डालर के नोट मौजूद थे, जो फातिमा की तरफ से थे। धरोनी के रास्ते में तरह-तरह के खयाल

दिल में आने रहे। कभी इनायत का खयाल आता कि, बहो होगा—बंसा होगा ? और, कभी मोबता कि, न-आने मुल्तान किस तरह पेश आयें ? खंड, बरोनी पहुँच कर मुल्तान को छत्र करायो। उन्होंने फौरन बुलाया। मुझे देखकर बहुत खुश हुए। वे समझे हुए थे कि, मायद में भी 'बेलियो' के हाथों मारा गया।

उन्होंने बताया कि, उस रोज 'बेलियो' के हाथ में ४ आदमी जान में मारे गये और ८ जख्मी हो गये। बाकी ने भाग कर जमल में पनाह ली। अहमद और इनायत बगैरा जख्मियों में थे। 'बेलियो' के वापस आने के बाद वे लोग ४ दिन 'बंम्प' में रहे। उसके बाद 'बायन' लोगों की एक बस्ती घाम ही थी, वहाँ थोड़े दिन आराम करने के लिए ठहरे। लेकिन एक रोज शाम के वक्त वहाँ भी 'बेलियो' ने घावा बोल दिया। 'बायनों' के हार कर भाग जाने में उन्होंने मोव को रूट लिया। 'बायन' मर्द, औरतों और बच्चों के अलावा वे अहमद, इनायत और दो आदमियों को पकड़कर साथ ले गये।

मेरे इनायत को जख्मियों की बंद में छोड़कर अमेरिका नहीं आ सकना था, इसलिए बंदियों की रिहाई के बारे में मैंने मुल्तान में बात की। मैंने उनमें कहा कि, अगर वे मेरे मदद करें, तो मैं खुद कोशिश करूँ। उन्होंने इस पर गौर करने का वायदा दिया।

अंत में, मुल्तान ने मुझे अपने साथ

२० सिपाही और २ जमादार ले जाने की इजाजत दे दी। मेरे कहने पर एक 'मशौनगन' भी दी गयी, जिसे दोनों जमादार चलाना जानते थे।

इनके अलावा १०० हथियारबंद 'बायन' भी हमारे साथ थे। हम लड़ाई में 'बेली' बुरी तरह हार गये, 'बायनों' में खुशियों मनायी और हम अपने मित्रों को छुड़ाकर बरोनी के लिए वापस हुए।

एक हफ्ते के बाद हम बरोनी पहुँचे। मुल्तान की हमारी कामगारी में थोड़ी तृप्ति हुई। तीन रोज तक मैं उनका मेहमान रहा। चौथे रोज इनायत को साथ लेकर मिडोवन के लिए रवाना हुआ। वहाँ भर के खन लिखने के अलावा पानिमा को भी खन लिखा, जिसमें 'बेलियो' के बरते-आम का भी तफसील में जिक्र किया।

इस वक्त मेरे पास सवा तीन हजार रुपये नकद मौजूद थे, जो अमेरिका पहुँच कर कालेज में दाखिला लेने के बाद एक साल तक के लिए काफी थे। इसलिए एक रोज अमरीकी मर्फीर में मिलकर फिन्डीपीन जाने का इरादा जाहिर किया। 'पासपोर्ट' बड़ी आसानी से बन गया। रवाना होने से पहले मैंने सब नवदी अमरीकी डालर में तबदाल की और फिन्डीपीन के लिए रवाना हो गया।

अब मेरे लिए रास्ता साफ था। सफर का सामान ठोक करने के बाद मनीला होना हुआ अमेरिका पहुँचा और अपने मक़द में कामयाब होकर लौटा।



Debb & Reynolds



with

VIEW-MASTER
3-D DIMENSION
COLOR PICTURES



१ डी म रोमाञ्चपूर्ण
सजीव स्पेस कैडेट

तस्वीरे दस पेज के फोल्डर

के साथ तीन रीलो म २१ चित्रों की कहानी
४०० से अधिक रीगोनी लिस्ट के
लिए लिखिए

टोरियोस्कोप (१५) * फोटो रील (२१) प्रकाश यंत्र (१५) * छोटा प्रोजेक्टर (८५)

बुक्स हाउस प्राइमर्स

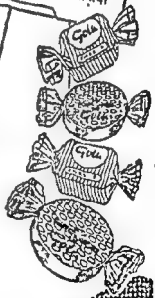
५, निम्बो स्ट्रीट ७६०६

बम्बई कलकत्ता मद्रास नयी दिल्ली



इसके माफ़ी एक और मौल्य मिठाई है
 किन्नी प्रोपर्टाई मिठाई है।

- विटामिन 'ए' - टिफिन १५ बरतों का ११ के.ए.
 का १० मरबो है
- विटामिन 'बी१' - टिफिन १० बरतों का १६ के.ए.
 का ११ मरबो है
- विटामिन 'बी२' - टिफिन १० बरतों का १५ के.ए.
 का १० मरबो है
- विटामिन 'सी' - टिफिन १ के.ए. का १५ मरबो
 का १० मरबो है



गोल्डा
मिठाइयाँ
टॉफियाँ

ही हिन्दुस्थान, मुम्बई मिस्स लि.
 १०, मधुलाल कॉलेज रोड, चेन्नई, इन्डिया।



शौंदर्य की तस्वीर

अभ्यंगान

रत्ना

धर्मका आत्म
शौंदर्य वर्धक
प्रीति



सुशुद्धा-साता अद्वयमान रत्ने
लालित-मुमूर्ति के
शौंदर्य का सरल माधन-त्वचा
की दिनभर गलापन
और नम शशा है



पाटनवाला

इन व शौंदर्य आत्मों के लिए



दी पोद्दार मिल्स लिमिटेड

बम्बई

—निर्माता:—

कोरे द्रुल, चादरें (शीटिंग्स), डाटिंग्स, लट्टा,
लेपाई, आदि-आदि

उत्तम किस्म और स्थायित्व के लिए प्रसिद्ध

। मॅनेजिंग एजेंट्स ।

पोद्दार सन्स लिमिटेड

पोद्दार चेम्बरस

१०९, वास्की बाजार स्ट्रीट, फोर्ट
बम्बई

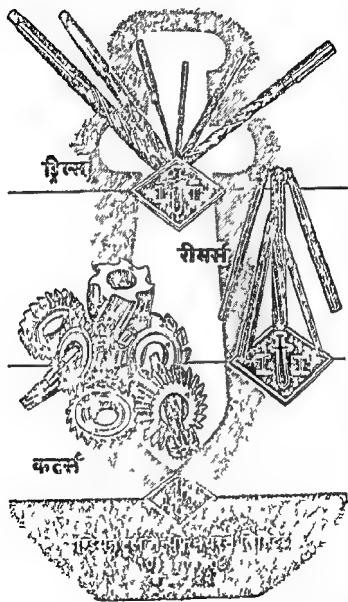
तार

टेलिफोन ।

" पोद्दार गिरमी "

बाकित : २७-६५ (६ लाइन्स)

मिठा । ४-१४९



भारतीय उद्योगों की

सेवा

के लिए

- (A) क्राफ्ट पेपर सादा और धारीदार
- (A) वाटरप्रूफ पेपर
- (A) बोर्ड-सिम्लेक्स, डुप्लेक्स, ट्राइप्लेक्स
- (A) और रंगीन ट्राइप्लेक्स



हाथ के बोरे



हाथी के बरत



फ़ैक्ट्री



घर के निर्माता



एयरमैन

ओरियंट पेपर मिल्स लि०

मैनेजिंग एजेंट्स

विहला ब्रदर्स लि०

८, राँयल एक्सचेंज प्लेस, नल्लुता

हिन्द मिल्स लिमिटेड

हुगल रोड, पलार्ड इस्टेट, बम्बई-१



तार
"टिप घाम"

टेलिफोन ।

वाणिज्य ३००१७

मिल ६०४४३

निर्माता

लेपर्ड, कोरे और धुले हुए लांगक्लाथ, रंगीन लांग-
क्लाथ, रंगीन सूती सूसीज और शर्टिंग, मल्स, जीन, शर्टिंग,
धोतियाँ और साड़ियाँ और १० से लेकर ६० वाउचर तक के
भूत, विशेषकर देहात और निर्यात - बाजार के लिए



हमसे परामर्श करें

निम्नलिखित विभागों के सम्बन्ध में —

- * पाइपों और प्रोवाइड पाइल काउन्टेन्स
- * भार. सी. सी. तिलोख
- * पानी की टंकियाँ
- * रिजर्वॉयर्स
- * ट्रेलर, ट्रालियों
- * टॉपिंग वेगन्स
- * एम्बुलेंस, रेडियो और एक्सावो-जिप की गाड़ियाँ
- * मेल-मालीदा निर्यातवेदाती गाड़ियाँ
- * सड़कें, बाँध और पुल
- * पावरग्रूफ लैंड
- * भीतरी सजावट
- * वायुनिर्वाक कर्नोटर
- * मोटरगाड़ियों के इंजिन (सभी प्रकार, अलुमिनियम और स्प्रोजिट)

मैकेन्जीस लिमिटेड

प्रधान कार्यालय

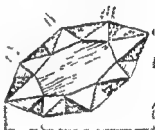
गोवर्दा, बाराह

(टेली. नं. ६०००७/८/९)

देश के बीमा व्यवसाय में
रुबी जनरल
इश्योरेंस कं. लि.

को

अपनी सेवा और संरक्षता
के लिए एक विशेष मिय
पद प्राप्त है।



* जीवन

* आग

* मोटर

* सामुद्रिक

* हवाई

इत्यादि.

चेयरमैन श्री विजयमोहन बिरला
प्रधान कार्यालय

९, सेयोन रोड, बाराह

बम्बई कार्यालय :

इन्डस्ट्री हाउस, १५९, चर्चगेट लिफे

साड़ी भारत के घर-घर में पहनी जाती है।

छोटे छोटी-बड़ी हर महिला को मन भाती हैं।



दी
विड़ला काटन स्पिनिंग
एंड वीविंग मिल्स लि०

दिल्ली
की
प्रसिद्ध साड़ियां
ए छोटे
मीडियम
सूतों में

पंजाब की सर्वश्रेष्ठ रूई से बनाई जाती हैं
दिजायने विशेषज्ञों द्वारा तैयार की जाती है
व्यापारी व उपभोक्ता दोनों को लाभ पहुंचाती हैं

तार विड़ला

टेलीफोन २३३९१-९२-९३



सपट
लोशन
 दाद, र्वाज, खुजली पर



Manufacturers **SAPAT & CO.** Bombay 2

कलकत्ता स्टोकिस्ट : दोशी मेडिकल स्टोर्स

१७३, डरीसन रोड कलकत्ता-७

जल्द तथा
विनयशील
सेवा के लिये



बैंक ऑफ जयपुर लि.

बम्बई कार्यालय - मुख्य विडिग, सरेवे रोड

विडला
कटेले चप्पा
 केश व रंग



अनुपम गन्ध
 एवं केश शोभा
 केलिये

वीर-बच्चा
 बच्चों की ताकत के लिये
 अनुपम टॉनिक
 (बालपूत)




विडला लेबोरेटरीज, कलकत्ता २०

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय



हुकुमचंद जूट मिल्स लिमिटेड

(स्थापित १९१९)

हाजीनगर, नईहाटी (ई० रेल्वे), पश्चिमी बंगाल

सर्वोत्तम श्रेणी के हेमिपन, छोटे, किरपिन, तम्बू, द्वाइग, वेंगिन

तथा ऊनी कपड़ों के आदि के उत्पादक

मैनेजिंग एजेंट्स। रामदत्त रामकिशनदास

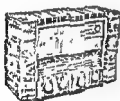
प्रधान कार्यालय : ट्रेडोन रोड, कलकत्ता-१

टेलिफोन ।

घर का पता ।

बैंक ३१९५ (लाइस)

JUTIFICIO, कलकत्ता



झंकार रेडियो पर स्वर का

मायुर्य निखर जाता है

मेटेयोर

आर. एम. ए., आर एम यू.
ए सी/डी सी आर एम बी-डाई
बैटरी सेट ६ वाट्स ब्रेड स्ट्रेड

सुख वरिष के लिए पूर्ण
उपयुक्त तथा उत्कृष्ट सामानों
से बना हुआ झंकार रेडियो
क्यों एक बिना किसी कष्ट
के काम देता है

हमारे अन्य मॉडल : 'मार्बल' 'बी' 'एम' तथा सुपर-कव ए सी/प सी/डी सी
तथा डाई बैटरी / इनके अतिरिक्त ८ वाट्स के ब्रेड स्ट्रेड डोलफ
रेडियोग्राम भी उपलब्ध हैं

इंडियन ग्रेस्टिक्स लिमिटेड

पोपुलर गिन, पानिबली, पन्वई

सस्ते उत्तम रिस्प, टिकाऊ और सर्वोत्तम

स्टील फर्नीचर

के लिए

दी नोबेल स्टील प्राइवेट लिमिटेड

द्वारा निर्मित फर्नीचर पर नरोत्ता कीनिए

मुख्य कार्यालय व मील

बली, बरह-१८

टेलीग्राम - ७२२३८-९

टेलीग्राम-गारमूक

होम

१७, बरह

होम

बरह १

१७८, बरह

देवी रोड

बरह -



वदु विज्ञाश



दाद, राज, गुजली, इक्लोमा
इत्यादि रोगों में सुपरीकिन
दया। तीन दिन में फायदा

PARTABMULL
GOBINDRAM
PO BOX NO. 2490 CALCUTTA

बड़े दानेवाली सफेद चमकदार चीनी के लिए
प्रख्यात



श्री लक्ष्मीजी शुगर मिल्स क लि
महोली

श्री अजुधिया शुगर मिल्स क लि
राजा का साहसपुर
मुरादाबाद

और
सर्वाधिक टिकाऊ
एव सरसी
शर्टिंग, कोटिंग, धोतियो
व
चादरो
के
लिए



अजुधिया शुगर मिल्स क लि दिल्ली

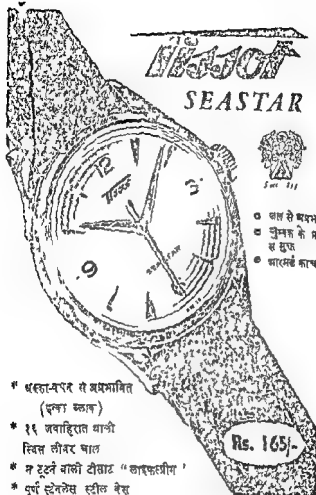
ड्यूमेक्स बेबी फूड बच्चों को बचने में किस प्रकार मदद करता है ?

हाल ही में, शिशु पोषण के संबंध में बहुत-बहुत अनु-
संधान किये गये और उनके सुपरिणामस्वरूप ड्यूमेक्स
तैयार किया गया। यह एक उत्कृष्ट बेबी फूड है जो
विशेषरूप से भारत के लिए बनाया गया है, क्योंकि इस
देश के बच्चे चर्बीली चीज को उस माघ्रा में सहन नहीं कर
सकते जिन माघ्रा में ठण्डे देशों के बच्चे कर सकते हैं।
इसीलिए किसी दूसरे दूध में मुकाबले ड्यूमेक्स में चर्बी का
अंश कम रहता है जिसके कारण वह आसानी के साथ पच
जाता है और बच्चे का स्वास्थ्य-निर्माण भी अच्छा होता
है। ड्यूमेक्स बेबी फूड में विशेषरूप से विटामिन 'डी' तो
रहता ही है, इसमें दूध की प्राकृतिक मिठास, विटामिन 'बी'
और लौह-सत्व भी शामिल किये जाते हैं। इसीलिए इसमें
अचरज की कोई बात नहीं कि ड्यूमेक्स बच्चों को
स्वस्थ रखता है।

ड्यूमेक्स बेबी फूड

बच्चों को ड्यूमेक्स दीजिए और उन्हें फलता-फूलता देखिए!

श्री रतनलाल जोशी द्वारा 'नवनीत प्रचामन' लि०, ३४१, सारदेय, बम्बई ७, से लिए प्रका-
शित तथा एसोसियेटेड एडवर्टाईजिंग ऐंड प्रिंटिंग लि०, ५०५, आर्थर रोड, बम्बई में मुद्रित



- घात से अप्रभावित
- चुम्बक के प्रभाव से मुक्त
- आसमंद काय

* धक्का-पट्ट से अप्रभावित
(इन्का शक)

* १६ जवाहिरात यात्री
स्विस लीवर घाल

* न टूटने वाली टीसाट "लाइफप्रूफिंग"

* पूर्ण स्टेनलेस स्टील ब्रेस

Rs. 165/-

प्राप्ति स्थान

चार्ल्स आब्रेट

श्री-५ क्लाइव बिल्डिंग, बंगलौर
२६९, हार्नबी रोड नवद

और केचन ओमेगा टूरिस्मेट के लिए चुने हुए जवरी

उसकी चारो ओर चिन्ता है।



उसने अपने आप को संभाला है।

आज हमें हरकोई बरती हुई दायें-बायें का मेल
माने में विवश है। फिर कोई अवशक्ति घटती है
जिसमें कि हमें जाल लपका करना पड़ता है। यह दिक्कत
सुखी है। हिम्मत से दारो, इसको मरवा जमाना कहते हैं।
उत्तरावृत्त की वजह से जिसमें जो काली रस्ते में मदद करेगा।
बाद में होगा, यही मरने में मदद करेगा है।

जवाबदारी
कल १९५५
१९५५-५६ ई. ७ दिनांक के लिए बंद रहेगा

१९५५ ई. ७ दिनांक के लिए बंद रहेगा

१९५५ ई. ७ दिनांक के लिए बंद रहेगा

१९५५ ई. ७ दिनांक के लिए बंद रहेगा

लाखों लोगों की सेवामें:
उचित दाममें
अच्छी चीजें...



मिस्कुट -

- श्रुजयरी
- ऑरेंज
- एसबिस
- ग्लूको -
- लैफ्टीन
- फ्रान्सीस
- चाफ्लेट -
- दूध का
- सादा



HM MEROS No 93

प्रभात

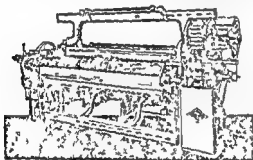
विधास का मासिक



मेडल मालिका
उत्तराखण्ड



प्रभात **मेडल मालिका**



भारत में तैयार
किये गये इस
'टेक्समेको'
आटोमेटिक लूम
से मुदर, होप-
विहीन पपडे मुने
जाते हैं। मशीन
के विभिन्न मोडान

इस धुदी और गरलता से बनाय गय है कि, भारतीय धमिक इस मरूपो
को बिना किसी निवर्त के चला सकत है। हमारी पावड़ी, हमारे डिजा-
इनिंग सेवशन व मशीन-शाप में अनुमदी और विशयज्ञ यूरोपिया टेक्नोशियन
और इंजिनियर काम करते हैं।

इसके अगवा सादे, गुनी व रेशमी तरफ, टाबी, क्राप बाकस, बायिन
सटस व विविग स्टिपन भी बनत हैं।

टेक्समेको (ग्वालियर) लि., पो. दिरलानगर.

रोमाञ्चपूर्ण कौशल



के फ्स्टे न
दूसरे से मीलों आगे
क्यों न केफ्स्टेन सरीदें
इसका मिश्रण अच्छा है

CAN/3048



नयना भिराम

संघमरी के कपडा का स्थान
सदय विनिष्ठ रहा है। परम
सुख' धीतिर्या नैकत स्पृष्टि मनमड
धुली और रंगन भायल साक्षियों
बाउनवेस्ट क कन्वल सादरें धुले एव
रगीत दर्शन तीलिय और कतामय
रगीत छोट संघमरी की अपनी
विशेषताएं हैं।



भारती हाउस १९९९ वर्षिक
रेनमेशन कम्पर्स-१
मेनेजिग प्रकल्प
बिकला मदत लि०



किसी भी प्रकार के शारीरिक दर्द पर

'हक्सली' का

विन्टोजिनो

अवश्य
इस्तेमाल करिये

पीठ का दर्द, कमर का दर्द, वातरोग, गठिया, सिर वेदना, ज्वर, छाती की
सर्दी आदि हर प्रकार के शारीरिक दर्द पर 'हक्सली' का विन्टोजिनो निश्चित
गुणकारी है।



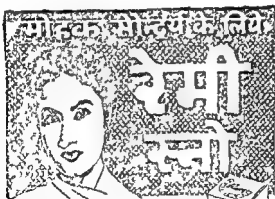
सभी प्रमुख दवाई
बेचनेवाले और
स्टोरो में मिलता
है।

प्रमुख

वितरक

पी. एम. जवेरी

एण्ड कंपनी, दवाखाना,
प्रिन्सेप स्ट्रीट बम्बई २

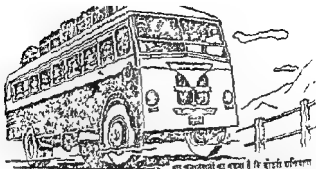


रोही सनो सौन्दर्य में वृद्धि कर
आवाज को मजबूत तथा फूलों की सी
सामग्री प्रदान करता है।



ए. वी. आर. ए. एण्ड कंपनी
बम्बई २-मद्रास १.

FIPS



एक मोटारगाड़ी का बचपन है कि दोहरी शक्तिवाला
मोटारगाड़ी पूरी-पूरी शक्ति देता है और बड़ा भार
सिंकावरी है—एम्पेज ॥ बड़ी भारी लम्बा है
और इसे नियंत्रित रखने में सम्भवताय बचने है।

दोहरी
शक्तिवाला



मोटारगाड़ी

इस्तेमाल कर

अतिरिक्त इंजन-शक्ति हासिल कीजिए!

आज के दिनों में केवल एक ही ऐसा कोश है जो अपनी लम्बा शक्तिवाली
शक्ति देता है। वह कोश है दोहरी शक्तिवाला मोटारगाड़ी। यही वह कोश
है जो कोश की तुलना में ईंधन की शक्ति सार्वभौमिक देता है।

दोहरी शक्तिवाला मोटारगाड़ी लम्बे और अधिक बड़े भारों के लिये लम्बे
समय तक शक्ति प्रदान भी देता है। वास्तव में मोटारगाड़ी का एक विशेष लक्ष्य
होना कि लम्बे समय तक ही शक्ति प्रदान करे।

आज की दोहरी शक्तिवाला मोटारगाड़ी इस्तेमाल करनेवाला बहुत ही अधिक है। केवल यही
एक ऐसा कोश है जिसमें अधिक शक्ति प्रदान करनेवाला होता है। यह कोश
को लम्बे (समय) तक एक ही शक्तिवाली शक्ति देता है या फिर एक ही शक्ति
को लम्बे समय तक देता है। मोटारगाड़ी लम्बे समय तक शक्ति प्रदान
करेगी वह बहुत बड़े भारों की शक्ति प्रदान करेगा।



उपरोक्त हुए लक्ष्य को ही के निम्नानुसार कर लिया है

स्टैंडर्ड-पैकज्ड मोटार गाड़ी
(बड़ी के लम्बे का शक्तिवाली शक्ति है)

५ १५५

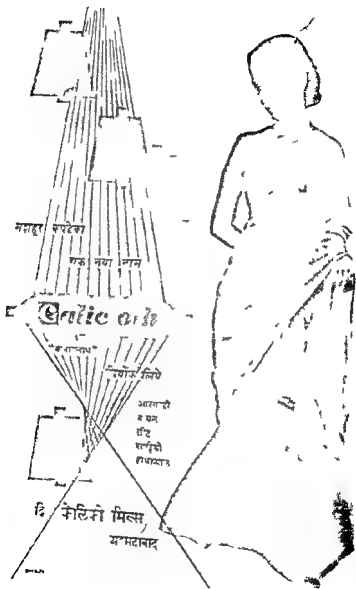
श्री स्वतन्त्रता ज्योती द्वारा 'नवनीत प्रकाशन' लि०, ३४१, तारदेव, गम्हई ७, लिए प्रका-
शित द्वारा एडोल्फोस्टेड एडवर्टाईजर्स एंड प्रिंटर लि०, ५०५, बांधेर रोड, गम्हई में प्रका-
शित

प्राचीन काल

दोस्त
दोस्त

जार्ज ट
साटिन
चेक साटिन
शार्क रिक्क
वैली शार्क रिक्क
पिग रिक्क
शार्क
और
बाना प्रकार की साटिन

सब बड़े शहरों की दुकानों पर प्राचीन
मैनेजिंग एजेंट्स





— स्वयं रथ पै न लिख



पुनः ना वाक्यं तु मया नमो दानिष

र - ३१५
मया नमो

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

दीपावली
के
अभिनन्दन

भूपेन्द्र डाइंग एन्ड प्रिंटिंग वर्क्स

१९५, नानूमाई देसाई रोड

बंगई-४



Tissot

SEASTAR



- जल से अप्रभावित
- लुब्धक के प्रभाव से मुक्त
- भारमंड काय

- * धरातल-पतन से अप्रभावित (इन्वार्टर)
- * १६ जवाहिरान वाली स्विस लीवर घाट
- * न टूटने वाली टीसाट "साइफ़ेरीय"
- * पूर्ण स्टेनलेस स्टील बेस

Rs. 165/-

: प्राप्ति स्थान :

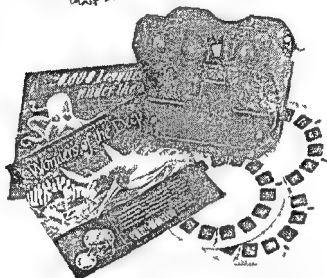
चार्ल्स आब्रेट

टी-५ कंगड बिट्ठिया, पलवता
२६९, हार्नबी रोड, बयई

और वेबल ओमेगा टीसोट के लिए धुने हुए जेबेरी



सीखने के साथ साथ
बच्चों के लिए
तमाशा भी.....



दुनि 1 भर के विषयों पर ४०० से अधिक रीला में से कुछ ...

* नेशनल पार्क * ताजमहल * काश्मीर * बनारस * पाट

* युनाइटेड नेशन * अलादीन व जादु का चिराय

रीलों की लिस्ट तथा अन्य जानकारी के लिए लिखिए

नये स्थानों के लिए विप्रेता चाहिए

स्टीरियोस्कोप १५) * फोटो रोल २१) प्रकाश यंत्र १५) * छोटा प्रोजेक्टर ८५)

पलेट इंडिया लिमिटेड

१९० हार्नली रोड, ५ लिंक्से स्ट्रीट, ७९० तालनाहर रोड, भास्कर मती रोड

बम्बई कलकत्ता मद्रास नयी दिल्ली



बिस्किट स्नाइड

हमें ये अच्छे लगते हैं क्योंकि ये खाने में
अत्यंत पुरकुरे तथा स्वादिष्ट हैं। साथ ही
ये स्वस्थ व मजबूत बनाने हैं।



DR. J. B. MANGHARAM'S
NOURISHING
Biscuits

बिटाविन ए भरपूर



जे. बी. मंधाराम एंड कं.

अजोड़ तथा अद्वितीय
चित्र के रूप में मान्य विद्या
हुआ भारतीय नृत्य कला
और सस्त्रुति
का रम्य दर्शन

इलक इलक पायल बाजे

A Technicolor

PRODUCED & DIRECTED BY
V. SHANTARAM

: भूमिका :

संभ्या * गोपीकृष्ण * के दाते * मदन पुरी * मनोरमा * भगवान

मेट्रो



ओपेरा हाऊस

बुकिंग ९॥ से ८ तक

रवि सुबह १० बजे

रोज २॥, ६, ९-१० बजे

बुकिंग ९॥ से १२॥ बजे

३ से ७ बजे

रोज २॥, ६ ९-१० बजे

★

सुखमय जीवनका मूल मंत्र—
समय पर बीमा
कराना है।



दि इंडियन
ग्लोब इन्श्योरन्स कं. लि.
३१५/३२ दादाभाई नवरोजी रोड,
बम्बई-१

★

नवरोज

नवरोज

६

वर्ष के इस
अवसर पर विचार
आनन्द और प्रमोद से
भर जाते हैं

और उत्सा के साथ
पाटनवाला बराने
की शुभ-कायनाएं

अफगान स्नो

सौंदर्य प्रसाधन
के
निर्माता



Patanjali
Cosmetics and Essentials



चॉकलेट का प्रभाव-



कुछ ही समय पहले
घोर मारकर रोनेवाला
बेहरा हुआ तो बमकने लगा।
यह है—

साठे चॉकलेट का जादू।,
उत्प्रे, रुचिकर व
पौष्टिक मिठाई।



हर परिवार के लिए
अत्यंत आवश्यक!

1978 नवम्बर 20

OSLER

यहां



वहां

और सब जगह

सोल डीस्ट्रीब्यूटर्स -

एफ. ओण्ड सी. ओसलर (इंडिया) लि०

कलकत्ता १ बम्बई १ न्यु विल्ली १ मद्रास १ कानपुर १ गौहती

शुद्ध चीनी

शरीर की प्रत्यय आवश्यकता
 दैनिक श्रम के लिए हमारे शरीर को
 शक्ति की जरूरत होती है। यह शक्ति
 चीनी से हमें बड़ी सुगमता से मिल
 सकती है। किन्तु यदि चीनी शुद्ध न हो,
 तो यह हमारे लिए हानिकार हो सकती
 है। अथवा दूसरे शब्दों में, चीनी की
 शक्त प्रति शत शुद्ध होती है। यही कारण
 है कि बरसोंसे लोग इसे ही पसंद करते
 आ रहे हैं।

मैनेजिंग एजेंट्स

कार्ल एजेंट्स लि.

इंडस्ट्री हाउस, चण्डीगढ़, रिक्मेशन, चण्डीगढ़

चेम्पियन फाउन्टेन पेन

(रजिस्टर्ड)

हमारे ग्राहकों, मित्रों और शुभेच्छुओं
को इस शुभ अवसर पर

नूतन वर्षाभिनंदन

* चेम्पीअन एडमीरल

* चेम्पीअन १०१

* चेम्पीअन १०५ हीलक्स

* चेम्पीअन १५१

* एवरशार्प टाइप १२१

* चेम्पीअन १०२-१०३

* अरोमेटिक बैलुप

मेन्सुफेकरस —

गुजरात इंडस्ट्रीज

लातजी मानसिंह बिल्डिंग, सोहर घात, बम्बई-२



- मोहक
- रुचिकर
- तृप्ति-पूर्ण



आपके बनाए भोजन में
इसी तरह के हारो—
आप में

वनस्पदा

वनस्पति में पकाइए

बारा भायन इण्डस्ट्रीज—भारत

ASP V 11

गुवा लियर रेयन रिक्क

मैन्यफेक्चरांग विविध कप



क्रेप ग्लेन
क्रेप प्रिन्ट

जार्जेट
साटिन
चेक साटिन

शार्क स्किन
बेबी शार्क स्किन
पिग स्किन
शॉट्रंग

और
नाना प्रकार की सूटिंग

सब बड़े शहरों की दुकानों पर प्राप्य

मैनेनिंग एमेदस

विशाल बजार गुवा लियर रेयन रिक्क



सपट
लोशन
 दाद, खाज, खुजली पर

Manufacturers: **SAPAT & CO.** Bombay 2

कलकत्ता स्टोकिस्ट : दोशी मेडिकल स्टोर्स
 १७३, हरीमन रोड कलकत्ता-७



सौन्दर्य के लिये
रेमी स्नो
स्क्रीम

रेमी स्नो सौन्दर्य में वृद्धि पर
 त्वचाको कोमलता तथा फूलों की भाँ
 साजगी प्रदान करता है।

ए. वी. आर. ए. एण्ड कं.
 एम्बेड २-मद्रास १.

मील - प्रति - मील

आपके धम को हल्का करने अथवा साइकिल की सैर को अधिक आनन्ददायक बनाने के लिए मजबूत व टिकाऊ हिन्द साइकिले सब प्रकार की समस्याओं से मुक्त और पूर्णरूपेण निरंतर-योग्य सेवा प्रस्तुत करती हैं।



वर्ष

प्रति

वर्ष

किसी अन्य 'सिंगल मेक' की अपेक्षा हिन्द साइकिले कहीं अधिक सादाद में बिकती है— भारतीय वातावरण के बिलकुल अनुकूल होने के साथ-साथ यह उनकी श्रेष्ठता और लोकप्रियता का प्रमाण है।

हिन्द

मीलों आगे

हिन्द साइकल्स लि०, २५०, बत्ती, बम्बई-१८

ASP/MC 87

सहज प्रवाही
चिरकाल स्थायी



कैमेल डिक
कैमेल लिमिटेड बम्बई १९

दमांकुश : दमे के शरीर को

पहले ही दिन
रोक कर, फेंकड़ा घ बफ बा
निकाल कर आराम पहुँचाता है।

मूल्य ५ रुपया

सभी प्रकार के पुराने और हठ
रोगों के लिए हमारे अनुभवों
वैद्यराज से सलाह लीजिए अथवा
पत्र लिखिए सूचीपत्र मुफ्त।

मिलने का समय सुबह ९ से १२
शाम ३ से ८

प्रभाकर फार्मसी

वाइंग बार्ड, २ रा माला
बवालिवा टेक, बवाई-२६

हमारे धार्मिक एवं आध्यात्मिक साहित्य में

श्री मद्भागवत

का बहुत ही ऊँचा स्थान है। उसकी ब्यापक भक्ति और श्रद्धा के
रस से ओत-प्रोत है। उनमें पढ़ने से जहाँ एक ओर मनोरंजन होता
है, वहाँ दूसरी ओर जीवन को बनाने वाली शिक्षा भी मिलती है।

यही ही सरल और सुबोध भाषा में इस महान ग्रंथ की
गोचक, शिक्षाप्रद और भक्तिरस पूर्ण कहानियाँ

भागवत-कथा में पढ़िये और मारे घर को सुनाइये।

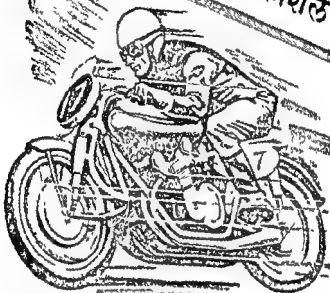
भूमिदा लेखक — श्री धियोर्गी हरि

पृष्ठ ४८७, मूल्य साढ़े तीन रुपये

सस्ता साहित्य मण्डल,

नई दिल्ली

रोमाञ्चपूर्ण कौशल



के फटे न
दूसरों से मीलों आगे
क्यों न केपस्टेन खरीदें
इसका मिश्रण अच्छा है

KAP/3048



नव वर्ष एवं दीपावली के
अभिनंदन और शुभ कामनाएं
आप की कागज तथा बोर्ड की
आवश्यकता के लिए
मिलिए

चिमनलाल पेपर कं०

उच्च किस्म के कागज तथा बोर्ड आयातकर्ता

वाम्बे म्यूचुअल विलिंग

हार्नबी रोड, फोर्ट, बम्बई-१

टेलिफोन

२६३२३२

पो. वाकम न

१४७८

टलिग्राम

"सेलेक्शन"

दोहरी
शक्तिवाला



मोबिलगैस

इस्तेमाल कर

अपने पैसे के बदले अधिक
इंजन-शक्ति हासिल कीजिए

इंजीनरों का कहना है कि कम से कम चार ऐसे प्रमुख कारण हैं जो आपके
इन्जन को खराब बना सकते हैं। और यह प्रत्यक्ष है कि पेट्रोल में किसी एक
ही तत्व (एडिटिव) की किल्लेबाजी से वे सभी कारण नहीं घटायें जा सकते।
आज ही बाइको शक्तिशाली मोबिलगैस का इस्तेमाल शुरू कीजिए। केवल यही
एक ऐसा पेट्रोल है जिसमें मोबिल गैस कम्प्लेक्स शामिल है।
कम्प्लेक्स कई तत्वों (एडिटिव्स) का एक ऐसा शक्तिशाली मिश्रण है
जो आमतौर पर किसी पेट्रोल में नहीं मिलाया गया।

बाइको शक्तिशाली मोबिलगैस किसी दूसरे पेट्रोल की तुलना में आपके इन्जन की
प्रतिष्ठा बनाए रखता है। और आपके इन्जन को अधिक शक्ति भी प्राप्त
होती है। हम क्यों का इस्तेमाल करने का आदेश दे रहे हैं क्योंकि
मोबिलगैस आपके पेट का अधिक मूल्य बना करता है।

अपने हुए भाल पेटे
के निशान पर मिलता है



(a) 1961 A

स्टैंडर्ड चैम्पियन ब्रांड का पेट्रोल (इन्जीन के तत्वों का अधिक संतुलन है)

हमारे
सभी शुभेच्छुओं को
दीपावली

के
हार्दिक अभिनंदन

दी
पंजाब नेशनल
बैंक लिमिटेड

(स्थापना)

१८९५

प्रधान कार्यालय : देहली



उसकी चारों ओर चिन्ता है।

लेकिन



उसने अपने आपको सभाला है।

आजकल हमकाई बरती हुई दारोंक काय्य आरम्भकारी का मल
सगान में चिन्तित है। फिर कोई अनपेक्षित घटना होती है
जिससे कि हमें ज़ादा लचका करना पड़ता है। वह चितनी
सुवीरत है। हिम्मत न हारी हमोको नया जमाना कहते है।
जबाबुगुम एतिया भावके दिवादा का घांती लकनेमे मरुद करेपर।
बाद एनियेगा, यही लकने मरुदकरूण है।

जवाकुलुम
एक नैज
आपक वाला भीर (O) दिमाग न निय बेइतरीन

सो० के० सन एण्ड कंपनी लि०

जबाबुगुम हाउस ३४, बिहारजन फाउण्डेण्ड वलकन - १३

८४ १४३१४



मॉर्टन की मिठाईयां न केवल समपूर्ण और स्वादिष्ट ही हैं बल्कि इनमें पुष्टिकर और जलित-वर्धक साधन जैसे - दूध, मक्खन, मक्खन और चीनी आदि मिलित हैं। आम्र और आम्र के बच्चे होने बिना किसी तक्रार के सा तबले हैं क्योंकि ये आम्र की आत्मा के साथ-साथ जीवन भी प्रदान करती हैं।

मॉर्टन—केवल मिठाई ही नहीं, एक साध भी है।



भारतीय उद्योग प्रदर्शनी, नई दिल्ली में कृपया हमारा स्टाल नं० बी ७१ पर पर्यटित ।
(२५ अक्टूबर से १५ दिसम्बर तक १९५५ तक)

सी० एच० ई० मॉर्टन (इंग्लैंड) लिमिटेड

शित्ती भी प्रकार के शारीरिक दर्द पर

'हक्सली' का

विन्टोजिनो

अवश्य

पीठ का दर्द, कमर का दर्द, मातृरोग, गठिया, सिर बेदना, शूल, छाती की सर्दी आदि हर प्रकार के शारीरिक दर्द पर 'हक्सली' का विन्टोजिनो निश्चित गुणकारी है।



सारी प्रमुख दवाईं
बेचनेवाले और
दुकानों में मिलती
हैं।

पी. एम. जयेंरी

एण्ड फं., दयावाला,
प्रिन्सेस स्ट्रीट, बम्बई २

प्रगुरा

वितरण

रामतीर्थ ब्राह्मी तैल (रोजाना १)

आधुनिक ओषधि (रजिस्टर्ड)



रक्षण शक्ति बढ़ाता है, गाड़ी जिंदा भाती है तथा बाल बाल होते हैं। औषधीय ब्राह्मी से भोजन की दृष्टि बढ़ती है। बाल बालों से बाल के समय रोग मिटते हैं। प्रजापति हर होता है। सब जगहों में उपयोगी। रामतीर्थ ब्राह्मी ३॥१॥ छान्नी ३॥२॥ व

प्रत्येक स्थान पर मिलता है।

५॥१॥ का गोआर्द्ध ब्राह्मी ३॥१॥ के लिए तथा ३॥१॥ का गोआर्द्ध छोटी ब्राह्मी के लिए (आवश्यक मात्रा पर) भेजे।

आसन चार्ज, स्वस्थ और प्रसन्न रहने के लिये हमारा योगिक आसन का आधुनिक चार्ज (मन्त्र) मंगलार्थ ओ आनंद चार्ज सन्ति क ११२० में प्राप्य है। यह आसन सरलता से घर घर विद्यमान हो सकता है।

श्री रामतीर्थ योगाश्रम दार (रोज्जस रेसिडे) बम्बई १४
टेलिफोन - ६२८९९

सेवा के हमारे आराध्य



नववर्ष सबके लिए मंगलमय हो

कलात्मक लाइन, हाफ्टोन एवं रंगीन प्लाशों के सुप्रसिद्ध शिल्पी

शंकर एंड कम्पनी

टेलिकोन] भांभावादी गुरुद्वार रोड, धर्मई-२. [२७८६७

Get
this
clock
FREE...



प्रोमियम भुक्तता करने की चिन्ता
न करिये। प्रत्येक पालिसी-होल्डर को
एक सेविंग क्लॉक प्रदान किया जाता
है, जो प्रोमियम की बचत करने में
सहायता देता है। इस योजना के अन्त
र्गत एक से पचास वर्ष की आयु का
कोई भी व्यक्ति पालिसी ले सकता है।



योनस

पूरी आयु पर १०) रु
इन्डोमेंट पर ... ८) रु
प्रति १००० के लिए प्रति वर्ष

वैली १२,५,००,००० से अधिक

इस सेविंग क्लॉक

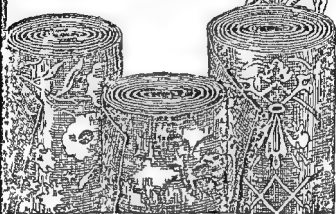
द्वारा लाइफ पालिसी प्राप्त करे

विशेष विवरण तथा एजेंसियों-शर्तों के लिए लिख

दि नेपच्यून एश्योरेन्स कं., लि०

१०४, अपोलो स्ट्रीट, कोर्ट, बम्बई-१

**"सच-ये गलीचे कितने
सुन्दर हैं!
"और साथ ही सस्ते भी"**



सचमुच, आप हथी मार्क वाले, टिकाऊ और आश्चर्यक
जुड़ के गलीचों से अपना घर बड़ी आसानी से सजा
सकते हैं। साथ ही सीढ़ियों पर बिछाने, कुर्सियों पर
गढ़ने, खुली चटाईयों और आसनों के लिए भी आप
इनका उपयोग कर सकते हैं।

मैनेजिंग एजेंट्स —
विडला ब्रदर्स लिमिटेड
८, रामल एक्सप्रेस प्लेस,
फतहगढ़

विडला जूट
मैन्युफैक्चरिंग
कंपनी लि.

....सर्वोत्कृष्ट



वचत....

आप हमें अपनी ३५ वर्ष की आयु में ५५ वर्ष की आयु तक प्रति वर्ष ४५०), बीस वर्ष—तुल्य ९०००) दीजिए। हम आपको अपनी ५५ से ७५ वर्ष की आयु तक प्रति वर्ष ६००), बीस वर्ष—तुल्य १२०००) देंगे।

इतना ही नहीं, अपितु दुर्भाग्य से प्रथम सप्ताह देने के बाद आपकी मृत्यु हुई तो आपने उत्तराधिकारी को हम अविलम्ब प्रतिशत ६००) देना शुरू कर देंगे और बीस वर्ष तक देते रहेंगे। आमदनी के कर पर इस सप्ताह पर आपका आनर्पेज छूट मिलती रहेगी।

विस्तृत जानकारी के लिए शाखाधिकारी श्री नाथ नातलकर को लिखिए।

वेस्टर्न इंडिया हाऊस, सर किरोजप्पाह मेहता रोड बम्बई, १

टेलिफोन २६९०५

वेस्टर्न इन्डिया बीमा कंपनी लि०, सतारा

सार: DIVYANETRA



यो समय बीत गया!

जब इस प्रकार दिव्य दृष्टि प्राप्त होती थी

अब तो!.....
सूत्रा मार्ग नहीं है बेशक

चक्षु

शिला ऑप्टिशियन्स

छविवात रोड—बादर मुम्बई—२८

Divali Greetings
to
The Readers of
NAVANEET
from

**COMMERCIAL ART ENGRAVERS
LIMITED**

The makers of Distinguished
QUALITY BLOCKS

in Line Halftone & Colour such as

**Printed on Covers of this Magazine
throughout the Year**

SARASWATI MANDIR
4th Floor,
Tutorial School Bldg.,
Kennedy Bridge, Grant Road
BOMBAY-7.

Phone 71769

Phone 71769

पुलगांव काटन मिल्स लिमिटेड, पुलगांव

द्वारा निर्मित

धोतियां, साड़ियां, शर्टिंग, छांगक्लाथ, मारकीन
जीन, परपटा व चादरें

मणेश छाप के हर जगह पसंदगी से
खरीदे जाते हैं ।

वितरक

आत्माराम पोद्दार

अपर बजार, रांची (बिहार)

तार "स्वदेशी" टेलीफोन २९५

अगरचन्द चम्पालाल

हलवाई लेन, रायपुर (म.प्र.)

तार "अपर" टेलीफोन २७५

बद्रीप्रसाद विसम्भरनाथ

१५५/५६ हाथ मारकेट देहली

तार "वाल्मिका"

इंडियन टेक्स्टाइल एजेंसी

ओल्ड मारकेट अमृतसर (पंजाब)

तार "हिन्द एजेंसी"

व्यापारियों एवं ग्राहकों को
दीपावली की शुभ कामनाएँ

अव

FIAT THE NEW 1100 DE LUXE

सुन्दर—अधिक सुखदायक
और सस्ती



आज ही अपने
विक्रता के यहाँ देखिए।
प्रगतिशील निर्माता

दो
प्रीमियर
फ्राटोमोबाइल्स
लिमिटेड
आपरा रोड, मुंबई
बम्बई

ता
बम्बई लाइफ एंड मोटरकार एजेंसी लि
२१४ सेन्ट्रल गिन बम्बई—७

अतिरिक्त प्रामियम सजावट

अधिक सुविधाएँ—

प्रामाणिक सज्जा के रूप में ट
हीन टायर। पीछे देखने
दृष्टि पर राशनी दो धूप प्र
रोशनी तथा पीछे की मोट
गिए पट्ट।

सस्ती—

₹ ९,५०० (टक्स अतिरिक्त)

महाराष्ट्र के आदर्श तथा आधुनिक घर
साधनों से सुसज्जित ऐसे घरों के
कारखाने का अर्थ है —

दी कोल्हापुर शुगर मिल्स लिमिटेड, कोल्हापुर

इस कारखाने में मे सफेद दानेदार शक्कर,
दोनेबर्द स्फिरीड तथा फर्निचर के लिए
सर्वोत्तम फ्रेच पालिश नियमित रूप में बड़े
प्रमाण में भेजा जाता है। हमारा माल
बम्बई प्रान्त, दक्षिण तथा अन्य प्रान्तों में
भेजा जाता है। माल की प्रशंसा सर्वत्र
की जाती है।

नवीनतम सुधार एवं बलात्मक निर्माण
यही हमारे कारखाने की विशेषता है।

मैनेजिंग एजेंट्स: दी युनाइटेड
एजेन्सीज लि० कोल्हापुर



मुख्य कार्यालय : बंबई तथा ६१ शाखाओं द्वारा
अपने एक लाख में से शत्येक ग्राहक को

हारदिक दीपावली व नूतन वर्षाभिनंदन

श्री प्रवीनचंद्र गांधी

प्रबंध संचालक

हार्दिक दीपावली अभिनंदन
 केवल "सिलोवर" स्टेनलेस स्टील के
 वर्तन ही आपको
 आपके रुपए का
 पूरा मूल्य देते हैं।



नितोत्तर ।

श्री ओरियन्टल मेटल
 प्रेसिंग वर्क्स लि०
 १३१ बर्ली, बम्बई १८.



मस्तिष्क शीतल
रखने में आद्वितीय



बंगाल केमिकल का
गोल्डेन आगला
हथर आयल

केशवाजी और केशवजी का येक उपयोग
१५ गंध और गुण में अनुजनीय



आज से ही आपका स्निग्ध
मनो मन्थन सुख में मिलता है

बंगाल केमिकल
कलकत्ता, बंगाल, भारत



प्रत्येक पदार्थ में उपयोगी

रोज काम आने वाली वस्तु

दुमरी तिथी भी छाग से १०० टा
अच्छी, बहुत ऊँची गालिटी की,
निर्मल, सुगंध, गरिब और गुणधीनार
१०५ वर्ष से दुनिया भर में जितकी
तारीफ होती है :

सूरज छाग केसर

२, ३ और १ पाँच के शीतलप डब्बे
रपेन से मगाए गए हैं। प्राहता की
मृदुल्य के लिए ३ और (१ तोला)
वेगार ह्मारे यहाँ मिलती है।

सूरज छाग केसर का प्रयोग कर
वीषोत्सव व नूतन वर्ष मनाइये
वितायनी—हमारी छागा या एजेंट
नहीं है। अगर सीपेट पर S.N.Co.
गया नीचे सूरज छाग मोनोडाम
देगने की प्रार्थना है।

सोल प्रोवायडतः :

एस. नारायण एंड कंपनी
२९ हमाम स्ट्रीट बंबई १.

फोन : २१९५७ तार : SUNARABE

मैं औरों वंद किये हुए
कह सकती हूँ



ये मेरी स्वच्छ वायु की
साड़ी की गंधरा कने रहे हैं



हार्दिक दीपावली अभिनंदन

★

लीयो और गोल्डन एम्बोसिंग के लेवल

हजारों सुन्दर डिजाइनों में प्रत्येक प्रकार के लेवल

हमारे तैयार स्टॉक में हमेशा प्रस्तुत मिलेंगे

संस्थापक—एन. एम. पारिख एंड कं. लेवलवाला

पारेख चेम्बरस, किंग्स सर्कल, माडुंगा बंपर्ड १९.

टेलीफोन नं ६०४७७

बहुत ऊंची क्वालिटी की केसर के लिए



लोकप्रिय

लक्ष्मी केसर

की सीलबन्द डब्बियां ही खरीदें

१, २, ४ तोला की पैकिंग में

उर्वेराय एंड कं. २१२ गडगादी, बम्बई, ३

नये प्रकारका टॉयलेट पावडर

दिनरात तरोताजा रहने के लिये



यह सुंदरतम पावडर जगत्सिद्ध जी-११ के विथण से बचाया गया है... एवगान जलन रहित रसायन जो चर्मको क्षुब्ध करनेवाले तथा गतीनेको दुर्गन्धित करनेवाले कीटाणुकोरो गण्ड करता है। यह आश्चर्यजनक पावडर दीर्घही सर्पिली गुणगुनाहटसे आपको वायम आराम पहुँचाता है... बाय, रोल्लुद, सैर और पाटियो आदि में जानेके पहले यह एकमेव पावडर अपने अंगूर हमेशा 'छिड़किये-आप इससे अधिक निधन और मोहन दीखेंगे।

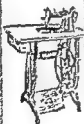
Godrej गोदरेज टॉयलेट पावडर
जि-११ युक्त

दुर्गन्धिनाशक * सुरक्षित * सुगन्धित * शीतल

जि-११ युक्त और चीने

सिन्याल साबुन - गोदरेज हेंर टॉनिक - गोदरेज टॉनिक स्टिक

दायावली
अभिनन्दन



उषा
सिलाई मशीन

वी जे इंजीनियरिंग वर्क्स लि०, कलकत्ता

श्री एनलाल जोशी द्वारा 'नवनीत प्रकाशन' लि०, ३४१, लारदेव, बम्बई ७, के लिए प्रका-
शित तथा एमोसियोटह एडवर्टाईजमें ऐंड प्रिंटिंग लि०, ५०५, मार्बल रोड, बम्बई में मुद्रित



संचालक
भीमोपाल नेवटिया
प्रबंध-संचालक
हरिप्रसाद नेवटिया

नवनीत
[हिन्दी डाइजेस्ट]

सम्पादक
रतनलाल जोशी
सहकारी
रमेश सिन्हा, ज्ञानचन्द्र

चित्र-शिल्प गोपालकृष्ण भोवे

लेख-सूची

१	नमस्कार	अग्निसूक्त	१
२	श्रीदेवी का प्रीडागण	सिरिकालवर्णिष ज्ञानक	७
३	जय भारत-भारती-बट विशाल . .	बन्हैवालाल मुशी	४
४.	जाके आगन नदी बहे...	क्षितिमाहन्, सेन	८
५.	अंतर का नारायण	राधाकृष्णन्	९
६	मधुवर्षा	सुमित्रानन्दन पंत	९
७	पादुकाभिषेक	राजगोपालाचारी	१०
८.	आह्वान	रवीन्द्रनाथ	१४
९.	अज्ञेयता	नाजिम हकिमत	१५
१०	कर्म-समाधि	रगनाथ दिवाकर	१९
११.	शरह और इस्क	सत बुल्लेसाह	१८
१२	ज्ञानद के विद्वकर्म	जगन्नाथ जोशी	१९
१३.	जो धरती सो आसमान	'वनफूल'	२३
१४	रोधन	सी० बा० मडकर	२१
१५.	नूरा डोसा	कुँवरजीभाई मेहता	२५
१६.	...ससार की सर्वोच्च समितियाँ	अर्नाल्ड टायनूवी	२८
१७	माता-भूमि : अमृतहृदया	वासुदेवशरण अग्रवाल	३३
१८.	प्रार्थनाओं की प्रार्थना	बाबा कालेलकर	३५
१९.	२०००-वें वर्ष में हमारी दुनिया	बर्ट्रैंड रसेल	३८
२०.	हमारे मोलवी साहब	राजेंद्र प्रसाद	४५
२१.	अनुग्रह	हुमेन अहमद यदनी	४७

२२	वापुवेग	ओम्प्रकाश	४९
२३	कुबेर का कोष	ने. आर एन स्वामी	५१
२४	बला अस्तित्व की भूष	नदलात बोस	५०
२५	बद्धवातियों	'जोश' मलीहाबादी	५१
२६	जवाहरलाल नेहरू	धूर्जटिप्रसाद मुखर्जी	५१
२७	आदमी की है हजार किस्में	अब्दुल हक	६६
२८	चिन्तु-उत्सादक चारखाना	प्रसन्नकिशोर सामन्ती से	७०
२९	सत्यनूप	नरेन्द्र शर्मा	७५
३०	विपश्यना का अमृत फल	एस के पोट्टेकराट	७७
३१	धूँसेबाजो द्वारा	राजी भारद्वाज	८६
३२	अनुभूति	८९
३३	२० की सदा का बाल	बट सिंह	९१
३४	गोद का दिया	र शौरिराजन्	९४
३५	...अमेरिका की आत्मा का दर्शन	प्रफुल्लचन्द्र घोष	९७
३६	जेल में विवाह	यशपाल	१०५
३७	सिक्के इतिहास बोलत हैं	परमेश्वरीलाल गुप्त	१०९
३८	प्रतिबोध	ए एष मार्टीमर	११७
३९	दयामरा भूत	विद्यानन्द श्रीवास्तव	१२४
४०	सत्कार (बहानी)	नरेन्द्रनाथ मिश्र	१३२
४१	एक दश (बहानी)	बि स यादव	१३८
४२	त्रायवे	वासुदेव जली	१४०
४३	भगवत-पुरा (बहानी)	सामसेठ माम्	१४२
४४	पापिष का सपना (उपन्यास)	'बलि'	१४७



राधाकृष्ण

[चित्र राधाकृष्ण शैली, १७-वीं शता. सुप्रसिद्ध
कलाकार श्री एन एन चौराहिया के सौजन्य से]

नमोऽस्तुते

[हिन्दी डाइजेस्ट]

पृष्ठ ४

मंक ११

नमस्कार

नमो महद्भ्यो नमो अर्भकेभ्यो
नमो युवम्भ्यो नम आशिनेभ्यः
यजाम देवान्यादि शक्रवाम
मा न्यायसः शंसमावृद्धि देवाः
— अग्नि सूक्त १३

—यज्ञ की इस पुण्य बला में हम सबका स्वागत करते हैं—बड़ों की नमस्कार, बालकों की नमस्कार, तपस्वी की नमस्कार, बूढ़ों की नमस्कार । धराचरकल्याण के लिए हम सब का यजन करते हैं । देवों, हमें यज्ञ की सामर्थ्य दो, धर्या के प्रजाभिषेक के लिए हमारे मन में अन्धधृष्ट का उन्मेष करो ।

श्रीदेवी का क्रीडांगण



मिरिकानरहित जानक की क्या का मधिस हिन्दी-रूपानर

६

ब्रह्मदत्त के राज्य-काल में सोपिमन्त्र ने वाराणसी में शुचि-भस्त्रिहार के एक सेठ के घरों जन्म लिया। पचमीली की रक्षा करते हुए वे धर्माचरण में ही अपना जीवन व्यतीत करते थे।

कुछ सालोंपरांत, देवरीव में विरपक्ष महाराज की बन्धा-बालवणी—और धृतराष्ट्र महाराज की 'सिरि' नाम की बन्धा बौद्धा वाले मर्त्यलीव के एक सरोवर पर पहुँची। बिल्कुल पहले ही स्नान करे, इस बात की लार बहो दोनों में कहह हो गया।

पितामों से भी जब निर्णय न हो पाया, तो दोनों राज के पास पहुँची। राज नबनोत

ने कहा—“वाराणसी में शुचि-भस्त्रिहार बाड़े हैं। उससे पास बिना उपभोग में बाये हुए जो आत्मन और नम्या हूँ, उन पर जो बाँ बँट और मो सवे, उमी बाँ सरोवर के पहुँके स्नान करने का अधिसार होगा।”

बालवणी नीले वस्त्र पहन, नीले लेप लगा, नीरमणि के अलंकार पहन हुए

गति में बैठके प्रत्यक्ष के द्वार पर पहुँचे और अपना परिचय देते हुए बोली—‘मैं विरपक्ष महाराज की प्रबद्ध स्वभाव-बाली, अपुण्या बन्धा हूँ। प्रोपों, ईश्वरों, कृपण तथा बहु-भायी व्यक्ति मुझे प्रिय हूँ। देश-काल के अनुबन्धों की अवहेलना करने-



[अभिषेक-स्नाना परम मुद्रिता गजवन्दी]

ले, थोष्ट पुण्यो से कलह करनेवाले,
जो का अहित करनेवाले, पराजयी,
प्राये धर्म का उपभोग करनेवाले व्यक्ति
में स्वामी मानती हैं।

मथ्रेण्डि, मेरे वरण को
तिकार करो।”

बोधिसत्व ने सावज्ञा
हा—“अग्रिय-दक्षिणी, यह
वास तेरे उपयुक्त नहीं। तू
विसी दूसरे जनपद में जा।”

तब स्वर्ण-वर्षा सिरि
अनेक स्वर्णालंकारों से
सज्जित, स्मिति-स्वर्ण विले-
रती हुई पृथ्वी पर उतरी
और बोधिसत्व को उसने
अपना परिचय दिया—“मैं
महाराज धृतराष्ट्र की कन्या,
सिरि अथवा लक्ष्मी हूँ।
मुझे अपने आवास में रहने
की अनुमति दीजिये।”

रूपगुण-मुग्ध बोधिसत्व ने पूछा—“देवि,
पहले यह कहो, तुम्हें किस आचरण के
व्यक्तियों से अनुरक्ति है?”

लक्ष्मी ने कहा—“जो शीत, शीघ्र, वर्षा
एवं अनेकविध उपद्रवों में अपराजेय बना
अपने कर्तव्य-कर्म में निरत रहता है,

जो अक्रोधो है, मित्रवान
है, त्यागी तथा शीलवान
है—जो मृदुभाषी है, जिसकी
वाणी विश्वसनीय है—उसी
को मैं अपना प्रियपात्र सम-
झती हूँ। किन्तु राजन्, जो
अपने धर्म, बुद्धि एवं मागल्य-
भाव के सपोष द्वारा अपना
आय स्वयं लिखते हैं और
यश, सामर्थ्य एवं धी पाकर
भी जो सप्रह नहीं करते,
यत्किं सूर्य की तरह अह-
निश वितरण ही करते हैं,
उनको पाकर तो मैं अपने
को धन्य समझती हूँ।”



अर्चना

[चित्र - नंदताल वस्तु]

बोधिसत्व ने सिरि देवी
का अभिनंदन करते हुए

कहा —“तो देवि, यह उपयोग में न आया
हुआ आसन तथा घाया तुम्हारे ही
उपयोग के योग्य है।”

दो मित्र थे। एक आस्तिक, दूसरा नास्तिक। दोनों एक-दूसरे के
ज्ञान, छान और विश्वास के प्रशंसक थे। एक दिन नास्तिक बोला—
“मित्र ! वास्तव में, तुम्हारी श्रद्धा स्तुत्य है। तुमने अपने विश्वास पर
सब-कुछ न्योछावर कर दिया है। तुम्हारा त्याग महान् है।” आस्तिक ने
उत्तर दिया—“नही मित्र ! त्याग की दृष्टि से तो तुम महान् हो। मैंने
तो केवल सासारिक सुखों का ही त्याग किया है; किन्तु तुमने तो ससार के
स्वामी भगवान् तक का त्याग कर दिया है !” —‘वेदात-लहरी’ से

क नामक एक पुत्र उत्पन्न हुआ। कृष्ण द्वैपायन न वेदमन्त्रों का सफल कुलन-सम्पादन किया। आज हमें वेदमन्त्रों जो रूप मिलते हैं, वे कृष्ण द्वैपायन की अनुकम्पा की ही देन हैं। उनकी इस हस्ती सिद्धि से अनुगृहीत आर्य-सत्तति। उन्हें 'वेदव्यास' कहा। मौसी-कन्या सत्यवती का अति कृष्णकाय 'कृष्ण' आसेतु-हमालय भरतखण्ड में 'भगवान् वेदव्यास' नाम से वदित हुआ।

अब व्यास न बँदिव कर्मकांड को मुख्यवस्थित किया। स्वयं भी एक बड़ा यज्ञ किया। नैमिषारण्य में विशाल विद्व-विद्यालय की स्थापना की। व्यास को अपने अनुष्ठान-आयोजन में जन्मजात तपस्वी पुत्र भृकुदेव और वैशम्पायन-परिवार से अमूल्य सहयोग मिला। ज्ञान की अखंड ज्योति से समस्त आर्माधर्त प्रकाशमान हो गया। वैशम्पायन के शिष्य याज्ञवल्क्य न 'शुक्ल यजुर्वेद' की रचना की।

कालांतर में वेदव्यास की माता सत्यवती हस्तिनापुर के राजा शातनु की परिणीता बनी। कुछ वर्षों में राजा मृत्यु को प्राप्त हुए। सत्यवती के सामने कुल-राय की समस्या खड़ी हो गयी। शातनु के एक पुत्र भीष्म तो प्रतिज्ञानुसार ब्रह्मचारी बने रहे और उसके अपने पुत्र विचित्रवीर्य के सतान

नही हो पा रही थी। अतः सत्यवती के अनुरोध से कुलप्रधानुसार व्यास ने विचित्रवीर्य की पत्नियों से नियोग किया। फलतः धृतराष्ट्र और पांडु जन्मे और एव दासी से नीतितान विदुर पैदा हुए।

कुल और जाति को जीवित रख कर ही व्यासजी न अपन वक्तव्य की इतिथी नही मान ली। उन्होंने समस्त आर्य-जाति की सस्त्रुति एव परम्पराओं को सुरक्षित रखने के लिए इतिहास और 'पुराण' की रचना की। इस प्रकार वेदव्यास विश्व के सर्व-प्रथम इतिहासकार हैं।

वास्तव में, वेदव्यास जगत के महान् समन्वय शिल्पी सिद्ध हुए। उनकी मानस-दृष्टि असीम थी। जीवन की सम्पूर्ण अभिव्यक्तियों का रहस्य उनके प्रज्ञा-खुओं के समक्ष स्पष्ट हो गया था। समस्त मानवीय सीमाओं, दुर्बलताओं, विशय-ताओं के अंतराल में उनके अंतर्यामी ने



तप

[चित्र लिब्रेटस रोसिक के पद्म निश की सरल रेखाचित्र]

हिन्दी डाइनेस्ट

प्रवेश पा लिया था। इस प्रकार जीवन को एक विशाल साधना-क्षेत्र बनाकर उन्होंने सत्-असत् के पार अवस्थित उस ब्रह्मसत्ता की अनुभूति प्राप्त कर ली थी। किन्तु उनका आत्मसाक्षात्कार केवल निज तब ही सीमित रहनेवाला नहीं था। उन्होंने सारी आर्य-जाति के अमृतस्थानार्थ जीवन-दर्शन का निरूपण किया, जिसे उन्होंने 'धर्म' की मज्ञा दी। सत्य, तप एव माति—इस धर्म के तीन पैर थे।

इसी समय यदव्यास ने देखा कि, पुरुराष्ट्र के पुत्र कौरव अन्याय के मार्ग पर जा रहे हैं और आर्य-परम्परा की रक्षा करना अनिवार्य कार्य हो चला है। धर्म को पाद्यों के पक्ष में देखा व्यास ने उन्हें यथा-सम्भव सहायता दी।

यदुपुत्रभूषण कृष्णचद्र वेदव्यास के सहयोगी बने। वेदव्यास ने देखा कि, कृष्णचद्र अपार शक्ति के ही नहीं, बुद्धि के भी अद्वितीय स्वामी हैं। राजनीति और कूटनीति की शतरंजी खाला में वे अजोड हैं। उनमें धर्म-रक्षा की असीम भावना है। अधर्म का विनाश करने को वे परम आवुर हैं।

इस प्रकार कृष्ण द्वैपायन (वेदव्यास) नपनीत

और कृष्ण वामुदेय (श्री कृष्णचद्र) गहरी मित्रता हो गयी। राजभूषण-वेदव्यास ने कृष्ण के सम्पर्क में रहकर धर्मराज युधिष्ठिर को अद्वितीय महिमादित चक्रवर्ती के पद पर आसीन किया। वेदव्यास ने कहा—“जहाँ श्रीकृष्ण है वहाँ धर्म है।” और, श्रीकृष्ण ने पुरुराष्ट्र में कुरु का अपना विराट् रूप दिखावाते हुए कहा—“हे अर्जुन! ऋषियों में वेदव्यास मैं हूँ।”

इस समय १६

कौरव-पाद्यों १ सम्बन्ध बिगड़ गये। जुआ में पाद्व होनेवाला गये। और वीर्य शान सदेश ले श्रीकृष्ण कौरव-सभा में हुए बने। परन्तु कौरवों का कुराष्ट्र 'महाना रत' का कारण बना। इस अठारह दिन के विद्वय विनाश महायुद्ध में पाद्यों



[अनगर, लक्ष्मी और अश्वत्थ]

की जीत हुई। पाद्व भी राज्यभोग के उपरांत परीक्षित को सत्ता सौंप 'तनोप' की राह स्वयंवासी हुए।

वेदव्यास के ज्ञानवृद्ध लोचना के सम्मुख आर्यावर्त के विशाल मन पर कठपुतली के नृत्य की मोति सपटित शारी पटनाएँ साकार हो गयी। अपने जन्म से स्नेह प्रपौत्र परीक्षित की मृत्यु तक के ये अतर्हीन,

मयध्वर

‘सत्य प्रेम, सत्य-सत्य-सत्य-सत्य’ शब्दों में उन्हीं लिखित विषयों पर भारत-विशिष्टों की गौरव-भाषा के व्याज से समस्त सत्य जाति की महात्म्या के रूप में ‘महा-भारत’ का प्रणयन हुआ ।

। किन्तु अपनी समस्त सिद्धियों और ज्ञानमूलक आकाशिक के बावजूद व्यासदेव परम साधवीय विभूति थे । नागयज्ञ के समय अपने पुत्र दुष्येय का देहात होने पर वे ज्ञान के धौप को स्थिर न रख सके—पूट-पूट कर रो पड़े । उनकी देहती आत्मा रहस्य। प्रतिष्ठितों का देहावसान हुआ था । भगवान् श्रीगुरु भी नश्वर शरीर को छोड़ चले थे । यहाँ तक कि, उनका प्रपौत्र परीक्षित-जंता साण भी बाल-वयसित हो गया था ।

जन्म मरण का आत पत्र देत लेने के बाद, एक दिन वेदव्यास ने दिव्य-दृष्टि से देखा कि, उनको जीवा का लक्ष्य भी पूर्ण हो गया है । उन्होंने चाहा कि, देहत्याग कर दें । परन्तु उनके आराध्य शिव ने

अस्वीकार किया और वरदान दिया कि, सत्यान-सहा की शक्ति तुझे प्राप्ता होगी ।

सताब्दियों आयी और चली गयी । साम्राज्य मूर्ख के समान उदय हुए और विनश्यत हुए । अन्त स्था में मनुष्य का दृष्टि-शेष बचता । किन्तु मानव-स्वभाव की अति अपरिचर्यानीय ‘महाभारत’ मनुष्य के सार्वभौम अनुभव का दर्शन करने वाला आज भी ज्यों-जैसे-जैसे अजर-अमर है ।

००० ००० ०००

जब १९५२ में, बाली में मैंने वेदव्यास के स्मृति-भवन का शिलान्यास किया, तो मेरा गा आनन्द से आदीर्घ था । मैं टीक उठी स्थल के चिट रक्षा था, जहाँ बैठ कर भगवान् वेदव्यास ने ‘महाभारत’ का प्रणयन किया था । पाठ ही सदा एक अति बुद्ध विनाश घट-बुद्ध हमारे समारम्भ का एतावति देत रहा था ।

मैंने अधुना स्तब्ध होकर, उस गुणस्फूर्त की धूल अपने मस्तक पर पड़ायी ।

★

स्वामी विवेकानन्द की प्रेरणा से अनेक ब्रह्मवीर भारतीय वेदात में प्रचार के लिए अमेरिका जाते थे । एक दिन एक सत्यासी सिस्टर विवेदिता के पास आये तथा अमेरिका में वेदात-प्रचार की प्रणालियों पर विचारता की । विवे-दिता ने एक क्षण सोचा, फिर सत्यासी से एक चाकू देने की प्रार्थना की, जो उनके पास रखा हुआ था । सत्यासी ने जोर-जोर से हाथों को स्वयं पकड़ कर काट वाला भाग विवेदिता की ओर कर दिया । “बिलकुल ठीक !” सिस्टर विवेदिता बोली—“विदेश में कार्य करने की उचित चाली यही है । एकदम के सामने स्वयं रहो तथा सुरक्षित भाव दूसरों के लिए छोड़ दो ।”

—स्वामी सद्गुरुदेव

जोड़े आँखों ने दी लड़के....

रंग दिरंगे मोर को अपनी परिपूर्ण गरिमा में नाचने देता एक दिन एक नन्ही मैना अपनी में रुझ गयी। बहुत मनाया मों ने, तो सधुस-सधुस रोने लगी—“मेरे भी उस मोर-जैसे हल बरसाओ, नहीं तो मैं चुप्पा नहीं रहऊँगी। इन कोचने-जैसे पखों को लेकर मैं कैसे का निकलूँ?” मों ने नाशान बेसी को हनेह-हरीन बरस में दवाने हुए कहा—“कम तुम मेरे हल चलो, तो मैं तुम्हें उम मोर के साथ-ही शिखर-तुलना दूँ। वह भी अपनी मों से देखे है विराटता है, कदा है—मुझे वो कम उम मैना जैसी मोंछी आवाज ला दो!” अपनी नाट हम भूल जाने है। बराबी का मोह कहा सनाता है। थिनि नाटु मे दाँ रम रम का कहा सुंदर विनय किया है!

महर्षि कश्यप के दो पत्नियों थीं— बड़ और विनता। विनता चाहती थी, महासत्त्व-भगवान! इसी से उगे एक ने अर्पित दिम्ब दिये गये। पर जब बहुत दिन बीत जाने पर भी बालक का जन्म नहीं हुआ, तो अभीर विनता ने एक दिम्ब फोड़ डाला। फलतः आधे ही गर्भर का बालक निकला। यही था अरुण, जो सूर्य का सारथी बना। उगने भाग से सन्तोष कहा—“तुम महासत्त्व-भगवान तो चाहती हो; पर महाप्रतीक्षा नहीं कर सकती? अब तोय दिम्बों की प्रतीक्षा करना। उनमें महामाग मष्ट जन्मेंगे, जो तुम्हारे शास्त्र का मानन करेंगे।”

जन्म-भाष ने विराट सगान की दुष्ठा भी विराट ही हैंस है। माता बहद को जिनका आहार देती, वह उगने लिए अपमान ही रहता। अननः विनता विनता ने अरुण का आह्वान किया। कश्यप ने

कहा—“बाहर के माघ से हमारे अनामों पिट सकते। जहाँ हम हैं, वहाँ की पूर्व ही हमारी अमावस्य बननी चाहिए।”

साध-नामस्या के साध-नाम भारत के सत्त्व-नामस्या का भी समाधान नहीं है। आज भारत को सारे जगत् के बीच मरता होता है। सभी देश अपनी-अपनी सत्त्व-लेखर आये हैं। स्वामाविक है कि भारत भी अपनी ही निजी सत्त्व-लेख बहो जाये। उपार से एक-दो दिन है काम चल सकता है, सदैव नहीं। जिस धर्म की बड़ प्रति दिन पड़ोस में उपार भोज जानी है, उम पर का सम्मान नहीं रहता। बरीर ने तो इस सम्बन्ध में अन्यतम है, कहा है—

“वर बाहुबल आपनी,
छोट विरानी आत,
जाने आपन नदी बहे,
मो क्यों मरे पिपास !”

अंतर का नारायण



अग्नि के प्रथम प्रवेगज अवधूत का आस्थान भारतीय वादमय वा
मानो प्राणग्रथ है। अग्नि के बिना उस कालका मानव कशु-पदियों
तक से हीन था। ऐसे ही नैराश्य में दूबा अवधूत एक दिन ओपट
छो बैठा—बीरे मरौबे से भी दयनीय इस देह को लेकर मैं क्या
करूँ ? किन्तु यह अवसाद जड़ता उसके अंतर्धामी को कैसे सहन
दीती— “रे मर्त्य, आभार जिनकी पीठ हो, पृथ्वी आधार हो, समुद्र योगि हो, वह दीन कैसे हो
सकता है ? उठ ! अपने को प्राप्त कर !” मनुष्य के रक्त में वह राखी सदैव अनुप्राण अंतर्ध्वनी
देगी। प्रकृतिमा सर्वदल्ली ने यहाँ इसी मशान् सत्य के दर्राँन हमारे पाठकों को कराये है।

स्वर्ग में देवताओं न बसतोत्सव मनाया
।। विष्णु और लक्ष्मी भी जोड़ा-विनोद के
स मधुमय पर प्रतिष्ठित थे। देवायनाओं
ने नृत्य-माचुरी से
तो दिशाएँ रसप्ला-
वत थी। सहसा विष्णु
अपने आसन से उठे
और वही अंतर्धान
। गये। लक्ष्मी को
व-में भग का यह
सग थड़ा अजरा।
त जब विष्णु वापस
आये, तो अमर्ष-
कम्पित लक्ष्मी पूछे
ला न रह सकी।
विष्णु अपनी मद्र-
धुर वाणी में बोले—
परती पर मेरा एव

क्षण की भी देर नहीं करना चाहता था।”

लक्ष्मी अपनी ही श्लाघि और हीनता
में मानो गड़-सी गयी। अमा निवेदन के साथ

ययुवपां

ययुवपां वृद्धा नीरव क्व !
वतश्च क सूनेन मे
श्लोक न ह भग पीडित ।

शब्दार्थ (प्राक्) तन भीतर
मज्जरि-रहित सदन आश्रों पर,
स्वप्न पवन के उर में सहा
साग उठा नत्र ग्यहन ।

चार-नामय, एकाद, निराला
एव पिरि मुग्नरित कर ज्ञाता
रिक्त प्राणियों में वन की
कारतं मयुन्याम-वर्षण ।

—मुनिजानदन पत

बोली—“प्रभो, करणा
के सिधु, मैंने क्या
अपराध किया था,
जो ऐसे समय मुझे
आपन अपने साथ
नहीं लिया ? आपने
प्रियजन की सताप-
निवृत्ति में मैं भी कुछ
सहयोग देती।”

विष्णु अपनी परम
आह्लादिनी मुद्रा में
मुस्कराये—“नही देवि,
अत्यंत दूरस्थ धनुकुठ में
बैठ रागरग विह्वल
नारायण के जाने

कन पोर सवट में आर्तनाद कर रहा
।। सुतवर मेरा मर्म विदीर्ण होने
गा। मैं उसरी सहायता के लिए एव

से पूर्व ही, उसने स्वयं के भीतर का
नारायण जाग उठा। अत जब तक मैं
पहुँचा, वह व्याधि-मुक्त हो चुका था।”

पादुकाभिषेक चन्द्रिकाप्रकाशिका

रामायण में पादुकाओं की महिमा अति अनुपम है। भरतजी की अनुनय-विनय पर भी जब रामचन्द्रजी अयोध्या लौटने को राजी नहीं हुए, तो भरतजी ने बदले में पादुकाएँ ही भोगी। राम ने कृपा कर चौबरो दे दी और भरतजी ने उन्हें सोच पर धर लिया।

चौदह साल तक ऊँची पादुकाओं के आज्ञानुसार भरतजी ने राज किया। तिहासन पर तो पादुकाएँ ही अभिषिक्त थी। उपर्युक्त प्रसंग को लेकर भारतीय भाषाओं में कई गीत, कथाएँ, नाटक, सिनेमा आदि रचे गये हैं। किन्तु इतना सब देख-सुनकर भी हम लोगों में कई ऐसे हैं, जिन्हें 'पादुकाओं' की महिमा ज्ञात नहीं होगी।



धाम्य-सद्विषयों
[चित्र : सुधीर खलसी
का एक वाक्कल्प]

मेरे जीवन में एक बार एक ऐसी अद्भुत घटना पटी कि, पादुकाओं की महिमा बड़े विचित्र रूप में मेरे सम्मुख परिचय हुई!

१९२१ में मैं और मेरे कुछ सहयोगी तिरुचेणोडु के 'गांधी-आश्रम' में काम कर रहे थे। तिरुचेणोडु के प्रदेश में वर्षाभाव

के कारण बार-बार दुष्काल पड़ा करता है। दुष्काल-पीडितों की सेवा भाषण द्वारा ही होती थी। अनाज को बाँचे मूल्य में दिया जाता था। दुष्काल के पीडित प्रदेशों में मणिपनूर गाँव की हालत सबसे शोचनीय थी। उस गाँव में खर-बे-सब मोचों ही थे।

सप्ताह में एक दिन मणिपनूर में हाट लगती थी। आसपास के गाँवों से लोग वहाँ प्रम-विमय करने जाते थे। ऐसी-ऐसी जगहों का दरबार ही उस जमाने की सरकार सादीराने संपन्न करती थी। वर्षा के अभाव में तालाब-तुओं से पानी पीने दिव-रात घूँस-मत्ताना एक करके ग्रामीण कुशल उगाते थे। किन्तु हाट में सरकार तादीरानों के द्वारा ग्रामीणों की इन गांधी बगार्ड का एक बड़ा हिस्सा हथ जाती थी। हरिजननों में तो प्रायः सभी इन पीने के बर्तन में मृत्युलब्ध थे। मणिपनूर के गाँवों की अपवाद नहीं थे। 'गांधी-आश्रम' के द्वारा जिन गाँवों में सेवा होती थी, उन

गोंवो के लोगो ने बसम खायी थी कि, वे अभी ताड़ी-शराब नहीं पियेंगे। मणियनूर की मोची जनता ने भी बसम खायी थी।

गुरुवार के दिन आश्रम में अनाज दिया जाता था। एक गुरुवार के दिन मणियनूर का मुनियन तथा और कुछ लोग मेरे सामने प्राणर खड़े हो गये।

“यहाँ क्यों लाये ? अनाज की भण्डार पर जाओ।” रंने कहा।

जी स्वामी। एक बात हो गयी है....।” मुनियन ने कहा।

“क्या बात है ?” मैंने पूछा।

“... सापस गोडकर उन्होंने कल रात खूब पी ली थी। अब... आप ही इनका या प कर दें।” उसने कहा।

“कितने आदमियों ने पी ?”

“जी, सिर्फ दो आदमियों ने।”

“उनको यहाँ लाये हो ?”

“हाँ। एक आया है और दूसरे की घरवाली आयी है।”

“उन लोगो ने वसूर-बबूल कर लिया ?”

“जी नहीं। वह कल रात पीकर आया था और अपनी घरवाली से झगड रहा था। मालिक, सारा गोंव जानता है। बबूल न करेगा कैसे ?”

मैंने अपराधो की ओर देखा और पूछा—
“तुम्हे कुछ कहना है ?”

“मालिक, घरवाली के साथ झगड



राजजी

[चित्र-सुप्रसिद्ध स्वर्णचित्रकार श्री लक्ष्मण के एक रंगीन चित्र की मामार अनुकूलि]

रहा था, यह सच है। पर सिर्फ झगडने की वजह से ही किसी को पिया हुआ समझना कहीं वा न्याय है ? जो नहीं पीते वे झगडते नहीं क्या ? ...”

“देखो जी, सच-सच बताओ। कल तुम ताड़ीखाने गये थे कि, नहीं ? अगर तुम्हारे गोंव में से एक ने भी पी है, तो सारे गोंव का अनाज बद कर दिया जायेगा।”

“जी नहीं मालिक, मैंने नहीं पी। मुनियन झूठ बोल रहा है।”

“मुनियन ! इसका कहना ठीक है ?”

मैंने मुनियन से पूछा।

मुनियन ने डरते हुए कहा—

“मालिक, इस बूढ़े से पूछ लीजियेगा।

हिन्दी डाइजेस्ट

यह इतना घबराहूँ और मेरा चाचा है।'

मैंने बूढ़े की ओर देखा—“सच-सच बता दो, तुम्हारे बेटे ने पी थी कि, नहीं?”

बूढ़ा एक घड़ी चुप रहा, फिर उसने जवाब दिया—

“कल रात यह अपनी घरवाली के साथ झगड़ रहा था।”

“मैं झगड़े के बारे में नहीं पूछता। बल तुम्हारे बेटे ने ठाड़ी पी थी कि, नहीं?”

“जी नहीं, मालिक। नहीं पी थी।”

“मालिक, यह बूढ़ा भी झूठ बोल रहा है।” मुनियन ने गुस्से से कहा।

“छोर, मालिक। बसम खाने के लिए कहिये।” मुनियन ने फिर कहा।

सचाई और बसम . . और बसम भी विस तरह ली जाये? मैं सोचने लगा। मंदिर में जाने में क्या कोई फायदा होगा? देवता या परंपर की मूर्ति के सामने जाकर बूढ़ा सच-सच कह देगा, इसका मुझे बचई भरोसा नहीं था।

बढ़ारह माल की बकालत ने अमूमन ने मर्यादा तथा प्रमाण पर मे भरोसा नरोसा उठा दिया था। झूठी गवाही वाद में चक्कर जिरह-बहम में झूठी साक्षित हुई, तो हुई, नहीं तो झूठ ही सब बन जाता है। सारी दुनिया की जात नबनीत

जब ऐसी है, तो बूढ़े का क्या भरोसा? ऐसा बौन-भा सत्य है, जिससे ये लोग हों।

सोचते-सोचते मेरी दृष्टि अपने झूठों पर पड़ी। तुरंत मैंने बूढ़े को पास बुलाया और कहा—“देखो जी, तुम लोगों का जीवन चमड़े पर ही निर्भर है। चमड़े के बिना तुम्हारा काम चल सकता है क्या?”

“जी नहीं मालिक। चमड़ा न हो, तो हम सब मर जायें।”

“अच्छा, तो तुम लोगों को जीविका देनेवाला चमड़ा यहाँ है। उठाओ, इसे अपने हाथों पर।”

बूढ़े ने झूठे उठा लिये।

‘अब मैं जैसे कहूँ, वैसे ही बोलो?’

मेरे कहने के अनुसार वह बोले लगा—“भगवान के सामने मैं कह रहा हूँ। . . मुझे जीविका देने-वाले इस चमड़े की मैं बसम खाता हूँ . .।”

तब मैंने पूछा—

“रात तुम्हारे बेटे ने पी थी कि, नहीं?”

“जी हाँ मालिक, उसने पी थी।” बूढ़ा बोप रहा था।

मैं स्तब्ध रह गया—कुछ देर तक अवाक्-अचेत-ता। इस दुनिया में बमी-बमी बितनी अद्भुत घटनाएँ घट जाया करती हैं। . . कुछ देर टहरकर मैंने



प्रजापति बधुरें
[चित्र : श्री बेंद्र के एक
चित्र श्री माण्ड रेणुमुरति]

अपराधी से भी जूते उठाकर वहने को कहा। उसने भी जूते उठाकर बसूर बबूल कर लिया। अपराधी पर चार आने जुर-माना हुआ। उसने सुरत दे भी दिये।

उनके चले जाने के बाद मैं काफी देर तक अपलक दृष्टि से उन पुराने जूतों को देखता रहा। उस वर्णनातीत अनुभूति ने मेरे भीतर जूतों के प्रति एक अजीब आदर का भाव पैदा कर दिया था। जिन जूतों को हम हेय-नगण्य समझते हैं, वे ही क्या हजारों-

लाखों का भरण-पोषण नहीं करते? इन बोटि-कोटि मनुष्यों के लिए ईश्वर, धर्म, दर्शन—सब ये जूते ही तो हैं। चमड़ा ही उनका नारायण है, चमड़ा ही उनकी अन्नपूर्णा है, चमड़ा ही उनकी लक्ष्मी है। जो भरण-पोषण करे, धारण करे, वही तो भगवान हैं। अतः उस दिन से जूतों को पंखों में पहनने से पहले, मैं उस महापालक शक्ति को, जो जूतों के साथ है, सदैव प्रणाम कर लेता हूँ।

•

चक्रवर्ती भरत ऋषभ देव के पुत्र थे। ससार में रह कर भी और चक्रवर्ती बन कर भी भरत ससार की माया-भ्रमता से विलिप्त नहीं थे। जल में कमलवत् था उनका जन-जीवन।

एक बार चक्रवर्ती भरत के जीवन में एक साथ तीन प्रिय प्रसंग प्रस्तुत हुए—राजप्रासाद में पुत्ररत्न जन्मा, शस्त्रशाला में चक्ररत्न प्रबुद्ध और भगवान् ऋषभ देव को कैवल्य की प्राप्ति हुई। भरत के लिए तीनों ही प्रसंग सुंदर और मधुर थे।

भरत के सम्मुख प्रश्न यह था कि, सर्वप्रथम हर्षोत्सव किसका करें? पुत्र का, चक्र का या भगवान् के कैवल्य का?

एक ओर भीतिवद् महत्ता का मधुर आकर्षण, दूसरी ओर आध्यात्मिकता की गरिमा। अपुत्री को पुत्र का मिलना और राजा को चक्ररत्न का मिलना—जिसके बल-प्रताप से वह चक्रवर्ती होगा, सम्राट् होगा—दोनों सौभाग्य-सूचक थे, साप्ताख्य दृष्टिकोण से।

भरत अतर्कन की गहराई में उतर कर साबित हैं—“पिता-पुत्र का नाता नया नहीं। आदि और अंतहीन ससार में यह खेल बनता-बिगड़ता ही रहा है। चक्ररत्न मिला है, तो वह भी पुण्य-बल के प्रवर्ध से। पुण्य प्रबल है, तो वह भाग्य है—जा नहीं सकता। परन्तु भगवान् का कैवल्य-महोत्सव? वह तो महत्तम और उच्चतम आध्यात्म-भाव की पूजा है।” और, भरत पहले भगवान् के कैवल्य-महोत्सव में ही सम्मिलित हुए।

—विजय मुनि

•



आह्वान

—स्वीन्द्रनाथ ठाकुर

आमरा बंधेहि काशेर गुच्छ,
 आमरा गंधेहि शेफालि माला,
 मबीन धानेर मञ्जरि दिये
 साजिये एनेछि डाला,
 ऐशो गो शरदु सखी तोमार
 शुभ मेघेर रये,
 ऐशो निर्मल भील पये,
 ऐशो धीत श्यामल
 भालो झलमल
 वन गिरि पर्वत
 ऐशो मुकुट परिया श्वेत छतदल
 शीतल शिशिर टाला...

—हमने काश-कुल के गुच्छे बोधे हैं, हमने
 शेफालि की माला गुंथी हैं। नये धान की मञ्जरी
 से हम डाली सजा कर लाये हैं। हे शरद-सखी,
 अपने शुभ मेघ के रथ पर बैठकर आओ। आओ,
 वन-गिरि-पर्वत, धूप और छाँह में कैसे झलमलाये
 हैं ! शीतल ओसकण से सजे श्वेत छतदल के
 मुकुट को पहन कर आओ !





कर्म-समाधि

गीता क गोप ॥ राय के रच-व श्लोक—'मद्वय तन गत-य मन्त्रमसमाधिः'—म 'कर्म-समाधि' के प्रयोग द्वारा गीताकार ने व्यवयोग का भी जाल खींच करित के समान अनुभूति के परमात्मन पर पहुँचा दिया है। यही दोनों मार्गों के मिलन की स्थिति है। इसी स निष्ठा जुनग बोझ का 'मन्त्रविहार' है। रवी द्रनाथ ने ऐसी ही मिथि का नदी का उगहरण इस निरूपित किया है—“नदी अपने आसपास के स्थलों को तीरों का जलनी है किन्तु वह उन सबम जलित चलती ही आसगी—अब तक कि, समुद्र में अपनी पूर्णता न पा ल। हमारी भाव की गति भी ऐसी ही है, मन्त्र में स्थिति प्राप्त करके ही वह भी सिद्ध मानती है—उसकी सदा प्रसन्नता यहाँ साधकता प्राप्त करती है।” इधर दशरथ मनीष के मन्त्र भी रत्नायत्री दिवाकर ने भा 'कर्म समाधि' का कहा ही सरल-मदन एवं दृढ़-मन्त्राही निरूपण किया है। 'नवनीत' के लिए विशेष रूप से प्रस्ताव इस सग वा ह्य यहाँ साम्प्रत प्रकाशित करते हैं।

१२-या सदा के मन्त्रक कवि रुद्र भट्ट मन्त्रा द सवत हैं और वह रावते हैं कि, यह समाधिस्थ कवि का जाल 'प्रभु' में अंतर्भूत है। किन्तु काय समाधि की अभिव्यक्ति में भा कम समाधि र ममान ही विरथाभाव ता न ही, यथाकि काय-रचना भी (कार जगमें म लग्न किया का अति मूल भोक्ति रूप निरूप दे तब भी) निरुद्ध बोद्धि किया स ही ता अनुप्राणित है।

इसम व्यक्तित्व का म यह विचार आता है कि केवल प्रज्ञात ध्यानावस्था, जाल प्रदान है, इस भली-भाँति 'समाधि' की चित्तन जगवा मोन ही समाधि-जगन नदी नयनीत

हैं, वरन् सतत कर्म और बौद्धिक क्रिया की संगति भी वहीं हो सकती है। इसका तो यह अर्थ निकला कि, ऐसी समाधि में, एक व्यक्ति विशेष की आत्मा विद्वात्मा के साथ तदाचार है—जब कि, उसकी शारीरिक और मानसिक चेतनाएं इस अनुभूति में अनुप्राणित होकर कर्मनिरस्त रहती हैं कि, वे सर्वथा समर्पित हैं और एक समर्पित व्यक्ति ही उन्हें कर्मों के रूपों में खला रहा है।

उल्लेख है कि, सतत अभ्यास के द्वारा मुमुक्षु उस विशेष स्थिति को प्राप्त कर सकता है, जिसमें वह अपने ही कर्मों, विचारों और बौद्धिक क्रियाओं का निश्चल और तटस्थ द्रष्टा—आत्मसाक्षी—हो जाता है। इस स्थिति का यदि हम विश्लेषण करें, तो हमारे सामने स्पष्ट हो जाता है कि, इसमें व्यक्ति केवल अनासक्त द्रष्टा ही नहीं है, बल्कि वह कर्ता अपवा स्रष्टा भी है। आनन्द के माध्यम से यह विद्वात्मा के साथ तदाचार भी है। कर्मयोगी के लिए यह आत्मसाक्षात्कार की सर्वोच्च स्थिति है।

ऐसी अवस्था में, कर्मयोग का अर्थकेवल आध्यात्मिक मार्ग ही नहीं रहता कि जिसपर चलकर भवन निष्काम कर्म द्वारा 'पूर्ण' और 'परम' को प्राप्त करता है—बल्कि वह ऐसा मार्ग भी है, जिसका अंतिम अनुभव 'कर्म-समाधि' है। इस प्रकार के आध्यात्मिक स्तर की व्याख्या में ही श्रीकृष्ण ने अति स्पष्ट रूप में 'कर्म-समाधि' का प्रयोग किया है।

गीता का कथन है कि, अंतिम अवस्था या लक्ष्य प्राप्ति से पूर्व साधनावस्था में भी

साधक विद्वात्मा के तादात्म्य का आनन्द प्राप्त कर सकता है—अर्थात् आनन्दानुभूति की उपलब्धि के हेतु कर्मयोगी के लिए यह आवश्यक नहीं है कि, वह कर्मरहित हो। उल्टे उसका तो यह प्रयत्न होना चाहिए कि, वह आत्मार्पण भाव से निष्काम कर्म करता रहे और सतत रूप से अपनी समस्त कर्म-सकृलता के बीच विद्वात्मा के साथ तादात्म्य-सम्बन्ध बनाने की चेष्टा करता रहे।

गीता द्वारा कर्मयोग का यह निदर्शन अन्यत्र दुर्लभ और अनूठा है। यह वस्तुतः व्यक्ति के भीतर के महासमन्वय की चेष्टा है। सशेषतः 'कर्म-समाधि' में एक ऐसी आनन्दानुभूति की वस्तुना है, जिसमें व्यक्ति के व्यक्तित्व की सारी रेखाएँ एक परिपूर्ण समन्वय सम्पन्न करती हैं। भौतिक, बौद्धिक और भावनारमक क्रियाओं तथा भीतर के आत्मा के बीच जो संपर्क-वैषम्य नजर आता है, उसका परिहार 'कर्म-समाधि' की इस वस्तुना के भीतर मौजूद है।

अतः जब अर्जुन ने घोषित कर दिया कि उसका मोह नष्ट हो गया है और वह भगवद्-यन्त्रानुरूप कार्य करेगा, तो भले ही वह मुख्यतः के बीभत्स नर-संहार में प्रवृत्त हो रहा हो, उसे इस 'कर्म-समाधि' के परमानन्द की प्राप्ति अवश्य हुई होगी, क्योंकि उसने भीतर बौद्धिक, शारीरिक एवं आध्यात्मिक सभी चेतनाओं का वैषम्य, मिट गया था और इस प्रकार आत्मसाक्षी की तटस्थता बरतता हुआ वह चरम आध्यात्मिक स्तर पर सुस्थिर हो गया था।

शारह ३५ दृष्टक

सप्त पुस्तक ३५ वी एक मासिक विधी कविता वा सविता हिन्दी रूपान्तर

१

इसक शारह वै झगडा पय गया
मन दा भयम मटाया मे,
सवाल दारा दे, जर रय इसक दे,
हजरत मारय मुनाया मे

—प्रेम और शारह (मुस्लिम आचरण-
सार) वा झगडा हो गया । मे इनके
ग्रम मिटाता है और शारह के प्रदन तथा
प्रेम के उत्तर आपरा कटता है ।

दारा कहे चल पास मुल्ता दे,
सित ले जदय अबदा नू,
इसक कहे इय हफं अयेरा,
छप रल होर चितायी नू

—शारह ने प्रेम से कहा—“मुल्ता के
पास चल और कुछ सम्मता की बातें
छीप ।” प्रेम ने कहा—“मेरे लिए एक ही
पद्य (प्रियतम, ईश्वर) पर्याप्त है, अतः
पुस्तक को तुम बद ही रखो ।”

दारा कहे कर पज अशनाला,
या लग मवर पूजा रे,
इसक कहे तेरी पूजा झूठी,
जे बित धठो, दूजा रे,

—शारह ने कहा—“पोंच बार स्नान करने

के पश्चात् मंदिर में जाता कर ।” प्रेम ने
उत्तर दिया—“अदि मंदिर में गये बिना
पूजा नहीं हो सकती, तो तुम्हारी यह
पूजा मिथ्या है ।”

दारा कहे कुछ धर्म-हया कर,
बर कर इस चमकारे नू,
इसक कहे यह धुंघट कंसा,
शूलन दे नजारै नू

—शारह ने कहा—“बढ़-बढ़ कर पातें न
बनाया, कुछ धर्म करो ।” प्रेम ने उत्तर
दिया—“अरी नादान ! धर्म के दम पूषट
को उठ जाने दे ।”

दारा कहे, दाह मंगूर नू,
शूली उते चाह्या सी
इसक कहे सुसो बना बीता,
बूहे यार दे याह्या सी ।”

—शारह ने कहा—“मूलो मत, हमने दाह
मंगूर तब को शूली पर चढ़ा दिया था ।”
प्रेम ने उत्तर दिया—“तुमने अच्छा किया—
उमे ‘प्रियतम’ (भयवान) के द्वार में,
प्रविष्ट करा दिया ।”

★

आनंद ही एग ऐसी वस्तु है, जो आपने पास न होने पर भी आप दूसरों वा
बिना किसी अनुविधा के दे सकते हैं ।

—कारमेन सिल्वे

★



आनंद के विपक्षकर्मी

'आनंदश्चैव सत्त्वमानि भूतानि जायते' के अनुसार आनंद से ही भूत मान की सृष्टि है। और, यह आनंद क्या है? उस निराकार 'पूर्ण' की साकार सीता ही तो है—'आनंदरूपमृतम् बद्ध विमाति।' व्यक्ति—शिक्षी, बहि, गायक—की सृष्टि भी आनंद की अभिव्यक्ति का ही भाग्य है। प्रस्तुत लेख में गुजराती वाङ्मय के रसतिद्ध सर्वक उमाशंकरजी जोशी ने इस प्रसंग को बड़े मर्मस्पर्शी ढंग से निरूपित किया है। चित्र में पूर्ण साज के साथ नटराज रामगोपाल के नृत्य की छवि झोंकी है। चित्रकार हैं श्री दीपोत्तास्की।

★

हमारे पड़ोस की गन्ही-मुन्नी अपनी मौ से तेर-भर बाजरी माँगती हैं, या कभी दादाजी से टकरा गयी, तो उनसे दो आने ले लेती हैं। दादाजी यदि प्रुछ बैठे—“क्या करोगी बिटिया?” तो “काम है” कह कर वह बड़ी गंभीरता के साथ वहाँ से घिसक जाती हैं।

गोंव के छोर पर बुम्हार सारा दिन मिटटी को नया-नया रूप देता रहता है। “चाचा एक घड़ा दो न।” मुन्नी उससे कहती हैं। “क्या करोगी?” के प्रश्न का उसके पास वही उत्तर है—“काम है। तुम

दे दो न।” बूढ़ा बुम्हार हँस कर उससे कहता है—“मैं जानता हूँ तेरा काम, शौतान बही की।” और, एक अच्छी-सी गगरी उसे खोज देता है।

घर लौट कर मुन्नी एक तेज, नुकीले पत्थर से घड़े में छेद करने बैठ जाती हैं। बूढ़े दादा अपने चदमे के भीतर से यह दृश्य देख कर बोल पड़ते हैं—“क्या करने बंठी हैं मुन्नी? देखो, अपनी बेंदी के लक्षण! यह घड़ा अब पानी भरने के काम का तो न रहा।”

मुन्नी कुछ नहीं बोली। शाम को जब सब

लोग व्यालू कर आनन्द-विनोद में लगे थे—
 कुछ सोने की सँपारी कर रहे थे—तो मुन्नी
 अपने सिर पर वही घड़ा और उसमें एक
 जगमगाता दीपक रख कर गद्दी में घूमनी
 हुई दिखायी पड़ी। उसकी सब सहेलियों,
 कोरिला, इला, तरला, सरला, अमला,
 विमला बगैरह सब एक गोले चक्कर बना
 कर उसके साथ-साथ घूमने लगी।

००० ००० ०००

बल हमारी मिटिया के
 हृदय में ज्वालगना शरद शत्रु
 के आराध में शनदल कमल-में
 प्रस्फुटित चद्रमा और उससे
 प्राप्तपास विमोहिनी भी भंड-
 रानी ताराबलिया को देख
 कर पुष्प के कुछ निराश ही
 भाव उठे। उसना राम-राम
 आशोलित हो उठा। उगरी
 चरम उर्वर बलना ने मापना
 गुरु किया—यह ब्रह्मांड एक
 घटे घड़े-जैसा ही तो है,
 ब्रह्मा उस घड़े के बीच रखा
 दीपक है और ये उडुगण उस प्रवास-
 पुजित घड़े के छिद्र। लेकिन यह घड़ा
 हिल क्यों रहा है? जम्बर ही किमी ने
 इसे अपने सिर पर उठाया होगा।

दूसरे दिन तो उगने इस वापना का
 धरती पर ही साकार कर दिया। पड़ोस की
 सहेलियों से मंत्रणा कर उगने भी एक घट-
 ब्रह्मांड बनाया, उसे सिर पर रखा और
 आनन्दमोहिनी आचारान्तर की मोति आगन
 भवनीत

में विचरने लगी।

वास्तव में, यह घड़ा पानी भरने के लो-
 वाम का न रहा, लेकिन में समझता हूँ कि,
 रोज-रोज पानी से भरने और खाली होने
 के नीरस क्रम से वह उबता भी गया
 था। अतः मुन्नी की पत्पना ने पुनः-पुनः
 से चली आ रही मुन्हार की तपस्या का
 आज अनायास ही सुप्राप्तता कर दिया।
 वस्तुतः आज ही तो घड़े का तात्त्विक उपयोग



[गृध्र मन्त्राभि]

करने वाला कोई प्राणी पंदा
 हुआ है। अभी तक तो सब
 लोग घड़ों में पानी भर-भर
 कर ही पीते थे, पर आज
 मिट्टी के उसी पात्र से एक
 दूसरा ही द्रव यह रहा था,
 जिसे हम 'आनन्द' कहते हैं।

००० ००० ०००

शत्रुओं की उपद्रव से बचने
 के लिए ही मनुष्य घर बना
 कर रहने लगा है। पर
 आवश्यकता-भूति से ही मानव
 के मन की परितोष मित्र

गया, इसे बोन मानेगा? स्वयं एक
 झोपड़ी अपना घरीदे में रह कर
 उसने गाँव में एक ऐसी इमारत का भी
 निर्माण किया, जिसमें कोई नहीं बसता—
 सिवाय पत्थर की कुछ देहों के। पर शीत-
 ग्रीष्म-वर्षा से कभी विप्लित न होनेवाली
 उन निर्जीव पाषाण-प्रतिमाओं के लिए
 इन्हीं बड़ी इमारत की क्या आवश्यकता?
 तर्क फुट है, अवाटक भी। पर मनुष्य

के भीतर जो आनन्द-बीज है, वह अस्फुट, निस्पृह कैसे रह सकता है ? सृष्टि की मूल चेतना कब तक अचेतन पड़ी रहे और जब कि, जीव आनन्दकद है, वो कद से अकुर क्यों न फूटे—वह पल्ल-वित-मुष्पित क्यों न हो ?

अतः मनुष्य जब अपने लिए घर बनाते-बनाते थक गया, तो आनन्द की उमियों ने उसे आदोलित किया और उसने आनन्द-स्वरूप के लिए मंदिर बनाया । मंदिर क्या, यो कहिये कि, सेतु बनाये—वैयक्तिक प्रात्मा को आनन्द-तरंग को विश्वात्मा के आनन्द-उदधि से मिलाने के सेतु ।

भारत में एक ओर, विश्व की सुंदरतम इमारत है, जिसमें किसी का बास नहीं । मुमताज भले ही सम्राट की हृदय-साम्राज्ञी थी, पर जीते-जी वह इस भव्य इमारत में न रही । वस्तुतः ताजमहल—जैसी अद्भुत रचना किसी पाषिव-सजीव सुंदरी के निवास के लिए नहीं बनायी गयी । प्रेम-भावना को अमरत्व देने के लिए ही उसका निर्माण हुआ था । सृजन की सारी चेतनाएँ आनन्द से जन्मती हैं और आनन्द के भीतर ही वे अपना पर्यवसान ढूँढती हैं । घाहूँजहों के प्रेम ने ताज में अपना पर्यवसान ढूँढा था ।

अरब के लोगों को अपने चारों ओर रेगिस्तान-ही-रेगिस्तान दिखायी देता है ।

अचानक एक आनन्द-मुहूर्त में, क्षितिज के उस ओर आकाश में चाहे मृग-मरीचिका की चित्र-सृष्टि में ही एक भव्य इमारत-सी उन्होंने देखी होगी और उसका सौंदर्य-बंभव दस कर उन्हे लगा होगा कि, यही तो खुदा का घर है । चलो, हम भी अपनी सामर्थ्य के अनुसार खुदा के लिए कुछ ऐसे ही सुंदर घर का निर्माण करें ।

००० ००० ०००

ये दो पैर हमें मिले हैं । इतना अच्छा-सासा उपयोग भी है । इस साडे तीन मन तख की काया को एक जगह से दूसरी जगह पहुँचाने को ये ही तो वाहन है । लेकिन उस तन्हे मुत्ते को तो पूछिये । शाम हो गयी है, मो अभी तख कैसे नहीं आयी ? हाँ, गली के किनारे पर वह हरो साड़ी दिखायी दी । वह बीडने को तैयार हुआ ही था, पर यह क्या ? वह तो रुमा मौसी है । वह फिर टकटकी लगा कर देखने लगा । गली के बाने पर उसकी आँखें बड़ा महारा



क्यू प्रवेश (माधवपुर में)
[चित्र : श्री के श्रीनिवास]

दे रही है। अंधरा होने आया, पर अभी तक मौं क्यों नहीं आयी? सहसा उसने चिंतित लोचन सिद्ध गये। दौड़ कर मौं से लिपटने के बजाय वह जहाँ खड़ा था, वही आनदातिरेख से नाचने लगा।

तो, पैर का उपयोग शरीर को एक स्थान से दूसरे स्थान तक ले जाना मात्र ही नहीं है। इसकी उस बाल्य को भी खबर होनी चाहिए। नृत्यकार उदयशंकर को तो है ही। उदयशंकर का नृत्य देखने एक बार हमारे कुबेर चाचा गये थे। बराबर जेब पटे धर्मपूर्वक मौन बंठे रहे, परन्तु अंत में उनसे नहीं रहा गया। धील पड़े—“इस आदमी ने इतनी शक्ति यूँ ही नष्ट कर दी; करता इतनी लापरवाही से तो आराम से चार बौल चला जा सकता था।”

लेकिन पैर पैयल चलने के लिए ही नहीं मिले हैं। नृत्यकार रमणच के इस कोने से उस कोने तक जाता है और इस जाने-जाने में वह प्रमत्त कुछ भी दूरी

नहीं मापता है। लेकिन एक मानव और दूसरे मानव के बीच जो बराब दूरी है, अंतर है, वह इस नृत्य से कितना कम हो गया—क्या यह सत्य हमारी ओरों नहीं देखती? संयुक्त, जातीय अथवा देश-वालीय सारी सीमाएँ यहाँ छय-शील हो गयी हैं और आनंद की एक अदम्य अखंड लहर सबके हृदय-देश में समान रूप से बह रही है—समरसता के इस स्तर पर मानवीय विभक्तियों पंसी तिरौट हो गयी, देखते ही बनता है।

उपयोग तथा आनंद के बीच की यह सीमारेखा अमिट है। उपयोग की छत्रों जैसे ही पूरी हुई कि, आदि-मानव का अन्त-र्यामी बला के ध्याले में मानदामूँष पीने के लिए मातुर हो उठा। तभी से चित्त-वृष्टि का प्रत्येक बिंदु, चित्रावृत्तियों की प्रत्येक रेखा आकाशचुम्बी पोष में बह रह रही है कि, सचमुच यह मनुष्य आनंद का उत्तराधिकारी है, वह आनंदस्वरूप है।

★

मित्र के बाहिरा शहर में एक बार स्वामी विवेकानंद रास्ता भूल गये और भटकते-भटकते बेरुमावा के गढ़े मोहल्ले में जा निबले। इसयोग यों रहा कि, बेरुमावा ने प्रायः तमस कर उनका भी आह्वान किया। स्वामीजी निस्सर्वांग उनसे शम गये। किन्तु उन तक पहुँचते पहुँचते उनके अंतर्धर्मों की परक्षा औंषों में टपकने लगी थी। एक पक्ष में अपने साधियों को सम्बोधित करते स्वामीजी बोले—“ये ईश्वर की हतमाय सज्जने हैं। ईशान की उपासना में भगवान को भूत गयी है।”

बरुमा-विह्वल स्वामीजी के इस दिव्य रूप को देख कर बेरुमावा भी घूट-घूट कर रोने लगी। एक मज्जाह बाद ही उस मोहल्ले की बेरुमावा ने अपनी समस्त सम्पत्ति लगा कर उस गढ़ी गली को एक सुंदर गढ़न में परिणत कर लिया और घोष ही वहाँ एक पार्क, एक मठ और एक महि-गार्थ भी निर्मित हो गया।

★ —धीमती बंभे (‘आत्मकथा’ में)

जो धरती

सो आसमान



भी 'वनकृत' की एक मन्योक्ति का सचित्र हिन्दी रूपांतर

★

मीलों तक अलसाया हुआ एक सूखा वह वहाँ पर क्यों और कब आया, कोई नहीं
खेत। उसके ठीक बीच निरोह प्रहरी जानता। उसके आसपास हर साल हरी
के समान, अपनी ही प्रभुता का भार उठाये हरी दूबें उगती। ककड का परम जिजासु

उस सम्पूर्ण निर्जनता
पर शासन करता
छड़ा हुआ था—एक
ताड़ का पेड़। कब
से? कितने मालूम।

उक्त ताड़ द्वारा
उस निर्जन शून्यता
को मानो एक
बध्यक्त महत्ता
मिलती थी और वह
शून्यता भी उस ताड़
के पेड़ को मानो
औचल में छुपाने,
क्षितिज धर सुदूर

फँसी उस धरती की रिक्तता भरती थी।
उसी पेड़ के नीचे, ठीक उसकी जड़ों
में ही, एक अविचल ककड भी रहता था।

राधन

ह्या गणेर्मायि पवन वितळल
शुभाशुभावा फिटे दिनारा,
भसतिल जणे तिये रहा तू
हा इयता मज घुरे दवारा।

—घरित्री की ॥ जन-नामा में स्वयं

आकाश भी आकर एककार हो गया।
शुभाशुभ की सारी विभेद-सीमाएँ घिट
गयीं। इसलिए हे स्वयंवासी, तुम गहरे हो,
वहाँ रहो— हमें तो इस पृथ्वी के छोटे-छोटे
निर्झर प्रिय हैं। भला तुम्हारी स्वयंवा
लेकर हम क्या करेंगे? —तो वा भड्डकर

भन उनसे भलीभाँति
परिचित था।
उसे याद था कि,
आपाड़ की बूढ़ी से
वह घास उगती
खिलती है और
वंशाव के आतप से
निष्प्राण हो जाती
है। पुनः-पुनः से
वह जन्म और मृत्यु,
उत्थान और पतन
के इस अविचल चक्र
की लीला देखना
चला आ रहा था।

सूखी जड़ों से हरी दूबें निकलती हैं, सूख
जाती हैं और फिर निकट आती हैं।

इस अनुभूति को लेकर उसका चितन

शील मन सदैव उलझा करता—छोटे-से मन में विराट् प्रदत्त आते और सारी लघुता को श्वशोर देते। ओर इस तरंगान्वित अवस्था में चेतना गूँथ बैठती—क्या इस अनन्त-अपार के पार भी कुछ है? जन्म-मरण के सिवाय और भी कोई प्रतीति है?

एक दिन बचपन ने ध्यान लगाकर ऊपर आसमान की ओर देखा और अपलक देखाता रहा— उस प्रलय-स्थिर राई ताड़ के पेड़ की। कितना महान् है यह—विराट्! अनादि काल से सपरवी की तरह अचल राहा यह अजेय उर्ध्वदृष्टा ध्यात अवश्य ही सर्वनाता है—नृष्टि के तारे रक्षकों का दृष्टा है।

श्रद्धा से उत्तना सिर झुका गया। मन-ही-मन मनस्वार करते हुए यह मचड निर्भीत भाव से बोला — “महानुभाव !” ताड़ ने कोई उत्तर नहीं दिया।

बचपन था तो छोटा, परन्तु अपनी पुन का एव ही था। अपनी शीघ्र आवाज आसिर उताने अखंड गौरवता के पार ताड़

के पान तक पहुँचा ही दी।

“क्या बात है? कौन हो तुम?” ताड़ ने विचलित स्वर में पूछा।

“देव ! साधारण बचपन हूँ मैं। आपने चरणों में लेटा एव जट रजकण ! हे महान्! अपने ज्ञानसिंधु की एव बूंद दया कर मुझे भी तो दीजिये !”

“कौंसा ज्ञान, बधु ?” ताड़ ने पार्श्व उद्दिग्ध होकर पूछा।

“सृष्टि का ज्ञान ! इसने जेष्ठ चक्रपार आपने जो देखा— जो विश्व-दर्शन किया— उसकी एव ज्ञाती मुझे भी दिखाइये !”

“क्या देखा मैंने ?”

“जो आज इस प्रचार स्थितप्रज्ञ-जे रखे होकर अतरिक्ष में क्या देखा करते हैं ?”

“यही गुरुज, बाँद और तारे ! वे उगते हैं, अस्त होते हैं !”

“फिर ?”

“फिर उगते हैं, फिर अस्त होते हैं ?”

“और यही धरती पर मैं भी देखता हूँ !”

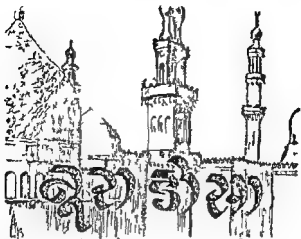
“अच्छा ? धरती पर भी ऐसा होता है ?”

★

बचपन में मेरे दिल में एव असे से एव रज छिपा रहता था और यह यह कि, मेरे कोई भाई या बहन नहीं है जब कि, और बच्चों के हैं। जब मुझे मालूम हुआ कि, मेरे भाई या बहन होनेवाली हैं, तो मेरी खुशी का पार न रहा। मुझे माद है कि, उस वकन बरामदे में बैठा-बैठा कितनी उत्सुकता से इस बात की राह देता रहा था। इतने में एक डाक्टर ने आकर मुझे बहन होने की खबर दी और कहा—सायद मजाब में—कि, तुमको पुत्र होना चाहिए, भाई नहीं हुआ, जो तुम्हारी जायदाद में हिस्सा बँटा लेता। यह बात मुझे बहुत चुभी और मुझे गुस्ता भी आ गया—इस सवाल पर कि, कोई मुझे ऐसा बमीना सवाल रखनेवाला समझे।

—जवाहरलाल नेहरू (‘मिरी कहानी’ में)

★



एसी सन शिरोमणि अबू सईद शिष्यों के आग्रह से एक दिन तीर्थयात्रा के लिए निकले। राह में राह निकले ही थे कि, एक बनिया मिला, जो गधे पर माल लाद बैचने जा रहा था। इजरत मान ने उसे रोका और उसकी परीक्षा करने लग। फिर आश्चर्य अचानक शिष्यों को प्रबोधन दते हुए बोले—'यह बनिया बुरा है। इसकी परीक्षा करो। इसने कभी कम नहीं तोला। किसी की बुरा माल न दिया। कान भर का मुनाफा कमाया। सभी को हराम समझा।' एतद राह में भी एक देख हो गया है, जिसे आबाल-बुढ़ 'नूरा डोसा' के नाम से जानते हैं। अगर सारे देश में ऐसे ही १०० 'नूरा डोसा' हो जायें तो रामरान्य बापस चला जाये। सुप्रसिद्ध समाजसेवी कुंवरजीभाई मेहता द्वारा लिखित इस पुण्यपुरुष की जीवनचर्या की एक कौड़ी यहाँ दक्षिण।

★

सुरत शहर और जिले
में शायद ही कोई ऐसा आबाल-बुढ़, नर नारी हो, जो 'नूरा डोसा' के नाम से परिचित न हो। प्रत्येक प्रकार के व्यापार में उन्होंने कीर्ति रत्न सफलता प्राप्त की है—एसी सफलता कि, आज के इस एजालिब युग में भी उनकी प्रामाणिकता, उनकी सत्य-



'नूरा डोसा'

[चित्र एक पुराने चोटो के आधार पर]

निष्ठा 'श्रद्धापात्र' समझी जाती है। लडाई के जमाने में जब चारों ओर नफाखोरी और बाले बाजार का बोल बाला था, 'नूर भाई' ने अपनी दुकान पर कम-से-कम मुनाफा पर लोगों को भरसक माल देने की कोशिश की। जिस किसी वस्तु की बमी वे बाजार में देखते और जिसका

दाम दूसरे व्यापारी अनाप-सनाप लेने लगते, उसी वस्तु को 'नूर' भाई-जहों-वही वह उपलब्ध होती, वही से बेगनो या गाँवियों से भेगा कर अधिक-से-अधिक परिमाण में-केवल एक या दो रुपया संकटा बमोजिम पर बेचते। सुदरा माल पर भी वे बहुत ही कम मुनाफा लेते रहे हं। जब कि, स्वयं सरकार ने दस-से-बीस प्रतिशत लाभ लेने की व्यापारियों को छूट दे रखी थी, सब भी 'नूर' भाई वही एक या दो प्रतिशत लाभ पर अपना व्यापार चलाते थे। उनका ध्येय, मुनाफासोरी से धन कमा कर सग्रह करना नहीं, बल्कि अपने स्वर्ध के लिए कम-से-कम लाभ पर माल बेच कर जनहित के रूप में 'अल्लाह की इनादन' करना है।

उनका वैयक्तिक जीवन भी वस्तुतः परम मर्यादा एवं आत्मनिग्रह का प्रतीक है। साल में दस कुर्ने और पाजामे उनके परिग्रह के लिए बस है। दूजान के ऊपर ही वे रहते हैं और खड़े-आठमंजते-ही, आज भी यत्र की भौति, स्वयं अपने हाथ से दूजान गोलने हैं। तब से रात के भी बने रह, जब स्वयं अपने हाथ से वे दूजान न बड़ा लें, अपने आसन से हटने तक नहीं।

दूजान की इबादतगाना और जिदगी की गत-जगमग पुजारी मानने या उनका नयनीत

सकल्य इतना दृढ़ है कि, भोजन के लिए भी वे ऊपर दस-पंद्रह मिनिट तक के लिए नहीं जाते। ऊपर से ही रस्सी लटवा कर दोपहर में उनका खाना गद्दी में भेज दिया जाता है और वही काम करते-करते ही वे उस महापुरुषानर की तुष्टि कर देते हैं, जो मनुष्य को हजार नरको और प्रपचों में नपाया करता है और जिसने 'पाकाल' के नाम से एक बिद्या ही पंदा कर दी है।



[ईश्वरजीमणि मेहता]

बारह से तेरह घंटे तक लगातार एक ही स्थान पर बैठ कर ईश्वरार्पण-बुद्धि से काम करना, गीता की भाषा में तो परम योग ही है, लेकिन इस योग की सबसे बड़ी एसी यह है कि, 'नूर' भाई की इस साधना का अहसास तक नहीं है। बार-दोहरा, यहाँ तक कि, लड़के-लड़कियों की शादी के दिन भी वे अपने काम पर परहाजिर नहीं रहते।

१२ वर्ष की आयु से वे बराबर काम कर रहे हैं और आज उनकी अवस्था ९४ वर्ष की है, लेकिन इस लम्बे अंतर में उन्होंने एक दिन की भी छुट्टी नहीं ली-शरीर और मन का यह तादात्म्य तो बड़े-बड़े अध्यात्म-गायकों में भी दुर्लभ होता है।

बारह वर्ष की अवस्था में उनको उनसे पिला ने एक-दो हजार रुपया लगा कर

कटलरी की एक छोटी-सी दूकान खुलवा दी थी। दूकान का भार उन पर सुपुर्द करते समय उनके पिता ने कहा था—“बेटा, अपने व्यापार में प्रामाणिकता से ही काम लेना। सजग रहना कि, हराब का एक भी पैसा कभी घर में न आने पाये।” यही उनकी सारी शिक्षा दीक्षा अथवा व्यापार-शास्त्र का गुरुमंत्र था। इसी नींव पर अपनी अचल निष्ठा एवं तपश्चर्या से उन्होंने शाह-सौदागरी की जो भव्य मजिल तय की, वह आज के भारत में तो शायद ही कहीं मिले।

पाठशाला में तो उन्होंने केवल सौतक की गिनती और थारहलड़ी लिखना भर ही सीखा था। लेकिन बेबल अपनी बुद्धि, लगन, परिश्रम एवं सद्गुणों के बल पर आज वे नमक-तेल से लेकर पेनिसिलिन तक की जितनी के व्यापार-सम्राट् बने हुए हैं। भौति-भौति की वस्तुओं के व्यापार में पड़ने का कारण भी उनकी वही सेवा-वृत्ति है। उनका एकमात्र उद्देश्य जनता को कम-से-कम मूल्य में सभी वस्तुएँ उपलब्ध कराने का है। सूरत में जब पक्का सेर हुआ, तब वहाँ के व्यापारियों ने रतल के तौल से ही सौदा बेचने का निश्चय किया, क्योंकि पक्के एक सेर में और दो रतल में जो वजन में अंतर रहता है, वह उनको बच जाता था। ‘नूरु ओसा’ को इसमें अनीति की गंध आयी और उन्होंने समस्त व्यापारी-

समाज के विरोध के बावजूद अपने यहाँ पक्के सेर से ही सब चीजें तौल कर बेचनी शुरू की। अतः पराजित होकर दूसरे व्यापारियों को भी अपनी यह अपवित्र हठ छोड़ देनी पड़ी।

नन्नु माई नूरुमहम्मद के यहाँ जात-यात या धर्म का कोई भेदभाव नहीं—मनुष्य मात्र का वहाँ एक स्पष्ट निश्चित भाव है—न घट न बढ। हिन्दू-मुस्लिम-पारसी, बच्चा-बूढ़ा—सभी को एक ही कौंटे में वहाँ तौला जाता है। ग्राहक को मारायण मानकर उसकी निष्ठाभंगी सेवा ही नन्नु भाई का ईमान है—धर्म है। प्रामाणिकता तथा ईमानदारी से अधिक वे और किसी धर्म को महत्व नहीं देते। सक्षेपतः परोक्ष धर्म को ही सर्वस्व मानकर वे ‘अपरोक्ष’ की सिद्धि में तल्लीन हैं। ‘नूरु ओसा’ की दूकान क्या है, वस्तुतः नीसिखिए व्यापारियों के लिए देश का सबसे विश्वसनीय कालेज है।

मेरा तो यह विश्वास है कि, वहाँ चार पाँच वर्ष काम करने के बाद कोई भी लगन वाला व्यक्ति निश्चित रूप से सफल व्यापारी बन सकता है। दुष्टांत के द्वारा स्पष्ट करते हुए वह दूँ कि, यह दूकान ऐसी अलख ज्योति है, जिससे सैकड़ों प्रेरणा-दीप प्रदीप्त किये जा सकते हैं—ऐसे दीप, जो स्वयं तो कीर्ति-दीप्त होंगे ही, साथ ही उनसे इस देश की भूमि भी ज्योतिर्मयी हो जायेगी।

★

अधा वह नहीं, जिसकी आँख फूट गयी है। अधा वह है, जो अपन दोष को ढँकने का प्रयास करता है। ★

—महात्मा गांधी



आज के इंसान की सर्वोच्च शक्तियाँ

अर्नाल्ड टॉम्बो के एक लेख का संक्षिप्त हिन्दी रूपान्तर

★

पिछले महायुद्ध में सर्बिल-स्त्रोवेल्ट-
स्तालिन व बीच इस प्रश्न को लेकर
काफी वादविवाद हुआ कि, पास का तीन
घण्टे की श्रेणी में माना जाये या नहीं ?
स्तालिन ने बहुत दिनों तक इस प्रश्न पर
विचार करने से ही इन्कार पर दिया ।
उसके मत से किसी भी राष्ट्र का महत्व
उसकी सैनिक शक्ति पर निर्भर है ।

राजपुरुषों के वर्गीकरण में टेलीरेड
बड़ा सिद्धहस्त था । किसी राजनीतिज्ञ
को भोज में जब वह पढ़ता-“हनुम, यह
गोस्त इतना अच्छा तो नहीं है, लेकिन
आप थोड़ा-सा और छीजिये”—तो इसका

अर्थ स्पष्ट था कि, वह उसे सर्वोपरि सम्मान
दे रहा है । जिसे यह पूछता-“थोड़ा-सा
गास्त और लेंगे ?” तो वह मध्यम दर्जे का
सम्मान जाता और जिसे यह केवल इतना
ही पूछता-“गास्त ?” तो उसका दर्जा
सबसे निम्न माना जाता । लेकिन टेलीरेड
की देखा-देखी दूसरा कोई मैजमान इस
प्रकार का व्यवहार अपने सम्मान्य अति-
थियों से करे, तो मुश्किल में पड़ जायेगा ।

संसार के विभिन्न राष्ट्रों का वर्गीकरण,
वास्तव में, इतना आसान नहीं । क्षेत्रफल
के हिसाबसे देखा जाये, तो इस ही सर्वो-
परि है, क्योंकि उससे राज्य का विस्तार

क्षेत्रफल (वर्ग मील में)		
१. रूस	४,५१६
२. चीन तथा तुर्कस्तान संघ	४,८११
३. अफगानिस्तान	१,८२६
४. ईरान	३,८११
५. संयुक्त राज्य अमेरिका और कनाडा	३,६१४
६. ब्रिटेन	३,१८६
७. फ्रांस	४,१०१
८. जर्मनी तथा डचिन्दिया	४,१०६
९. भारत	३,१११
१०. अस्ट्रेलिया	३,००६

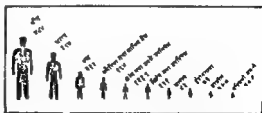
८२,४२,००० वर्ग मील है। दूसरे स्थान के लिए तीन राष्ट्र एव-दूसरे के प्रतियोगी होंगे-चीन, बर्माडा और फ्रांस। पेकिंग अपने चीनी राज्य का क्षेत्रफल ४० लाख वर्ग मील के ऊपर बतायेगा, लेकिन उसने प्रतिद्वंद्वी इसे कभी मानने को राजी नहीं होगा; क्योंकि इसमें फार्मोसा का राज्य भी अंतर्गत है। फार्मोसा को यदि निवाल दिया जाये, तो चीन से बर्माडा बाजो मार लेगा। बर्माडा का क्षेत्र-विस्तार ३७,००,००० वर्ग मील है। फ्रांस यदि अपने उपनिवेशों की गणना न करे, तो उसका अपना क्षेत्रफल इतना छोटा है कि, उसे सत्तार के राष्ट्रों में सत्ताइसवों स्थान मिलेगा-बाइल, बर्मा और अफगानिस्तान से भी पीछे। लेकिन यदि 'फ्रेंच यूनियन' का क्षेत्रफल भी उसके साथ जोड़ दिया जाये, तो उसका दर्जा दूसरा होगा। तब उसके राज्य का विस्तार ७० लाख वर्ग मील होगा।

इस हिसाब से समुद्र राज्य अमेरिका का (जिसमें प्युटो रियो, अलास्का और प्रशांत-द्वीप-समूह भी सम्मिलित हैं) पाँचवा स्थान होगा-प्राचीन से कुछ ही आगे! ग्रेट ब्रिटेन अपने उपनिवेश एव अपनी राज्यों के सहित आस्ट्रेलिया के पीछे, लेकिन भारत, अर्जेंटीना और सौदी अरबिया के जरा-ही आगे, सातवें नम्बर

में आयेगा। जांगो के कारण बेलजियम का स्थान म्मारुह्वो होगा। सबसे अंत में होंगे, सेबनान (३,५०० वर्ग मील), कुवंत (२,००० वर्ग मील) और बहरिन (२०० वर्ग मील)।

लेकिन बहुत-से लोगो को यह वर्गीकरण उचित नहीं लगेगा। उदाहरण के लिए ८३० लाख की आबादी का जापान २० लाख की आबादी वाले सौदी अरबिया के पीछे कैसे गिना जा सकता है? तो क्या राष्ट्रों के महत्व या मापदंड क्षेत्रफल न होकर जनसंख्या होना चाहिए?

जनसंख्या की दृष्टि से तो विश्व का अग्रगण्य राज्य चीन होगा, जिसकी आबादी इतनी अधिक है कि, अभी तब दीप से गिनी भी नहीं गयी-तापद ५० करोड़ से भी अधिक। दूसरा स्थान भारत का होगा, जहाँ ३५७० लाख आदमी बसते हैं। तीसरा स्थान सावियत रूस का होगा, जहाँ की जनसंख्या २१३० लाख है। समुद्र राज्य अमेरिका, जिसकी आबादी हवाई द्वीप और अलास्का को मिलाकर १६४०



[जनसंख्या के अनुसार राष्ट्रों का स्थान-क्रम (ऊपर के आंकड़े दस लाख के हैं।)]

लास है, उसने वाद आयेगा। अपने उप-निवेशों के कारण फ्रांस ब्रिटेन से आगे रहेगा। ब्रिटेन को पौचवा स्मान, जापान को सातवां और उनसे बाद इटली, जाजील और पश्चिम जर्मनी को गणना होगी।

लेकिन क्या यह पर्यावरण ठीक होगा? बनावा कभी भी अपने को मिला तथा फिलीपीन्स के पीछे मानने को तैयार नहीं होगा और न आस्ट्रेलिया ही अपने को यूनाइटेड किंगडम के बराबर मानने को तैयार करेगा।

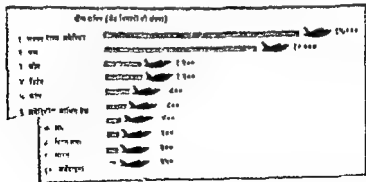
अतः स्पष्ट है कि, किसी एक दंड से राष्ट्रों का महत्व मापा नहीं जा सकता। क्षेत्रफल और जनसंख्या के अलावा भी अन्य कई ऐसी महत्वपूर्ण बातें हैं, जिन्हें दृष्टि में रखना अत्यंत आवश्यक है। और, ये हैं किसी देश का औद्योगिक विकास, वैज्ञानिक शोषों की गरम्परा, सैन्य बल और उसकी आर्थिक समृद्धि।

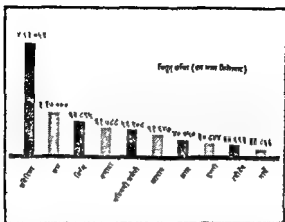
पिछले महायुद्ध के प्रारम्भ में ब्रिटेन के 'इकनामिस्ट' पत्र ने एक महान् शक्ति-शाली राष्ट्र की श्रृंखला इस प्रकार की

थी—“वह राष्ट्र जो अपने मित्रराष्ट्रों के बिना, अकेले ही, एक बड़ा युद्ध प्रारम्भ कर सके।” उस समय इस कोटि के केवल चार राष्ट्र थे—संयुक्त राज्य अमेरिका, रूस, जर्मनी और जापान। स्वयं ब्रिटेन के पाछे भी इतनी शक्ति नहीं थी और आज तो केवल दो राष्ट्र ही यह सामर्थ्य रखते हैं—अमेरिका और रूस। उन्हीं दोनों को हमने सत्तार के सर्वशक्तिशाली राष्ट्र माने हैं। प्रथम स्थान हमने अमेरिका को इसलिए दिया है कि, उसने पास इस समय सर्वाधिक अणुशक्ति है।

ग्रैंट ब्रिटेन को सत्तार की शक्तियों में तीसरा दर्जा आसानी से मिल जाता है। इसका कारण उसका औद्योगिक विकास, विशेषकर उसके हवाई शस्त्रों की विशेषता, उसके समुद्र-पार के उपनिवेश और पामन-वेत्य के देशों के साथ सुदृढ़ गठबंधन है।

चौथे स्थान के लिए चीन और फ्रांस में भयंकर प्रतिस्पर्धा होगी। दस फ्रांस-मुरस्तान-मरिपद का स्वाधीन मन्वर होने और





इस कारण उसे 'यूनों' में 'बीटो' का अधिकार प्राप्त होने की वजह से—बड़ा राष्ट्र स्वतः ही सिद्ध हो जाता है। लेकिन इसके विपक्ष में साम्यवादी चीन भी यह कह सकता है कि, राष्ट्रवादी चीन (चांगकाई-शेक की सरकार) को भी तो 'बीटो' का अधिकार है और वेबल इसी अधिकार के बूते पर कोई उसे महान् राष्ट्र मानने की

तैयार नहीं होगा। इसके उपरांत साम्यवादी चीन यह भी कह सकता है कि, उसके राज्य का विस्तार और सैनिकों की संख्या इतनी अधिक है, जिससे उसे एक बड़ा राष्ट्र माना ही जाना चाहिए। स्वयं पश्चिमी राष्ट्रों ने उसके सैन्य बल का अनुमान ३० लाख सिपाही लगाया है। उसे दूसरों पर आश्रित राष्ट्रों की भौति न मान कर,



[राज के जगत की अपेक्षाकृत महती शक्तियों का स्थान-क्रम]

सौंदर्य निखरता ही गया—
ज्यों ज्यों रेक्सोना का
उपयोग किया...



...क्यों कि कैंडिल
मिले रेक्सोना से सोई
हुई सुंदरता जाग
उठती है !

कैंडिल मिले रेक्सोना से सुगर
बनना सचमुच आमत है—इस
के दैनिक उपयोग से आप देखेंगी
कि आप की त्विद दिन ब दिन
क्यादा नाक और मुलायम बन रही
है और आप का रूप फूल की
भांति छिल रहा है !

बड़े आकार में भी
मिलता है



रेक्सोना

कैंडिल युक्त एक मात्र साबुन

* कैंडिल त्विद को मुलायम बनानेवाले और त्वज-भोषक
तेलों के एक विशेष मिश्रण का मालबिन्दनी नाम है।

रेक्सोना प्रोप्रायटी लि० के लिए भारत में बनाया गया।

R.P. 130-50 H.C.



सेवका निम्निएवर "सी २"
रोहयोतः रटोल बंध १४६)

The **WEST END WATCH Co.**
BOMBAY CALCUTTA



माताभूमिः

अमृत-हृदया—

युग युग से भारत की राष्ट्र-आत्मा निष्ठित विश्वात्मा के नाव सम बय माफ़ी आ रही है। अथर्ववेद का 'एक सद्रिप्रा बहुधा वृत्ति मय तो वस्तुतः भारतीय संस्कृति की भाग्य-तिथि है। भारत में, लोभ-लिप्सा से प्रेरित होकर भारत के शक्ति-पोत कभी समुद्र-धर नहीं गये और न आसुरी विजय के लिए ही हमने किसी भूमि-स्पर्ध पर पैर रखा। इसी रत्ने-ह-ओतस्विनी माताभूमि का एक स्तम्भ-गान श्री आमुद्र-वसरणजी अग्रवाल ने नीचे की शक्तियों में रिया है।

*

अथर्ववेद के 'पृथ्वी-सूक्त' में एक सुन्दर

कल्पना मिलती है जिसके अनुसार यह पृथ्वी पूर्व-युग में समुद्र-तल के नीचे छिपी हुई थी। ध्यात के धनी पुरो-न

अपन चिंतन की शक्ति से इसे दौड़ निकाला। हमसे प्रत्येक के लिए आवश्यक है कि मातृभूमि की प्राप्ति वह मन के द्वारा करे—अपन हृदय को उसके साथ मिलाय। भूमि माता है मैं उसका पुत्र हूँ—'माताभूमि पुत्री अह पृथिव्या।

यह सम्बन्ध केवल भौतिक नहीं है, इसका पूरा रस तो मन के अनुभव में है। हमारा मन मातृभूमि के मन का एक अंग है। पृथ्वी या मातृभूमि का हृदय 'पृथ्वी-सूक्त' के अनुसार अमृत से पूर्ण रूपेण ढका हुआ है—

'हृदयनावृतममृत पृथिव्या ।'

इसी अमृत-मन में हमें अपना भागधेय

प्राप्त करना है। अमृत-मन राष्ट्र की संस्कृति का ही दूसरा नाम है। मन के चारों ओर भरा हुआ जो अमृत-समुद्र है उसी में

सत्य यज्ञ त्याग, तप, अहिंसा, सबभूतों का हित, न्याय धर्म, ज्ञान आदि सुन्दर दिव्य भावों के कमल तैर रहे हैं। उनकी गंध को हमारे पूर्व-पुरो-न सुँघा था और उसी को मातृभूमि के हृदय तक पहुँचाने के लिए हम प्राप्त करना है। मातृभूमि का भौतिक रूप हम सबके चारों ओर बसा हुआ है। हम कहीं भी हो, उस रूप से पहचान जाते हैं उसका परित्याग नहीं कर सकते। किन्तु भौतिक रूप से अनतपुण प्रभावशाली मातृभूमि के हृदय का अमृत है, जो उन गुणा और विशपताया से मिल सकता है,



[वीथुप-पान]

रूप से अनतपुण प्रभावशाली मातृभूमि के हृदय का अमृत है, जो उन गुणा और विशपताया से मिल सकता है,

जिनकी उपासना राष्ट्रीय संस्कृति का प्रधान अंग रहा है।

भीष्म-युद्ध में जिस भारतवर्ष की कलना की गयी है, वह भारत इन्द्र, मनु, इक्ष्वाकु, ययाति, अम्बरीष, मान्धाता, शिशु, दिलीप आदि अनेक राजपिषा को प्रिय था। य राजपि जिस उदार मन से इस भूमि को देखते थे, उसका आधार साथ और शान के अमर आदर्श थे—जिनका हम पुण्य-भूमि में पुरातन काल से आविर्भाव हुआ और जिनके लिए राष्ट्र के उच्चतम स्त्री-गुणों में अपन जीवन में प्रयोग किये। आर्यिक काम या देश विजय के कारण यह पृथ्वी राजपिषों की प्रिय नहीं बनी।

पूर्व-युगों की यह उदार परम्परा जनक, याज्ञवल्क्य, कृष्ण, बुद्ध, रावण, गांधी के द्वारा आगे बढ़ती रही है। उनके मनों को वही अनृत गीकता था, जो मानु-भूमि के हृदय में भरा हुआ है। आज भी हमारी राष्ट्रीय आस्था उन दिव्य मत्स्यों से निःस्वभाव विचलित नहीं हुई है। दिगीय के गो-चारण की तरह अपने शरीर के मांस-पिंड को डाल कर राष्ट्रनायकों ने हिंस्र प्रवृत्तियों का गला गिरा है। इस जीवन-साथ की व्याख्या मानुभूमि के अमृत-हृदय

में लिखी है। हिंसा के उन्मत्त तादृश में जो धीर बना रहा, मनुष्यों के हृदय में लगी हुई प्रतिहिंसा की अग्नि का वृष्ण के दावानल-पान की तरह जिसने आचमन कर लिया, राष्ट्रीय मयन से उत्पन्न हुए विष का शिव के सदृश्य जगने पान कर लिया, वह राष्ट्रनामक मानुभूमि के अमृत-हृदय की माध्यात्म व्याख्या हमारे सामने रख रहा था। वह मन्मथ तपामत था। पूर्व-कालीन में जंग मनीषी आये, यैसा ही वह था—उमरा मन तथा-भाव में अद्विग रहा। स्वयं अविचल रहकर उग देव-मल मानव ने मानुभूमि के हृदय को हृदय और धर्मा ने बना लिया।

यही मानुभूमि की ध्वनिध्वनि है। वैदिक सभों में दगी को पृथ्वी के हृदय का युद्धन कहा गया है, जो युग-युग में होनेवाले प्रचलन ने मानुभूमि की रक्षा करता है। भारतीय इतिहास हम शत्रु की भूचाली घटनाओं का गाना रहता आया है; किन्तु राष्ट्र का सांस्कृतिक हृदय हम प्रकार के उप-युद्ध के बीच में पड़ कर भी अपने स्वाभ्य को बचाये रखता, यही हम देश का अमृत-जीवन-प्रवाह है।

★

समा

आ मनुष्य करनेवाले,
हम मूर्खता को क्षमा कर माने हैं
पर शत्रुता को नहीं।

—विन्ध्यम वान मूढी

★



प्रार्थनाओं की प्रार्थना

शान भद्रकार का प्रतीक बन जाते हैं, धर्म स्वर्ग के योग में बदल जाते हैं और भक्ति मठ भयका सम्प्रदाय का रूप ले लेती है—भ्रातृसाहायकार के चरित्र में ये तीनों भसफा हो सकते हैं। किन्तु प्राश्चित एवं दयात्मा के साथ यह बात नहीं। भद्रकार और कामना का पूरा दमन होता है—अपनी लज्जा को व्यक्ति यहाँ जैसी रक्षादारी से समझ लेता है, ऐसे अन्त्य नहीं। कदा साहेब के इस पुण्य प्रसंग का यही निषेध है।

✱

मुझे राधीजी का पहले-पहल दर्शन सत्संग नहीं हुआ था। हुआ, शांतिनिकेतन में। मैं कविवर्य मुझमें एक तरफ तो स्वराज्य का दृढ़ रवीन्द्रनाथ ठाकुर को एक देशभक्त कवि बनता था। उसके लिए जो जरूरी राज-और हिन्दुस्तान की सत्कृति का उत्तम नीति थी, तो मैं समझता था। करने को नमूना मानता था। इसलिए कुछ दिन उनके पास रहने से उनसे कुछ जरूर ही मिल जायेगा—ऐसा सोच कर मैं शांतिनिकेतन गया हुआ था।

उसके पहले मैं साधु-जैसे कपड़े पहन कर साधु की ही तरह हिमालय में घूमा था। पंदल करीब ढाई हजार मील की यात्रा की थी। कई साधुओं-योगियों के सम्पर्क

में आया था। उनसे अनेक वार्त्ताएँ भी की थी। उनकी बातें सुनी थी—उनके पास जो अच्छा मालूम हुआ, सो ले लिया था। मगर कहीं पर भी इन सबमें



[काका साहेब]

भी संपार था। दूसरी तरफ मुझमें आध्यात्मिकता की भूख थी। भक्ति की तरफ आकर्षण था। इन दो बातों का समन्वय नहीं हो पाता था। रास्ता बतानेवाला भी न था, इससे मैं और परेशान रहा करता था।

शांतिनिकेतन में महा-त्माजी के आश्रम के कई लोग पहले आकर रहे थे।

उनसे मेरा निवृत्त का परिचय हो चुका था। बाद में महात्माजी आये। उन दिनों उन्हें लोग 'महात्माजी' नहीं, 'कमंडीर' कहते थे। वे आठ दिन बहो रहे। उनके पास समय भी

या। मैंने उसका कामदा उठाया और आठ दिनों तक उनके पास बैठकर तरह-तरह के प्रश्न पूछे। आध्यात्मिक, राजनीतिक, आराम्य के बारे में—मसार के हर-एक सवाल पूछे, चर्चा की। आसिर, बिस्वास हुआ कि, यही एक ऐसा आदमी है, जिसने सारे जीवन का सम्पूर्ण विकास लिया है और उसका भयवद्भक्ति में परिणत कर दिया है।

उन्होंने मेरी उत्पन्न भी दूर की। उन्होंने कहा— "राजनीति में भी आध्यात्मिकता प्रबल हो सकती है। इतना ही नहीं, बल्कि उसको वहाँ प्रबल करना भी जरूरी है।" उन्होंने यह भी बताया कि, मैं मोक्ष प्राप्त करने के लिए राजनीतिक काम करता हूँ।

"हर-एक युग में अथर्व अपना अर्द्धा जमाने के लिए कोई काम जगत् चुन लेता है और उसमें पूरी गौर से व्याप्त हो जाता है।" उन्होंने सहज भाव में कहा— "आज के जमाने में वह राजनीति का क्षेत्र में पड़ गया है। उसे वहाँ में हटाकर मुझे वहाँ धर्म को प्रस्थापित करना है। अगर मैं यह काम न करूँ, तो मुझे मोक्ष मिलनेवाला नहीं है। यह ईश्वर का दिया हुआ काम है।"

इस प्रकार, सारे काम ईश्वर के ही काम समझकर वे करते थे। उनकी शारीरिक श्रद्धा भगवान पर ही थी। उनकी तीव्र



राष्ट्रगुरु

[चित्र : 'शरम' शीतली' से तैयार]

ईश्वर निष्ठ का एक प्रसंग याद आता है। हम दक्षिण-भारत में गादी-यात्रा के सिलसिले में घूम रहे थे। चिवाकोल बड़ा अच्छा सादी-नंद है। वहाँ शाम को सात बजे हम लोग पहुँचनेवाले थे। पर पहुँचे दस बजे रात को। गांधीजी को चरणों की प्रदर्शनी बताने के लिए बेचारी महिलाएँ तीन घंटों तक बंटी रही। इसलिए उन

गोंध में पहुँचते ही गांधीजी सीधे उस प्रदर्शनी में स्थान पर जा पहुँचे। महादेवनाई और हम निवासस्थान पर गये। खूद पब गये थे। फौरन सो गये। सुबह चार बजे जब हम प्रार्थना के लिए झुकते हुए, तो बापूजी ने पूछा—

"महादेव! बाले प्रार्थनानु गू यमु? (महादेव, बल प्रार्थना का क्या हुआ?)" मेरा दिल एवम् बँठ गया। मैंने कहा— "मैं तो जैने ही आया, सो गया। प्रार्थना करना भूल ही गया।"

महादेव-नाई ने कहा— "मैं भी भूल गया था। लेकिन एक नौद पूरी करने के बाद जगा, तर बँठ गया और रिछौने पर मन-ही-मन प्रार्थना कर ही और फिर गो गया। जाना को नहीं जगाया।"

बापूजी ने कहा— "रात को मैं भी प्रार्थना करना भूल गया था। यका-मोका था, इसलिए मैं सो सो गया। जब तीन बजे जगा, तो याद आया और तब मैं त्रिम कोष रहा हूँ। मैं बहुत ही अस्थाय हूँ।

नवनीत

सोचता हूँ कि, यह कैसे हो पाया ? भगवान को मैं कैसे भूला ? अमर बीद के लिए मैं ईश्वर को भूल सकता हूँ, जो मेरी हर साँस का मालिक है, जिसके आधार पर ही मेरा सब कुछ चल रहा है, तो मैं काम क्या करूँगा ? किस शक्ति के सहारे करूँगा ? मैं उसकी प्रार्थना करना कैसे भूल गया ?”

हमने प्रार्थना कर ली और अपने-अपने काम में लग गये । कुरसत तो महात्माजी को शायद ही मिलती थी । भोजन पर बैठे, सब मैंने पूछा—“बापूजी ! एक बात कहूँ ?”

उन्होंने हँसकर कहा—“कहो ।”

मैंने बताया—“एक मुस्लिम सत थे । बड़े ईश्वर-भक्त थे । पाँच दफे नमाज पढ़ने का उनका नियम था । एक रोज वे थके-भादे थे, सो गये । जब नमाज का वक्त आया, तो किसी ने आकर उन्हें जगाया—‘उठो-उठो, नमाज का वक्त हो गया है ।’ वे तत्काल ही उठ बैठे और बड़े वृत्तम हुए । कहने लगे—‘भाई, तुमने तो मेरा बहुत बड़ा काम किया है । मेरी इबादत रह जाती, तो क्या होता ?

अच्छा, अपना नाम तो बताओ ?”

“उसने कहा—‘मेरा नाम इब्नीस है ।’

“मत को अचरज हुआ । वोख उठे—‘इब्नीस ? अरे, तुम्हारा काम तो लोगो को इबादत करने से रोचना है—घरम करने से रोचना है । और, तुम मुझे इबादत करने के लिए कैसे जगाने आये ?”

‘सैतान बोला—‘भैया, इसमें भी मेरा फायदा ही है । एक बार पहले तुम ऐसे ही सो गये थे । नमाज का वक्त बीत चुका था । मैं बहुत खुश हुआ । लेकिन जब तुम जगे, तो इतने पछताये, इतना रोये, इतना दुखी हुए कि, अल्लाह ने ज्यादा प्यारे हो गये । और, इबादत न करने का तुम्हारा पाप तो पछतावे में साफ बूझ गया । इसलिए मैंने सोचा कि, कहीं फिर से ऐसा न हो और तुम अल्लाह के और ज्यादा प्यारे न हो जाओ । बेहतर तो यही है कि, तुम्हें नमाज के वक्त जगा दूँ ।”

बापू न मेरी यह बात मुस्कराकर सुन ली । मुझे भी बड़ी खुशी हुई थी ।

सन् १९१४ से लेकर आखिर तक मैंने उनका जीवन देखा है । उनका ईश्वर-ध्यान और चिंतन देखा है । कभी भी—एक क्षण के लिए भी—उसमें सड नहीं पड़ा है ।

मैंने उनमें नस्न-सिखात भगवद्भक्ति देखी है । मूर्तिमत भक्ति उनमें पायी है । फिर भी, उन्होंने कभी प्रार्थना को ज्यादा समय नहीं दिया है । निश्चित समय पर सबके साथ प्रार्थना करने के लिए बैठते थे और उसमें तल्लीन हो जाते थे । प्रार्थना पूरी हुई कि, लब गये वाम म । वह वाम भगवान का ही वाम है, काम से समय चुराकर नाम में समाज, तो भगवान नाराज होंगे—ऐसा मानकर सारे कामों को भगवान का ही समझकर वे करते थे ।

★

कायर अथवा अकर्मण्य की आँखों को प्रत्येक वस्तु विरोधात्मक लगती है । —बीट-वो

★



२०० वर्षों के लक्ष में हमारी दुनिया

"२०० बीता और अब २१ आयेगा और मृत्यु का आह्वान इस प्रकार नजदीक हो आता जा रहा है। लगता है, यह मंच अब मुकमे छूट जायेगा। हो सकता है, २०० वर्ष की उम्र पूरी कर लें। अगर इसीसबी सदी का अस्तोदय तो मैं देख न सकूंगा। और, जब यह भुव सत्य है, तो कल्पना की नजर से हो उस दुनिया को देख क्यों न लें। यह लेखमाला इसी श्रृंखला की पूर्ति है।" हमारे बाऊक यहाँ बर्टेड रसेल की इसी लेखमाला की नीचे संक्षिप्त रूप में बढ़ेंगे। पारस के चित्र में युद्ध और विवेक का प्रसंग है—आज वो युद्ध का दानव मनुष्य के विवेक को बराभूत हो मरने पर तृप्त गया है।

पिछले दो महायुद्धों के कारण हमारे इस विश्व में जो-जो तन्दीलियाँ आयी हैं—मानव-समाज के खान-पान, रहन-सहन आदि में जो-जो परिवर्तन हुए हैं, उन्हें 'विक्टोरियन' काल का कोई भी व्यक्ति घुणास्पद दृष्टि से देख सकता है। इसी प्रकार, अगर मानवता के दुर्भाग्य से युद्ध की इस प्रवृत्ति का आत्मा न हुआ, तो निश्चित मानिये—आगामी युग में भी ऐसे परिवर्तन हो जाएंगे, जो इस युग के लोगों के लिए घुणास्पद होंगे। और, वह काल बहुत दूर हो, ऐसी बात नहीं। मुझे तो अभी भी यह स्पष्ट नजर आ रहा है कि, सन् २००० में ही इस विश्व को कई ऐसे परिवर्तनों को अपनाया पड़ेगा।

विज्ञान ने आज हाइड्रोजन-बम का निर्माण कर सारे सत्तार को चकित कर दिया है; किन्तु हाइड्रोजन-बम से भी अधिक आश्चर्यजनक आविष्कार हो सकते हैं। अभी तक मनुष्य के आपसी व्यवहार और सत्तानोत्पत्ति के विषय में तो वैज्ञानिक अनुमानान् अथवा प्रयोग हुए ही नहीं।

घेद, कुत्ते या गाय की नस्ले निर्धारित करने के प्रयोग ही आज तक हुए हैं; लेकिन यही प्रयोग आगे चलकर मनुष्य की सत्तानोत्पत्ति में भी किये जा सकेंगे। तब विशेष गुण के विशेष व्यक्ति पैदा करना सहज हो सकेगा। उदाहरण के तौर पर, पीढ़ या भरमी के प्रभाव ने सर्वथा मुक्त, असामान्य दंहिब बल या मानसिक शक्ति-

सम्पन्न व्यक्ति पैदा कर, उस युग का कोई भी तानाशाही राष्ट्र अन्य राष्ट्रों पर विजय प्राप्त करने का प्रयत्न कर सकता है। स्वभावतः ही अन्य राष्ट्र भी इसी नीति का अनुसरण करेंगे और तब प्राकृतिक ढंग से सतानोत्पत्ति का समर्थन व्यक्ति निश्चय ही मूर्ख, भावुक या देशद्रोही समझा जायेगा। अधिकांश लोगों को इच्छा या अनिच्छा से आँख मूँद कर अपना राष्ट्र की नीति का पालन करना होगा। उस युग में इने-मिने व्यक्तियों को मुट्ठी में ही राष्ट्र का सम्पूर्ण उत्तरदायित्व होगा। निश्चय ही, ये व्यक्ति सर्वाधिक योग्य और बुद्धिमान होंगे।

स्वास्थ्य और शक्ति तो उस युग में सभी के लिए समान रूप से आवश्यक समझी जायेगी, किन्तु सबसे मज की बात तो यह होगी कि, जिस कार्य के लिए जितने व्यक्तियों की आवश्यकता होगी, उतने ही व्यक्ति एवं राष्ट्र में पैदा किये जायेंगे। उदाहरणार्थ, कृत्रिम उपायों द्वारा पाँच प्रतिशत लोगों



[विज्ञान के दानव ने मनुष्य जीवन के सभी क्षेत्रों पर अपना काबू जो आज स्थापित करना शुरू किया है, वह २००० वर्ष में तो परम नियामक हो जायेगा।]

से ही सतानोत्पत्ति का सारा काम लिया जा सकता है। अतः शायद सभी व्यक्ति इस कार्य के लिए अनुपयुक्त बना दिये जायेंगे। हाँ, स्त्रियों की सख्या इस कार्य के लिए अवश्य ही अधिक रखनी होगी। फिर भी, यह सख्या तीस प्रतिशत से अधिक नहीं हो सकती। बच्चों को अपने माँ-बाप के घर में रखने की विवादास्पद स्थिति को न उत्पन्न होने देने के लिए, उन्हें सस्याभों में रखा जायेगा। परिवार-जैसी कोई चीज तब नहीं रहेगी। प्रत्येक व्यक्ति सम्पूर्ण राष्ट्र को ही अपना सब-कुछ समझाएगा और उसका हर कार्य, हर कदम

राष्ट्र की भलाई के लिए ही उठेगा। उसने स्वयं के अस्तित्व नाम की कोई भी चीज उस युग में नहीं होगी।

यह स्थिति आनन्दप्रद तो कही नहीं जा सकती, अतः मेरी कामना है कि, मेरा अनुमान-मात्र गलत ही प्रमाणित हो। और, ऐसा हो भी सकता है, यदि मानव-समाज मुझ की आशंका से मुक्त हो जाय। तब इस

स्थिति के आने की कोई सम्भावना नहीं रह जायेगी अथवा यद्ध के कारण मानव-समाज का विनाश ही हो जाय तब तो कोई बान ही नहीं। एवं नीसरा मार्ग और है। यद्ध के बाद जो इन-गिन लाख पृथ्वी पर बच रहें व अमर मय्य का आधुनिक सम्यता और विज्ञान के चरदाना से बचा सके तो इसकी नीयत नहीं जायेगी। पता नहीं, मानव-समाज इसमें गे कौन-सा मार्ग पसंद करता है ?

मेरे अनुमान का यह भाग ना निश्चिन्ता ही है कि, सन् २००० में राष्ट्र में उन गिन-धुने व्यक्तियों का महत्व बहुत बढ़ जायेगा, जिनके हाथ में सामग्री की बागडार होगी। आज भी व्यक्ति-म्यनप्रता के समर्थक अमेरिका-जैसे देश में भागवा के होंट-दिन-गर-दिन अधिवाधिय मत्ता आती ही जो-रही है।

अठारहवीं सदी में देश के काम केवल जन एवं धन की रक्षा और युद्ध-नीति निर्धारित करता था। फर्म्यरूप शिक्षा, स्वास्थ्य व सफाई आदि की आर पर्याप्त ध्यान नहीं दिया जाता था। उन्नीसवीं सदी के प्रारम्भ में गणराज्य बच्चा के लिए अनायास्य खाल गये, किन्तु उनकी उचित देख-भाल की तरफ फिर भी ध्यान नहीं दिया गया। बच्चों का वहाँ नहीं गहनत के लिए मजदूर किया जाता था। 'आल्बिनर डिविन्ट' नामक उपन्यास की कथा इसी पर आधारित है।

सामान्य में, जिनके भी गुण आज तब नवनीत

हुए हैं, मुख्य उनमें दो ही कारण रहे हैं—एक तो युद्ध के कारण उपस्थित हुई नयी-नयी आवश्यकताओं और दूसरा, मनष्यता की भावना। इनमें पहला कारण ही अधिक प्रमुख है किन्तु मनुष्यता की भावना का भी नगण्य नहीं समझा जा सकता। उन्नीसवीं फर्म्यरूप 'फंक्टरी-एक्ट' और फलिन्क-इन्ड्रिय-यानून पास किये गये और १८७० के बाद तो 'मिडो-यानून' पास होने में बच्चों में अनुचित काम रखा बन्द ही हो गया।

किन्तु राज्य के हाथ में अधिक सत्ता, विनपकर युद्ध की आवश्यकताओं के कारण ही आयी। प्रनिया के सर्व-मक्ति-शाली राज्य और उनकी निरंतर विजय केवल दूर राष्ट्रों में भी इसी नीति का अनुसरण करना शुरू किया। कुछ व्यक्ति-विशेष के हाथों में सारी सत्ता मौज देने की इस नीति का आज भी अन्त नहीं दिखायी पड़ता। विज्ञान-वेत्ताओं पर भी आज राष्ट्र का नियंत्रण-मा है। वे जो कुछ करते हैं, राष्ट्र के लिए-या जो वह किया जाये कि वे राष्ट्र के लिए ही मय-कुछ करते हैं। मानव माप के लिए कुछ करने की उन्हें छूट नहीं। प्रत्येक आविष्कार आज गुप्त रखा जाता है और ओषधि शक्ति या दूसरे महत्वाकी विषयों पर अनुमान करनेवाले वैज्ञानिकों पर पड़े पहर ही व्याख्या रहती है। यूरोप के वैज्ञानिकों का अमेरिका जाने की अनुमति नहीं मिलती—इसलिए कि, वे वहाँ जाकर

अणुचक्ति या हाइड्राजन-बम के बारे में कुछ मौखिक कर नहीं उसका रहस्य हम का न देखे।

मानव का मानव के प्रति अविश्वास की यह बंसी दयनीय स्थिति है। विन्तु आगामी युग में तो और भी दयनीय स्थिति हो जायेगी। आज तो केवल इन आविष्कारों पर ही नियंत्रण है, उस युग में विज्ञान पूर्णरूपेण कड़े पहरे में कैद होगा।

युद्ध का खतरा अगर बराबर बना ही रहा, तो प्रत्येक देश में बच्चे को सिर्फ अपने देश से प्रेम और शत्रुओं से बेहद घृणा करना सिखाया जायेगा। मस्तिष्क या मानवीय गुणों के विकास की ओर कोई राष्ट्र ध्यान नहीं देगा। अगर कोई ऐसा करेगा भी, तो उसे कमजोर और मूर्ख समझा जायेगा। और, इस कारण स्थिति से बचने का एक ही उपाय है—युद्ध की आतंकी का समूल नाश। अगर सभी राष्ट्रो न विवेक से काम लिया, तो ऐसा होना कुछ कठिन नहीं। सभी मनुष्य के उपाजित ज्ञान का सदुपयोग विश्व-वत्याण के लिए सम्भव हो सकता है—मनुष्यता की भावना भी सभी पनप सकती है।

धनी आबादी और विज्ञान के इस युग में पूर्व-जैसा आराम और आनंद का जीवन तो नितान्त असम्भव है। यह सभी



[आज वास्तव वाले यथार्थ को कलना से सब लगता है, किन्तु एक दिन उम्हिले की विलोड हो जायेगी कि, मन पर कल्पना उस के सामने पनाइ मॉवेगी।]

सम्भव था, जब समाज का संगठन इतने सुचारु रूप से नहीं हुआ था और जनसंख्या इतनी बड़ी हुई नहीं थी। पहले-पहल जब मानव-समाज यत्र-तत्र बसा, तो जमीन पर कोई रोक नहीं थी। खेती भी हर आदमी अपने स्वतंत्र तरीके से ही करता था। राज्य से वे किसी प्रकार की सहायता या नियंत्रण की अपेक्षा नहीं रखते थे—

सिवा इसके कि, जमीन उन्हें उचित मूल्य पर मिल जाये। लेकिन आज तो नहीं भी इन पुराने तरीके से खेती नहीं हो सकती। नयी और बड़ी नयी जमीन को उपजाऊ और खेती-योग्य बनाने के लिए करोड़ों रुपये खर्च करने पड़ते हैं। फल भी तत्काल नहीं मिलता। ऐसी अवस्था में किसी भी व्यक्ति के लिए नयी जमीन पर खेती शुरू करना असम्भव-सा ही है। यही हाल उद्योग का है। एक नयी रेल-लाइन चालू करने से बहुत फायदे होते हैं, लेकिन रेल को मुनाफे के लिए कई वर्षों तक प्रतीक्षा करनी पड़ती है। इस प्रकार कई बड़े-बड़े उद्योग-विनमें करोड़ों रुपये लगता है और लाभ की तत्काल आशा नहीं रहती—केवल राज्य ही शुरू कर सकता है।

उत्पादन के तरीके भी अब पहले-जैसे नहीं रहे। दिन-प्र-दिन इन चीजों पर

राष्ट्र का नियंत्रण दृढ़ होता जा रहा है और भविष्य में और भी दृढ़ हो जायेगा। सारी सत्ता कुछ व्यक्तियों के हाथों में ही सिमित कर रह जायेगी।

‘गिल्डवर्स ट्रेवेल्स’ नामक पुस्तक में बताया गया है कि, लिटिलपुत नाम के एक द्वीप के निवासी, वहाँ की जनता को अपने वैज्ञानिक बल पर डरा-धमका कर उन्हें अपना हर हुकम मानने पर मजबूर करते थे। मृक्षे आशका हैं कि, भविष्य के वैज्ञानिक भी ऐसा कर सकते हैं। ऐसी दशा में बला, साहित्य व स्वतंत्र मनन-चिंतन का क्या भविष्य होगा.....?

अब तक जितने भी बड़े आविष्कार या बला और साहित्य की कृतियों का जन्म हुआ, वे विशिष्ट व्यक्तियों-द्वारा स्वतंत्र रूप से निर्मित हुई हैं। इससे लिए चाहे उन्हें भूखो मरना पड़ा, अपमान और बर्षा का जीवन व्यतीत करना पड़ा, फिर भी वे जो-कुछ करना चाहते थे, उसके लिए स्वतंत्र थे। लेकिन राज्य का नियंत्रण यदि बहुत बड़ा हुआ, तो ऐसे कई होनहार बलानार-जिन्हें धुन-धुन में निरगन्ध और पागल समझा जाता है—आगे बढ़ने ही नहीं पायेंगे। वास्तव में, प्रत्येक नयी बात का प्रारम्भ में जनता विरोध करती है। केवल कुछेक लोग ही किसी महान् विचार, वैज्ञानिक या बलाकार की प्रतिभा को सही-सही और पाने हैं। भावी युग में सामक-बर्ग ऐसे मूल-प्रतिभाशाली व्यक्तियों को अपने मन का काम करने ही नहीं देंगे और यह

नवनीत

मानव-समाज की एक महान् शक्ति होगी।

व्यवस्था निस्संदेह अच्छी चीज है; लेकिन जरूरत से ज्यादा बड़ी व्यवस्था के कारण उच्च कोटि की बला, साहित्य, विज्ञान या कोई भी विशिष्ट मानवीय गुण पनप नहीं पाता। अवसर की स्वतंत्रता केवल महान् या प्रतिभाशाली व्यक्तियों को ही आवश्यक नहीं। प्रत्येक व्यक्ति इसकी जरूरत महसूस करता है। हाँ, प्रतिभावान व्यक्ति हर समय यह स्वतंत्रता चाहते हैं और साधारण व्यक्ति कभी-कभी। फिर भी प्रत्येक आदमी रोजमर्रा के काम से ऊब कर कुछ-न-कुछ नया, साहित्यपूर्ण कार्य करने की सोचता रहता है।

राज्य का पहला काम प्रजा के लिए पर्याप्त सुरक्षा और खाने की व्यवस्था करना है। लेकिन इनके उपरांत मनुष्य की दूसरी आवश्यकताओं की पूर्ति करना भी अनिवार्य है—नहीं तो, वह बिना विद्रोह या अपराध विषये रह नहीं सकता। मुख्य-स्थित शासन-प्रणाली और संतुष्ट प्रजा प्रत्येक राष्ट्र के लिए आवश्यक है; लेकिन इससे लिए व्यक्तिगत स्वेच्छा और उत्साह में कार्य करने की पूरी छूट होनी चाहिए।

यदि अगले ५० वर्षों तक युद्ध न हो—यद्यपि इसकी सम्भावना बहुत कम है—तो उस वक्त विश्व की रूपरेखा ही दूसरी होगी। ब्रिटेन की शक्ति आज की अपेक्षा काफी बढ़ जायेगी। भारत ने शिघ्र प्रकार स्वतंत्रता-प्राप्ति के प्रगल्भ विषये थे, कुछ उम्मी प्रचार के प्रयत्न असीमा में भी

होंगे। प्रत्येक वस्तु का महत्व उपयोग की दृष्टि से होगा। हो सकता है, उपयोग के साथ-साथ सुंदरता का भी ध्यान रखा जाये, लेकिन २००० सन् तक तो ऐसी कल्पना नहीं की जा सकती।

पिछड़े हुए राष्ट्र अधिक-से-अधिक औद्योगीकरण की ओर अग्रसर होंगे। सभी जगह अभी भी औद्योगिक विकास की ओर काफी ध्यान दिया जा रहा है, लेकिन साथ-ही-साथ सभ्यता की आबादी भी घनी होती जा रही है। परिणामतः साध की समस्या अधिकाधिक गंभीर होती जा रही है। उस वक्त प्राथमिक शिक्षा का स्तर ऊँचा उठ जायेगा, लेकिन ऊँचे दर्जे की शिक्षा कम हो जायेगी।

आगामी युग में दक्षिणकाल या व्यवसाय-विशय की शिक्षा का अधिक महत्व होगा। वृहत्तर शिक्षा, सभी विषयों का ज्ञान और सांस्कृतिक या साहित्यिक गुणों का कोई खास महत्व नहीं रह जायेगा। इससे लोगों की दृष्टि बहुत समुचित हो जायेगी और वे प्रत्येक विषय या घटना को केवल अपने

विशिष्ट व्यवसाय या ज्ञान की दृष्टि से ही देखेंगे। उदाहरण के तौर पर, अर्थशास्त्र का इतिहास पढ़नेवाला विद्यार्थी, रानी एलिजाबेथ प्रथम का शासन-काल उस युग में सिर्फ इतना ही याद रखेगा कि,

उस समय इंग्लैंड में 'दारिद्र्य निवारण बिल' (पूअर-ला) पास हुआ था। वह यह स्मरण रखने की आवश्यकता नहीं समझेगा कि, वही शेक्सपियर का भी काल था।

बेराख्याल है कि, पर्याप्त व्यावसायिक शिक्षा के साथ-साथ सांस्कृतिक एवं साहित्यिक ज्ञान भी प्राप्त करना प्रत्येक सम्यक्पुरुष के लिए अनिवार्य है। लेकिन यह इतना आसान नहीं। आजकल तो मनुष्य का जीवन कुछ इतना घातक हो गया है—व्यावसायिक ज्ञान कुछ इस प्रकार

जटिल हो गया है—कि, अपन घरे से बाहर निकल कर देखने या सोचने का अवकाश ही किसी को नहीं मिलता। कम्युनिस्ट देशों में इस प्रकार के सीमित व्यावसायिक ज्ञान के उत्कृष्ट उदाहरण देख जा सकते हैं, लेकिन यह भी सही है कि, विशिष्ट विषयों



[अब इस समृद्धि के लिए विज्ञान का दोहन किया जा रहा है, किन्तु वह दिन अब दूर नहीं, जब एकात्म रूप से विज्ञान के लिए ही सब-कुछ किया जायेगा—पुराण-वर्णित सुख-समृद्धि की अधिष्ठात्री लक्ष्मी इस विज्ञान का उल्लिखित करने के भिन्न और मला क्या करेगी?]

मं जितनी तरफों उन लोगों ने की है, उतनी और किसी ने नहीं।

सार्वजनिक शिक्षा में आदमी भले ही किसी काम व्यवसाय या काम के योग्य न बन पाय किन्तु वह अधिक समझदार तो हो ही जाता है। वह प्रत्यक्ष घटना और परिस्थिति का सभी पहलुओं में दखता है, विचार करता है और जल्दी ही घुसा और हिमा पर नहीं उतर आता। दूरदर्शिता की भी उसमें कमी नहीं होती और वह स्वभाव का उग्र नहीं होता। मनुष्य-जीवन के स्पर्शी मूल्यों और प्रयोग को वह सभी नहीं भूल सकता। हाँ, तब सार्वजनिक अर्थ का आगमन और इतना गूँथन कर देना पड़ेगा कि, लोग सहज ही उसका मनन कर सकें। पुरानी भाषाएँ और बड़े-बड़े पद्य पद्यों का तो किसी को अवकाशमित्रता नहीं।

एक बात और ध्यान में रखना बहुत आवश्यक है। शिक्षा का यदि सभी अर्थों में ज्ञान की प्राप्ति का माधन बनाना है और किसी काम व्यापार या दुर्गर गिताने के अनिश्चित मनुष्य का सभी अर्थों में मनुष्य और एक अच्छा नागरिक बनाना है, तो स्कूलों को पढ़ाई जानेंकारी बितारें गच्छ, की राजनीति का प्रचार-मात्र न हो। कम और चीन में स्कूलों को मंग-कम्प्यूनिस्ट देशों के गिलाफ ऐंगी गल्लत बातें बतायी जाती हैं, जिनमें उनका मन शुरू से ही उन देशों और वहाँ के लोगों के गिलाफ घुसा में भर जाता है। यही बात बहुत अन्धों में अमेरिका पर भी लागू होती है। वहाँ

कम्प्यूनिस्ट-मुल्को के गिलाफ ऐंगी-ऐसी रावरे दी जाती है, जो सम्पूर्ण के विचरुल परे है। मेरा विश्वास है कि, स्कूल को राजनीति का अखाटा नहीं बनाना चाहिए।

इसलं अभी तब इस दोष में मुक्त रहा है। मैं चाहता हूँ कि, वह राजनीति के दबाव के कारण गत्य का गला, कम-से-कम शिक्षा के क्षेत्र में घोटने के लिए बाध्य न हो। यह सही है कि, अगर मुझ की तैयारियों और आवश्यकताओं के कारण उगे अमेरिका पर अधिक निर्भर रहना पड़ा, तो आगामी काल में उग पर बहुत दबाव पड़ेगा। हमें सभी में इसके प्रति सतर्क रहना चाहिए।

मैं आशा करता हूँ कि, अगले पचास साल के भीतर प्रत्येक १६ बरस तक के स्कूलों को प्राथमिक शिक्षा अनिवार्य रूप में दी जायेगी और उसके बाद अलग-अलग रुचि एवं योग्यता के अनुसार अलग-अलग क्षेत्रों में उन्हें विमान किया जायेगा। मैं नहीं समझता कि, इसमें कोई बर्ग दूसरे बर्ग में ऊँचा माना जायेगा। अब तक तो विद्वत्ता का अधिक सम्मान होता आया है; लेकिन वह धीरे-धीरे घट रहा है। विनोदों और विद्वानों में फर्क नहीं रहता चाहिए। जिन्हें विषय-विशेष की शिक्षा मिले, उन्हें भी चाहिए कि, वे कुछ-न-कुछ सार्वजनिक एवं साहित्यिक ज्ञान प्राप्त करें। दुर्गर-उद्योग मीगन के साथ-साथ यह बात नहीं भुला देनी चाहिए कि, शिक्षा का अगली ध्येय मनुष्य-मात्र को योग्य और जिम्मेदार नागरिक बनाना है।

पाँचवे या छठ वरस में मेरा अधरारम्भ कराया गया था। उस समय मेरे भाई अग्रजो पढ़ने के लिए छपरा भेज जा चुके थे। उस समय की प्रचलित प्रथा के अनुसार अधरारम्भ मौलवी साहब न कराया था। जिस दिन अधरारम्भ हुआ मौलवी साहब आय। बिसमिल्लाह के साथ अधरारम्भ हुआ गीरनी बाँटी गयी और उनको रुपय भी दिया गया। हम तीन विद्यार्थी उनके मुपुद किये गए—एक मैं और दूसरे दो अपने कुटुम्ब के ही बचेरे भाई जिनमें एक यमुना प्रसादजी सबसे

बड़ और मझसे दो बरस बड़ा हैं। तीसरे अब नहीं रहे वे भी मुझसे बड़ थे। यमुना भाई ही हम सबके लीडर थे

और तमाम खेल और ठठकपन की चुल्लेपनी में आग रहा करते थे। उनके एक बच्चा जो मेरे भी बच्चा होते थे बड़ा मजाक-प्रमद थे। वे मेरे पिताजी से छोट होते थे पर पिताजी के कई गण उहोने सीखे थे। वे भी घोड़ की अच्छी सवारी करते दवा करते और बाटो और बड़क चलाता गुलेल चलाता खूब जानते थे। पारसी भी पढ़ी थी और गतरज भी खूब सतते थे। पर इन सब चीजों में वे मेरे पिताजी का लोहा मान लेते थे। बड़ ही



हमारे

मौलवी साहब

—राजेन्द्र प्रसाद

हँसमत और पुरमजाव आत्मा थे।

मौलवी साहब जा हम गंगा को पढ़ाने आय विचित्र आत्मा थे। उनका बहुत बातों पर दावा था। बन्देव बच्चा के मजाव के लिए वह एक बहुत ही उपयोगी साधन बन गया बच्चा तरह-तरह की बातें मौलवी साहब का मुनाते और उनको उसाह देकर उनसे कहना पड़े कि मैं भी—बच्चे वह कोई बात या काम क्या न हो—जानते थे या कर सकते थे। इस प्रकार मौलवी साहब का दावा था कि वे गतरज

खलना जानते हैं। बल्लेब बच्चा गतरज खेला से पर बाबजूद दावा के मौलवी साहब कभी जीतते नहीं। हम छोट छोट

बच्चे इन सार मजावा को भय और कौतूहल में देखते। हसन का मौला भा जाय तो भा हसना मग्निल हो जाता। मजाव की बात दागजा चौधरदागजा तक पहुँच गयी। वे भी बच्चा-बच्चा उमर गरीब हो जाया करते थे।

एक दिन बल्लेब बच्चा न मौलवी साहब मे कहा कि बाग में हनुमान आ गया है—उनको बिना तरह मगाना चाहिए। वे गुलेल से मारकर मगाय जा सकते हैं। इतना कहना था कि मौलवी साहब न

दावा पेश कर दिया, वे भी गुलेल चसना खूब जानते हैं। बलदेव बचा तो खूब समझ गये थे कि, वे कुछ नहीं जानते, पर भजाव उनको मजूर था। वे उनको साथ लेकर धर्गीचे में गये। गुलेल और गोली उनके सपुर्द कर बहा कि, खूब खीचकर एक बंदर को मारिये। मौलवी साहब ने खूब खीचकर जो गोली छोड़ी और देखना चाहता बंदर को बंगी चोट लगती है कि, इतने में उनके बाये हाथ के अंगूठ में सरतार खून टपकने लगा और चोट के दर्द से सहम कर बैठ गये। गोली बंदर को लगाने के बदले मौलवी साहब ने अपने अंगूठे पर ही जा बैठी थी।

एक दूसरे दिन का जिक्र है कि, शाम को सब लोग, जिनमें हमारे दादा साहब भी शरीक थे, टहलने निकले। मौलवी साहब और बलदेव बचा भी थे। तरह-तरह की बातें हो रही थी। इतने में एक सौंड देगाने में आया। लोगों ने कहा कि, सौंड लोगों को मारता है। बलदेव बचा ने इसारे पर मौलवी साहब इसमें बच डरने-पाळे थे। बेचोप आगे गये कि, इतने में सौंड ने उनको दे पटका। इस प्रकार के मजाव बराबर ही हुआ करते।

एक दिन बलदेव बचा ने मौलवी साहब को बंदूक चलाने की तरगीब दी। मौलवी साहब किसी चीज को न जानना बबूल करना अपनी शान के खिलाफ समझते थे और उन्होंने साथ कह दिया कि, वे अच्छा निशाना लगा सकते हैं। उन्हें साथ लेकर

नवनीत

बलदेव बचा बंदूक से बाहर निकले। मौलवी साहब ने दो लडके थे, जो हम लोगों के साथ ही पका करते थे। हम सब और दोनों लडके भी साथ ही लिये। कुछ दूर पर, एक ऊँचे दरख्त पर एक गीब बंठा नजर आया। बलदेव बचा ने उगी पर निशाना लगाने की कहा। वह बापी ऊँचाई पर था और प्रायः राखी बंदूक पटो ही निशाना रखसकता था। मौलवी साहब की जो बंदूक दी गयी थी, वह पुराने निस्स की थी, जिनमें बारूद ऊपर से भरी जाती थी और वजनी भी थी। मौलवी साहब ने सायद बभी पहले बंदूक नहीं चलायी थी। उन्होंने प्रायः राखी बंदूक अपने सीने पर रतखर निशाना लगाया। ऊपर बंदूक का धोंडा पटका, आवाज हुई और ऊपर गीब के बहले मौलवी साहब जमीन पर चित गिरे। बलदेव बचा ने झट उनको उठाया और लडकों को पानी लाने के लिए भेजा। मौलवी साहब किसी तरह पर लामे गये।

इस तरह मजावों के बीच हम लोग फारंगी पढ़ते रहे। कुल छ-आठ महीनों के बाद मौलवी साहब चले गये। हम लोग सायद बंधार सीत खुने थे और बरीमा पढ़ने लगे थे। इसके बाद ही दूसरे मौलवी बुलाये गये, जो बहुत गम्भीर थे और बापी अच्छा पढ़ाने भी थे।

पढ़ने का तरीका था कि, खूब रातों हम लोग उठकर भजन में पढे जाते। भक्तव मेरे पको भवान मे अलग एक दूसरे भवान के ओतारे में था। एक कोठरी

थी, जिसमें मौलवी साहब रहा करते कभी शतरंज खेलना भी आ गया, पर और सामने ओगारे में तख्तपोश पर पता नहीं कि, कब और किससे सीखा। बंठकर हम लोग पढ़ा करते। मौलवी साहब चिराम-बत्ती जलते फिर किताब खोल-

कभी अपनी चारपाई पर और कभी तख्त-पोश पर बैठकर पढ़ाया करते।

नारता करव लौटन पर सनक याद करना पड़ता और सबक याद करके सुना देने के बाद मौलवी साहब हुक्म देते—'किताब बंद करो। किताब बंद करके तख्ती निवाली पड़ती। दोपहर को महान-खाने के लिए एक-बड़ घट की छुट्टी मिलती और खाकर फिर मकसब में ही, उसी तख्तपोश पर सोना पड़ता। मौलवी साहब चारपाई पर सोते। हम लोगो को अक्सर नींद नहीं आती। तख्तपोश पर लेट-लेट शतरंज खेलते और

अनुग्रह

एक राजा जिन्दगी अगर बहुत ब गुन वट बुजुग थे। आपन अपन तमइफ (करामत) से अपन मयग (नरु काम मे रोकनेवाली इच्छा) को अपन मे मे निकाल लिधा जो कबतर को मूरत मे निब्रता। इस पर आपको महगता हुआ कि, जो कुछ अल्ताफो अनडारे-गुडा बडो (ईश्वर की कृपाए) थे वे रह हा गय। आपको बहुत ताज्जुब हुआ जे लिधा—'परवरदिगार यह तो तरग और मेरा दुश्मन हूं। अब जब कि, वर मुझमें से निकल गया मुझ पर ज्यादा अल्ताफो-इकराम (कृपा) होन चाहिए थे। परमावा गया—'जे जिन्दगी गुन पर मेरे इनामत इसी बिना पर थे कि मेरे दुश्मन को भाजूदगो आर उगकी हर वकत को मुलातिफत ब हान हुए तू मेरी इबादत (गुना) आर इताअन (आजाकारता) में लगा हुआ था। अगर वह न रहे तो फिर तरो क्या कद। तब तो तू मजदूर होगा इबाअन और याद क लिए।

—सफद हसन अहमद मयना

जय मौलवी साहब के जानने का वक्त पोटली दिया में रख देते। वह देखते-होता, तो उसने पहले ही मोटियो देखते तेल सोख लेती और जल्द दिया को उठाकर रख देते। उमी जमान में बुझने पर बा जाता। मौलवी साहब

कर पड़ने के लिए बैठना पड़ता। सध्या को जल्द नींद आती। इससे हमेशा डर रहता कि, कहीं मुझसे देखकर मौलवी साहब मार न दें। जल्द छुट्टी के लिए दो उपाय थे। तेल-बूंद में जमुना भाई लीडर थे और जल्द छुट्टी पान के उपाय भी वही करते। पढ़ने के लिए तेल देकर दिया जलाया जाता था। जमुना भाई दिन को ही कपड़े में राल या घूल गांधकर छोटी-सी पोटली बनाकर छिपा-कर रख लेते। जिस दिन दिया में तेल अधिक देखन में आता, चिराग की बत्ती उकसाने के बहाने छिपाकर

दाई पर रज होते वि, तेल क्यों कम लगी, पर भगदूर होकर जल्द ही बिताय बंद करने का हुक्म दे दत।

किसी किसी दिन जमुना भाई पसाव करने के लिए छुट्टी मांगकर बाहर जाते और पेशाब करने के बदले दोड़कर सभी मेरी माँ के पास, सभी-सभी अपनी माँ के पास और सभी गंगा भाई की माँ के पास जाकर वह आत वि, अब मोद लग रही हैं—जल्द दाई को हमें बुलाने के लिए भेजो, नहीं तो पिट जायेंगे। उनके पेशाब में लौटने के छोड़े ही बाद दाई पहुँच जाती और मौलवी साहब से कहती—“अब छुट्टी दे दीजिये।”

एक दिन जब इस तरह जमुना भाई दाड

जा रहे थे, तो गैलवे के एक मज्जन ने, जो रिस्ते में हम लोका के चप्पा होने थे, उन्हें देख लिया और जाकर मौलवी साहब में कह दिया कि जमुना बही दोड़े जा रहे थे। तबहीचात हुई और जमुना भाई को बंफिप्रत हुई कि, वे पशाब करने गये और अर्धरे में डर गये, इसलिए भागे जा रहे थे। इस तरह में बने।

जी-बुछ बहो पारंगी का ज्ञान हुआ, उन्ही मौलवी साहब ने दिया। हम सब भी उनको प्यार करने लगे थे। जब पर छोड़कर छपरा अंग्रेजी पढ़ने के लिए जाना पडा, तो मौलवी साहब को और हम लोगो को भी बडा दुःख हुआ।

★

मेरे मुंशीजी

एक और माम्म थे, जिन पर लड़कपन में मैं अरोसा करता था। वे मे पिताजी के मुसी मुबारक अली। वे बदायूँ के रहनेवाले थे और उनके पर के लोग मुसलमान थे। मगर १८५७ के गदर ने उनके मुनमें को बरबाद कर दिया और अंग्रेजी फौज ने उमे एक हद तक जहमूल से उताड़ फेंका था। इस मुर्मारत ने उन् हार-एव के प्रति और रासकर बच्ची के प्रति बहुत विनम्र तथा सहनशील बना दिया था। मेरे लिए तो वे जब-जभी मैं निती बात से दुःखी होता था तबलीफ महमूख करता, तो साहजना के निश्चित आधार थे। उनके बगिया सफेद दाड़ी थी और मेरी मौजवान आँगा को वे बहुत पुराने और प्राचीन जानकारी के गजाने धालूम होने थे। मे उनके पास सेटे-सेटे पटो अलिफ-कला की और दूसरी किस्मे-बहानियों या १८५७-५८ की गदर की बातें गुना करता। बहुत दिन बाद, मेरे बडे होने पर मुंशीजी मर गये। उनको प्यारी मुसद स्मृति अब भी मेरे मन में बनी हुई है।

—अब्राह्मण नेहरू

★

“कैसी मनोहर है यह नई सुगंध।”

सूर्य कुमारी कहती है

‘पूलों सी ताज़ा हस्त टायलेट की यह सुगंध देर तक बसी रहती है

केवल चित्र सारिकाभा का ही नहीं बल्कि भारत भर की सुदूर स्थानों का यह अनुभव है कि

सफेद और सुदृढ़

साबुन का सुलायम सुगंधित मांग

जितने को सारक सुदूर और

कोमल रहता है।

यह साबुन म भी मिलता है।



भारत में बिकता है

मैं दूध पेस्ट

व्यवहार करता हूँ



मैं दूध-पावडर व्यवहार करती हूँ

मैं तो अपना
हो बनाया

हुभा मंजन व्यवहार करता हूँ



लेडिन हम सभी



दूध प्रदा व्यवहार करते हैं
दातों को अत्यधिक मजबूत करता है—अधिक दिन चलता है
निर्माता : थायोन वन कं लि लेडिन केम्ब्रिज इलाहाबाद स्ट्रीट नम्बर-१
विनरन : मेसर्स बल्लवि स्टोर्ग, बाल्मो देवी रोड, बम्बई २

चालक उसमें बैठ गया और कुछ ही क्षणों में वह वायुवेग के अदर था।

थोड़ी देर बाद स्थिर-चित्त होने पर वह बोला—“आपके वायुवेग को मैंने पहले किसी अन्य नरसभ से आयी हुई उड़न-तस्त्ररी समझा था। जब आप मेरे काफी समीप आ गये, तो मुझे ज्ञात हुआ कि, आप वायुवेग पर सवार हैं।”

वह क्षण-भर को रुका और फिर वृत्तज्ञता प्रकट करते हुए कहने लगा—“जहाँ आपने इतना कष्ट किया है, वहाँ थोड़ा और कष्ट करे, तो मैं आपका बड़ा आभारी रहूँगा। मेरे एक वैज्ञानिक वधु इस सामर-तट के घने और बीहड़ जंगल के दूसरी ओर दलदल में कुछ खोज करने के लिए आये हैं। उन्होंने मुझे अपना संदेश भेज कर, निपट के नगर में मोटर-बोट ले जाने का आदेश दिया था, पर अब यह मोटर-बोट तो बेकार ही हो चुकी है। उनके पास जैवो ‘रेडियो-ग्रंथप’ और ‘संसाह्व’ हैं। आप कृपया मेरी इस स्थिति की सूचना उन्हें दे दीजिये।”

मैंने अपना जैवो रेडियो निकालकर चालक की सूचना वैज्ञानिक के पास पहुँचा दी। अब मैं थोड़ा दाहिनी ओर को रुका और तत्काल ही वायुवेग तीव्र गति से पूर्व की ओर उड़ने लगा।...

ऊपर जिस दृश्य का वर्णन किया गया है, वह काल्पनिक नहीं, सत्य है। पुनः-पुनः मैं मानव ने जिस उड़नसटोले की कल्पना की है—नानी की कहानियों-द्वारा जिसका नवनीत

उसने पालन-पोषण किया है, परियों और देवदूतों के साथ जिसका अजर-अमर गठवधन रहा है—वैज्ञानिकों ने आज उसे साधारण रूप दे दिया है। सीधे-सादे उड़न-सटोले की मानव की यही कल्पना रही है कि, उसे चलाने के लिए न किसी विशेष यंत्र की आवश्यकता पड़े और न यांत्रिक ज्ञान के जिराण-प्राप्त चालक की। वायुवेग मानव की इसी कल्पना का मूर्त रूप है।

अमेरिका के कैलिफोर्निया प्रांत में ‘हिलमं हेल्थिफाटर्स’ नाम से एक बड़ा विशाल कारखाना है। वही पर मानव के इस चिर-आकांक्षित कल्पना को विज्ञान ने यथार्थ में परिपक्व कर दिया है।

वायुवेग आधुनिक युग का शचमुच ही एक अभिनव आविष्कार है। आकाश में कई सौ फुट की ऊँचाई पर यह मोलाकार वायुवेग बिना किसी विशेष यंत्र की सहायता से आये-भीछे, दायें-बायें उड़ता रहता है। नीचे से देखने पर यही भी यह अनुमान नहीं लगाया जा सकता कि, वायुवेग किस शक्ति के आधार पर आकाश में इतनी ऊँचाई पर स्थिर है अथवा इधर-उधर चर रहा है। हाँ, इसने एजनों से निचली ध्वनि यह अवश्य स्मरण करा देनी है कि, यह कोई जादू का खेल नहीं है, अपितु इसमें उद्दत्त-विज्ञान की कोई ऐसी प्रातिपत्ति विधि अपनायी गयी है, जो निपट भविष्य में ही आकाश में उड़ने की विधियों में कई अद्भुत परिवर्तन ला देगी।

‘हिलमं हेल्थिफाटर्स’ कम्पनी में, पहले

पर वायुवेग वा निर्माण हुआ है, कुछ विशेष व्यक्तियों को इसकी उड़न-क्रिया से परिचित कराया जाता है। अमेरिका के श्री सी बी रेंटविल्फ न अपने एव लिख "इन द वे आव हेवेन" में इसका बड़ा ही रोचक विवरण दिया है—

“मे 'हिलस हेलिकाप्टर्स' के कर्मचारियों-द्वारा उस गुनसान व विस्तृत मैदान में ले जाया गया, जो चारों ओर वृक्षों से घिरा हुआ था। मैदान के ठीक पीछे एव बड़ा भवन था। मेरे पहुँचते ही इस भवन का स्वतःचालित द्वार खुला और दो कर्मचारी एव यंत्र को उठाकर मैदान में ले आये। यह यंत्र मदमैले नीले रंग का था और इसकी आकृति महाने के किसी टव-जैसी थी। इस यंत्र के उड़ने से पूर्व की अंतिम तैयारियों की गयी और मुझे बताया गया कि, इसी यंत्र का नाम वायुवेग है। इसके चालक ने अपना सम्पूर्ण शरीर गहरे हरे रंग के चुरस लबादे से ढक लिया था। उसने पार में लगे इंजीनियरों और मिस्त्रियों से कुछ परामर्श लिया और फिर यंत्र के मध्य में बने लोहे के एव गोलाकार ढाँचे में जाकर सटा हो गया। इस ढाँचे के नीचे लवड़ी की तरह थी। सारी तैयारियाँ समाप्त हो चुकी थी, अब अब उसने मुझे भी वायुवेग में सवार हो जाने के लिए कहा।

“आतपास के सभी मनुष्यों को हटा

दिया गया। केवल एक मिस्त्री वायुवेग के समीप सटा था। वह यंत्र पर मुका और जैसे किसी मोटर-बोट को 'स्टार्ट' कर रहा हो, वायुवेग के 'स्टार्टर-सार' को उसने आगे की ओर खींचा। अचानक एजिन वा कोलाहल उस नीरव क्षेत्र में गूँज उठा। यंत्र के नीचे से नीला धुआँ निकल कर चारों ओर फैलने लगा। मिस्त्री ने दूसरा 'स्टार्टर-सार' भी खींच लिया और स्वयं हट कर दूर सटा हो गया। ज्यों-ज्यों एजिनों से निबली ध्वनि तीव्र होने लगी, स्थों-स्थों



वायुवेग आकाश में सीधा ऊपर उठने लगा। इस समय के दृश्य को देखने से ऐसा प्रतीत हो रहा था, मानो आकाश से कोई अदृश्य रस्ता वायुवेग को बाँध कर ऊपर की ओर खींच रहा हो।

“वायुवेग जब धरातल ॥

लगभग साठ फुट ऊँचा उठ गया, तो चालक ने लोहे के ढाँचे में लगे हत्ये-द्वारा एजिनों की शक्ति कुछ कम कर दी। तत्काल ही वायुवेग त्रिशु की तरह बीच में ही स्थिर हो गया। न तो वह ऊपर ही उठ रहा था और न अब नीचे ही आ रहा था।

“कुछ देर पश्चात्, स्थिर वायुवेग में सटा चालक थोड़ा-सा आगे झुक गया। उसने झुकने के साथ-साथ वायुवेग भी उसी दिशा में झुककर पुन गतिमान हो उठा। अब वह उसी दिशा में बढ़ रहा

या। थोड़ी दूर तक जाने के बाद चालक पुनः सीधा खड़ा हो गया। उसी क्षण झुका हुआ वायुवेग भी सीधा होकर बर्तहीन हो गया और वायुमंडल के उसी तल पर स्थिर खड़ा हो गया। चालक के थोड़ा बायें झुकते ही एक आज्ञाकारी सेवक की भोंति वायुवेग भी बायीं ओर झुक कर उसी दिशा में आगे बढ़ने लगा। जब चालक दाहिनी ओर को झुका, तो यंत्र भी बायें के स्थान पर दाहिनी ओर चलने लगा। "

इस विवरण को पढ़कर सहसा ही मन में विचार उठता है कि, यही वह वस्तु है, जो सर्वसाधारण का वायु-वाहन बन सकती है। सरल रचना और सरल नियंत्रण—ये दो बातें जनसाधारण के वाहन के लिए आवश्यक हैं और ये दोनों ही बातें इस वायुवेग में पायी जाती हैं। इसे नियंत्रण में रखने के लिए चालक का भार और एक साधारण पुर्जा-भर पर्याप्त है। चालक का भार जिस दिशा में पड़ता है, उसी दिशा की ओर यह वायुवेग चल पड़ता है। किन्तु यदि चालक बिल्कुल लेट जाये या लुढ़क जाये, तो इसका यह अर्थ नहीं कि, वायुवेग भी उलट जायेगा। इस वायु-वाहन में अब तक की समस्त वायु-वाहनो की भोंति पक्षी की आवश्यकता नहीं और न यह 'हेलिकाप्टर' ही है। अमेरिका में इस वायुवेग को 'फ्लाईंग मोटर-साइकिल', 'फ्लाईंग प्लेट-फार्म', 'फ्लाईंग रिग', 'फ्लाईंग वाय-टब' आदि भिन्न-भिन्न नामों से पुकार रहे हैं।

वायुवेग के आविष्कार का श्रेय वास्तव

में, अमरीकी नौ सेना के इंजीनियर चार्ल्स एच जिमरमैन को है। द्वितीय महायुद्ध के समय ही उनके मस्तिष्क में यह अद्भुत कल्पना उठी थी और तब से वे इस पर अपने अतिरिक्त समय में निरंतर काम करते रहे।

सन् १९४६ में 'हिलर्स हेलिकाप्टर्स' के स्वामी स्टैन हिलर की जिमरमैन से भेंट हुई। उसने जिमरमैन से उनका वह यंत्र खरीद लिया।

हिलर के कारखाने में यह यंत्र १९५१ तक निष्क्रिय पड़ा रहा। १९५१ में जिमरमैन ने अपने एक सहयोगी इंजीनियर हिले को अपने इस यंत्र के विषय में बताया। हिले इस यंत्र के प्रति आवर्षित हो उठा। दोनों ने मिलकर आविष्कार पूर्ण करने का निश्चय कर लिया। हिलर से मिलने पर उसने भी आपत्ति नहीं की। और, इस बार सफलता ने मुस्कराकर जिमरमैन का स्वागत किया—उनके इस यंत्र ने कुछ इच्छा तब ऊपर आकाश में उठने की शक्ति प्राप्त कर ली।

इस सफलता से प्रोत्साहित हो हिलर ने दोनों इंजीनियरों को और भी सुविधाएँ दी और अतः २७ जनवरी, १९५५ को जनसाधारण का यह वायु-वाहन-विज्ञान की अद्भुत देन वायु-वेग—पूर्णरूपेण तैयार हो गया। वस्तुतः यह यान वायु-वेग द्वारा ही ऊपर उठता है। जब इसने एंजिन पर्याप्त दबावधारी वायु आवादा में नीचे की ओर मुक्त करते हैं, तो इस वायु के दबाव का उछाल यंत्र को प्राप्त होता है और यह ऊपर उठ जाता है।

कुबेर का कोष शाहजहाँ के खजाने में

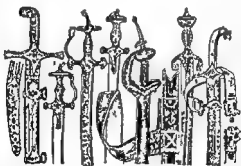
श्री के आर एन लाम्बी लिखित एक लेख का सविष्ट हिन्दी-रूपांतर

★

बड़े-बड़े जोहरी, जिनको रत्नों का अच्छा परिचय प्राप्त है, प्रायः बड़े-बड़े रत्नों की चर्चा करते हैं—बहुते हैं, अमुक हीरा मुर्गी के बड़े के इतना बड़ा है, अमुक व्यक्ति के पास का अमुक रत्न इतना वजनी अथवा इतना बड़ा है, पर लंदन की जोहरियों की समिति के उपाध्यक्ष का कहना है कि, इस युग के सबसे बड़े धनियों में गिने जानेवाले निजाम यदि अपना रत्न-भांडार बेचना चाहे, तो उनके लिए खरीदार ही मिलना कठिन है। मोतियों की लड़ियों वाली, चटाइयों अथवा हीरा लगे वस्त्र का उपयोग सिवा राज-

हीरा है। उसका मूल्य आँका गया है, १॥ करोड़ रुपये। और, उस 'पेपर-बेट' का भी कोई खरीदार नहीं है, फिर अतुल रत्न-राशि का प्रश्न ही क्या है?

पर निजाम की यह रत्न-राशि, जिसके कारण आज उनकी गणना विश्व के सबसे बड़े धनियों में की जाती है, सदियों की लूट के बाद बचे, मुगलों के सचय का एक अत्य-लघु-मात्र है। जिस समय वर्तमान निजाम के पूर्वज आसफनाह ने दिल्ली से हैदराबाद के लिए प्रस्थान किया था, उस समय तक दिल्ली का चौदनी चौक चार बार लुट चुका था। चौदनी चौक का उस समय क्या



प्रासाद की शोभा बढ़ाने के और ही क्या सकता है? उन्हें लेकर कोई करेगा भी क्या भला? निजाम का 'पेपर-बेट' १५० कैंटर वजन का एक

[शाहजहाँ के खजाने की कुछ रत्न नष्टित तलवारें]

महत्व रहा होगा, इसे इसी बात से आँका जा सकता है कि, वहाँ की लूटी रत्न-राशि का वह अंश, जो आज निजाम के पास है, उसके

भी खरीदार नहीं मिल रहे हैं।

यह बात निश्चयपूर्वक कहो जा सकती है कि, चांदनी चौक की रत्न-राशि का अधिकांश भाग पचम मुगल सम्राट् शाहजहाँ के बोध में पहुँचा। शाहजहाँ के समान रत्नों का पारखी उस काल में एक भी नहीं था। उसे रत्नों के सचय में इतनी रुचि थी कि, गोलकुंडा की रान के केवल वही हीरे बाजार में जा पाते थे, जिन्हें वह नापमद कर देता था।

यहाँ यह बात भी स्पष्ट कर देना आवश्यक है कि, १७२६ तक गोलकुंडा की रान ही विश्व की सबसे बड़ी हीरे की गोन थी। पिट, रीजेंट, पोतेनूर आदि जितने ही ऐतिहासिक हीरे गोलकुंडा से ही प्राप्त हुए हैं।

शाहजहाँ की परस और रत्न-भूषण की उसकी रुचि के फलस्वरूप, पूर्वी देशों के प्राय सभी बड़े बड़े जौहरी रत्न और रत्ना की बनी चीजें दिराने के लिए शाहजहाँ के दरबार में आया करते थे।

जब शाहजहाँ बुढ़ावस्था में अपने पुत्र औरंगजेब-द्वारा बंदी बना लिया गया, तो राजाने की पूरी रत्न-राशि उसके पास मूल्य आँकने के लिए भेजी गयी थी। शाहजहाँ एक-एक चीज देखता और उसका मूल्य बताता चलता। बड़े-बड़े जौहरी उस समय वहाँ मौजूद थे। किसी की जवान न

खुली। सभी तिर हिला हिला कर स्वीकारोक्ति दिया करते थे।

जहाँ तक मूल्य आँकने का प्रश्न है, शाहजहाँ को धोखा देना असम्भव था। क्या है कि, उसके दरबार में रहनेवाले अंग्रेज राजदूत सर थामस रो के पास एकत्रुय के सोम की तरह की एक चीज थी। सर थामस को यह बात ज्ञात थी कि, शाहजहाँ को अद्भुत वस्तुओं के संग्रह का बड़ा

शौक है, अतः उसने एक दिन बात-बान में उसे बेचने की चर्चा चलायी। उस चीज के सम्बन्ध में उसने शाहजहाँ से कहा कि, यदि इसमें कोई त्रुटि बिप रखा जावे, तो उसका जहर रामान हो जायेगा। उसका जो दाव मताया गया, शाहजहाँ को वह ठीक नहीं जँचा। अतः उस बात को ही वह बड़ी मधुरता से टाल गया। सर थामस रो को इसने बड़ी निराशा हुई और अंत में, उसने कुछ दिनों बाद, उसे बड़े सस्ते मूल्य में एक डब संग्रहाधिकारी के हाथ बेच दिया।

पर शाहजहाँ में एक गुण भी था। वह सचय को ही बहुत अधिक महत्व नहीं देता था, बल्कि बड़ी-बड़ी चीजें लोगों का प्रायः पुरस्कार में या भेंट के रूप में दे देता था। एक दिन उसके पास गोलकुंडा से एक हीरा आया, जिसमें चूबतारे से भी



[बहुमूल्य रत्नान्वारों से सुसज्ज एक शुभलक्षणी]

अधिक कमव थी। उस हीरे को देखकर उसकी इच्छा उसे मस्का-स्थित नवी की मसजिद को भेंट कर देने की हुई। अतः उसने ७ सेर सोने के एक शमादान में उस हीरे को जड़े जाने की आज्ञा दी और उसे भक्ता भेंट दिया। यदि उस शमादान का मूल्य लगाया जाये, तो कम-से-कम एक करोड़ रुपया होगा।

शाहजहाँ को युद्धों से भी बड़ी सम्पत्ति मिली। उसने शासन के प्रारम्भ के ही दिनों में, जब शाही सेना ने गोलकुडा पर आक्रमण किया, तो वहाँ के शासक ने दो सौ घाल भरकर रत्न, मुल्ह करने के लिए भेजे। विन्तु इतनी भेंट देखकर शाहजहाँ की तृष्णा और बड़ी और उसकी सेना वहाँ से तीस करोड़ से अधिक की सम्पत्ति छूट कर ही हटी।

आज तब कोई इतिहासकार शाहजहाँ के खजाने को कूत नहीं सवा है। कहा जाता है कि, उसके खजाने में फास तथा ईरान दोनों देशों के समुक्त राज-कोषों से अधिक धन था। उसके रत्न-भांडार में रत्नों का सचय इस बंदर था कि, एक बार उसके कोषाध्यक्ष को शाहजहाँ से यह प्रार्थना करती पड़ी—“कोषामार की दीवारे तोड़ कर उसे और बड़ा करना चाहिए।”

कोषामार की समस्या मुल्खाने के लिए

ही शाहजहाँ ने ‘तस्त-ताऊस’ बनवाया, जिसका मूल्यांकन उस समय ५३ करोड़ रुपये किया गया था। एक इतिहासकार ने लिखा है—“तस्त-ताऊस के लिए आज्ञा हुई कि, बड़े-बड़े माप के माणिक, रक्तमणि, मोतियों, हीरे, पन्ना आदि ॥ मन तथा सोना ३५ मन स्वर्णकार-विभाग के प्राधिकारी को दे दिया जाये।” राज्य के सबसे कुशल कारीगरो ने उस तस्त को ७ वर्षों में तैयार किया था।



मुगल-कुनेर शाहजहाँ
[चित्र, 'इंडियन क्वेलेरी
पेंड आर्गामेंट्स' नामक
ग्रंथ से साभार]

शाहजहाँ ने अपने शासन-काल में बहुत-सी इमारते बनवायी तथा वह स्वयं भी बड़े ठाट-बाट से रहता था, लेकिन कहा जाता है कि, जब वह तस्त से उतारा गया, तो उसके बोप में उस समय की अपेक्षा अधिक धन था, जब वह गद्दी पर बैठा था। रत्नों में बिना तराशे हीरे लगभग अस्सी रत्न (लगभग ५० लाख कैरट), माणिक सौ रत्न, पन्ना सौ रत्न तथा मोतियाँ ६०० रत्न थीं। इनके अतिरिक्त छोटे मोटे अथवा कम मूल्य के रत्नों की तो सख्या बताना ही बठिन है।

उसके शस्त्रागार में दो हजार तलवारें ऐसी थीं, जिनकी पूठों में हीरे जड़े थे। दरबार में १०३ कुर्सियाँ ठोस चाँदी की तथा पाँच ठोस सोने की थीं। इनके अतिरिक्त २ सोने के और ३ चाँदी के

सिंहासन राजकुमारों के लिए और 'तस्त-
ताऊस' के अतिरिक्त बहुमूल्य हीरे-ज्वैरित
सात सोने के सिंहासन चाहजहों के लिए
थे। उसके स्नान करने के 'टब' का ही मूल्य
आज १० अरब रुपये होते। सात फुट
छम्या और पाँच फुट चौड़ा वह 'टब' बहु-
मूल्य हीरों से ऐसा जड़ा हुआ था कि, सोना
नजर ही न आता था।

शाहजहों के महल में २५ टन (लगभग
७०० मन) सोने के वस्तुन थे तथा ५०
टन (लगभग १६०० मन) चाँदी के
चाकू, शरोंते आदि सामान थे। तोता-
खाना के प्राधिकारों के पास उसके
महल के इन वस्तुनों आदि की पूरी सूची
थी। हर चीज पर शाही मुहर लगी होती
थी और उसकी सुरक्षा का पूर्ण दायित्व
तोताखाना के उस प्राधिकारी के ऊपर था।
केवल बड़े शाहजहों के पास एव करोड़
रुपये में अधिक के थे और २५ लाख में
अधिक के चीनी मिट्टी के वस्तुन।

इन रत्नों आदिके अतिरिक्त शाही महल
में बड़े महत्व की वस्तु थी—पुस्तकालय।
उसमें २४ हजार हस्तलिखित ग्रंथ थे।
उस समय पुस्तकें इतनी सस्ती तो थी
नहीं, अतः कहना चाहिए कि, उनका भी
मूल्य १ करोड़ से कम का नहीं था।

यह ध्यान रखने की बात है कि, ये औंखें
अधिकांशतः १७-वीं शताब्दी के हैं। तब से
अब रुपये का मूल्य बहुत बढ़ा गया है।

शाहजहों की सम्पत्ति का कुछ अंशज,
ब्रिटिश नरेश की सम्पत्ति से उसकी तुलना
करने से, किया जा सकता है। फरवरी
१९५२ में ब्रिटिश नरेश की निजी सम्पत्ति
१५ करोड़ डॉलर (लगभग ७५ करोड़
रुपये) ओंकी गयी थी। यह सम्पत्ति
शाहजहों की सम्पत्ति की तुलना में नगण्य
है। लेकिन 'बैंक ऑफ इंग्लैंड' की भी
सम्पत्ति ब्रिटिश नरेश की निजी सम्पत्ति
यदि मान ली जाये, तो भी शाहजहों की
सम्पत्ति उससे किसी प्रकार कम नहीं थी।

★

व्यवसाय की सफलता

एक दूकानदार विभी उद्योगपति के बारे में बताया गया था कि, वह अपना
व्यवसाय बगना मिलकूल नहीं जानता। एक रोज़ मुलाकात होने पर उसने
उद्योगपति को व्यवसाय की सफ़लता पर कुछ हिदायतें दीं।

उसने मित्र दम घटना का जिन मुन काफी प्रभावित हुए। "अच्छा
फिर क्या हुआ?" उन्होंने पूछा।

'कुछ नहीं।' दूकानदार ने जवाब दिया—'वे अपनी मोटर में बैठकर
अपने घर गये और मैं कम में बैठकर अपने घर।' —'लाउटर' से

★



आत्मा भक्ति की धूल —लंदलाब चौध

कला एक दृष्टि है, सोचान है जो स्वयं सम्पन्न और नष्ट अनन्तर के बीच सम्बन्ध बनाए रखती है। कान को प्रवेश कहा है। किन्तु मनुष्य से प्रवेश कुछ भी नहीं। कानों के स्वर्ण-गर्भ पर आसीन पुरुषोत्तम ने सदैव ही लोक को पराजित किया है।

★

मानवता पर आज जो गहरा सबूट छाया हुआ है उससे समस्त कारणों के मूल में है मानव की अपरिमित तृष्णा। हमारा व्यक्तिगत और सामूहिक जीवन वास्तविक विकास के रास्ते से दूर जा पड़ा है। विकास की दिशाओं में एक असंतुलन है जिससे वास्तविक विकास मारा जाता है। केवल राजनैतिक या आर्थिक उपाय, इस अवस्था का सामयिक प्रतिकार ही दे पाते हैं। किन्तु इसका अधिक प्रभावशाली और अधिक स्थायी प्रतिकार तो केवल ऐसी प्रणाली है—अगर है तो—जो केवल इस जीवन की परिधि, अपन 'अह' की

तुष्टि और 'अह' के प्रसार तक ही सीमित न हो।

साहित्य और कला का स्थान इन्हीं प्रणालियों में है। सच्ची कला बिसरे हुए सवा को संयोजित करती है और आदमी को ऊपर उठाती है। ठीक इसी प्रकार के युग में, जैसा हमारा है—जब स्पष्टतः सभी

वस्तुओं में विघटन पा गया है—कलात्मक और पाश्चात्यिक विद्या की ओर विद्यार्थी ध्यान दिया जाना चाहिए। बहुत-से लोग हैं—और महत्वपूर्ण लोग हैं—जो ऐसे समय में कला-साधना की उपयोगिता पर प्रश्न चिह्न लगा रहे हैं, जब देश और दुनिया को ऐसी समस्याओं को सुलझाने



सम निषय

[चित्र भी मदतगार बन]

के लिए—जिन्हें आधारभूत समस्या कहा जाता है—अधिन शक्ति की आवश्यकता है। मेरे विचार से यह एक गलती है। कला की साधना विलास नहीं है, न स्वप्न-लोक में पलायन है। अपने उच्चतम रूप में कला की साधना में हमारा व्यक्तित्व अपनी उन्नतिशील आत्मानुभूति की ओर बढ़ता रहता है। किसी भी युग में कला की उपेक्षा करने पर हमें उसका मूल्य चुकाना ही पड़ता है। कला तो हमारे स्वभाव की एक विचित्र आवश्यकता है।

चारों तरफ एक अंधेरा छाया हुआ है, जो हमारे 'अह' और अज्ञान के कारण धीरे भी गहरा हो गया है। उसमें जो आत्म-उन्नति दीख पड़ती है, कला उसी के प्रकाश की विरण है। मे विरणे 'दीपन' सले के 'अंधेरे' को दूर करता है। अगर हमारी पीडा नहीं, तो कम-से-कम पीडा के कारणों को तो दूर करनी ही है।

प्रत्येक मनुष्य में वहीं-न-वही एक कलाकार है। और, जो समाज हर युव और हर बाल की कला की धानी को अपने हर सदस्य के लिए मुग्न बना देता है, वही सही अर्थों में एक नग्न समाज है।

इस सम्बन्ध में कलाकार का भी एक विशेष उत्तरदायित्व है। उसे सस्ती और महत्वहीन वस्तुओं में नहीं उलझ जाना चाहिए। एक सुसंगठित समाज में कलाकार 'एक बेकार की वस्तु' नहीं होता, व्यक्तिगत विवृतियों और अलजलूल व्यवहारों का प्रदर्शन-मात्र नहीं होता। उसमें ईमानदारी और सतुल्य होना चाहिए। उसे साधनों की तरह मनसा आगस्थ और उन्मादों का प्रमी होना चाहिए। अपने स्वयं का सावधानी से पालन करते हुए, नाम और रूप में अतर्निहित अनन्त तत्त्व के भया और समन्वय के सप्टा के रूप में वह अपना सामाजिक कर्तव्य पूरा करता है।

यह बात मदैव स्मरण रखने की है कि, कला के क्षेत्र में परम्परा की धात्री वैसी ही है, जैसी व्यवसाय में पूंजी। यदि उसका उचित उपयोग किया जाये, तो बहुत लाभ हो सकता है। लेकिन दो वस्तुएँ ऐसी हैं, जिनके सहारे परम्परा अपने को पूर्ण कर पाती है। वे हैं—प्रकृति और मौलिकता। प्रकृति, मौलिकता और परम्पराएँ, तीनों मिलकर ही एक पूर्ण कलाकार का निर्माण करती हैं।

★

शिष्यायत

एक स्त्री ने अपने पति से शिरावन की—“तुम तो बग एव बान ग मुनने हो और द्वारे मे निवाज देने हो।” पति ने उत्तर दिया—“लेकिन तुम दोनों बानों में मुननी हो और भुंह मे निवाल देनी हो।” —‘तरंगारती’ में

★

पेट हलसीया



आधुनिक उर् साहित्य के अग्रगण्य काल्प शिल्पी एवं लेखक 'मोरा' मनीहान्दो जीने बी कला के भी कितने बड़े शिल्पी हैं, यह इस लेख से स्पष्ट हो जायेगा। अपनी ही बदहवासियों से वे किन्ना आनन्द लूटने हैं बरा वहाँ पढ़िये।

★

मैं अपने गमगीन भाइया को हँसाना चाहता हूँ। चाहे वे मुझ पर ही क्यों न हँसे, लेकिन हँसे तो!

खैर, मुनिये। एक मुसायरे के तिलसिले में सँदीला गया हुआ था। एक दिन सुबह के

वक्त भी वह-
छाने के लिए
स्टेज पर की
तरफ निकल
गया और वहाँ
प्लेटफार्म पर
टहलने लगा।
इतने में गाड़ी
आ गयी और
प्लेटफार्म पर
आकर ठहर
गयी। मैं गाड़ी
की खैर करने
लगा। देखता
क्या है कि,



अपनी ही मुलता पर हँस-हँस कर
लोह-घोट हो जने वाली दो महिलाएँ

[चित्र : एक प्राचीन राजस्थानी चित्र की सरल रेखाचित्रण]

एक 'फर्स्ट क्लास' डब्बे में मेरे एक
बड़े प्यारे दोस्त बैठे हुए हैं। मैं बड़े
शौक से उनकी तरफ बढ़ा। वे भी लिडकी
के पास आकर खड हो गये। मैंने लिडकी
में तिर बालकर उनसे हाथ मिलाना चाहा

कि, लड से
जित्ती चीज के
टूटने की
आवाज आयी
और मेरे माथे
से खून टपकने
लगा। वे मेरे
प्यारे दोस्त
मायब हो गये।
आप समझें
भी, वह दोस्त
साहय को न
थे? लिडकी
के बद दीने
में धुद मेरा

ही अकम पढ रहा था।

एक बार एक नवजवान दोस्त के साथ हंटरागद के एक 'पार्क' में टहल रहा था कि, सामने मे एक मोटर में एक बुजुर्ग आते दिखायी दिये। मुझे उनसे साहचर-मलामत हुई और मोटर निबल गयी। मैंने अपने दोस्त से कहा—“देखिये, ज़िंदगी में बंम-बंम अहमकों में साहचर-मगमन करती पन्ती है।” यह कहने ही मैंने देखा कि, दोस्त के चेहरे का रंग उड गया और यह रंग देखते ही मुझ बाद आया कि, वे बुजुर्ग इन दोस्त साहचर के साथ थे।

एक दिन दफ्तर जाने में जरा देर हो गयी थी। मैंने जल्दी-जल्दी बपटे पहने और पदी उठाकर बाहर जाने लगा। एसाए मेरी बीबी और बच्चों के कहनहीं की आवाज ने यही-बा-यही रोस दिया। देखता हूँ, तो पाजामे के बजावा और मज बपट पहने हुए था।

एक बार मेरी मोटर बिगड गयी थी, जिसकी वजह से दो महीने तक दफ्तर और दूसरी जगहों पर तंगे पर जाना पडा। दो महीने बाद मोटर आयी, ता मैं अपने

दोस्त 'जीवी' को साथ लेकर शाम के वक्त धूमने निगला। रास्ते में तंगों का अट्ठा आया, तो मैंने फौरन मोटर रोक दी और जीवी से कहा —“भाई जीवी, यह सामनेवाला तंगों से लो, इसमें अच्छा तंगो नहीं मिल सकेगा।” और, जब जीवी ने बडे जोर का एक कहनहा लगाया, तो पता चला कि, मोटर में बंटे हुए हैं।

एक और दिन की बात है। गुरुद के वक्त घूमना हुआ, एक घोराहे पर जा निरग। सामने पुलिस का आदमी सडा था, उमे देखने ही मैं रुक गया और दाहिने हाथ में 'साइट' देने लगा। सिपाही हंरान हातर मेरा मुँह तानने लगा। उधर मुझे खबर आने लगा कि, मोटर बयो रोने हुए है और 'साइट' क्यों नहीं देना? जब मैंने बडे गुम्मे के साथ हाथ हिजाना गुरु किया, तो पुलिस वाला मेरे पास आया और बोला—“साहब, क्या बात है?” यह मुनते ही मुझे मालूम हुआ कि, मैं तो सडक पर सडा हूँ। इसलिए फौरन ही बडी तंजी के साथ आगे चल दिया और निपाही बिचारा वही सडा देगता रह गया!



विविन्न कर

मनु १५०५ में गोवा के पोर्तुगीज अधिनारियों ने एक विविन्न कर लागू किया था। प्रत्येक घोरी पर मागना आठ रुपये कर लगने लगा। इनके गोवा-मरकार को प्रति वर्ष पन्द्रह हजार रुपये की आय होनी थी। गोवा के निवासियों को ईसाई बनने पर मजबूर करने के लिए ऐसा किया गया था। वरीब सौ माठ तक यह कर वही लागू रहा।

—‘दीन आर पंस्टर्ग’ मे



जवाहरलाल नेहरू प्रिमक्तियों के विराट् समन्वय

१४ नवम्बर को जवाहरलालजी का जन्म दिवस है। 'मननीत' उनको रात रात अभिन्न रूप धारित करता है और कामना करता है कि, अपनी निगूदित व्यापिनो यश-सुरभि के साथ वे रागासु प्राप्त करें। नीचे हम ■ डी पी मुखर्जी की लेखनी से सम्बद्ध उनके विभूति पुजित ध्वित्व का एक आयत मार्मिक विवेचन प्रस्तुत करते हैं।

★

जब पहली बार कांग्रेसी सरकारों की स्थापना हुई, मैं अस्थायी रूप से युक्त-प्रात की प्रथम राष्ट्रीय सरकार के अधीन काम कर रहा था। उस समय मुझ जनता तथा राज्य के बहुत-से सेवकों के सहयोग का सुअवसर मिला। यद्यपि मैं अनेक अधिकारियों ने एक था, तथापि हमारे सम्पर्क मानवीय रहे। उन्होंने एक विश्वविद्यालय का अध्यापक समझकर मेरा यथोचित सम्मान किया और मैंने अपने अनुभव को विस्तृत तथा गहरा बनाने के अवसर का उपयोग किया। मैंने बड़ी मेहनत से काम किया और काफी सोचा। मन्त्रिमण्डल का बौद्धिक सरावन



[जवाहरलालजी
भूटानी बेशमूषा में]

तथा नैतिक गठन मुझे प्रायः अभिभूत कर देता। इन समयों सबसे अधिक मानवीयता थीमती पठित में मिली। मैं उनसे सहज भाव से मिल सकूँ, इसकी अनुग्रहपूर्ण अनुमति

उन्होंने दी थी। राजनीति की मारधाड़ से मुझे उनकी तटस्थता अच्छी लगती।

जवाहरलालजी उन्ही के यहाँ बँसिया-बाग में टिप्पे थे। उनमें मेरा परिचय पहले

से था। उन्होंने इच्छा प्रकट की कि, मैं दूसरे दिन उनके साथ भोजन करें और घानि से कुछ बातचीत हो।

अतः मैं गया। जाडो की शाम थी। पठितजी अकेले न थे। मैंने तो सोचा कि, यह मुलारात भी रफी साहद की मुलाकात की तरह होगी, जिनका एक क्षण भी अपना नहीं होता। किन्तु एक-एक करके सभी चले गये और केवल हम लोग रह गये।

थीमती पठित न दूरदर्शिता के साथ एक बगल की मेज पर बढिया सिगरेट के टिन का प्रयुक्त कर रहा था। अगीट्री में लकड़ी चटख रही थी। कमरा गर्म था।

श्रीमती पंडित पर को सादगी से सजाने का रहस्य खूब जानती है। वे सिमिट कर सोफे पर बैठ गयी और हम याते बरने लगे।

मैंने पंडितजी से एक सीधा-सीधा प्रश्न पूछा—“लोगों को नेहरूओं से क्या दिखायत है?” वे स्मिगरेट का धरा लेते रहे। मुस्करा कर उन्होंने कहा—“हम लोग ठीक अपने नहीं हैं।” उनकी आत्म-वक्ता के बहुत-से अंश मेरे मस्तिष्क में घूम गये। “हम लोग अपने नहीं हैं—” लेकिन किसके अपने नहीं हैं? क्या भारत के? लेकिन भारत से वे प्रेम करते हैं और सर्वत्र उसके निर्माण में लगे हुए हैं। और, भारत तो उनका है और इस विनिमय में कोई दोष भी नहीं है। तो फिर क्या शिक्षा-

दीक्षा तथा जीवन-परिपाटी के अभिजात्य के कारण ही वे बराबे हैं? सामाजिक दूरी ने ही मानसिक दूरी की है? तो क्या, यह अपने को वर्गचेतना से मुक्त करने की उनकी असफलता है या दैर्घ्यालु प्रसन्नता की सुदृढ़ता या यह शर उनसे उमर विस्तृत दृष्टिकोण तथा भविष्य परिवर्तनता के कारण ही है, जो जनमाधारण को साधारण-तया नहीं रक्षता?

शायद लोगों ने उन्हें स्वप्नदर्शी, कालानिर्वा तथा अंतर्राष्ट्रीयवादी बहुरंग उनकी आलोचना की है। परन्तु यह कारण तो

पर्याप्त नहीं है। सब क्या इसी परिणाम पर पहुँचना होगा कि, प्रेम भूत्यत उभयमुखी होता है—उसमें आकर्षण और विपर्यय दोनों होते हैं?... ऐसे प्रश्न उस शाम मेरे मन में घूमते रहे। अब भी मेरे पास उनका कोई उत्तर नहीं है। तथ्य वहीं रह जाता है कि, यद्यपि वह जनता को आगुष्ट ताँ बरते हैं, फिर भी गांधीजी की भाँति जनता के नहीं हैं। जन-समूह में गांधीजी उसका एक अंग हो जाते थे—उससे अलग नहीं पहचाने जाते थे। जवाहरलाल न केवल जन-समूह में विचित्र रहते हैं, बरन् छोटी-छोटी समितियों में भी पृथक् रह जाते हैं। पच्चों के समूह को छोड़कर किसी समूह में वे अपने नहीं होते। कितना एवासीपन है यह।



गणेश

[चित्र: 'सर्व' शीर्षक से तैयार]

मैंने उनको लाखों की भीड़ से बाँटें मिलाते हुए देखा है। उसमें उन्हें प्रेरणा मिलती है, जैसे वे स्वयं उसको प्रेरणा देते हैं। लेकिन यह सम्पर्क बँटा प्रवाह रहस्यमय नहीं है, जैसा गांधीजी का था। जवाहरलाल का प्रभाव आदान-प्रदान के व्यापार पर आधारित है। वे यात्री के द्वारा परस्परता स्थापित करते हैं। एकप्राणता, अभिप्रेता उसमें बदायित् नहीं होती।

राजनीति से हम लोगों की बातचीत साहित्य के क्षेत्र में चली गयी। उन्होंने इस्लामी बकि लोहा का चित्र किया।

उन्होंने किसानों तथा सैनिकों को उसके गीत गाते हुए सुना था। "हमारे आंदोलनों में ऐसे जनगीत नहीं बिकसे।" मैंने स्वदेशी-आंदोलन के दिनों का जिक्र किया।

वे बोले—“हो सकता है कि, राजनीति में ही उलझ जाने का हमें दह मिला, मगर और चारा नहीं था।’ अंतिम वाक्य कहने समय उनकी आवाज में जो विषाद था, मुझे आज भी याद है।

उनकी आवाज कदाचित् भारत की सबसे सश्रुत आवाज है। रवीन्द्रनाथ ठाकुर की आवाज कुछ घरोक थी और प्रायः तीखी हो जाता करती थी। गांधीजी की स्पष्ट आवाज अपनी सीधी सादगी से अंतर डालती थी। श्रीमती बेसेट की आवाज में स्त्री-अनोचित गोलाई थी, सरोजिनी नायडू की निर्मल और सगीतमय थी। धीनिवास दासजी के स्वर में चारुता थी और मुरेन्द्रनाथ बनर्जी के स्वर में षडह। मालवीमजी की वाणी मधुर थी, किन्तु जवाहरलाल की वाणी में सश्रुत स्वर की एक अर्ध-नर्म घुंघली गूँज रहती है, जो दमकती नहीं। उसमें विचारमयता का सवेदनशील सन्नेह है, एक ईषत् विलासिता, जो सम्पूर्णतया पोखी न होकर भी कदाचित् नारी के लिए अत्यंत आवर्णक होगी। रोप में भी उसमें विषाद



[जब मन मरुपल में अंकुरित प्रप प्रसन्न सातिता को अमृत-सिक्कन करते हुए।]

की गहरी छाप रहती है। ऐसी आवाज वायरन की ही रही होगी।

जो हो, उस सौम्य को उस वाणी में मने एक ऐसी आत्मा के अतर्द्ध की झोंकी देखी, जो न तो अतीत से एकतान है, न वर्तमान से—जो उस भविष्य से तदात्म्य चाहती है, जिसे कुछ वह भावना के और कुछ बुद्धि के सहारे मूर्त करती है। 'और चारा नहीं है—अगर होता, तो अच्छा रहता।'

जवाहरलाल बटनामों के सम्मुख झुक कर भी अपना मस्तक ऊँचा हो रखते हैं और अपनी अभिलाषापूर्ण दृष्टि उस भविष्य पर जमाये रखते हैं, जब भारत की पुनर्जाग्रत आत्मा अपनी राजनीति के केचुल को उतार फेंकेगी। जवाहरलाल

इस्पानी दूरियों की, वहाँ की प्रादेशिक संस्कृतियों व लोगों के कठोर व्यक्तिवाद की बातें करने लगे। उनकी सहायभूति प्रजातन्त्रियों के साथ थी, किन्तु इसकी अभिव्यक्ति केवल उनकी आवाज से होती थी।

खाना बहुत अच्छा था। फिर गांधीजी की बात होने लगी। मैंने पूछा—'क्या गांधीजी इस्पानी गृह-युद्ध के व्यापक प्रभावों से परितुष्ट हैं? आपने जो कुछ बताया है, उसके अलावा?'

"बढ़ नहीं सकता। उनका ध्यान भारत पर ही केन्द्रित है। मगर यह क्यों पूछते हैं?"

“कारण तो स्पष्ट है। इसलिए कि, हमारा भाग्य विश्व के घटना-चक्र से जुड़ा है। मैं नहीं समझता कि, गांधीजी में यह गुण है, जिसे आज 'इतिहास का बोध' कहते हैं।”

“बदायिन् नहीं। किन्तु अगर आप यह सोचते हैं कि, उनके नातिनारी प्रभाव का युग समाप्त हो गया है, तो आप भूल कर रहे हैं। भारतीय समस्याओं को वे बहुत अच्छी तरह समझते हैं और उनकी दृष्टि सच्ची होती है।”

“किन्तु यह हमें देन से बाहर की अनेक बातों पर निर्भर है।”

“बिभी हृद तक। अजीब बात है कि, पारों और से विश्व-शक्तियों हमें आज्ञा कर रही हैं; लेकिन हम बड़े ही धुंध हैं।”

जवाहरलाल भारतवर्ष की बृहत्तर पीढ़ा के प्रति अत्यधिक सचेत है; किन्तु इसमें भी अधिक सचेत है वे, इस बृहत् पीढ़ा से उत्पन्न होनेवाले हमारे उत्तर-दायित्व के प्रति। उनके उग सात वाक्य में मुझे एक वरुण ध्वजा का आभास मिला, जो साधारणतया उनमें सम्मिल नहीं होती।

उनके आवेगों में बहुत-से लोगों को अहंकार दिगमयी देता है। मैंने भी उन्हें देखा है। पर इतिहास के सम्मुख वे नष्ट हो जाते हैं। इसमें जवाहरलाल खिल के समान है। खिल की भाँति जवाहरलाल भी देशराल की भावना से प्रभावित होते हैं। दोनों में नाटकीय कर्म के प्रति सहज आकर्षण है। किन्तु परिणाम दोनों के भवनीय

भिन्न है। जवाहरलाल प्राचीन की रक्षा करना चाहते हैं; पर प्राचीनतावादी नहीं हैं। वह 'लिबरल' परम्परा की अन्तिम सीढ़ी पर हैं। उनमें केवल समानवादी गुणवत्ता है, जो सामाजिक बीमों के समर्थक खिल में नहीं है। भविष्य की परिस्थितियों के दबाव पर पंडितजी उसे छोड़ने को तैयार हो जाएंगे, जिसे आज वह पकड़ते हैं — पर एक दर्द के साथ, जिससे कारण वह उससे अधिक 'रोमांटिक' प्रभावित हो सकते हैं, जितने वे भारतवर्ष में हैं। आज की परिस्थितियों जय विगत का के मानदंडों से साक्षित होती है, तभी वह हमारी दर्द पैदा होता है; लेकिन पंडितजी आज की परिस्थितियों से भागते नहीं।

हम लोग फिर बेंचक में लौटें। उन्होंने मुझे और अपने को कहा और उनके बाद के एक घंटे की स्मृति मेरे दिमाग में आज भी ताजी है। अलमारी में कुछ कविता की पुस्तकें थी, जहाँ तर मुझे याद है—आबेन, वाल्टर डेन्हामेयर, स्पेंडर, एलियट और ईट्ज की। वे अनुरागमयी उद्योगियों ने कभी एक को निकालने, कभी दूसरी के पन्ने उलटते। कभी एक पर जरा रुके, तो कभी दूसरी से कुछ कवियों का गुनायी। मैंने कितने ही कवियों को कविता-पाठ करने हुए सुना है; परन्तु पंडितजी का कविता पढ़ने का ढंग उन सबसे अच्छा है। बड़ी आनंद-स्पष्ट जोर, शक्तिशाली भावप्रधान, नाटकीयता या अभिनय नहीं—एक सार्व, सर्वदलीय,

एस्पिरिन (एसेटिल-सैलिसिलिक एसिड) के बिना ही क्याल का आराम

सेरिडोन

दर्द

को खत्म कर देती है!



दो आना

हर एक टिकिया पूरी सुराह की होती है
न पेट में कोई गड़बड़ी होती है और
न बाद में किसी तरह की सिधिलता।
सरदर्द, दाँत का दर्द या कोई भी दर्द होने पर औरन
सेरिडोन लीजिए। सेरिडोन दर्द को प्रायः तत्काल
खुरप कर देती है। इससे न पेट में कोई गड़बड़ी
होती है और न बाद में किसी तरह की सिधिलता ही।
सेरिडोन न केवल खाना की करता है, बल्कि आपको
हालाचि और प्रसन्न भी बनाती है और दर्द से दूर
दनाम बेचैनी को मिटा देती है। कुछ ही मिनटों में
आप फिर ताजा और सुस्त महसूस करने लगते हैं।
सेरिडोन की टिकिया इच्छा अपने पास रखिए
और स्वयं हम बात का सलूत इच्छित
हीजिए कि यह दर्द की दवा से
बड़कर भी और बहुत कुछ है।



दर्द दूर करता है

सेरिडोन दर्द को प्रायः तत्काल खुरप
कर देती है — अधिकतर तो दुःखीवाली
एक टिकिया ही काफी होती है।

आराम पहुंचाती है

सेरिडोन आपको कमियों को आराम
पहुँचाकर दर्द से दूर बेचैनी मिटाने में
सदर करता है।



खुरप जाता है/बनाती है

सेरिडोन भीमे से स्फूर्ति देकर कुछ ही
मिनटों में आपको फिर से सुस्त और
ताजा बनाती है।





लौमा

मस्तिष्क को शांत रखता है।

लौमा

अधिक बाल उगाता है।



लौमा

सुफेद वालोंको श्याम बनाता है।

लौमा

बड़ी प्यारी खुशबू देता है।



सुफेद वालोंको श्याम बनाता है।

लौमा एजन्ट मेसर्स : दिल्ली मेडिकल् स्टोर्स प्राइवेट लि., दिल्ली १

लौमा सी. ए. मेसर्स प्राइवेट लि., नया दिल्ली २.

दिल्ली एजन्ट मेसर्स : दिल्ली मेडिकल् स्टोर्स प्राइवेट लि., दिल्ली
नया दिल्ली एजन्ट मेसर्स : शाह बाबोली अंग्रेज क. १२९, राधा बजार स्ट्रीट
दिल्ली १ स्टॉकहोल्म आर जे मेरला अंग्रेज कपर्स सीलेना रोड, मजमेर.

अनरग अलगाव, उचित मुस्ता, अविन भारीपन कही नहीं मानो वात्सिल्यनी (इटली का महान कलाकार)-द्वारा अक्ति परिपना की भोति गुरुत्वाकषण म परे। वाल्टर डेव्हा मेयर के एक गीत का पढत समय उनका स्वर जरा सा उड्डलिन हो उठा। कविता-पाठ एक घट मे अधिक चला। कितन हमारे राजनीतिक आज कविता पढत हाग ?

आगाखों महल पूना में बड़ी गाधीजी स सरोजिनी नायडू न आग्रह किया था कि वे हाउड आव हवेन (प्रसिद्ध टामसन की एक प्रसिद्ध कविता) पढ। अण न देखा कि वे कुत्ता के द्वारे म एव पुस्तक पढ रह हैं। थामती नामडू अवश्य अपवाद थी किंतु वे स्वय कविमिनी थी। मौलाना आजाद, मुता हैं, अम जण्टी वस्तुआ के अतिरिक्त कविता के भी पारंगी ह। जवाहरलाल कवि नहीं हैं पर मममता हैं कि, इतिहास के बाद उह कविता ही अधिक श्रिम हैं, जो देश के गिण परम सौभाग्य की बात हैं।

अर्थ राजि धीत चुकी थी। मे उठना चाहता था। किंतु कमरे में माना कुछ 'सजीव' मेंढरा रहा था। वे पढने गए।

धीमती पछित विश्राम करन चल गया थी और म मुनता रहा।

आपन विज्ञान क्या लिया था ? अथवा अमर अत्र तो साहित्य है।

वास्तव में जवाहरलाल एक सज-शाल कलाकार ह। उनके लेखा के कुछ अंश का पढत हुए मेरा बला अक्सर भर आया है- मैं रोमांचित हो उठा हूँ। उनकी दौली बर्जोनिवा वरुफ एन्टिभावध आपन या टी ई लारस की-भी नहीं। उनकी लेखनी म वास्तव धर्म ही अनायास निमृत् हात है जैसे उम रान उनके मुख मे दुमरा के शब्द निमृत् हो रह थ।

भर प्रश्न का उत्तर उहान नहीं दिया। हम लाय बरामदे में आ गए। विश्वविद्यालय म आपकी अनुपस्थिति हमें बड़ी खटकती है। आपको तो हम लोगों में होना चाहिए था।

हैं और मेरे मातर जा अनक दन् ह मा ?

अलिद तक पहुँचा कर उहान विदा ली। तब मे वह बान भरे मन में बार-बार गुँज जाता है। साबता हूँ आत्म विश्लेषण का यह कितना उत्कृष्ट नमूना था, त्रिपु. कोई चाणक्य ही कर सकता था।

✱

दारिद्र्यस्थरामूनियाञ्चा न द्रविणान्यति।

अपि कौपीनवानशमुस्तथापि परमदरः॥

-निधनता मे नहीं, बल्कि साधना से मनुष्य की दीनता प्रकट होती है। शिवजी कौपीनधारी-परम निर्धन- होकर भी परमदर ही मान जात है।

—'भाजप्रवच' से

✱

ज्ञानवर, आदमी, पारिश्रम, खुदा आदमी की है हजार किस्में

'मानी के इत प्रतियोगी और वो मापदण्ड बनाकर क्यों न हम-आप भी अपना आत्म निरीक्षण करें ?' मानव की महत्ता के लिए नवन सभ्यता की जरूरत है, न ऊँचे खानदान की— जरूरत है सिर्फ दुः संरक्षण और सर्वोच्च भावना की। उद्गम के पुनर्निर्माण की लक्ष्य अष्टुत इत के कुछ साधारण अनिमाधारण 'गुदकी के लालों' को पुनर्कर उनको बुनियादी महत्ता का मूल्यांकन किया है। नीचे हम एक ऐसे ही 'लाल' की कुछ प्रसंगरेखाएँ देकर उसके चारित्रिक वैभव को अपनी अपने पाठकों के समुचित प्रस्तुत करना चाहते हैं।

★

लोग वादशाहो, अमीरो और भगदूर

लोगों के हालात लिखते हैं, विन्तु में
एक गरीब सिपाही का हाल लिखता है।

इसान होने के नाते सब
इसान बराबर है। इसमें
अमीर और गरीब का
फर्क कोई चीज नहीं।
और—'पूल में घर आन है,
घोड़े में भी एक आन है।'

नूर मो हैदराबाद के
अम्बल रिगले में सिपाही
के तौर पर भर्ती हुए।
अपनी फौज में हैदराबाद
की फौज एर गास हैमि-
सन रखती थी। भर्ती के

दकन की छान-बीन होती थी। हर कोई
नहीं ले लिया जाता था, बस सिर्फ
खानदानों शरीर ही लिये जाते थे। इसी
वजह से इस रिगलेवाले बगी इज्जत की
नवनीत

नजर से देखे जाते थे।

नूर खाँ फौज में बड़ी आन-आन से रहे।

वे फौज में 'डिल-इस्ट्रबटर' थे, इसलिए



[मोहनी अष्टुल हक]

अक्सर गोरू अकमरो से
बाकिर थे। घोड़ों की
खूब पहचानते थे। घड़े-
बड़े सरकास घोड़ों को,
जो पुट्टे पर हाथ भी न
धरने देते थे, उन्होंने छीक
लिये। उनके अपसर
उनके पुनर्निर्माण और
होमियारों से बहुत गुप्त
थे। लेकिन उनके सुरुषन
में अक्सर गाराज हो
जाते थे। एक बार उनके

बमाडिय अकमर ने सफा होकर 'डैम' पह
दिया, उन्होंने फौरन 'रिपोर्ट' कर दी।
लोगों ने चाहा कि, बात यहीं दब जाये।
लेकिन मान गाह्य ने एक न मुनी और

जनरल तब बात पहुँचायी। आखिर, गेरे
अफसर का 'वोट मासल' हुआ और उसे
इनसे माफी मांगनी पड़ी। ऐसी बाजु-
मिजाजी पर तरक्की की उम्मीद ही गलत
है, चुनौते दफ्तारी से आग न बदे।

कर्मल फ्रैन खान साहब पर बहुत
भरोसा करते थे। इसीलिए जर वे
इस्तीफा देकर विलायत बयें, तो अपना
हजारों रुपयों का सामान इन्हीं के हवाले कर

गया। यह बात अबेज
अफसरों को बहुत
खुरी लगी। कमांडिंग
अफसर ने कर्मल को
लिखा—“आपने हम
पर भरोसा न किया
और एक देसी दफ्तदार
के हवाले अपना
कीमती सामान कर
गये। अगर आप यह
सामान हमारे हवाले
करते, तो हम अच्छे
दामों में बेचकर
रक्का आपको भज

देते। अगर आप बहे, तो अब भी इतना
ही सक्ता है।” कर्मल ने जवाब दिया—
“मुझे नूर सों पर तयाम अबेज अफसरों
से ज्यादा भरोसा है। आपको कोई
सक्लीफ करने की जरूरत नहीं।” इस
पर वे और दिगडे। कमांडिंग अफसर
कर्मल का सामान देखने आया और बोला—
“पत्रों फलों चीज मेमसाहब ने हमारे

यहाँ से मँगायी थी, जिन्हें वे जाते वक्त
वापस करना भूल गयी। अब तुम मे सव
चीजें हमारे बगले पर भेज दो।”

नूर सों ने जवाब दिया—“यह सामान
मेरे पास अमानत है। मैं इसमें से एक चीज
भी आपको नहीं दूँगा। आप कर्मल साहब
को लिखिये। वे अगर मुझे लिखेंगे, तो
फिर मुझे देने में कोई उज्य न होगा।”

कमांडिंग अफसर बहबडाता हुआ वापस



[लाई कर्मल ने सिगरेट चुलगाया ही
या कि, खान साहब पीजो सलाम
पर आगे बदे—“यही सिगरेट पीने
की इजाजत नहीं है।” १४ ६८]

चला गया। खान
साहब ने सामान को
एक मुशी से लिखवा
लिया और सबको
बखबर कीमत कर्मल
साहब को भेज दी।

एक दूसरा कर्मल
जब विलायत जाने
लगा, तो एक सोने
की घड़ी, एक बटुक
और ५०० रुपये
नकद खान साहब को
इनाम देने लगा, मगर
इन्होंने सिर्फ बटुक ही
ली और बाकी चीजें वापस कर दी।

कर्मल स्टैवार्ट हंगोली-छावनी के कमा-
ंडिंग अफसर थे और खान साहब को बहुत
पसंद करते थे। एक रोज ये कर्मल के यहाँ
सडे हुए थे कि, एक अबेज फोड पर सवार
आया। उतर कर इनमें बहा कि,
फोडा पकड़ी। इन्होंने जवाब दिया—
“मैं साईत नहीं हूँ।” अफसर बहुत बिगडा।

आखिर, बाग एन पेड की टहनी में उड़ना कर अंदर चला गया। लेकिन घोड़े की बाग टहनी में निबल गयी और वह भाग निकला। अफसर साहब ने बड़ी मुश्किल में तलाश कराके पकड़वाया, तो घाटे की बुरी तरह जन्मी पाया। उसने कर्नल में खान साहब की बड़ी निरायन की।

ऐसे होश में फौज में ज्यादा दिन तक ठिकना मुश्किल था, इसलिए बांगर वनकर अलताह में जा बाकिल हुए। कर्नल स्टैवार्ड के कहने में डाक्टर ने जो रिपोर्ट दी, उस पर फौज से पैशन दे दी गयी।

कर्नल चाहते थे कि, इनको पुलिस में कोई अच्छी-सी जगह दिलाये, लेकिन ये राजी न हुए। आखिर इनके कहने पर इनकी स्वाहिश (इच्छा) के मुताबिक इन्हें दोस्तावाद के किन्हे के निपाहियों का जमादार बना दिया गया।

जिन दिनों खानसाहब दोस्तावाद में थे, उन्हें कर्नल दोस्तावाद आये। इन्होंने यहाँ कामदे में तोपों से सलामी दी। आर्ड कर्नल इफ-उपर घूमने के बाद किन्हे के ऊपर गये, तो वहाँ गुम्ताले के लिए कुर्मी पर बैठ गये और जेब में सिगरेट-बैस निकालकर सिगरेट पीना चाहा। उन्होंने सिगरेट मुलगाया ही था कि, खान साहब फौजी गलाम करने आये यहाँ और कहा—
“यहाँ सिगरेट पीने की इजाजत नहीं है।”
लार्ड कर्नल ने फौज सिगरेट को जूने में रगड़ डाला। सूबेदार नवाब बर्मा-नवाजजग और दूसरे ओहदेदारों का रग नवनीत

उठ गया, मगर मोता ऐसा था कि, खान साहब को कुछ बह भी नहीं मरते थे। हाँ, बाद में खूब लड़े हुई। लेकिन खान साहब ने मिर्क कापदे की पायरी की पो; इसलिए कोई कुछ न कर मरता था।

कुछ दिन बाद मिस्टर बाकर अर्ध-अर्ध होकर आये। रियागत में गुधार शुरू किया, तो दोस्तावाद का किला भी लोड में आ गया। दूसरों के साथ खान साहब भी अलग कर दिये गये।

दोस्तावाद में इनकी कुछ जमीन थी। अलग होने पर, उसमें बाग लगाना शुरू कर दिया। मिस्टर बाकर दोनों पर दोस्ता-वाद आये, तो इनके बाग में भी जा पहुँच। उस वक़्त खान साहब बाग में घूम रहे थे। पूछा—“क्या हाल है?” कहते लगे—“आपकी जानो-माल को दुआ देता हूँ। घाम गंधने की नौरत आ गयी है।”

मिस्टर बाकर मुस्कराते हुए चले गये। उसी जमाने में डा. मिरानुल हमन औरगावाद में मंदर मोहनमिम-तालीमान (निष्ठा-विभाय के प्राधिपारी) होकर आये। नूर लो में मिले, तो जोहरी को लाइ गये और नवाब बरजोरजग सूबेदार में कहकर मकबरे के बाग में लगवा दिया।

सूबेदार अपना पोंडा बेचना चाहते थे। बरज में डाक्टर साहब में जिज आया, तो वे बोले—“मे मरौद लूंगा; मगर पहले नूर लो को दिमा लूँ।” वहाँ ने बाग आकर डाक्टर साहब ने नूर लो में कहा, नो वे बोले—“आपने मरव किया,

मरा नाम ल दिया। घाड़म काई एन हुआ
ता म छियाऊंगा नहीं और गूबदार साहब
मुफ्त म नाराज हो जायेंगे।

मगर डाक्टर साहब न मान आर
नूर खा को जाना बना। घाड़ा नसल
का तो अच्छा था मगर था एबदार।
खान साहब न आकर साफ-साफ कह
दिया और डाक्टर साहब न घाड़ा
खरीदन से इन्कार कर दिया। गूबदार
साहब आग-बबूला हो गये। अगले दिन
भाग म पहुँचे और रजिस्टर मगानर नूर खा
के नाम पर इतनी जार मे काम फरी कि
'क्यों म जान होती तो बिलगिला उठते।

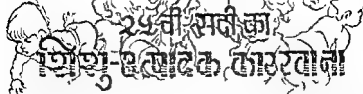
कुछ दिन बाद डाक्टर साहब तरक्की
पाकर हुंदरावाद बन गये और उनकी जगह
पर म औरगनाद आया। डाक्टर साहब
न नूर खा से मुतायत करायी और मन
उहे अपन बफर में मुनी रख लिया। इसने
बाद जब भाग की निगरानी मेरे हुवा
हुई ता मन फिर उह भाग में भज दिया।
आखिर दम तक वह हमी खिदमत पर रहे
और अपन काम को बड़ी मेहनत और
ईमानदारी से करते रहे।

खान साहब में कुछ एगो बान थी जा
यह लोगो म भी नहीं हानी। सन्वार्द-
बात की और मामले की-तो उनकी आदन
म ही थी। दोस्ती के पक्के और बजदार
थ। उनका घर मेहमा-भराव (जहाँ प्राय
मेहमान आते रहे) था। औरगनाद आन
जानवाले पान के बक बतकल्लुफ (धिला
सकाच) उनके घर पहुँच जाने थे और व

इस बात से बहुत खुश हान थे-बल्कि
कभी-कभी तो डाक-बैंगने म मुसाफिरो
का बुलारर घर ले जाते और उनका
खिलाते। मीठी चीजा के बड शौकीन थ।
कहा करते थे— नमकीन खाना ता
मजबूरी म खाता हूँ। अक्सर उनकी जग
म गुड रस्ता हुआ मिलता था।

डाक्टर सिरागु हसन जब-कभी
औरगनाद आते ता अपना रुपया-पैसा
स्टेशन पर ही खान साहब के हाथ म दे
देते और खान साहब ही उसे खच करते।
डाक्टर साहब के जान म पहले एक दिन
के हिसाब लेकर बढते। कभी-कभी जब
गडबड होनी बाधी रात तक लिय बैठ
रहते। डाक्टर साहब बहुत कहते— खान
साहब यह क्या कर रहे हो? अगर कुछ
बाकी बचा हो तो दे दो-ज्यादा खच हुआ
हा ता लगे। मगर जब तक हिसाब टीक
न बढता उहे इमीनान न होता। अगर
कभी डाक्टर साहब के चले जान के
बाद शबहा होवा तो फिर हिसाब खर
बढते और फिर डाक्टर साहब को खत
लिखकर भजते— आपके इतन आने रह
गय थ भज रहा हूँ। या— मेरे इतन
पम ज्यादा खच हो गय थ भज दीजिय।

मुझे ये अक्सर याद आते ह और यही
हान उनके दूसरे दोस्ता और जाननवाला
का हूँ। इसा मे अदाया हा सजता हूँ कि
वे निरतन अच्छ आदमी थ। काम एन हा
लोगा से बननी ह। बाग। हमम
बहुत-मे नूर खा होने।



हमारे नित्य नैमित्तिक जीवन पर विज्ञान का निरंतर तीव्र होना ज़रूरी है। हमने पौरुष को बर्षों में पिस तीस तक पहुँच जायेगा, प्रत्युत लेख में उसके एक पक्ष का निरीक्षण कीजिये।

*
शिशु-निर्माता के साथ अशोक ने एक बिसाल कमरे में प्रवेश किया। कमरे में मेजों की कई समानांतर पंक्तियाँ लगी थीं। इन बड़ी व लम्बी मेजों पर दो-दो अनुवीक्षण-यंत्र रखे हुए थे। इन यंत्रों के नीचे हवा-बद पर्यन्तलियों परीक्षण के लिए रखी हुई थी और लगभग १०० प्रयोगकर्ता परीक्षण-त्रायों में जुटे हुए थे। ये स्वतः चरित्रकारी प्रयोगकर्ता हाथों में एक विशेष प्रकार के प्लास्टिक के पीले दस्ताने पहने हुए थे। कमरे की दीवारों से एक बद्धुत तीव्र प्रकाश निकल रहा था, जिससे सम्पूर्ण कमरा स्वतः हो उठा था। एक विचित्र-सी नीरवता कमरे में छापी थी। अशोक को लगा, जैसे किसी प्रेत-भोज में पहुँच गया हो।

अशोक ने आश्चर्य-स्तम्भित हो पूछा—
 “इतने शुश्रूषण मिल कहाँ से जाते हैं?”
 शिशु-निर्माता ने अशोक पर गुन गुन मुस्कान दी।
 “इन्हें हम स्वयं ही ‘जैविक-रासायनिक रीति’ से बनाते हैं। ये कृत्रिम शुश्रूषण ही काम करते हैं, जैसा मानव में बह-बोध में पाये जानेवाले शुश्रूषण। इन्हें घटे पैमाने पर बनाने का काम एक दूसरी मिल करती है। धरित होने की बात नहीं— २५-वीं सदी में शुश्रूषणों को मानव-शरीर के बाहर, कारखानों में, उन्हीं प्रकार बनाया जाता है, जैसा यमराज के सेजाय को। देखिये यहाँ।”

अशोक ने उन्हीं कहने पर एक अनु-
 शिशु-निर्माता अशोक की भुगारुति का अभ्ययन कर मुराराया। बोला—
 “यहाँ का वातावरण आपकी विचित्र लग रहा होगा। बीसवीं सदी के मानव के लिए यह वास्तुतः आश्चर्यजनक है। पिछले ५०० वर्षों में विज्ञान ने जिनकी प्रगति की है, आप सम्भवतः बलाना भी नहीं कर सकते।

“शिशु-” वह गम्भीरता से बोला—

नयनोत्त

धी गण-वन म देखा-घुडीदार शिर के साथ
दस लम्बी उम्बी दुमा वो घुमाते हुए हनार
गनानु नयी म इधर-से उधर लुढ़क रह्य।

मिल का दूसरा कमरा भी काफी बड़ा
था। पहले कमरे के समान ही उसमें मेज
लगा हुई थी। श्वेत वस्त्रधारी प्रयोगकर्ता
महा भी पीले दस्तान पहन काच की बड़ी

बड़ी बातलो को वह
ध्यान से अपन अनु-
वीक्षण-यन्त्रों की सहा-
यता से देख रहे थ।
गिगु निर्माता न
अगोक को बताया-
यह गर्भाधान केन्द्र
है। बड़ी-बनी काच
की इन बोटलो को
'डिम्बोपक' कहते र।
इन डिम्बोपको म
ही नारी-अंड और
गुक्कण का संयोग
करवाया जाता ह
और इसी म नवीन
भ्रूण की उत्पत्ति
भी होती ह।

अगोक न देखा एक डिम्बोपक म
नारी-अंड की झिल्ली पर गुक्कण आक्रमण
कर रहा ह। दूसरे डिम्बोपक म गुक्कण
नारी-अंड की झिल्ली को फोड़कर उसने
अंदर स्थित श्वेत पदार्थ म प्रवेश पा चुका
था। तीसरे म गुक्कण की घुड़ी और दमएव
दूसरे से अलग हो गयी थी और घुड़ी

नारी अंड के केन्द्र को खोजती हुई आगे बढ़
रही था। चौथ डिम्बोपक म घड़ा और
केन्द्र का संयोग हो गया था। बाद के
डिम्बोपको म एक वीरपाणधारी भ्रूण
कमरा दो-चार-सोठह वीरपाणधारी होता
चला गया था।

गिगु निर्मातानरहा- चौथ डिम्बोपक



[सुप्रसिद्ध गि कार शक्ति श्रमर द्वारा एक
प्रजनन शाला की वस्तुओं चरम निशामक
बना हुआ वह निक जनसंख्या का संतुलन
बनाये रखने के लिए पुरुषों से स्त्रियों
में परिवर्तित करने की वैवारी में हैं।]

एक ओर से पर पर का तीव्र गारहोरहा
था। ऐसा लगता था जैसे कोई भारी वजन
चल रहा हो। निवट सड़ एक प्रयाणकर्ता
न गिगु निर्माता का सबूत पाकर दावार
म लगा एक बटन दबा निमा और तत्काल
ही ठोव दावार म एक द्वार निवृत्त जाया।
द्वार स होकर अगल न गिगु कमर म

म हा मानव भ्रूण
को जन्म मिला ह।

अगोक का कौतू-
हल और घना- इतनी
बड़ी सख्या म नारी
अंडो को भग किस
प्रकार महा उपर्य
विया जाता ह?

आप्य आपका
यह तासरे कमरे म
चलकर पात होगा।

गिगु निर्माता के
साथ जिस कमरे म
इस द्वार अगोक न
प्रवेश किया वह क्षत्र
फठम अब तक के सब
कमरों से बड़ा था।

प्रवेश किया, उसमें अन्य कमरे में कुछ अधिक उष्णता अनुभव हुई। कमरे में चारों ओर पारदर्शक प्लास्टिक के बड़े-बड़े पात्र रख दिए थे। सभी भास्-आयुओं में भरे थे। उनकी ओर खड़े करने हुए शिशु-निर्माता न बहू— इन्होंने पात्रों में हमें नारों-अंड मिलाते हैं। इन पात्रों में सजीव गर्भाण्ड रख दिए हैं, जो एक निश्चित समय में नारों-अंडों को एक निश्चित मात्रा में उपलब्ध कराने हैं।

“पर ये सजीव गर्भाण्ड इनकी बड़ी मात्रा में किस प्रकार उपलब्ध किये जाते हैं?” अंतर्गत की जिज्ञासा तीव्र हो उठी थी।

शिशु-निर्माता गम्भीर हो उठा—“इसे भलीभाँति समझने के लिए आपको अपनी २०-वीं सदी के सामाजिक भावों को पूरी तरह से भूलना होगा। २५-वीं सदी के समाज में स्त्री और पुरुष का प्रचार में समान हो गये हैं। स्त्रियों के कारण जो एक पदार्थ उग बाल में नर-नारी को अलग किये रहता था, वह अब मिटा दिया गया है। इस सताव्वी की श्रमिक नारी अपने गर्भाण्ड को शल्प-निष्पादक निष्कलबाने में भर्त्सित करती है। इसके लिए उसे छ माह का वेतन ‘बोनस’ के रूप में दिया जाता है। यही नहीं—इस सदी में वाक्पन सम्प्रदाय और सम्पत्ति का प्रतीक समझा जाता है। इसी कारण शिशु-उत्पादक मिश्रण में निमित्त प्रत्येक चार नारियों में से तीन देखा और एक गर्भाण्ड वाला नारी होती है। ये गर्भाण्ड हमें इन्हीं नारियों में युवा होने पर

प्राप्त होते हैं।”

कुछ क्षणों तक चुप रहने के बाद शिशु-निर्माता ने अपनी बातों का प्रश्न बढ़ाया—“शरीर में गर्भाण्ड को अलग करने उसे विषाणु-नाशक घाँवों में साफ किया जाता है और उसके बाद उसे इन पात्रों में एक दिया जाता है। पात्रों में एक विशेष प्रकार का सामागनिक घोल होता है, जो उसे जीवित रखता है। इसी घोल में गर्भाण्ड को भोजन मिलता है, जिसे खाकर वह जीवित और सक्रिय बना रहता है और बराबर नारों-अंडों का निर्माण करता है।

“एक माह में एक गर्भाण्ड औसतन तीन-चार लाख अंड उत्पन्न करता है; पर इसमें से केवल एक हजार ही प्रौढ़ता को प्राप्त हो पाते हैं। बाद में इन्हीं प्रौढ़ अंडों को गर्भित किया जाता है। गर्भाण्ड का जीवित रहने के लिए इस कमरे में वे सभी अनुकूल दशाएँ पैदा की गयी हैं, जो गर्भाण्ड को शरीर में उपलब्ध होती हैं। इसीलिए कमरे में घुँघरेला ताज़ प्रकाश का प्रवेश है।

“यहाँ में ये नारों-अंड एक नालिका द्वारा बाहर के कमरे में रक्ते हुए हीनो में भेजे जाते हैं। हीनो में एक स्वेत तरल पदार्थ भरा रहता है, जो इन्हें भोजन प्रदान करता है और जीवित रखता है।”...

‘बोनस-प्रदान’ में प्रवेश करने की अगोचर को बड़े जोरों की ध्वनि सुनायी देने लगी, किन्तु इस ध्वनि में कुछ अज्ञेय भी मधुरता और गमकानता थी। इस भवन में एक स्थान पर प्लास्टिक की बड़ी-बड़ी धोने की

हुई थी। एक कमरे में इन बोतलों का कीटाणु-नाशक घालो में डालकर कीटाणु-रहित बनाया जा रहा था। पास ही में अनेक छोटी-छोटी लिफ्टें लगी थी, जो ऊपर-से-नीचे और नीचे-से-ऊपर के तहस्ताने में आ-जा रही थी। नीचे से ऊपर आनवाली लिफ्ट स्वतः ही क्लिक की आवाज करती हुई खुल जाती थी और उसमें से एक बारीक मास का पत्तर निकल जाता था, जिसे पास में खड़ी एक नारी प्रयोगकर्त्री पकड़ लेती थी। लिफ्ट स्वतः ही 'क्लिक' करती हुई बंद हो जाती और स्वतः ही नीचे चली जाती थी। मास के इस पतले पत्तर को कीटाणु-रहित कर उक्त बोतलों में से एक में रख दिया जाता और फिर बोतल का मुँह बंद कर दिया जाता था।

शिशु-निर्माता न अशोक को बताया—“यहाँ पर इन बोतलों में अस्तर लगाया जाता है। मानव-भ्रूण इन्हीं बोतलों में संवर्धन के लिए रखा जाता है। यह पाया गया है कि, यदि वाराह के गर्भाशय पर मानव-भ्रूण की बलम लगा दी जाती है, तो यह उसी प्रकार बढ़ता, फलता और फूलता है, जैसे नारी के गर्भाशय में और कालांतर में वही शिशु बन जाता है।

“भ्रूण नारी शरीर के लिए भी एक विदेशी तत्व है। वह नारी के गर्भाशय में भी एक शिल्ली पर आकर बलम लगा लेता है और इसी शिल्ली-द्वारा नारी-शरीर से अपना भोजन प्राप्त करता रहता है। ठीक इसी प्रकार यदि नव-निर्मित मानव-

भ्रूण वाराह के गर्भाशय की शिल्ली पर लगा दिया जाता है, तो यहाँ भी वह उस शिल्ली से अपना भोजन प्राप्त करने लगता है। मास का बारीक पत्तर, जो आपन अभी देखा, वाराह के गर्भाशय की शिल्ली ही है। २५ वीं सदी में हम लागे न विषय प्रचार के सुअर पंदा किम है। उन्ही के गर्भाशय की य शिल्लियाँ हैं। इनके लिए नीचे एक भांडारगृह बना हुआ है, जहाँ इन्हे वैज्ञानिक साधनों-द्वारा जीवित और सक्रिय रखा जाता है।”

शिशु निर्माता अशोक को साथ ले कुछ आगे बढ़ा। अशोक ने देखा, एक स्वतः चालित बस बोतलों पर परिचय-यत्र लगा रहा था। इन परिचय-यत्रों पर शिशु का नाम, वंशानुक्रम, नारी-अंडे के गर्भित होने की तिथि आदि सारी बातें थी। शिशु-निर्माता न बताया—“आगे वाले कमरे में 'पूर्व-भाग्य-रचयिता' बैठते हैं। उनका एक बहुत बड़ा कार्यालय है। वहाँ पर प्रत्येक बोतलधारी भ्रूण और उसके परिचय-यत्रों का ठीक-ठीक हिसाब रखा जाता है—अलग-अलग भ्रूण-भांडारों से सम्बन्धित आकड़ एकत्र किये जाते हैं। 'पूर्व भाग्य-रचयिता' मानवों के जन्म लेने से पहले ही उनका भाग्य निश्चित कर देते हैं। वे ही इसका निश्चय करते हैं कि, अमुक धोतल-धारी भ्रूण पैदा होकर क्या बनेगा—वे ही उसका वर्ग निश्चित करते हैं।”

अशोक अचानक बोले उठा—“यह वर्ग क्या चीज है भन्ना?”

जिन्नु निर्माता भूमिगया - "भूमि में
मन रि, आग ३५-वो मदी म वा गये है।
जातिमा का स्मान अर बगो न ७ गिया
है। मुम्दन बार बग है - व ग, ग, घ और
इनने अनर उर-वग है। उन वगो का इन
दृष्टि में बनाया गया है रि, प्रथम कार्य
के उपरान्त मानर का निर्माण हुआ गये।
इसने जिग 'पूर्व-भाष्य रचयिता' भूग-
भाहारिया का आरम्भ आरम्भ इन है और
सन्ताने शिशुका का इन प्रसार व मन-
बैनातिर मानारण म गया जाता है रि,
'पूर्व-भाष्य रचयिता' उनक भाष्य म जा भी
करिा वर दता है और जिगने अनुसार
उनने शारीरिष वीर की रचना की गयी है,
उन कार्यकार्य भी मन मणदवर और उन
मानारण म र प्रप्रता अनुभव र।"

इसने पञ्चानु अन्तर्गत न जिग वमर में
प्रसंग रिपा, वह पत्र दार गय वमर में
रिगु-मिग था। यह वमर प्रता रि
दुर्गा मजिग वर स्थित था। वमर में
धुने के जिग एक दर्शक पार वनी
पनी थी। उन पार वमर के रिम बा
धुमना पनी था और नर वमर के दार
पर पत्र। ता मगा था। इस वमर की
बीशर में भीग गग गग प्राननिर
रहा था, जिगने मारा वमर आगविन
था। वमर में उनका ही और वसा ही
प्रगा था, जसा गोवृत्ति के मयदना है।

वमर आशातुन अधिग उग था।
इसने वमर-विगने वसा की आवाज वायु
में मन्तनाहृ पंदा वर रही थी। जिगने
नदनोन

में वगी निवृत्त री चारु। पर गी हरे
वरी-वरी प्यामिटर की वागने की वनार
नाची दृष्टि आ जा रही थी। वागने के
दायें-बाय दा धनु की नगिगने गी दृष्टि
की, जिग पर 'मयिग और 'आगांर'
अतिर थ। निगने वी मदिग धनु के
धुग पर चह पत्र। री मगाया में वागने
का आग वरा रही थी।

अन्तर्गत का वसाया गया - 'वरी भूग-
भाहारिग है। अन्तर्गत न प्यान में वनिग की
आग दगा। उन पगा गग, जंग माना व
अदर वर गग रग वर प्रानन मग हुआ
है। वागने की आगिग प्रमियात्रा की
दग वर वह वरिग-मा गहु गया। वीरवी
गवा म जिग वागने की वगी मय में
दगत की भी वगना मरी की जा मरी
थी, आज उनी मय वागने का गग वने
नगा में प्रथम दंग रही था।

मानर के अदर उनी हुआ अविमिग
मानर-भूग गग दृष्टिगार ही रहा था।
यद्यपि वनी वर वह गग मय में मानारण
नही हुआ था, रिग भी उगने वीरवीर
मन गग दिगयी वर र थे। नेमों में
गी थी। भूग के उगने वीर वीर वनी
रगा का आगने चह रहा था। वनी,
वनी आदि मगाग वर मय गग गग
मेव वर था। मगिग धीर धीर वनी
मय र रहा था। वागने का यह उग
एग-ग वर आग वर रहा था। अन्तर्गत
का मगा मगा री आग।

जिन्नु निर्माता ने वसाया - "वो गे के

इस जलूस के यज्ञों की शक्ति का सम्बन्ध भूषण के गर्भाशय में रहने के समय से सम्बन्धित कर दिया गया है। अनुभव के आधार पर यह पाया गया है कि एक नारी के गर्भाशय में अणु २६७ दिनों में पूर्ण विवर्तित शिशु का रूप धारण कर लेता है। 'शिशु-उत्पादन मित्र' में भी भूषण की शिशु माता में २६७ दिन लगते हैं। यहाँ एक दिन को २० गुट के बराबर मानकर २६७ दिनों को ५३४० गुट में बदल दिया गया है।

“घोसल्लो के जलूस की शक्ति लगभग ८४ गुट प्रति घंटा रहती जाती है।

इस प्रकार शिशु-उत्पादन मित्र में भूषण के शिशु माता का ६५ घंटे लगते हैं और इसी लिए भूषणकारी बोल

को ५३४० गुट चलाना पड़ता है। इसकी अधिक दूरी एक कमरे में पूरी नहीं की जा सकती, इसलिए यहाँ प्रतिया सीट कमरे में जारी है।

अज्ञेय ने देखा, कमरे में एक ओर एक चाली भिरखी सीटी लगी हुई है। एक मानव गर्भाशय इस चाली भिरखी सीटी की सहजता से निजल की चादरो में पसी बोलों के जलूस को दूसरी मजिज

के एक कमरे में भेजने में व्यस्त था। शिशु-निर्माता के अज्ञेय को माला हुआ कि, बोलों में जो छात्र रंग का तरल पदार्थ दिखायी पड़ता है वह रक्त का स्थापन एक पदार्थ है जिसे वृत्ति रूप से एक कारखाने में तैयार किया जाता है। यह वृत्ति स्थिर ही बोलों में रहा भूषण का अज्ञेय पदार्थ है। इसे साफ़ से मछो और विवर्तित होतो है।

सत्य-कृप

छोटी गो बूढ़ी टोर, जाल सत्य रूप
गुणभूषण अविज्ञान अविज्ञान रूप,
एक बात क्या आज, क्यों अज्ञेय ?
हद कमल गलिय सत्य भूषण है निवेश।

हृत्तन व। भद्रती है जीवा की धूम
मित्र प्राण दान बहा यहाँ माना जान,
गम के विद्यालय में मिलता है साध,
बलि पशु का ज्ञान प्राण बेट बाप्य पूर।

—मरेन्द्र दास

शिशु निर्माता के साथ अज्ञेय आगे बढ़ता गया। ५०० गुट की दूरी तय करने के बाद उगते देखा एक गर्भाशयी बोलों पर 'न' और 'न' अक्षर कर रहा है। वृद्धों पर पता चला कि, इसकी दूरी तय करने के पश्चात् भूषण इसका विवर्तित हो जाता

है, जिससे यह स्पष्ट बात पत्र जाता है—यह वृद्ध बोला या मारी। नारी बननेवाला भूषण 'न' बोले बोलों में और पुरुष बननेवाला भूषण 'प' बोले बोलों में रख दिया जाता है।

शिशु निर्माता ने एक महिला की ओर खेत करते हुए कहा— यहाँ पर प्रसा-बापक बिहारी वाली माता में पुरुष रस-सन्धियों का प्रवेश करवाया जाता है। परि-

णामत स्त्री-रस-प्रथियों, पुरुष-रस-प्रथियों में गमोंग कर एक-दूसरे का निराकरण कर देती हैं और पैदा होनेवाली नारी बध्वा हो जाती है। बध्वा नारी शारीरिक रचना में मर दृष्टि में पूर्ण नारी ही होती है—अतः यही ज्ञान है कि, उसने शरीर में गर्भाशय पूर्ण विकसित नहीं हो पाता। अतः इन प्रजन-वाचक चिह्नित नलियों में वे ही भ्रूण रक्त जाते हैं, जिनका आगे चलकर नारी होना स्पष्ट हो जाता है, किन्तु जिनके भाग्य में 'पूर्व-आणव-रचयिता' ने बध्वा बनने का निर्णय कर दिया है।"

००० ००० ०००

अगर भी इन पक्षियों में २५-वीं मई की एक 'सिगु-उत्पादक मिल' का कार्यक्रम निश्चित अंकित करने का प्रयत्न किया गया है। इस दिना में अमृत जॉन्सुछ कार्य हुआ है, उसमें यह कहा जा सकता है कि, दो-चार सौ बपों के अंदर ही मिलों में प्लास्टिक की बोनलों में बच्चे पैदा होने लग जायें, तो ताम्बूर नहीं।

इस दिना में सर्वप्रथम प्रयास करनेवाले थे, नॉर्मल-मुरम्बार-विजेता एलेक्सिस बेरल, जिन्होंने एक भुर्गी के हृदय को उसके शरीर में अलग करके ३१ वर्षों तक जीवित अवस्था

में रखा। बोस्टन विश्वविद्यालय, अमेरिका के डा. थम के प्रयोगों में इस बलना को और भी बल मिला। वे मादा शरगोंसो के गर्भाशय में भ्रूणों का निराल कर अमेरिका में इंग्लैंड लाये और इंग्लैंड में इन भ्रूणों का एक दूसरी मादा शरगोंसो के गर्भाशय में रखकर विकसित किया गया। फालांतर में पूर्ण स्वस्थ शरगोंसो-शिशु प्राप्त हुए।

डा. लंडुमनट्रीस्त ने बोल्डवो विश्व-विद्यालय में रजाणु और शुक्राणुओं के मिलन को एक डिम्बोपक में अपने नेत्रों से देखा, उनके चित्र ग्लिये और प्रयोगशाला में उनका मयोग करवाया। इस नवनिर्मित गर्भ को उन्होंने ५० घंटों तक डिम्बोपकधारी बोल्ड में जीवित रखा था।

इस दिना में सबसे हाई के प्रयोग है सेट लुई विश्वविद्यालय, अमेरिका के पादरी-बैज्ञानिक बैसाइल जैन्सुअट के। बर्फ की शीतलता में ३२०-गुने शीतल वातावरण में एक काफी लम्बे अर्धे तक भुर्गी के भ्रूणों को निरालकर जीवित रखने में वैज्ञानिक बैसाइल को पूर्ण सफलता मिल चुकी है। आजकल इन भ्रूणों को इन्डिय वातावरण में रखाकर उन्हें विकसित करके, भुर्गी का जन्म देने में वे जुटे हुए हैं।

★

एक प्रोफेसर बाट बटवाने के लिए नार्स की दूतान पर गये। भुर्गी पर बैठते हुए उन्होंने कहा—“बाल बाट दो मेरे।” नार्स ने कहा—“अवश्य; लेकिन आप अपना हँट तो उतारिये।” प्रोफेसर ने घबड़ा कर कहा—“आह, भूल हुई। मुझे पता नहीं था कि, यहाँ महिलाएँ भी उपस्थित हैं।”

—‘टोरोंटो स्टार’ (कनाडा) ने

विष-पुद्गा के
राम-पुल

[illegible]

★

६५ मरणागस्त मोरे अपा गरता अभिमा ग
पुन है । उपा गरता उपस्ता ही
नी— नाग मे अब भी भेदा । द्वा
राभिमापी कीटियूलागा नमस्तिहावर
जिग ति नासि वा विवल्गु वा उम ति
द्वा गारा वा अना नम-उत्त यही छोड़कर
प्राण रक्षाए रखने भाग जान पडता ।
द्वा रोया ग चालीक लाग अभीवी और
अलान तिहतापी रहते हैं—उपा सागत
मे गरार्हम हजार मोरे नी टिक भी
गग ? अफ आंगरिक अनुपाय त राग
य बाधे कहावा उ गद्वन्म गरता वा
गाम था सालि । गादार्जा म ह्य तुम
उर्हा क्षण भर मा निर कहा सु
विद्या— महात्म । गादवा मे गुजारी
निवारटा ने अपा विपुल नम और
गवा भाषा-द्वारा जि अभीवी आदि
योगिया मे गागराय म अपा सम्भापून
आभिराय रूपलि कर दिया था उही

का अर्थ यह अग्रज यदुन व दानव व दान
पर जगता के लिए अनायास गलाने का था
बाह्यो है। या क्या सम्भव है सम्भव है ?

मोम्यावा न गराती की पापा नर ।
 समय देल ग ही हम क्षात्री का प्रथम परिणम
 हुआ । गादी के आर्क्षित नर ग मै
 पान पीने मयस का लल एव गाते मज्जा
 अशील ने प्रहृति सौम्य का दध सुध
 भावम दितार यह है । सामा मज्जा नर
 गिलास और बिबर की बाल गमी थी ।
 मर वृत्ति की आहत पावन उताते मुह्यनर
 दमा और सुरत मर गित आवर गितम
 हवन ग पुता- महानय । आप रावा
 का रहे है ?

जी हा। निम्नता व गाय जयाय
देकर मा भवती जिगाया प्रकट की-
आपकी यात्रा नहीं रुक होगी ?

मैं तय्यरी जा रहा हूँ। गुड बाय
इसका घर उभरता है।

भगिमा गावार हा उठी है।

“उम पर उगे पचराग-जैसे चमकीले पूरा को भी ता देखिये-बैसा अपूर्व दृश्य है।” सालि ने भाव-विह्वल स्वर में कहा-“जैसे हम घूँड़ के पीछे में लाल-लाल बोमल फूल सिद्धते हैं, उन्ही तरह यहाँ के अफ्रीकी युवतियों के हृदय में मिले प्रेम-प्रभूत के बारे में आपको कुछ मालूम है...?”

मुन्बर में बर्बित रह गया। एक गारा अचेंज अफ्रीकी आत्म-मौदर्य का ही नहीं, बल्कि अफ्रीकी युवती के हृदय में अबाध रूप में प्रवाहित होनेवाले स्नेह-ग्रांत का भी उपासक है। तैसा प्रतीति हुआ, माना सालि स्वयं अपने अनुभव के आधार पर ऐसा कह रहे हैं? मेरी जिज्ञासा तीव्र हो उठी।

इतने में ही गाड़ी ने जोर की मीदी बनायी और अपने बाले धुने में आममान को रगते हुए बढ चली।

सूर्याभ्य की मुहानो बंग्ला थी। मैं उस अफ्रीकी परती के मायबाडीन मौदर्य को माध निहार रहा था कि, सालि ने मेरी ओर देखते हुए कहा-“दिवाकर हममे विदा होने जा रहा है। बिछुटे समय भी इसकी आना देखिये-कितनी मोहक है।”

“जी हाँ, मचमुच ही बडा मुहावना दृश्य है।” मैंने हृदय में उनका अनु-भोदन किया। तभी कौन्सि-सर्वत-धेणियों के मध्य में धर्न-धर्न छिपनेवाले काचनाम सूर्य की ओर देखकर हाथ नवनीत

हिलते हुए सालि ने कहा-“कबहे-री!”

सालि ने क्यों ऐसा कहा और इसका अर्थ क्या था-यह मैं कुछ नहीं समझ सका। सालि पूरी तन्मयता के साथ सूर्य को निहार रहे थे। अचानक मुँहकर मुझसे पूछ बैठे-“जब किमी व्यक्ति में विदा लेते हैं, तो उस समय आप भारतीय क्या कहते हैं?”

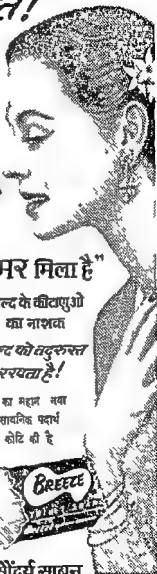
मैं क्षण-भर तक सोचने को बाध्य हो गया। उत्तर भारत में ‘नमस्ते’ और विदा इत्यादि कहते हैं और हमारे कैल में तो ‘ऐंग्लगनैयाट्टे, पिन्नैकराणाम्’ (अच्छा, फिर मिलेगे!) यही बोलने की प्रथा है, पर इतना लम्बा विदाई-वाक्य सालि को सम्भवत भायेगा नहीं। अतन मैंने उनसे कहा-“हम लोग साधारणतया ‘नमस्ते’ कहते हैं।”

“क्या कहा आपने? नमाछें! नमछें! उहूँ, यह इतना मधुर व मगीतात्मक नहीं प्रतीत होता है। हम अचेंजों के विदाई-शब्द ‘गुड-बाई!’ में भी हृदयस्पर्शी भाधुर्य नहीं है। हाँ, फामीसियों के ‘ओ-रिवोर!’ में थोड़ी-सी मिठाग रहती है। किन्तु मेरे जितने विदाई-शब्द मुने हैं, उनमें सम्पूर्णतया मधुर, सरल, मगीतात्मक तथा हृदयस्पर्शी शब्द एक ही पाया है। वह है, इन अफ्रीकी आदिवासियों का-‘कबहे-री!’”

वियर का एक घूँट पीकर नयी उमर के साथ उन्होंने कुछ जोर में कहा-“कबहे-री!” फिर मेरी ओर मुँहकर बोले-

नया! भुगंधित!

ब्रीज़



“इस में एक्टमर मिला है”

* शरीर गंध को
रोकता है

आप को तरोताज़ा
रखता है!

* जिल्द के कीटाणुओं
का नाशक

जिल्द को तदुरुस्त
रखता है!

एक्टमर (बाइथिमर्गोल) मोन्सान्टो का महान नया
'डिक्लिरोमोस्टेट' है—यह एक ऐसा रसायनिक पदार्थ
है जिस की कीटाणुनाशक शक्ति उच्च कोटि की है
और साथ ही इस की किया नरम
और शांतिकारक है।

केवल  आने

स्पानीय टैक्स प्रतिरिक्त

ब्रीज़-एक्टमर युक्त सौंदर्य साबुन



अब एक ही बार ब्रश करने से
कोलगेट डेण्टल क्रीम
 दंत-क्षय तथा दुर्गंध-प्रेरक जीवाणुओं
 के ८५% तक को नष्ट करती है !



“माहिम का हलवा”

१३० वर्ष पुराना ■ प्रख्यात

केवल भारत में ही नहीं। विदेश में भी प्रसिद्ध है।।

* विविध भांति के हलवे

* तिरंगी परफ़ी

* शुद्ध मावे का पेदा

तथा अमृतान्न मावे की मिठाइयों के लिए पुरान और प्रतिष्ठ

जोशी बुड्ढा काका माहिम
 के हलवे वाला

▼ पाण्ड बाजार, माहिम, बम्बई, १६

फोन - ६३९०७.

▼ मोनाबाला बिल्डिंग, बम्बई, ७

फोन - ४०३६५.

▼ पारमी बॉलेनी दादर, बम्बई, १८

फोन - ६०५०६.

“यदि विश्व-साहित्य में वही एक शब्द में भावतरंगिनी कविता भरी पड़ी है, तो वह शब्द है—‘वह-री’।” मुझे इसी मधुर शब्द ने प्रेम का साक्षात्कार कराया और प्रेम करना सिखाया ! चायद पूरी घटना सुनने के लिए आप उत्सुक भी होंगे।”

उस घंघले प्रकाश में कीकियू लोगों की झोपडियों की ओर आत्मीयता के साथ देखते हुए सालि ने अपनी कथा शुरू की—

“उन दिनों में अफ्रीकी लोह-नृत्यों पर शोध करने में दिन-रात लगा रहता था। मेरे श्वेतवर्णी समाज में मेरे इस ‘अप्टाकरण’ और ‘नोच सहवास’ को लेकर कई कड़ी व तीखी आलोचनाएँ होने लगीं और साथ ही अनेक बाधाएँ और भर्त्सनाएँ भी मुझे ‘सत्यम’ पर लाने के लिए हुईं। किन्तु मैं तिल-भर भी विचलित नहीं हुआ। मेरी अत-प्रेरणा इतनी ऊर्जस्वी थी कि, इन बाधाओं और आपदाओं से बेदाग बचकर अपने लक्ष्य पर बट रहा था। आदिवासियों के साथ ही मेरा अधिकांश समय बीतता। उनके प्रत्येक सामूहिक नृत्य में भाग लेता था। कई रात्रियाँ उन्हीं की झोपडियों में कटी थी। धीरे-धीरे मैं आदिवासियों के स्वच्छ आचार-विचार, सम्य समाज में अलस्य, अकलज व्यवहार और विशिष्ट सस्वार का अध्ययन करता गया।

“मेरे पिताजी को यह सब बहुत असह्य और तब, मैं घर से सदा के लिए विदा होकर कीकियू लोगों के प्रदेश नैय्वेरि में

आ बसा। ग्रामवासी कीकियू लोगों में भी कुछ व्यक्तियों को मुझसे सहानुभूति न थी। उनकी धारणा थी कि, मैं गोरो का गुप्तचर हूँ। उनमें तीन कीकियू तो मुझे अपना परम शत्रु समझ कर घृणा करते थे—एक गाँव का मानिक, दूसरा मुखिया का साला और तीसरा, एक बीना किसान था। पर गाँव के मुखिया को मुझसे बड़ा स्नेह था और वह बड़े आदर के साथ मेरी सहायता करता था।

“रोज रात को मैं उन ग्रामीणों के सामूहिक ‘गोमा’-नृत्य में भाग लेता और दिन में सफेद चीनी मिट्टी (‘प्लास्टर ऑव पेरिस’) से भिन्न-भिन्न नृत्य-मुद्राओं की मूर्तियाँ बनाता। मुखिया ने मेरे ठहरने के लिए एक अच्छी साक-सुपरी झोपडी बनवा दी थी।

“एक दिन रात को झोपडी में साठ पर निश्चित सो रहा था कि, किसी ने ‘ब्वाना! ब्वाना!’ कहकर पुकारा। मैं हड़बड़ाकर उठ बैठा और टार्च दबाकर देखा, तो सामने गाँव की एक जवान कीकियू लड़की कातर दृष्टि मुझ पर गढ़ाये खड़ी थी। उसने तुरत ही कहा—‘ब्वाना! (साहब!) आपको मारने के लिए एक काला ‘बाय’ निबला है। वह आपके पैर को काटेगा और आप छटपटाकर मर जायेंगे। अभी वही दौड़-भाड़कर अपने को दबा लीजिये। मैं यही कहने आयी थी, अब जाती हूँ!’

“मेरे उत्तर की प्रतीक्षा किये बिना ही

वह चली गयी। उनके स्वर में बेपरवाही थी। उनके अक्षय हो जान पर मुझे श्रम हुआ कि, वही यह स्वप्न तो नहीं है? किन्तु दूसरे ही क्षण मेरी नज़र टूटी—यह स्वप्न नहीं है। मैंने उस लम्बी का कई बार सामूहिक नृत्य में देखा है। मुझे विश्वास हो गया—अवश्य ही सफ़ट मरे सिर पर है। वह मुझे बचाने के लिए यहाँ आयी और शोरपाज करने चली गयी।

"सुरत ही मैंने मिट्टी की एक बड़ी मूर्ति को, जो अमी गीली ही थी, साठ पर लिटाया और उसे बम्बल में डब दिया। स्वयं मैं साठ के गिरहान पर वाली चादर ओढ़कर घुबघा घंट गया। मेरे एक हाथ में किस्मोड और दूसरे में टाचें थी। अपने शत्रु की हत्या करने की, आदिनामिया की रीतियों बड़ी भयानक हुआ करती हैं, इग्निय मेरा मन भिन्न-भिन्न आकाशों से उलझ रहा था। जाने में, मेरी सोपटी के पिछाड़ मुझने की पीसी आवाज़ सुनायी पड़ी। मैं गीत गोकर्ण गुन्टन देग रहा था।

"एक पाली छाया मेरी साठ के पैराने की ओर सरकती हुई आयी और शण-अर वहाँ खाने के बाद मुट्ठर बाणज बनी गयी। बाहर जाने समय, उस धुंधले प्रकाश में उस मूर्ति को गौर से देखा। मेरा अनुमान गरी निराश—वह ओर कोई नहीं था, गीत का मानव ही काज बापधर्म ओढ़कर उस वेप में आया था।

"घोड़ी देर के बाद मैंने उठकर

मिट्टी की मूर्ति के पैरों को देगा। उसके बायें पैर में एक काला दाग था, जो मुझे मोहन में हुआ था। मुझे समझने में देर नहीं लगी कि, मुझे के जरिये एक पोर बिग का प्रयाण किया गया है।

'दूसरे ही दिन में वह गोद छोड़कर चलने का तैयार हो गया। प्रसन्न इच्छा थी कि, अपने प्राण बचानेवाली उस कीटिय युवती से मिलकर हादिर बनना प्रसन्न पर लूँ। बिदा लेने के बहाने हर आगटी पर ही आया। सब मिले; पर वह मेरी प्राणरक्षिता नहीं मिली।

"विषाद का भार पित्त में और हाथ में पेटी उठाये हुए मैं जंगल की पगडड़ी से जा रहा था कि, 'जाम्बो, ज्याना! (नमस्ते साहब!)' की मधुर ध्वनि सुनकर मैंने मुट्ठर देगा। दो गिलासों की आठ से बड़ी युवती मुम्बुराती हुई निज आयी, जिसमें न त्रिल पाने के कारण मेरा मन उदाग था। जंगली घूँट के पाग वह रानी थी। घूँट के तिरे हुए शाल पूज उस युवती के निर्मल हृदय के प्रतीक में दीप्त पड़े। मैंने आती पेटी सागर कुछ बहुमूल्य चीजें निवासी और उन्हें उस युवती के साधने बढ़ाकर कहा—'मेरे से उपहार स्वीकार करो!' किन्तु उसने सिर हिलाकर मना कर दिया—'मेरे सारे अनुरोध म्यथं हुए।

"अन में मैंने पूछा—'तुम्हारा नाम?'

"'बबीना!' लजाते हुए उत्तर दिया।

"'तुम्हारी, सोपटी कहीं है? मैंने

नवनीत

गोव-भर छान डाला, तुम मिली नहीं?’

“बड़े सहज-सरल भाव से वह बोली—
‘मैं मुक्कुर की बेटी हूँ।’

“सुनकर तो मैं क्षण भर स्तब्ध रह गया। मुक्कुर उस माविक का नाम था, जिसे मेरे प्राणों की तीव्र पिपासा थी।

“पैटी उठाकर मैं चलने को हुआ। कबीना हाथ हिलाती हुई बड़े मधुर स्वर में बोली—‘क्वहे-री!’ मैं बार-बार उसे मुड़कर देखता और विदाई-शब्द के उत्तर में हाथ हिलाता हुआ उससे विछुड़ गया। वह देर तक उन्हीं शिलाओं के बीच, जयली यूहूड के पास खड़ी विरह मिह्वला-सी मुझे निहारती रही।

“स्टेशन पहुँचकर मैंने मोम्बासा के लिए टिकट खरीदा और गाड़ी में बैठ गया। गाड़ी जागे दौड़ रही थी और मेरा मन पीछे—उस यूहूड के पास खड़ी कबीना से हटता ही नहीं था। उसकी मुस्कराहट, आँखों के सामने नाच रही थी। उसकी मधुर वाणी—‘क्वहे-री!’ मेरे कानों में अभी भी गूँज रही थी।

“आखिर ‘इसाबो’ स्टेशन पर आकर मैं उतर पड़ा। हृदय की जीत हुई। दूसरी गाड़ी से ही मैं नैप्पेरी लौट पड़ा।

“महाशय! अब वह माविक मेरा प्रिय ससुर है—कबीना से मैंने विवाह कर लिया है। अभी अपने ससुर के घर ही जा रहा हूँ।”

सालि ने अपनी कथा समाप्त की और प्रवृत्ति की सोभा निरखने में तल्लीन हो गये। थड़ा-विस्मयामिगूत हो मैं उन्हें

एकटक देख रहा था। तब तक वोयू स्टेशन पर गाड़ी आ सकी। सालि अपना सूटकेस लेकर गाड़ी से उतरे और प्लेट-फार्म पर खड़े होकर अपना बायाँ हाथ हिलाते हुए उन्होंने मेरी ओर देखकर बड़े स्नेह से कहा—“क्वहे-री।”

स्नेह और आदर के साथ मैं मुस्कराया और मँहू से निकल पड़ा—“क्वहे-री।”

वोयू स्टेशन के टिमटिमाते दीप प्रकाश में एक ठग फाटव के पास लगा बोर्ड—‘काले स्वदेशियों के जाने का रास्ता’—साफ दिखायी दे रहा था। सालि उसी रास्ते से होकर जा रहे थे। अदृश्य न होने तक, मैं उस महामानव की भूति को अपार थड़ा के साथ देखता रहा। उसी क्षण मेरी समझ में यह बात आ गयी कि, मेरा अफ्रीका-प्रवास सफल हुआ।

इसके बाद एक-एक कर चार लम्बे-लम्बे साल बीत गये और अभी-अभी नैरोबी से मेरे मित्र गोमस ने पत्र भेजा है। सिर्फ एक पंक्ति लिखी है उसमें—“सालि को गोरो ने ही गोली मार दी।”

विश्वास नहीं होता, किन्तु सत्य तो सत्य ही है। इन मूखों ने उसे मार ही डाला। किन्तु वह बोर्ड नवी बान तो नहीं है। साथी, ईसा, पेंगम्बर—सबके साथ तो इन्होंने यही किया। क्यों पहले की गयी गलती आज भी दुहरायी इन्होंने और कौन कह सकता है कि, भविष्य में यही गलती फिर नहीं दुहरायी जायेगी?...

“प्यारे दायावर सालि!.. क्वहे-री!”

धूसरेबाजी

हारा

मेरा आत्म-साक्षात्कार

राफ़ी मारशियानो आज के जगत का विश्व विजयी धूसरेबाज है। मुष्टि-युद्ध की कला में उसने जो मौलिक धर्मित किया है, वह अनायास ही पुराण के किसी भीरोनाच नायक की प्रतीति करता है। विन्तु शरीर बल का ऐसा विराट् समुच्चय होते हुए भी मारशियानो का मानस ज्यों-का-त्यों हरा है। प्रस्तुत लेख में इस तथ्य की साधी खय उसकी आत्मकथा से प्राप्त कीगिये।

★

२४ सितम्बर, १९५२ के सवेरे साढ़ आठ बजे जब मेरी ओख खुली, तो मेरा सारा शरीर दर्द कर रहा था। जगह-जगह चोट के निशान थे। ओख की चमकी कट जाने से उसे डाक्टर से सिलवाना पड़ा था और सिर पर भी गहरा पाव था। फिर भी मैं प्रसन्न था और इतना अधिक् कि, शायद जीवन में अपने-आपको धन्य समझने का अवसर बँसा फिर न मिले। कारण कि, गत रात्रि जहाँ जा-बुलकाट को हरा कर मैंने बाक्सिंग (मुक्केबाजी) में 'हिपोबोट-चेम्पियन' का पद प्राप्त किया था। इसका अर्थ यह था कि, मुक्केबाजी में मुझे हराने-वाला ससार में कोई नहीं है।

वास्तव में, 'वर्ल्ड-चेम्पियन' बनने की मेरे स्वप्न में भी कल्पना नहीं की थी। मेरा विचार तो कुछ और बनने का था, लेकिन परिवार का सपन चताने के लिए मुझे यह ऐसा स्वीकार करना पड़ा।

भवनीत

मुझे वह रात अच्छी तरह याद है, जब सन् १९३३ में प्रिमो बानेरा ने जेक राफ़ी को हरा कर वह पद प्राप्त किया था। उस समय मैं केवल आठ वर्ष का था और कानेरा की बलिष्ठ भुजा को छू कर ही मैं रोमांचित हो उठा था। मैंने अपने पिताजी से इसका जिक्र भी किया और जब उन्होंने पूछा—“बानेरा कितना बड़ा है?” तो मैंने उत्तर दिया था—“इस छत से भी ऊँचा।”

मुक्केटो को हराने के एक साल पहले मैंने जोन्स से पहली बार हाथ मिलाया। वह मुझे पर्वत की तरह विशाल दिखायी पड़ा। उस समय वह एक अत्यंत सुंदर ओवरकोट और हँट पहने था। मैंने अदाब लगाया कि, केवल उससे हँट की बीमउ पचास डॉलर से अधिक होगी। जब लुई ने मेरा कीचेल्सिंग को दो मिनिट चार सेकेंड में पछाड़ा, तो अलबारी में छाया पड़ी, प्रति मिनिट उसने १,५०,००० डॉलर

८४

नवम्बर

कमाये, जो अमेरिका के राष्ट्रपति की
याँपर आय से भी अधिक है।

उस समय में बच्चा ही था। अपने
मित्र राली कोलोम्बो के साथ में बहुत देर
तक इस विषय पर चर्चा करता रहा कि,
'वर्ल्ड-वैम्पियन' कितना धन कमाता है।

मुस्कोटो को हराने के बाद भी मेरे मन में
यही कल्पनाएँ उठती
रही कि, यदि मैं सत्कार
या श्रेष्ठतम मुखोबाज
घोषित कर दिया गया,
तो मैं अपार धन का
स्वामी बन जाऊँगा !
इतने धन का कि,
जिससे बेचल रोटी और
कपड़े की समस्या ही
हल नहीं हो सकेगी,
बल्कि कई लोगों के
दुःख भी दूर किये
जा सकेंगे।



[विश्व विजयी मुष्टि खोजा
राजी मासिपानो]

उस समय मुझे
बहुतनी ऐसी बातें
ज्ञात नहीं थी, जो अब
'वैम्पियन' बनने के बाद
मालूम हुई हैं। उदाहरण के लिए, मैंने
कभी भी यह आशंका नहीं की थी कि,
निर्दोष होते हुए भी कई बार मुझे मार
ढालने तक की धमकी दी जायेगी।
पंजा भी, जिसना में साक्षता था या लोग
अनुमान लगाते हैं, उतना मुझे नहीं मिला,
क्योंकि रॉन और टैक्स में ही बहुत-सा धन

जाता है। और, अपने तो कभी पूरे होते
ही नहीं। 'वैम्पियन' बने रहने के लिए
दिन-भर मेहनत करनी पड़ती है और
कभी-कभी तो मानसिक स्थिति भी ऐसी
हो जाती है कि, भौतू तब आ जाते हैं।

जो-लुई को हराने के बाद मैंने गुना
वि, मेरी माँ को किसी ने बिट्टी लिखकर

धमकी दी कि, अगर
मैं अपने शहर ब्रायटन
छोड़ा, जहाँ मेरे स्वागत
का आयोजन हुआ था,
तो मैं गोली से उड़ा
दिया जाऊँगा। चार्ल्स
के साथ दगल होने के
पहले भी किसी व्यक्ति
ने मेरे स्वजनों को
बिट्टी लिखी कि, यदि
मैंने चार्ल्स को हरा
दिया, तो मेरी हत्या
कर दी जायेगी, क्योंकि
चार्ल्स शरीफ आदमी
है और मैं गुंडा हूँ।

ब्रायटन-पुलिस में
पता लगाया कि,

पहला पत्र तेरह साल की एक लड़की ने
लिखा था। दूसरा पत्र जिसने लिखा,
यह मुझे मालूम नहीं और न मैंने खोज करने
की ही कोशिश की। मैं एमी चिट्ठिया
से विशेष चिंतित नहीं होता, लेकिन मेरी
माँ बहुत घबरा जाती है। पहली बिट्टी
बिचने पर मेरी बहनो को, डाक्टर मार्सेल

कोलियानों के पास बड़ी बदतर हालत में मेरी मौ को ले जाना पड़ा था और अब जब-कभी भी मैं दंगल में जाता हूँ, तो डाक्टर कोलियानो मेरी मौ को अपने साथ मोटर में घुमाते रहते हैं। क्या कहूँ, मैंने कभी धप्पना भी नहीं की थी कि, मेरी विजय के कारण मेरे परिवार को इनना बचट भोगना पड़ेगा।

ब्रावटन में माइक्स डेण्मी नाम का मेरा एक मित्र था। वही मेरा पहला प्रसन्न था। जब मैंने मुष्टि-युद्ध प्रारम्भ किया था, तभी से वह मुझे देखने आया करता था। चार्म के साथ जब मेरा दंगल हुआ, तो वह भी उपस्थित था। अत्यधिक आवेश में अवस्थान उसके हृदय की गति रन गयी और वह वहीं पर गया।

मैं पहले ही कह आया हूँ कि, घुमेराजी का व्यवसाय मैंने धीरे में नहीं, पैसे कमाने की गरज में अपनाया था। दंगल लड़ने में पहले, मजदूरी करके मैं अधिक-से-अधिक सारा खर्च प्रति घंटा कमाता था।

एक गरीब परिवार में पैदा होने के नाते मैंने भी महत्ता मुझे अच्छी तरह मालूम है। 'याकिमग' प्रारम्भ करने के पहले मैंने निश्चित किया था कि, अपने शहर के तमाम लड़के-लड़कियों को मैं एक रोज दाखल दूँगा, लेकिन आज मैं जानता हूँ, मेरा यह सपना कभी पूरा नहीं हो सकेगा। इतना प्यवान शायद मैं कभी नहीं बन सकूँगा। भयानक अतिरिक्त दुःख तो मुझे इस बात का है कि, अस्पतालों, पामिर

नवनीत

मस्जिदों एवं अन्य जस्तमदों की भी मैं इच्छानुसार सहायता नहीं कर पाता।

दंगल लड़ना जब मैंने शुरू ही किया था, तभी मैंने दरादा दिया था कि, 'चेम्पियन' बनने पर मैं अपने माता-पिता को इटली में उनके मूठ निवासस्थान पर अवश्य भेज दूँगा। मैंने अपना सबकुछ पूरा भी किया, मगर यह सारा अध्याय दूर खींच करण ही रहा। जब वे इटली के लिए रवाना हो रहे थे, तो मैं इतना ध्वस्त था कि, उन्हें बिदा देने के लिए हवाई अड्डे पर पहुँच भी न सका। दूसरे, तीन महीने यहाँ रहने के बाद मैं वापस भी लौट आये, क्योंकि उन्हें वहाँ सर्वत्र दैन्य, नैराश्य एवं भयानक-विपत्तियों के ही दर्शन हुए। सभी लोग उनमें महायना की प्रार्थना करने, लेकिन सबी की मृत्यु करना सम्भव नहीं था। मेरी मौ का हृदय तो ऐसा कोमल है कि, किसी को बचट में नहीं देख सकती।

बिल्कुल 'चेम्पियन' बनने के कारण सगरे बड़ी जो अगुविषा मुझे हुई, वह है मेरे अपने ही स्वजनो एवं मित्रों का मुझसे दूर-दूर रहना। ऐसा भाव होता है, मानो मेरे और उनके बीच 'चेम्पियनशिप'-स्पी एक अलघ्य दीवार खड़ी हो गयी है।

एक दिन मेरी मौ ने मुझसे कुछ अगमजम के साथ कहा—

“राजी, मैं तुमसे कुछ कहना चाहती हूँ, लेकिन तुमसे बात करते वक्त मुझे डर लगता है कि, वही मैं तुम्हें प्यवान तो

नवम्बर

नहीं कर रही हूँ।" मैंने कहा— "मैं, मैं तुम्हारा बेटा हूँ, तुम मुझे कभी परेशान नहीं कर सकती। तुम जिस वक़्त भी, जो चाहो, मुझसे कह सकती हो।"

तब मानो प्रोत्साहित होकर मैंने कहा— "मेरा खयाल है कि, तुम जिंदगी के बहुत बड़े आनंद से वंचित रह जाते हो। जब तुम्हारी बहन के लडकी हुई या जब कभी कुटुम्ब में कोई घादी होती है, तो तुम शामिल होने नहीं आते।"

शायद साल-भर से वह मुझसे यह बात कहना चाहती थी, क्योंकि मेरी बहन की बच्ची अब दो साल की हो गयी है। लेकिन मैं उसे छ मास की होने पर ही देख पाया। इसी तरह मेरे मित्र निकी माइलवेस्टर का जब विवाह हुआ, तो मैं वहाँ पहुँच भी न सका। इतना ही नहीं, मेरी अपनी बच्ची एन अब दो साल की हो गयी है और सभी लोग कहते हैं कि, वह पैरों पर चलने की और बोलने की कोशिश करती है और बड़ी भली मालूम देती है। लेकिन मैं अपनी पत्नी और बच्ची के साथ वर्ष में केवल चार महीने ही रह पाता हूँ।

यह सब है कि, सफलता प्राप्त करने के लिए मुझे बहुत-से सुखों का परित्याग करना

पड़ा है। लेकिन इसी सफलता के परिणाम-स्वरूप मैं बहुत-से ऐसे कार्य करने में भी समर्थ हो सका हूँ, जिनसे मुझे आंतरिक प्रसन्नता मिली है। मेरे पिताजी इस समय ६१ साल के हैं। प्रथम विश्वयुद्ध में गैस लबने के कारण वे अस्वस्थ हो गये थे और उसके बाद वे कभी बिल्कुल स्वस्थ न हो सके। और, ऐसी ही हालत में, तीस साल से भी अधिक समय तक उन्होंने शहर के



[मुष्टि-युद्ध में उन्मत्त को पराजित करवा दिया]

जूतों के कारखानों में काम किया। जिस मशीन पर वे काम करते थे, उस पर काम करना बहुत मुश्किल है। इसी मशीन पर कठोर परिश्रम कर के उन्होंने हम छ बच्चों का खालन-पालन किया है। आज मेरी सबसे बड़ी खुशी यह है कि मैं उन इस यात्रा से मुक्त करके तीर्थयात्रा के मार्ग पर लगा दिया है।

साथ ही, परिवार के बाहर के लोगों के लिए भी मैं कुछ करने में समर्थ हो सका हूँ। मैंने सड़कों नहीं, तो पचासों नवयुवकों को नैराश्य और अव्यवस्था से उठाकर बड़े-बड़े कार्यों की ओर प्रेरित किया है। इनमें से कुछ तो आज बड़े-बड़े अधिकारी बन गये हैं और कुछ लक्षपति।

एक बार बोस्टन में बड़े-बड़े जूते-निर्माताओं के भोजन में मैंने कहा कि मेरी

सफलता में उनका भी कुछ भाग है। मेरे पिताजी जूता के कारखाने में तीस साल तक बटोर परिश्रम करते रहे। फिर भी इतनी कम आम्र उनकी थी कि, एक परिवार का भी पोषण वे बड़ी मुश्किल से कर पाते थे। उनका खाना लेबर, जब मैं उनसे पास दोपहर में जाता, तो मुझसे सदा कहते—“बेटा, जूता के कारखाने में तुम कभी काम मन करना।”

मेरे ऐसे जनसम्पर्कों और प्रायणों का बड़ा प्रभाव पड़ा है। कई नवयुवकों ने इनसे उर्ध्वगामी प्रेरणाएँ पायी हैं।

विद्व-विजेता होने के बाद मेरे पन्धों एवं आचरण का लोगों पर जो प्रभाव पड़ता है, उसकी कल्पना कर कभी-कभी तो मैं कर जाता हूँ कि, यदि मैंने कोई गलत बात कह दी या कर दी, तो उसका असर कितना बुरा हो सकता है।

एक बार बृहस्पतिवार को मेरा दयल होनेवाला था, लेकिन उस दिन और उससे बाद भी दो दिन निरंतर वर्षा होती रहने के कारण झगल न हो सका। समयोपना ने मुझे रविवार का लडने के लिए कहा, लेकिन मैंने स्वीकार नहीं किया। मैंने कहा—“मैं रोमन कैथोलिक हूँ और नियमित रूप से रविवार को प्रार्थना के लिए गिरजाघर जाता हूँ। उस दिन मैं कोई काम नहीं कर सकता।”

मैं तो इस बात को भूल गया। लेकिन कुछ दिन बाद, जब मैं कोट्टिपो की एक बस्ती में गया, तो वहाँ एक पादरी ने मुझसे

कहा—“राफ़ी! वहाँ पर रहनेवाले सभी लोगों को खेल-कूद से दिलचस्पी है। उन्हें हम नियमित रूप से गिरजाघर जाने की आदत सिखाते हैं, लेकिन रविवार को झगल लडने से इनकार कर तुमने धर्म के प्रति जो दृढ़ आस्था इनमें पैदा की है, वैसी आज तक हम भी नहीं कर सके।”

कोट्टिपो की इस बस्ती में जाने से पहले मैं कुछ चिंतित अवस्था हुआ था; लेकिन एक महिला ने मुझे आश्वासन दिया कि, कोढ़ छूट का रोग नहीं है। अंत में वहाँ गया। बारह सौ आदमियों को उस बस्ती में हमारा शानदार स्वागत हुआ। उनकी प्रार्थना पर मैंने अपनी कमीज उतार दी और उन लोगों को मेरी भुजाओं का स्पर्श करने दिया। साथ ही, उनके मतोरजन के लिए मैंने वहाँ ‘बास्मिय’ का प्रबंधन भी किया। वहाँ से जब हम रवाना हुए, तो सभी की ओरें इतकता एवं आनंद से ढबाइव थी और वे मुझे दुआएँ दे रहे थे।

विद्व-विजेता होने का अर्थ क्या है, इसका एहसास मुझे ‘रांची लोस एमिगोस’ नाम के अस्पताल में हुआ। वहाँ पर लौट के फेफड़े लगे मरीजों को देखने हम गये। पहले हम ‘पोलियो’ रोग के पुरुष मरीजों के पास गये। वहाँ पर एक लड़का मेरे माँ में सब-कुछ जानता था। उमंग बात करते समय दाँते में हम दोनों को नजर मिल जानी। वह चेहड़ा धुम था। एक और आदमी वहाँ था, जो पहले ‘वास्तेट-

चाल' खेलता था। उसने मुझसे कहा कि, कुछ बड़े बनोगे।" आभार और सकोच में 'पोलियो' को अवश्य पराजित करेंगा। मैं मैं तो ऐसा गढ़ गया कि, मेरे मुँह से 'वर्ल्ड-चेम्पियन' का पद प्राप्त करने के कुछ दिन पश्चात् अमेरिका के राष्ट्रपति के यहाँ से एक पार्टी में शरीक होने का निमन्त्रण मिला। उसमें

लिखा था कि, राष्ट्र-पति को बहुत-से खेल-कूद देखने का समय नहीं मिलता, इसलिए वे अपने यहाँ सभी बड़े-बड़े खिलाड़ियों को बुलाना चाहते हैं और यदि हम भी उनका निमन्त्रण स्वीकार कर सकें, तो बड़ी कृपा होगी। वहाँ जाते समय मैं काफी घबड़ा गया था। आज तक किसी भी दगाव लड़ने से पहले मैं इतना आकुल नहीं हुआ। करीब चालीस बड़े-बड़े अन्य खिलाड़ी राष्ट्रपति ने निमन्त्रण पर उपस्थित थे।

"तो तुम्ही सक्षार के 'होबोवेट-चेम्पियन' हो?" राष्ट्रपति ने मेरे पास आकर कहा और एक बरफ पीछे हट कर मुझे सिर-मे-पंर तक देखा। मुस्करा कर उन्होंने मुझसे कहा—"मेरा शयाल है कि, तुम इसमें भी

अनुभूति

गत वर्ष चार्ल्स एजाई को मैंने पराजित किया, तो एक बड़े मर्म-वेषक स्थिति मेरी चेतना के सम्मुख आयी। एजाई का सर्व-पराभूत चेहरा देखकर मुझे बड़े आत्म-स्त्राप्ति हुई—
"चार्ल्स, मुझे क्षमा कर सकते हो क्या? क्षम्य खाता हूँ, अब कभी असाई में न उतरूँगा। पशुत्व के इस चरम प्रपञ्च से मैं विदग्ध होता जा रहा हूँ!..."
चार्ल्स की आँखों में आँसू आ गये। मुझे पुरी प्रतीति है, वे प्रेम के, शुद्ध-सनातन मानव-प्रेम के, आँसू थे—
"ध्वर्च विदग्ध न होओ, राक्षो! हम सब पशु ही तो हैं। जीवन-रूपी अग्नि-परीक्षा में प्रति क्षण जो हम उतरते हैं, तो इसीलिए कि, हमारा पशुत्व गले और भीतर का अनुपत्यन्त निखरे!"

—भारतियानो 'अन्तमकथा' में

धन्यवाद का एक अक्षर भी नहीं निकला। जीवन के पश्चात् राष्ट्रपति हम सबके साथ चित्र खिचवाने खड़े हुए। एक मनचले फोटोग्राफर ने उस

वक्ता का भी चित्र ले लिया, जब राष्ट्रपति मेरी दाहिनी भुजा को छू कर देख रहे थे। मैंने तो कभी इतने बड़े सम्मान की कल्पना भी नहीं की थी। कहाँ एक मामूली मोची का लड्डका और कहाँ फाइव-स्टार जनरल (पैंथ तमगो-वाले सेनापति) — सक्षार के सबसे धनी-मानी देश के राष्ट्रपति।

कुछ लोग मेरी निन्दा भी करते हैं। एक बार एक 'डिनर-पार्टी' में एक अघेड़ महिला ने मुझसे पूछा—

"क्या मजा आता है तुम्हें दूसरों को घोट पहुँचाने में? क्या यह भी किसी प्रकार का क्रूर आनन्द है?" मैंने सिकं इतना ही कहा कि, मुझे इसमें कोई आनन्द नहीं मिलता। अधिक बहस

में भरता नहीं चाहता था। वास्तव में, बहुत कम लोग यह समझ पाते हैं कि, दमल में जब दो खिलाड़ी लड़ते हैं, तो व्यक्तिगत वैमनस्य उनमें कुछ नहीं होता। यह तो एक काम है, जो मैंने पैसे बमाने की गरज से शुरू किया था और इसने लिए मुझे कम मेहनत नहीं करनी पड़नी। जब-बभी मेरा दमल होता है, तो उसने पहले ८ से १२ हफ्ते तक मुझे उसने गिर तैयारियाँ करनी पड़ती हैं। उस समय मुझे बिल्कुल माधु का-मा जीवन बिताना पड़ता है—मेरा सारा ध्यान एक ही पस्तु में केन्द्रित रहता है।

दमल के एक महीने पहले में मैं किसी को पत्र भी नहीं लिखता। जब दम दिन बाकी रहते हैं, तब मैं कोई पत्र नहीं पढ़ता—न टेलिफोन पर ही किसी से बातचीत करता हूँ। आखिरी हफ्ते में तो किसी से द्वाष मिलाने या गाड़ी में घंट कर बाहर जाने का भी मुझ पर प्रतिबन्ध रहता है। कोई मेरे रूमोईपर में नहीं घुस सकता और न कोई नयी वस्तु मुझे खाने की दी जाती है। यहाँ तक कि, मैं किसी से बात भी नहीं कर सकता। मेरे प्रतिद्वंद्वी का नाम भी मुझे नहीं बतया जाता और न अवधार ही पढ़ने दिया जाता है।

दो या तीन महीने तक मेरा प्रत्येक क्षण इसी गव ध्येय की पृति में व्यतीत होता है कि, प्रतिद्वंद्वी को पंगे हराया जाये। वह जीत है और जब मुझे उसमें दमल लड़ना पड़ेगा, यह न जानने हुए भी उसकी एक नन्विन मूर्ति मदा मेरी आँखों के सामने

रहती है। एक बार एल. और मैं भोजन के बाद ४५ मिनिट तक इसी एक विचार में चक्कर खाटते रहे कि, बुलवाट को हराने के लिए यौन-सा उपाय काम में लिया जाये? यह तय हुआ कि, 'लिफ्ट ड्रव' के बाद 'राइट हंड अपरकट' मारता ठीक रहेगा। इसी की मैंने 'प्रैक्टिस' की और बुलवाट इसी से हारा भी।

लोग मुझने पूछते हैं—“क्या मैं इस बात की चिंता नहीं करता कि, कोई मुझे भी हरा सकता है?” मैं घमंड तो नहीं करता, लेकिन मेरा समाल है कि, इस समय तो मस्रार में मुझे कोई भी हरा सकता। अपने ४७ दमलों में मैं एक बार भी नहीं हारा और भाग्य ने यदि मेरा साथ दिया, तो अभी ४५ साल तो मैं 'वर्ल्ड-चेम्पियन' का पद बनाये रखूँगा। फिर भी मुझे वह दिन अच्छी तरह याद है, जब जो-लूई और जर्मी-बुलवाट का दमल हुआ था और बुलवाट लूई को हरा कर मस्रार का 'हिबीवेट-चेम्पियन' बन गया। उस समय मैं 'दाक्टन गेंस-बम्पनी' में काम करता था और दम महीने पहले एक मामूली दम भी लड़ चुका था। उस समय मैंने सोचा भी नहीं था कि, एक दिन बुलवाट को हराकर 'वर्ल्ड-चेम्पियन' में बन सकूँगा। हो सकता है कि, इस समय भी कोई नोन-वान खिलाड़ी ऐसा तैयार हो रहा है, जो मुझे भी हरा सके। शायद उसने मन में भी 'वर्ल्ड-चेम्पियन' बनने की उम्मीद ही उतकट अभिलाषा हो जितनी मुझमें थी।

२०-वीं सदी का काँक शाह फारुक

फटें सिंगर द्वारा लिखित 'माऊन मनी मोथदस' पुस्तक के एक अध्याय का संक्षिप्त हिन्दी रूपांतर।
पुरातन मिथ ॥ एक बग़ारो बादशाह ने कहा था—“देमद का मोन अब बड़ियों को प्रिय लगने लगता है, तो उसे पहाड़ी नदी की बाढ़ समझो, जिसमें फरमान् वहा फादमी दूबे बिना बच नहीं सकता।” जिस के निर्वासित बहुत धनी मानी शाह फारुक ने विरामियों में मुजिन इस चेगावनी को नहीं सुना था।

✱

अभी मिस के अपदस्थ नरेश शाह अद्भुत वस्तु देख, तत्काल ही वे फारुक काह्व का जो समूह बाहिरा में के लिए खरीद ल।
नीलाम हुआ है, उसका विवरण गुनवर रुदन की 'साउथ-व रम्पली' ने उसम आप आश्चर्य-चकित हुए बिना नहीं रह से बहुत-सा सामान खरीदा था। अतः जब सकते। उस समूह में शाह फारुक के मिस की सरकार न शाह फारुक की चीन बहुत-सा आभूषण, जवाहरात, दुप्राप्य अन्त की, तो उसन उन वस्तुओं के विषय पुराने सिक्के, टिफ्ट-समूह, कौच के बरतन, फास के बग हुए 'पैपर-बेट', घड़ियों आदि अनेक प्रकार की वस्तुएँ हैं।

फारुक को अद्भुत वस्तुओं के समूह का बड़ा शौक था और अजायबगो के व्यापारी विश्व-भर में शाह फारुक के इस समूह के लिए चीन खरीदते रहते थे। रुदन और यूरोप के अन्य देशों में अजायबगो के जो एजेंट हैं, उन सबको फारुक का आदेश था कि, जब कोई



[शाह फारुक के समूह का सर्वाधिक मूल्यवान् और अद्भुत शान्द सिलौवा—'जादू का बग', जिसकी योग्य कभी कोई चीज नहीं पाया।]



का भार भी उसी
कम्पनी पर डाला।

शाह फारुख
का सपह बितने
ही गवहालियों से
अच्छा है और
बिभी भी पारसी
का ज्ञान बिना उस
सपहालियों को देखे
अपूर्ण हो रहेगा।

अब उन के
सपह के संविध्य
को भी एक शोकी
देतिये। एब ओर
अपनी 'दिक' की ध्वनि तो भागवो २००
के साथ रात्रि के ठीक ई वृ में बनी वह
बारह बजे एक समय त राजू, जिस में
राजिनी भी सुनारी है।

शाह फारुखी पचम
के चित्र-मुक्त राजे का पट्टा लगा है और
प्राचीन पुतान के सोने के तिको आदि
पुताना की वस्तुएं देखने को मिलेगी, तो
दूसरी ओर सोने के रत्न-जडित सिमरेट-
बेस, मुपनीदान, आदि वस्तुएं मिलेगी।
और, १८-वी तथा १९-वी सताब्दी की
कारीगरी के नमूने का तो कहना ही
क्या? पूरे विश्व में बहुत कम जगह ऐसी
हैं, जहाँ इतना प्राग्निनिषिक्त और पूर्ण
गवह देखने को मिल सकता है।

रम के जार के कारीगर काले फंज
अपनी वस्तुएं किन्तुल पूर्ण बनाने के लिए
मुर्दगीन लगाकर काम किया करने

थे। उनकी तो बितनी ही फंजें इस
सपह में मिलेगी। फंज-द्वारा निर्मित
वस्तुओं में, जो इस सपह में हैं, एक 'ईस्टर-
एग' है, जिसे इस के शाह, जार निबोल्य
द्वितीय ने अपनी पत्नी को भेंट किया था।
इस सपह में उनकी बनायी एग सोने की
सोपी है, जिसे सोलिये, तो जदर सपंद सोने
की बनी हुई एग बतल संरक्षी दिखेगी।

१८९८ में अलेक्जेंडर फेर्दिनानडोविच
ने अपनी पत्नी वादपरा बित्त को एक
'ईस्टर-एग' भेंट किया था। उस भेंट पर
लाल रंग की मीनाकारी का काम है और
मुलाबी रंग के हीरे का वादर (बिनारी)
बना है। उसने मध्य में हीरे का एक
गात्ता बड़ा टुकड़ा लगा है और उसने नीचे
मैंट बरनेवाले का चित्र बना है। उस भां
को सोलने पर आपका उसका पीला भाग
देखने को मिलेगा और उसने नीचे एक
मुर्ती दिखेगी, जिस पर लाल, सपंद और
भूरे रंग का बहुत ही बारीक काम किया



[विभिन्न राजजदिय सिद्ध की फाहरी
वा यह 'दिक-बेट' शाह फारुख की बहुत
की प्यास था। इसी बीच का
लाभ बचने बनायी जाती है।]

हुआ है। इस अद्भुत नारीगर की नारीगरी यही समाप्त नहीं होती। वह मुर्गी भी एग सटवे से खुल जाती है। उसने अंदर सोने का हृदय बना है, जिस पर चारों ओर हीरे और वेद्र में एक माजिन जड़ा है। इस हृदय के चारों ओर एक फ्रेम है और उस पर भी बिबिष रत्न जड़े हैं। यह अद्भुत अंश भी फारुब के सग्रह की एक खोभा है।

इनके अतिरिक्त घड़ियों का तो इतना बड़ा सग्रह फारुब का था कि, कुछ कहना ही नहीं। इतने प्रकार की घड़ियों देखने को मिलेगी कि, उनको कोई बर्णना भी नहीं कर सकता। खोपड़ी, पिस्तौल, हथ, स्लीपर तथा पान के साकल की घड़ियों तो देखते ही बनती हैं। इनके अतिरिक्त, कितनी ही अद्भुत जब-घड़ियाँ भी हैं। उदाहरण के लिए, एक ऐसी जेब-घड़ी है, जिसका बटन दबाने पर घोड़े पर सवार दो व्यक्ति नजर आते हैं और एक व्यक्ति बीच में राडा दिल्लीवासी पड़ता है।

इस सग्रह में कुछ घड़ियों तो ऐसी हैं, जो १७८० से १८२० के बीच

फास और स्विट्जरलैंड के सर्वोत्तम कारीबरो-द्वारा बनायी गयी हैं। इनमें से कुछ घड़ियाँ चीन के घनाठप व्यक्तियों ने खरीदी थी। इस शताब्दी के प्रारम्भ में पुन यूरोपीय सग्रहकर्ताओं की दृष्टि इन घड़ियों पर गयी और उन लोगों ने चीनी रईमों से खरीदकर इन घड़ियों का सग्रह करना प्रारम्भ किया। फारुब के सग्रह में इस तरह की भी कई घड़ियाँ हैं, जिन्होंने एक बार यूरोप से चीन और चीन से पुन यूरोप तक की यात्रा की है।

इनके अतिरिक्त खिलौने भी कुछ कम नहीं हैं। एक चिड़िया पिंजड़ में बैठी जाती रहती है। छोटे-छोटे बिल्ले ही बाजे हैं। और, सबसे अद्भुत खिलौना तो 'जाडू का बक्स' है। इस बक्स को खोलिये, तो एक जादूगर दिल्लीवासी पड़ेगा। उस बक्स में एक द्वार है, जिसमें कुछ प्रश्न लिखे रहे हैं। उन प्रश्नों में से आप कोई भी १२ प्रश्न पूछ लीजिये—इन्ने के जवाब देना वह जादूगर उन प्रश्नों का उत्तर दे देगा।

★

अफसर

एक रंगरूट कौज की परीक्षा देने गया। जल्दी में वह अपने साथ बागज-बलम ले जाना भूल गया। वहाँ पहुँच कर उसने अफसर से लिखने का सामान माँगा। अफसर ने कहा—“रणक्षेत्र में यदि कोई सैनिक अपने शस्त्र लिये बिना ही जाये, तो उसे तुम क्या कहोगे?”

“अफसर।” रंगरूट ने तत्काल ही उत्तर दिया।

—‘वीरली’ से

★

श्री कवि

नारी-प्राप्ति के अन्याय अन्तर्गत शरच्चन्द्र की यह किन्ती अर्धपूर्ण अभिव्यक्ति है-
 “अचेतन-प्रवृत्त मातृत्व की वेदना का एक सहस्रांश भी अनुभव यदि मछली को होगा, तो वह नारी को धरती पर नहीं भेजता।” समित्नाट्य की एक आम-व्यवस्थि ने शरच्चन्द्र की इसी उक्ति को एक लोकगीत में सिताजी विदग्धता के साथ संजीवित किया है, पढ़ते ही बनता है।
 भावार्थ-सहित यह गीत हमें श्री र. शौरिराजन से प्राप्त हुआ है।

★

वृद्धा— “एन् अळरे पेंणे ? एन् अळरे पेंणे ?
 एन् अळरे पेंणे नो, माम् अळुवाप् पोले ?
 माम् अळुवाप् पोले ; उमं मामन् अडिच्चानो ?
 मामन् अडिच्चानो मल्लिकार्जुन् चण्डाल ?”

युवती— “मामन् अडिक्कल्ले, ओंढ मनिदर तोण्डविल्ले !”

वृद्धा— “पुरुषन् अडिच्चानो, ओंढ पेरुण्णळियाले ?”

युवती— “पुरुषन् अडिक्कल्ले, ओंढ मूतर् तोण्डविल्ले !”

वृद्धा— “कौळुन्दन् अडिच्चानो, उमं कोतडियिनाले ?”

युवती— “कौळुन्दन् अडिक्कल्ले, ओंढतर् तोण्डविल्ले ;
 वट्टिल्ले पोट्ट दारं तामि ! वारिसिन्न मन्दिल्ले !
 किण्णिपिले पोट्ट दारं कोरित्तमप् पिळ्ळं इल्ले ;
 तण्णिकिप् पोर्कियिले तटं मरिक्कप् पिळ्ळं इल्ले ;
 ऊरक्कुप् पोर्कियिले उडन् वरप् पिळ्ळं इल्ले ;
 अंगडिक्कूडं अळंतुवर मन्दन् इल्ले ;
 पंगायक्कूडं विलं मरिक्क मन्दन् इल्ले ;
 मळुपेय्य वारासिले नान् मन्वनाडि काणेने ;
 मन्वनाडि काणेने- नान् मरंमि अळुगिरने !”.....

—एक ग्रामीण वृद्ध ने अपने पड़ास के घर की युवती बहू का सिसक-सिसककर रोना सुना, तो जिज्ञासा व आश्चर्य से उद्वेलित होकर उसके पास जा पहुँची। रोती हुई उस तरणी के पास बैठकर वृद्ध ने स्नेह से पूछा —“बेटी, क्यों रो रही हैं?”

सहानुभूति का स्पर्श पाकर उस युवती की सिसकियाँ सीझ हो गयीं। वृद्ध का बोमल मन और भी द्रवित हो उठा। उसने उस शोचानुरागी पीठ पर प्यार से हाथ फेरते हुए पुनः प्रश्न किया—“अरी, बोलेगी नहीं! क्यों रो रही हैं, बेटी? अरी! बता न, तुझ तेरे मामा ने चपत मारी क्या? अगर मारा भी है, तो निश्चय ही, सहज-स्नेहवश चमेली के गुच्छे से मारा होगा उसने—हँ न?”

युवती अब भी बिना कुछ बोले, रोती-सिसकती रही। किन्तु अंत में वृद्ध के ममतामय आग्रह ने उसकी पीड़ा का रद्द द्वार खोल दिया। वह फफन पड़ी—“नहीं नानी, मुझे न तो मामा ने मारा है, न किसी अन्य मनुष्य ने ही मुझ पर हाथ उठाया है।”

“तो तेरे ‘पुरुष’ (पति) ने परिहास में बेंत से तुझे मारा होगा?”

“नहीं, मेरे ‘पुरुष’ ने भी नहीं मारा और न किसी भूल प्रेत ने ही मुझे डराया है।”

वृद्ध स्नेहपूर्ण मुस्कान से बोली—“तब? तेरे देवर ने डडा घुमाते-घुमाते भूल से वही तुझ पर चोट तो नहीं कर दी, बेटी?”

युवती की सिसकियों का प्रवाह अभी तक जारी था। किन्तु इस बार वह कुछ झुंझलाकर बोली—“नहीं नानी! देवर ने भी कुछ नहीं किया। किसी ने भी मेरा कुछ नहीं बिगाड़ा है। मैं तो अपने कूटे भाग्य पर रोती हूँ।”

वृद्ध का हृदय भर आया—कौन-सी वेदना साल रही है इस विचारी को? उसे अपने स्नेह-यास में भरते हुए उसने बड़े दुलार से पूछा—“तब वो सिसक-सिसककर क्यों रोनी हैं, बेटी? क्या



अन्ध का दीव

[चित्र: सुधीर रासगौर के एक चित्र की सरल प्रतिकृति]

तबलीक हं तुझे ?”

युवती के समय का बोध और न टिक सका। इस पड़ोसिन बूढ़ा के मानतृत्व-भूरि स्नेह ने उसे अपने हृदय की पीड़ा प्रकट कर देने का बल दे दिया। बूढ़ा की गोद में मुँह छिपाकर बिलसती हुई बोली—

“देसो, नानी! चाँदी की यह थाली यो ही पड़ी है—हठ करने उसमें खाने के लिए मचलनेवाला मेरे घर में कोई नहीं है। घटा लेकर पनघट जाते समय मेरे पाँवों में लिपटकर, हठ-हठ कर मेरा रास्ता रोकने के लिए, भगवान ने एक लाल मुझे नहीं दिया—मेरी यह गोद सूनी हो रही! नानी! मेरा एक बेटा होता, जो मुझे कभी बाहर जाती देख, रो-रो हठ छान लेता—‘माँ! मुझे भी साथ लेती चल!’ फिर वह गली में कृज्जिन की पुकार सुनते ही दौड़ कर उसे बुला लाता। नानी! बरसते पानी में मेरे छाछ बरजने पर भी भीग-भीग कर खिलखिलाते हुए छहर-उछर माग-भाग कर मुझे तग करनेवाते एक बच्चे के लिए मैं अभागिनी तरस रही हूँ। नानी! क्या बहूँ?... मेरी पीड़ा कौन समझेगा? कल्याणनिधान बहलानेवाले भगवान को भी मुझ पर कृपा नहीं आती... ?”

बूढ़ा कोई जवाब न दे सकी। उसने उस अभागिनी को ओर भी अपने स्नेह-भाग में फँस लिया। युवती की शिरकियाँ धीरे-धीरे समस्त गँव के बाता-वरण में एक वेदना का संचार कर रही थी—एक बार तो उन्हें सुनकर नानी पत्थर के भी झौंझु निबल पड़ें....।

★

श्रांत की सरहद पर एक बूढ़े यात्री को ‘वस्टम-मुलिस’ ने रोका। उसने घोषणा की कि, उसके पास कोई ऐसी चीज नहीं, जो आपसिजनक हो या जिस पर चुगी लगायी जा सके।

“इस बोतल में क्या है?” पुलिस ने उसका सामान टटोल कर पूछा।

“कुछ नहीं, पवित्र जल है इसमें।” बूढ़े ने उत्तर दिया। लेकिन जब बोतल खोली गयी, तो उसमें शराब की गंध आयी। बूढ़े ने हत्ताल ही अपने नेत्र आकाश की ओर उठा कर कहा—“लाय-लाय पुत्र हूँ, सुदा! आज तूने प्रत्यक्ष धमत्कार देखने का मौकाम्य मुझे दिया।”

—“द’ बन्दीमेन” से

★



इसके
इस्तेमाल से
कमज़ोर
और दुबले
बच्चे ताकतवर
बनते हैं

डोंगरे बालामृत

के. टी. डोंगरे एन्ड कं. लि. बम्बई ४

शाखाएं : कानपुर और बंगलोर





आप
कोई भी
हों...

पर स्वागतः आप चाहेंगे कि
आपके व्यक्तित्व तथा पोषाक को सब सरा-
हनापूर्ण नजरोंमें देखें।

रायपुर कपड़े इस्तेमालमें आपकी
बढ़ इच्छा जरूर पूरी होगी। हर एक की
रुचिरे अदुल्ल मिश्रित रंगोंमें तथा अनोखे
रिज़ाइनमें प्राप्य यह सुंदर सुनामका
कपड़ा हर व्यक्तित्वको भावपूर्ण बनाता है।

आपके व्यक्तित्वके लिए सुंदर कपड़ेकी
निर्वाह जरूर है—जो फ़ायदेमंद अनुसार
है। इसका लिए—खरीदिये।

रायपुर कपड़ा



पुरुषों, प्रियों तथा बालकों के लिए राम
रिज़ममें मिलता है।



सैंफोपइज्ड

पॉपलिन—शर्टिंग—फोर्टिंग

छापी हुई

साटियों—घायल—फेमरिक
और

प्लाउजका कपड़ा—संड—रूमाल

रायपुर मिल्स लि.

अहमदाबाद



THE SP-11170

रवाना हुआ। रास्ते की पहाड़ियों, 'डेलवेयर' नदी तथा सेव के वृक्षों के कारण दृश्य बड़ा मनोरम था। हमने 'अशोबल-बौध' की देखा, जहाँ से न्यूयार्क को पीने का पानी पहुँचाया जाता है। वानेट का विश्व-विद्यालय अमेरिका में प्रख्यात है। यहाँ लगभग आठ हजार विद्यार्थियों पर वर्ष में आठ कराइए पढ़ाई कराया जाता है। यहाँ मैंने पशु-मालम-विद्या के विषय में डाक्टर बर्ट से बहुत-सी नयी बातें मालूम की। प्रोफेसर फिन्जर यहाँ पशुओं की बीमारियों की रोक-थाम-साम्यन्धी अन्वेषण में व्यस्त हैं। डाक्टर बर्ट के आग्रह से मैंने महात्मा गांधी व अहिंसा पर भाषण दिया।

यहाँ मुझे ज्ञान हुआ कि, न्यूयार्क राज्य में सन् १९३९ में, वर्ष में प्रति गाय औसतन ५४९५ पौंड दूध देती थी। सन् १९५२ में यह सख्या बढ़कर ६८४० पौंड हो गयी। सारे अमेरिका के लिए प्रति गाय यह औसत सन् १९३९ में ४३७९ पौंड और सन् १९५२ में ५३२८ पौंड था। अच्छी खुराक व राग-निवारण के कारण ही यह उन्नति सम्भव हो सकी। सन् १९१५ में प्रति वर्ष प्रति भुगी ९० अड़ों की तुलना में सन् १९५० में १९० अड़ें होने लगे।

अमेरिका के लोक हमारे देश के गाँवों से बिलकुल भिन्न होते हैं। यहाँ सभी आधुनिक सुविधाएँ उपलब्ध हैं। विजली टेलिविजन, अच्छी सड़कें व आवश्यकता की अन्य सभी वस्तुएँ। मेरा परिचय श्री रॉबिन नामक एक किसान से कराया गया, नवश्रोत

जिनके पास डेढ़ सौ एकर जमीन थी खेती है। उनकी पौधों की सुगंधें प्रति दिन तीन सौ साठ अड़ें देती हैं और एक गायों से से प्रत्येक वृक्ष तीस-आलीस सेर होता है। उनका जीवन उनकी खेती व जानवरों की देखभाल करता है। और वे ११ के रूप में उसे मूल्य में भवान, खाने-पीने की सभी चीजों के अतिरिक्त प्रति सप्ताह पालीस कालर (१९० रुपये) मिलते हैं।

'वाउसड आइलैंड पार्क' में सेंट लारेन्स नदी के किनारे मुझे यह कुटीर देखने का भी सौभाग्य मिला, जहाँ रहकर स्वामी विवेकानन्द धर्म पर भाषण देते तथा ईश्वर का ध्यान किया करते थे। मैंने यह वृक्ष भी देखा, जिसके नीचे बँठकर औषधी-पानी के समय भी वे ध्यानमग्न रहा करते थे।

यहाँ से वापस आते समय मेरा परिचय प्रोफेसर डाक्टर ब्रुसनेल से हुआ, जो सपत्नीव भारत का दौरा कर चुके थे। उन्हें अबतक ९ एलोरा की बलावृष्टियों ने प्रभावित किया था। बाद में वे ब्रिटीश व नेदरलैंड की यात्रा पर भी गये थे।

न्यूयार्क में मुझे प्रसिद्ध अमरीकी शिक्षा-शास्त्री डाक्टर बिलपैट्रिक से मिलने का सुअवसर मिला। सागरमती में इन्होंने महात्मा गांधी से मुलाकात की थी। 'इं-लिन पालोटेक्निज' के विख्यात वैज्ञानिक डाक्टर हर्मान मार्क से मिलकर मैं बहुत ही प्रभावित हुआ। ये भारत में विज्ञान-परिपद के सदस्य होकर आये थे। इनसे सीत्रन्वसे मुझे 'रायफेन्डर इन्स्टिट्यूट' देखने

का सुजवसर भी मिला। यहाँ भारतीय स्वातंत्र्य संग्राम के सहयोगी डाक्टर तारकनाथ दास तथा प्रसिद्ध अर्थशास्त्री प्रोफेसर द्वारिका घोष मुझसे मिलने आये। श्री जे जे सिंह ने—जो अमेरिका में भारत के अनौपचारिक राजदूत मान जाते हैं—मुझे राष्ट्र के भोजन के लिए आमंत्रित किया।

प्रिंसटन में मैं 'गुडरिज'-परिवार का अतिथि रहा। यहाँ के विश्वविद्यालय में

आई हजार विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त करते हैं। बेम्बगार नामक एक धनवान व्यापारी द्वारा स्थापित एक विश्वविद्यालय में प्रोफेसर आइस्टीन तथा डाक्टर ओपेनहामर प्रमुख शिक्षक रह चुके हैं। यहाँ गणित, भौतिक शास्त्र तथा इतिहास में शोध-कार्य किया जाता है। यहाँ मैंने पहली बार 'हेडन केमिकल कारपोरेशन' नामक 'एटीवायोटिक' कारखाना देखा, जिसने

मैनेजर डाक्टर सोकोल ने मुझे सभी औषधों के तैयार करने की प्रिया समझायी। मैं इनके साथ पहुँचे भी काम कर चुका था। ये गांधीजी के बड़े भक्त हैं।

श्री गुडरिज के साथ मैं प्रोफेसर आइस्टीन के दर्शन करने गया। वे मुझे सात प्रवृत्ति के साधु पुरुष होंगे। उनमें कमरे में महात्मा गांधी का चित्र रखा था। उन्होंने कहा कि,

महात्मा गांधी इस युग के सबसे महान् व्यक्ति कहलायेंगे। आइस्टीन राष्ट्र के राज्ये समर्थक थे। उनका दृढ़ विश्वास था कि, अणु-बम के जरिये शांति की स्थापना असम्भव है। उन्होंने श्री जवाहरलाल नेहरू की विदेशी नीति का समर्थन किया। वे अमेरिका तथा कुछ अन्य देशों की राजनीतिक गतिविधि से बड़े ही चिंतित प्रतीत हो रहे थे। मुझे उनका वह लेख

पढ़ने का भी सौभाग्य मिला, जो उन्होंने नीग्रो-समस्या के सम्बन्ध में लिखा है।

'रेडियो कारपोरेशन ऑफ अमेरिका' को देखकर मुझे बहुत हर्ष हुआ। वहाँ की अनुसंधान शाला ने मुझे बहुत ही प्रभावित किया। उसके डायरेक्टर एलमर एगस्ट्राम ने मुझे रंगीन टेलिविजन दिखाया। फिर मैं प्रिंसटन विश्वविद्यालय की रसायनशाला देखने गया। यहाँ मैंने विश्व-

विख्यात डाक्टर बेडल की प्रयोगशाला देखी। जब मैंने उन्हें बताया कि, भारत में लगभग तीन चार करोड़ मुस्लिम बसते हैं, तो उन्हें बड़ा आश्चर्य हुआ, क्योंकि उनकी धारणा थी, भारत में मुसलमान हैं ही नहीं।

स्वामी निखिलानन्द के एवं अमरीकी मित्र श्री पारहमें प्रिंसटन से पिलाडेलफिया



[अणु विज्ञान के आधार को सुदृढ़ सम्भव देनेवाले कीर्ति सम्पन्न विज्ञानवेत्ता ओपेनहामर]

ले गये। उन्होंने मेरे हस्ताक्षर देखकर मेरे स्वभाव आदि का वर्णन करना आरम्भ कर दिया जब कि, उसी दिन उनसे परिचय हुआ था। इंग्लैंड में लोग इतनी जल्दी मंत्री-भाव स्थापित नहीं करते। उन्होंने मुझे वहाँ की टक्काल दिखायी, जो लदन तथा कलकत्ता की नयी टक्काल से बही अच्छी है। हमने वह भवन भी देखा, जहाँ स्वतन्त्रता के धापणा-मंत्र पर हस्ताक्षर हुए थे। उसे देख कर मैं रोमांचित हो उठा।

चित्राडेलफिया से लौटते समय मैं डाक्टर ओपेनहामर से मुलाकात करने गया। सत्तार के सर्वप्रथम अणु-यम के आविष्कार का कार्य इन्हीं के निरीक्षण में हुआ था। डाक्टर ओपेनहामर ने कहा कि, अणु-यम की विध्वंसक शक्ति के भय के कारण ही, राष्ट्र युद्ध छेड़ने का प्रवृत्त नहीं होंगे। डाक्टर ओपेनहामर सस्कृत के अच्छे ज्ञाता हैं। इन्होंने गीता तथा भारतीय दर्शनशास्त्र का भी अध्ययन किया है।

बोल्डविन विश्वविद्यालय में डाक्टर प्रतुल मुखर्जी ने—जो वहाँ अन्वेषण-कार्य में संलग्न है—रसायन-विभाग दिखाया। मुझे प्रोफेसर किंग की प्रयोगशाला दिखायी गयी, जहाँ विटामिन 'बी' के सम्बन्ध में शोध की जा रही है।

अमेरिका में मुझे ढाढा के अपने सहाय्यी स्वामी पवित्रानन्द के मिलकर बड़ा हर्ष हुआ। ये 'रामकृष्ण वेदाङ्ग-केन्द्र' के सदस्य हैं। 'रामकृष्ण-विवेकानन्द-सेन्टर' में मुझे भारतीय संस्कृति की परम्परा पर भाषण

देने का सुअवसर मिला।

हार्वर्ड विश्वविद्यालय के प्रोफेसर पीटर से भैरी मुलाकात बोस्टन स्टेशन पर होने-वाली थी। उन्हें वहाँ न पाकर मैं जब इधर-उधर खोज रहा था, तो तत्काल एक अमरीकी महिला भैरी सहायता के लिए आ पहुँची। मेरा यह अनुभव है कि, अमरीकी महिलाएँ सहायता-कार्य के लिए सदा तत्पर रहती हैं।

प्रोफेसर पीटर ने मुझे भारत-यात्रा में लिये गये अपने चित्र दिखाये। उनकी प्रयोगशाला में काम करनेवाले बगाने सज्जन श्री विष्णु-भट्टाचार्य से मिलकर मुझे बड़ा हर्ष हुआ। वे उस वक़्त चौरह हजार डॉलर के मूल्य के 'इन्फ्रारेड-किरण'-सम्बन्धी उपकरण से काम कर रहे थे। मुझे प्रोफेसर वुडवर्ड से भी मिलने का मौक़ाय प्राप्त हुआ, जिन्होंने सत्ताइस वर्ष की आयु में ही प्रयोगशाला में कुनैन बनाने की विधि खोज निकाली थी।

हार्वर्ड विश्वविद्यालय में कौब की चीजों का अजायबघर देखकर मुझे नयी जानकारी मिली। सत्तार में ऐसा संग्रहालय और नहीं है। इन चीजों की जर्मनी-निवासी लियोपोल्ड तथा रुडॉल्फ श्लेसका नामक पिता व पुत्र ने मिलकर पचास वर्ष में तैयार किया था। योशू एलिजाबेथ की बेयर तथा उनकी पुत्री मैरी एल बेयर ने यह अजायबघर अपने तब से तैयार करवा, उक्त विश्वविद्यालय को भेंट कर दिया था। इसमें कौब के 'माइली'

के जरिये वनस्पति-जगत के क्रिया-कलापों का बहुत ही सुंदर चित्रण किया गया है। शिधा का इतना उत्कृष्ट तरीका मैंने और कहीं भी नहीं देखा।

‘एनर्जन’ तथा ‘थोरो-संग्रहालय’ के साथ ही ‘कवार्ड’ पुर-जहाँ अंग्रेज सैनिकों तथा अमरीकी स्वतन्त्रता के प्रवर्तकों की पहली बार मुठभेड़ हुई थी-देखकर हर्ष हुआ। थोस्टन के कला-संग्रहालय में मुझे हठप्पा की खुदाई की कई चीजें देखने को मिली।

सुप्रसिद्ध ‘नियागरा-जल-प्रपात’ की सुंदरता का क्या कहना। पार्क में घूमकर हमने जल-प्रपात को कई ओर से देखा। फिर हम ‘केब आब रिह्स’ की ओर बढ़े, जहाँ जल-धारा से उड़कर आने वाली

बूँदें हमारे शरीर पर फुहारने की भ्रंति गिर रही थी। भीगने से बचने के लिए हमने विशय वैश-भूषा धारण कर रखी थी।

“मेड आब द मिस्ट” नामक स्थान का नौका विहार बहुत ही सुखद रहा। नदी में नाव की सँद कर हमने ‘नियागरा-जल-प्रपात’ को बड़े करीब से देखा। नियागरा के आसपास रसायन-उत्पादन

के कई कारखाने हैं, जहाँ कास्टिक सोडा, क्लोरीन आदि तैयार किये जाते हैं। ‘हुवर’ केमिकल कम्पनी में बड़े हजार कर्मचारी काम करते हैं। इनका कम-से-कम वेतन, चालीस घंटों के सप्ताह के लिए बावन डॉलर है। ‘नियागरा-जल-प्रपात’ से अमेरिका तथा कनाडा को विद्युत्-शक्ति प्राप्त होती है। मैंने विद्युत्-उत्पादन के

उस कारखाने का निरीक्षण किया। वह स्थल भी मैंने देखा, जहाँ नियागरा नदी ओटारियो झील में गिरती है। यहाँ १७२५ में फ्रेंच लोगों द्वारा निर्मित एक विला है, जिसे बाद में अंग्रेजों ने अपने अधिकार में कर लिया था। सन् १८१७ में इस पर अमेरिका का अधिकार हो गया।



[विश्व राजमंच की विविध ध्वनि प्रति ध्वनियों का केंद्र, अमरीकी राष्ट्रवायकों का निवासस्थान, हाइट हाउस]

शिवागो में मेरे पथ-प्रदर्शक श्री गौरांडा घोष नामक एक महासाम्राट् सज्जन रहे, जो शिवागो विश्वविद्यालय की ‘आणविक अनुसंधानशाखा’ में ‘डाक्टरेट’ की उपाधि के लिए शोध कर रहे हैं। उन्होंने मुझे पूरी प्रयोगशाला दिखायी। शिवागो में ही स्वामी विवेकानंद ने पाश्चात्य देशों को हिन्दू धर्म का संदेश दिया था। मैंने वह

भवन भी देखा, जहाँ 'सर्व धर्म-सम्मेलन' हुआ था और स्वामीजी ने अपना इतिहास-प्रसिद्ध भाषण दिया था। शिकागो में नीधो जाति की काफी बड़ी सख्या है। यहाँ की 'इंडियाना एवेन्यू' में—जहाँ नीधो बसते हैं—बड़ी गदगो फंली थी और बंदबू आ रही थी। पर यह स्थान बलवत्ते की वस्तुओं से बड़ी अच्छा था। इस स्थल को देखकर मैंने सोचा कि, निदिचयन मियनरियो को अमेरिका से भारत आने के बदले, वहाँ की वस्तुओं का ही पहले उद्धार करना चाहिए। शिकागो के विज्ञान व कला-सम्बन्धी संग्रहालय में कई ज्ञानवर्धक वस्तुएँ देखने को मिली। सप्ताह में इतना सुंदर संग्रहालय मैंने और कहीं नहीं देखा।

वाशिंगटन में मैं थी जी एल मेहता का मेहमान रहा। भारत के उप-राष्ट्रपति डाक्टर राधाकृष्णन् ने भी यहाँ भेंट करने का मुअबसर प्राप्त हो गया। वाशिंगटन आते समय एक बड़ी रोचक घटना घटी। रेल में एक अमरीकी बूढ़े ने मुझसे धर्म पर बातचीत करते हुए निदिचयन धर्म अपनाने पर जोर दिया। उसका तर्क था कि, ईसाई धर्म स्वीकार किये बिना मेरा ब्रह्मण नहीं हो सकता। वह व्यक्ति बट्टरफोर्षी मालूम होता था। उससे पीछा छुड़ाने के लिए मैंने उससे कहा कि, उसके ही बयानानुसार जब ईश्वर सर्वशक्तिमान् है, तब उसे मेरी चिंता नहीं होनी चाहिए, क्योंकि ईश्वर को मेरी भी शुधि व बिना सो होगी ही। मेरा तर्क सुनकर वह बूढ़े निराश

भवनीत

होकर चुप लगा गया।

वाशिंगटन में मैंने 'जार्ज वाशिंगटन टावर' तथा लिबन व जेफर्सन के स्मारक देखे।

स्थानीय नौसल-जनरल थी रघुवीर सिंह तथा उनकी पत्नी से मिलकर मे बहुत प्रभावित हुआ। श्रीमती सिंह रवीन्द्रनाथ टागोर के सेक्रेटरी स्वर्गीय अजीत चक्रवर्ती की सुपुत्री हैं। उनसे बंगला में बाते करते में मुझे एव अनोखे आनंद की प्राप्ति हुई। वाशिंगटन के अजायबघर तथा कला-भवन देखने के बाद हम 'माउंट वर्नन' नामक स्थान देखने गये, जहाँ जार्ज वाशिंगटन रहा करते थे। इस महान् व्यक्ति की स्मृति में थड़ाजलि अर्पित करने, लोग वहाँ हर रविवार को बड़ी सख्या में जाया करते हैं।

शिक्षा-विभाग के दो विशेषज्ञों ने मुझे अमरीकी शिक्षा-व्यवस्था के सम्बन्ध में आवश्यक बातें बतायी तथा मेरे प्रश्नों के उत्तर दिये। अमेरिका में शिक्षा का कार्य केंद्रीय नहीं, बल्कि हर राज्य का विषय है। अठ्ठासीस राज्यों में निजी शिक्षा-विभाग है। इनके अतिरिक्त शिक्षा के संघीय दफ्तर की स्थापना सन् १८३५ में की गयी थी, जिसका ध्येय विभिन्न राज्यों में शिक्षा-प्रचार की प्रगति का पता लगाना तथा शिक्षा-सम्बन्धी विभिन्न जानकारीयों का प्रचार करना है।

हर राज्य अपनी शिक्षा-सम्बन्धी नीति निर्धारित करने के लिए स्वतंत्र है। अधिकांश राज्यों के उच्चतम शिक्षा-अधिकारी की नियुक्ति जनता के चुनाव-द्वारा

नवम्बर

होती है। स्कूली शिक्षा में सघीय सरकार केवल दो प्रतिशत खर्च करती है। शेष खर्च राज्य सरकार तथा विभिन्न स्थानों से प्राप्त होता है। जनता की उच्च शिक्षा में सघीय सरकार ११ प्रतिशत खर्च उठाती है। स्कूल की तथा उच्च शिक्षा में सरकार वर्ष में लगभग ३,८०० करोड़ रुपये खर्च करती है।

स्कूल की शिक्षा समस्त अमेरिका में निःशुल्क तथा अनिवार्य है। सन् १९५० में अमेरिका के स्कूलों में दो करोड़ पचास लाख और उच्च शिक्षणालयों में पचीस लाख विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त कर रहे थे। अमेरिका के विश्वविद्यालयों में शिक्षा पानेवाले विद्यार्थियों की संख्या संसार में सबसे अधिक है। कई राज्य के स्कूलों में बालकों को पाठ्य

पुस्तकें मुफ्त दी जाती हैं। छोटे बच्चों को 'किंडरगार्टन विधि' से लिखना-पढ़ना सिखाया जाता है। स्कूल के बालकों को पुस्तकालय आदि का पूर्ण उपयोग करने की भी शिक्षा दी जाती है। स्कूलों के लिए अमेरिका में पुस्तकालयों की संख्या अट्ठाईस हजार है। कई शिक्षणालयों

में उद्योग-धंधे भी सिखाये जाते हैं।

कृषि शिक्षा का यहाँ अत्यधिक प्रचार है। न्यूयार्क में उद्योग-धंधों की शिक्षा देनेवाले स्कूलों की संख्या बत्तीस है, जिनमें लगभग चालीस हजार विद्यार्थी शिक्षा पाते हैं। इन शिक्षणालयों पर लगभग एक करोड़ बीस लाख डॉलर प्रति वर्ष खर्च किया जाता है। अमेरिका में अपराध की ओर झुकाव

रखनेवाले बच्चों की शिक्षा की भी विदोष तौर पर व्यवस्था है। अन्य प्रकार की प्रशिक्षा आदि के लिए हजारों पुस्तकालय, अनुसंधान-शालाएँ, संग्रहालय आदि खोले गये हैं, जिन पर वर्ष में ११,७०,००,००० डॉलर खर्च किये जाते हैं। वर्ष में कोई पौंच लाख दर्शक इन संग्रहालयों को देखने जाते हैं। सार्वजनिक पुस्तकालयों से पुस्तकें ले



[वाशिंगटन और लिंन के साथ 'स्वर्णिम त्रिमूर्ति' के रूप में परास्त्री अमेरिका के एक महान् निर्माता जेफर्सन की समाधि—जो बोदिबोटि बानियों का तीर्थस्थल है।]

जानेवाले पाठकों की संख्या दो करोड़ पचास लाख है, जो लगभग पचास करोड़ पुस्तकें पढ़ते हैं। नये शिक्षकों को १,८०० से लेकर २,४०० डॉलर तक वार्षिक वेतन दिया जाता है और अनुभवी शिक्षक लगभग तीन-चार हजार डॉलर पाते हैं। प्रारम्भिक पाठ्यालयों में

महिलाएँ पढ़ती हैं, पर यह सच होने हुए भी शिक्षा-क्षेत्र में यहाँ श्वेत व जीयो का काफी भेद-भाव रखा जाता है।

शिक्षा-विभाग की जानकारी प्राप्त करने के बाद मैं माटिमेला गया। अमेरिका के भूतपूर्व राष्ट्रपति थामस जेफर्सन यहाँ के निवासी थे। रॉजिनिया-विश्वविद्यालय की स्थापना का श्रम इन्हें ही प्राप्त है। यहाँ से हम चार हजार फुट की ऊँचाई पर 'ब्लू रिज माउंटन' पर 'लूरे की गुफाएँ' देखने गये। प्रकृति-द्वारा निर्मित रंग-विरंगे पत्थरों की इतनी सुंदर गुफाएँ मैंने और कहीं नहीं देखी। कई गुफाएँ तो ५०० फुट लम्बी हैं और उनकी छत लगभग चालीस फुट की ऊँचाई पर है।

अमेरिका के 'सरकारी इपिजेन्ट' में एक एकड़ जमीन में एक हजार फीट मिश्रित खाद डाली जाती है और पञ्चवर्ष एक ही दुगुन मक्का प्राति एकड़ पैदा होता है। दूर-दूर से किसान यहाँ 'इपि-प्रदतियों' सीपने आते हैं। भारत में ऐसे इपि-प्रयोग क्षेत्रों की कितनी आवश्यकता है।

गार्डन्सविन्-जैंगे छाटे में स्थान का जलवायु सभी प्रकार की औषधों व अन्य उपकरणों में सुसज्जित है। इतनी अच्छी व्यवस्था मैंने और कहीं नहीं देखी।

न्यूयार्क सदन में कहीं स्वच्छ नगर है। यहाँ इतनी अधिक मोटर है कि, उन्हें सार्वजनिक स्थानों में गड़ी करने की एक समस्या पैदा हो जाती है। ममार की तीन-चौपाई मोटर अमेरिका में हैं।

किसी चीज की अति भी हानिकारक होती है। एक अमरीकी महिला ने मुझे बताया कि, उनके पति दफ्तर से आने के बाद अपनी मोटर में मिथो के मिलने चले जाते हैं और वे स्वयं अपनी मोटर पर सवार होकर सड़कियों में मुलाकात करने जाती हैं। पुत्र व पुत्री के पास भी मोटरें हैं। अर्ध व अलग चली जाती हैं। हर दिन किसी-न-किसी को भोजन का निमंत्रण मिलता ही रहता है। इकट्ठे स्थानों की मेज पर भी सब शायद ही कभी एकत्र होते हैं। इस तरह मोटर ने उनके पारिवारिक जीवन को नीरस और एकाकी कर दिया था।

जब मैं अमेरिका में था, उस समय 'न्यूयार्क टाइम्स' में श्री विनोबा भावे-द्वारा आयोजित 'भूदान-आंदोलन' का समाचार प्रकाशित हुआ था। वहाँ लोगों ने मुझे अपने विषय में बहुत पूछाछ की।

मुख्य के सभी साधन अमेरिका में उपलब्ध हैं। पर न्यूयार्क के अधिकांश व्यक्तियों के मुख पर मुझे हर्ष की मुद्रा नहीं दिखायी दी। वे मुझे चिंतित ही दीखे। अमरीकी लोग अब अनुभव करने लगे हैं कि, सच्चा गुरु भौतिकवाद तथा आध्यात्मवाद के समन्वय में ही है। अतः आज के आध्यात्मिक शांति की रात्रि में यन्त्र है। अमेरिका के वैभव, गुण-भावन, विकास आदि का अपेक्षा अमरीकी को मिलनसार प्रकृति ने ही मूखे करिष प्रभावित किया और इसी कारण मैं उनके अविन निबट आ भी सका।

जेल में विवाह

हिन्दी के सुप्रख्यात कथा शिल्पी और चित्रकार-सर्जक यशपालजी की आत्मकथात्मक पुस्तक 'सिंहावलोकन' का एक दृष्टि-चित्र

★

एक दिन बारक बंद हो जाने के बाद मेजर मल्होत्रा हमारी बारक की ओर चले आये। अंग्रेजी में हाल-चाल पूछ कर पंजाबी में बोले—“यह तो बताओ, मिस प्रकाशवती कपूर कौन हैं ? जानते हो ?”

“बहिमे, क्या बात है ?” मैंने उत्तेजन से प्रश्न किया।

बोले—“अभी किसी से जिक्र करने की जरूरत नहीं है। मिस प्रकाशवती कपूर ने डिप्टी-कमिशनर की मार्फत दरखास्त दी है कि, वह तुमसे जेल में ही विवाह करना चाहती है।”

बहते-कहने भादुकता में आ गये—“मैं यह सोचता रहा कि, तुम्हें तो अभी दस-ग्यारह साल जेल में रहना है—भगवान करे, तुम छूट जाओ,

तो अच्छा ही है, पर इस लड़की का त्याग देखो ! त्याग और धर्म की ऐसी भावना हिन्दू नारी के अतिरिक्त संसार में कहीं सम्भव नहीं है। मैं मानता हूँ कि, तुम भी असाधारण देश-भक्त और वीर आदमी हो—तुमने अपना जीवन देश के लिए बलिदान दिया है। तुम्हारी गिरफ्तारी के समय मैं

बड़े ध्यान से पत्रों में सब समाचार पढ़ता रहता था। मैं नेहरू-परिवार के लोगों—विजय-लक्ष्मी और श्याम-कुमारी—को भी जानता हूँ, पर मैं सोचता हूँ, इस लड़की को तुमसे शादी करने से मिलेगा क्या ? उसका तो यह असाधारण त्याग, आदर्श है। हिन्दू धर्म और हिन्दुस्तान आज भी जो मर नहीं गया, सो ऐसी



प्राकृिणी सीता अपनी परिचारिका के साथ
[जंगल के निकट परमनन के
एक भदिर वृक्ष की प्रतिमूर्ति]
चित्र : स्वयंवर चित्रकार

ही देवियों के धर्म और आचार-व्यवस्था पर।
मुझे तो यही सतोष है कि, मुझे ऐसी देवी
के दर्शन करने का अवसर तो मिलेगा।”

इस बात का मे क्या उत्तर देता ?

अगले दिन डिप्टी-जमिन्दार के यहाँ
से आया सरकारी पत्र मुझे दिखाया गया—
“राहौर-निवासी मिस प्रयागवती कपूर,
शरेली बंदीय जेल में बंद आतंकवादी बंदी
यशपाल से विवाह करना चाहती है।
बंदी यशपाल विवाह करना चाहता है
या नहीं ?” मैंने लिख कर हमी भर ली
और विवाह के लिए अगस्त की सात
तारीख निश्चित हो गयी।

विवाह के लिए निश्चित तारीख के
दिन मुयह आठेन बजे दफ्तर से घुलावा
आया। धारण तो पहले से ही मातूम था।
जेल से मिले सपेद दुमनी के काट-बंट
पहले से घुला कर और स्त्री करावर रखे
हुए थे। उन्हें पहन कर चल दिया। शादी
के लिए डिप्टी-जमिन्दार की अदालत में
जाना था। दफ्तर में पहुँचने पर आदेश मिला
कि, बेडियों पहन लो।

‘क्या?’ मैंने विस्मय प्रकट किया।

“जेल के बाहर जा रहे हो। बेडियों
पहनायी जाती हैं।” उत्तर मिला।

“पर मैं तो शादी के लिए जा रहा हूँ।
बेडियों पहना कर शादी करायी जाती है ?
बेडियों पहन कर शादी के लिए मैं नहीं
जाऊँगा। शादी हो या न हो।”

मुझे अदालत में ले जाने के लिए गिपारी
सेवर आया हुआ सब-इंस्पेक्टर मुझे बेडियों

बिना पहनाये बाहर ले जाने की जोखिम
उठाने के लिए तैयार नहीं था।

जेल-मुपरिन्टेंडेंट परेशानी में पड़ गये।
उन्होंने पुलिस-मुपरिन्टेंडेंट को फोन किया
कि, तुम्हारे आदमी बंदी को बेडियों
पहनाये बिना ले जाने के लिए तैयार नहीं
और बंदी बेडियों पहनकर शादी करने
जाने के लिए तैयार नहीं। पुलिस मुपरि-
न्टेंडेंट ने भी मुझे बिना बेडियों पहनाये
जेल से बाहर ले जाने की जिम्मेदारी लेना
स्वीकार नहीं किया। मैंने शादी के लिए
बेडियों पहनने से बतर्द इन्कार कर दिया।
जेल-मुपरिन्टेंडेंट ने डिप्टी-जमिन्दार को
टेलिफोन कर परिस्थिति की सूचना दी।

डिप्टी-जमिन्दार मि पंडले सबट में
पड़ गये। उनके पत्र के आधार पर प्रयाग-
वती, मेरी माता और शादी के लिए दो
और गवाही को लेकर उनकी अदालत में
पहुँची हुई थी। डिप्टी-जमिन्दार ने मेर
मल्होत्रा को उत्तर दिया—“पुलिस मुपरि-
न्टेंडेंट और बंदी दोनों की ही बात ठीक है।
मैं दुल्हन को लेकर जेल में आ रहा हूँ—
वहीं ही विवाह होगा।”

अवसरवत् उस दिन शरेली में एक
और सबट था। किसी धारण तागों इस्ती
की हडताल थी। शहर के धार्मिक प्रपात
सन्निहजी ने मेरी माता, प्रयागवती और
उनके साथ आये ‘हिन्दुस्तान टाइम्स’-प्रेम
के मनेजर देवीप्रसादजी शर्मा और थोहण
मूरी को डिप्टी-जमिन्दार की अदालत में
तो पहुँचा दिया था—अब उन्हें जेल तक

पहुँचाने की व्यवस्था क्या करते? मि पेंडले ने इसका भी उपाय किया। माताजी और प्रकाशवती को तो वे अपनी कार में ले आये। शर्माजी और भूरी को भी किसी भद्र पुरुष की गाड़ी मिल गयी। प्रकाशवती और माताजी के डिप्टी-कमिशनर की गाड़ी में, उनके साथ ही आने से, एन' गलत-पहमी पैदा हो गयी। किन्तु यह बात जरा ठहर कर कहूँगा।

मि पेंडले ने आज्ञा दी कि, विवाह के अवसर के लिए जेल के दफ्तर को अदालत समझ लिया जाये। सिविल-मैरेज या 'अदालती विवाह' की कार्यवाही शुरू हुई। दर और धप का जो-जो प्रतिज्ञाएँ करनी पड़ती है, हम लोग ने की। पुरोहित के रूप में डिप्टी-कमिशनर के पूछने पर प्रकाशवती ने अपने आपको सनातनधर्मी हिन्दू बता दिया, परन्तु मैंने अपना धर्म बताया—'रेसतलिज्म'। हिंदी में इस शब्द का अनुवाद 'बुद्धिवाद' ही हो सकता है।

मि पेंडले बोले—“मह नया इज्म (वाद) तो बभी गुना नहीं। नास्तिव लिख दूँ या थोड़ लिख दूँ?”

“नहीं, जो मैं कहता हूँ, वही लिखिये”— मैंने आज्ञा किया।

साहब ने चिड़कर बही लिख दिया और उन्होंने अपनी अदालती पीस सब रफ्तार भाँव ली। देवीप्रसाद शर्मा और भूरी ने प्रकाशवती की ओर से गवाही में हस्ताक्षर किये। मेरी ओर से गवाही में रमेशचंद्र गुप्त और मेजर महोत्रा ने हस्ताक्षर

किये। भूरी पाँच-छ सेर मिठाई भी ले आये थे, सो बाँटी गयी। जो काम जेल में बभी नहीं हुआ था, वह हो गया।

विवाह के दूसरे-तीसरे दिन ही, दूसरे हाते में रहनेवाले 'सी'-क्लास के राजनैतिक और चोरीचौरा के मामले के बंदियों का पेंसिल से लिखा एक पूरे ताब का गुप्त पत्र मिला। इस पत्र में उन्होंने अपने एक आतिथ्यकारी नेता के नैतिक पतन पर टोक प्रकट कर आतिथ्यकारियों का नाम कलंकित न करने की अपील की थी। पत्र का अभिप्राय था कि, मैंने जेल से मुक्ति पाने के लिए अंग्रेज डिप्टी-कमिशनर की लडकी से विवाह कर लिया है। बहुत-से राजनैतिक बंदी तो 'सी'-क्लास में उग्र-बंद बाट रहे हैं। मैं तो 'थी'-क्लास की सुविधाएँ पा रहा हूँ। क्या मैं इतना भी नहीं सह सकता?

जेल के भिन्न भिन्न भागों और हातों में घूमनेवाले बंदी-जमादारों से गुना, जेल में अपवाह थी कि, डिप्टी-कमिशनर साहब अपनी लडकी को सादी पहना कर मोटर में ले आये और 'बी'-क्लास वाले साहब ने (अर्थात् मुझे) ब्याह कर गये। अब साहब जेल से छूट जायेंगे। साहब और सरकार में मुल्ह हो गयी। इस भाँति या बत्तना का आधार टागा-हुइताल के कारण प्रकाशवती का डिप्टी-कमिशनर की साटर में आना ही था। पचावी लडकियों का रंग या भी काफी गौरा होता है। तिस पर ब्याह की तैयारी में कुछ पाउडर भी पोता ही होगा। वे

अंग्रेज की बेटी समझ ली गयी।

जेल में रोमाञ्चकारी अफवाहें उड़ाने से कैदियों को मतोष भी खूब मिलता है। जीवन में सफ़ाई और वैचित्र्य अनुभव करने का यही तो एकमात्र साधन उनके हाथ में रहता है। पत्र लिखनेवाले लोगों का भी जितनी सही बात बतायी जा सकती थी, बता कर उनका भ्रम और आशावा दूर करने की चेष्टा की। जेल में विवाह होना नयी बात थी। इसलिए सभी अखबारों ने—'स्टेट्समैन' आदि ने भी—अमाचारको महत्व देकर मोटे अक्षरों में प्रकाशित किया।

जेल में विवाह हो जाने के समाचार से—चाहे वह खुद दफ्तरी दग ने ही सम्प्रदाय हो—सरकार की दृष्टि में जेल के वातावरण की रद्द गम्भीरता का अत्यन्त दृढ़-गो गया। सचिवान्ध के जोष-भटनाल के कागज दोड़ने लगे कि, यह नयी बात क्या और कैसे हो गयी? मेजर मल्होत्रा ने एक दिन बताया कि, उनमें कुछ-नाछ होने पर उन्होंने निषेध उत्तर दे दिया—“विवाह डिप्टी-कमिशनर की स्वीकृति और आज्ञा से हुआ। जेल के जिस सरान में विवाह-सम्पन्न हुआ, वह उस समय डिप्टी-कमिशनर की आज्ञा से अद्वान्त में परिणत कर दिया गया था और जेल-अपरिन्टेंडेंट के नियंत्रण में नहीं, डिप्टी-कमिशनर के नियंत्रण में था। जेल-अपरिन्टेंडेंट वहाँ दर्ज और गवाह की स्थिति में मौजूद था।”

बात यही नहीं रह गयी। डिप्टी-कमिशनर पंडित से जवाब माँगा गया कि,

जेल में बंदी के विवाह की स्वीकृति उन्होंने कैसे दे दी? अंग्रेज अफसर भारतीय अफसरों की तरह दबू नहीं होते थे। पंडित ने उत्तर था—“विधान अपरा परम्परा में बंदियों के विवाह या जेल में विवाह के सम्बन्ध में वहाँ कोई निर्देश नहीं है। मिस प्रकाशवती ने विवाह के लिए दरखास्त दी, उसमें गैर-मानवी बात नहीं थी। उनकी इच्छा-शक्ति में बाधा डालने का मेरे पास कोई कारण नहीं था, इसलिए मैंने स्वीकृति देना ही उचित समझा।” इतने पर भी विवाह की प्रतिक्रिया में आरम्भ हुई हलचल समाप्त नहीं हुई।

कुछ मास बाद उत्तर प्रदेश की सरकार के तत्कालीन गृह-सदस्य (होम-मेम्बर) सर महाराज सिंह धरेली-जेल का निरीक्षण करने आये। मेरा परिचय पाकर बोले—“तुम्हें जेल में रखकर बोर्ड-न-बोर्ड मुसीबत होती ही रहनी चाहिए। जेल में शांति बरतें तुम्हें क्या पापदा हो गया? हमारे लिए एक समस्या जल्द खड़ी कर दो।” उन्हें उत्तर दिया—“आप स्वयं देख रहे हैं कि, मुझे कोई पापदा नहीं हुआ। जो कुछ हुआ, सब आपकी सरकार और अफसरों की अनुमति से ही हुआ।”

महाराज सिंह बोले—“हुआ यह कि, हमें 'जेल-अनुअर्ड' में एक और धारा बढ़ानी पड़ गयी कि, जेल में बंदियों का विवाह नहीं हो सकता।” मैं मुस्करा पड़ा—“चलिये, एक ऐसी बात तो हो गयी, जो कभी नहीं हुई थी।”

सिक्के इतिहास नीलतर्क

मुद्रा पुरातत्व के शिपिज लेखक परमेश्वरीन्यास गुप्त वा एक शोधपूर्ण लेख

★

सिक्के वास्तव में, उसी तरह बातें करते हैं, जिस तरह हम-आप परस्पर बातें करते हैं। अंतर केवल इतना है कि, उनके झोलने का ढंग सर्वथा भिन्न है। उनकी आवाज, उनसे बात करनेवाला व्यक्ति केवल अपने-आपमें ही सुन पाता है।

मेरी ये बातें आपको पहली-सी लगने लगी होगी, किन्तु सिक्को का अध्ययन उतना ही रोचक है, जितना किसी से बातचीत करना। एक बार जब सिक्को के अध्ययन में रुचि लेना आरम्भ कीजिये, आपको अपने-आप आनंद आने लगेगा। ज्यों-ज्यों आप सिक्कों को ध्यानपूर्वक देखते

जायेंगे, नयी-नयी बातें (जिन में समुद्रगुप्त की भाषा बतल रहे हैं।) स्वयं सामने आती जायेंगी। आपकी कल्पना जागरूक हो उठेगी और इतिहास के अनेक रहस्य अपने-आप खुलते जायेंगे।

अतः जब मैं किसी सिक्के को लेकर ध्यानावस्थित होता हूँ, तो उस समय मैं समझता हूँ, मैं सिक्को से बातें कर रहा हूँ।

लीजिये, इस सिक्के को देखिये। एक हाथी पर दो व्यक्ति सवार हैं। जो आगेवाला व्यक्ति है, वह दाहिने हाथ में भाला लिये है, जिसे वह पीछे की ओर घाने हुए है। दूसरा व्यक्ति, जो पीछे है, शिपिज-सा होता हुआ पीछे

को गिरता दिखायी पड़ रहा है। हाथी भागे बड़ रहा है। हाथी के भी पीछे बैग के साथ उछलता हुआ घोड़ा है, जिस पर एक व्यक्ति सवार है। उसके हाथ में भी भाला है, जिससे वह हाथी पर पीछे बैठे हुए व्यक्ति पर आक्रमण कर रहा है।

भाला कदाचित् उस व्यक्ति के शरीर में भी घुस गया है। सोचिये, यह दृश्य क्या कहता है? सिक्के पर कोई अभिलेख नहीं है, जो आपको सहायता कर सके।

इसी सिक्के को उल्टकर देखिये। मुद्रा-वेदा में एक व्यक्ति सदा है। यह व्यक्ति और कोई नहीं, यूनानी विजेता



सिन्दर हैं। वह जीयस (यूनानी युद्ध-देवता) के रूप में खड़ा है। उसका यह स्वरूप अन्य अनेक सिक्कों पर मिलता है। यह उसने अग्निमान का छातक है। इसमें यह ता निक्षिप्त हो ही जाता है कि, यह सिक्का सिन्दर का है।

अब एक बार फिर इस सिक्के की दूसरी ओर देखिये और बताइये, दृश्य क्या व्यक्त करता है? दृश्य युद्ध का है, यह तो आपकी समझ में आ गया होगा। घुड़सवार ने हाथी-सवार पर भाले से आक्रमण किया है और हाथी पर बैठा व्यक्ति क्षिप्त हो रहा है। हाथी पर आगे की ओर बैठा व्यक्ति भाले में प्रतिशोध लेने की दृष्टि से आक्रमण के लिए सचेष्ट है। अब



तत्त्व ध्यान में घुड़सवार को देखिये। उग्रा शिरस्त्राण बिलबुल बंगा ही है, जैसा सिन्दर का। इससे कल्पना की जा सकती है कि, घोंडे पर सवार व्यक्ति खुद सिन्दर ही है और वह हाथी पर सवार व्यक्ति पर आक्रमण कर रहा है। युद्ध में हाथियों का प्रयोग केवल भारत में होता था। अब यह सम्पूर्ण भारत के किसी युद्ध से सम्बन्ध रखता है—यह भी स्पष्ट है। अब सोचिये, यह युद्ध कौन सा हो सकता है और किसमें हो सकता है, जिसमें सिन्दर ने इस प्रकार खुद भाग लिया हो?

तत्त्व इतिहासकार विवन्ते षट्पदे को तो उलटिये। देखिये, वह क्या करता है। उसने भी तो सिन्दर का इतिहास लिया है। अपने इतिहास की सामग्री उसने टालमी—जा सिन्दर के साथ आया था—और टिमोनीज के इतिहास से लिया है।

देखिये, वह लिखता है—“पोरस (पुर) को आगे-पीछे नौ घाव लगे और रक्त-स्राव के कारण वह बेहोश हो गया। उसके हाथ में भाला छूट पड़ा। किन्तु उसका हाथी, जो अभी घायल नहीं हुआ था, क्षुब्ध होकर दन्तु-संता पर तब तक आक्रमण करता रहा, जब तक पीलवान ने अपने राजा की अवस्था-शरीर बेकार होते, हथियार गिरते और बेहोश होते—इस कर उसे बेनहाना नहीं भयाया। सिन्दर ने उसका पीछा किया, किन्तु अब तक उसका घोंडा अनेक घावों से छिद गया था। अब वह बेहोश होकर गिर गया।.....”

इस सिक्के के दृश्य के साथ किन्ता साम्य है। आपकी समझ में आया कि, इस छोटें-से सिक्के में इतिहास के एक महत्वपूर्ण घटना का समर्थन होता है। सिन्दर के जीवन में यह घटना इतनी महत्वपूर्ण थी कि, उसने इसकी स्मृति बनाये रखने के लिए इस दृश्य को सिक्के पर अंकित कराया। अब आप सोच सकते हैं कि,

राजा पुर के साथ उसका सर्प बितना विकट रहा होगा ?

अब इस दूसरे सिक्के को देखिये। यह सोने का है और अपने ढंग का एकमात्र सिक्का है। यह गुप्तवंशी राजाओं के सिक्को के एक बहुत बड़े दफ़ीने में मिला है। यह दफ़ीना १९४६ में तत्कालीन भरतपुर राज्य में बयाना नामक जिले के एक गाँव में मिला था और इस दफ़ीने में कई हजार सिक्के थे।

हाँ, देखिये—सिक्के की सीपी ओर—दुहरे प्रभा-मण्डल से घिरे भगवान् विष्णु हैं। उनके बायें हाथ में गदा है और दाहिने हाथ में—जो भेंट करने की मुद्रा में है—तीन गोल वस्तुएँ हैं। सामने एक प्रभा मण्डल-युक्त शक्ति खड़ा है। उसका दाहिना हाथ वस्तु ग्रहण करने की मुद्रा में है और बायाँ हाथ कमर में बँधी

तलवार की मूठ पर है। सिक्के की दूसरी ओर कमल पर खड़ी एक स्त्री है, जिसके दाहिने हाथ में ताला बमल है और सामने की ओर एक शक्ति है। उसके पीछे ब्राह्मी लिपि में लेख है—'चक्र-विक्रम'।

देखने में यह सिक्का कितना भव्य है ! जानते हैं, यह किसका सिक्का है ? इस पर भी पहले सिक्के की तरह इसने चलने वाले का नाम नहीं है। बल्कि इस पर उसका

विरुद्ध दिया हुआ है। 'चक्र-विक्रम' विरुद्ध से जान पड़ता है कि, यह सिक्का चद्रगुप्त विजयनादित्य का है। जिस दफ़ीने में यह सिक्का मिला है, उसमें केवल कुमारगुप्त तक गुप्त-वंशी राजाओं के अतिरिक्त, किसी अन्य राजा के सिक्के नहीं थे।

सिक्के की पीठ पर भूति लक्ष्मी की है और लक्ष्मी की मूर्ति इस वक्र के प्रत्येक सिक्के की पीठ पर पायी जाती है। अतः इतना ही है कि, वे किसी पर खड़ी हैं, किसी

पर बैठी हैं, किसी पर सम्मुख हैं, किसी पर वामा-भिमुख। अतः उस पर आपको विशेष ध्यान देने की जरूरत नहीं। जानने और पूछने की बात यह है कि, सिक्के पर चित्रित और अंकित दृश्य क्या है और उसका उद्देश्य क्या है ?

आप जिसे विष्णु की मूर्ति कहते हैं, वस्तुतः वह चक्र-पुरण की मूर्ति है—अर्थात्

भगवान् विष्णु के चक्र का मूर्त रूप है। पुरुष-आकृति के चारों ओर जो प्रभा-मण्डल-सरोखा दिखायी देता है, वस्तुतः वह चक्र है। वैष्णव धर्म के पंचरात्र आगम की मुद्रासिद्ध पुस्तक 'अहिर्बुधन्य-संहिता' में पञ्च-पुरुष का जो स्वरूप वर्णित है, उससे बिल्कुल मिलती हुई सिक्के पर की मूर्ति है। उसके अनुसार विष्णु के महानुद्गारण-चक्र को चौखण्डीय-सोल्मियाँ हानी हैं और उसकी परिधि



[रोम के इंडियन सिक्के पर स्त्री लक्ष्मी देवी लक्ष्मी। वक्त्र में है उनका वाहन शक्ति वक्त्र।]

दुहरी होती है। इस चक्र के भीतर चक्र-
पुरुष की सौम्य मूर्ति होती है, जिसके दो
हाथ होते हैं। ठीक यही स्वर्ण मूर्ति पर
भी है। प्रभा-मण्डल-सरीखा दिग्वासी देनेवाला
चक्र की दुहरी परिधि है और उगमें बिंदु-
सरीखे तीलियों के छोर दिखायी पड़ते हैं।
प्रत्येक बिंदु एक ताली का छातन है और
सिक्के पर दिखायी देनेवाले चक्र के अर्ध
भाग में बत्तीस बिंदु हैं—अर्थात् चक्र में
बत्तीस तीलियाँ हैं और उनके बीच में
चक्र-पुरुष की आकृति तो है ही।

'अहिर्बुध्न्य-महिता' में चक्र-पुरुष की
महिमा विष्णु के समान ही बतायी गयी
है। कहा गया है कि, विष्णु की सारी शक्ति
उगमें निहित है। यही नहीं, नारायण के
समान ही वह अनंत और अंतर्धर्मी भी
है। विष्णु के पास दो शक्तियाँ हैं—इच्छा
और क्रिया। इच्छा-शक्ति रुद्री है और
क्रिया-शक्ति शुद्धात्म-चक्र।

हम इस मूर्ति पर चक्र-पुरुष को देखाते
हैं और उगमें सम्मूक्त जो व्यक्त है, उसे
हम चक्रगुप्त के रूप में पहचान सकते
हैं। उसके चारों ओर प्रभा-मण्डल है, जो
उसके राज्य-श्री की ध्वज करता है और
खड्ग-स्थित हाथ उगकी शक्ति को।
दृश्य यह है कि, चक्र-पुरुष चक्रगुप्त ने
प्रयत्न होकर उसे चक्रवर्ती-रुद्र प्रदान
पर रखा है। चक्र-पुरुष के हाथ में
जो तीन मोड़-मोड़-मोड़ वस्तु है, वह
सम्भवतः त्रिलोक्य को व्यक्त करती है।

अस्तु, इन मूर्तियों द्वारा चक्रगुप्त अपने

को चक्रवर्ती घोषित कर रहा है। उसके
जो सिक्के प्राप्त हैं, उनमें प्रायः कहा गया
है कि, राजा इस छोटे-बड़े को जीतकर अपने
सुचरित में परलोक को जीत रहा है।
'क्षितिमवजित्य सुचरितं दिव्यं' यति विजया-
दित्य—' उसी का यह मूर्त रूप है।

बहुत सम्भव है कि, उगमें पश्चिमोक्त-
पर विजय प्राप्त कर अपनी विजय-यात्रा
समाप्त की हो और उगके साम्राज्य का
पूर्ण विस्तार हो चुका हो। उस समय अपनी
क्रिया-शक्ति के प्रति निष्ठा प्रकट करते
हुए विष्णु की क्रिया-शक्ति के प्रतीक
चक्र-पुरुष के सम्मान में उगमें कोई बहुत
बड़ा अनुष्ठान किया हो और उसकी स्मृति
में इन मूर्तियों का प्रयत्न किया हो।

अब जरा इन तीनों सिक्कों को देखिये।
यह महमूद गजनवी का है—उगी महमूद
गजनवी का, जो मूर्ति-विध्वंसन कहा और
समना जाता है। उगमें इन सिक्कों को
लाहौर की दरबार में ढलवाया था।

एक ओर कुपी-लिपि में कुछ लिखा है
और दूसरी ओर ?

अब और क्या पढ़ें ? चीनियों नहीं,
दूसरी ओर जो कुछ लिखा है, वह और कुछ
नहीं, नागरी-लिपि है और उगका वह रूप
है, जो दगवी गताब्दी में प्रचलित था।
नागरी ही क्या, उग पर जो कुछ लिखा
है, वह मस्तर में है और मस्तर ही नहीं
मस्तर में 'कलमा' का अनुवाद है।

कुपी अक्षरों में लिखा है—'ला-अल्ताह
अ-अल्ताह मुहम्मद रघू-अल्ताह

J.J.'s



SHOP AT



जै. जै. अन्ड सन्स
 १) मंगलदास रोड, लोहार बाक.
 २) प्रार्थना भवन, दाम जकशन
 ३) मुलेश्वर रोड
 ४) कुम्भार तुकड़ा
 ५) डी. गिरीश्वर रोड चंदर सेशन के सामने
 बांगड़ी.
 (वी. बी.)

“जे. जे. अन्ड सन्स”

पन्ना ३ पांच स्टिच हुआ

डाबर आंवला केश तैल



★ मनोरम गन्धयुक्त श्रेष्ठ
केश उपादान

डाबर (डा. एस. के. वर्मन) लि.

काली कत्ता



THE choice

OF THE HOUSEWIFE

AMRANG

THE IDEAL HOME DYE

AMRITLAL & CO., LTD.

POST BOX No 256,

BOMBAY, 1.



नूतन बरं और दीपावलीके शुभ अवसरपर
आपके यहाँ लक्ष्मीरा दुभाषण हो और
आपसी मायांशुषीण उपपत्ति हो

आयुर्वेदाश्रम

फार्मसी लि. अहमदनगर

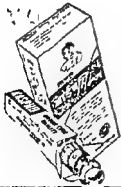
इस नूतन वर्षमें

आफालिग्राइपमिवश्चर

कारफो

आपके नरकुषणे
जरीण व सुख
बनये रवे।

और आपसे लक्ष्मी-परिवारकी
जरीण व सुखको
प्राप्ति हो।



यामोनउद्दोला अमीन उल मिल्लत । विस्म
अल्लाह अलदिरहम जरब बमहमूदपुर
जरब सन्

“और उसी की दूसरी
और सस्कृत म अनुवाद इस प्रकार है—
“अव्यक्त मेक मुहम्मद अवतार । नूपति
महमूद । अव्यक्तीयडाम अथ टव हत
महमूदपुर पटित ताजि बीयरे सबती ।’
अल्लाह का अनुवाद ‘अव्यक्त’ किया गया
है । इसमें स्पष्ट है कि, यह अनुवाद निस्मदेह
विषी ऐसे व्यक्ति का है, जो हिन्दू और
मुस्लिम, दोनों धर्मों में ईश्वर के दार्शनिक
स्वरूप से भलीभाँति परिचित रहा हो ।
मुहम्मद को अवतार कहा गया है, जो
हिन्दू-भावना है और मुसलमानों के ‘रसूल’
शब्द की भावना के विरुद्ध है । नूपति महमूद
का प्रयोग अनुवाद में अरबी के ‘यामोनउद्दोला
अमीनुलमिल्लत’ के स्थान पर किया गया
है । यह महमूद की उपाधि थी । इस
उपाधि से भारतीय अपरिचित थे, इसलिए
उसके स्थान पर स्पष्ट उसके नाम का
प्रयोग किया गया है ।

‘कलमा’ का सस्कृत अनुवाद इस बात
का परिचायक है कि, उस समय तक धार्मिक
अभवादिता ने अपना वर्तमान रूप नहीं
धारण किया था । सांस्कृतिक आदान-
प्रदान मुक्त रूप से होता था । विदेशी
आगतुकों ने यहाँ आकर इस देश के धर्म
और सस्कृति के प्रति रुचि व्यक्त की ।
और, ~~महा~~ बात किसी ऐसे व्यक्ति से नहीं
हो सकती, जो इस देश में धर्म-विरोधी
भावना लेकर आये ।

अब बताइये, यह सिक्का क्या कहता
है ? हम इसकी बात माने या औरों
की ? अब काम स्वयं सोचिये—महमूद
गजनवी को किस दृष्टि से देखेंगे ?

अच्छा, अब इस सिक्के को देखिये ।
आप देख रहे हैं—चलते हुए एक पुरुष और
स्त्री का ? पुरुष के हाथ में धनुष है और
बढ़ सिर पर मुकुट धारण किये हुए है ।
शरीर पर जामा है, जो घुटने के नीचे तक
लटका रहा है । कमर में पटका बंधा हुआ
है, जिसके दोनों छोर आगे-पीछे लटक रहे
हैं । पीठ पर तोरो से भरा तूफ़ीर लटका
रहा है और स्त्री के दोनों हाथों में फूलों
का गुच्छा है । वह चोली-लहंगा पहने है ।

अब जरा ध्यान से देखिये—इन दोनों
के बीच में ऊपर यह क्या लिखा हुआ
दिखायी देता है ?

“राम श्री (म)”

ठीक ।

तो क्या यह राम-सीता का सिक्का है ?
इतना पुराना ? बरखाइये मही, तब
सिक्के की दूसरी ओर भी तो देख लीजिये ।
अरे, इस ओर तो अरबी लिपि में कुछ
लिखा हुआ है ।

हाँ, लिखा है—“५० इलाही अमरदाद ।”
इसका क्या अर्थ हुआ ?

मही—“५०-वें इलाही-वर्ष के अमरदाद
महीने में बना सिक्का ।”

तो यह सिक्का रामचन्द्रजी के जमाने
का नहीं है ?

नहीं, यह सिक्का अकबरने चलाया था ।

हैं! अवसर ने? पर उमका नाम
कहाँ है इस मित्रों पर?

घमडाइये नहीं। आपने मुना है न कि,
अवसर ने इन्हीं नामक धर्म चलाया था?
उसी तरह उगने अपना एक नया सम्बन्ध भी
प्रचलित किया था। यह सम्बन्ध उगने यद्यपि
अपने राज्य-काल के २९-वें वर्ष में प्रचलित
किया था, पर उसकी गणना उसके राज्या-
भिषेक के वर्ष में मानी गयी और उमरा
आरम्भ उस वर्ष के 'नौरोज' में हुआ था।
इस सम्बन्ध के मास और दिन प्राचीन पारसी
अथवा 'यजुजर्दी-सम्बन्ध' के रखे गये। इस
सिक्के पर यही सम्बन्ध और उसके पोंचवें
महीने का नाम लिखा है। तात्पर्य यह कि,
यह सिक्का अक्षर के ५०-वें राज्य-काल के
५-वें महीने में प्रचलित किया गया। इस
वर्ष के दूसरे महीने फरवरी-दिन में बने इस
दिन के सिक्के भी पाये गये हैं।

अक्षर का सिक्का और उम पर राम-
सीता का चित्र? एक विचित्र बात है।

विचित्र तो है ही। इस सिक्के का पहल-
पहल देखकर जब उस पर 'रामसीय' नहीं
पढ़ा जा सका था, तो कुछ विद्वानों ने अनुमान
किया था कि, वह बीजापुर के गुलतान
द्वारा मुगल अधीनता स्वीकार करने का
स्मारक है। उगने अधीनता स्वीकार करने
के माथ-माथ अक्षर के बड़े शाहजादा
दानियात को अपनी घंटी भी व्याही थी।
सोम यह कल्पना भी न कर सके कि, अक्षर
अपने सिक्के पर किसी हिन्दू देवी-देवता
का चित्र अंकित करायेंगे।

मुसलमानों-द्वारा सिक्कों पर हिन्दू
देवी-देवताओं का चित्र अंकित कराना
कोई नयी बात न थी। मुहम्मद-घिन-
गमिद, ने जो सर्वसाधारण में मुहम्मद गोरी
के नाम में प्रसिद्ध हैं, अपने मोने के सिक्के
पर लक्ष्मी का चित्र अंकित करवाया था।

अक्षर स्वभाव से धर्म-साहिष्णु ही न
था, वरन् धर्म के प्रति जिज्ञासु भी था।
उसकी बुद्धि जागरूक थी। वह अपने महो-
सय धर्मवालों को बुलाना और उनसे
विचार मुतला था। वह भारतीय सत्सृष्टि
का भी अनन्य उपासक था। अक्षर यह
भारतीय वेद-भूषा धारण करता था।
हो करता है, जीवन के अन्तिम दिनों में
(यह सिक्का उगने के राज्य-काल के अन्तिम
वर्ष का है) वह राम-भक्ति की ओर
आकृष्ट हुआ हो। उम समय तक तुलसीदास
का 'रामचरित मानस' पूरा हो चुका था।
रहीम और तुलसी के परिचय और तुलसी
के अक्षर के दरबार में जाने की रिश्तदारी
तो गुनी ही जानी है। हो जाता है, उनसे
बढ़ प्रभावित हुआ हो और अपनी इन
नयी भावनाओं को व्यक्त करने के लिए
उगने राम-सीता के चित्र वाले इस
सिक्के को प्रचलित किया हो।

ये कुछ थोड़े-से उदाहरण हैं, जिनसे आप
समझ सकते हैं कि, सिक्के किस प्रकार
बोल्ते हैं। उनमें आप किस प्रकार बोलने
पर सज्ज हैं और वे किस प्रकार रोचक
सत्य आपके सम्मुख प्रस्तुत करते हैं—आपकी
कल्पना को उत्तेजना प्रदान करते हैं।



पुराणों और रहस्य ग्रंथों में भी अथिः राज्ञः मन्त्रं प्रोक्तं घन्नाश्रितं के लक्ष्मीं तिलो मे
अतिथीय श्री द दन मांमर वी यह चापसीनी हम वेस्नै रेलवे ए युवत से तामार प्रस्तुत
कर रहे हैं। लक्ष्मी के गिराविली हैं उन्नी थीने के ऊ बनिव बत्ताशर श्री ए द अन्नेवर।

*

मैंने कभी किसी घर को नहीं मारा स्वयं मर बाघ हाथ में स्तनगत की गोरी
न बाघ को और न चीते का हा लया थी। पूरे एक हफ्ते भर का म ता
गिरार किया ह। फिर भी मैं अपने का भा नहीं मरा था।

गिरारी कहता हूँ क्यावि मन अपराध हाथ का बाघ भर जान के बाद जब मैं
जगत में भयानक जगला मैं कई हिंस्र अस्पताल से बाहर निकल तो मरे भाई
मनुष्यों का गिरार किया ह। और प्रमन मुझ कुछ दिन जगत में जानर रहन
मेरी यह अनन्त धारणा है कि जितना की सगाह दी। चोबिया कारस्ट रेस्ट
खूँटार एक आदमी हो जानता ह उतना हाउस वय विभाग का एक अतीव सुन्दर
अन्य कोई प्राणी नहीं। पागासिह और बगना था जहाँ यज्ञ इसके गिर सभा
उसके गिराह के खिलाफ सफ़ायापूर्वक गुप्त-निविधान प्राप्त हा जाता था। हा
जिहाद कर मैं इसी निष्पक्ष पर पहुँचा हँ। सिगमोन् के बन का ओर मैं नहीं
जान की हिंस्रपति था। बग एक खूँटार बाघ रहता था।

पागासिह के साथ युद्ध करने में हमारा यथा का एक सहायक नगा न कुछ दूर
तीन आदमी लत रहे और बाघ आहत हन। छोनी-सा पहाड़ी पर स्थित यह बगना
हमने उनसे सभी आश्रितियों का बाघ तमाम बड़ा गतिप्रद स्थान था। तीन दिन तक
कर दिया। नेक पागासिह का छात्र वडा गतिप्रद स्थान था। तीन दिन तक
भाई सरसिह किसी तरह प्रच निकल।

में धाराम ही करता रहा। पड़ने, नदी में तैरने या जगली रास्ते पर कुछ दूर भ्रमण करने के अतिरिक्त मैंने कुछ नहीं किया। चौथे दिन मैं अपना बंधरा लेकर जंगल की नन्दीरे सोचने चला। प्रेम ने कहा था कि, यहाँ चित्र लेना आसान नहीं है। हुआ भी यही। मैं बहुत आहिस्ते में दख कर चला, सब भी चित्तल भाग जाते।

दूसरे दिन सबेरे करीब सात बजे मुझ जंगल के बीच एक छोटे-से मंदिर में चित्तल हिरनों का झुंड दिखायी पड़ा। प्रेम ने कहा कि रंग के बारे में जो हिदायत दी थी, उनको ध्यान में रखने का प्रयास करता हुआ मैं यही मावधानी में आग उड़ा। लेकिन एक भूरी टहनी मेरा रंग में न जाने क्यों मे आ गयी। पता नहीं, यदि स्वयं दंगान में ही उम रंग दो हो वहाँ। उनके टूटने में जा आवाज हुई, उसमें हिरन भाग गये और उनके साथ नन्दीरे उतारने के मेरे साथे समझने भी हिरन हा गये।

मुझे बड़ा अचानक रहा कि, चित्तल नन्दीरे टाकुओं को बारू में लाना एक व्यक्ति कुछ हिरनों में हार जाये। मैं उनके पीछे-पीछे जंगल में चला, लेकिन नजदीक उनके बंधी नहीं पहुँच सका। अंत में, एक बार एक स्थान पर बैठ गया और यह अज्ञात लगाने लगा कि, मैं क्यों हूँ! मुझे यह समझने देर न लगी कि, हिन्ना का पीछा करने हुए मैं अपना रास्ता ही भूल बैठा हूँ। सम्भव है कि, मैं मिलीमोट के भयंकर जंगल में ही चला आया हूँ, जहाँ वह पाया, नवनीत

खूंखार शेर रहता है। इस विचार से मैं काफी घबड़ा उठा और तत्काल ही वहाँ से चले-चलना मैंने मुनामित्र समझा। मूरज को ही दिशा-सूचक यंत्र मान कर मैं अपनी छाया को आगे रखता हुआ सीधा बढ़ने लगा। मेरा समझ था कि, इस प्रकार वहाँ-न-वहाँ मार्ग मिल ही जायेगा।

करीब तीन घंटा शगानार चलने के बाद मुझे छोटे-से एक मंदिर में बंद-बंद के नीचे एक छाया-मा देवस्थान दिखायी पड़ा। मेरी आर पीछे चिय भगवा वस्त्र पहन एक नन्दीरी वहाँ बैठा था। उसे देखकर मुझे बहुत आश्चर्य मिला, क्योंकि मैं बहुत घबरा गया था और प्यास भी मुझे बहुत लगी थी। मेरी ओर बिना मुड़े ही नन्दीरी ने कहा—“आइये साहब! थोड़ा देर बैठ कर विश्राम कीजिये। आप रास्ता भूल गये हैं। कुछ खास्य इन्हीं पर मैं आपका बगले पर पहुँचा दूँगा।”

मैं उनके पास जाकर जमीन पर बैठ गया। अपना मिगरेट-बैग निराकर एक मिगरेट मुन्नाले का विचार किया। फिर मौज्ज्यवश मिगरेट-बैग उसकी ओर भी बढ़ाया। उसने उस ओर ध्यान ही नहीं दिया। फिर मैंने सोचा कि, शायद वह मिगरेट न पीना हो और बगल जाने ही मैंने मिगरेट देना चाहा—उसके लिए मैंने उसने क्षमा-याचना की। नन्दीरी ने कहा—“मुझे पता नहीं था कि, आप मुझे मिगरेट दे रहे हैं। जान यह है, साहब कि, मैं अंधा हूँ और कुछ भी देखने में असमर्थ हूँ। हाँ,

आप सिगरेट पीजिये—मैं तो पीता नहीं।’

मेरे आश्चर्य का ठिठाना न था। यदि वह अंधा था, तो उसे मेरे आने की खबर कैसे लगी? बिना मुझे देखे या मुझसे बात-चीत किये ही उसने कैसे जान लिया कि, मैं कौन हूँ और रास्ता भूल गया हूँ? मुझसे प्रश्न पूछे बगैर नहीं रहा गया।

उसने हँस कर जवाब दिया—“साहज जब हम आँखों से धाम लेना बंद कर देते हैं, तो हमारी अन्य इंद्रियों की शक्ति बढ जाती है। बात यह है कि, हवा का रस मेरी ओर होने के कारण आप जब दृष्टि आये, तो आपके सिगरेट की गंध मुझे पहले ही मिल गयी। यह भी मुझ मालूम हो गया कि, यह गंध किसी हुक्के या बीड़ी की नहीं, बल्कि एक भँहगे सिगरेट की है, जिसे कोई शहरी ही पी सकता है। यह तो मुझे मालूम ही था कि, इस समय डी एफ ओ (जंगल-अधिकारी) साहज के भाई चोकिया-बगले में रह रहे हैं और उनके सिवा और कोई शहरी अभी इस जंगल में नहीं। आप रास्ता भूल गये हैं, इसका अंदाज मुझे इससे लगा कि, आप सिलीसोट की तरफ से आ रहे थे और वहाँ रास्ता भूलने-वालों के सिवा और कोई नहीं जाता।’

स्वामी देवानंद से यह मेरी प्रथम भेंट थी। उस दिन के बाद जितने दिन भी वहाँ मैं रहा, करीब-करीब रोज ही उनसे मिलने जाता। मेरे बगले के निवट ही जो ‘फारेस्ट-गार्ड’ (जंगल-विभाग का कर्मचारी) रहता था, उसने मुझे बताया कि, वहाँ के निवासी

स्वामीजी को एक पवित्र आत्मा मानते हैं। उनका विश्वास है कि, जंगल के जानवरों पर भी स्वामीजी का अद्भुत प्रभाव है। उस देवस्थान पर जानवर भी पूजा करने जाते हैं और वाघ तथा तेंदुवे भी वहाँ की पवित्रता का खयाल कर उसके आस-पास शिकार नहीं करते। स्वामीजी को वे भी जादू की दृष्टि से देखते हैं।

बाद में मुझ ज्ञात हुआ कि, स्वामीजी की शिक्षा साहौर में हुई थी और वहाँ वे एक सफल डाक्टर भी थे। लेकिन १९४७ में मनुष्य का जो नृसस रूप उन्होंने अपनी आँखों देखा, उसने उन्हें भयंकर निराशा हुई और उन्होंने ससार त्याग दिया। जंगल में रह कर दो साल उन्होंने उसी देवस्थान पर भगवद्-आराधना में बिताये। एक दिन नृपान में वे बाहर रह गये और बिजली गिरने से उनके आँखों की ज्योति बली गयी। बने उनकी आँखें और लोगों की तरह ही सामान्य दिखायी पड़ती थीं, लेकिन देख के बिल्कुल नहीं सकते थे। तब तक जंगल में उन्हें इतना मोह हो गया था कि, वापस शहर लौटना उनके लिए असम्भव था और वे वहीं रहने लगे।

उनके यहाँ तीसरी बार जब मैं गया, तो मुझे उनकी दिव्य शक्ति का परिचय मिला। मैंने उनसे कहा कि, जंगल के जानवरों के चित्र लेने की मेरी प्रबल इच्छा है, लेकिन मैं किसी भी तरह सफल नहीं हो पा रहा हूँ। जब उन्हें ज्ञात हुआ कि, मैं शिकार नहीं, बल्कि फोटो लेने में रूचि

रखता हूँ और मुझमें जगल के जानवरों का, जिन्हें वे अपना मित्र कहते थे, कोई अनिष्ट नहीं होनेवाला है, तो उन्होंने मेरी गहायता देने का वचन दिया।

उन्होंने मुझ देवस्थान के पास ही एक झाड़ी के निकट घात तैयार बँधन के लिए कहा। इससे बाद व स्वयं ध्यानस्थ होकर बँठ गये। तभी दस मिनट के बाद, कुछ दूर पर, जहाँ जगल शुरू हुआ था, चिंगी के आन की आहट सुनायी पड़ी। एक चित्तल मृग और तीन हिरनियाँ मुझे दिखायी पड़ी। कुछ छिटकर कर वे मैदान में लड़ी हाथी की ओर उससे बाद धीरे-धीरे स्वामीजी के पास आ गयीं। मैंने केसर का गढ़ना देखा। उनकी आवाज में वे चोरी, लेकिन स्वामीजी ने अपना हाथ उनकी ओर फैलाया और वे घात हो गयीं। उससे बाद एक हिरनी तो स्वामीजी के बिलकुल तभी जाकर बड़े स्नेहपूर्वक

उत्तरा हाथ चाटने लगी।

कुछ देर बाद स्वामीजी ने एक ओर जगल की तरफ तारना शुरू किया, मानो झाड़ियों में वे चिंगी का देण रहे हों। फिर उन्होंने कुछ कहा, जिसे सुन कर हिरन जल्दी से दौड़ गये। मैं आश्चर्यचकित होकर ताकने लगा कि, आखिर क्या था ? दान में एक घामदार नदुवा जगल के रालों पर दिखायी पड़ा। वह भी स्वामीजी की आर दो मिनट तो ताता रहा। उसके बाद जिन ओर हिरन भागे थे, उमी नरक चला गया।

स्वामी देवानन्द ने मुझसे कहा—“इसमें कुछ भी आश्चर्यजनक नहीं है। पशु भी समझते हैं कि, उनके प्रति मेरे हृदय में प्रेम है और मैं नहीं उनका अहित नहीं माच सकता। इसीलिए वे हम स्थान को पवित्र समझते हैं। जब मैंने अपनी दृष्टि राखी है, मैं उनसे अपने मन की बात



वह सकता है और उनके मन की भा-
ममज्ञ लेता है—ठीक उसी तरह जैसे मूक
पशु एक-दूसरे का मनोभाव समझ जाते
हैं। मेरे लिए यह कैसे सम्भव हुआ यह मैं
नहीं कह सकता। आज सबेरे ही मैं
सुना था कि एक तदुवा जंगल में आया
है। मैं हिरन यहाँ पास ही में चर रहे थे।
मैंने इन्हे सावधान होने के लिए सदेरा
भजा और मैं यहाँ इसीलिए आया था।
जब मुझ तदुवे के इधर आने की गध आयी
तो मैं हिरनों का भाग जान को बहा।

वहाँ से विदा होने के एक दिन पहुँच मैं
स्वामीजी से अंतिम भेट करने के लिए
गया। हम लोग आपस में बातचात करने
लगे। वे मुझ बता रहे थे कि हिरन और
बंदर एक-दूसरे की रक्षा करने में समझौते
के काम लेते हैं। एकाएक बिना किसी प्रसंग
एक आवाज में परिवर्तन किया ही उन्होंने
कहा— हाँ तो उस मंदिर के भग्नावशेष में

मुझ जो रत्न मिले, उन्हें मैं इस जंगल में
एसे स्थान पर गाड़ दिया है, जहाँ उनका
पना किसी को नहीं लग सकता।

मेरी समझ में नहीं आया कि आखिर
स्वामीजी इस प्रकार वहक क्या गया ?
एकाएक पीछे से किसी ने पुकारा— आहा,
एक पी साहब ! आखिर मैं आपको
निश्चय और अकेले पा ही लिया। जब
आपन मेरे भाई पालासिंह को मारा, तभी
मैं प्रतिज्ञा की थी कि, एक रोज आपसे
जल्द बदला लूँगा। मैं सुना कि, आप
जंगल में आराम करना रहे हैं और इसी
लिए आपका पीछा करता हुआ यहाँ चला
आया। मरने के लिए आपको इससे अधिक
जाति का स्थान दुमरा नहीं मिल सकता।

पीछे मड़कर मैं देखा तो मालूम हुआ
कि सरसिंह स्तब्धन तान मेरे पीछे खड़ा
है। देवानंद की ओर देखापर उसने
कहा— स्वामीजी ! आपसे मेरा कोई झगडा



नहीं। जब मैं एम पी माह्न को यही खत्म कर दूंगा, तो आप भी मुझे उम गड़े हुए घन का पता बता देंगे।”

देवानंद जरा भी विचलित नहीं हुए। मुस्करा कर उन्होंने कहा—“साहब का मारना—न मारना तुम्हारा काम है। जहाँ तक उन रत्नों का प्रश्न है, मैं तुम्हें उनका पता पभी नहीं बताऊँगा। मौन में मुझ कोई भय नहीं और तुम्हारे पास इसमें बड़ी और कोई धमकी नहीं। वे जवाहरात पहाँ गड़े हैं, यह मेरे मित्र और कोई नहीं जानता। मुझे मार डालने के बाद यदि जन्म-भर तुम उनकी खोज जगत् में करत रहो, तब भी तुम असफल ही रहोगे। लेकिन छहों, साहब मेरे मित्र हैं। उनकी जान अगर तुम छाड़ दो, तो तुम्हें उन जवाहरात का पता बता सक्ता हूँ।

शेरमिह कुछ देर तो विचार में पड़ गया। फिर बोला—“यदि वह रत्न वास्तव में मूल्यवान हैं, तो मैं साहब का धम-धम इस समय सा छोड़ सक्ता हूँ। लेकिन मैं पढ़ें उन रत्नों का देण तो लूँ।”

देवानंद ने उम स्थान का विवरण उताना शुरू किया, जहाँ वे जवाहरात गड़े थे। लेकिन शेरमिह की समझ में कुछ भी नहीं आया। उसने कहा—“आपका स्वयं घर कर वह स्थान बताना पड़ेगा। साहब को मैं अवेग यहाँ छोड़ नहीं सकता, हाथ-पैर चौप कर भी नहीं। उनके स्वयं भाग जाने का दर है या कोई आदमी आ कर ही उनसे वपन मोन दे। इसलिए उन्हें भी

नवनीत

हमारे साथ चलना होगा।”

आगे-आगे स्वामीजी चले। उनके पीछे मैं और मेरे पीछे ‘स्टेनगन’ मेरी गर्दन में गडाय धरसिंह चर रहा था। मैं इसी अवसर को ताक में था कि, धरसिंह चर जरा चूक और मैं उस पर झपटूँ। लेकिन जगत् में गहन दूर हम निपल गये, तब भी कुछ नहीं हुआ। आगे जाकर एक तीव्र गंध हम विचलित करने लगी।

धरमिह ने कहा—“स्वामीजी, आपका यह जगत् तो बहुत बदबूदार है।” देवानंद ने कहा—“घण्टाने की कोई बात नहीं। राई जलकर मरा पड़ा होगा। दुर्भाग्यवश तुम्हारा वह खजाना भी उसी तरफ है। जल्दी में चले चला। काम निपटा कर जल्दी लौट चलेगे।” ऐसा यह कर वे एक झाड़ी में तेजी से घुस गये। शेरमिह को कुछ शक हुआ और उगत ‘स्टेनगन’ में मुझ भी अंदर धकेला। हमारे क्षण हम दोनों ही पर माघ झाड़ियों के घीस थोड़ी-सी गुली जगह में लगे थे। बदबू वहीं भयानक थी।

उसने बाद जो-कुछ हुआ, यह हम तेजी से कि, टीप में उसका स्मरण भी मुझे नहीं। एक हिरन वहीं मरा पड़ा था। जैसे ही हम अंदर घुसे, तत्प्रात ही एक बाघ हमारे ओर झपटा। शेरमिह चौंका और घूम कर उसने बाघ का सामना किया। उसके बाद बाघ ने चरजने की आवाज और ‘स्टेनगन’ की आवाज एक साथ ही सुनायी दी। स्वामीजी मेरा हाथ पकड़ कर

जल्दी से मुझे शाडियो में से होकर ले जा रहे थे। आगे रास्ते पर जाकर रुक सके।

शेरसिंह का चीखना, बाघ की देहाद और 'स्टेनगन' की आवाज तीनों ही हमें कुछ देर तक मुनायी देती रहों। उससे बाद वातावरण बिल्कुल शांत हो गया। स्वामीजी ने कहा—'शेरसिंह को उचित सजा बाघ के हाथों मिल गयी। मेरा दोस्त भी अब जंगल में नजर नही आयगा। लेकिन वह सगडा हो गया था और उसे शिकार करने में बेहद तकलीफ होती थी।'।

उस स्थल पर वापस जाकर हमने देखा, तो शेरसिंह बुरी तरह जख्मी होकर मरा पड़ा था। बाघ भी 'स्टेनगन' की गोलियों से मारा जा चुका था। उस दिन देवानंद जबईस्ती मुझे मेरे बगले पर पहुँचाने आय। उन्होंने कहा—'मुझे हिमा अभिन्न है, लेकिन कुछ प्राणी ऐसे हैं, जिनका रास्ते से हट जाना ही अच्छा है। उदाहरण के लिए यह शेरसिंह। मैं जानता था कि वह झूठ बोल रहा है और जवाहरराव पा लेने पर आपकी कभी जिंदा नही छोड़ेगा।

'हम अर्धों को हमारे कान आदमी को पहचानने में बड़ी मदद देते हैं। उसकी आवाज से ही स्पष्ट था कि, वह खतरनाक जानवर है। जब वह हमारे पास पीछे की तरफ से आ रहा था, तभी मुझे बंध लगी कि, कुछ खतरा आनेवाला है। लेकिन मेरे लिए तो किसी सकट की सम्भावना थी नही। इसलिए मैंने अनुमान लगाया कि, हो-न-हो, आप पर अवश्य कोई विपत्ति

आनेवाली है। यही कारण था कि, मैंने उन रत्नों का जिक्र छोड़ा, क्योंकि आपके दुश्मन वही डाकू हो सकते थे, जिन्हें आपने सजा दी थी। यह भी मुझ पता था कि, उम्र बूढ़े बाघ ने कोई शिकार मारा है। लम्बा होने की वजह से वह उस स्थान से दूर वही नही जायगा। कई दिनों के बाद शिकार उससे हाथ लगा है, इसलिए उस समय किसी के वहाँ पहुँचने से वह बहुत शिङ्गेगा।

"वहाँ तब पहुँचने में मेरे नाक ने मेरी मदद की। मैं जानता था कि, एकाएक कुछ आदमियों के वहाँ पहुँचने से वह जरूर हमला करेगा और शेरसिंह अपनी बदकूब का इस्तेमाल भी किये बिना न रह सकेगा। वैसे आदमी शिवा शस्त्र की और किसी शक्ति से परिचित भी कैसे हो सकते हैं? लेकिन बाघ अपने आक्रमणकारी को जिंदा नही छोड़ेगा, इसका भी मुझे भरोसा था।

"रहा रत्नों का प्रदन, तो मैंने वास्तव में कुछ रत्न, जो मुझ एवं प्राचीन भग्न मंदिर में मिले थे, यहाँ जंगल में छिपा रखे हैं। किन्तु उनका भेद मैं किसी को नही दूँगा, आपको भी नही। इस दुनिया में सारे फिमाद की जड़ धन है और मैं नही चाहता कि, उन रत्नों को लेकर किसी के जीवन में मुद्दिले खड़ी हो। अच्छा, नमस्कार। फिर कभी आप इधर आयेँ, तो मुझसे जरूर मिलियेगा।" ..

अगले मास में फिर 'बोरिया-रेस्ट-हाउस' पंद्रह दिनों के लिए जानेवाला हूँ।

शुद्धात्मक भूत

‘राजपूत सराठा रनिहाम संशोधन मंडल’, पूना के भूतपूर्व सातवठ स्वामी विद्यानंदजी श्रीवस्तव द्वारा सुगल राजपूत रनिहाम के एक संशोधन-पुत्र चरित का यह उद्घाटन ‘नवनीत’ के पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत करने हुए हमें, वास्तव में, हर्षयुक्त गर्व का अनुभव हो रहा है।

✱

भयकर वन्य प्रदेस-चारों ओर छाड़-
छाड़ारों व हिंसक पशुओं का माघाग्य।
दिन डलने का आ चूका था। लम्बी यात्रा
से थके हुए मुगल सैनिक तट के सामान का
बोझ उठाये धीरे-धीरे अपनी राह तय कर
रहे थे। तभी एक भयंकर दहाड़ वहाँ की
निस्त्वयता भग करती हुई भूँज उठी। वन्य
प्रदेस के नामक सिंह की भीषण गर्जना-
सहमे हुए मुगल सैनिकों ने एक-दूसरे की
ओर देखा। एक घनी-बँटीली झाड़ी की
दूसरी ओर में मिट्टी फिर गरज उठा और
तन्नाह ही अपना सारा सामान पटक,
मुगल सैनिक अपने प्राणों के भय में गिर
पर पोंच देकर भाग पड़े।

उनके नजरो में ओझड़ जाने की झाड़ी
की चारों ओर हुई निवृत्त आयी एक छ-
सना छः फुट-लम्बी आहूति-स्वम्य ओर
हुष्ट-मुष्ट शरीर, बड़े-बड़े दाढ़, घनी
दाढ़ी-भूँछ, शर में बादम्बर तथा शरीर
पर गुमज्जित विभिन्न अस्त्र-शस्त्र! उनका
भयात्क डीङ्ग-डौङ्ग और विचाराट आहूति
नवनीत

भूत का दम उत्पन्न करा देती थी !
‘भूत’ के होठों पर मुग्धात नाच उठी।
वह आगे बढ़ा और मुगल सैनिकों-द्वारा
छाड़े गये सारे सामान को एक गुध्वारे के
समान अपने बंधों पर लाद, उस घने
जंगल में एक ओर विलीन हो गया।

वह उस वन्य प्रदेस का एकच्छत्र
स्वामी था- ‘श्यामला भूत’!

हमारी इस कहानी के नायक ‘श्यामला
भूत’ की कहानी इस घटना के कई वर्षों
पूर्व, मध्य १६८२ में आरम्भ होती है।
हाटीनी प्रदेश (राजस्थान) के राय
मुजत हाटा के ज्येष्ठ पुत्र दूदा गुग्गनीत
हाटा मृत्यु-पथ्या पर पड़े थे। लगभग
१८ वर्षों तक मुगल सम्राट् अकबर के दौल
बदले करने के पक्षपात, एक बार जब वे
बीजापुर जा रहे थे, तो नर्मदा नदी के
तट पर दाहियों ने छत्र में उन्हें बिध गिला
दिया था। मृत्यु को अवगत पा मुगल-सेना
टूट पड़ी थी और युद्ध में मुगल-सेनानी भोज
के हाथों उनके दोनों ज्येष्ठ पुत्र तथा

माझे चार सौ राजपूत मारे जा चुके थे।

दूदा के मुख पर वेदना के घने-नाउं बादल महरा उठे। पुरा की मृत्यु या पराजय का शोक उन्हें नहीं था। सिर्फ एक ही चिन्त थी—“मुगला और भाजावनो में अधिक बाल सब दा-दा हाथ न कर मचा-मृत्यु का घुलावा अममय आ गया।”

उन्होंने अपनी चित्तकुल ओलें, पाम हो खड़े अपने तृतीय पुत्र-श्यामलमी दूदावत हाडा-पर गडा दी। श्यामलमी ने पिता की इच्छा समझ ली।

उसकी मुलाहति तमनमा मयी-अग-अग पन्न उठे और उसने तलवार लीच प्रतिज्ञा की—“मृत्यु-पर्यन्त मुगलो और उनके सामन भोजावता रा युद्ध बगला रहेंगा। उन्हें क्षणभर भी चैन में बैठने दें, तो मुझ पर शान्त है।” बाकी बचे ५० राजपूतों ने भी अपनी-अपनी सन्तानों की आश्रम राय देने की वसम मायी।

दूदा मुरजनीव हाडा के पीले मुख पर प्रगल्भा की आभा दमन उठी। श्यामलमी की मानो आशीवाद देने की मुद्रा में उन्होंने दावो हाथ उठाया और परम मनाय के साथ अपनी ओल सदा के लिए मुँद ली।

अपने पिता का अन्तिम सम्बार कर, चचे-चचाये राजपूतों को साथ ले श्यामलमी जमीरगढ़ की ओर चला। उंची और दुर्गम

धर्वन शृङ्खलाओं को पार कर असीर और गाविल-गढ़ के बीच, अघेरी व धनरनाक गिरि-बदराआ और घने जंगलों में उसने अपना कद बनाया। अपने बाय बाल में केसर यह १८ वर्ष की उम्र उसने अपने पिता के साथ दुर्गम बहाडा और जंगलों में ही बितायी थी— मदा मचटो में ही खलता आया था। योग्य पिता का मामीप्य और स्नेह पा श्यामलमी एक कुशल पाढा बन गया था। लक्ष्य-क्षेप,



सं राजपूत गोदा

[निव . एक प्राचीन राज
शायी मित्र की रेखाचित्र]

अभि-मचालन और भाला-थपण में तो वह बेजोड था—भालो तब हिरन-मी बाल में दौड़ते बर जाना उमरे लिए साधारण-सी बात थी। साप ही, पालतू व अन्य पशु-पक्षियों में सिंह में लेकर मना तक की बोनी की नकल उतारने में भी वह पूर्णतया पटु था।

प्रकृति के इस सुरक्षित गढ़ का निवासस्थान बना श्यामलमी ने अपने राजपूतों के साथ लुक्-छिप कर छूट-भाट मचानी शुरू कर दी। नट-गायक-पंडित-प्रातिपी-साधु-माह्वार-मुगल-माधन-व अन्य तरह-तरह के वेप बनारर वह मुगल के इलाके में घुसता, भद लेता और छूट-भाट करता हुआ अपन निवासस्थान पर वापस आ जाता। असीर और गाविल-गढ़ के जंगलों में गुजरनेवाले मुगल मंत्रियों के लिए तो

जिसी झाड़ी की आर में सिंह की तरह दहा-
टना ही पर्याप्त होता था ।

एक-एक कर चार वर्ष व्यतीत हो गये ।
इस अंत में मुगल साम्राज्य में सर्वत्र
श्यामलसी का आतंक छा गया । लागा का
जीना दूसरा हो उठा । एक-दूसरे के प्रति
विश्वास नाम की कोई चीज ही नहीं रह
गयी । किन्तु श्यामलसी का खर तो सिर्फ
मुगल और राजावतों में था—अन्य
व्यक्तियों की आर वह बभी ओझ उठाकर
भी नहीं देखता था ।

अब तब उसके साथियों की मर्यादा-
वाई सौ तर पहुँच गयी थी । छिप-छिप
कर आक्रमण करने के साथ ही, वह सामने
आकर भी मुगलों में लाहा लेने लगा ।
किन्तु मुगलों ने जम कर मर्षण करने का
अवसर उसे तब मिला, जब मुगल सम्राट्
ने बुरहान निजामशाह का अहमदनगर की
बंदी पर विद्यार्थी के लिए, मादवा के सुबदार
आजम खान को भेजा । आजम खान चागताई
खान और चौद खान के साथ बरार के मार्ग
में अहमदनगर खाना हुआ । समाचार
मिलने ही श्यामलसी ने पहाड़ी और जंगलों
में अपने वीर मैदानों की तैनात कर, मुगलों
से मोर्चा लेने की तैयारी कर ली ।

आजम खान के मालवा में प्रस्थान कर
एलिचपुर पहुँचने ही उसके सैनिकों ने
उत्थान मचाना शुरू कर दिया । दानापुर के
निजामशाही पालेदार जहाँगीर खान ने
भयभीत हो अपना दूत श्यामलसी के पास
भेजा और मुगलों के विरुद्ध सहायता की
नवनीत

प्रार्थना की । श्यामलसी तत्काल ही अपने
राजपूतों को ले दानापुर जा पहुँचा ।

किन्तु जब आजम खान अपनी सेना-
सहित दानापुर पहुँचा, तो जहाँगीर खान
की हिम्मत खार द गयी । वह आजमखानों
की अधीनता स्वीकार करने को तैयार
हो गया । पर दानापुर के उप-मानेदार
हाफिज खान और मंत्री सैनिख या दासता
स्वीकार करने के पक्ष में नहीं थे । जहाँगीर
खान के निश्चय के विरुद्ध उन्होंने मुगल-सेना
में लड़ने का फैसला कर लिया ।

श्रावण-सुदी त्रयादशी, संवत् १६८६
की एक रात—आकाश में घने बादल छाये
थे । चारा ओर अंधेरा निस्तब्ध साम्राज्य
था । सिर्फ बभी-बभी घादल गरज उठते
और त्रिजलियों चमकने लगती । श्यामलसी
इस अवसर को उपयुक्त जान अपने राज-
पूतों के साथ आजम खान की सेना पर टूट
पड़ा । दानापुर के सैनिक भी उसके साथ
थे । भयकर मार-काट मच गयी । श्याम-
लसी पुर्तों से अपना घोड़ा दौड़ाता हुआ
आजम खान की ओर बढ़ा । चागताई खान
और चौद खान ने रास्ता रोकने की कोशिश
की, किन्तु तलवार के एक ही वार न
दोनों को धगसायी कर दिया ।

आजम खान ने उठ कर श्यामलसी का
मुकाबला किया । अब तब उसके साथ-
आठ सौ सैनिक मारे जा चुके थे—जय वि,
श्यामलसी के कुल ६० व्यक्ति मरे थे ।
विजय-श्री श्यामलसी का माथ दे रही थी ।
मुगल सैनिकों की हिम्मत साथ छोड़ गयी

और वे जान बचाकर भाग चल-आक्रम
रों न भी अपन भागत हुए सैनिकों का
नतृत्व करना ही उचित समझा। मुगल
सैनिकों-द्वारा छोड़ गये लाखों की सम्पत्ति
राजपूतों के हाथ पड़ी। श्यामलसी न लूट
का आधा हिस्सा हाफिज खां को मौफा और
आधा स्वयं सभ्य हुए साधिया के साथ
अपन किंग्डम लौट आया।

इस घटना के परिणाम
श्यामलसी का इबदला
और भी बढ़ गया।
उसके स्वयं का असीर
तथा गोदिल गइ के
मध्यवर्ती भूभाग का
स्वतन्त्र अधिपति घोषित
कर दिया। मुगलों पर
प्रथम विजय के उपरान्त
मे उसने शानदार
उत्सव मनाया और लूट
का सिर्फ आठवाँ हिस्सा
अपन लिए रखा-बाकी
सम्पत्ति मृत सैनिकों
के परिवार, अगले



मानसिंह
[चित्र एक प्राचीन राजस्थानी
चित्र की सरल रेखाचित्र]

साधियों विधवाओं और अनाथों में
वितरित कर दी। इस राजगीलतान उसकी
जीति में माने चार बौंद लगा दिए।

किन्तु श्यामलसी के हृदय में क्षाति नहीं
थी-हाडोती के उद्धार की जिन्ना उसे
सदा वर्चन बनाय रहती थी और यह प्रश्न
इतना सहज भी नहीं था। प्रचुर धन और
पर्याप्त सैनिकों के बावजूद मुगल साम्राट

अबबर स झुठ कर लोहा लेन की सामर्थ्य
उसमें नहीं थी। असीर-गोविन्द-गढ़ के
मुरसित किंग्डम निबल मुगल-सेना का
सामना करते हुए भाग्य देश की जीतकर
हाडोती तब की उम्मीद राह तय करना
असम्भव प्रतीय था-वाध्य हो श्यामलसी को
हाडोती के उद्धार का विचार त्यागना पड़ा।

सम्बत १६५२ में अबबर ने जय चौंद
बीबा को पराजित
करने के लिए अपनी
मना भजी ता बाद
बीबी ने अपन सरदार
सादात खान को भजकर
श्यामलसी से सहायता
की प्रार्थना की। श्याम
लसी को मला बंद
इबदल हो सकता था।
उसका तो ध्यय ही
था-मुगलों का शत्रु
कोई भी हो यह मेरा
मित्र है। अपन राज
पूतों के साथ वह बल
पड़ा और पौष्य कृष्ण

त्रयोदशी शुक्रवार की रात सपन भयंकर
का आघात ले मुगल-सेना पर टूट पड़ा।
मुगल-सेना के नायक सयद राजा और
उसके भाई मारे गए- मुगल-सेना का सारा
साधन श्यामलसी के हाथ लगा। दो
दिनों पश्चात् बुधवार को आनवाली मुगल
सैनिकों की टुकड़ी को घर घर श्यामलसी ने
उसके नायक आलम खान को भी मार डाला

और आगे बढ़कर रजा कर्ली पर टूट पड़ा। मुगल-सेना प्राणों का मोह ले भाग पड़ी।

किन्तु जब चाँद बीबी ने वरार देकर अवसर में संधि कर ली, तो श्यामलसी अकेला मुगल-सेना का सामना करने के लिए रह गया। आगे बढ़कर मुगल-सेना ने चारों ओर से अमीर और सोविल-गढ़ को घेर लिया। फिर भी श्यामलसी का पराजित करना इतना आसान नहीं था। अपने गढ़ से श्यामलसी ने हम प्रसार युद्ध-संचालन किया कि, मुगलों के छवें छूट गये। वर्ष-भर तक लगातार युद्ध चलता रहा—श्यामलसी को राजपूतों की सहाय्य पटनर बहुत बड़ी रह गयी, किन्तु उसका पलड़ा अभी भी भारी था। तब धाकर मुगलों ने चारों ओर से जंगल में आग लगा दी। श्यामलसी भी अपने इस गढ़ को अब अर्क्षित जान कर, सादान्त रों की सलाह मान, अपने राजपूतों-गणित अजंता की गुफाओं में चला आया।

हम वर्ष की इस लम्बी अवधि में श्यामलसी का मुगलों के विरुद्ध तो कई बार लड़ने का मौका मिल चुका था, किन्तु भोजावतों से दो-दो हाथ करने की वनव अभी बाकी थी। प्रति धात वह इसका अपसर देँडा करता—मरणोन्मुख पिता के समक्ष की दयी प्रतिज्ञा उसे स्मरण हो आती। आगिर, सम्वत् १६५६ में श्यामलसी की यह लालगा भी पूरी हो गयी। शाहजदा मुराद की मृत्यु के पश्चात्, अवसर ने अवलपजल को राव भोज के गाय

दक्षिण भेजा। साथ में ५०० मुगल और १००० राजपूत सैनिक थे। सप्ताचार मिलने ही श्यामलसी तैयार हो गया और एक दिन उपयुक्त मौका पा अपने दार्द सौ राजपूतों के साथ ही मुगल-सेना पर टूट पड़ा।

कई दिनों तक युद्ध चलता रहा, पर श्यामलसी को राव भोज के समक्ष पहुँचने का अवसर न मिला। राव भोज को श्यामलसी के इरादे की खबर लग चुकी थी और उसने खय को मंजिरी के पहरे में पूर्णरूपेण सुरक्षित कर लिया था।

हम महीनों के अनवरत प्रयास के बाद, अतत पाँच्य कृष्ण तृतीया का दिन श्यामलसी के लिए यादित अवसर केवर उपस्थित हुआ। सैनिकों के पहरे को छिप-भिन्न करता श्यामलसी साक्षात् बाल बना राव भोज के सम्मुख आ पहुँचा। धार करता हुआ बोला—“बाबाजी! श्यामलसी दूदारा का जुहार स्वीकार कीजिये!”

भोज धार बचा गया, परन्तु श्यामलसी की सलवार ने घोंटे का मिर अलग कर दिया। राव भोज जमीन पर जा गिरा। श्यामलसी व्याय से भुरकताया—“भाराजी श्यामलसी का दूतारा जुहार स्वीकार कीजिये!” फिर वह राव भोज के उठ कर गड़े होने की प्रतीक्षा करता रहा।

हम ध्यम्प-बाण ने विद्र हो राव भोज पायल सिंह के समान तटप कर श्यामलसी पर टूट पड़ा—नारा-भरीजे पा-दूतारे के लिए बाल बन गये। कई घंटों के घोर युद्ध के पश्चात् आगिर दोनों ही बेहोत



सुराक पचाने में और
खून बढ़ाने में
मशहूर
टॉनिक



इं डु
रक्तो फॉस्फो माल्ट

इं डु फार्मास्युटिकल वर्क्स लि.
मो. नं. ल. ७०१५ मुंबई नं. २८.

एम्पई दुकान : भारिया महाजनवाडी, कालवाडेयी रोड, बम्बई-२

हमारे एजेंट्स :

- दिल्ली एजेंट : कानीलाल आर. पारीस, चांदनी चौक, पो ऑ के पास
जयपुर " : मेसर्स एलाईड वेभोस्टर्स, त्रिपोलीया बाजार
लागपुर " : मेसर्स के. अमरलाल एंड ब्रदर्स, गांधी मेन्शन, सीतापुरी
फालकता " : मे. आत्स ट्रेडिंग स्टोर्स, ११ इबरा स्ट्रीट, यमलाना के पास
रायपुर " : मेसर्स सुरेन्द्र ब्रदर्स महात्मा गांधी रोड,
अलाहाबाद : मेसर्स चम्पकलाल एंड क. ४६ ओहस्टन गज
इन्दौर " : चम्पकलाल गो. परिल, १३ बोनाफेट मार्केट
कानपुर " : प्रवीणचन्द जयनीलाल, ५८/७७ ए बीराना रोड



सर्वश्रेष्ठ
मालवा
 फैब्रिकस्

कोरा, धुलाहुवा लट्ठा, कोरी शर्टिंग,
 रंगीन तथा धुलीहुई जीन, चादरें,
 फलानेल, दरी, कम्बल

डी इन्दौर मालवा युनाइटेड मिल्स लि.

जिला - इन्दौर (मध्यप्रान्त)

पोस्ट - कागिस २ ६३, विडी विभाग ५०७

नगर - मालवागिर

रजिस्टर्ड कागिस होमरिंगया येमये

१३०, मेहन स्टीट कोर, बरह-१

फोन ३०८१४ १-६ नगर इन्दौरगिर

होकर गिर पड़े। दूदावत और भोजावत सैनिकों ने युद्ध बंद कर दिया और आहत सरदारों को उठाकर अपने-अपने स्थान को लौट गये। इस युद्ध में सात सौ भोजावत, तीन सौ मुगल और दो सौ दूदावत खेत रहे।

इधर दयामलसी के इस सपर्प के लिए प्रस्थान करने के ५ महीने पश्चात् आश्विन सुदी दुर्गाष्टमी को उसकी पत्नी ने एक पुत्र-रत्न का जन्म दिया। किन्तु उचित परिचर्या और सयम के अभाव में वह प्रसूत-स्वर से पीड़ित हो गयी और दिनोदिन उसकी हालत बिगड़ती जा रही थी। जब दूदावत सैनिक रामादूभ्य दयामलसी को लेकर वापस आये, उस वक्त यह उठने-बैठने से भी लाचार थी, किन्तु पति की यह अवस्था देख वह स्वयं को मानो भूल-सी गयी। दयामलसी की परिचर्या में उसने दिन-रात एक कर दिया।

बीस दिनों पश्चात् दयामलसी ने आँखें खोली। सामने अपनी पत्नी और पास ही टंगी झोली में अपने पुत्र को निरत उसके चेहरे पर प्रसन्नता की लहर दौड़ गयी। पत्नी की दुर्बल मुद्राकृति भी क्षणभर के लिए हर्ष के आवेग से रक्ताभ हो उठी।

दयामलसी धीरे-धीरे स्वास्थ्य-लाभ करने लगी; किन्तु उसकी पत्नी की हालत साराव होती चली गयी। अतः सम्बत् १६५६ में महाशिवरात्रि, शनिवार के दिन उस सती-शास्त्री ने पति के चरणों में प्राण त्याग दिये। जिस दयामलसी ने नभी स्वप्न में भी अधुपात नहीं किया था, उसकी आँखें

सावन-भादो-सी बरसने लगी।

किन्तु तत्काल ही उसकी आँखें तमतमा उठी, मुद्राकृति बम्भीर हो गयी और उसने अपनी पत्नी के मृत शरीर की वगल में खड़े हो प्रतिज्ञा की — “जिस अन्न-वस्त्र के अभाव में आज मेरी प्राणप्रिया इस दशा को प्राप्त हुई हैं, मैं आजम्भ उनका स्पर्श नहीं बहेंगा।” उसी क्षण में उसने वस्त्र के स्थान पर वाघम्बर पहनना शुरू कर दिया और अन्न छोड़, दाराह और हिरन के मांस को सुषा-वृत्ति का साधन बनाया।

पत्नी-विछोड़ और पुत्र-मोह ने दयामलसी का मानो सारा उत्साह छीन लिया। महीनों वह चुपचाप बंठा रहा, परन्तु एक दिन अपने पुत्र को मोदक की जिद करते देख उसकी मोह-निद्रा भग हुई। उमने फिर युद्ध करने पर कम्मर बस ली। मुछेंक राजपूतों को अपने पुत्र पुमार दारदूल को रक्षा के लिए छोड़, वह अपने मायियों के साथ, मुगलों पर प्रलय की तरह दूट पड़ा। भीमकाय दौलदौल, बड़ी-बड़ी व पत्नी दादी-मूछें, विद्यायकाय आहति और कमर में बाघम्बर—लाव देखने ही आनविम हो उठते—साक्षान् भूत हो मानो। और, तभी में उन्होंने उसे ‘दयामल भूत’ के नाम से पुकारना शुरू कर दिया।

बारह वर्ष की आयु का होते-न-होते कुमार दारदूल लक्ष्य-सधान, अमि-गचादन और भाला-क्षेपण में अपने पिता में भी बढ गया। पिता-पुत्र दोनों ही मिलकर देश को मुगल-विहीन करने लगे।

सम्वत् १९६२ में, अकर की मृत्यु के पश्चात् सम्राट् जहाँगीर के शासनकाल में, एक दिन श्यामलसौ अपने माधियों के साथ जब मुगल-इलाके में लूट-पाट करने जा रहा था, उसे एक बार में मार-काट की आवाज सुनायी पड़ी। छिपना-छिपाता वह निवट पड़वा। कुछ मुगल सैनिक जमीन पर पड़े कराह रहे थे और उनका नायक क्षत-विक्षत अवस्था में बहबड़ा रहा था—“परवरदिगार! मेरे परिवार की रक्षा कर, नहीं तो सोने में बदल दे।”

श्यामलसौ की तीक्ष्ण आँखों ने स्पष्ट देग लिया कि, थोड़ी ही दूर पर कुछ निजामशाही सिपाही, दो-तीन मुगल स्त्रियों के साथ छंडछाड़ कर रहे हैं। श्यामलसौ मुगलों का जन्मजात शत्रु था, फिर भी उसने मुगल स्त्रियों की तरफ कभी आँख उठाकर भी नहीं देखा था। समस्त स्त्री-जाति उसकी दृष्टि में आदरणीय थी। यह अनाचार देख उसका खून तौल उठा और तुरन्त ही अपने सैनिकों के साथ वह निजामशाही सिपाहियों पर दूट पड़ा। निजामशाही सिपाही ‘श्यामलसौ भूत-श्यामलसौ भूत’ चिल्लाते हुए भाग पड़े।

श्यामलसौ शायल मुगल सरदार और सैनिकों को स्त्रियों-संरक्षित स्थान से ले आया। एक महीने की परिचर्या के बाद मुगल सरदार बहलोल गों पूर्ण स्वस्थ ही अपने परिवार और सैनिकों-सहित बुरहानपुर लौट गया। चिन्तु चलने

के पूर्व श्यामलसौ के प्रति उसने अपार कृतज्ञता प्रदर्शित की और पगडों बदल उसे अपना भाई मान लिया। यह भी पचन दिया कि, अवसर आने पर वह ओर उसके सारे साथी श्यामलसौ के लिए अपने प्राण भी न्याछकर कर देगे।

अब तब भोज की मृत्यु हो गयी थी। अब उसका पुत्र रतनसौ यूसी का अधिपति बना। श्यामलसौ पिता का धर चुनाने के लिए रतनसौ पर आज्ञाप्रण करने का अनुरोध करने लगा। भाँलों को अपना साथी बनाकर उसने मुगलों के इलाके में भ्रमकर लूट-पाट मचाने शुरू कर दी। दूसरी ओर निजामशाही सरदार भी मुगलों के विरुद्ध लोहा ले रहे थे। इन दो पाटों में पिसकर मुगलों के लिए घर में छिपकर बैठना भी दुस्वार-भा हो गया।

इस उत्पात का समाचार पा सम्राट् जहाँगीर ने रतनसौ भोजावत को ‘सर-बुलदराय’ की उपाधि दे, श्यामलसौ और निजामशाही सैनिकों से लड़ने के लिए दक्षिण की ओर भेजा। उससे जाने के कुछ ही दिनों बाद राय मूरज सिंह भी उसकी महायन्ता के लिए भेजा गया और उसके छोटे ही समय बाद जहाँगीर ने कई नौ मनसबदारों को दक्षिण की ओर जाने का हुक्म दिया। पर जब इतने पर भी उसके मन को सन्तोष नहीं हुआ, तो उसने महायन्त सौ और राजे जहाँ को ५० सार गपये तथा काफी बड़ी फौज के साथ दक्षिण की ओर बढ़ने को कहा—यहाँ तक कि,

शाहजादा सुर्रम को भी जन में दक्षिण की ओर जाना पड़ा।

श्यामलसी तो 'सरबुलदराय' से वैर चुकान का मौका खोज ही रहा था। उसने छिप-छिप कर आक्रमण करना शुरू कर दिया—आज यहाँ छापा मारता, ता कल पचीसा कोस दूर। सरबुलदराय की भीड़ हराम हो गयी—यहूँ उभे अपने थाने की चाल ज्यों-की-स्थों छोड़ कर उठ जाना पड़ता था।

जहाँगीर-द्वारा भेजे अन्य व्यक्तियों के आ जाने से 'सरबुलदराय' का हौसला बढ़ा और नवीन उस्ताह से यह श्यामलसी के पीछे पड़ गया। जगह-जगह उसने अपन सैनिक घात में घेरा दिये। और, तीन बपों के अनवरत सघर्ष में पड़ना, एक दिन जब श्यामलसी अपने दस राजपूतों के साथ बड़ी जा रहा था, 'सरबुलदराय' के ५० सैनिक उस पर दूट पड़े। श्यामलसी और उसके राजपूतों ने अटन मुआवला लिया किन्तु विजय-श्री बाज उसके विपक्षियों का साथ दे रही थी। कुछ ही दूर में श्यामलसी ने साथी एक-एक कर मरने लग।

तब तब ललवारों की झंजार सुन कुमार शार्ङ्गल दौड़ता हुआ पिता के सहायनार्थ आ पहुँचा। वय तक सभी दूदावत मारे जा चुके थे। श्यामलसी भी आहत होकर मिर पड़ा था। विपक्षी-दल के भी सिर्फ २३ सैनिक बचे थे। शार्ङ्गल ने पहुँचते ही पोंच सैनिकों की मोत के घाट उतार दिया और शेष सानुओं से प्राण-मण से छोड़ा लेने लगा।

इतने में ही, कुछ राजपूत सैनिक निशामशाही झंडा लिये उधर से गुजरे। एक एकाकी वाक्क का घों मुगलों से युद्ध करते देख वे उसकी सहायता को बढ़े-मुगलों को मैदान छोड़ भागना पड़ा।

मृतकों का अंतिम संस्कार कर, शार्ङ्गल की सहायता से आहत श्यामलसी को वे राजपूत सैनिक उसके निवासस्थान पर ले आये। तीन दिनों बाद सजा-राम करने पर शार्ङ्गल ने पिता को अपने भवदगारों का परिचय दिया—'सिरोही के महाराज-कुमार अमरा बीजावत और उनके महनोई घम्भसिंह कृष्णोत्त पवार।"

कृतज्ञता-अदशन-स्वरूप श्यामलसी की आँखें छलछला आयीं। उसने शार्ङ्गल का हाथ अमरा बीजावत के हाथों में देते हुए मानो उसे अपने सरक्षण में लेने की प्रार्थना की और फिर अपनी आँखें अपने पुत्र पर गड़ा दी। उन आँखों में चिंता की शक स्पष्ट दृष्टिपात्र थी।

कुमार शार्ङ्गल अपने पिता की चिंता का कारण समझ गया। तबबार पोंच उताने प्रसिद्धा की—'भृत्य-मयन मुगला और भोजावतों से युद्ध करेंगे। पल भर भी उन्हें बँध से बँधन दूँ, तो पस पर जानत हूँ।"

श्यामलसी के होंठों पर सनोप की मुस्वान लिल उठी और ३३ बपों तक भुगला व भोजावतों की मोद हराम करने के बाद, सम्भव १६७४ में इतिहास के इस अमर व्यक्ति ने विर निद्रा की मोद में विश्राम ले लिया।



— नरेन्द्रनाथ मिश्र

क्षणमर रहा—“इन्हें
मे भवद पैसे देकर
लाया हूँ बाजार से।”

रेणु की ओर
छलछला आयी।
पति ने उन्हें छिपाने
हुए एक पोकी हंसी
के बीच बोली—

कमरे में घुसते ही अमृत्यु न साबुन
या एक छिप्टा तथा स्नो की सीसी
पत्ती की ओर दड़ा दी—“यह लो।”

रेणु ने उन्हें लेने के लिए हाथ बढ़ाया,
परन्तु तत्काल ही सहम कर पीछे हट
गयी—भालों विभी सर्प का स्पर्श करने
करते बची हो। पति के चेहरे पर तीक्ष्ण
दृष्टि गढ़ा कर उमने कहा—“आज फिर
तुम इन पीसी को ले आये?”

अमृत्यु की एक बार धरना-माफ़ा,
किन्तु उमने स्वयं पर काबू पा लिया। त्रोप-
मिश्रित ध्वन्य ने बोला—“तो तुम इन्हें
मेरे हाथ में नहीं लांगी?”

रेणु जबरन मुस्करायी—“अगर तुम इन्हें
आसानो मे पर ला सज्ते हो, तो मुझे इन्हें
लेने में भग्न क्या आपत्ति हो सकती है?”

उमने उन्हें लेकर एक तिपायी पर रख
दिया। अमृत्यु की गम्भीरता में कोई अंतर
नहीं आया—“तुम दूर प्रगल्भता में स्वीकार
क्यों नहीं करती—जब तुम्हें मान्य है कि,
एक-एक दिन तुम्हें भी यही करना
होगा? यों व्यर्थ बोंग रखने की क्या
आवश्यकता है? और....” अमृत्यु

‘बम-ग-बम’ मुझमें तो झूट मत बोला
पत्नी भगवान के लिए।”

अमृत्यु भ्रमव उठा—“ओफ-ओह !
तुम ठा माना इस धरा पर मचाई की देवी
बन कर ही आयी हो।”

रेणु सचमुच ही हँस पड़ी—“क्या मिरपं
देवी के सामन ही मच बोलना चाहिए?”

अमृत्यु अपना प्रोप झूल पत्नी की ओर
क्षणमर तक निहारता ही रूट गया—
सुगंध भाव ने। किन्तु मुदर लगती है
रेणु। बाप, यह बोंगी नॉसिवादिता की ही
पुजारित नहीं होती।

रेणु न ओगे झुलसी। फिर धीरे में
पलने उठा कर कोपल स्वर में बोली—“मैं
तो तुम्हारे भ्रमे के लिए ही रहती हूँ।
तुम समझने की चेष्टा क्यों नहीं करते?
किसी दिन घोर होकर तमय पधर लिये
गये, तो? क्या स्थिति होगी तुम्हारी?
यह मान-भर्यादा और कुलीनता-क्या होगा
इनका उम वक्त?”

पूर्ण अक्षमबिध्याय के साथ माना
अमृत्यु ने कहा—“बच्चा मिरादो तो है
नहीं और येना मेरे लिए नया भी नहीं है।”

कितना निलज्ज है अमूल्य ! रेणु को लगा कि, वह मर जाये, तो अच्छा है। घादी के कुछ ही दिना बाद वी घटना है। रेणु और अमूल्य 'ईडन-वाकें' जा रहे थे। अमूल्य दिना रके इधर-उधर की बातें कर रहा था। ट्राम-कडक्टर न जब टिकिट माँगा, तो अमूल्य ने मानो सुना ही नहीं। वह उसी प्रकार रेणु से आने करता रहा।

कडक्टर ने कहा—“टिकिट ‘प्लीज’।”

किर भी अमूल्य न ध्यान नहीं दिया। बिना उसकी ओर देखे सिर हिला कर मानो जता दिया कि, उसने पास टिकिट है।

कडक्टर आग बड़ गया। रेणु को लगा, वह मुस्करा रहा था—शायद अमूल्य की चाल वह भौंप गया था। रेणु के सिर-से-पूर तक सिहरन-सी दौड़ गयी। अनजाने ही अपराधिनी की भाँति उसने आँखें नीचे की ओर गड़ा दी। अमूल्य-उसका पति-एक सम्मत् व्यक्ति-सिर्फ दो आने के लिए यो झूठ का आश्रय ले सकता है।

ट्राम से उतरते ही उसने पति से पूछा—“तुमने टिकिट क्यों नहीं लिया?”

अमूल्य मुस्कराया—“तुमने शायद देखा नहीं। अगर टिकिट लेना ही पड़े, तो ‘फर्स्ट-क्लास’ में चलने से लग्न ही क्या है?”

रेणु पति की ओर अवाक् देखती रह गयी। अमूल्य उसी प्रकार मुस्कराता रहा—“मे अकेला होता हूँ, तो कभी टिकिट नहीं मग्रीदता और आज जब हम दो हूँ, तब टिकिट खरीदने का प्रयत्न ही नहीं उठता।”

घृणा से चिह्न कर रेणु ने चाहा कि,

मुँह दूसरी ओर कर ले, किन्तु तभी अमूल्य उसकी आँखा में-आँखें डालता हुआ कोमल स्वर में बोला—“अगर यो पैसा न बचाया जाये, तो वाम बंसे चलेगा?”

रेणु ने सतोष की साँस ली—अमूल्य महज मजाब कर रहा था। लेकिन घर वापस आते समय भी जब अमूल्य ने कडक्टर के टिकिट माँगने पर उसी प्रकार सिर हिला दिया, तो रेणु घबड़ा गयी। आग्य से ही पहले वाला कडक्टर नहीं था। अगर वही होता, तो कितना अपमान सहना पड़ता। इतने लोगों की मौन लाटना से क्या वह मर न जाती।

घर पहुँचते ही रेणु उबल पड़ी—“मुझे तुम्हारी ये आदतें अच्छी नहीं लगती।”

“कौसी आदतें?”

“बोड़े-से पैसे के लिए यो झूठ बालना।”

अमूल्य बीच में ही बात काट कर हँस पड़ा—“अरे। तुम सचमुच ही मुझे ऐसा समझ बँटी? कितनी भोली हो तुम।”

किन्तु इस बार रेणु इस भुलावे में न आयी। आवेश में बोली—“तुम्हें धर्म नहीं आती? सिर्फ दो आने पैसे के लिए . . .”

अमूल्य ने हँसना बंद कर दिया। बड़े इतमीनान से सिगरेट सुलगाते हुए बोला—“दो आने ही क्यों? दो आने और दो आने, कुछ चार आने हो गये। इनसे तो मैं एक् पेंकेट सिगरेट खरीद सकता हूँ।”

अमूल्य की इस निलज्जता पर रेणु हतवाक् खड़ी रह गयी। वहने को शेष रहा भी क्या था अब?

सबेरा होते ही अमृत्य ने रेणु को झुलाकर आहिम्ने से पूछा—“आरवाले किरायेदार बल कुछ मये धर्तन लाये हं न?”

रेणु ने सहज भाव से उत्तर दिया — “लाये तो हं, क्यों?”

“तुम तिनोद बाबू की पत्नी की सहेली भी हो और जरा चाहो, तब वहाँ आ-जा सकती हो।”

“हो, हो।” रेणु सहज भाव से ही बोल रही थी—“वह मुझे बहुत माननी है और उसका लड़ना तो मित्रा मेरे और त्रिा के हाथों में राना ही नहीं। लेकिन तुम यह सब क्यों पूछ रहे हो?”

अमृत्य ने तब पुनःपुनः पूछा—“यह तो और भी अच्छा है। घरने को खाना खिला कर तुम सादी के पल्ले में प्याला आसानी से दना कर ले आ सकती हो।”

अनजाने ही रेणु सहज कर दो कदम पीछे हट आयी। अमृत्य को उसने अब तक पहचाना नहीं हो यह पान नहीं। बहूषा वह सोचा करती थी—“एक सम्झात और बुझीन घराने में पालन भी अमृत्य के सस्वार दनने हीन क्यों हं?” और, तबाल उसरी आँगों में आँगू भी आ जाते—“यही व्यक्ति उसरा पनि है। ऐसे व्यक्ति के माथ उमे अपना जीवन किताना होगा।”

किन्तु फिर भी रेणु ने कभी यह सोचा तक नहीं था कि, अमृत्य यों उसने धोरी करने का प्रस्ताव रमेगा — अपने माथ ही वह उमे भी पनन के गर्न में धमीट कर ले जाने की चेष्टा करेगा।

पति की ओर देखने हुए वह दुःख भाव से बोली—“कैसे आदमी हो तुम जी ! अपने साथ ही मुझे भी ले डूना चाहते हो? तुमसे जरा-भी भी लज्जा नहीं है क्या?”

अमृत्य ने निम्नातोन कहा—“मिलबुल नहीं। तुम जानती हो आज़रल पानल का क्या भाव है? अगर तुम दो-तीन धर्तन बिनाद गानु के घर से ले आओ, तो हम-कम-ने-कम दो घार ‘वातम’ में बैठ कर थिपटर देख सकते है— होटलों में बरिषा-ने-बरिषा राना या सवने हैं।”

रेणु झल्ला पड़ी—“मुझे नहीं चाहिए होटलों का बरिषा खाना। और, मैं तुमसे स्पष्ट कह देती हूँ कि, तुम्हारे इस प्रसार के नीव कामों में मैं कभी कोई सहायता नहीं कर सकती-गममे?”

००० ००० ०००

गुरुह के आठ बज जाने पर भी जब अमृत्य ने बिस्तर नहीं छोड़ा, तो रेणु आत-वित हो उठी—वात क्या है? अमृत्य जिस दूरान में काम करना है, वह तो सादे सात बजे ही सुल जानी है।

उसने निबट आरर बोली—“किनी देर सोने रहोगे? काम पर नहीं जाना है क्या?”

अमृत्य ने हँसने का प्रयास किया—“आज बही जाने की इच्छा नहीं हो रही है।”

अमृत्य के बोलने और हँसने के क्षण में रेणु घरदा गयी—“बात क्या है जी? जी तो सराब नहीं हं तुम्हारा? राक-राक क्यों नहीं कहते? दूरान बढ है क्या?... लेकिन दूरान बढ भी क्यों होगी?”

अमूल्य अनापास ही नाराज हो उठ-
 "कैसी मूर्ख औरत है! साफ-साफ
 जानना चाहती हो? तो सुनो, आज मेरा
 धाढ़ है।"

"है।" उसके मुँह पर नजर गड़ाये ही
 रेणु ने एक उच्छ्वास के साथ कहा- "मैं
 जानती थी- एक-एक दिन तो यह होने
 ही वाला था।"

"क्या कहा तुमने?"

"और क्या कहूँगी।"

रेणु ने अविचल भाव से
 कहा- "भाग्य अच्छा था,
 जो उन लोगों ने तुम्हें जेल
 नहीं भेज दिया।"

अमूल्य के तन-बदन में
 आग-सी लग गयी। उठ-
 कर बैठता हुआ बोला-
 "ओफ-ओह! कितना दुःख
 है तुम्हें इसका। मैं जेल में
 होता, तो तुम्हें अच्छे लोगों
 के साथ नयी जिंदगी
 बिताने का अच्छा-भला
 अवसर मिल जाता-क्यों?"

पति से इतने बड़े लाछन की रेणु ने
 कभी कल्पना भी नहीं की थी और अमूल्य
 इसे कितने सहज भाव में कह गया। बड़ी
 मुश्किल से औंठुओं की छलकने से रोकने
 का प्रयास करती हुई रेणु वहाँ से जाने लगी।

अमूल्य एकटक उसकी ओर देख रहा
 था। एक-दर-एक उसका सारा गोप जाता
 रहा। खींच कर रेणु की उसने बाहुपास

में बाबद्ध कर लिया। रेणु फफक फफक
 कर रो पड़ी।

कुछ देर बाद, उसी प्रकार अमूल्य के
 बस में अपना मुँह छिपाये रेणु बोली-
 "तुमने ऐसा क्या ही क्या था, जो उन
 लोगों ने तुम्हें निकाल दिया?"

अमूल्य को लगा- रेणु के स्वर में
 जैसे उसके मालिक के प्रति शिकायत भरी

हो। आश्चर्य-चकित-स्ता है।
 धगभर तक रेणु की ओर
 देखने रहने के बाद बोला-
 "विश्वास रखो रेणु, मेरा
 कोई दोष नहीं था। वह
 सजाची है न, सारी भाग
 उसी की लगायी हुई है।
 मैं उसकी पत्नी के लिए
 पावडर का डिब्बा चुरा
 कर नहीं ला सका, इसी से
 वह मुझसे नाराज था।"

रेणु ने आज पहली बार
 पति के एक-एक शब्द में
 विश्वास कर लिया। कटु
 स्वर में बोली- "कैसी



पुश्चमयी

[पितृ . सुधीर सास्त्री]

दुनिया है यह। हर आदमी अपने-आपको
 ईमानदार ही दर्शाता चाहता है यों।"

००० ००० ०००

अमूल्य नयी नौकरी के लिए जी-तोड़
 कोशिश कर रहा था। रेणु उसे धीरज
 बँचाती- "व्यर्थ क्यों दिल छोटा करते हो?
 आजकल नौकरी की कोई कमी योड़े ही
 है। आज नहीं, तो कल मिल ही जायेगी।"

किन्तु उसकी इस भविष्यवाणी के कुछ दिन बाद ही, घर का मामानवम होने लगा। चावल ही नहीं, राजमर्ग की दूसरी चीजों में भी कमी आ गयी।

और, एक दिन रेणु ने शक्त-शून्य कह ही दिया—“इस तरह अब कैसे चलेगा ? आजीविका के लिए, कुछ-न-कुछ तो करना ही होगा हमें !”

“ठीक कहती हो तुम !” अमृत्य ने एक दीर्घ निश्वास ली—“कुछ-न-कुछ करना ही होगा अब !”

और, दो-तीन दिनों के बाद एक रोज शाम को जब धका-मौदा, अमृत्य पर आया, तो उसकी मुट्ठी में एक कीमती फाउन्टेनपेन दबी हुई थी।

रेणु ने फाउन्टेनपेन की ओर देखा, फिर अपने पति की ओर। अमृत्य प्राति क्षण किसी घटना की आशंका कर रहा था; मगर रेणु शांत थी। वह उनी प्रकार निर्विकार भाव से पर काबाम करती रही।

किन्तु रात्रि के शांत अधकार में रेणु बिलकुल ही बदल गयी। पति के वक्ष पर सिर रख कर फूट-फूट कर रोने लगी। अमृत्य धुपचाप उगड़े वालों में उबलियाँ फिराता रहा। घंटी दर बाद रेणु स्वयं ही बोली—“तुम कुछ भी कहो, मेरा शरीर कोप रहा है। होमला होना अच्छाई, परन्तु उसरी भी तो कोई सीमा होनी चाहिए।”

उसने गिर पर हाथ फिराने हुए अमृत्य ने स्नेहपूर्वक कहा—“कमी वांते करती हो ! अगर मुझमें यह होमला नहीं

होता, तो हमें आज भूखा भरना पड़ता। यो हीमला हारने में तो जीना मुश्किल हो जाय। और, फिर तुम्हें तो बितने ही ऐसे मौके मिलने हैं !”

रेणु न कुछ नहीं कहा, किन्तु उसके होठों पर रह धें और वह गहरे शरीर में विविध-सी मिहरन अनुभव रह रही थी।

दो-तीन दिन टगी तरह निाल गये। और, एक दिन वह मौता भी रेणु के सामने आ गया, जिनके घाटे में अमृत्य ने कहा था। किन्तु जान क्यों, रेणु सारे समय व्यर्थ हो डरती-सी रही।

दीवार के एक कोने में सूटी पर विनोद बाबू की कलाई-घड़ी लटक रही थी। विनोद बाबू भुलकाड स्थभाव के थे और दफ्तर खाना होते समय कभी घड़ी, तो कभी बटुआ निश्चय ही घर पर भूल जाते थे।

विनोद बाबू की पत्नी मो रही थी। रेणु ने बच्चे को खिलाकर उसरी मौ के पास गुला दिया। चारों ओर शांति थी। सिफ घड़ी की ‘टिक-टिक’ मानो सारे घर में गूँज रही थी। पर वह घड़ी की आपाज थी या उगते हृदय की घटनन—रेणु कुछ तय नहीं कर पायी। वह धुपचाप लोट जाना चाहती थी, लेकिन उसने पैर जंते कमरे की पर्ज पर बिपक गये हो !

आधे घंटे के बाद जब रेणु चापम अपने कमरे में आयी, तो उगने अनुभव किया, वह जंगो में होफ रही थी। एक बार उसने अपनी बोधी मुट्ठी मोल कर देखा और फिर झपाटे में उने बद पर लिया।

शाम को अमृत्य का पीका चेहरा यह दताने को पर्याप्त था कि, आज उसे सफलता नहीं मिली है। परन्तु रेणु का मुँह देखकर तो वह आश्चर्य में पड़ गया।

“क्या बात है ? तुम तो बड़ी खुश नजर आ रही हो।”

रेणु ने दरवाजा को साफ़ लगा दी। फिर पति के अत्यन्त निकट आकर बोली—“मुझमें ईर्ष्या क्यों करते हो ? मुनोग, तो तुम भी खुश हो जाओगे।

लेकिन अमृत्य खुश होने के ब्यापार पर क्षुब्ध हो उठा—“साफ़-साफ़ क्यों नहीं कहती हो ? पहिलियों मुलझाने की सामर्थ्य मुझमें नहीं है।”

रेणु मुस्करा पड़ी—“अपना दायों हाथ इधर बढ़ाओ तो।”

“क्यों ?”

“ओह ! बढ़ाओ न।” और, रेणु ने स्वयं उसका दायों हाथ अपनी ओर खींच लिया। फिर लगातार से घड़ी निगाह कर उसकी कलाई में बाँधती हुई बोली—“किन्तु अच्छी लगती है।”

अमृत्य तो हनबुद्धि हो गया—“हे ईश्वर ! कहाँ से ले आयी तुम इसे ?”

रहस्य-पूर्ण हँसी के बीच बोली रेणु—“तुम्हें चिंता करने की जरूरत नहीं है। सिर्फ़ इतना ही कह दो कि, घड़ी पसंद आयी या नहीं तुम्हें ?”

कुछ जवाब देने के पहले ही अमृत्य ने स्वयं को रेणु के प्रगाढ़ आलिंगन में पाया। आज रेणु सकाच, लज्जा और हिक्क से बहुत दूर थी। इन सबका बाँध बिलकुल तोड़ चुकी थी वह।

“चुप क्यों हो ?” वह कुछ मान के स्वर में बोली—“बताओ न, अच्छी लगी या नहीं ?”

कोई कारण नहीं था कि, अमृत्य को घड़ी अच्छी न लगे—वह प्रसन्न न हो। रेणु आज सही मानी में उसकी सह-घनिष्ठा बन गयी थी। क्या अमृत्य इतने दिनों से पत्नी के इसी रूप-परिवर्तन की प्रतीक्षा नहीं कर रहा था ? आज का दिन तो उसके जीवन का सबसे शुभ दिन था।

किन्तु जाने क्यों, अमृत्य को प्रसन्नता नहीं हो रही थी—उसकी गर्व-भावना उसका साथ नहीं दे रही थी और रेणु की मृणाल बाहुओं का चिर-परिवर्तन मुहु-बधन उसे माना पूर्णतया अपरिचित, बँधर लीह बधन-सदृश्य प्रतीत हो रहा था।

★

प्रसिद्ध वैज्ञानिक टामस एडिसन की स्मरणशक्ति बहुत कमजोर थी। बहुत शोध ही वे विभिन्न धातुओं को भूल जाते थे। एक दिन, जब वे कोई समस्या सुलझाने में व्यस्त थे, तभी उन्हें बर अदा करने बचहरी जाना पड़ा। लाइन में खड़े रहने के कुछ समय बाद जब उनकी बारी आयी, तो वे अपना नाम ही भूल गये। उनके पास खड़े दूसरे व्यक्ति ने उन्हें परेशान देख कर बतलाया कि, महाराज ! आपका नाम टामस एडिसन है। —नारायण भक्त

✱



उस दिन मूसलाधार वर्षा हो रही थी।

ऐसा लग रहा था, मानो कई दिनों की प्यासी धरती पर आज मेघराज की सम्पूर्ण कृपा हुई है। रात के दस बजे मेरी पत्नी, निर्मला गरमागरम बाफों ले आयी, जिसकी चुस्त्रियों लेकर मैं अपने-आपका धन्य समझ रहा था। एकाएक दरवाजे पर किसी ने हस्तक दी। बाहर मेरे एक मित्र, दामू अण्णा और उनके पीछे गोद में घालक लिए एक स्त्री खड़ी थी। मैंने उन्हें नीतर आने के लिए कहा।

उस स्त्री के एक हाथ में छाता था, फिर भी वह काफी भीग चुकी थी। छाता घायद पटा और पुराना था। साड़ी भी उसकी मैली और फटी थी, लेकिन उसने नीतर से उसका मोदम ऐसा झलक रहा था, मानो काले मेघों में कभी-कभी प्रकाश की किरण फूट पड़ती है। दामू अण्णा ने बताया कि, वह काम की तलाश में आयी है और भोजन भी भण्डा बनानी है।

हमारी पुरानी रंगोइल कई दिनों से छापटा थी और हम एक अच्छे गाना बनाने-वाले की तलाश में ही थे। पर-बंदे रंगोइल पा रर मुझे तो प्रसन्नता ही हुई; लेकिन निर्मला उसे कुछ देर बाद गौर से देखती रही।

उसकी माँग में मिदूर गंगा देग गर निर्मला ने पूछा—“तुम्हारे पनि कहाँ रहते हैं?”

इस प्रश्न के पूछे जानें पर उस स्त्री के नेत्र व्यथपूर्ण हो गये। मैंने सोचा कि, शायद उसका पनि मारा हो या बंदमाग हो और वह बेचारी अपने पेट की ज्वाला को शांत करने अपने धन्वे को लेकर नीचरी करने चली आयी है। किसी के घाव दूरे करने का हमें क्या अधिकार है? मनुष्य अपने बच्ची को छिपाने में भी एक प्रकार के मशौफ का अनुभव करता है।

निर्मला ने फिर पूछा—“बहन, तुम्हारा नाम क्या है? कहाँ रहती हो?” उत्तर में उसने बताया कि, उसे नर्मदा कहते हैं। उसका पीढ़र और मगुराल दोनों बौद्ध में हैं। बूढ़ा माता के गिवा उसका और कोई नहीं और पनि पागल हो गये हैं। आखिरी बात उसने अथर्व वृष्ट और व्यथा के साथ कही। उसने यह भी बताया कि, उसका बच्चा पशु है और तीन माल का होने पर भी बाजार में छोटा दिसायो पड़ता है। उसकी शरीर-वृद्धि रुक गयी है।

मेरी पत्नी नर्मदा के वृष्ट में समाहित हुई कि नहीं, यह तो मैं नहीं कह सकता; लेकिन दया का साथ उसने चेहरे पर स्पष्ट

दृष्टिगोचर हुआ। फिर भी जरा रुखे स्वर में उसने कहा—“इस बच्चे को तुम यदि अपनी माँ के पास छोड़ आती, तो नौवरी मिलने में तुम्हें अधिक कठिनाई नहीं होती।”

“यह तो ठीक है, परन्तु यह मेरे बिना रह नहीं सकता।” नर्मदा का मातृ-हृदय पुकार उठा—“यह एक प्रकार से पग है। जहाँ बैठा देती हूँ, वही पड़ा रहता है। लेकिन इसके कारण आपके काम में कोई श्रुति नहीं होगी।”

मेरे समझाने पर मेरी पत्नी नर्मदा को रखने पर राजी हो गयी। नर्मदा ने घर का सारा काम सँभाल लिया और रसोई तो वह इतनी मँडिया बनाती कि, रुखे-से-रुखे स्वभाव का व्यक्ति भी प्रसन्न हुए बिना न रहता। अपने अपग बच्चे को एक ओर सुला कर वह बड़ी शांति और धैर्य के साथ जी-तोड़ परिश्रम करती। बीच-बीच में वह उसे सस्नेह देख लेती और ‘मेरा बच्चा-मेरा मुन्ना’ कह कर अपने मन को सतृप्त दे देती। उस बालक के लिए प्यार ने ये दो-चार शब्द ही खेल के साधन थे। अपनी गर्दन को हिलाने-उलटने के अतिरिक्त वह कुछ भी नहीं कर सकता था।

मेरी बहुत इच्छा थी कि, उस बच्चे की योग्य चिकित्सा करायी जाये, लेकिन उस पर हजार-पन्द्रह सौ रुपया खर्च करना मेरे बूते के बाहर था। निर्मला कभी इसके लिए

सहमत नहीं होती। बल्कि वह तो उस बच्चे को लेकर हमेशा नर्मदा को खरी-खोटी सुनाती रहती—“यह अपने बच्चे की चोरी-चोरी दूध पिलाती है—ठीक से काम नहीं कर पाती। इत्यादि। मैंने साचा धाँवा निर्मला ने स्वयं मुझसे व्याह करने के पहले बाल-वैधव्य का कष्ट भोगा था इसलिए नर्मदा ने प्रति उसे सहानुभूति होनी चाहिए। लेकिन वह तो मन्त्र ही उसकी रज लेने के



पड़े आँचल में
[चित्र : या
मि नी रा य]

लिए व्याय-वाक्य सुनानी।

नर्मदा के लिए वह पग बालक ही जीवन का सहारा था और उसी को लेकर दिन-रात उसे कट वाक्य सुनने पड़ते। शायद इसीलिए या अन्य किसी कारणवश, उसने अपने बच्चे को कौंकण में अपनी माँ के पास छोड़ आता ही उचित समझा। छुट्टी लेकर वह चली गयी। मुझे इसके लिए अफमोस था, लेकिन साय-साय यह सतोष भी कि, अब उसे फटकार नहीं सहनी पड़ेगी। यह भय भी मुझे था कि, शायद वह लौट कर भी न आये। लेकिन वह सातवें रोज ही वापस आ गयी। काम उसका पूर्ववत् चालू हो गया। निर्मला की प्रवृत्ति भी दृढ़ हो गयी, परन्तु नर्मदा सदा उदास रहन लगी। अपने बालक को ‘घोगा-लुच्चा’ इत्यादि कह कर जो आनन्द उसे मिलता था, वह खत्म हो गया। यत्रवत् वह अपना कार्य विद्या करती, लेकिन जीवन में अब उसके कोई

उल्लास, कोई भावपूर्ण ॥ या ! तेवन् आठ-
दस दिन में जब उसी मौ का पत्र आता
और यह यह सुनती कि, उसका बच्चा
ठीक है, तो एत मुरझान उमरे मरण गेहूँ
पर फिर आता। रात में बूजा-अर में बंद
पर वह प्रार्थना करती— 'हे भगवान, मेरे
बच्चे का सन्तोष-परतने की प्रकृति दे। तु
दीनानाथ है, इस वगु वास्तव पर दया कर।'।
उसे किसी मरतकाल की प्रशंसा आता थी।

पार-प्राण पशित

इसी प्रकार थीन गये।

एक दिन मृत्यु तब
एकी कि, मेरे एत
माल-मित्र, जो अब
बापस के प्रमुख हो
गये थे, हमारे गृह
में मानवाते हैं। उन
अलपार की व्यवस्था
में अपने यहाँ करने
का निश्चय किया।
पत्नी की भी यह राय
बहुत मजबूत थी।
उमरे गहन पर मैंने

गहर की दी-वार और प्रतिष्ठित स्तंभों की
पाय-पाटी में आने का निमण धन दिया।

गहरी व्यवस्था दीन इन पर हो गयी।
नर्मदा की पार-प्राण पर एत मरणा या।
आता तो हमने यहाँ नच की कि उस दिन
नर्मदा के रूप में व्यजन रातक अतिथिगण
हमारी पार्टी की जनम-अर याद रग।
मेकिन पार्टी के गहरे दिन नर्मदा की भी

जायके

जो लोग बहुत तेज मरक खाते हैं,
उनकी येनमकी का भी अयाव भरी—
जो लोग तेज मित्र पांड करते हैं,
इकलाव के गेह उनको मसली नहीं
होती—जो लोग मिठाई पर गिरते हैं,
उनकी जजमानियत होलनाक होती
है; अगर जो लोग हर जायके से
निभा लेते हैं और अपना कोई आपका
नहीं रखते, वे वरिष्ठों की सफलता से
इधर घुंते आये—उन्हें तो जगत के
हवाले हो रहते ! —आतक अली

की बिट्टी आयी, जिसमें सिरा ॥ ११,
उमरा बच्चा सन बीमार है। जीने की
आता बहुत मज है और वह पीरन पत्नी
आये। उम बिट्टी की कपूर में तो हंशन
रह गया। नर्मदा अग उम दिन घली
जानी, तो हमारी पार्टी अगपन हो जाती।
मेरी पत्नी न गहा— एत दिन बाद नर्मदा
कहो आगयी, तो क्या नृमगात होगा ?
बच्चा तो सदा बीमार रहता है—हमारी

पार्टी तो इबल बात

ही होगी।' उमरी

रूप की मान पर मैंने
बिट्टी अपने पास
ही छिपा ली।

पार्टी हो गयी।
भोजन की सधी ने
गुजर पड़ में गराहवा
की। नाम की वह
पत्र मैंने नर्मदा की
पद पर गुनाया। वह
तो एत रह गयी।
मेहमानों की सातिर,
धामदीर में धाल

रहने में मैं यह पत्र उसे पहले नहीं गुना
रात, इसके लिए मैंने धमा भी मंगी।
केकिन इन दूध की मोंरते मजम मने एत
गहरी आबंदना हुई। धेपारी नर्मदा।
उमरी आगु बिभी प्रचार नहीं मर रहे थे।
मैंने उसे 'यम' तक मज पट्टेवाफ धोर
उम मभी प्रचार का अदयागन दिया।
दीप ही अपने बच्चे की लेवर पापत आने

नवनीत

का भी अनुरोध मैंने उससे किया। लेकिन वह लौटी नहीं। महीनों गुजर गये। उसे एक प्रकार से हम भूल ही गये थे कि, अचानक नर्मदा एक दिन दिखायी पड़ी। उसे देख कर ऐसा मालूम हुआ, मानो वह नर्मदा नहीं, नर्मदा का भूत हो-निस्तेज, निष्प्राण।

बाद में पत्नी ने मुझे बताया कि, नर्मदा का पति चाना-अस्पताल में आ गया था और इसीलिए उसे बम्बई आने की जरूरत पड़ी थी। वह फिर यही नौकरी करना चाहती थी। मैंने जिस दिन उसे 'बस' में बैठा कर बिदा किया उसी दिन उसका बच्चा मर गया था। बालक ने

अपनी माँ के विरह में तड़प-तेड़प कर जान दे दी। यदि नर्मदा जिस दिन पत्र आया था, उसी दिन खाना हो जाती, तो वह अपने बच्चे का मुँह देख सकती थी। लेकिन अब तो नर्मदा जीवन-भर अपने बच्चे की याद में तड़पेगी।

युग-युगों-जैसे वर्ष बीत गये हैं, मगर मेरी स्मृति पर यह दग अब भी धँसा ही हूरा है—अब भी मेरे कानों में वह अवश कीलार तिरस्कृत शिखायामा के अट्टहास की भौंकि बौंध जाती हैं—जब उस निरीह नर्मदा ने मुझसे चिट्ठी पढ़वा कर यह जाना था कि, उसका बच्चा मरनासम है।

✱

सफल सभा

पहला अंक

पहला व्यक्ति—“हमारी यह हादिस इच्छा है कि अगली बार सभा में आपका भाषण अवश्य रखा जाये।”

दूसरा व्यक्ति—“पर क्या फायदा? लोग तो आते ही नहीं।”

प व्यक्ति—“नहीं, नहीं, इस बार बंद-बाज बजाकर खूब तमाशा करण।

‘पब्लिक’ जरूर आयेंगी।”

दूसरा व्यक्ति—“पर मैं तो साठे पैंच बजे से पहले नहीं आ सकूँगा।”

प व्यक्ति—“कोई बात नहीं। तब तक हम बाज बजाकर लोगों को रोव रखण।”
(दोना जात हैं।)

दूसरा अंक

प व्यक्ति—“फिर उम दिन आप क्यों नहीं पधारे? हमें तो आपका प्रतीक्षा में सात बजे तक बाज बजाने पड़े।”

दूसरा व्यक्ति—“आता कैसे? इतनी भीड़ थी कि, अंदर घुसना असम्भव हो गया।”

प व्यक्ति—“बस! यही तो सबसे अच्छा तरीका है सभा को सफल बनाने का।”
दोनों जाते हैं। (भाटप समाप्त)

—स्व रामनारायण पि पाठव के ‘स्वैर बिहार’ (गृहछनी) में सामार

★



मला-बुरा

—संस्कृत-मर्म—

ट्रान्स् से छूटने के बाद हेनरी गार्नेट प्रायः अपने कदम को जाता, बिज खेलता और फिर वही भोजन के लिए घर पहुँचता। उसने साथ खेलने में बड़ा आनंद भाता था। यह बड़ा अच्छा खिलाडी था। उसे हारने का मजाद नहीं होता था और यदि जीत जाता, तो कहता—“यह दिमाग नहीं, समझदार का खेल है।” यदि उसका साथी कभी कोई भूल कर देता, तो वह उसे दोष नहीं देता था, लेकिन उस दिन कुछ और ही बात थी। वह स्वयं गलत खेल रहा था। मित्रों ने कई तरह से यह जानने की चेष्टा की कि, आखिर इसकी वजह क्या है, लेकिन हेनरी कुछ बताना ही नहीं रहा था।

मेल होता रहा। हेनरी ने खेल में गलती होनी रही। साथी के पूछने पर उसने कोई उत्तर नहीं दिया, उल्ट उतरा खेला और धिक्का गया। खेला कर मित्रों ने पते पटन दिये—“तुम्हें क्या हो गया है, हेनरी? ये सब क्यों की तरह क्यों खेल रहे हो?”

उसने हताश भाव से कहा—“आज मचमुच मुझसे नहीं खेला जाता।”

“लेकिन बात क्या है? हुआ क्या?”

“क्या हुआ?” हेनरी मट्टुस्वर में बोला—

“क्या नहीं हुआ? और, यह सब निजी

की वजह से है।... मे तुम लोगों को सारी कहानी सुनाता हूँ।”

निकालस हेनरी का इसलोग बंटता था। उसे सब ‘निजी’ कहते थे। हेनरी की दो लड़कियाँ भी थी, पर वह अपने बेटे की ही सबसे अधिक प्यार करता था। बेटा था भी बहुत योग्य। पढ़ने में तेज, स्वस्थ और बालबाल में सिष्ट। चौदह वर्ष की उम्र से उसने टेनिस खेलना आरम्भ किया। सोलह वर्ष की उम्र में उसने कुछ ‘कप’ भी जीत लिये और अब तो वह अपने पिता को भी पराजित कर देता था। अठारह वर्ष का हो जाने पर निजी जब ब्रिजिंग गया, तो हेनरी को बेटे ने पढ़ी-पढ़ी आनाएँ कहीं कि, उसका बेटा बिसी दिन ‘डेविग-कप’ में अपने देश का प्रतिनिधित्व करेगा।

टेनिस-खेल में हेनरी गार्नेट का कई लोगों ने परिचय था। एक दिन सप्पा को उसकी मुलाकात बर्नल ब्रैवाजोस से हुई। अपानक बर्नल ने यह दिया—“तुम अपने लड़के को ‘मोटी बालों’ में खेलने के लिए क्यों नहीं भेज देते?”

“अभी तो वह इतना अच्छा खेलता नहीं—यड़े-यड़े खिलाड़ियों ने वैसे खेलेंगे? फिर उसकी पढ़ाई का भी हर्ज होगा और वही उसकी देनामद कोन करेगा—यन्वा

हो तो हूँ अभी !”

“चिता मत करो। मैं इंग्लैंड जा रहा हूँ। मैं उसकी देख-भाल करूँगा। बेचल तीन दिन की ही तो बात है। फिर वह अब तक अभी विदेश गया भी नहीं।”

इसके आगे कोई बात नहीं हुई। हेनरी चुपचाप अपने घर लौट आया। जब उसने अपनी पत्नी से चर्चा की, तो पत्नी ने भी एनल की बात का समर्थन किया—“अब तो निकी १८ वर्ष का हो गया है।”

“लेकिन मैंने टेनिस खेलने के लिए उसे कॉम्ब्रिज नहीं भेजा है।” हेनरी ने कुछ इस स्वर में कहा।

पत्नी चुप रही। पर दूसरे ही दिन उसने इसी बात के बारे में निकी को एक पत्र भेज दिया। दो दिन बाद हेनरी गारनेट को बेटे का पत्र मिला। मौटी जाने के लिए बेटे ने खूब उस्ताह दिखाया था। उसने यह भी लिखा था—उसे छुट्टी भी आसानी से मिल सकती है। हेनरी ने पढ़कर पत्नी के हाथ में दे दिया और बड़े स्वर में पूछ बैठा—“तुमने निकी को मारी बातें क्यों लिखी?”

“मैंने साथ ही यह भी तो लिख दिया था कि, उसका जाना नहीं हो सकेगा।” पत्नी ने मानो सफाई दी।

“अब मैं कैसे उसे मना करूँ?”

पत्नी ने समझ लिया कि, उसने वाजी मार ली है। ठीक दो सप्ताह बाद निकी भी लंदन पहुँच गया। दूसरे दिन उसे मौटी बालों के लिए प्रस्थान करना था। भोजन के बाद हेनरी ने बेटे से कहा—“जा तो रहे

हो, पर तीन बातें याद रखना—जुआ मत खेलना, किसी को रुपया उधार मत देना और किसी औरत से भिन्नता न करना।”

मौटी बालों में निकी किसी प्रसिद्ध खिलाड़ी को पराजित न कर सका; पर वह इतना बुरा भी नहीं खेला। ‘मिक्सड-डबल’ में तो वह ‘सेमी-फाइनल’ तक जा पहुँचा। सबको यह मानना पड़ा कि, वह एक होनहार खिलाड़ी है। कर्नल प्रधानजी ने तो स्पष्ट कह दिया कि, अधिक अभ्यास से वह अवश्य ही अपने पिता की आशाएँ पूरी कर सकता है।

‘टूर्नामेंट’ समाप्त हो गया और दूसरे दिन उसे लंदन वापस जाना था। जाने से पहले उगने सोचा—क्यों न धूम-फिर कर मौटी कालों के खानद उठाये जायें !

रात्रि में सब खिलाड़ियों को एक भोजन दिया गया। भोजन के बाद वह भी अन्य खिलाड़ियों के साथ ‘स्पोर्टिंग-क्लब’ में चला गया। वहाँ कुछ लोग हलैट (एक प्रकार का जुआ) खेल रहे थे। चारों ओर भीड़ लगी थी। निकी आगे बढ़ गया।

इतने में निकी के किसी परिचित ने आकर पूछा—“तुम भी खेल रहे हो क्या?”

“नहीं तो !”

“पर बिना विस्मृत आजमाये ही मौटी से चले जाना बेवकूफी है। सी फेंक हार भी जाओ, तो क्या है?”

निकी का दोस्त तो यह कह कर चला गया; किन्तु निकी के विचारों की नींव ही हिला दी थी उसने। वह मेज के किनारे

पहुँच गया। जीतनेवालों को खूब खपा मिल रहा था। निक्की को अपने पिता के सम्बन्ध आये—'जुआ मत खेलना।' फिर भी उसने साँ फ्रेंच का एक् नोट जेब में निवाला और १८ नम्बर पर रख दिया। उसने सोचा—मेरी आयु भी तो १८ वर्ष की है। पहिया घूमा और गैद सचमुच नम्बर १८ पर गिरी। निक्की अपनी ओखो पर विश्वास न कर सका। बाँपते हुए हाथों में उसने कई नोट पकड़े। उसकी समझ में कुछ भी नहीं आया। इतने में गैद फिर १८ नम्बर पर रकी। निक्की को आश्चर्य हुआ। एक् ने यह दिया—'तुम फिर जीत गये हो।'

"कैसे?"

"तुमने अपना मो फ्रेंच का नाट जो नहीं उठाया? अरे, इतना भी नहीं जानते?"

नाटों का एक् और बटन निक्की के हाथ में पकड़ाया गया। उसका मित्र खतरा गया। उसने नाट घिने—पूरे सात हजार फ्रैंक। निक्की ने अपने-आपको बहुत ही चतुर समझ लिया—'गम्मे बमाने का इतना सरल ढंग! उमके नहरे पर मुस्मान सिद्ध मयी।' उसने गिर उठाया, तो बगड में मरी हुई एक् महिन्ना में आगे मिर्ची। वह मुन्मरारी, फिर बोली—

"धटे भाग्यवान हो!"

"आज पहली बार खेला है।"

"तभी तो कहती है। अच्छा, मुझे एक हजार फ्रैंक उधार दे सकोगे? मैं तो मूढ़-मूछ मी बेटी। आप धटे में बापम दे दुँगी।"

नयनीत

निक्की ने हजार फ्रैंक दे दिये और—"अब मैं तुम्हें कभी वापस नहीं मिल सकोगे"—बहुवर यह वायव हो गयी।

निक्की चक्कर में पड़ गया। उसने पिता ने कहा था—'निक्की को खपा उधार मत देना।' क्या वेकूपी कर दी? भ्रंर, अभी ॥ हजार फ्रैंक तो हैं। मोड़ी विस्मन फिर आजमा ले। उसने १६ नम्बर पर नोट रखा, पर हार गया। फिर १२ नम्बर पर दूसरा नाट रखा, फिर भी हार गया। अरे, यह क्या हो गया? यह फिर खेला और इस बार जीत गया। एक् धटे वाद उमके नाम बीत हजार फ्रैंक पे।

"छो, तुम्हारे एक् हजार फ्रैंक—" वह महिन्ना फिर आ गयी।

"अच्छा, मुझे तो बोर्ड आना नहीं था।"

"तुमने मुझे क्या समझ लिया था जी? क्या मैं तेरी-बेटी लगती हूँ?"

"नहीं तो।"

"मिरा रति मारारा में सरकारी नीरर है। उमके कहने पर ही मैं कुछ दिनों के लिए बहो आयी हूँ।"

निक्की ने कुछ न कहा गया। बोली—"मुझे अब जाना है। बरु लदन पहुँचूँगा।"

"अरे, तुम कभी 'निबर बाबर' में नहीं गये? लदन जाने में पहले बहो पन्दो। भोजन करोगे, फिर 'डाम' भी करोगे।"

निक्की को पुन. बाप की नगीहन याद आयी। पर उसने सोचा—यह मो अन्य औरनों में मित्र दीप्तता है।

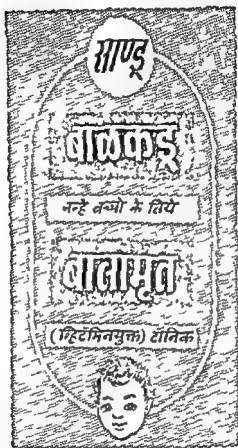
दोनों 'निबर बाबर' में पहुँच। भोजन



बनानेवाले
हामी अण्ड कं.

मुमा मसजीद, न्यु कटलजी मार्केट, बंबई २.

नवशर्प और दांपत्यजी के अभिनंदन



दत्तात्रेय कृष्ण साण्डू ब्रधर्स, चेम्बूर लि०

पंचशरी और हृद थॉपिंग चेम्बर, बम्बई ३८

बम्बई जगता ठाण्डूदार, बालवादेवी, परेल और दादर

बम्बई के मुख्य विक्रता

प्रामाणिक स्टोअर्स मंगल बिल्डिंग, हांगई रोड, बम्बई ११

जिया, सराय भी और फिर साथ ही 'डाक' करते छगे। निनी ने बिल भुग्या। एर टैन्सी तो और उसे साथ लेकर उसके होटल छोड़ने गया। होटल में जब निनी उससे बचने ला उसे पहुँचाने गया, तो वह उससे लिपट गयी और उससे हीठो पर अपने उछल होठ रस दिये।

क्षणभर के लिए निनी ने समझा कि, वह बेवकूफ था रहा है। उसे अपने पिता के सम्बन्ध हो जाने पर मुरत ही वह सब-कुछ भूल गया।

निनी बड़ी हलकी नींद सोता था। अचानक आँखें खुलने पर उसने देखा कि, स्नातार का दरवाजा खुला था और वहाँ मिजली जल रही थी। कमरे में कोई बड़ी सावधानी से चल रहा था। वह सोचती थी। निनी की समझ में नहीं आया कि, वह क्या करने पर तुली है। निनी ने देखा कि, वह उसने नोट के पास पहुँचकर खड़ी हो गयी और कुछ देर तक चुपचाप बंसी ही खड़ी रही। निनी का दिमाग घटने लगा और उसने निनी की जगह से सब-न-सब बात निजाकर नोट को यथास्थान रख दिया। निनी अचानक आँखों से उसे देख रहा था। उसकी समझ में नहीं आया कि, वह क्या करे। वह उस पर झपट सक्रिया था, लेकिन यदि उसने धीरे किया तो ?

उपर वह सोच रही थी कि, निनी सो रहा है। कुछ देर चुपचाप खड़ी रहने के बाद उसने वे नोट एक फूलदान में रखा दिये और ऊपर से पूर्णतः पूरा लगा दिये।

फिर वह धीरे-धीरे पारपाई की ओर बड़ी और चुपचाप निनी की बगल में लेट गयी। बड़े प्यार से उसने निनी का चुम्बन किया, पर निनी तो जैसे गहरी नींद में बेचकर पड़ा था।

निनी मन-ही-मन सोच रहा था— "वह तो चोर है। खूब बेवकूफ बनाया मुझे!" वह उसे छिप-छिप कर देखा रहा और उसकी सोच से उसने पता कर लिया कि, वह सो रही है। "बच बच समझ कर खूब निश्चित होकर सो रही होगी—" निनी की चेतना हो आया— "वह दाने आराम से सो रही है और मुझ पर एसी भीख रही है।" वह बाकी देर तक प्रतीक्षा करता रहा, पर वह टिप्पणी-टुछी भी नहीं। निनी ने अंत में कहा— "डॉकिंग!"

कोई उत्तर नहीं मिला। वह गहरी निद्रा में अक्षत थी। निनी उठा और दो-एक वक़्त खड़ा। वह अभी सो रही थी। निनी ने चुपके से बिस्तर के पास पहुँचकर देखा— वह फिर भी सो रही थी। बड़ी सावधानी से उसने फूलदान के पूरा हटाने और फिर अंदर से सब नोट निजाकर दिये। वह सब करते हुए भी वह एक आँख से उसे देख रहा था और वह सो रही थी— निश्चित! निनी ने पूरा पुनः गमो पर रख दिये। फिर अपने कपड़ों के पास पहुँचकर नोट उसने नोट की जेब में डाले और कपड़े पहाने शुरू किये। नोट पेट पहनने और टाई बाँधने में उसे पौर मटा लग गया। पूरे उसने नहीं पहने, ताकि धोर होगा।

सोचा—कमरे में बाहर निकलकर पहन लूंगा। जूते हाथ में लेकर आहिस्ता-आहिस्ता दरवाजा खोलने लगा।

“कौन है?” दरवाजा खुलने के क्षण में वह जाग गयी थी। वह अतिशय परवर्ध गयी। निक्की बोली—‘बहुत देर हो गयी है। मुझे वापस जाना है। मे काजिया कर रहा था कि, तुम्हारी नींद न टूट।’

वह पुन लुट गयी। फिर बोली—“आज से पहले प्यार तो करते जाओ। तुम कितने अच्छे हो। अच्छा, बिदा।”

निक्की अग तब हाटल में बाहर नहीं निकल गया, डरता रहा। सबेरा हाने लगा था— निक्की ने साजों हवा में लम्बी सोस ली। वह प्रसन्न था। अपने हाटल में पहुँचते ही उसने गरम पानी में स्नान किया। फिर बपड़े पहनकर और मामान बाँधकर उसने जंग में सत्र मोड़ निकल कर देते। पूरे २६ हजार फीट थे। निक्की को आश्चर्य हुआ—छ हजार अधिक वहाँ ने आ गये? वह कुछ धनों तक समझ में पाया, पर फिर उसने जान लिया कि, छ हजार फूटदान में पहुँचने ही रहे होंगे। निक्की को बड़े जार की हैमी आ गयी।

घर लौटने पर निक्की ने अपनी कहानी सखी मुना दी थी। हेनरी गारलेंट ने बही कहानी कथ में अपने मित्रों को मुना दी और गम्भीर होकर कहने लगा—“फिर बात तो यह है कि, वह अपने-आप पर बहुत सख हैं। जानते हो, उसने मुझसे क्या कहा? उसने कहा—‘पिताजी! जो नर्मात्मक

आपने मुझे दी थी, उसमें अवश्य ही कोई दाप होगा। आपने कहा—जुआ मन खेलना—मैंने खेला और पैसा बनाया। आपन कहा—बिस्ती को रफा उधार मत देना और मँज दिया। लेकिन रफे फिर वापस मिल गये। आपने कहा—बिस्ती जोरत में पैसी मत करना। मैंने मैत्री की और छ हजार फीट भी बनाये।”

मुनकर हेनरी गारलेंट के तीनों साथी टहका मारकर हँसने लगे।

“तुम हँस रहे हो? हमसे बटु स्वर में बोला—“पर मेरी तो हाजत अजीब हो गयी है। पहले जो-कुछ मैं कहता था, वह उसे परमेश्वर का वाक्य समझ लेता था। अब वह मुझे बेवकूफ समझता है। और, यह तो तुम सब मानोगे कि, मेरी नमीहते गलत नहीं थी?”

वह कुछ धनों तक मित्रों की ओर देखता रहा, फिर कहने लगा—“ठीक है न? तो फिर हँस क्यों रहे हो? बनावों, मेरे स्थान पर तुम खोप होले, तो क्या करते?”

मित्रों की हँसी रग गयी—बिस्ती से कोई उत्तर न बन पाया। सिर्फ हेनरी के अजीब दोस्त ने वाइप के लम्बे-लम्बे कस खींचते हुए काफी देर बाद निस्तम्भता भग थी—“हेनरी! अगर मैं तुम्हारी जगह होता, तो कोई बरवाह न करता दगवी। मैं तो यह जानता हूँ कि, तुम्हारा लटका बिस्मत लेकर आया है और इस दुनिया में जीवित रहने के लिए बुद्धिमान होने की अपेक्षा मायबान होना वहीं अधिक अच्छा है!”



वार्थिव का अपना

[कल्कि-लिखित ऐतिहासिक तमिल-उपन्यास
का संक्षिप्त हिन्दी-रूपांतर]

स्व० रा० कृष्णमूर्ति 'कन्निक' समिन्ध-साहित्य के युगप्रवर्धक मनीषी थे। साहित्य एवं कला के मनी क्षेत्रों में उन्होंने नवोदय को अवतीर्ण किया था। राजानी के सम्प्रदों में वे 'तमिल-सरस्वती' की सर्वोच्च ममता के अधिपारी' थे। उनके उपन्यास विश्व-कथा-साहित्य की अमूल्य निधि हैं। 'नवनीत' के पाठकों के सामर्थ्य यहाँ हम उनके एक सुप्रसिद्ध ऐतिहासिक उपन्यास 'पार्ष्वन कनकु' का सविस्तार हिन्दी रूपान्तर प्रकाशित कर रहे हैं—रूपांतरकार हैं तमिल और हिन्दी के मंजु हुए लेखक श्री रा० विज्जिताधन।

कावेरी नदी के तीर पर पाति का साम्राज्य था। प्रातः-मूर्ध की मुनहरी किरणें नदी के लाल वस्त्र पर स्वर्ण-रेखाएँ बिखेर रही थी।

घोड़ी दूर पर घरगढ़ के पेड़ के नीचे एक झोपड़ी में एक युवती जलपान तैयार कर रही थी और एक हट्टा-बट्टा युवक बैठा कुछ खा रहा था।

सहसा घोड़े की धाप मुनायो दी। युवक मानो एक विद्युत्-स्फूर्ति के आवेग में उछल और बाहर चला गया।

जब वापस आया, तो अपनी स्त्री से बोला—“बल्लि! मैं आज दोपहर को उरंगूर (चोल-देश की राजधानी) जा रहा हूँ।”

“क्या है यहाँ आज?”

“आज बाबा (पल्लव-राजा की राजधानी) में कर वसूलने के लिए दूत आ रहे हैं। महाराज कर देने से इनकार करने-वाले हैं। इसलिए मुझे जल्द जाना है!” बल्लि के पति पोन्नू ने कहा।

“मैं यहाँ अकेली कैसे पड़ी रहूँ? मैं भी अपने दादा को देखने तुम्हारे साथ चलूंगी।”

जब पोन्नू और बल्लि नगरी में प्रविष्ट हुए, तब अस्ताचलगामी सूर्य अपनी नवनीत

स्पर्शिम निरणों से उरंगूर को खण-खान कर रहा था। पोन्नू ने जल्दी-जल्दी बल्लि को उससे दादा के घर पहुँचाया और महाराज से मिलने चल पड़ा। जाते समय बल्लि के बूढ़े दादा ने कहा—“महाराज ने एनाठ में मिल पाओ, तो सचेत कर देना कि, वे मारण्य भूपति से जरा सावधान रहे।”

मारण्य भूपति राजा पार्ष्वि का मौतेष्ठा भाई था। वे उसकी बड़ी मदद करते थे—यहाँ तक कि, उसे अपनी मेना का सेनापति भी बना दिया था। फिर भी उसका हृदय साफ नहीं था। वह नहीं चाहता था कि, चोल-राजा पल्लवों के खगुल से छुटकारा पाने के लिए युद्ध ठाने। स्वतंत्रता के पुजारी राजा पार्ष्वि को जब उसकी इस दुर्मति का पता लगा, तो उन्होंने उसे सेनापति के पद से हटा दिया।

००० ००० ०००

युद्ध के लिए बूचक बन कर समय जब आया, तो पार्ष्वि महाराज अपनी रानी अष्टमोदित से विदा लेने पूजा-गृह में पहुँचे। यहाँ पर खड़ी का एक सद्बचन रखा था। महाराज ने उसे गोला, तो उगने अदर समाचम चमरनी एक तलवार

और एक पोथी दिखायी दी।

महाराज ने कहा—“यह तलवार चोल-वश की सुवीर्य की निशानी है। उस जमाने में इसी तलवार के बल से राजा करिकाल बल्लवन् और नेडुमुडि किळिळ-जैसे महान् राजाओं ने राज-माज सँभाला था। इस पोथी में देव धवि ‘तिरुवल्लुवर’ की ‘तिरुकुरळ’ है। ये दोनों चोल-वश की प्राचीनतम धरोहर हैं। इन्हें तुम सावधानी से सँभाल कर रखना और विक्रम के वषत्स् होने पर उसे सौंप देना। अरळमोळि। यह प्राचीनतम तलवार मेरे पिताजी ने धारण की थी, पर मैंने नहीं धारण की। कारण यही कि, करद राजा के रूप में मैं, उन महान् करिकाल बल्लवन् और नेडुमुडि किळिळ की इस अजेय पानीदार तलवार को नहीं धारण करना चाहता। विक्रम से वह भी बताना। जब यह—चप्पा-भर भूमि के लिए ही सही—स्वाधीन राजा बने, सभी इसे धारण करें और तमिल-वेद ‘तिरुकुरळ’ में बड़े भुक्तविक राज करें। मैं यह उत्तरदायित्व तुम पर छोड़ रहा हूँ। धैर्य की इस सन्निधि में मुझे वचन दो कि, मैं अपने पुत्र को बीर विक्रम बनावूँगी।”

अरळमोळि उस समय की अतुलनीय सुंदरी और चेर-राज-कन्या थी। काची के पल्लव-चक्रवर्ती महेद्र तक ने युवराज नरसिंह के लिए इस कन्या की याचना की थी, पर अरळमोळि ने तो एक बार अपने मन में जो ठान लिया, सो ठान लिया।

उरैयूर की दक्षिणी राज-वीर्य का चित्र-मंडप सारे दक्षिण में प्रसिद्ध था। काचीपुरम् में महेद्र चक्रवर्ती द्वारा निर्मित गुप्तसिद्ध चित्र-मंडप भी उस चित्रमंडप के सम्मुख हतथी था।

महाराज पार्थिव और युवराज विक्रम दोनों चित्र-मंडप के सामने घोड़ों पर से उतरे। ठीक उसी समय पोन्नन् भी वहाँ आ पहुँचा। पोन्नन् ने हाथ में मशाल ली। तीनों चित्र-मंडप में प्रविष्ट हुए। तीन सालान पार करने के बाद राजा पार्थिव एक बंद कमरे के सामने जा खड़े हुए और विक्रम से बोले—“बेटा, तूने कई बार पूछा है कि, इस कमरे में क्या है? मैं चाहता था कि, कुछ और वर्षों के बाद तुझे ये चित्र दिखाऊँ। पर आज तो अभी दिखा देने की आवश्यकता पड़ गयी है। विक्रम! इस कमरे में मुझे छोब और कोई बाज तक नहीं आया है।...हो, पोन्नन्! जरा यह मशाल ऊपर उठा तो।”

राजा की बातों से तन्मय पोन्नन् ने मशाल ऊपर उठायी।

“बेटा, उस पहले चित्र को देख और बता कि, क्या दिखायी देता है?”

“युद्ध के लिए सेना बूच कर रही है। अरे, कितनी बड़ी सेना है!” विक्रम आश्चर्यचकित हो रहा था।

“ये सभी चित्र स्वयं मैंने अपने हाथ से बनाये हैं। पिछले बारह वर्षों से दिन-रात सोते-जागते मैं जो सपने देखा करता था,

उन्हीं को मने यहाँ मूर्त रूप दिया है।
बेटा, अच्छी तरह ध्यान लगाकर देख और
बता कि, ये मेनाएँ किसकी हैं ?”

“यह कौन-सी बड़ी बात है ?” आगे-
आगे लहराने हुए जानेवाली व्याघ्र-पत्तिका
स्वयं प्रवृत्त कर रही है कि, ये चान्द-देस की
मेनाएँ हैं । लेकिन पिताजी ।”
विश्रम जरा हिचका ।

“क्या पूछना चाहना है, बेटा !
निस्संकोच होकर पूछ ।”

“राजमाँ ठाट में चरनेवाले
उस हाथी के होदे पर महावन
को छोड़ और कोई नहीं बँधा
है—यह क्यों पिताजी ?”

“अच्छा प्रश्न किया तूने,
बेटा ! मने जानबूझकर हाथी का
बहु हीदा खाली छोड़ा है । हमारे
इन चोल्-बस में जो पुरुष-मुगव
ऐसी बिगाड विजय-बाहिनी के
माथ दिग्विजय के लिए निकलेगा,
उमा का चित्र इन रिक्त होदे पर
बनाना है। बेटा, अब तो यह
चान्द-राज्य अजन्म-भर भूमि का



चोल्-राणी
[चित्र १२ की
तरी के सिक्के
की रेखातुल्य]

अधीन राज्य है । लेकिन पुरातन काल में तो
यह ऐसा नहीं रहा । निरुद्ध अधीन में ही
हमारे वन की कीर्ति दिगन्तव्यापिनी थी ।
विश्रम ! दुर्देन-प्रनाडित यह चोल्-भूमि
फिर वही महोन्नत दगा, प्राप्त करे-
मेरे मन की यही प्रयत्न-प्रतिभासा है ।
मेरी आँखों में दिन-रात यह देखा
दृढ़ मचाना रहता है ।”.....

नवनीत

भाद्रपद की पूर्णिमा में ‘विष्णु’ नदी
का तट हलम्पी भयारना में आविष्ट था ।
दिन-भर के घोर युद्ध से वह भूमि लारों से
पटी थी । बाल-रात्रि के इसी बीमत्स में,
अतल दून्य का अपमान दर्नी, कोई मानव-
आवृत्ति चापहीन बंदमों से आगे बढ़ती
नजर आयी । वह एक जटाजूटधारी

सन्ध्यामी चं-शिवयोगी-माथे पर
विभूति, कठ में रुद्राक्ष-माला,
कमर पर गरुडा वस्त्र व हृदय-
प्रदेश पर व्याघ्र-चर्म ! के घूर-घूर
कर लानों को देखते और आगे
बढ़ जाते । पार्थिव महाराज का
शरीर देखकर वे हठात् बँठ गये ।
तद्वत् राजा का सिर उन्होंने
अपनी गोद में उठाया तथा अपने
कमर से उनके धन-विशत बेहरे
पर जल छिड़का ।

महाराज की आँखें धीरे से
खुली । अथगुली आँखों में ही
उन्होंने शीघ्र स्वर में पूछा—
“कौन है आप ?”

“विन्-अम्बर में नतन करती हुए सारे
मसार को नचानेवाले गन्धिदानद भगवान
के दामों का दाम है मैं । पार्थिव !
आज के युद्ध में मुना कि, तुमने आदवर्ष-
जनक शौर्य दिखाया, तो तुम्हें देखने की
लालसा हुई थी । इसी से चला आया ।”

महाराज पार्थिव की आँखें हारोन्माद
से मानो मिट्टी उठी ।

“पाथिव ! तुम जैसे नर-वीरो की सेवा करना मैं अपना परम कर्तव्य मानता हूँ। तुम्हारे मन में कोई अपूरी इच्छा हो, तो वहो, मैं उसे पूर्ण करने का प्रयत्न करूँगा।”

शिवयोगी की बातें सुनकर राजा पाथिव ने कहा—“स्वामी ! मेरा विजय वीर-पुत्र बने और चोल-वंश की उन्नति को ही अपना जीवन-लक्ष्य माने। उसे यह उपदेश मिले कि, प्राण बड़े नहीं हैं—सुख-चैन बड़ी चीज नहीं है। मान-रक्षा और शौर्य-पराक्रम ही अमूल्य निधि हैं। दूसरों के अधीन आने को वह घृणा की आँखों से देखे। महाराज, मैं यही वर आपसे माँगता हूँ—प्रदान करेंगे ?”

शिवयोगी ने शान्त स्वर में कहा—“राजन्, यदि जीवित रहा, तो तुम्हारी कामना पूरी करने की चेष्टा करूँगा।”

“महाराज, यह मेरा अहो-भाग्य है। अब मेरे मन को कोई अपूर्ति नहीं रही। हाँ, आपने यह नहीं बताया कि, आप कौन हैं ?” आपने वदन-चद्र पर ऐसी ज्योति फूट रही है कि—

वे वाक्य पूरा कर भी नहीं पाये थे कि, शिवयोगी ने जटा मुकुट हटाकर अपना असली रूप दिखाया। पाथिव की आँखें विस्मय से जो खिली, सो सिली ही रह गयी—बद ही नहीं हुई। . .

जटाजूटधारी शिवयोगी ने अपने वचन की रक्षा की। छ ही साल के अंदर युवराज विजय के हृदय में देश-प्रेम, स्वाभिमान एवं स्वातन्त्र्य-साधना का जो बीज उन्होंने बोया, वह जैसे बट-वृक्ष की चरितार्थता करने लगा। एक दिन शिवयोगी से विजय ने कहा—“महाराज, मुझे आशीर्वाद दीजिये। आगामी भादों की पूर्णिमा के दिन, त्रिचिरा-

पल्ली के पहाड़ पर से पल्लवों की ध्वजा उतार कर, वहाँ मैं अपनी व्याघ्र-ध्वजा पहराने जा रहा हूँ।”

“मगर विजय, केवल पताका पहराना ही तो पर्याप्त नहीं है। उसकी रक्षा भी करनी है। उसकी भी तुमने कोई व्यवस्था की है, वेडा ?”

“महाराज ! चाचा मारण भूपति अब पहले-जैसे नहीं रहे। पूरे बदल गये हैं। चोल-देश की स्वतंत्रता के लिए वे अपने प्राण भी होम देंगे।”

सुनकर शिवयोगी मन-ही-मन मुस्कराये।

—४—

काची नगरी के राज-मार्ग से पल्लव-राजकुमारी कुदवि पालकी पर जा रही थी। अचानक उसने देखा कि, अपूर्व राज-लक्षणों से युक्त एक तेजस्वी युवक को लोहे की जजीरो से जकड़कर घोड़े की जीन से बाँधे पल्लव-सैनिक लिये जा रहे हैं।



पुरुष पुत्र राम
[चित्र दक्षिण के एक
शिल्प की रेखाचित्र]

ठीक उसी समय उस युवक ने भी राज-कुमारी की ओर देखा । बाल की यह अभिनधि ऐसी वचना छाड़ गयी कि, राज-कुमारी आत्म-विह्वल हो उठी ।

जब वह महल में पहुँची, तो सीधे अपने पिता के पास जाकर बोली—‘पिताजी, मैंने देखा कि, हमारे सिपाही किसी राज-कुमार का साबल में बाँध लिये जा रहे हैं । वह कौन है, पिताजी?’

‘वही चोल-राजकुमार है बटी, जिसने हमारे विरुद्ध बल्ल ठाका था । कोई जट्ट-जूटधारी शिवयोगी उसमें और उसकी माता ने बराबर मिलने आया करते हैं । पता चला है कि, उन्हीं के बहवावे में आकर विजय में यह उत्थान मनाया है ।’

‘उरेंदूर में युद्ध हुआ था, पिताजी?’

‘नहीं री । युद्ध क्यों होता भला ? नाममल्ल लड़का स्वयं ही घाँसे में आ गया । उसने चाचा ने अपने मिथ्या वचनों में उसे ललचाया कि, मैं वही मेला लेकर तुम्हारी मदद के लिए आऊँगा । पर उस दिन आता तो दूर रहा, उल्टे उसने हमारे गेनापति का विजय के इरादे की गुप्त खबर भंज दी ।’

राज-नर बुदबि का नाँद नहीं आयी । चोल-राजकुमार का शाह-गठल मुख बार-बार उसके मन-गटल पर अंकित होना रहा । दूसरे दिन सबेर उठते ही उसे यह खबर मिली कि, चक्रवर्ती नरसिंह वर्मा के सामने ही चोल-राजकुमार विजय ने कर देने में इनकार कर दिया है । इस घृष्टता

का दह यद्यपि भृत्य हैं, फिर भी उसकी अवस्था का खयाल कर चक्रवर्ती ने बाले पानी की सजा दी है ।

बुदबि का जरा सात्वता हुई । फिर भी द्वीपांतर के लिए प्रस्थान करने के पहले विजय का वह एक बार ओल-भर देस लेना चाहती थी । तत्काल उसने पालकी भंगवायी और मामल्लपुरम् के बदरगाह के लिए रवाना हो गयी । अतत बुदबि की इच्छा पूरी हुई । दोनों की औलं निमिष-मात्र के लिए एक-दूसरे की आत्मा का पीयूष-पान करती रही—जन्म-जन्म का नाना मानो फिर जीवित हो गया !

००० ००० ०००

बारहवें दिन राजकुमार विजय चम्पक द्वीप पर उतारा गया । वह द्वीप किसी जमाने में चोल-यशोम राजा के अधीन था । विजय को पारर चम्पक द्वीप के लाल बड़े ही प्रसन्न हुए ।

—५—

पल्लव-साम्राज्य के विरुद्ध जो पद्यत्र रचा गया था, उसका न्याय-विचार करने के लिए चक्रवर्ती नरसिंह वर्मा अपनी लाहली बेटी बुदबि के साथ उरेंदूर पधारें थे । पोथन और बल्लि भी राजा के सामने उपस्थित किये गये । चक्रवर्ती ने बढबने खर में पूछा—‘नायिक ! सब-अच बना । हमारे साम्राज्य के विरुद्ध विजय की पद्यत्र के लिए किराने उभाठा है ?’

पोथन ने निर्भयता से अपना गिर उँचा उठाया और बहू—‘महाराज ! आपके

सामने थे जो मारण भूपति राखे हैं, इन्हीं ने।”

पोन्नन् वा यह अभियोग सुना, तो मारण भूपति ऐसा तिलमिलाया, मानो दस हजार शिष्टुओं ने उस पर एक साथ ही डक मार दिया हो।

“क्यों भूपति ! मेरे पास इसका क्या उत्तर है ?” महाराज ने आग्नेय नेत्रों में देखते हुए प्रश्न किया।

‘प्रभु ! विक्रम को इस दासानुदास ने नहीं—एक जटामुबुटधारी शिवयोगी ने उभाड़ा है। सत्य में, वे शिवयोगी नहीं हैं। शिवयोगी के देव में बषटी पडवन्नरारी हैं। युवराज विजय और महारानी अरळ-मोळि से उनकी भेट होती रही है। पद्वयन का केश इनी नाविक की बुटिया है।’

शुनवर बल्लि से चुप न रहा गया—
“महाराज ! इनका कहना झूठ है। शिव-योगी एक महान् आत्मा है। वे राग-द्वेष, माया भस्तर सबसे मुक्त हैं। हमारी महारानी अब तक जीवित है, तो उन्हीं की सात्वना से। मैं अच्छी तरह जानती हूँ कि, उन्होंने युवराज को सदैव ही विद्रोही कृत्यों से रोसा है। अतः उन पवित्रात्मा पर जो अभियोग लगाते हैं, वे स्वयं कपटी हैं—पापी हैं।”

महाराज ने कहा—“भूपति ! तुम पर से मेरा सदेह रती भर भी हटा नहीं। फिर भी इस बार तुम्हें क्षमा कर देता हूँ। सेनापति बाना चाहो, तो अपनी योग्यता का परिचय दो पहले।”

उसने वाद पोन्नन् की ओर दृष्टि तरेर

कर महाराज ने कहा—“नाविक ! अब तू भी अपनी स्त्री-साहित चला जा। हाँ, एक बात—अपनी स्त्री से कहना कि, जटाजूट-धारी शिवयोगी महाराज के विषय में वह अधिक सावधानी बरखे।”

—६—

उपर्युक्त प्रसंग से मारण भूपति का मन बहुत खिन्न हो गया। उसने पल्लव-साम्राज्य की श्री-वृद्धि के लिए क्या-क्या नहीं किया ? छठ साल पहले, पार्थिवमहाराज ने पल्लवों के साथ जो युद्ध ठाना था, उसमें उसने पार्थिव का साथ नहीं दिया था। तदुपरांत विक्रम के पद्वयन को फोडकर भी उसने पल्लव-साम्राज्य को आनेवाली विपत्ति से बचाया था।

यह सब क्यों किया था उसने ? इसी-लिए न कि, चोल-राज्य की गद्दी उसे ही मिले। पर चक्रवर्ती ने तो उसी के सिर दोष भड़ना शुरू कर दिया है। इतना ही नहीं, एक नाविक और नाविक-भत्ती के सम्मुख, उसका अपमान भी कर दिया।

आज्ञा निराशाओं के इसी ताने-बाने में उलझा अश्वारूढ़ भूपति जा रहा था कि, सामने से डी राज-परिवार की पालकी आती दृष्टिगोचर हुई। वह सट घोड़े से नीचे उतर पड़ा।

पालकी ने अदर से पल्लव-राजकुमारी ने कोमल स्वर में कहा—‘भूपति ! पिताजी ने आज तुम्हारे साथ जो बड़ा व्यवहार किया है, उसके लिए खिन्न न होना। उस बषटी शिवयोगी को तुम किसी तरह

परडवा दो, तो पिताजी प्रगप्त हो जायेंगे।”

राजकुमारी के इन वचनों ने मारण भूपति की आशाएँ फिर हरी हो गयीं। उसने भयमक्लिपूर्ण उल्हास के साथ कहा—
“देवि ! विदवास करे, उस कपट-वेषधारी साधू को पकड़कर ही मैं दम लूँगा।”

००० ००० ०००

अर्ध निद्रा के घोर भ्रष्टाटे में एक नाव खाँदरी के प्रवाह में बहती जा रही थी। उसमें नाविक पात्रन् और उसकी स्त्री बलिह दोनो बैठे थे। ‘एव भरामो, एव बन्, एव आम-विदवास’ यात्रा मारण भूपति ने उसे देख लिया और चुपके से पीछा करना शुरू कर दिया।

घोड़ी दूर जाने पर नाव लड़ी हुई और नाविक-दम्पति उसमें से उगरे। पास ही महल का पिछवाड़ा था। पात्रन् ने चाबियों का एक गुच्छा निकालकर दरवाजा खोला और बलिह के साथ अंदर चला गया।

मारण भूपति ने सोचा कि, हो-न-हो, आज कोई पदचक्र होने जा रहा है। पात्रन् और बलिह इन्हींलिए इस समय वहाँ जा रहे हैं। निश्चय ही शिवयोगी भी वही रहेंगे। इस गर्दन के लाम उड़ाया जाये, तो तीनों पक्षी एक साथ पंख जायेंगे। यह विचार कर उगने पट से विवाह की चटखनी बाहर में लगा दी और महापत्नी के लिए आदमी बुला लाने लगा गया।

किन्तु मारण भूपति का विचार भग्न निकल। उसके जहाँ ही शिवयोगी दूसरी ओर से वही आये और चटखनी मोखर

नयनीत

एक पेड़ की आड़ में जा छिपे। घोंडो देर बाद पात्रन् और बलिह बाहर आये। पात्रन् के हाथ में एक पेटो थी। यह वही पेटो थी, जिसके अंदर चोल-बन की अमूल्य निधि, तलवार और ‘निग्रागुरल’ की पोथी थी।

पात्रन् बलिह के साथ अपनी नाव में जा बैठा तो देखना क्या है कि, मशाल की रोशनी जिस कुछ आदमी उमाँ और आ रहे हैं। उसकी वह म एक कंधेपों दीड़ गयी। उसके मन का एक प्रचार के भय ने आकर घर दबावा-इस पवित्र अमानत के साथ अगर हम पकड़े गये, तो ? तबिन उमाँ समय पट की आड़ में शिवयोगी बाहर आय और पात्रन् ने बोले—“पात्रन्, यह नाव-विचार का समय नहीं है। यह पेटो मेरे हाथ में दे दो। मैं इसकी बड़ी सावधानी से रखा कर लुम्हे मौप दूँगा।”

पात्रन् क्षणभर तो हिचका, मगर फिर निश्चय हो वह पेटो साधू के हाथ में रख दी।

पात्रन् आये दो डाढ़ भी न मार पाया था कि, मारण भूपति अपने आदमियों के साथ आ घमका। मारण भूपति ने नाव की तलाशी ली। पर कुछ भी जब हाथ न लगा, तो लज्जा में मानो गढ़ गया।

—७—

शिव-जला की मीर्यतम नगरी आम-लुण्णुरम् में प्रति वर्ष की तरह दस वर्ष भी बग-प्रदक्षिनी हो रही थी। जनता के उल्हास और आनंद की कोई भीमा नहीं। बग-प्रदक्षिनी देखने दूर-दूर से लोग आये थे। एक विदेशी जोहरी भी आया था, जो

एक-एक चीज को मग्न मुग्ध-सा देखता हुआ आगे बढ़ रहा था। उसके एक बौना नौकर था, जो केवल कानों का बहरा ही ही नहीं, मूक भी लगता था।

इतने में पीछे से कोई बोलाहल सुनायी दिया, तो जोहरी ने मुड़कर देखा। एक पालकी आ रही थी। यद्यपि उसने आँख उठाकर नहीं देखा, तथापि अनुभव किया कि, दो काली-कज्ररारी आँखें उसे देख रही हैं। इच्छा हुई कि, उसे देखें। पर मन-की-मन ही में रखने का प्रयत्न किया।

इसी समय मारण्य भूपति वहाँ आया और जोहरी से पूछा बैठ—‘अजो महाशय! मार्ग में खड़े खड़े क्या देख रहे हैं?’

जोहरी अपने को सँभालकर जवाब दे भी नहीं पाया था कि, भूपति प्रश्नों की झड़ी बरसाने लग गया—‘आप कौन हैं? किस देश के हैं? क्या नाम है? इस देश में क्यों आये हैं?’

“अगर आप जानना ही चाहते हैं, तो सुनिये। मेरा नाम देवसेन है। मैं जोहरी हूँ। रत्न-व्यापार के लिए आया हूँ।”

“ओहो! मह बात है? अच्छा, आप किस देश के निवासी हैं?”

“अरे! आप

तो इतने सवाल करते हैं, पर यह नहीं बताते कि, आप कौन हैं?”

व्यापारी की ये बातें सुनकर मारण्य भूपति ठठाकर हँसा। फिर बोला—“क्या आप यह नहीं जानते कि, मैं कौन हूँ? मैं हूँ स्वर्गीय पाण्डव महाराज का भाई और चोल-राज्य का सेनापति।”

जोहरी ने मारण्य भूपति को सिर-से-सिर तक देखा और कहा—‘क्या कहा?’ आप उन पाण्डव महाराज के भाई हैं, जिनके सुपुत्र इन दिनों हमारे चम्पक द्वीप में राज-काज कर रहे हैं?”

मारण्य भूपति के मुख पर विस्मय की रेखा खिच गयी। फिर भी अपने को सँभालकर बोला—‘आपने कहा कि, विक्रम आपके देश के राजा है? क्या उनको यह बात मालूम है कि, उनकी माँ अकूठ-भाळि पर क्या बीती है?’

मारण्य भूपति ने इस प्रश्न से जिस

(रत्न-ताटव)



बाव की आवाज की थी, वह खिड़ खुई। जिम जोहरी के चेहरे पर अब तक कोई भाव-रन्ध्रन नही हुआ था, वह वह बात सुनकर तड़प गया और अचानक भयभीत होकर फूटने स्वर में पूछ बैठा—“रानी अष्टमोलि को क्या हुआ?”

मारण भूपति ने होठों पर एक कुटिल हँसी खेद गयी। इतने में अचानक ही का जुलूम निबट आ गया, ता मारण भूपति जोहरी को बहो अनेले छोड़कर बिना कुछ जवाब दिये आगे बढ़ गया।

— ८ —

वह जोहरी और कोई नहीं था, निर्वासित राजकुमार विजय ही था। निर्वासित होने पर अपने निर्जी वेप में आना मनरे मे छाला न था, इसीलिए वह जोहरी के वेप में आया था।

उमे चम्पक द्वीप में गये तीन वर्ष हो गये थे। उसने वहाँ पर राज-काज ऐसा सौमाला कि, चारों दिशाओं में चम्पक द्वीप का नाम हो गया। फिर भी इन तीन वर्षों में उमका एक दिन ऐसा नहीं गया कि, माना और मानूभूमि के स्मरण में उसकी आँखें मजल न ही गयी हों। माना और मानूभूमि की उम ममता के साथ पन्डव-राजकुमारी के प्रणय-भाग्रिधय की लालसा भी निर्बल नहीं थी।

माना अष्टमोलि के सम्बन्ध में मारण भूपति ने जो मर्ममयी बातें कही थी, उमे सुनकर विजय के मन को बड़ी पीडा पहुँची। अगर उमने पस होने, तो वह उमी राण

उरंगूर उडकर चला जाता।

आवेश-प्रताडित-सा वह धर्मदाला में गया और बौने के साथ उरंगूर के लिए रवाना हो गया। राजमहलों में पला राज-कुमार भय पंदल-मार्ग क्या जाने? अतः बौने को ही मार्ग-प्रदर्शक बना कर वह उससे पीछे-पीछे चलने लगा।

भटकात-भटकाते वह बौना उमे एक घने जंगल में ले गया। गूरज दूध चुका था और अचकार का साम्राज्य स्थापित हो रहा था। इसी समय बहुत दूर पर घोंडे की घाप मुनायी दी। बौना चौकचाहोंतर मुनने लगा। विजय को अनुरज हुआ कि, यह मूक-अधिर कौन दूर का यह अस्पष्ट स्वर मुनता है? उमे निश्चय हो गया कि, मेरे साथ बिश्वासपात्र हुआ है। अतः एक ही आवेश में बटार निकाल पर बौने के बाल पकड़ लिये—“बोल, सब बोल! तूने यह मूक-अधिर का स्वाद क्यों रचा है?”

बौना ठहाका मारकर जोर से हँसा तथा अपने दोनों हाथों को मुँह के पास ले जाकर एक विचित्र-मे स्वर में सीटी बजायी।

तत्काल ही चार आदमी जंगल से बाहर निकल कर आ गये। विन्तु साक्षात् विपत्ति को सामने देखकर भी विजय का मन भयभीत नहीं हुआ। उन्मत्त हाथियों के मध्य होने पर भी वहाँ मिह-भाव्य डरना है? कुछ ही क्षणों के अंदर उमने दो व्यक्तियों को जमीर पर मुग्न दिया। दूसरे क्षण वह बौना भी पायल हो चूमि पर गिर गया। लेकिन यह क्या? दूर पर कोई फुट-

सवार घोड़ा दोड़ाता हुआ था रहा था। अब विक्रम को निश्चय हो गया कि, आज जान की खंर नहीं। विन्तु इस विचार से वह हतात्ताह न हो सका। दूने उत्ताह से उसने तीसरे आदमी को भी पीत के घाट उतार दिया और चौथे को भी भालने के लिए ज्योंही मुड़ा, तो क्या देखता है कि, चौथे का सिर धड़ से बट कर जमीन पर तड़प रहा है।

कि म बिस्मयाभिभूत जड़वत् खड़ा रहा। घुड़सवार ने पूछा—“आप कौन हैं ? इतनी अधेरी रात में कहीं जा रहे हैं ?”

“मैं एक व्यापारी हूँ। इस मार्ग से उरैपूर जा रहा था। बीच में इस विपत्ति का सामना करना पड़ गया। आप अच्छे समय पर आ गये, नहीं तो—”

“नहीं तो क्या ? आप तो स्वयं ही यड़े बीर हैं ? हाँ पर यह कहिये, आप किस देश से आ रहे हैं ?”

“मैं चम्पक द्वीप से आ रहा हूँ।”

“चम्पक द्वीप से ? अच्छा ! आप तो व्यापार के लिए आये हैं ? उरैपूर जाने की ऐसी कौन-सी आवश्यकता पड़ गयी ?”

“वह तो बताऊँगा ही, लेकिन आप पहले यह बताइये कि, आप कौन हैं ?”

“मैं चन्द्रवर्ती नरेश का एक अधिकारी

सबक हूँ—यहाँ के गुप्तावर विभाग का प्रधान। गुप्ते खबर मिली कि, आप इस रास्ते से अकेले जा रहे हैं। आप पर कोई विपत्ति न आ जाय—नाची-नरेश की आदर्श राज्य-व्यवस्था के बारे में आप अन्यथा न सोचत उम जायें—अतः आपकी सहायता करने के विचार से मैंने पीछा किया था।”

‘आश्चर्य है ! छोटी देर

पहले मैं भी यही सोच रहा था कि, नाची-नरेश का शासन कितना निर्बल है ? उनकी सीमा में अकेला आदमी निर्भय होकर विचार भी नहीं पाता। हाँ, आपने एक और सहायता की आशा रख सक्ता है ?’

‘उरैपूर जाने का प्रबंध मैं करूँ, यही न ? आप भी कुशल व्यापारी हैं, भाई ! चिन्ता न कीजिये। मैं घोड़ा दूँगा। आप बल सदेर यहाँ से उरैपूर के लिए रवाना हो सकते हैं। पास ही शिल्प मंडप है। चलिये, आज रात को यहाँ आराम कीजिये।’

— ९ —



नृत्य

[चित्र श्वेत चारवाह]

मामलपुरम् की बला प्रदर्शनी से लौटकर कुदवि और सुवराज महेंद्र नाची-पुरम् के महल में लौट आये। कुदवि अपने अंतःपुर में गयी, तो देखा कि, उसने पिता के आसन पर कोई अनजान पुरुष बैठा है। उसकी इस घृष्टता को देख उमे आश्चर्य

भी हुआ और शोध भी आया।

“कौन हो तुम ? किसकी आज्ञा से महल में चले आये ?” कुदवि ने शोध पूछा।

“देवि ! मैं पल्लव-साम्राज्य का प्रधान जासूस हूँ। मेरा नाम वीरसेन है।”

कुदवि पास दौड़ी हुई गयी और अगले ही क्षण कुदवि के हाथ में जासूसों के प्रधान की तपली में छ और दाढ़ी भी तथा जासूसों के प्रधान की जगह पर विराजमान बड़े-चक्रवर्ती नरसिंह वर्मा !

“पिताजी !”

“आश्चर्य न करो बेटा, बेप-परिवर्तन की विद्या में परम निपुण हूँ मैं। इसी विद्या के बल पर तो बल रात को मैं एक जौहरी की शरणरक्षा कर सका। आधी रात में वह उरंगूर जा रहा था।”

“पिताजी ! वह जौहरी काशी में न आकर उरंगूर क्यों चला गया ? वहाँ तो महल में कोई है नहीं ?” कुदवि ने जौहरी की शान में उल्लुखता दिगायी।

“महल में कोई नहीं हो, तो क्या हुआ ? उगरी भी जो उरंगूर में है। उन्ही को देखाने वह जा रहा है।”

कुदवि के मन में निमित्त-आत्र के लिए यह विचार बाँध गया कि, वह जौहरी हो-न-हो राजकुमार किन्नर ही है।

“पिताजी काशी और मामलपुरम् के निकट ही एक विदेशी व्यापारी पर कोई हाथ चलाये और लूट-मार करे, तो शासन-व्यवस्था पर बड़ा न रुकेगा ?”

“हाँ, मैंने भी सुन्हागे तरह पहले यही

नबनीत

सोचा था कि, वे चोर हैं। पर पीछे मालूम हुआ कि, मामला उससे भी अधिक भयंकर है।”

“क्या ?”

“ऐसे राजलक्षणों से युक्त पुष्प नर-बलि देनेवालों के हाथ बिरले ही लगते हैं !” महाराज ने बिना कुदवि की ओर देखे, वाक्य पूरा किया।

“हाथ ! कुदवि चीख उठी—“हमारे देश में क्या अब भी यह भयंकर प्रथा चली आ रही है ?”

“हाँ, कुदवि ! इस भयंकर अभिविश्वास को जट से उखाड़ फेंकने का मैं प्रयत्न करता ही रहता हूँ, पर अभी तक सफलता प्राप्त नहीं हुई।”

“आप समय पर वहाँ नहीं पहुँचते, तो . . .” कुदवि सिहर उठी।

“उस बीने आदमी पर मुझे पहले ही से शक था कि, वह कापालिकों के हाथ का कठपुतला है। मेरा वह सदेह सत्य निकला।” महाराज ने आघोषात गया गुनाकर कहा कि, घोड़े पर जौहरी को उरंगूर भेज भी दिया है।

कुदवि के मस्तिष्क ने इतना सुनते ही जल्दी से काम किया। उसने कहा—
“पिताजी, माई ने अभी तक उरंगूर नहीं देखा है। हम दोनों उरंगूर जाने की सोच रहे हैं—आप अनुमति दें तो।”

—१०—

गृष्टि की नाट्यमाला का यह सत्य भी कितना बुरा है—“विपत्ति सदैव कुनवे

के साथ ही आती है। ”

जासुतो ने प्रधान से घोड़ा लेकर विक्रम न सीधे उरेंदूर का रास्ता पकड़ा। खाना-पीना, सोना-जामना—वह सब-कुछ भूल गया। उसके मन में सिर्फ एक ही विचार था। वह था, उरेंदूर जाकर महारानी से मिलना, लेकिन सध्या के समय अकस्मात् मूसलाधार वर्षा शुरू हो गयी। रास्ते में एक जवली नदी पड़ती थी। उसे पार करने के लिए घोड़ा उतारा था कि, एकाएक नदी में बाढ़ आ गयी। घोड़ा पानी के अवश्य प्रवाह में बहने लगा, तो विक्रम घोड़े पर से कूद पड़ा और परिपूर्ण शक्ति के साथ पानी के वेग को घीर कर तैरने लगा। मगर साहस भी एक सीमा तक ही साथ देता है।



पौख

[चित्र श्री प्रतिवाती]

थकान और नैराश्य से निष्प्राण-सा वह वहीं जल में अचेत हो गया।

जब होश आया, तो वह किनारे पर के 'महेन्द्रगढ़' में था और उसके पास खड़ा था नाविक पोन्नू। विक्रम ने उसे देखते ही पूछा—“महारानी कौसी हैं ?”

महारानी का नाम सुनते ही पोन्नू ने अपनी धौलें फेर ली और दुस्सावेग में वह मुस्क पड़ा।

विक्रम का कलेजा दहल गया। अत्यंत

आर्त स्वर में उसने पूछा—“महारानी पर कौन-सी विपत्ति आ पड़ी, पोन्नू ? क्या वे जीवित नहीं हैं ?”

“नहीं, महाराज ! महारानी जीवित हैं पर मालूम नहीं कि, वे कहाँ हैं।”

००० ००० ०००

“बसत महल” के एकांतवास में महारानी अपार बेदना अनुभव कर रही थी। इसी समय पार्थिव महाराज के परममित्र और पल्लव-साम्राज्य के भूतपूर्व सेनापति परज्योति अपनी धर्मपत्नी-सहित तीर्थाटन के लिए चले, तो महारानी से मिलने आये। महारानी भी अपना दुःख भूलने और तीर्थाटन करने उनके साथ हो ली।

“दो वर्ष का तीर्थाटन समाप्त कर परज्योति अपने निवासस्थान ‘तिरुच्चे-

काट्टान् कुडि’ को वापस आये। उस दिन पूस की अभावस्था थी। पूर्ण सूर्य-ग्रहण भी लगनेवाला था। इसलिए कावेरी-संगम में पर्व-स्नान करने देश के चारों ओर से लोग आये थे।

“रानी पूर्वाभिमुख होकर ध्यान कर रही थी कि, एकाएक चिल्ला उठी—‘बेटा विक्रम ! जमी चली आयो !’ इतना बहकर समुद्र की उताल तरंगों में कूद पड़ी। भेने और परज्योति ने

सारा समुद्र छान डाला। पर वे नहीं मिली। इतने में परज्योति की धर्मपत्नी और बलि दोनों ने धोखेवर कहा कि, वह देखिये, रानी को एक हाथ वाला एक आदमी बंधे पर लिये जा रहा है। अतः हमने उस अपार जन-समुद्र में भी महारानी को बहुत खोजा, पर सफलता वहाँ भी नहीं मिली।

“कुछ दिन पश्चात्, शिवयोगी मुझसे मिले। उन्होंने मुझे बताया—‘महारानी जीवित जरूर है। पर वहाँ है—वही मालूम करना है। इन प्रदेश में बपाल रत्न भैरव नाम का एक व्यक्ति है, जिसका एक हाथ बटा है। वह नापालियों का सरदार है। तमिल प्रदेश में नर-बलि की भयंकर परम्परा को फेंकने का सूत्रधार वह वही कर रहा है। वह किसी तरह पकड़ में आ जाये, तो महारानी मिल जायेंगी।’

“मैंने यह कार्य अपने हाथ में लिया है और संप्रज्ञा भी प्राप्त की है। अभी चार-पाँच दिन पहले ही कोल्लिमल के इसी प्रदेश में मैंने अपना आँगन से उस भयंकर रूपवाले हाथ-बटे बपाल रत्न भैरव को देखा है। उसके माथे माथे की तरह एक बीजा भी रहता है।’

००० ००० ०००

पोन्नू यह वृत्तांत सुना ही रहा था कि, बाहर बिर्गा के बोलने की आवाज आयी। पोन्नू ने अत्यंत सतर्कता से झोंक कर देखा, तो मठ के बाहर मारण भूपति और

रत्न भैरव खड़े थे।

“प्रभु! भाता की क्या आज्ञा है?” मारण भूपति ने अत्यंत विनम्र होकर पूछा।

बपाल रत्न भैरव ने अपने वर्णन स्वर में कहा—“माता रणबडी तुम पर प्रसन्न है। तुम्हें बड़े-बड़े पदों पर बैठाने जा रही है। पर माता बड़ी प्यासी है। वह राजपत्र का रक्त चाहती है।”

“मैंने प्रयत्न किया था, प्रभु! मुनहला मदर्म हाथ से निबल गया। मेरा वह पक्ष्य नरपर नहीं हुआ।”

“अब भी कोई घटी देर नहीं हुई। प्रयत्न करो, बेटा! प्रयत्न करो। माता तुम्हें चोल-राज्य का सिंहासन देगी। पहले, पाण्डव के पुत्र को पकड़ लाओ। फिर उस विभूति-स्त्रासधारी शिवयोगी को बलि बढ़ाने के लिए परख लाओ। माता तुम पर प्रसन्न हो गयी, तो नारे पल्लव-नागाज्य के अधिपति बन जाओगे।”

“प्रभु! आपने तो कहा था कि, माता राजपत्र का रक्त चाहती है। फिर उस शिवयोगी को परखने में क्या लाभ होगा?”

“भूपति! तुम नहीं जानते, वह शिवयोगी कौन है?”

इतने में मारण भूपति के आसामी आँत दिमागी दिये। मारण ने कहा—“प्रभु, मेरे आदमी आ गये हैं। आज्ञा निरोपार्थ करूँगा और माता की इच्छा पूरी करूँगा।”

मुचक्रियों की ओर जाने मुनकर विनम्र की ऐसा शोध आया कि, अम्बामवन उगका हाथ तन्दवार के लिए बभर पर गया



“दिनभर महकनेवाली
भीनी-भीनी सुगन्ध

के लिए **जय** नहाने का
साबुन

इस्तेमाल कीजिए।”

—संख्या धीरे धीरे बढ़ते हैं।
ये दोनों कलाकार शान्तिमान की प्रिय
मनक मनक पाकल यजे में काम करने हैं।

टाटा प्रोडक्ट्स लिमिटेड

11 141

A
TATA
PRODUCT

पूर्णतया स्वदेशी
उत्पादन



दिवाली



दिवाली के त्यौहार पर मंगिहारे २४
विशेष परब्रत और विद्यावती नेवार
बराती हैं। वे विभिन्न समयों पर दिवाली
रखाना पचाने के लिए बालक बन
रखते हैं। काम में लागी हैं क्योंकि
यह पत्र खाँ होता है और उन्हें
भरोसा है कि यह लावा, हठ और
गच्छाएँ न परिपूर्ण होता है। और
बालक स्वास्थ्यवारी दिवालीन प वा
जना ही चम्पदा जिरा है जिना कि की।
मनभारी से काम लीजिए और यह न
भूलिए कि बालक आप के लिए अर्पण है।



बालडा

का

वनस्पति



मुफ्त

विभिन्न अर्थों के लिए फल-विधियों
विशेषों पर मंगिहारे पचाने के जिने
ज्यागी मुक्तों से पूरे हम छोटे-नी
पुस्तिका के लिए धारा २१ लिखिए-

श्री बालडा एडवाइजरी सर्विस
पेज नंबर ३५३, पृष्ठ ३



मगर दूसरे ही क्षण उसे भान हुआ कि, उसकी तलवार तो नदी के प्रवाह में बह गयी है। अतः उसने बड़ी आतुर वेदना के साथ कहा—“पोन्नू ! मेरे दुर्भाग्य की भी सीमा नहीं। जिस घोड़े पर आया था, वह वाद में बह गया। मेरे पास रत्नो का जो पैला था, वह भी वहीं लुप्त हो गया और अब देखता हूँ कि, मेरी तलवार भी नदी में डूब गयी है।”

“महाराज ! महारानी तीर्यटन के लिए जय चलने लगी, तो आपको देने के लिए मेरे हाथ में एव पेटी दे गयी थी।”

“उस पेटी में क्या है, पोन्नू ?”

“आपके कुल की तलवार है। उसकी मूठ रत्न-जडित है।”

“सच ? तो वह तलवार मेरे मजेय पूर्वजों की निशानी है। उसी के प्रताप से समुद्र-पार के देशों में चोल-रानाजों की धाक जमी थी। उसी तलवार का उपयोग हमारे बस के मशस्वी पूर्वज बरिक्काल चोळ ने किया था। उसे सुरक्षित रखा है न ?”

“हाँ, स्वामी।”

“वहाँ पर ?”

“‘वसत द्वीप’ में।”

“तो हमें ‘वसत द्वीप’ में चलेकर अस्ती ही वह तलवार ले लेनी है।”

लेकिन दूसरे दिन पूर्व-निश्चय के अनुसार वे उरंगूर के लिए रवाना नहीं हो सके। बारण, विजय की कड़ा ज्वर चढ़ आया। पोन्नू ने सभी सम्भव उपचार कर देख लिये। लेकिन ज्वर न उतरा, तो वह सोच

में पड़ गया और पास के किसी गोय से, बेंच बुलाने के लिए चला गया।

इसी बीच उसका बुझार और भी तेज हो गया। वह होश खो बैठा और “मौ, मौ।” कहकर सन्निपात में चिल्लाने लगा।

कुदवि और कुमार महेंद्र, महाराज की अनुमति मिलते ही उरंगूर के लिए रवाना हो गये थे। कुमार घोड़ पर था—कुदवि पालकी में। दोनों जब उस मठ के निचट से गुजर रहे थे, तब वही से आर्त स्वर सुनायी दिया। कुदवि ने पालकी रोकी और आई से कहा—“भैया ! सुनते हो, किसी के कराहने की आवाज आ रही है।”

महेंद्र ने कहा—“हाँ, कोई ‘मौ, मौ।’ पुकार रहा है। मालूम होता है, उस मठ से ही आवाज आ रही है।”

दोनों मठ में गये। देखा, तो विजय पड़ा-पड़ा कराह रहा था। राजकुमारी कुदवि ने कहा—“भैया, यह वही जौहरी है। शरीर से एकदम अस्वस्थ है। कोई हमारे वैद्यजी को तो बुलाये।”

प्रथम चिकित्सा के बाद विजय कुदवि की पालकी पर लिटा दिया गया। कुदवि एक घोड़े पर चढ़ गयी।

जब पोन्नू बेंच के साथ मठ में वापस आया, तो मठ एवदम सूना था। पोन्नू की चेतना पर मानो बग़ गिर पड़ा। पोन्नू ने सारा प्रदेश छान डाला।

भटकते भटकते पोन्नू परातंगुर में पहुँचा। वहाँ एक धार्मिकाने के पुँघले प्रवास में खड़ी दो सज्जिमें बात कर रही थी—

"राजकुमारी कुदवि ने जौहरी को मंडप में कराहता पाया, तो अपने साथ उठा लायी हैं।" पोन्नन् ने जगले के निकट जाकर देखा, तो एक खेंब में विप्रम लेटा था और उसकी मुचार मेवा-मुथ्या हो रही थी।

—११—

शिवयोगी से मिलकर पान्नन् 'वसंत द्वीप' की ओर बढ़ा। 'वसंत द्वीप' की भूमि पर उसने देर ग्या होया कि, विप्रम न उसका स्वागत किया। पान्नन् ने विछुड़ने से क्षेपण मिल-मंडप में शिवयोगी से मिलने तक की सारी बातें वह मुनायी।

विप्रम का विस्मय हुआ। उसी महण में ता वह जामूनों के प्रधान के साथ ठहराया। वह बोला—"पोन्नन्, मुझे एक बड़ी आगका हो रही है।"

"क्या, महाराज?"

"जामूनों के प्रधान ही नहीं शिवयोगी तो नहीं हैं?"

"हो, महाराज।"

"तब तो... वे जानते हैं कि, मैं कौन हूँ! वही मुझे पकड़ा दें, तो?"

"वे सभी आपका पकड़वायेंगे नहीं। रमशेन में आपके पिता को वे बचन दे चुके हैं। परन्तु...."

"परन्तु क्या?"

"मारण भूपति अवसर की ताक में है। उसके द्वारा आप पर विपत्ति आनेकी आशंका है। हमें यहाँ से चले जाना चाहिए।"

"मैं तो प्रस्तुत हूँ।"

"थोड़ा दूरिसे, तो महागनी द्वारा

दो हुई पेटो उठा लाऊँ।"

तलवार को पाने ही विप्रम में नया उत्साह भर आया। उसके मुख पर अभूत-पूर्व तेजस्विता बिराजने लगी। महाराज का मुखमंडल देख पोन्नन् आनंद-विभोर हो गया।

दोनों छोटकर आये, तो नाव नहीं दिसा।

दो। पान्नन् नाव को खोज करने चला। सभी भाड़ी के पत्तों के हिलने का शब्द सुनायी दिया। विप्रम ने मुड़कर देखा, तो कुदवि लड़ी थी। दोनों थोड़ी देर के लिए निर्निमेष नेत्रों में एक-दूसरे को देख रहे थे।

कुदवि में ही मौन तोड़ा—"क्या यहाँ चार-दशवासियों की सम्मति है? बिना बिदा लिखे चल देना।"

इनने मंदूर में चार नावे आती दिनायी दी। पोन्नन् दीना हुआ आया। विप्रम ने कहा—"पोन्नन्! उठाओ, तलवार।"

"नहीं, महाराज। अभी हम लड़ेंगे, तो सारा करा-कराया स्वाहा हो जायेगा। क्या आप अपने पूर्वजों की वीर मलवार से अपनी ही प्रजा का मौन के लिए उतारेंगे?"

इस समय तक नावे बिनादे लग गयी थी। मारण भूपति नाव से बूदकर कुदवि देवी के पास आया और अत्यंत विनम्र के साथ बोला—"देवी, आपकी अनुमति के बिना यहाँ आने के लिए यमा चाहता हूँ। धन्यता की आज्ञा का पापन करने के लिए ही यहाँ आया हूँ मैं।"

कुदवि ने छाल-मीनी हारर पूछा—

"किसकी आज्ञा?"

"आपके माई मुखराज महेंद्र की आज्ञा।

भगवद्दीप से ओं जागृत आया है, उसे
पराङ्मुख बाँधी भेजने का मुझे आदेश
मिला है।”

“भगवद्दीप का जागृत कौन है?”

“महाराजने जो कहा है, वही।”

“महो, ये जागृत नहीं हैं। आप सीट पर
जा बैठते हैं।”

“देवी, अगर यह जागृत नहीं है, तो
और कौन है?” मारण भूपति ने खानपट्टी
विषय में पूछा।

“भूपति! अपने न। सँभालकर व्यस्त
करो। जानत हो, विगमे बाध कर रहा हो?
अपने को भूल न जाओ।” गुरुदेव की
औलों से आग धरम गयी।

“नहीं देवी! मैं अपने को नहीं भूल
हूँ। यह जो कहा है, दशना मुख मेरा परि-
चित है—बार-बार देखा हुआ है। राजाभि-
राज गुरुदेव गुरुदेवों से दूरे देव-निवास
का दृष्टि दिया था। वह जागृत नहीं है, तो
निर्वासित अवश्य है। निर्वासित यदि धिना
अनुमति ने लौट आये, तो उसने सिन्धु
नया दृष्टि-विधान है—आपने लिखा नहीं है।
देवी, मुझे अपना नर्सन करके दीजिये।”

—१२—

आधी रात में समय गोपन्तु कूटी से
निराला होड़ी दूर गया, तो दो आद-
मियों को शारदा में मंदिर की तरफ जाते
हुए देखा। एक बीता था और दूसरा मारण
भूपति। गोपन्तु ने उगता पीछा किया।

शारदा के मंदिर में बगल दूर भँवर
मारण भूपति की राह देना रहे थे। मारण

भूपति को देखते ही उन्होंने पूछा—“शार-
दा, माता का हृदय भजा लाये?”

“महाप्रभु, बलि गुरुदेव है।”

“साधक्यों नहीं लाये?”

“बाज ही नाम का गुरुदेव विजय को
पराङ्मुख है। अभी यहाँ गते, तो अनेक
प्रकार के संयोगों को अंतर मिल जाता।”

बगल भरत गुरुदेवों की हँसना
बोले—“शारदा, बाकी माता की आज्ञा
का पालन करने में इच्छा है?”

नही, प्रभु! मैं तो दृष्टि-दृष्टि करती
हूँ। माता का पालन में विघ्न न पड़े।
अमात्यता की रात रात बलि को लाने
आये दृष्टि सीप देखा।”

अमात्यता के दिन रात में प्रथम प्रदूर
में पड़े पहले के साथ विषय की बाड़ी
ऊँची ही गुरुदेवों को पार हुई, यों ही
‘ओम् नाली! जय बाती’ का जयघोष
सुना और बीच गुरुदेव व्यक्तियों में विषय
की बाड़ी को घेर लिया। उरंघुर ने धीरे
धीरे उस तरफ देखे धिना ही चलते पंख
आव गये। गोपन्तु ने बाड़ी में पीछे से आकर
विषय को बगल-मुखा किया और दूसरे
ही क्षण विषय और गोपन्तु गोपे पर सवार
होकर ‘गुरुदेव’ के रास्ते में माता-
गुरु के लिए रवाना हो गये।

‘गुरुदेव’ के द्वार पर गुरुदेव लिये
कुछ आदमी पड़े थे। एक में गुरुदेव पर
कहा—“गोपन्तु! उरंघुर की महाराजगी
मिल गयी। गुरुदेव ने बदर है।”

यस, दूसरे ही क्षण ‘गुरुदेव’ पिल्लाता हुआ

हुआ विश्रम घोंडे से कूद पड़ा और अंदर जाकर माता के चरणों में गिर पड़ा। माता ने सिर पर हाथ फेरकर बेटे को आशीर्वाद दिया और उसे बताया कि, शिवयोगी महाराज की मदद से वे बंते कपाल भैरव के हाथ से बचें।

उसी रात वह बीना, जो एक कोने में बंधा पड़ा था, जोर से 'ही-ही-ही' कर हँस उठा—“आज आधी रात को बपटी शिवयोगी भी बलिदेदी पर बढ़ाया जायेगा।”

सुनकर विश्रम की रों फडर उठी। यह तत्व ही तलवार लोच और मौ का आशीर्ष के उस परोपकारी शिवयोगी की सहायता के लिए निबल पड़ा।

—१३—

गहानपाल भैरव जित पहाड़ पर रहने थे, उसी तलहटी में एक चट्टान थी। स्वयं प्रकृति ने उसे बलिवेदी बना रखा था। उस पर शिवयोगी बंधे थे। उन्हीं के पास एक राक्षसी आहूतिवाता पुरण हाथ में नगी कलश लिये खड़ा था। महा-कपाल भैरव का, अर्चना से जीये खोलकर, आशान-भर देना था।

विश्रम एक ही छल में बलिदेदी के निबल पड़े का और अंगरक्षक के हाथ में शिवयोगी की कण्ठ में जा खड़ा हुआ।

छोरगुल सुनकर कपाल भैरव की आँखें खुलीं। वे उठकर गम्भीर चाल से बलिदेदी के निबल आये। फिर अट्टहास की हँसी हसकर बोले—“बेटा, तू शनिब चौक का घेठा विश्रम हूँ न? तुझे खोजी हुए मैं एक

घार मामलपुरम् भी जाया था। पर हा हा मूढ़ भूपति के कारण सारा वाम चिगड़ गया। लेकिन बाली माता ने कहा कि अवश्य तू समय पर आ जायेगा। माता की आज्ञा है कि, दक्षिण में आज रात को बाली माता का जो साम्राज्य स्थापित होनेवाला है, उसका तुझे युवराज बनाया जाये।”

“आपकी बात मेरी समझ में नहीं आती। आप मुझे युवराज-मद देनवाले हैं, ता मेरे वाम में विष्णु न डालिये। मे महान् शिवयोगी, जो बलिदेदी पर बंधे खड़े हैं, मेरे दुल के परम मित्र हैं। इन्हें छुड़ाना मेरा कर्तव्य है। जब तब हाथ में तलवार धार शरीर में प्राण हैं, इन्हें बलि पर चढ़ने नहीं दूँगा।” यह कहकर विश्रम स्वयं शिवयोगी के बचन खोजने लगा।

कपाल भैरव ऊँचे स्वर में बोले—“घेठा विश्रम! यह बपटी गन्यासी, यह ढोंगी ‘शिवयोगी’ कौन है? अगर तू यह जान पायेगा, तो ऐसी बातें नहीं कहेगा। जरा तू ही इस बपटी गन्यासी से पूछ दे।”

विश्रम ने शिवयोगी की ओर देखा। उनके मुख पर मुस्कराहट खींच रही थी। उसी समय निबली की गडग-जैगी आवाज आयी—“विश्रम, पहले यह पूछ कि, यह बपटी केषधारी स्वयं कौन है? पहले यह अपना परिचय दे।”

बाक्य पूरा होने-न-होते, वही पल्लव-साम्राज्य के भूतपूर्व मेनापति महारथी ‘शिरस्तोडर’ (परग्याति) प्रकट हुए। उनके प्रवेश के साथ ही अस्त्र शस्त्रधारी अनेक

तैनिना भी आ धक्के। अत क्या था ?

शिवयोगी यथा मुक्त थे और बपाल
एक भैरव बंधे पड़े थे। तब शिवसाँदर
उस पल्लवेरी पर चढ़कर बोले—“आइयो,
मिठ आओ। इस बपाल भैरव की क्या
गुनाऊँ। तुम लोग जानते हो कि, एक बार
पुल्लोसि तमिलनाडु पर चढ़ आया था
और नगरा न मोंवा का स्वाहा कर गया
था। महेंद्र चक्रवर्ती की मृत्यु के बाद,
नरसिंह चक्रवर्ती और मने उल्लो मदका
फेने की टानी और यही गेना लेकर उस
पर आक्रमण कर दिया। उस घोर युद्ध में
पुल्लोसि की सेनाएँ हस्त-भूत हो गयीं।
चक्रवर्ती का आदेश यह था कि, सन्तु-नेना
का कोई भी पीर जीवित न छोड़े। लेकिन
जारी आका के विप्लव में एक व्यक्ति का
जाने दिया, क्योंकि वह युद्ध में एक हाथ
की युवा था और मंत्री वारणागत हो, पैरों
में पड़ गया था। वहीं वह एक हाथवाला
पापासिंह है। नाम नीलेशि है, पुल्लोसि
का छोटा भाई।”

तब महाराजाल भैरव ने कहा—“वहीं
एक शराकार मूठ है, मनगढ़ा है। ताक्षी
कहाँ है हाथा ?”

“ताक्षी ? ताक्षी कहाँ है ?” कहता हुआ
भारण भूपति सामने आया। महाराजाल
भैरव ने जयते विजय को मुखराज-वद
देने की बात कही थी, तभी से वह वापस
हो रहा था। अत वाष्पान्नाद में उसने एक
धन्यवर्तित कार्य कर टाला। हाथ में नगी
एकबार लिये वह बपाल भैरव ने निचट

गया और निगी के रास्ते के पहुँचे उसका
तिर घट से बलम कर दिया।

बिन्नु पल्लव मारते ही एक और पटना
भी पड़ी। बोन की ललवार ने मारण
भूपति का तिर भी चढ़ से उड़ा दिया।

—१५—

नरसिंह चक्रवर्ती की राजधानी उरुवूर
के चट्टन में जुटी। नरसिंह व प्रधानों के लेकर
शिखोडर, जटामुडुधारी शिवयोगी
आदि सभी मुख्य-मुख्य व्यक्ति आ पहुँचे
थे। यद्यपि निचट समय बीत चुका था,
तथापि चक्रवर्ती नहीं आये थे।

दुर्गा रामव शिवसाँदर उठे और रक्षा
की सम्राधि कर बोले—“आज की रक्षा
का क्या उद्देश्य है—आप सब लोग जानते
हैं। महाराज के आने तक एक बार मुलात
इतिहास धुल्ल ले, तो आगे की बातें और
सरल हो जायगी।

“हाँ, तो सुनिये, इन जटामुडुधारी
शिवयोगी और विजय के बीच एका भट्ट
नाका क्यों हुआ—आप लोगों को मालूम
है क्या ? शिवयोगी जब राजा पार्थिव को
मुद्र-क्षत्र में बंधा के पुरे, तो राजा ने
उनसे पूछा था कि, आप क्यों हैं ? शिव-
योगी ने शस्त्रों में कोई उत्तर नहीं दिया,
बकि अपनी जटा और दाढ़ी-मूँछ हटा-
कर अपना असली रूप उन्ह दिखाया।”

शिवसाँदर के मुँह से यह वाक्य सुनते
ही रक्षा में ललवारों बंध गयीं।

“मे जानता हूँ कि, आप सब लोग इन
बेधधारी शिवयोगी का असली रूप देखने

का उत्प्लुत होंगे। अब आप लोग सुनो मे देस सज्जे होंगे।" इतना कहकर शिकतोहर ने दस्तों की हाथों निचयोगी की दाढ़ी-मूँछ और जटा-मुकुट निगाल कर रख दी। शिवयोगी की जगह पर चक्रवर्ती अपने तेजोपद रूप में विराजमान थे।

लोगों के आश्चर्य का कोई धाराधार नहीं रहा। कुदृष्टि 'पिताजी' पुरारती हुई उनसे पास दौड़ गयी। चित्रम अन्तर नेनों ने उन का-परिवर्तित शिवयोगी को देखता रह गया।

शिवतोहर ने उठकर कहा—'ममामदा! पूरा और कार्य बाकी है। मामल-चक्रवर्ती अपने धर्म-सिंहामन पर बैठकर चित्रम चोंड के अरराध का निर्णय मुनायेंगे।'

तब चक्रवर्ती बोले—'देस में निर्वाकित लोग बिना आज्ञा के पापम जाये, तो दह-विधान में उनके लिए शिरमाजा शिरी है। इसलिए मैं इन्हें यह शिरमाजा देना है कि, चोंड राजाओं के इस पुरातन मणि-मुकुट की अकेले स्वयं रूप में ये धारण करें। आज मैं चोंड-देश स्वयं राज्य हो गया हूँ। इसका पूरा और चित्रम चोंड और उनके बसने हो बहुत करें।'

—१५—

चित्रम चोंड-देश का स्वयं राजा हुआ। एक रात्रि भुवने में पल्लव-राज-रज्या कुदृष्टि के साथ उमका विवाहोत्सव की बड़ी प्रसन्नता से भाग्य हो गया।

बिन्नु फिर भी पार्थिव महाराज ने जो सपना देखा था, वह चित्रम के राज्य में पूर्ण रूप से चरितार्थ हो गया। मूर्ख के सामने

जैसे अन्य सभी ब्रह्मधुंधले पड़ जाते हैं, वैसे ही पल्लवराज भरतिह चक्रवर्ती के सामने चित्रम का नीति-नयन चमक न सका। अविन चित्रम का उमने दमर्जी में कोई भी पार्थिव महाराज के सपनों को नहीं भूला। श्रव्येन चोल-राजा अपने पुत्र को पार्थिव की और मृत्यु की गहरी मुनाता था—पार्थिव महाराज ने उरंमूर के चित्र-मध्य में जो मयज-चित्र बनाये थे, उन्हें दिखाता था।

उममाग नीन भी सात के बाद चोल देश की और गहरी पर राज चोंड और राजेंद्र चोंड बैठे। इन्हीं के सामनकाल में पल्लवों की नीति मद पड़ी और चोंड देश के और नीति उत्तर में गया, शक्ति में छाया, और पूर्य में समुद्र-भार के देश 'वज्ररम्' तर गये और बड़ी चित्रम प्राप्त कर व्याप-नवाका पहरायी।

व्याप-नवाका पहराये हुए चोल-देश के जलपान समुद्र-भार भी आ गये और चावक व पुण्य-जर्म कीर्तियों को अपने अधिकार में कर लिया।

इसी काल में चोंड-देश-भर में अद्भुत मंदिर और गोपुर बने, जो चोंड-राजाओं की नीति को अमिट-अमर बनाये आज भी अपनी दमोकाया मुना रहे हैं। इस तरह पार्थिव चोंड ने जो-जो सपने देखे थे, वे सब उनकी मृत्यु के तीन गो बड़े उपरोक्त चरितार्थ हुए। मगर काल का यह निर्णय यहाँ भी अन्ध चरितार्थ हो गया कि, पराक्रमियों और नीरवों के मानस-स्वप्न एक-म-एक धुंधोदय में आवार बदर्य होते हैं।



पारुजीन

बालकोकी

तन्दुरुस्ती और
बढ़ता है. ताकत

हरेक केमिस्ट और स्टोर्स मीलता है

GUJARAT

वी. ए. ऐन्ड ब्रदर्स : बम्बई-२

कच्छा, पटना और गौहाटी

स्वादिष्ट रसोई के लिए



अभी ही एक प्रति मैगाइये !

कुसुम पाक-प्रणाली के विषय विवरण—

१. रेसोई होकर, २. मसाला—

सब के वैशेष और एक तरह के लिए का आदेश का
लिखा गये। वेल्थ का हिन्दी, विज्ञान का हिन्दी
पत्रिका, १९५५ में।

कुसुम खाद्य-पदार्थों की पोषण-शक्ति बहुत

इयूमेक्स

बेबी फूड इतना

निरापद क्यों है ?

क्योंकि इसे तैयार करते समय केवल उस दूध का ही प्रयोग किया जाता है जो परीक्षा की हुई क्षय के कीटाणुओं रहित गावों से प्राप्त होता है। आपका डॉक्टर भी आपको बतावगा कि क्षय के कीटाणुओं से रहित 'टुबरकुलिन टेस्टेड' दूध ही आपके बच्चे के लिए अत्यधिक शुद्ध और निरापद है। इयूमेक्स को घोलना भी आसान है और यह आसानी से पच भी जाता है। यह बढिया डेरी से ताजा भीनी सुगन्ध के साथ आता है, इसीलिए इसमें कोई अमरज की बात नहीं कि बच्चे इसे बहुत पसन्द करते हैं।

इयूमेक्स

बेबी फूड

बच्चों को इयूमेक्स दीजिए और उन्हें फलता-फूलता देखिए।

आप गर्म चाय पिएं



या ठंडा शरबत



स्वादिए मिठाइयां खाएं



या चाकलेट-टाफियां



हर चीज में शकर मौजूद है



न्यू इंडिया शुगर मिल्स आपके लिए सर्वोत्तम
दानेदार सफेद शकर बनाता है

न्यू इंडिया शुगर मिल्स
इसका पुरा होड



मे का सवाल...



जीवन
आय
सम्पदा
वैयक्तिक
माल
समाधान

न्यू इंडिया के बीमों
में आप पाएँगे:

स्थायित्व

सेवा

सुरक्षा

न्यू इंडिया के दिन प्रति दिन के लैकड़ों बीमों की बहुत-सी किस्में हैं और उन्हें तरह-तरह के खतरे की जिम्मेदारी रहती है।

परन्तु, इन सभी बीमों में एक बात समान यह है कि इन सभीमें पायी जानेवाली सुरक्षा का आधार है कदनी का

... विस्तृत आय-स्रोत—रुढ़ और प्रगतिशील प्रबन्ध-धन का विवेकपूर्ण उपयोग—

दी न्यू इंडिया एश्योरेन्स कंपनी लिमिटेड,
महात्मा गांधी रोड, बम्बई



NI 5603

स्वदेशी

काटन मिल्स क० लि० कानपुर

द्वारा प्रस्तुत

• धौतियाँ

• भाडियाँ

• कोंटिंग

• शर्टिंग

• पापलीन

• मारकीन

तथा

वस्त्र स्वदेशी बनस्पति सेगांव (ब्रार)

द्वारा प्रस्तुत

• बनस्पति

• तैल

• साबुन तदेव व्यापार कीजिये

एजेंट्स

जैपुरिया ब्रादर्स लिमिटेड



आपके अतिथि के लिए
अभि नन्दन
आपके भित्त के लिए
उपहार



फलों के जाम
वाकलेट

राफियां * पेठा * टिन
में बन्द फल * टमाटर
के उत्पादन तथा विटार्डियां



जी० जी० इण्डस्ट्रीज

मुख्य कार्यालय—आगरा

अन्यत्र शाखाएँ - ▲ दिल्ली ▲ बालोरा ▲ हनुमानगढ़

हुकुमचंद जूट मिल्स लिमिटेड

(स्थापित १९१९)

हाजीनगर, नईहाटी (ई० रेल्वे), पश्चिमी बंगाल

सर्वोत्तम श्रेणी के हेमिडियन, बोरे, ठिरमिच, तम्बू, ट्वाइन, रेमिग

तथा कमी कम्यलों यावि के उत्पादक

मेनेजिंग एजेंट्स रामदत्त रामकिसनदास

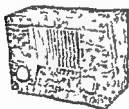
प्रधान कार्यालय बंधोन रोड, कलकत्ता-१

टेलिफोन ।

मार का पता ।

वर्ष १९९५ (लाइस)

JUTHICIO, कलकत्ता



मार्कोन

टाइप एन सी ए-ए सी, एन सी
यू-ए सी/डी सा, एन सी बी-
ड्राई बैटरी ५ वाट ३ बैटरी
मूल्य रु ३२५)

हमारे व्यवसायिक 'मार्कोन' 'बी' 'एम' तथा गुरर-जव ए सी/ए सी/डी सी
तथा ड्राई बैटरी / इनक थ्रिनिरिका ८ वाट १ बैटरी स्प्रेड टीलवस
रदियाशाय भी उपलब्ध है

इंडियन प्रेस्टिज लिमिटेड

पोपमर ब्रिज, कान्निवल्ली, बम्बई

शंकर रेडियो पर स्वर का
माधुर्य निखर जाता है

सज्जन बटिवस के लिए पूर्ण
उपयुक्त तथा उत्कृष्ट सामानों
से बना हुआ शंकर रेडियो
कहीं तक बिना किसी कष्ट
के नाम देना है

अपनी
रक्षा कीजिए



ICI 190



इससे परामर्श करें

निम्नलिखित विषयों में सम्बन्ध
में —

- * बाइको और ग्रीवास्ट पाइल काउन्सेलर
- * आर सी सी फिनोड
- * पानो की टकी
- * रिजर्विस्त
- * टेलर, ट्रापियो
- * टॉपिंग बेंगल
- * एम्बुलेन्स, रॉडियो और एक्सप्लो-जिव की गाड़ियों
- * मल-मलीदा निबालनेवाली गाड़ियाँ
- * सहर, बॉम्ब और पुत
- * बाटरफ़्ल एन
- * भीररी सजावट
- * धानुनिक फर्निचर
- * मोटरगाड़ियाँ बनाने (सनीकाग मलुमिनिपम और कम्पोजिट)

मैकेन्ज़ीम लिमिटेड

प्रधान कार्यालय

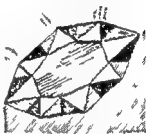
श्रीवरी, बम्बई

(टे न ६०००७/८/९)

देश के बीमा व्यवसाय में
रुबी जनरल
इंश्योरेंस क. लि.

को

अपना सेवा और सुरक्षा
के लिए एक विशेष नियम
पद प्राप्त है।



* जीवन

* आग

* मार

* सामुद्रिक

* हवाई

इत्यादि.

पयरमन की विजयोहरा बिरा

प्रधान कार्यालय

९, धर्मोद रोड, बनारस

बम्बजी कार्यालय

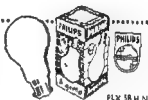
इन्डो हाउस, १५९, बरबोरेट रोड



आपकी
आंखों को आराम
देनेवाली वत्ती

फिलिप्स
अर्गेण्टा

जिसकी रोशनी मसमल सी मुलायम है



सस्ते उत्तम विस्म, टिकाऊ और सर्वोत्तम
स्टील फर्नीचर
के लिए

दी नोवेल स्टील प्राइक्टस लिमिटेड

द्वारा निर्मित फर्नीचर पर भरोसा कीजिए

मुख्य कार्यालय व गोद

वर्ली, बवई-१८

टेलीफोन - ७३३३८-२

टेलीग्राम-फायरफूक

श्री कम

२७, पार्कगे

स्ट्रीट

बवई १

२२८, कालदा-

देवी रोड

बवई २



हिन्दु मिल्स लिमिटेड

डुगल रोड, वलार्ड इस्टेट, पम्बई-१.



तार
"हिन्दु ग्राम"

टेलिफोन ।

वाणिज्य ३००१७

मिल ६०४४३

निर्माता

लेपर्ड, कोरे ओर धुने हुए लांगक्लाय, रंगीन लांग-
क्लाय, रंगीन सूती सूमीन और शर्टिंग, पल्स, जीन, शर्टिंग,
पोतियाँ और सादियाँ और १० से लेकर ६० काउन्ट तक के
मृत, विशेषकर देहात और निर्मात - बाजार के लिए

दी युनाइटेड कमर्शियल बैंक लि०

[१९४३ में रजिस्टर्ड]

प्रधान कार्यालय २ रायल एक्सचेंज प्लेस, कलकत्ता

अधिष्ठित पूंजी ८ करोड़

सावत पूंजी .. ४ करोड़

धुक्ती पूंजी २ करोड़

सुरक्षित ऋण..... ८६½ लाख

शाखाएँ

भारत : सभी प्रमुख नगरों तथा औद्योगिक और व्यावसायिक प्रसिद्धि के शहरों में—

पाकिस्तान : चटगांव तथा कराची

बर्मा : रंगून, मोलमिन, अक्पाब, माइला तथा बसीन

मलाया : सिंगापुर तथा पेनांग

यू० के० : लन्दन

अन्य हांगकांग,
यूरोप, अमेरिका, अफ्रीका, एशिया, आस्ट्रेलिया,
आदि सारे विश्व में एगन्ट

व्यवसाय व सेवा

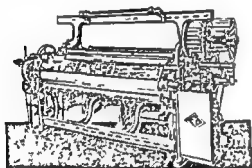
बैंक डिपॉजिट लेती है, मान्य जामिन के एवज में एडवांस देती है, बिल खरीदती है, ट्राफ्ट तथा तार के ट्रांसफर बेचती है तथा सभी प्रकार के विदेशी बदले के व्यवसाय का काम करती है। अपनी शाखाओं व विश्वव्यापी प्रमन्थ द्वारा हर प्रकार की बैंक-सम्बन्धी सेवा करती है।

ददु विनाश



दाद, खाज, खुजली, इक्जीमा
इत्यादि रोगों में सुपरीशित
दया। तीन दिन में फायदा

**PARTABMULL
GOBINDRAM**
PO. BOX NO. 2490 CALCUTTA



भारत में तैयार
किये गये इन
'टेक्समेको'

आटोमेटिक लूम
में मुदर, दोष-
विहीन कपड़े बुने
जाते हैं। मशीन
के विभिन्न मोडल

इस लुबी और सरलता से बनाये गये हैं कि, भारतीय धर्मिक इन कपड़ों
को बिना किसी दिक्कत के चमक सकते हैं। हमारी पाउन्ट्री, हमारे डिजा-
इनिंग सेक्शन व मर्चान्ट-शाप में अनुभव की और विशेषज्ञ यूरोपियन टेक्नीशियन
और इंजीनियर काम करते हैं।

इसके अलावा सादे, मूनी व रेसमी कपड़े, हावी, ड्राप याक्स वाकिन
शटल्स व पिक्विंग स्टिक्स भी बनते हैं।

टेक्समेको (ग्वालियर) लि., पो. विरलानगर.

एक से एक उत्तम

इसके चायुरेफ से पहले ही आपको मालूम हो जायगा कि ब्रिटनिया बिस्कुट स स तरह के है इनका सभी नहीं य बिस्कुट निश्चय कात है और एती सामग्री से जिसकी विपुलता और उत्तमता पहले ही जान ली जाती है साविष्ट तो होत ही ह सा ही पुष्टिकरक भी। कच्चे बहुत पसंद करते हैं आप भी बेशक पसंद करेंगे



ब्रिटनिया बिस्कुट
ब्रिटनिया

BRX 33 HND

बड़े दानेवाली सफेद चमकदार चीनी के लिए
प्रख्यात



श्री लक्ष्मीजी शुगर मिल्स क.लि.
महोली
श्री अनुधिया शुगर मिल्स क.लि.
राजा का शाहसपुर
मुरादाबाद

और
सर्वाधिक टिकाऊ
एवं सरती
शर्टिंग, कोटिंग, धोतियों
व
चादरों
के
लिए



अनुधिया लक्ष्मीजी शुगर मिल्स क.लि. दिल्ली

उत्तम किस्म तथा टिकाउ सूती कपड़े के लिए सदा

दी मोरारजी गोकुलदास

स्पिनिंग एन्ड वीविंग कं. लि.

सोपारीबाग, परेल, बम्बई १२

के कपड़ों के लिए आग्रह करें

टेलिफोन

६००३१

मीन लाइन



टेलीग्राम

“मोगोको”

बम्बई

एक याद रखने योग्य नाम

एक यशस्वि नाम

हमारी विशेषताएँ

सारी तथा अन्य जीन, घोटिया व साडिया, गदता पाट,

बदर और लाग कलाय, कोटिंग, तथा शर्टिंग, बायल मल्ल

तथा सुपरफाइन बेरायटोज

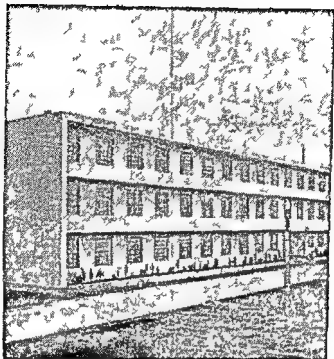
एजेन्ट :

पीरामल एन्ड सन्स

मेडिंग एजेन्ट :

पीरामल एन्ड कं. लि. बन्दा चौक मूलश्री जेठा भास्कर बम्बई २

टेलीफोन नं. ३३५१३



पेराम्बूर की इटीशल पोच फक्टरी के मुयाजिन तथा अन्य व्यवस्था
कार्यालय भवन का वर्दीबटन सामग्रियों (२६० टन) से एयर
कंडीशन किया गया है। अन्य स्टार इंजीनियरिंग कं (बवई) लि०
के इंजीनियरों द्वारा तयार व स्थापित किया गया है।

—एक और अन्य स्टार का प्रशस्तनीय कार्य



There are
4 in the
WILSON
Family

विलसन "जूनीअर"

वेकॉफिल

रीडमन U 10 1 नंबर के साथ

र. १-११-०

विलसन "मिडल"

वेकॉफिल

रीडमन U 10 1 नंबर के साथ

र. ५-१०-०

विलसन "डॉ लक्ष्म"

वेकॉफिल

10 केंचु गेट नंबर वाली

र. ८-१२

विलसन "अ-मॉरल"

वेकॉफिल

बही लक्ष्म की 10 केंचु

रीडमन नंबर वाली र. १०-०-०

REGD
Wilson
VACOFIL PEN



विलसन पेन रेजिस्टर्ड, लीक

और अप्रॉपियेट में भी प्रयुक्त

Sole Distributors for India

KIRON & CO. LTD.

73-75, CHHINI CHAWL, BOMBAY 2
BRANCHES IN CALCUTTA &
MADRAS

विलसन पेन में विलसन साहोबा उपयोग
करें.

५० घरों से भी अधिक सगसर
जन्ता की सेवा करनेवाला
कपड़े का एक प्रसिद्ध निधानस्थान

सरदारगृह

हरेर रम में चायरम और कालनी
विवाह अंत्यन्ध व भोजन-पार्टी की
मनपसंद व्यवस्था

फोर्गट माफेट के पास
यमई २.

बायो-टोना



घरों के विषे
एक परमान
शक्ति से लेकर
युवावाला तथा
समय और स्वस्थ
प्रदान के लिए



राय एंड कं.

विन्सेस स्ट्रीट यमई २

आपको जो
अच्छी से अच्छी चीज पसंद हो...

और मूल्य का पूरा उपयोग लेना हो तो-

उमदा

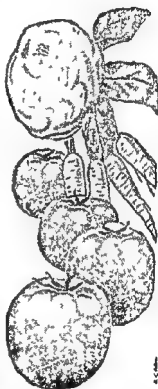
वनस्पति

आपसे लिये हो दे..
बसल अनुभव से ही आप सीखें
हैं कि अधिक दाम कदाचित ही
वस्तु की भेदता का प्रमाण होता
है, और इसमें ही "उमदा"
वनस्पति की लोकप्रियता का
एक रूप है, क्योंकि प्रसिद्ध
"उमदा" वनस्पति उषम
प्रकार के विविध वनस्पति तेलों
से बनी है और विटामिन 'ए' से
भरपूर है।
(स्मॉई) में निकले रहने से
आमन्द प्राप्त होता है और निकले
खरीदने से बसे की वपत होती है।



आप लिये -

"उमदा" वनस्पति में घी के समान ही विटामिन 'ए' रहता है।



अहमद मिल्स, मुंबई ८



भरद ऋतु की सगरी आ पहुँची है !

पूर्ण निरोग रहने के लिये 'चरक' का

केसरी सुवर्ण कल्प

कायाकल्प के लिए स्वादिष्ट चटनो की एक
मीठी आज्ञा हो खरीदिये ! चार प्रकार की
साइज में सब जगह मिलनी हैं ।

चरक भण्डार, बम्बई न० ७



मेंटा

ग्राइप मिश्रर

बालों की बीमारियों के
लिए आराम देह देना
वाष्पों के अपच, पेट
दुखना, अमाशय की
नकलीफ, दाँत लगने के
समय की शिकायतों के
लिए स्वादिष्ट बनावट

दी वाम्बे

डूग हाउस लि०

बम्बई—१६

• जिसकी चमकदार
फिनिश हो

जो देखने में
मनोरम लगे

• जो सधमुच
अधिक दिन चले



• अंदर बाहर
प्रयोग किया जाय

• लगभग
हर तरह की
सतह पर

• उद्योग और आवास
घर में काम आये



मैं लोड देकर
कहता हूँ कि

मैं जानता हूँ वह रंग
है उच्च-कोटिका
सिंथेटिक एनामेल



**शालीमार
सुपरलैक**



SHALIMAR PAINT, COLOUR & VARNISH COMPANY, LIMITED

111 BANK STREET P. O. No. 91 BOMBAY 1

टेलिफोन : ३७३३६, ३७३३८

टेलिग्राम : " वसिन्को "

दी वल्कन इन्शुरेंस कं., लिमिटेड

(भारत में संस्थापित)

नं. ७३, चर्चगेट के सामने, बम्बई.

स्थापना १९१९

। वकील श्री. जे. सी. सेटलवाड द्वारा स्थापित

होट आगिज : फोर्ट, बम्बई

*

निम्नलिखित बीमा निवालिमे

आग, जहाज, दुर्घटना और
मालिक के उत्तरदायित्व का बीमा

*

। वी. सी. सेटलवाड
चार्मरिटर इन्चार्ज

के. सी. देसाई
जनरल मैनेजर

सारे भारत में शाखाएँ और एजेन्सियाँ



Holiday concessions

- दिवाली और क्रिसमस भी छुट्टियों में रिकार्डों
वापसी टिकट दिए जाएंगे, यदि सफर १५० मील
या अधिक होगा।
- सफर शुरू करने में १५ दिन में पूरा करने के
लिए ही टिकट दिए जाएंगे।
- आते जाते किसी समय भी बीच में उतरने नहीं
दिया जाएगा।
- पूर्ण विवरण स्टेशन मास्टरों से विचारा जाय।





अपिन छद्

अपवार आत्म पर प्रमाण-मूय व उप तिमय आविर्भाव से विरह चेतना का प्रादुर्भाव होता है। समस्त जन्मा निरामा, अपवार को विहित कर एव आश्रय गयी स्पर्श नही उपय की स्फुरण होती है। किन्तु भी प्रवार को ध्यायि विगवर स्वतः सम रोग मे जावन छद् भग हो जाता है। किन्तु अध्यापित व्यक्ति यदि विश्राम न होकर उपयक्त निमित्त करे तो मूर्खता व समान समर्पे भी एव नए स्वाभ्य और वाति का उन्म हो सकता है। गन ६० वर्षों मे हमारी विगव देताविन निमित्त मे अगत्या स्वतः एव सम रोगियों मे रोगमुक्त हो नवजीवन-आन निष्ठा है।

वान न०

हावडा कुट्ट कुटीर

हावडा

३५९

स्वतः एवं सम रोग का सर्वश्रेष्ठ निमित्त पद,

प्रतिष्ठाता प० रामदास शर्मा

१ न मायन माय एन, हावडा

शाखा ३६ नं हरितन रोड, बजरत्ता (पूर्वा गिरमा मे पास)

यात्रा का अन्त



वर्ग-दौलत...
भारत के
जीवन का
एक अंग है

तेल की यात्रा—मसूदी किनारे पर
बहाव तथा क्षेत्र के अन्तर्गत से
रेल्वर दूर दूर के गाँवों में मिट्टी के
सेव की बेटों वष और फिर
कहाँ से बर्तियों तक—सबसे
बहुत सम्पत्ति माना है। वर्मा क्षेत्र
में १५,५०० ऐसे कमजोर रते हैं
जिनका काम ॥ यह है कि
काएवाली, रेलों, मगदों और गाँवों
एक से जाने के लिए तेल को सही
रस्ते पर बहाए। यह एक भारी
काम है और इसके लिए भारी
सादाद में भावमियों की जरूरत
रहती है। साथ ही इसके लिए
बहुत सी जानबूझी (जिसे हमारे
अमीरी की होता 'मोहाउ' करते
हैं) की जरूरत होती है, ताकि सही
विश्व के तेल भरणे स्थान पर
और सड़क समान पर पहुँच सकें।

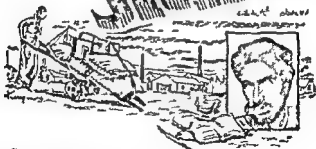


हिन्दी सादरगोट ,

पत्नी की वृद्ध म अपने पुत्र का ऊँचा दिना दन में श्रमज की मा-या
का हृदय मचमका जाता है—उसकी प्ररा नया ।



इस्माइल फिल्म



भूमि मा गोतावली, नतीरलान, जोतीगार और बन्धराज महाना
दिपाता निर्देश इस्माइल मेमन

११ नवम्बर को आ रहा है

इम्पारियल और थय एविगुहां में
प्रेमोहेन्ट फिल्म रिलाज

टिवाली का अभिनन्दन





श्रीराधिका अभिनेत्रि

तीन चांद छाप

असली

शुद्ध केशर

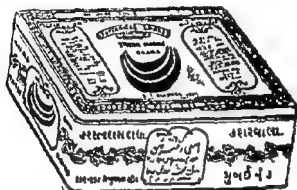
स्थापना

१८८४

GRAM-

OLIVE

BOMBAY



केशर खरीद करने से पहले आप जरूर

“तीन चांद छाप” केशर को याद करें

१ पौंड से १ ताले तक की पैकिंग में हर जगह मिलती है
या लिखिये —

करसनदास लधा केशरवाला

फोन नंबर
७०७३१

२३६, बडपादी बम्बई न. ३

पहली पसन्द



ताज छाप का हर एक मापको बता देगा कि वास्तविक तबान्
की लम्बाई के शीरीन ताज छाप सिगरेट ही सब से
बहुते बेसी पसन्द करते हैं।

लादवों की मतपसन्द

ताज छाप

सिगरेट का ही मापक कीजिए



ताज ही एक बेस्ट कीजिए नकल से सावधान रहिए

गोल्डन टोर्नको कंपनी लिमिटेड, बम्बई २४.

© १९५९

Golden Torncroft

सर्वोत्तम मनोरंजक एक से एक सरस चित्र

जुपिटर पिक्चर्स प्रजेंट



: भूमिका :

अंजली

रामाराम

जयन्ता

नागेश्वरराव

रमाराव

बन्धु हरि

गोप

☆

: पटकथा :

मन्मथ गोवि

रामेश्वरराव

. दिग्दर्शन .

मो. पो. दिशि

. निर्माण

जय

सोन सुन्दर

☆

रामदीप पिक्चर्स प्रजेंट

ज य श्री

'राजश्री प्रॉडक्शन्स'

फुलदिप पिक्चर्स लि. प्रजेंट

टांगवाली

मोंट इटिया पिक्चर्स प्रजेंट

अं जान

हरिम प्रॉडक्शन्स प्रजेंट

लालटेन

मन्मथ प्रॉडक्शन्स प्रजेंट

भानुरान

मन्मथ प्रॉडक्शन्स प्रजेंट

अमरवाणी

मोंट इटिया पिक्चर्स प्रजेंट

परादशी

मन्मथ पिक्चर्स प्रजेंट

अ रस रा

मन्मथ पिक्चर्स प्रजेंट

?

: भूमिका :

दिलीप, अंजली, मन्मथ

प्रमाणक : डि स्क्रिप्ट. त हृदय. बंबई-७

लारवो वु २१
की पचास

५१

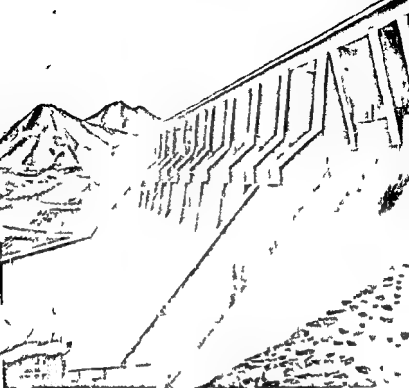


पुस्तक
विभाग
विभाग

पुस्तक और पत्रिका

पुस्तकालय

पुस्तकालय, पुस्तकालय, पुस्तकालय
पुस्तकालय, पुस्तकालय, पुस्तकालय



कोनार बांध (बिहार)

मजदूरी के लिए एससीसी सीमेंट से बनाया हुआ

कोनार बांध (बिहार) के बनाने में अभी तक ५५००० टन से अधिक एम्मासा सामग्री लग चुकी है। सामग्री का अर्थ है सड़क लिए अधिक गुणी जीवन और एम्मासा अधिक से अधिक अच्छी सीमेंट बनायी जा रही है।

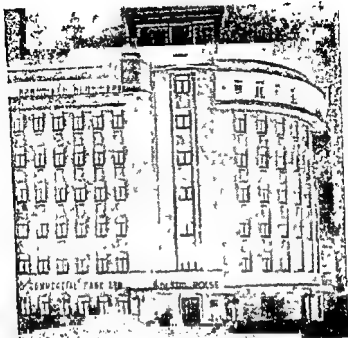


बी एसोसिएटेड सीमेंट कंपनी लि० द्वारा प्रकाशित

दिसम्बर

१५
१४
१३
१२
११
१०
९
८
७
६
५
४
३
२
१





इस छोटी हाइड्रॉ-विस्फोटक बल का नवीन बम्बई-ऑफिस बिल्डिंग
गुना (१८० टन) से एयर कंडीशन किया गया है।

ब्ल्यू स्टार इंजिनियरिंग कं (बम्बई) लि.

के इंजिनियरों द्वारा तैयार व स्थापित किया गया है।

—एक और ब्ल्यू स्टार का प्रशंसनीय कार्य

भीड़भरे छविघरों में प्रदर्शित हो रहा है

रंगमंच	*	समृद्धि	*	रिवोली
रोज तीन प्रदर्शन		रोज चार प्रदर्शन		रोज चार प्रदर्शन
१-४५, ५-१५		११-०, २-१५		११-०, २-१५,
घोर ८-४५		४-३० और ८-५४		४-३० और ८-४५
घोर		मन्य		छवि केन्द्रों में

इत्सानियत

सर्वोत्तम कलाकारों का
सर्वोत्तम चित्र

दिलीप कुमार देवानन्द श्रीनाथ विजयलक्ष्मी
जयलक्ष्मी जैराज शोभना समर्थ कुमार --
बहीरामाट आगा मोहना और
इत्यादि से मिली --



निर्माता-निर्देशक एस एस वासन
संगीत सी रामचन्द्र
गीत राजेंद्र कृष्ण सख्दे रामानन्द सागर
जेमिनी का महान चित्र





हमसे परामर्श करें
निम्नलिखित विभिन्न कार्यों के सम्बन्ध
में :-

- वाइयो और प्रीक्वार्ट पाइप
काउन्टेरान्स
- आर. सी. सी. सिलोज
- पानी की टंकी
- रिजर्वायर
- ट्रेलर, ट्रैक्टर्स
- टोपिंग बेगन्स
- एम्बुलेन्स, रेडियो और एक्स्प्लो-
जिव की गाड़ियों
- मेल-मालीदा निवाल्नेवाली
गाड़ियों
- सड़कें, बाँध और पूल
- वाटरप्रूफ छतें
- भीतरी सजावट
- व्यापारिक कर्नलर
- मोटरगाड़ियों के बॉन्डे (सभी छात,
बालुमिनियम और कम्पोजिट)

मैकेन्जीस लिमिटेड

प्रधान कार्यालय :

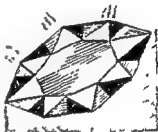
शीवरी, बम्बई

(टेल. नं. ६०००७/८/९)

देश के बीमा व्यवसाय में
रुबी जनरल
इश्योरेंस कं. लि.

को

अपनी सेवा और संरक्षता
के लिए एक विशेष प्रिय
पद प्राप्त है।



* जीवन

* आग

* मोटर

* सामुद्रिक

* हवाई

इत्यादि.

बेयरमेन . धी विजयमोहन बिरला

प्रधान कार्यालय :

९, सेबोन रोड, बलरत्ता

बम्बई कार्यालय :

इन्डस्ट्री हाउस, १५९, चर्चगेट रिकने.



बुकतारी. तुम्हें प्रणाम!

मध्यदेश में एक ओर को बुके बुकतारी नामक गाँव के बारे में जित को क्या मातुस है? परबाव भी कौन करता है? लेकिन हम कहते हैं। इतने क्या? लेकिन जरा सोचिए— वहाँ शैल के १५,००० से अधिक कर्मचारी हैं और ८०० से अधिक विद्यार्थी हैं जो देश के सर्वोत्कृष्ट विद्यालयों पर कार्यरत हैं। यहाँ नहीं, ४ छात्रा कार्यालय, २२ प्रादेशिक कार्यालय और तेल बॉम्बे के लिए ४५३ कारखाने भी हैं। इनके अतिरिक्त बुकतारी और जहाँ जैसे अन्य इन तीनों की सेवा करते हैं और इन बातों का ध्यान रखते हैं कि उन्हें तेज निष्पत्ति रूप से मिलता रहे।

वर्मा-शैल .. भारत के जीवन का एक अंग है।



मानदार प्रगति का एक और वर्ष

नये बीमे

- | | |
|------|-----------------------|
| १९५२ | २ करोड़ ८० लाख |
| १९५३ | ३ करोड़ से ऊपर |
| १९५४ | ४ करोड़ २५ लाख से ऊपर |

*

बो न स

- | |
|--------------------------------------|
| ३१ दिसम्बर से घोषित |
| १५ रु. प्रतिवर्ष पूरे जीवन-बीमा पर |
| १२ रु. प्रतिवर्ष एन्डाउमेन्ट बीमा पर |



न्यू एशियाटिक इन्श्योरेन्स कं० लि.

हेड ऑफिस: नयी दिल्ली

पश्चिम भागीप ऑफिस:

इस्ट्री हाउस, १५९, चवंपेट रिक्लेमेन्शन बम्बई.

नासाएँ और एजन्सियाँ सम्पूर्ण भारत में

किसी भी उम्रमें,
किसी भी हालतमें



पटुसिंघ
"रेजर"

द्वारा

**स्वांसीको
शोकिये**

सभी औषध विक्रेताओं के यहाँ से
शायद घटिया डि. शाव. लाइसे-
न्सीन, सिंग बस्टम और एका
गैमिक डेरीटरी इनके सहयोगसे

भारतमें बनानेवाले **इन्फो लि.**
डाक बक्स नं १०४१, बम्बई - १

info



विडला
कटेलो चम्पा
 केश तैल

अनुपम गन्ध
 एवं केश शोभा
 केलिये



वीर-बद्धा
 बच्चों की ताकत के लिये
 अनुपम टानिक
 (बाल्यमृत्त)

विडला लेबोरेटरीज, कलकत्ता २०

बम्बई के वितरक - मेमर्स थैन्कामे कॉरपोरेशन लि०
 १७०, डॉ. एनो बंगट रोड, बम्बई १.

उसको चारो ओर चिन्ता है ।

लेकिन



उसने अपने आपको संभाला है ।

आजकल हरकोई बग़्तो तुई दारोंके कमरा आवासी का मेल
 लगाने में चिन्तित है । किन्तु कोई अनपेक्षित घटना होती है
 जिससे कि हमें जादा खर्च करना पड़ता है । यह कितनी
 मुसीबत है । हिम्मत न हारो इसीको क्या अवगता कहेंगे ।
 जबकि तुम चर्तिया आपके दिशा को बाँकी रखनेमें मज्द करोग ।
 यदि सलियेग, यही सबसे महत्वपूर्ण है ।

जवाकुलुम
 के.ए. लेन
 आपके बासो और  दिग्गज ने लिये घेदनीन

सी० के० सेन एण्ड कंपनी लि०

जवाकुलुम हाउस, ३४, बिहारमन चण्देय्यू, कलकत्ता - १२

CR 11234



केश तैल
चुनाव में

कालक व गुणों के सम्बन्ध में जो वैज्ञानिक है
4 राज्यों में लखनऊ विश्वविद्यालय के प्रमुख
का जो सुझाव है बर्हिद के जानते हैं कि प्रमुख
देखत बगों का स्वास्थ्य और बर्हिद ही नहीं
कालक बर्हिद विभाग की शीघ्र दस्ते में भी
प्रमुखनीय है

भृंगल

आयुर्वेदिक सुगन्धित महाभृंगरस तैल

कैलश वैदिक द्वारा प्रस्तुत

कैलश वैदिक

धर्म कार्यालय देवकरन मंदिर, प्रिसेंट स्ट्रीट बम्बई-२

सुरुचिपूर्ण

छपाई

सुन्दर

बनियान व

शटिंग

टिकाऊ

धोतियाँ व

साड़ियाँ

हमारी विशेषताएं हैं

केसोराम काटन मिल्स लि०

हमारे संबन्ध एजेंट :

पंथई स्टोर्स सप्लायर्स लि०

(टेकगटाइन दि०)

प्राप्ते विरुद्ध, बैंक स्ट्रीट,

कोर्ट, बंबई

केसोराम काटन मिल्स लि०

८, रामल एगमथेंद्र प्लेस,

बलराम

किसी भी प्रकार के शारीरिक दर्द पर

‘हक्सली’ का

विन्टोजिनो

अवश्य

इस्तेमाल करिये

पीठ का दर्द, कमर का दर्द, वातरोग, गठिया, सिर वेदना, शूल, छाती की सर्दी आदि हर प्रकार के शारीरिक दर्द पर ‘हक्सली’ का विन्टोजिनो निश्चित सुनकारी है।



प्रमुख

वितरक

सभी प्रमुख दवाई
बेचनेवाले और
स्टोर्स में मिलता
है।

पी. एम. जवेरी

एण्ड कं., दवावाला,
प्रिन्सेस स्ट्रीट, बम्बई २

रामतीर्थ ब्राह्मी तैल (स्पेशल नं १)

आयुर्वेदिक ओषधि (रजिस्टर्ड)



स्मरण शक्ति बढाता है, गाढ़ी निद्रा जाती है तथा थाल काले होते हैं। आँखा न डालने से आँखों की दृष्टि बढती है। कान न डालने से कान के सब रोग मिटते हैं। गजापन दूर होता है। सब ऋतुओं में उपयोगी। कीमत बड़ी शीशी ३॥ छोटी शीशी २) रु

प्रत्येक स्थान पर मिलता है।

५॥॥) का मनीआर्डर बड़ी शीशी के लिए तथा ३॥॥) का मनीआर्डर छोटी शीशी के लिए (आक-व्यय मिला कर) भर्जें।

आसन चार्ट स्वस्थ और प्रसन्न रहने के लिये हमारा योगिक आसनों का आकर्षक चार्ट (नक्शा) बणाइये जो आक सर्व सहित रु १-१२-० में प्राप्य है। यह आसन सरलता से घर पर निये जा सकते हैं।

श्री रामतीर्थ योगाश्रम दादर (सेण्ट्रल रेलवे) बम्बई-१४

टेलिफोन: ६२८९९

हिन्द मिल्स लिमिटेड

हुगल रोड, क्लार्क इस्टेट, बर्मा-१



छात्र
"हिंदू धर्म"

टेलिफोन
ब्राफिम १००१०
मिल ६०४४१

निर्याता

लेपर्ड, कोरे और धुले हुए लागकलाय, रंगीन लाग-
बलाय, रंगीन सूती सूमीज और शर्टिंग, मल्लस, जीन, शर्टिंग,
घोतियाँ और साड़ियाँ और १० से लेकर ६० काउन्ट तक के
मृत, विशेषकर देहात और निर्यात - बाजार के लिए

दी युनाइटेड कमर्शियल बैंक लि०

[१९४३ में रजिस्टर्ड]

प्रधान कार्यालय २ रामस एस्टाट्स स्ट्रीट, कलकत्ता

अधिकृत पूंजी..... ८ करोड़

सागत पूंजी..... ४ करोड़

शुद्धी पूंजी..... २ करोड़

सुरक्षित कोष..... ८६½ लाख

शाखाएँ

भारत : सभी प्रमुख नगरों तथा औद्योगिक और व्यावसायिक
प्रसिद्धि के शहरों में—

पाकिस्तान : लहोर तथा कराची

बर्मा : रतून, मोलमिन, जम्पाद, मांडला तथा बसीन

मलाया : सिंगापुर तथा पेनांग

मू० के० : लन्दन

अन्य : हांगकांग,
यूरोप, अमेरिका, अफ्रीका, एशिया, आस्ट्रेलिया,
आदि सारे विश्व में एवम्

व्यवसाय व सेवा

बैंक डिपॉजिट लेती है, मान्य जामिन के एवज में एडवांस देती
है, बिल खरीदती है, ड्राफ्ट तथा तार के ट्रान्स्फर देवती हैं तथा सभी
प्रकार के विदेशी बन्धों के व्यवसाय का काम करती है। अपने शाखाओं
व विश्वव्यापी प्रमुख द्वारा हर प्रकार की बैंक-सम्बन्धी सेवा करते हैं।

There are 4 in the WILSON Family

विलसन "जुनीयर"
रेकोफिल
विलसन U.S.A. नीब के साथ
र. ३-१२-०

विलसन "मेजर"
रेकोफिल
विलसन U.S.A. नीब के साथ
र. ५-१२-०

विलसन "डी लक्ष"
रेकोफिल
१४ सेट मोस्ट नीब वाली
र. ८-१२

विलसन "वेडमरिल"
रेकोफिल
बडी माइल की १४ सेट
मोस्ट नीब वाली र. १०-१२-०

REGD.
Wilson
VACOFIL PEN

विलसन पेन रेगुलर, लीवर
और अफोफिल में भी प्राप्त है

Sole Distributors for India

KIRON & CO. LTD.

73-75, CHHIM CHAWL, BOMBAY 2
BRANCHES IN CALCUTTA &
MADRAS

विलसन पेन में विलसन शाहीका उपयोग
करें



अधुरा संरक्षण

धूल, बीजाणुओं और श्वसन
विषादों का निवारण से बचने
के लिये 'कार्मसी' औषधिपुच्छ
टिप्पियों का उपयोग भेदस्थ
होना है। खांसी, सर्दी, गले
की सूजन, ब्रॉन्काइटिस
आदि बीमारियों में कार्मसी
उपयुक्त है। आसानी से
बांखल गरीबों के लिए। हर
अवस्था में मिलती है।



कार्मसी



खांसी का इलाज

आयुर्वेदायुध
कार्मसी लिमिटेड
जलमदनगर



THE MAKER

सादी भारत के घर-घर में पहनी जाती है।

छोटी-बड़ी हर महिला
को मन माती है।

दी

विड़ला काटन स्पनिंग
एंड वीविंग मिल्स लि०

दिल्ली

की

प्रसिद्ध साड़ियां

व छोटी

मीडियम

सूतों में



पंजाब की सर्वश्रेष्ठ रूई से बनाई जाती है
दिशावने विशेषज्ञों द्वारा तैयार की जाती है
व्यापारी व उपभोक्ता दोनों को लाभ पहुंचाती है
भारतीय उद्योग प्रदर्शनी, नई दिल्ली में
बिरला इंडस्ट्रीज के स्टाल पर पधारिये

तार: विड़ला

टेलीफोन : २३३९१-९२-९३

स्कूल में



हार्डी
५॥ मे ८॥ ह त्त
साइज के अनुसार



ये उत्साह-चरमिग बच्चे नेचर
पर बंज्ञानिक रीति से बने
पहनकर स्वस्थ विकास प्राप्त क

स्कूल के बाद

स्काउट

१॥॥ से ११॥॥

रक

साइज के अनुसार

Bata

छाई जैसी सफेद

बर्फ जैसी सफेद शक्कर बनाने में
प्राख्यात म्यू स्वदेशी शगर मिल्स देश
को शक्कर में आत्म निर्भर बनाने में भी
एक बहुत बड़ा हाथ बटायी है। सदा म्यू
स्वदेशी शगर मिल्स की बनावट हुई शक्कर
का उपयोग करें।

म्यू स्वदेशी शगर मिल्स लि.
नर्कटियागंज

आप गर्म चाय पिए



या ठंडा शर्वत



स्वादिए मिठाइयां खांए



या चाकलेट-टाफियां



हर चीज में शकर मौजूद है



न्यू इंडिया शुगर मिल्स आपके लिए सर्वोत्तम
दानेदार सफेद शकर बनाता है

न्यू इंडिया शुगर मिल्स
हयनपुर रोड

...जी, हाँ, आप कुछ,
थोड़े और डुबाकर
सगा सकते हैं...

...अवश्य, यह जल्दी
सूखता है और सूखने पर
मजबूत होता है...

... चमकदार
और टिकाऊ
फिनिश देता है...



.. हाँ, हाँ, मशीनों और
आफिस के सामानों में

.. आप चाहे तो
दीवार पर भी ...

... और, हर तरह
से काम आनेवाला...



... जानते हो दोस्त!
वह कौन सा रंग है ...

... मैं जानती हूँ!
वह है- उच्च-कोटि का
सिन्थेटिक रंगनामेल ...



शालीमार
सिन्थेटिक
रंगनामेल

SHALIMAR PAINT, COLOUR & VARNISH COMPANY, LIMITED

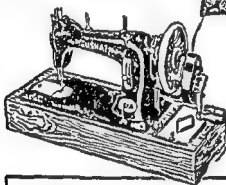
11 BARK STREET P. B. No. 194 BOMBAY 1

SPW 261

घर में सिलाईका काम

यही मेरा शौक
और साथ ही व्यवसाय भी!

ज्या से सिलाई करने में
सबसे प्रसन्न होती है
वे हर प्रकार के सुई के
काम आसानी से कर
सकती है और दर्जी के
खर्च को काफी बचा
देती है।



अषा
सिलाई मशीन

अषा
सिलाई स्कूल में
सिलाई सीखिये

दी जय इंजीनीयरिंग वर्क्स लि. फलफत्ता



दिनम्बर

नवनीत

[हिन्दी डाइजेस्ट]

१९५५

संचालक
श्रीगोपाल नेवटिया



सम्पादक
रतनलाल जोशी

प्रबंध-संचालक
हरिप्रसाद नेवटिया

सहकारी
रमेश सिन्हा : ज्ञानचन्द्र

चित्र-शिल्प गोपालकृष्ण भोवे

लेख-सूची

१. त्याग	'अपरोक्षानुभूति' के आधार पर	१
२. ...आत्मा के मार्ग पर अटल हूँ	स्वाधी विवेकानंद	२
३. श्रेष्ठतम दीपक	महर्षि विश्वनाथपुर	४
४. प्रसादजी	वाचस्पति पाठक	७
५. उद्बोधन	'प्रसाद'	८
६. पादागो के वायोदगार	श्रीकृष्णदास वाजपेयी	१०
७. उदारचरित्तम	रवीन्द्रनाथ ठाकुर	११
८. फगत दृष्टि	विनोबा	१४
९. परोपकारी	वाडिदास	१५
१०. अगिरस . महान आर्यवीर	डा सत्यप्रकाश	१७
११. मेरा बचि	मैथिलीशरण गुप्त	१८
१२. किला अहमदनगर	मोसाना भाज्याद	२०
१३. भूलगा हूँ	'किराक' मोरचपुरी	२३
१४. होराकुणी	अवनीन्द्रनाथ ठाकुर	२५
१५. अनर्घों की जड़	न. ग. वझे	२६
१६. विन्दु में सिंधु समाना	इलाचंद्र जोशी	२८
१७. रोरिक से भेंट	यशपाल	३३
१८. प्रभो	विलियम जॉन्स	३४
१९. सिंह	एडवर्ट ह्याक	३८
२०. शायन विभूति	विनोबा	३९
२१. ...स्विट्जरलैंड में	विठ्ठलदास मोदी	४४

२२. अपेक्षा	डा राधाकृष्णन्	४६
२३. ...अनवर शब्दकाष्ठ करते	डा रामगुमार वर्मा	६९
२४. थम आत्मविवास का कीमिया	बौदारावाय धर्मा	५०
२५. वाम : अमून	जवाहरलाल नेहरू	५१
२६. हरजस	डा पन्हेमालाल सहल	५४
२७. जल की खेती पेट भरेगी	'मूनस्को नोरियर' से	५७
२८. धवन	प्रिस त्रोपाटकिन	५८
२९. औरण-उटाग	एडविन होवेल	६०
३०. सस्त्रुति. हृदय की क्या	एडिनी लेनगुप्ता	६२
३१. घासन	'सबोदय' से	६५
३२. नागार्जुन के निखर पर	अदिवि वापिराज	६७
३३. सुकल	'धम्मपद' से	६९
३४. मारी	'स्ववायर' से	७१
३५. परमहस	मिस्टर निवेदिता	७२
३६. ...निम बनाने में बितने कुशल हैं	'साइकोलॉजिस्ट' से	७६
३७. जानि सरद रितु मयन आवे	रामकृष्ण बेंनीपुरी	७८
३८. कामना	काश्मिदास	७८
३९. जानी या भान (कहानी)	'जोय' मरीहावादी	८०
४०. जेश (कहानी)	परमराम	८२
४१. जीवन की जय (कहानी)	निर्वाल्ह विठावर्स्की	८६
४२. खालि (कहानी)	आशानंद भामतोरय	८९
४३. गुप्त-प्रगिति (कहानी)	गुणदेवप्रसाद गौर 'बंदव बनारसी'	९३
४४. मर्दानगी (उपल्लासिका)	रबींद्रनाथ ठाकुर	९७
४५. अनुमृति	रोमी रोली	१००
४६. मिथ्या शास्त्र	सरच्चन्द्र	१०९
४७. हृदयवान्	अमृतगुमार 'पाषाण'	११४

समृद्धि
[चित्रकार : प. ए. अलमेलकर]



वार्षिक मूल्य : दस रुपये नवनीत प्रकाशन लि० प्रति वर्ष : एक रुपये
विशेष सस्करण : पन्द्रह रुपये ३४१, तारदेव, बम्बई-७ विशेष सस्करण : दस रुपये

सम्पादक
रतनलाल अंशी

दिसम्बर १९५५

—‘अपरोक्षानुभूति’ के आधार पर



अपनी आत्मा के मार्ग पर अटल हूँ

साक्ष्य तो सर्वत्र की वशा है। कला में कलाकार चित्रण मूल्य को अनवरत ध्यात करता है, मगर उसे सम्मोहक वेशभूषा में मग्न रहता है। वह अनुभवों के लक्षणों में निहित है, किन्तु कालात्मा 'अनुमोह' या अनुचर्यन भवना निराशा ही बस रहता है। लेकिन साहित्यिक तन्त्र वह विराता है, तो उसी व्यक्तिमत्त्व जैसी है, वैसी ही शक्तों में आ उतरती है। वही तो रहस्य है कि साहित्य ने गोर्बा म कहा था—“मेरे वैयक्तिक चरित्रों को एक बार बदल दो, तो मेरी रचनाओं के बारे में तुम्हारी योग्य राय निश्चय हो जायेगी।” इस वहाँ स्वामी विवेकानन्द का एक महावचन वचन प्रकाशित कर रहे हैं। हम में उनके व्यक्तित्व की मारी मौलिक रक्षा व्यक्त हो गयी है। और वह-ल-उत्पत्ति की दृष्टि से जो वह वचन मानने सर्वत्र मित्र हो बनता है।
प्रतीक ही है—समस्त है जैसे एक-एक शब्द सर्वत्र विवेकानन्द का कार्यनिष्ठ रूप हो।

★

५८, डब्ल्यू ४,
३३वीं स्ट्रीट, न्यूयार्क
१ फरवरी, १८९५.

मैं उन्हें सम्मति का भी ध्यान नहीं रहा।
अम्बु, उन महाशय के चले जाने पर पिछले
‘बी’ ने मुझे इनके लिए काफी उम्मीदें
दिये, क्योंकि उनका विद्वान्त था कि,
ऐसे विद्वानों के बचारे में एडगर मेर
काम की हानि होती है। यही तुम्हारी भी
सम्मति जान पड़ती है।

मैं हम सामाजिक सेनावनी की प्रशंसा
करता हूँ, क्योंकि आनन्द यह मेर
चित्रण का एक विषय बन गया है। प्रथम
तो मुझे इन सब शक्तों में कोई शक्ति नहीं
होती। तुम मायदा इनमें सहमत न हो-
में अच्छी तरह जानता हूँ कि, समार में
उत्पत्ति करने के लिए मुशीक होता किन्ता
अच्छ . में प्रायः हर एक काम इसी
दृष्टि से करता भी जाता हूँ। परन्तु अब

प्रिय बहुत,

मुझे अभी-अभी तुम्हारा स्नेहपूर्ण पत्र
मिला। .. हाँ, काम करने के लिए
यदि कभी विराम भी होता पड़े, तो इसमें
अम्बु का एक कम ही बनता है। इस
काम का फल न भी मागने का मित्र, तो
क्या? .. मैं तुम्हारी आशावनाओं में
आपत्त प्रसन्न हूँ। मुझे किसी बात की
चिन्ता या शंका नहीं है। अभी बच की बात
है कि, जिस ‘टी’ के बड़े एक प्रेमविच्छिन्न
महाशय ने मेरा गहरा विवाद हो गया।
ने महाशय जैसी कि, उनकी प्रशंसा है,
धीरे ही गरम हो गये और आप के आवेग

नयनीत

२

दिसम्बर

कभी ऐसा अवसर उपस्थित हो जाता है कि, यद्यपि से इसमें विरोध की आशका होने लगती है, उसी क्षण में रुक जाता है। सुशील होना अच्छा है, पर अतिशय नम्रता में मे विश्वास नहीं करता। मेरा आदर्श है 'समदर्शिता,' जिसमें हर किसी के साथ समान वर्तन करने की शिक्षा दी जाती है। साधारण मनुष्य का वर्तन है कि, वह अपने स्वामी-समाज-के आदेशों और नियमों का पालन करे, परन्तु सत्य के पुत्र इस नियम से बाध्य नहीं होते। यह एक सनातन मर्यादा बली आ रही है कि, हरएक को यहाँ अपनी परिस्थिति के अनुसार आतावरण और समाज की प्रगति देखकर चलना पड़ता है। इसका समाज उसे हर तरह की सुविधाएँ देने की तैयार है। परन्तु सत्य का पथिक इसके विपरीत अकेला खड़ा होकर समाज की गति-विधि का निरीक्षण किया करता है। यों तो समाज का दास बनकर मनुष्य को जीवन के सभी प्रकार के आनंद भोगने को मिल सकते हैं, और समाज के प्रतिकूल चलनेवाली का जीवन नितान्त कष्टमय व्यतीत होता है। पर अन्तिम सत्य यह नहीं है। समष्टि की पूजा करने वाले क्षण में विशिष्ट हो जाते हैं। ५ के पुनारी ससार में अग्र होकर

रहते हैं।

मैं यहाँ सत्य की तुलना जलाकर रख देने वाली विनाश-शक्ति से करूँगा। जहाँ कहीं वह प्रवेश करती है, सब जलकर 'स्वाहा' हो जाता है। कोमल पदार्थों पर उसका प्रभाव शीघ्र पड़ता है, ठोस पदार्थ तनिक देर में पिघलते हैं। परन्तु वह शक्ति प्रत्येक दशा में अपना काम करती अवश्य है। इसे ध्रुव समझो। वहन, मुझे अत्यंत खेद के साथ स्वीकार



[स्वामी विवेकानन्द]

करना पड़ता है कि, मैं अपने को विनाश और सुशील नहीं बना पाता। इसी तरह प्रत्येक वाली कस्तूरत को भी ज्यो-का-ज्यो मान सेने के लिए मैं विवश नहीं हूँ। मैं ऐसा कभी नहीं कर सकता। जिसने आजीवन कष्ट झले हैं, उसे कैसे इतना शीघ्र भूल जाऊँ। नहीं-नहीं, ऐसा कदापि न होने देगा। मैं अच्छी तरह विचार कर देख चुका हूँ। अतः मैं इसका त्याग ही मुझे कल्याणकर प्रतीत हुआ। ईश्वर की विविध महिमा है। वह मुझ पर कभी डोंग का मिथ्या आरोप सहन नहीं कर सकेगी। इसलिए जैसा कुछ होता है, होने दो। मेरा मार्ग ही ऐसा है जो हर एक को कभी रुचिकर नहीं हो सकता और मैं भी अपनी वर्तमान स्थिति का परित्याग करने में असमर्थ हूँ। मैं अपने को कभी

धोवा नहीं दे सकता। जीवन और सौंदर्य का मोह क्षणिक है, जीवन और संपत्ति नाशवान है, नाम और यश स्थायी नहीं हो सकते यहाँ तक कि, पर्वत भी धूल में मिल जाते हैं। मित्रता और प्रेम का विनाश होकर रहेगा। केवल सत्य का सम्बन्ध सनातन से है।" हे, मेरे सत्य देवता! तुम्हीं मेरा पथ निर्दिष्ट करना। मैं अब अपने को दूष और सहृद में परिणत नहीं कर सकता। मुझे बैसा ही बना रहने दो जैसा कि, मैं हूँ।

"निर्मय होकर, बिना शय-विशय करते हुए मैत्री और वैर की भावना छोड़कर, है सन्यासी! तू सत्य का खोज पगड और इसी दाग नमर में अपने को मुक्त हुआ ही जान! भविष्य की चिन्ता क्यों करना है? क्यों साक्षात्क

लिप्ता तुम्हें नहीं छोड़ती? सत्य, तू ही मेरा पथ-निर्देशक बन।" मुझे धन, यश और नाम में कोई प्रयोजन नहीं है। वहन, मेरे लिए मैं धूल के समान हूँ। मैं केवल अपने भाइयों की सहायता करने आया था। मुझ में धन उपार्जन करने की योग्यता नहीं है। ईश्वर ही रक्षक है। यौन-मा ऐसा प्रलयाकर्षण है, जो मुझे इस अनन्तम

नवनीत

के निश्चल सत्य को छोड़कर बाह्य विषयों की ओर खींच ले जा सकता है? वहन, मैं मानता हूँ कि, यह अस्तित्य इतना दुरन्त है कि, इसे कभी-नभी सत्कार की सहायता लेनी ही पड़ जाती है। परन्तु इसमें मुझे कोई भय नहीं होता। मेरा धर्म बड़ा है कि, भय समझे बड़ा पाप है।

पिछली बार प्रेसमिटेरियन पार्टी के साथ चलकर तथा उगने वाले मित्र

श्रेष्ठतम दीपक

अन्ता विट्ककुम् विट्ककुल
ज्ञान्तेर अथवाक्या विट्ककुले विट्ककु।

—सूर्य, चन्द्रमा, अग्नि तथा प्रकाश
यान दीपक केवल बाह्य अपकार का
अवहरण कर करने में समर्थ हैं।
जल के अभाव का हरण की क्षमता
ना एकमात्र माय दीपक में है। इसी
लिए सिद्धांतों में सत्य का ही
श्रेष्ठतम दीपक बताते हैं।

—सूर्य निर्यात—

मनुजित और घृष्ट थे। सत्य के देवता की सेवा करने का अधिनारी बड़ा व्यक्ति नहीं है, जो दूसरे का आश्रय लेना है। मेरे अंतर! शान्त हो जा!! अनेक विहार करना सीख!! ईश्वर तेरा साथी। जीवन भी क्या है? मृत्यु क्या भय नहीं है? यह सब तो यहाँ कुछ भी नहीं है। केवल ईश्वर की व्यापक सत्ता ही

'बी' में विवाद कर मैं हीन समझ रहा हूँ कि, मनु के शरीरों में सन्यासी का क्या बर्तव्य है—'अनेक रहो और बिना साथी के चला करो। सारी मैत्री और सम्पूर्ण प्रेम-अधन सीमित है।" मित्रता और वह भी मित्रों के साथ, तो कभी निभी नहीं। महर्षियों! तुम्हारे विचार नितन

अनुभव हमें चारों ओर होता है। मन तू निर्भय क्यों नहीं होता। स्वच्छद होकर विचरण कर। वहन, हमारी यात्रा लम्बी है। इसके लिए समय बहुत कम है और इधर अवसान की घेला निगट आती जा रही है। मुझे क्षीघ्र अपना घर जाना है। परंतु अपने आचरण का लेखा भी ठीक करने का समय नहीं रहा। मैं अपना सदेश भी तो बँटो दूँ। इतना समय यहाँ भिन्न सवेगा? तुम विनयी अच्छी हो, तुम में क्या सौजन्य बूट-कूट कर भरा हुआ है। मैं तुम्हारे लिए क्या नहीं कर सकता? परंतु तुम मुझसे बभौ छुट न हो। तुम सब अभी यच्चे हो।

स्वप्न! हाँ मैं अभी तक स्वप्न ही तो देख रहा था। अब स्वप्न से क्या प्रयोजन विवेक! तू स्वप्न मत देखा कर। एव शब्द में तुझे एव सदेश देना है। तेरे पास इतना समय यहाँ है, जो तू ससार के साथ समझौता कर चल सके। यदि तू ऐसा करे भी, तो वह केवल तेरा डोंग होगा। वास्तव में, मैं हजार बार भरना भोग विलास के लिए जीने की अपेक्षा बही ध्येस्वर मानता हूँ। मैं चाहे स्वदेश में हूँ अथवा विदेश में, इस मूर्ख जगत की कुछ आवश्यकताओं के आगे तिर क्यों झुकाऊँ? क्या तुम्हें भी मिसेज 'बी' की तरह सदेह हो गया है कि, मुझे कोई काम करना है। मुझे ससार में कोई काम नहीं करना है। मेरा केवल एव सदेश है, जो मैं अपने ह्रय से बहूँगा। मेरे सदेश में हिन्दुत्व और

न इसाइयत की गंध मिलेगी। मैं ससार के किसी धर्म की सकीर्णता का सदेश केवर नहीं आया हूँ। मैं केवल अपना व्यक्तिगत सदेश दूँगा। मेरा धर्म ही मोक्ष है। अपने धर्म पर सबट आया देखकर मैं उसकी हर तरह की शान्ति अथवा शान्ति द्वारा रक्षा के लिए संयार हूँ। बहो! मैं पादरी लोगों को क्यों परास्त करना चाहता हूँ? वहन, इसका गलत अर्थ न लगाना। परंतु तुम लोगों को तिसु मानकर इस विषय में कुछ उपदेश देना मैं कर्तव्य समझता हूँ। तुमन अभी उस स्रोत का जल यहाँ ग्रहण किया होगा जिसमें "विवेक-अविवेक, मर्त्य अमर, ससार केवल शून्य की कल्पना और मनुष्य देवता" बन जाता है, यदि बन पड़े तो इस ससार के मोहक्षपी जाल से अपने को मुक्त कर लो। सब मैं तुम्हें सबनुच साहसी और स्वाधीन समझूँगा।

यदि तुम ऐसा न कर सको, तो कम-से-कम उन्हीं लोगों का उत्साह घडाओ जो समाजस्थी असत देवता के प्रति धर्म-मुक्त करने के लिए बटियद है और जो उसे चरखों के नीचे कुचल देने के लिए उठ खड़े हुए है, जिनके जीवन का प्येय ही समाज के प्रचलित आदवरो का निराकरण करना बन गया है। यदि उन्हे तुम प्रोत्साहन भी न दे सको, तो मौन रहना तुम्हारे अपने ही वश में है। उन्हे इस बीचड में घसीटने का प्रयत्न मत करो और न मुख पर 'समझौता' जैसे निरर्थक शब्द

का नाम लेकर उन्हें नम्र अथवा सुशील बनने की सीख दो।

मैं इस ससार को ही घूणा करने लगा हूँ—यह स्वप्न। ये दरारनी आकृतियाँ।। यहाँ के गिरजापर और देवालय, पुस्तकें और अमानुषी व्यवहार, यहाँ के सौम्य चेहरे और उनके भीतर छिपी विवृत बुद्धि, सासारिक न्याय, बाहरी तटव-भटव एवं अन्यतरिख कल्प और अन्याय, अत्याचार-उत्पीड़न तथा इन सबके ऊपर 'व्यापसापिक्ता'। ससार की धारणाओं के साथ मेरे विचारों का साम्य किस तरह स्थापित हो सकता है। व्यर्थ।।। बहन, तुमने सन्यासी देखे कहीं हैं? "वे तो वेदों के भी शिखर माने जाते हैं।" ऐसा वेद में ही व्याप्त है; यथोक्ति के धर्म, देवालय, अवतार, धार्मिक श्रद्धा तथा उन सबको जो धर्म-प्रचार के अन्तर्गत अथवा बाहरी होते हैं, परे हैं। मेरी उनसे विषय में भक्तुहृदि के सम्पर्क में यही धारणा बनी हुई है कि,—सन्यासी! तू अपने मार्ग पर चलता जा। कोई तुझको पागल कहेंगे, कोई चाण्डाल कह कर घूणा करेंगे, परन्तु ऐसे लोग भी होंगे जो तुझे श्रद्धा मान कर तेरी बातों को बड़े ध्यान से सुनेंगे। सासा-

रिव जन की बातों का बुरा जमान। हो, जब वे तुझ पर प्रहार करें, उस समय इस बात को ध्यान में रख कि, हाथी बाजार से होकर निकल जाता है और उसने पीछे बितने ही कुत्ते भूँचते रह जाते हैं। वह छोटा अपने मार्ग पर चला जाता है। यही नियम है। जब कोई महान् आत्मा पृथ्वी पर जन्म लेती है, तो उस पर भूँचने वाले लोगों का अभाव नहीं होता है।

मैं आजकल 'ल' के साथ ५४, टम्पू ३३वीं स्ट्रीट में रह रहा हूँ। वे बड़े धीरे और उदार व्यक्ति हैं। ईश्वर उनका मंगल करे। प्रायः क्षयन के लिए मुझे 'य' के यहाँ जाना पड़ता है।

ईश्वर तुम लोगों को सुखी रखे और धीघ तुम्हें इस मूर्ख जगत की दुश्चिन्ताओं एवं अभिसन्धियों से मुक्त करे। यह ससार योगमाया का स्वरूप है। इससे तुम छव यत्ने रहो। महेश्वर, तुम्हारा इत्याण करे। देवी उमा तुम्हारे लिए अपने हाथों से शल्य का द्वार खोल दें जिससे तुम्हारा सारा मोह मिट जायें।।

तुम्हारा शुभावादी,
सन्तर्ह
विवेकानन्द

★

भाग्यवान

सैई धन्य नरपुत्रे लीये गारे नाहि भुंते,
मनेर मदिरे नित्य सेवे सपंजन

—इस मसार में वही अनुप्य भाग्यवान है और जीवित जन्म सार्पन है, जिसकी मृत्यु के बाद भी उससे मूल नहीं पाते और नित्य सभी के मन-मदिर में जिसकी पूजा होती है।

★

—माधवेर मधुसूदन दत्त



युग निर्माता कवि जयशंकर 'प्रसाद' के साथ श्री वाचस्पति पाठक का घनिष्ठ 'नेह-मैत्रीभाव' था। पाठकजी के पास 'प्रसाद'-सम्बंधी संस्मरणों की अनमोल निधि कभी तक अधिकांशतः अध्वस्त ही पकी हुई है। क्या ही अच्छा हो कि, पाठकजी भवभूषा निकालें और इस स्मृतिरोप को भारती के भरण करें। यहाँ हम पाठकजी द्वारा लिखित 'प्रसाद'जी का एक संस्मरण प्रकाशित कर रहे हैं।

प्रसादजी के लिखने में स्वान्त.मुखाय कि, उनकी कोई पुस्तक किसी पुरस्कार-मूलमंत्र था। वे अपने साहित्य को प्रतियोगिता में न भेजी जाय। इसी के अपने बुरे-से-बुरे समय में भी अर्ध-प्राप्ति परिणाम स्वरूप हिन्दी साहित्य सम्मेलन का साधन नहीं बनाना चाहते थे। फिर को यह नियम बनाना पड़ा कि, 'कामायनी'

भी कभी-कभी अपने ही साहित्य देव की कृपा से अर्थ खिंचा चला आता था। ऐसे आर्थ हुए अनाहत अतिथि को किसी दूसरे को सौंप कर ही उन्हें चैन मिलता था। उन्होंने अनेक पुस्तक के प्रकाशकों से कोई रॉयल्टी नहीं ली। अपने जीवन-काल में मिली



[प्रसादजी]

रॉयल्टी की रक्कम भी उन्होंने अपने रूप देखकर उन्हे बड़ी प्रसन्नता हुई। निजी काम में रण्य नहीं की। उन्होंने प्रसादजी को पदों से भी बड़ी विरक्ति अपने प्रकाशक को आदेश दे रखा था। किसी सभा-समिति में आना-जाना

खरीदकर ही प्रतियोगिता में भेजी जाय। खड़ी बोली का वह सर्वप्रथम काव्य था, जिस पर मंगलाप्रसाद पारितोषिक प्राप्त हुआ। 'कामायनी' प्रसादजी की अंतिम पूरी कृति है। उसकी छपाई हुई प्रति उन्हे अपनी मरण-वाक्या पर ही प्राप्त हुई थी। उसका छपा हुआ रूप देखकर उन्हे बड़ी प्रसन्नता हुई।

उतना न बसता था, जितना कि, उनके किसी पद पर प्रतिष्ठित होकर बहो रहना। यही कारण है कि, दयामुन्दर दास जी के न टिगने वाले हृदय के कारण किसी प्रकार नागरी-प्रचारिणी सभा, बासी का उप-समापनत्व एक बार उन्होंने स्वीकार कर लिया था। परन्तु समापति तो अभी बनने को तैयार नहीं हुए। पदों के सम्बन्ध में उप-समापति का पद ग्रहण करना उनके जीवन में एक अपवाद है।

सार्वजनिक जीवन में महत्वपूर्ण स्थान रखने वाले व्यक्ति के लिए आज की दुनिया में अपने को इस तरह बलग रखना व्यक्ति-युक्त प्रतीत नहीं होता, पर प्रमादजी ने यह सब समझा नहीं था। वे थे मलमल शशी। पत्रों का उत्तर सर के नहीं दे पाते थे। इसी तरह

पुस्तकों की भूमिका लिखना जबकि किसी पत्र परिचय के लिए सम्मति लिख देना भी उन्हें अमिष्ट नहीं था। इनके अपने मित्रों अपना नाथी कपड़ों को कष्ट तो पहुँच जाता था। उनके इस नियम से भी परिवार निराश की 'गोपिका' के लिए किसी गर्भा भूमिका अपवाद है।

प्रसादजी को अपने मित्रों एवं परिवारों नयनीत

की पोछी में अपनी भविता मुनाना अच्छा लगता था। जिन दिनों 'बाँधू' या 'कामायनी' काव्य लिखा जाता रहा, उन दिनों हर दूसरे-तीसरे सप्ताह हम लोग बाँधू करते थे कि, काव्य कुछ कामे बड़ा हो, तो मुनाइये और प्रसादजी अगर रचना कुछ कामे बढ़ी होती, तो अवश्य मुना देते थे। उनके पढ़ने का काम भी बड़ा निराला था। अत्यन्त मधुर और मादक, जिसे सुनकर लोग आनन्द विमोह हो जाते थे, झूम उठते थे। एक बार ही घटना भूमे ही नहीं, समस्त अनेक लोगों के ध्यान में पड़ी होगी। बासी-नागरी प्रचारिणी सभा का कोई उत्सव मनाया जा रहा था। पञ्चाङ्ग आगन्तुकों एवं दूरकों से सजासज भरा था। बहो मय के निपट बिजों का पेंस

उद्बोधन

बनो गुरुनि के मूल रहस्य,
तुम्हीं से बँलेगी यह बेल।
विद्य भर सौरभ से भर जाय,
मुमन के रक्तो मुदर गेल ॥

भोग का हँसने देना मत,
हँसो और मुग पाओ।
अपने मुग को खिलाने कर लो,
सब को मुगो बनाओ ॥

—प्रसाद

बनारस महिलाओं के बैठने का प्रदष किया गया था और उसमें भी तिल राने की जगह नहीं थी। बड़ा धीर हो रहा था। उस सप्ताह के न जाने क्या सोच कर प्रमादजी अपनी भविता मुनाने को तैयार हो गये। वे मय पर पहुँच और बैठ कर अपने नये किये जाने वाले काव्य 'कामायनी' का सज्जावाला अन्त पढ़ने लगे।

फिर क्या कहना ! उस स्वर की बरसात में कौन नहीं भीग उठा ।

प्रसादजी अत्यंत सुस्चि-सम्पन्न व्यक्ति थे। उन्हें सुंदर वस्त्र पहनने का शौक था। वे खादीधारी थे और खादी का अच्छे-से-अच्छा माल उन्हीं के हाथों विकता था। सुंदर वस्त्र को देखकर वे अपने को रोक नहीं सकते थे। बस्तूरी, केसर, परमोना या रेशम हाथ में लेते ही वे उसका अस्तित्व जान जाते थे। रत्नों के भी वे अच्छे पारखी थे।

उन्हें खाने और खिलाने का बहुत शौक था। वे स्वयं भी पाकविद्या में अत्यंत निपुण थे। मित्रों के आने पर प्रायः वे कुछ-न-कुछ ऐसी चीजें अवश्य खिलाते-पिलाते जिसकी याद कुछ दिनों मन में बसी रहती। इस सम्बन्ध में उनके नये-नये अनुसंधान भी चलते रहते।

वे इत्रों के भी अच्छे पारखी माने जाते थे। उन्होंने विविध इत्रों के मेल से अनेक नये इत्र तैयार किये थे। पान की गिलोरियों खाना उनका प्रिय व्यसन था।

संगीत में उन्हें लोकगीतों से विशेष प्रेम था। यों तो शास्त्रीय संगीत भी उन्हें अच्छा लगता था पर सीधे-सादे ढंग से मधुर गले से गाया हुआ भावपूर्ण गान ही उन्हें खींचता था।

प्रसादजी भारतीय सस्कृति के सच्चे अनुयायी थे। उनकी आस्था ईश्वर मत्त में थी, जो उन्हें कुल-परम्परा से मिली थी। भारतीय दर्शनशास्त्र और उपनिषदों का

वे निरंतर अध्ययन करते रहते थे। पर वे रुढ़िवादी नहीं थे। गांधीजी की विचार धारा से भी वे प्रभावित हुए। अन्यथा ढाके की मलमल के कुरते और जरी के किनारे की धोतियाँ छोड़ कर वे खदर धारण नहीं कर पाते।

प्रसादजी को बनारस से विशेष प्रेम था। अपने अंतिम दिनों में बीमार पड़ने पर उन्हें निश्चय हो गया था कि, वे अब बचेगे नहीं। उन्हें यक्ष्मा हो गया था। यक्ष्मा के इलाज के लिए लोगों की राय थी कि, वे पहाड़ पर अपना बही शहर के बाहर जाकर रहे, किन्तु यह उन्हें स्वीकार नहीं था। वे बाराणसी के भीतर ही अपना प्राण त्याग करना चाहते थे। इससे कुछ लोग समझने लगे कि, आर्थिक संकट अथवा हठवश ऐसा कर रहे हैं। पर बात ऐसी नहीं थी। उन दिनों में भी कालानार से पीड़ित था। किसी को विश्वास नहीं था कि, मैं बच जाऊँगा। सभी एक दिन बनारस से किसी एक मित्र ने सूचना दी कि, प्रसादजी तुम्हें बहुत याद करते हैं। मैं यह जानते ही अशक्त होने पर भी तत्काल बनारस गया। वहाँ पहुँचने पर जो-कुछ देखा, वह नदरता की चरम सीमा थी। वह शरीर, वह स्वास्थ्य, वह मुस्कराहट—सब रोग के अपानक तुपारपात के कारण विनष्ट हो गया था। कुछ न वह सका, न पूछ सका, केवल सिर झुकाया और पीछे लोट पड़ा। अब वहाँ जैसे कुछ रोप न था।



प्राचीन के कागजदार

पुरातन एवं इतिहास के विज्ञान से एक शोधपूर्ण कार्य का एक शोधपूर्ण लेख

*

प्राचीन भारत में प्राचीन का प्रयोग
भूति-निर्माण तथा इमारतों के
घटाने में विशेष रूप से होता था। साथ
ही परपर पर विभिन्न लेखों की उत्पत्ति
कराने की भी प्रथा थी, जिससे उन लेखों
की सुरक्षा तब सुरक्षित रखा जा सके।
प्राचीन समय में, जसकि पुस्तकों के मूल्य
की व्यवस्था नहीं थी और हम से लिखे
जाने वाले, यों का भी प्रयोग बहुत कम
था, भारत के विभिन्न भागों में विविध
शिलापट्टों पर लेख मुद्राएँ मिलीं। मोर
सम्राट अशोक ने पहले के शिलालेख इने-
गिने उपलब्ध हुए हैं। अशोक के लेखों की
संख्या काफी बड़ी है। इस प्रियदर्शी सम्राट
ने अपने कर्मचारियों और प्रजा के लिए
अनेक राजाज्ञानों जारी की और उन्हें
भारत के विभिन्न प्रदेशों में पहाड़ की
चट्टानों और शोणिक (पालिसदार)
तमों पर उत्कीर्ण करवाया। अशोक के
समय में प्रायः समस्त भारत में ब्राह्मी
लिपि चलती थी, केवल उत्तर-पश्चिमी
भागों में शरोष्ठी लिपि का चलन था।
यह शरोष्ठी लिपि उर्दू की तरह दाहिने से
बाएँ तरफ लिखी जाती थी। अशोक के
समय की

लेखों की भाषा पाली है। यह उस समय
जन-साधारण की भाषा थी; और इसी
लिए उसका प्रयोग किया गया। अशोक
के बाद अभिलेखों की परंपरा प्रायः
अविच्छिन्न रूप से मिलती है। इन
राजवंशों ने भारत के विभिन्न भागों में
सातव विभिन्न उन्होंने अपनी विजय, संधि,
शासन-व्यवस्था, धार्मिक कार्यों आदि का
विवरण अभिलेखों में अंकित करवाया है।

प्राचीन अभिलेखों के मुख्य विषय हैं—
राजवंशों का वर्णन, विजय-यात्रा, युद्ध,
दान तथा जनता के हित में किये गये विविध
कार्यों का उल्लेख। इन लेखों की रचना
प्रायः राजदरबार के लेखकों और कर्मियों
द्वारा गद्य या पद्य में की जाती थी। इससे
बाद रचना को पत्थर-तराशों या धातु-
उत्कीर्णकों से दे दिया जाता था। वे
निर्देशानुसार उस लिपिबद्ध रचना को
पत्थर या विभिन्न धातुओं के पत्रों पर
छाँद देते थे। मिट्टी के पत्रों तथा
लकड़ी आदि पर भी कुछ प्राचीन लेख
मिले हैं, पर उनकी संख्या अधिक नहीं
है। कल्पि अधिकतर प्राचीन लेख टीक
प्रकार में उबरे हुए मिले हैं, किन्तु कुछ

लेखों में सुदाई करते समय अनेक अशुद्धियाँ रह गयी हैं। कहीं-कहीं भाषा-सम्बन्धी दोष भी मिलते हैं।

ऐसे लेख भी मिले हैं जिनमें भाषा और भाव सम्बन्धी अनेक विषयताएँ हैं। वही रामदालवारों की छटा है, तो वही कल्पना की ऊँची उड़ान। वही प्रकृति की सुषमा का चित्रण है, तो कहीं विविध भावों की सुदार अभिव्यक्ति। अनेक अभिलेखों के पढ़ने से भालूप होता है कि, उनमें रचयिता महान कवि और कला-मर्मज्ञ थे। हम

बाल्मीकि, भास, अश्वघोष, कालिदास, भवभूति, माघ आदि कवियों के विषय में उनके उत्कृष्ट प्रयोगों द्वारा जानते हैं। परन्तु अनेक प्राचीन कवि और लेखक, जिनकी रचनाएँ केवल पाषाण-खडो या ताम्रपत्रों पर ही सुरक्षित रह सकी हैं, आज विस्मृत-सी हैं। यहाँ हम कतिपय अभिलेख-वर्ताओं की रचनाओं के उदाहरण दे रहे हैं।

रविल का मदसौर-लेख—

मदसौर (मध्यभारत) में मालव संवत् ५२४ (४६७ ई.) का एक लेख मिला है, जो एक झिलाखड पर सुदा हुआ है। इस लेख की रचना रविल नामक

कवि के द्वारा की गयी है। इस लेख में गुप्त सम्राट् चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य के लड़के गोविन्द गुप्त का उल्लेख है। गोविन्द गुप्त के सेनापति वायुरक्षित के पुत्र का नाम दत्तमट था, जिसके द्वारा लोकहित के अनेक कार्य संपादित किये गये। उसने एक स्तूप का निर्माण कराया और उसके समीप एक कुआ, प्याऊतथा वाटिका भी बनवायी। सबसाधारण के उपयोग के लिए उस कुए

‘उदारचरितानाम्’

प्राचीन हिंदू एक नाममोक्षहीन कूटियाछ छोने कूल अतिशय दीन।
‘धिव धिक’ बरे तारे कानने स्याई—
सय उठि बोल तारे ‘भाले’ बाछो भाई?
—एनी भोत क छेद म जय एक नाम-गात्र से हीन, अतिशय दीन नहा
कुमुम खिता, तब बनके सभी चित्ता-
चित्तापर उसे धिक्कार देने लगे। परन्तु
सूयने उदय होकर उसे पूछा—“कहो भाई,
अच्छे हो न?” —रवीन्द्रनाथ ठाकुर

का उद्घाटन वसंत ऋतु में किया गया, जबकि कुआ बनकर तैयार हो गया था। उस अवसर का संक्षिप्त वर्णन कवि ने इस प्रकार किया है—
“भूभाग भारतस-
बालपद्मे,
काले प्रपन्ने
रमणीयसाले।
यतासु देशान्तरिता-
प्रियासु,
प्रियासु कामज्वल-
नाहुतितयम् ॥

नात्युष्णशीतानिलकम्पितेषु,
प्रवृत्तमतान्यभूतस्वतेषु।
प्रियाधरोष्ठारूपफलश्रेष्ठ
नवा धहत्पुष्पवनेषु फातिम् ॥”

(अर्थात् कुआ और स्तूप आदि का निर्माण उस वसंत में पूरा हुआ, जबकि बीरो के मार से बाग बगल शूक गये थे)

और जाल वृक्षों की गोमा रमणीय हो गयी थी, जवहि श्रेणित-पतिवा यामिनियों व्याघ्र का अनुभव कर रही थी और जब ऐसी मद हवाई यह रही थी जो न तो अधिन गरम थी और न अधिन ठंडी। उन हवाओं में सचरण से कुर्जा के छटा-वृक्षों में बैपन उत्पन्न हो रहा था। उस समय मत्त बोधित मुकुन्दर से अलग रहो थी और उपवनो की नवीन बोपले सुदरियों के अघरोष्ठो की तरह बरण वर्ण वाली हो गयी थी।)

वृत्तान्तिट्ट का लेख—

मदसौर में शिवना नदी के घाट पर खो हुए एक अग्न बड़े शिलापट्ट पर छ. ५२९ (४७२ ई.) का एक लेख खुदा है। इसमें लेख का नाम वृत्तमन्दिट्ट दिया हुआ है। चबालीत श्लोकों में यह लेख समाप्त हुआ है, जिसमें चादुल विनीकित, यमवलिष्ठा, लापो, उपेद्रप्रया, मदानाता आदि छत्रों का व्यवहार किया गया है। लेख में अनुप्रास-अलंकार का सुंदर प्रयोग मिलता है। अर्थात् नारों में उपमा, उपमेदा और व्यंग्य की छटा स्मान-स्थान पर देखने को मिलती है।

इस लेख में दणपुर (जो मदसौर का पुराता नाम था) के एक विष्णुसूर्य-मंदिर का, वहाँ के रेशम के व्यापारियों द्वारा, जीर्णोद्धार कराने का वर्णन है। यह मंदिर कुछ समय पूर्व इन व्यवसायियों की धोषी द्वारा बनवाया गया था। लेख में दणपुर नगर तथा वहाँ के निवासियों के काव्यमय

नबनीत

वर्णनों के साथ प्रकृति का मनोहर चित्रण इस प्रकार मिलता है—

“विलोलयोवीचलितारविंद—

पतत्रजः पिजरितैश्च हंसैः।

स्वसेसरोदारमरावभुजैः

भवचित्सरस्यच्युतहंस भोति ॥८॥

स्वपुष्पभारावर्तनर्गोन्दै—

धंमप्रल्भासिहुत्तरवनैश्च।

अनस्रगाभिदध पुरांगनाभि—

धनानि यस्मिन्समलङ्कृतानि ॥९॥

चलात्पताकाप्यचलासनाया—

न्यरपयंदुक्कलाम्यपिचोम्रतानि।

तद्विस्तृताचित्र स्तिताभङ्गद—

सुख्योपमानानि गृह्णामि यत्र ॥१०॥”

(अर्थात् उस दणपुर में स्थाप-स्थान पर सरोवर थे, जिनमें उठी हुई चबल लहरे कमलपुष्पों को हिला-डुला देती थी, जिसने कमलों की पीली पुष्पराज सरोवर में तरंगे हुए हंसों की पीठ पर गिर पड़नी थी और उन सपेद्र हंसों को पीला कर देती थी। विष्णी-विन्नी तालाब में अपने केशर के भार से कमलिनियों झुकी जा रही थी। उस नगर के उपवन कूटों से लदे हुए घिटपों से गुसीभित थे, जिन पर मत्त मोरे लूज रहे थे। नगरी की बनिताएँ उन उपवनो में विविध प्रकार के गीत गा रही थी। और उस दणपुर में विष्णुसूर्य भवन थे, जिनके ऊपर पताना पडर रहे थे। ऊँची सपेद्र अट्टालिकाएँ, जिनके ऊपर सुदरियों बँधी हुई थी, ऐसी लग रही थी मानो बिजली समूक घुम मेघमालाएँ हों।)

इस शिलालेख में दशपुर के रेशम के व्यवसायियों द्वारा तैयार किये गये वस्त्रों का भी अत्यंत रोचक वर्णन किया गया है -
 “तारम्यकान्युपचितोपि सुवर्णहार-

ताम्बूलपुष्पविधिना समलकृतोपि ।
 नारीजन प्रियपुर्मेति न तावद्धया,
 यावन्न षट्मय वस्त्रयुक्तानिपसे ॥२०॥”

(यौवन और सौंदर्य से सज्जन महिलाएँ, चाहे वे स्वर्णहार तथा ताम्बूल-पुष्पादि से अलङ्कृत ही क्या न हों, तब तक अपने धुआर को अपूर्ण मान कर प्रिय के पास जाने में लजाती हैं, जब तक उनके पास दशपुर का बना हुआ रंगीन रेशमी वस्त्र-मुगल न हो।)

भंसूर राज्य का तालगुड-लेख -
 कदमराज शातिवर्मा का तालगुड लेख भी काव्य की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। यह लेख भंसूर राज्य के शिमोगा जिले में तालगुड नामक स्थान पर प्रणवेश्वर के भान मंदिर के सामने एक शिला पर उत्कीर्ण है। इसका समय ई. छठी शती का प्रारंभ है। लेख के ३१ वे श्लोक से पता चलता है कि, उत्तर भारत के प्रसिद्ध बुद्ध बस तथा कतिपय अन्य राजवंशों के साथ वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित कर कदमो ने अपनी राजनीतिक शक्ति को मजबूत बनाया था। इस बात को लेख के रचयिता ने, जिसका नाम कुम्भदिया हुआ है, इस प्रकार व्यक्त किया है -

गुप्तादिपात्त्रिवकुलाम्बुहस्यलानि
 स्नेहादर प्रणयसममर्कसराणि ।
 श्रीमन्त्यनेकनृपपट्टपद सेवितानि
 योयोष्यद् हितुदीर्घितिभिनुपाकं ॥३१॥

कदमराज शातिवर्माने, जो सूर्य के समान तेजस्वी था, गुप्तादि उन राजवंशों से अपना सम्बन्ध जोड़ा जो अस्पृष्ट कमल-पुष्पा के समान थे, जिन में स्नेह, वादर, प्रेम और प्रतिष्ठा पूजोन्मूत थी और जो अमर रूपी अनेक शक्तिशाली राजाओं द्वारा सेवित थे। ये सम्बन्ध शातिवर्माने अपनी कन्याओं को उक्त राजकुलों में विवाहित करके स्थापित किये—जो कन्याएँ सूर्य की उन किरणों के सदृश थीं जो कमलाकली को प्रफुल्लित और विवर्धित करती हैं।

उक्त श्लोक का अत्येकालकार ध्यान देने योग्य है। कमलाकलि तब तक प्रफुल्लित एवं विवर्धित नहीं होती जब तक सूर्य की किरणें उस पर न पड़ें। कवि ने जिस कुशलता के साथ कन्या-प्रदायी अपने राजा की, सम्बन्धित राजकुलों की अपेक्षा, उच्चता और महानता की ओर संकेत किया है वह सराहनीय है। कवि के अनुसार गुप्तादि राजकुल कदमवंश से सम्बन्ध स्थापित होने के बाद ही अधिक अम्युदय एवं विकास को प्राप्त हुए।

★

सफ़रता की कोई भी कुंजी तब-तब काम नहीं करती जब-तब कि, आप स्वयं ही उस काम को न करें। ★

—श्रीरामान्य तिलक



चैतन्य-दृष्टि

श्रीगुरु ने छठ ब्रह्म में बसि रह्यो ध्यानयोग की आधारशिला
'ममदृष्टि' की बीड़नमुक्त मन विनोबाजी द्वारा एक झूठ
ब्याख्या। कुछ गौर में वह तो आध्यात्म विनोबाजी और
महाभारत भाष्यकार व्यासजी की निरूपण प्रणाली में
बस राखक मद्दत मिल्या।

★

रसमदृष्टि का अर्थ है—शुद्ध दृष्टि। शुद्ध
दृष्टि प्राप्त हुए बिना चित्त एकाग्र
नहीं हो सकती। मिह इतना बला बन्धराज
है, परन्तु चार बन्धन चक्कर पीछे देखा
है। जिससे मिह को एकाग्रता बँगे प्राप्त
होगी? शेर बोले, बिन्नी, इनकी ओर
हमेंना कितनी रहनी है। निगाह उनकी
बाँवनी नगावी हुई होती है। द्विज
प्राणियों का ऐसा ही हाल रहेगा। साम्य
दृष्टि धानी चाहिए। यह सागे मृष्टि
मग्नमय भावम हनी चाहिए। जैसा
मुझे खुद अपने पर विस्वास है, वैसे ही
सारी मृष्टि पर मेरा विस्वास होना चाहिए।
वही करने को मान ही क्या है? सब कुछ
गुप्त और परिम है।

“विश्व तद् भद्र यदवन्नि देवा।”
यह विश्वमग्नमय है, क्योंकि परमेश्वर
उपनी देवमात्र करता है। अग्रज कवि
शार्ङ्गिण ने भी ऐसा ही कहा है—
“इन्द्रा आराधन में विराजमान है
और उसका बनाया नष्टार सब ठीक तरह
से चल रहा है।”

मगर मैं कुछ भी निगाह नहीं है।
मनोत

अगर निगाह नहीं है, तो यह है मेरी
दृष्टि में। जैसी मेरी दृष्टि, वैसे ही
वह मृष्टि। यदि मैं लाल रंग का चमड़ा
बढ़ा लूँगा, तो सारी मृष्टि लाल-ही-लाल
दिखायी दगी, जलती हुई दिखायी देगी।

रामदास रामायण लिखते जाते एव
लिख्या को पढ़कर बताते जाते थे। हनुमान
भी गुप्त रूप से उसे सुनने के लिए आकर
बैठते थे। रामचंद्र रामदास ने लिखा था—
“हनुमान बन्धन-या म गये। वहाँ उठाने
सफेद फूल दसे।” वह सुनते ही वहीं
झट में हनुमान प्रकट हो गये और बोले—
“मैंने सफेद फूल नहीं दसे, लाल देने
थे। तुमने गन्त गिरा है, उसे गुप्तार
लो।” रामचंद्र ने कहा—“मैंने ठीक लिखा
है। तुमने सफेद ही फूल दसे थे।”
हनुमान ने कहा—“मैं खुद वही गया था
और मैं ही झूठा?” अतः मैं झगडा
रामदासी ने पास गया। उन्होंने कहा—
“फूल तो सफेद ही थे; लेकिन हनुमान
की बाँवें प्राण से लाल हो रही थी, इस-
लिए वे शुद्ध पुण्य उद्दे लाल दिखायी
दिये।” इस मधुर कथा का आनन्द यही

हैं मि, मसार की ओर देखने की ज़मी हमारी दृष्टि होगी, ससार भी हमें यैसा ही दिगायी देगा।

यदि हमारे मन को इस बात का निश्चय न हो मि, यह सृष्टि सुभ है, तो चित्त की एराप्रता नही हो सकती। जब तब में यह समझता रहूँगा मि, सृष्टि विमली हुई है—तब तब में ससार दृष्टि से चारो ओर देवना रहूँगा। पवि पछिया की स्तवता पे गान गाते हैं। उनगे कहना चाहिए मि, जरा एर बार पछी हीनर देखो तो। फिर उारी आगारी की राही बीमता गालूम हो जायगी। पछियों की गरीब बरारर आगे-पीछे एरनी नाचती रहनी है। उहे सतत दूसरी का भय लगा रहना है। निधिया की आसन पर एा

मिठाओ। क्या यह एराप्र हो जायगी? मेरे जरा निरट अति ही यह कुरं से उड जायगी। यह हरेगी मि, बही यह नुमे मारने को नहीं आ रहा है? जिनगे दिमाग में ऐसी भयानक कल्पना हैं मि, यह सारी दुनिया भयान है—नहारा हैं, उहे शांति बहों? जब तब यह सणाउ दिमाग से न निवलेगा मि, मेरा

रग में बबेला ही है, चारी सय भक्षण है, तब तब एराप्रता नही हो सकती। समदृष्टि की भावना करना ही उसका उत्तम मार्ग है। आप सर्वत्र मागत्य देखने लग जाइय, चित्त अपने-आप शांत हो जायगा।

जिगी दुखी मनुष्य को बर-बर बहने-वाली नदी के किनारे ले जाइये। उसगे स्वच्छ सात प्रवाह को देखकर उतावी बेचैनी

परापकारां

भवति नमस्ततय
कठोर्मनंवाम्बुभिभूरिविक्लम्बिता घना
अनुदता नागुरवागमृष्टिभि
स्वभाव शर्वेष वरोपधारिणाम ॥

—एरा प्र अने से पूज पूज जान है, नय पया के समय बादल शुभ जाते हैं, समर्पित प्राप्त करव सज्जा दिना हो जने हैं—परापकारिया का स्वभाव ही ऐसा है।

—यातिवसा

बस हो जायगी। यह अपना दुख भूल जायगा। उस झरने में, उस प्रवाह में, इतनी शक्ति पहाँ ने आ गयी? परमेस्वर की शुभ भक्ति उसगे प्रद हई है। यही मैं झरना का बड़ा ही सदर वर्णन है—

“अतिष्ठन्तीनाम्
अनिवेशनानाम्”
एगे ये झरने हैं।

झरना असब बहता है, उसका अपना कोई पर-बार नहीं, यह मन्गायी है। ऐसा पवित्र झरना एरा ण में मेरे मन को एराप्र बना देता है। ऐसे सुंदर झरने को देखकर प्रेम का, जान का खोत मेरे मन में क्यों न उमड पडे? यह बाहर का जड पानी भी यदि मेरे मन को इतनी शांति प्रदान कर सता है, तो फिर मेरी मानस-दरी में

यदि भक्ति और ज्ञान का चिन्मय झरना बहने लगे, तो मेरे मन को कितनी क्षान्ति प्राप्त होगी ? मेरे एक मित्र बड़े हिमाचल में-काश्मीर में घूम रहे थे। वहाँ के पवित्र पर्वतों के, मृदुर जल प्रवाहों के वर्णन लिख-लिख कर मुझे भेजते थे। मैंने उन्हें उत्तर दिया कि, जो जल-स्रोत, जो पर्वत-माला, जो मृम मगौर तुमको अनुभवमान आनंद देते हैं, उन सबका अनुभव मुझे अपने हृदय में हो सकता है। अपनी अंतर्मुखि में मैं निख उन सब स्पर्शपूर्ण दृश्यों की देखता हूँ; उन तुम्हारे बुगने पर भी मैं अपने हृदय के इस अत्य-दिव्य हिमाचल को छोड़कर नहीं आऊँगा।

"स्वावराजा हिमाचल ।"

स्मरणा की मूर्ति के रूप में जिस हिमाचल की उपासना स्मरणा करने के लिए करनी है, उसका वर्णन सुनकर यदि मैंने अपना कर्तव्य छोड़ दिया, तो वह उन्नी ही बात होगी।

साधन, चित्त की जल धान कीजिये। चित्त की मग्न-दृष्टि के देखने, तो फिर अपने हृदय में अन्त करने बहने लगेंगे। कथनाश्री के दिव्य तन्दे हृदय-बाग में समरने लगेंगे। पत्थर और मिट्टी की गुन बन्धु-देवता यदि चित्तशाय हो जाना है, तो फिर अंतर्मुखि के दृश्य देखकर क्यों न होंगा ? एक बार में प्रावणकार गया था। एक दिन समुद्र-किनारे बैठा था। वह अपार समुद्र,

उगकी धूँ-धूँ गर्जना, सागराज का समय, मैं स्तब्ध, निश्चेष्ट बैठा था। मेरे मित्र ने वही समुद्र-किनारे कुछ पत्र बंगरह आने के लिए ला दिये। उस समय वह सात्विक आहार भी मुझे जहर की तरह लगा। समुद्र की वह धूँ-धूँ गर्जना मुझे "मामनुस्मर मुद्ध च" इस गीता-वचन की याद दित्त रही थी। समुद्र सतत स्मरण कर रहा था और कम भी कर रहा था। एक लहर आयी, वह गयी, और दूसरी आयी। उसे एक क्षण के लिए स्थिति नहीं। वह दृश्य देखकर मेरी भूत-प्रात उठ गयी थी। आनिर उस समुद्र में ऐसा क्या था ? ऐसे क्षारे पानी की लहरों को उछलने हुए देखकर यदि मेरा हृदय उछलने लगता है, तो फिर ज्ञान और प्रेम के अथाह सागर के हृदय में हिमोंरे मारने पर मैं कितना नाच उठूँगा। वैदित्वा ऋषि के हृदय में ऐसा ही समुद्र हिलारे मारता था—

"अनगमुदे हृदि अतरायुपि
पूज्य धारा अभिचारशीली
समुद्रादमिमंघुमानुदारम्"

इस दिव्य भाषा पर भाष्य नितने हुए बेचारे भाष्यकारों की भी कमीह होने की बीजत आ गयी। कौनो वह धूँ की धारा ? कौनो वह मधु की धारा ? क्या मेरे अंतःसमुद्र में सारी लहरें उठेंगी ? नहीं, नहीं। मेरे हृदय में तो दूध, मधु और धा की लहरें हिलारे मार रही हैं।





30967

अग्निरस्य महान् आर्घ्यवीरः

आयत सहज सुलभता के कारण अग्नि का महत्व आज हमारी कल्पना में अंकित नहीं होता, किंतु मानव इतिहास में अग्नि से क्या आविष्कार आज तक नहीं हुआ। मनुष्य का आज तक का सारा इतिहास अग्नि के रोध की ही देन है। ऋग्वेद का अग्निसूक्त बड़ा जाइये, आरको अग्नि की महिमा की एक कांकी मिल जायेगी।

*

वसुधरा पर जिस दिन अमृत-पुन 'मानव' ने अपने नेत्र खोले, उसी दिन से उसने अपने-आपको असहाय पाया। असहाय इस अर्थ में कि, उसके पैरों में हिरण के बच्चे के समान दौड़ने की क्षमता नहीं—पक्षियों के समान उड़ने के लिए उसे पख नहीं दिये गये थे—मछलियों के समान तैरने की प्रतिभा उसमें नहीं थी—वह पेड़ पर बदरों के समान उछल-बूद भी नहीं सकता था—उसे पक्षियों के समान घोंसले भी बनाना न आता था—मधुमक्खियों की तरह छत्ते भी वह नहीं बना सकता था—कोयल के समान उसके कंठमें स्वर भी न था।



अच्छल का दीप
[चित्र - भारत-कला मयन, कश्मी में सगृहीत उत्ताद रामप्रसाद के एक रंगीन चित्र की रेखा प्रतिरिति]

वह दीमक और चींटियों से भी अधिक बूढ़ और प्रतिभाहीन था। ऐसे असहाय वेद में इस पृथ्वी पर मनुष्य का अवतार हुआ। सब प्रकार से हीन, इस पार्थिव प्राणी ने अपने नेत्र भू-दे और भीतर-ही-भीतर अपने अंतःकरण में पाठरता से अपनी स्थिति को समझने का प्रयत्न किया। उसके आश्चर्य की सीमा नहीं रही, जब किसी ने उसे उत्तेजित करते हुए कहा -
घोस्ते पृष्ठ पृथिवी
सद्यस्थमात्मान्तारि
सः प्रमुद्रो योनि ।
विश्वारथ धपुसा
त्व म भि ति ष्ट
पृ त न्य त ॥

—हे मर्त्य, तू अपने को छोटा मत समझ। तू विशाल है, विस्तृत द्यौ-खोब तेरा पुच्छ है, पृथ्वी तेरा आश्रय-स्थान है, अतरिक्ष तेरी आत्मा है, समुद्र तेरी योनि है। खुले हुए नेत्र से देख—तू समस्त परिस्थितियों पर विजयी होगा। हे मर्त्य, तू अग्नि है, अग्नि-मुत्र है। पृथ्वी के गर्भ में से अग्नि का रानन बर-बह अग्नि तेरी विजय का एकमात्र आश्रय होगी।

असहाय मानव ने अत-चरण की इस वाणी का स्वागत किया। एक व्यक्ति ने नहीं, मानव-भ्रमण्डि ने एक स्वर में घोषणा की— “वयं स्वाम गुप्ततो पृथिव्या अग्नि रानन्त उपस्थे अस्या” ‘हम सब इन पृथ्वी के गर्भ में गै निरतर अग्नि का रानन करने रहेंगे।’ इस कार्य के लिए मानव-भ्रमण्डि में गुप्तति रहेगी, ऐसा आदमी-प्राणियों का विश्वास था। मृष्टि के आदि में मनुष्य ने जो प्रतिज्ञा की, उमगी उमने आज तक निभाया है। बार-बार ऋचा के शब्दों में मनुष्य ने कहा—“तत त्वमेम् मुपनीतमग्निम्, पृथिव्या मदभ्यादग्निं पुरीष्यमद्विगरन्वत् सनामि।”

कहा जाता है कि, जिस व्यक्ति ने नवनोत

अग्नि-रानन के इस कृत्य में नेतृत्व किया, वह अथर्वा या अगिरस था। ऋचाओं का आदेश पाकर स्थान-स्थान पर मनुष्य ने अग्नि का रानन किया। निरा चिरस्मरणीय क्षण में अपने समया अग्नि उपस्थित हुई, अग्नि ने मनुष्य का मस्तक उसके सामने नत हो गया। सहज स्वर से उसने बट में ऋचा के रूप में मानों यह पहली स्तुति निकली—

‘अग्निमीळेपुरोहित
यज्ञस्यदेव मूर्तिव जम्।
होतार रत्नघातमम्’—
अत-चरण में त्रि-
की प्रथम प्रेरणा ने मनुष्य ने अग्नि का आविष्कार किया, उस आदिदेव पर पुरष का नाम भी मनुष्य ने ‘अग्नि’ रख दिया। यह भौतिक अग्नि परम थोछ आत्म-अग्नि

मेरा कवि

सूँगा मैं उतना हो रस तो,
होगा जितना मेरा पात्र।
हो जितना कृतविद्य ग्राम की,
प्रकृति-पाठशाला का छात्र।
जाति यही है, राष्ट्र और भी
यही, विद्वत् का क्या कहना,
जल में, बल में और गहन में
मैं हूँ कौटुम्बिक कवि-मात्र।
—मैथिलीशरण गुप्त

का दूत होने के कारण ‘अग्नि-दूत’ कहलाया और मानवमात्र ने ‘अग्नि इन वृषी महे’ शब्दों में उमगा बरष किया—स्वागत और अभिनन्दन किया। अग्नि की सहायना में मनुष्य ने अपनी परिस्थितियों पर विजय प्राप्त की। उसने असहाय होने हुए भी अपने को सबसे अधिक उत्कृष्ट बना डाला और परातल के रूप को परिवर्तित कर दिया।

मानव-प्रयासों के इतिहास में अग्नि का भयन अब तब चला आ रहा है—सभ्यता और सभ्यता का इतिहास इस अग्नि के खनन, भयन और दोहन का इतिहास है। जिस दिन अग्नि का यह यज्ञ समाप्त हो जायेगा, उस दिन इस धरातल से मानव का भी खोप हो जायेगा। अग्निहोत्र का एतमात्र अधिकारी इस सृष्टि में मनुष्य है। अन्य प्राणी बलिष्ठ, प्रतिभा-सम्पन्न, रूपवान और अन्य गुणों से परिपूर्ण होते हुए भी अग्नि रानन के अयोम्य और इस यज्ञ के अनाधिकारी हैं। इस वस्तुधरा का वह स्थल धन्य है, जहाँ अगिरस ने भौतिक अग्नि के दर्शन किये।

विज्ञान के आविष्कारों में सबसे बड़ा आविष्कार अग्नि का आविष्कार है। हमारी यह भावना है कि, यह आविष्कार भारत की भूमि में ही बही पर हुआ होगा अथवा जिस-जिसी ने जहाँ-जहाँ भी, इसका प्रथम

साक्षात् किया हो, वह हमारा प्रथम पूर्व-पुरुष था और हम उससे उत्तराधिकारी हैं। जब कभी भी सोमयाग में अग्नि का भयन होता है, इस पूर्व-पुरुष 'अध्वर्यु' का ऋक् के मंत्र से स्मरण किया जाता है—'त्वामग्ने पुष्करादध्यध्वर्या निरमग्यत। मूर्ध्ना विश्वस्य वधत।'।

अग्नि देवताओं में सबसे छोटा बहुलाया और इसलिए सब से प्यारा, यह अतिथि माना गया और इसीलिए सबसे अधिक इसका सत्कार हुआ। मर्त्यलोक के मानव के पास सबसे अधिक त्रिय वस्तु थी धृत। मानव ने उससे इस अग्नि का समादर किया—'धृतवीधमतातिथिम्, धृतेन वर्धया-मसि।' ग्रहम्-सृष्टि में जो स्थान सूर्य का था, मानव-सृष्टि में वही स्थान अग्नि का रहा और इसीलिए जहाँ 'गृह्योऽग्नोतिग्नोति सूर्यं' वह घर सूर्य का स्मरण किया, वही 'अग्निग्नोति ग्नोतिरग्नि' भी उन्होंने कहा।

*

पात्रता

एक बार जान रस्किन एक विश्वविद्यालय में प्रोफेसर हो कर गये। विद्यार्थी-बहुत बड़ी संख्या में उनका लेक्चर सुनने आये, लेकिन जब उन्हें मालूम हुआ कि, भाषण दूसरे दिन के लिए स्थगित हो गया है, तो उन्हें काफी निराशा हुई। दूसरे दिन फिर वे लोग वहाँ पहुँचे, मगर कम संख्या में, दूसरे दिन भी भाषण स्थगित हो गया। इस तरह लगातार चार दिनों तक रस्किन का भाषण स्थगित होता रहा। जब पाँचवें दिन आया, तो केवल दस-बारह ही छात्र वहाँ आये थे। सतोप-वृत्ति की मुद्रा में जान रस्किन ने सब पर चढ़ते हो कहा—“मित्रो, अब क्या की काफी छँटाई हो चुकी है। आजसे हम अपना काम शुरू कर सकते हैं।”

—वार्त्स एम् को

*

किला अहमदनगर

मौलाना आजाद के एक संस्मरणात्मक लेख का सविष्ट हिन्दी-रूपान्तर

*

अज साजोबगें काफिर-ए-बेगुनो मरुमं ।

बेनालामो रयद जरये बरखाने मा ॥

—हम अपने आपको भूते हुए हैं, हम से अपने काफिरों की हालत न पूछ। हमारा काफिरों का इस प्रकार जा रहा है कि, काफिरों की घटियों से कोई दुःख का भाव भी पैदा नहीं होता।

कल मुघल तक बुजुत-आयाद (विस्तीर्ण) बम्बई में फुर्माने-जग-होमला की धेमायगी (समय की न्यूनता) का यह हाल था कि, ३ अगस्त का लिखा हुआ मरतूरे-अफर (मासा-अम्माधी पत्र) भी अजमलमान साहब के हवाले न कर सका कि, आपसो भेज दें। लेकिन आज अहमदनगर के हिमारे-जग (तम बिजे) में उमवे होमल-ए-फराग की आमुशगियों (महान् धर्म) देगिये कि, जो चाहता है, दगलर-ये-दगलर (अय-वे-अय) सिपाह कर दू (लिंग डाटू)।

नौ महीने हुए, ४ दिसम्बर १९४१ को नैनी के मरलजी-कैदगाने का (केद्रीय-पारागार का) दरवाजा मेरे लिए खोला गया था, ६ अगस्त १९४२ को मका दो बजे किल-ए-अहमदनगर (अहमदनगर के किले) के हिमारे-बोहला (पुराने घेरे) का नया फाटका मेरे पीछे बंद कर दिया गया। इस कारमान-ए-हुजार मेवा-ओ-रय नबनीत

(इस हजारों रग-रग वाले कारमान) में किलने ही दरवाजे खोले जाते हैं, ताकि बन्द हों, और किलने ही बंद किये जाते हैं, ताकि खुले। नौ माह (महीने) की बजाहिर (प्रबट में) कोई थड़ी मुदत नहीं मालूम होती।

दो बरबटें हैं आलमे-मफरत में खान की।

—(यह मुदत) बेमजरी की अवस्था में स्वप्न की दो बरबटें मात्र हैं, लेकिन सोचना है तो ऐसा मालूम होता है, जैसे तारीख (इतिहास) की एक पूरी दालान गुजर चुकी हो।

बू सफहा तमाश सुद, औराकबर गरदद।

—दर पत्रों का एक पृष्ठ समाप्त हो जाता है, पन्ना उगट दिया जाता है। नयी दालान जो शुरू हो रही है, मालूम नहीं मुस्तबकिल (मविप्प) इसे बन्द और किस तरह गतम कर देगा।

फरेबे जहों किस्म ए-रोशन अस्त।

बबी ता बेह जायद जय आधिस्तन अम्न ॥

—हुनिधा के छत्र-अपट की कथा में तो सब जानते हैं, परन्तु यह देखो कि, यह काली रान और क्या-क्या रग दिखाती है?

यह अजीब इतिहास (समय) है कि, मुल्क के रग-रग सारे तारीखी मुनामात्र

(ऐतिहासिक-स्थान) देखने में आये।
नगर अहमदागर का किला देखने का
कभी दृष्टिपात्र नहीं हुआ था। किसी समय
जब यम्बई में था, तो इरादा भी किया
था, नगर फिर हालत में मोहलत न दी।
यह शहर भी हिन्दुस्तान के उन सास
मुदायारा में से है, जिस के नामों के साथ
सादियों के इनपलाओं की दास्तानें जुड़ी
हुई हैं। पहले यहाँ भेंवर नाम की नदी के
किनारे, एक ऐसी नाम का गाँव आबाद था।

पन्द्रहवीं सदी के आखिर में
जय दवन की महमनी हुक्म-
मत समझकर पड़ गयी तो
'मलिक अहमद-निजामुल-
मुल्क भेरी' ने अल्लो-इस्ते-
काल (धर्म और साहस
का दावा) उठा लिया, और
भेंवर के पास अहमदनगर की
नींव रत कर उसे हम्किम-
नदी का नहर (नगर जहाँ
प्रगुता अभिपारी रहता हो)
बनाया। उस वक्त से निजा-

मदारी-राज्य की राजधानी यही शहर
का गया। 'परिस्ता', जिसका रानदान,
मार्जिदरों से आकर यही आबाद हुआ
था, लिखता है—“कुल शालो के अंदर इस
शहर में यह दीवार-य घुसजत (शोभा-और
विरतार) पैदा कर ली थी कि, पणदाद
और बाहिरा का मुवावला करने लगा था।

यस नामगाल उगत करमुदनी मुयाद,
दीरोज रोने कादिया आईस राना युद !

—जो पायगाल हो गया, उसकी पाय-
माली न देख। इससे क्या फायदा ?
यैसे तो यह मजबूत भी बल तक अपनी
जगह एवं शीशमहल के समान थी।

मलिक अहमद ने जो किला बनाया था,
उसका हिसार (चहारदीवारी) मिट्टी
का था। उसने लकड़े घुरहान निजामशाह
अब्दुल ने उसे मुनहदिम करने (तोड़कर)
अज-सारे-नौ (नये सिरे से) परवर का
हिसार (चहारदीवारी) बनाया, और



[भीताना आबाद]
[जिस की पन भोवे]

उसे इतना ऊँचा और गज-
बूत बनाया कि, मिट्ट और
ईरान तक उसकी मजबूती
का मजमना (प्रसिद्धि)
पहुँचा। १८०१ की मरहटी
की दूसरी लड़ाई में जनरल-
बेतोजली ने (जो आगे चल-
कर ड्यू-ऑफ़ विंगिटा
हुआ) इस का मुआयना
किया था। यह हालें कि,
तीन सौ साल के इमलाम
(क़तियों) देस चुग था,

फिर भी इसकी मजबूती में फर्क नहीं आया
था। उस (बेतोजली) ने अपने मुरातिले
(पन) में लिखा था कि, दारा के सारे
किलों में सिर्फ़ बेतोज का किला ऐसा है,
जिसे मजबूती में लिहाज से दूसरी अच्छा
कहा जा सकता है।

कारणों रफता-य अदालत ए-जाइस पैदास्त,
जौनिजौ हाकिम-शूर-साह गुजार उत्पादरत।

—बाकिर शरा गया, लेकिन उसका

बैभव अब भी उन-निसानों में शोक रहा है, जो निगान, हर रास्ते पर (काफ़ी-बाग़ों के बंदों में) बने हुए हैं।

यही अहमदनगर का विंग है जिसकी पयरीली दीवारों पर, बुरहान निजाम शाह की बहन चौदवीश ने, अपने अम्म-ब-शुजायन (दुदप्रतिज्ञता और शीर्ष) की माइगारे-जमाना (सुधार में गंदेब बाद रानी जाने वाली) दाम्नाएँ कुदा की थी (सोदी थी), और जिन्हें तारीख (इति-हाम) ने पत्थर की मिश्री में उगार कर अपने औराकी-नफ़ातिर (पत्थों और ग्रथों) में महजुज (मुरसिन) कर दिया है। बप-पत्थों जुर-ए-म्याको हाटे अह-ए-पीतन की, कि अज जमने-शे-बैभव-हजारों दाम्नों-दारद।

—एक घूट परती पर छिटकी और इस प्रकार बैभवशाहियों का परिणाम देना, तो मुझे मान्य होगा कि, परती की पुति में जो जानेवाले उस घूट की भौति हम में जमने-द और मुसल जमें हजारों बैभवशाहियों की दाम्नाएँ छड़ी पड़ी है।

इसी अहमदनगर के मारकी (लडाइयो) में अछुरहीम मानमानों की जवामशी (शोष) की बह पटना दिवायी पदवी दे, जिनका हाउ अछुद बाकी निहावन्दी और समसामुहोता ने हमें गुनाया है। जब अहमदनगर की मद्द-गर बीजापुर और गोंयकुटा की म्नाएँ भी आ गयी और मानमानों की कर्ग-गुन-आदाद (अग-मन्धर) म्ना की मुह-ह-ह-ह की ताकतवर फोत्र में टवराना पदा, तो दोस्तवान लोदी

नवनीत

ने पूछा था—“चुनी अम्बोरे दर पेग व फतहे आम्मानों, अगर हावेसा रुदहद, जाये निचों दहीद कहे शुमार दरमावीम—” (“जिस समय तुम्हारे सामने शत्रु की भयवर सेना है, और तुम अपनी विजय का एक ईश्वरीय देन समझते हो, परंतु इसके विपरीत यदि कोई अप्रत्याशित घटना घट जाये, तो यदि हम तुम्हें हूँ तो तुम्हारा निगान और पना कहीं होगा?”)

मानमानों ने जवाब दिया था, “जो काम-ए-मा।” (मेरी लाश के नीचे!) व नहनों उनामुन या तुवम्मे बैवना, उनम्भदरों दूनल-आलमीन अजमीन वज कज

—हम हमें शूरवीर हैं कि, कोई हमारे बीच नहीं था सस्ता, हमारा मुराजग नहीं कर सता। अगर कोई बीच में आया, तो फिर या हम मगार में नहीं रहते या फिर वहीं उगकी गमाधि बन जाती है।

अहमदनगर के नाम ने हाफ़्ते (स्मृति) के चितने ही भूटे हुए नुक़ुन (निगान) एकाएक ताजा कर दिये। अहमदनगर अपनी छ मी साउ की दाम्नाएँ—बृहत् (पुरानी दाम्नाएँ) जिये बरत-गर-बरत (पत्रे पर पत्रा) उगटना जाना। एक सफ़े (पत्रे) पर अभी नज़र जमने न पायी कि, दूसरा गामने आ जाया।

माहे-माहे बाज म्यों यो दस्तरे-मारोता रा। ताजा म्नाही-दास्तन गर दागहायेमीला रा!!

—अगर तुम अपने मोने के पावों का हंग रम्ना चाहते हो, तो हम पुगने सब को पढ़ दिया करेंगे।

मुझे खयाल हुआ, अगर हमारे कैदों-
बन्द के लिए—(हमें बन्दी रखने के लिए)
यही जगह चुनी गयी है, तो इन्तेखाब
(चुनाव) की मौजूनियत (अच्छाई) में
कलाम नहीं (का
जवाब नहीं।) हम
खराबातियों के लिए
(बरबादी लोगों के
लिए) ऐसा ही
खराबा (बीराना)
होना था।

बापक जहाँ कदु-
रत, बाज ई-खराबा
जाईस्त—

—ससार से हटे
हुओ के लिए अगर
कोई उचित निवास-
स्थान हो सक्ता है,
तो वह बीराना ही
हो सकता है।

स्टेशन से किले
तक का रास्ता
ज्यादह-से-ज्यादह
दस बारह मिनट
का होगा। किले
का हिसार (घटार-
घोबारी) पहले

किसी कदर फासले पर दिखायी दिया।
फिर यह फासला थद लमहों (कुछ खणों)
में तय हो गया। अब इस दुनिया में जो
किले के बाहर है और उस दुनिया में

जो किले के अंदर है, सिर्फ एक बंदम
का फासला रह गया था। चश्मजदन
में (पलक मारते) यह भी तय हो गया,
और हम किले की दुनिया में दाखिल हो
गये। गौर (विचार)

भूलता हूँ

तुम हो जहाँ के शायद,
मे भी वहीं रहा हूँ।
कुछ तुम भी भूलते हो
कुछ मैं भी भूलता हूँ॥
मिटता भी जा रहा हूँ,
पूरा भी हो रहा हूँ।
मे किसकी आरजू है,
मे किसका मुहमा है॥
सब से बड़ा गुनह है
साधूमिये — मुहब्बत*॥
अब बसता था सज्जा से
मुजरिम* हूँ बेखता* हूँ॥
कैसे फना* भी मुसम
पाने बका* भी मुसम।
मे किसकी इस्तिदा* हूँ,
मे किसकी इन्तहा* हूँ॥
—'किराक' गोरखपुरी

१ इच्छा, २ धार्यना, ३ प्रेम से अनभिज्ञ
रहना, ४ जुर्म करनेवाला ५ निर्दोष ६ शत्रु
का अधिकारी ७ जीवन की महान चेतावनी
८ प्रारम्भ ९ अंत

बोड़ी और चौदह गज गहरी थी, और जिसे
जनरल बेलेग्रे ने एक सौ आठ फुट
चौड़ा पाया था, मुझे दिखायी नहीं दी।
दरवाजे के अंदर दाखिल हुए, तो एक

कोजिय, तो जिदगी
के हर सफर का
यही हाल है। खुद
जिदगी और मौत
का आपस में फासला
भी एक कदम से
ज्यादह नहीं होता।
'हस्ती से अदम
तक नफसे-बन्द
की है राह,
दुनिया से गुज-
रना सफर ऐसा है
कहाँ का?'

—'अस्ति' से
'नास्ति' का सफर
कुछ लम्बा नहीं है।
सिर्फ बंद सौसो
का रास्ता है।

किले की खन्दक,
जिस के बारे में
अबुलफजल ने लिखा
है कि, चालीस गज

मुस्ततिल (आपतकार) अहाता (आंगन)
सामने था ।

यह इतनी बसीब (विस्तीर्ण) नहीं कि,
इसे मंदान कहा जा सके, फिर भी अहाते
के बिंदानियों (बंदियों) के लिए मंदान
का काम दे सकती है । आदमी बन्दे
से बाहर निकलेगा, तो बहुभूत (अनुभव)
करेगा कि, खुली जगह में आ गया ।

सहन (आंगन) के वस्त्र (बीच) में
एक पुन्ना (पक्का मजबूत) चबूतरा है,
जिग में बड़े का मस्तूल (स्तम्भ) नस्य
(गाड़ा हुआ) है । मगर झड़ा उतार लिया
गया है । मैंने मस्तूल (स्तम्भ) की ऊँचाई
देखने के लिए सर उठाया, तो वह इसारा
कर रहा था ।

यही मिलने तुझे नाला-ए-बुन्द तेरे ।

—तुझे तेरे आकाश-व्यापी दुखगान
यही मिले ।

यहाने के सुमानी (उत्तरी) तिनारे
में एक पुगती टूटी हुई पत्र (समाधि)
है । नीम के एक दलन की शाखें रुख पर
साया करने की काजिन कर रही हैं;
मगर कामयाब नहीं होती । पत्र के सिट्ठाने
एक छोटा सा ताल है, जो अब चिराम
से टांगी है, मगर मिहराज की रगत बोल
रही है कि, यहाँ अभी एक दिया जला
करता था ।

इसी घर में जगया है,

चिरागे आरजू बरगो ।

—हम ने इसी घर में बरसों अमितायाओं
के दीप जलाये हैं ।

मालूम नहीं, यह चिरागी क्या है ?
बादनीबी की हो नहीं सकती, क्योंकि उसका
मजबराविले के बाहर एक पहाड़ी पर पाया
जाता है । और किसी की हो, मगर कोई
मजहलूल-हाल शस्त्रियत (सर्व-साधारण-
व्यक्ति) न होगी । बरना जहाँ बिले की
सारी इमारतें गिरायी थी, वहाँ इसे भी
चिरा दिया होता ।

मुबहान अल्ला ! (अल्लाह का
शानवाला है) इस रोजगारे सराब
(उजड़े हुए सखार) की चोरानियों
(उजडापन) भी अपनी आशादियों के
बरिदये रखती हैं । इस पुरानी पत्र को
चोरान भी होना था, तो इसलिए कि,
कभी हम बिन्दानियाने-नरवाना (मन्य
बंदियों) के चोर-और-हूंगाने (ऊपन)
से आवाद होता था ।

कुत्तों का तेरी बदन सियाह-भस्त
के भजार

होया सराब भी तो मराना होएगा ।

—तेरे बदनरे और मतबारे नेत्रों के
आहनों की जो समाधि होगी, अगर किसी
प्रकार वह उजड़ भी जाये, तो उस उजड़ी
हुई समाधि के स्थान पर भी निदपर ही
ममूताला बन जायगी ।

★

पापी मे भी पाप का विचार करनेवाला अधिक भयकर होता है ।

—आद्रे और

★

हीराकुणी

अवनीन्द्रनाथ ठाकुर की एक शिक्षावार्ता का संनिष्ठ हिन्दी रूपान्तर

★

ग्वालिन का नाम हीरा था और गाय का नाम कुणी। हीरा के एक गद्दीने का बेटा था और गाय के भी एक ही मास की बछिया थी। हीरा रायगढ का पहाड़ लाप्रकर एव राजा साहब के यहाँ दूध देने जाती थी। राजा साहब हर रोज़ उनकी कुणी गाय का स्वच्छ और ताजा दूध पिया करते और बेचारी बछिया दूध के लिए औसू बहाया करती। किसी भी दिन हीरा के मन में उस गरीबिनी के प्रति न दया हो उत्पन्न हुई और न उसके औसुओं का कुछ प्रभाव हुआ।

दूध दूहने के समय कुणी गाय अपने बछिया की ओर टकटनी लगा कर देखा करती और अपनी मूक भाषा में उसे बुलाती। बछिया भी उमग भरी अठललियों करती और दूध पीने के लिए तड़प उठती। लेकिन हीरा गाय को दुह लेती और बछिया को खूटे से धोंधे रखती। बेचारी बछिया अपनी माँ की गोद में दुल बिह्वल हो मुह भी नहीं छिपा पाती।

किन्तु हीरा इस ओर कबो ध्यान दे? वह तो सुबह-शाम दूध दूह कर किले में चली जाती और दिन ढले लौटा करती थी। आकर सब से पहले वह अपने पुत्र को दूध पिलाती और फिर मीठी-मीठी लोरियाँ

गा-गा-कर उसे सुला देती। फिर वही बछिया को पकड़ कर कुणी के पास ले जाती। बछिया अपनी माँ के स्तनों में दौडकर मुँह लगा देती, लेकिन उसे दूध के नाम कुछ बूढ़े ही मिल पाती थी। कुणी भी मौन कातर भाव से उसके कोमल बदन पर अपनी जिह्वा फिरा-फिरा कर उसे सुला देती।

एक दिन हीरा किले पर दूध बेचने के लिए गयी, तो खजाची ने दाम चुवाने में देर कर दी। लौटते समय किले का दरवाजा बंद हो गया।

हीरा ने मिडगिबाबर कहा, "यह दरवाजा तो खोलो!"



पथ पान
चित्र श्री चावडा

सिपाहियों ने जितनी देदी, "दरवाजा खोलने का हुक्म नहीं है।" हीरा के गान-हृदय में अपने पुत्र के प्रति जा चिता उत्पन्न हुई, उसमें वह चीत्कार कर उठी।

व्याकुल हो असहाय भाव में रोने लगी।

सिपाहियों की मिश्रित स्त्री,—“मेरा बेटा बचारा मुझमें भूखा होगा। आपने पैरा पड़नों हैं, कुपया आज-भर के लिए ही दरवाजा खोल दीजिये।” किन्तु सिपाहियों के ऊपर इन मिश्रितों का क्या प्रभाव पड़ता। वे हँस कर रह गये।

रात्रि के अंधकार का विदीर्ण करने हुए आकाश में तारे निकल आये। हीरा स्वर्ग का घर पहाड़ की तट्टी में ही था। अचानक निस्तब्धता भग करनी हुई कुर्शी

गाय, के रँमाने की आवाज हीरा के कानों में आ टपरायी। कुर्शी रो-राकर अपनी बछिया के लिये विनय कर रही थी। कुर्शी के इस विलाप ने हीरा में एक

नवनीत

अनर्था की जड़

एक दिन शंतान एक आदमी के पास पहुँचा—“तेरा अतकाल अब समीप आ चुका है, किन्तु यदि तू चाहे, तो मृत्यु से बच सकता है।”

“अब विह्वल व्यक्ति ने कातर स्वर में प्रश्न किया—“कैसे?”

“अपने नौकर की हत्या कर डाल, अपनी पत्नी को खून पीट तथा इस प्याले को होठों से लगा सारी चिंताओं से मुक्त हो जा।”—शंतान ने उत्तर दिया।

निरपराध नौकर की हत्या कहे? अपनी पतिव्रता पत्नी का अपमान कहे? नहीं। इससे तो अच्छा होगा। “और उस पबड़ाए हुए व्यक्ति ने शंतान के हाथ का प्याला होठों से लगा दिया।

किन्तु मरिचा का प्रभाव घटते ही उसने अपनी प्रिय पत्नी को पीटना शुरू कर दिया और जब उसका नौकर बीच-बचाव के लिए आया, तो गुस्से में उसकी हत्या भी कर डाली।

—यज्ञे

नयी शक्ति का संचार किया। रोना-धना और मिश्रित करना छोड़, वह किले में चारा ओर घूमने लगी— वही से बाहर निकलने की कोई राह दीख जाये।

रायगढ़ के किले की दीवारें बहुत पुरानी थी। उनके चिनारे पहाड़ की ओर लुढ़कने गए थे। एक पोपल का वृक्ष भी उसी ओर झुका हुआ था। तारों के टिमटिमाते प्रकाश में हीरा का भगर के नुकीले दाँतों की तरह वहाँ के चमकीले परपर दिलायी दे गये। अपनी समस्त शक्ति मचित कर, एक-एक परपर पर पैर रखते हुए वह धीरे-धीरे उतरने लगी और कुछ घंटी के धन के बाद ही वह किले के बाहर थी।

जब वह घर

पहुँची, तो मारा रायगढ़ मो रहा था। उसका नन्हा भी रो-रोकर नींद की मोड़ में विधाम कर रहा था। हीरा ने प्रपट कर मीने हुए बालक को अपने मीने में

लगाया। तभी किसी प्रकार अपनी रस्सी तोड़ कुण्डी की बछिया भी अपनी माँ के सीने से आ लगी। हीरा ने इस बार उसे अलग नहीं किया। माँ-बेटी के मिलन का यह अपूर्व दृश्य वह निनिमेष नेत्रों से देखती रही। आँखों से प्रेमाश्रु छलक आये और उसके गालों को भिगोते हुए जर्मीन पर आ रहे।

सबेरा हुआ। भगवान् भास्कर आकाश की ऊँचाई पर चढ़ने लगे। रायगढ़ के राजा साहब की गुलाबी नींद टूटी और उठने के साथ ही हर दिन की तरह उन्होंने दूध माँगा। किन्तु आज हीरा बालिन के दूध से भरा रहने वाला घड़ा खाली पड़ा था।

दुःख होते ही सिपाही दौड़ा हुआ हीरा के पास दूध लेने आया। हीरा ने स्पष्ट इन्कार कर दिया—“मेरे पास दूध नहीं है। राजा साहब से कहना कि, कुण्डी ने आज दूध ही नहीं दिया है।” परन्तु राजा

साहब का सिपाही यो कैसे लौट सकता है? वह हीरा को ही पकड़ कर ले गया।

हीरा राजा साहब के सामने पेश की गयी और हीरा ने बिना किसी शिस्तक के सारी कहानी बता दी। उसने दूध देने में अपनी असमर्थता भी प्रकट कर दी।

आशा के विपरीत राजा साहब नाराज नहीं हुए। उल्टे उनकी आँखों में सहानुभूति के अश्रु छलक आये। प्रसन्न होकर उन्होंने हीरा को एक गँव इनाम में दे दिया।

अर्ध रात्रि में, अपने पुत्र के लिए, प्राणी को सकट में डालकर हीरा के घर पहुँचने की यह कहानी पूरे रायगढ़ में फैल गयी। उसके साथ ही, कुण्डी गाय की कहानी भी लोगों को मालूम हो गयी और मानो हीरा व कुण्डी के प्रति अपनी थोड़ा प्रकट करने के लिए ही उन लोगों ने उस तलहटीवाले बाँव का ही नाम ‘हीरा-कुण्डी’ ग्राम रख दिया।



पद्म लक्ष्मण पम्पाया बक परमधार्मिक।

शनं शनं पद घत्ते जीवाना वध सक्रिया ॥

—देखो लक्ष्मण, पम्पापुर का यह बगुला कितना धार्मिक है! वह इतनी सावधानी से पैर रखता है कि, कही कोई जीव-जंतु कुचल न जाये।

राम की वाणी सुनकर पास बैठा भेंदक बोला—

सहवासि विजानाति सहवासि विषेष्टिताम्।

बक कि वर्ण्यते राय ये नाह निष्कुलीकृत ॥

—किसी के असली स्वभाव को उसके सगी-साथी ही भली भोति जान सकते हैं। हे राम, आप प्रशंसा क्यों कर रहे हैं, इसने तो मेरा सारा कुटुम्ब खा डाला।

—‘रत्नमजरी से



विद्यु सत्त्व

कला, दर्शन एवं विज्ञान की अनुभूतियों का चरमोत्कर्ष एक ही त्रयविंदु या स्पर्श करता है, इस तत्त्व को आधुनिक वैज्ञानिक सोचों के मध्य द्वारा भी हस्ताचदनी जोड़ी में यहाँ भी सहज सुबोध रूप से स्पष्ट किया है।

★

प्लाच नामक एक जर्मन विज्ञानाचार्य ने गणित के अष्टादश प्रमाणों द्वारा यह सिद्ध किया कि, प्रवृत्ति की गति-विधि कुछ निश्चित नियमों के आधार पर नहीं चलती, बल्कि बीच-बीच में उसकी गति में कुछ विपर्यय, कुछ विचित्र सामयिकालियों देखने में आती हैं। प्रारम्भ में वैज्ञानिकों ने इस विरोधी सिद्धान्त का यदा विरोध किया या उसका मजाज उड़ाने की चेष्टा की, पर वह ऐसे अष्टादश प्रमाणों पर आधारित था कि, वह मिटने के बजाय दिन-भर-दिन अधिव गहराई में अपनी जड़ें जमाता चला गया।

प्लाच का यह प्रातिपक्षी सिद्धान्त 'क्वांटम-थियरी' के नाम से आधुनिक विज्ञान-जगत में प्रसिद्धि पा चुका है। प्लाच के इस सिद्धान्त ने अपने प्रारम्भिक रूप में केवल यह गुनाया कि, प्रवृत्ति की चारवाद्यों एक गुनिश्चित सरल गति में नहीं चलती, बल्कि बीच-बीच में झटकों द्वारा अथवा बूद-पाद में आगे बढ़ती हैं। आइन्स्टीन ने भी यह निर्देशित कर

दिया कि, प्लाच ने उस सिद्धान्त को सदा के लिए चिरा दिया है, जो विरस की प्राप्ति में कार्य-कारण के त्रय को अनिवार्य रूप से उरजाह देता है। पिछले वैज्ञानिकों का यह विद्वान्त था कि, किसी वस्तु अपना घटना की 'न' स्थिति की परिणति स्वाम-विव नियम के त्रय में निश्चय ही 'त' स्थिति में होनी चाहिए। पर प्लाच के सिद्धान्त ने यह सिद्ध कर दिगाया कि, 'न' स्थिति की परिणति 'त' में हो हो यह जरूरी नहीं है, वह उस स्थिति को एक दम से लम्बर 'ग' अथवा 'भ' स्थिति में भी परिणत हो सकता है। यह 'ग' में परिणत हो गयी या 'भ' में यह प्रवृत्ति की गामतयाली पर निर्भर करता है।

अब 'क्वांटम सिद्धान्त' ने दो महत्वपूर्ण बातें प्रमाणित कीं। एक तो यह कि, प्रवृत्ति में तथा जीवन में इच्छा-शक्ति की स्वतंत्रता के लिए पूरी गुनाहग है और दूसरी यह कि, प्रवृत्ति में कार्य-कारण का कोई ब्यावत् निश्चित नियम

चलनोत

काम नहीं करता और अनिश्चित्य और अनियमितता उसमें अपवाद-स्वरूप नहीं हैं।

उदाहरण के लिए, रेडियम के अणुओं को लिया जाय। यह एक वैज्ञानिक तथ्य है कि, किसी रेडियम के अणु हीलियम तथा सोसे के अणु में विघटित होते रहते हैं। पर यह विघटन-क्रिया किसी निश्चित नियम के आधार पर नहीं होती। प्रकृति किसी भी नियम से यह जानने नहीं देती कि, विघटन क्रिया में कौन अणु पहले नष्ट होंगे और कौन बाद में। कभी नव-स्फुरित अणु पहले नष्ट हो जाते हैं और कभी पहले से स्फुरित होने वाले परिपक्व अवस्था वाले अणु। प्रकृति विस अणु को पहले नष्ट करेगी यह उसकी खामखाली पर निर्भर करता है। अर्थात् रेडियम के अणुओं की मृत्यु न भी संयोग और भाग्य का वही

स्थान है, जो मनुष्यों की मृत्यु में। जैसे मानवीय जगत में विभिन्न परिवारों में कभी बूढ़े पहले मरते हैं, कभी युवक ही पहले मर जाते हैं और कभी बच्चे पहले चल बसते हैं, वैन पहले मरेगा यह शायद ही कोई ज्योतिषी बता सकेगा, वही हाल रेडियम जगत में भी है— एक अंतर के

साथ। वह अंतर यह कि, मानव-जगत् में बूढ़ों को मरने की आशका अधिक रहती है, पर रेडियम-जगत् में यह आशका भी नहीं है। वहाँ प्रकृति की निपट खाम-खाली ही चलती है।

इस प्रकार 'प्लांक' के सिद्धान्त का विकास ज्ञान के क्षेत्र में अत्यन्त महत्वपूर्ण सिद्ध हुआ। पर प्रारम्भिक अवस्था में स्वयं



हिरेशिमा के 'कंसा' को श्रद्धाञ्जलि
[चित्र - एक चीनी शिल्प की
रैखालुति]

'प्लांक' ने अपने आविष्कार के महत्व को इस रूप में महसूस नहीं किया था। उसने केवल प्रकाश के विकीरण ('रेडियेशन') सम्बन्धी नियम की यथार्थता को सुपरिस्फुट करने के उद्देश्य से अपने उस नये सिद्धान्त का प्रयोग किया था। वास्तव में, विश्व के केन्द्रीय रहस्य को समझने के लिए प्रकाश के विकीरण सम्बन्धी नियम के रहस्य से परिचित होना अत्यन्त आवश्यक है।

'क्वांटम सिद्धान्त' ने

यह सिद्ध किया कि, प्रकाश न तो पूर्णतः सूक्ष्म कण-युग्म है, न पूर्णतः तरंग-युग्म। वह दोनों है। जब 'एक्स'-किरण-युग्म विद्युत्-कणों पर अलग-अलग रूप से आघात करता है, तब वह वर्ण की तीव्र बूंदों अथवा बूंदों की शोलियों की तरह आघात करता है, पर जब वही प्रकाश ठोस स्फटिक पर आघात

करता है तब तरंग-पुञ्जों की तरह उस पर टकराता है। विन्तु, आधुनिकतम विज्ञान ने यह प्रमाणित कर दिया है कि, प्रकृति की सामखयाली प्रकाश के सम्बन्ध में भी लागू होती है - वही पर प्रकाश सूक्ष्म कणों का रूप धारण करता है और नहीं तरंगों का। पर इसका अर्थ यह नहीं समझना चाहिए कि, यह सामखयाली प्रकृति के भीतर विषमता में समता और अनेकता में एकता के सिद्धान्त के विरुद्ध पड़ती है। इसके विपरीत आधुनिक वैज्ञानिकों ने यह सिद्ध किया है कि, प्रकाश के सूक्ष्म कण तथा उसके सूक्ष्मतरंग-पुञ्ज मूलतः एक ही तत्व हैं।

इस 'अनेकत्व में एकत्व' साम्यधी सिद्धान्त का उल्लेख करते हुए, हम एक दूसरे महत्वपूर्ण अनुमान की ओर आते हैं। यह यह है कि, प्रकाश की तरह ही 'इलेक्ट्रॉन' तथा 'प्रोटॉन' नामक वैद्युतिक अणु भी जो विश्व में स्थित समस्त पदार्थों के मूल उपकरण हैं, सभी सूक्ष्मतम कणों के रूप में हमारे सामने आते हैं और सभी सूक्ष्मतम तरंगों के रूप में।

इन गम उदाहरणों ने हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि, पदार्थजगत् के जो सूक्ष्मतम कण हैं, वे तरंगों के अतिरिक्त और कुछ नहीं हैं और इस प्रकार समस्त विश्व की मूल पाथित मत्ता यिष्टुड तरंगमय है। इसी में एक दूसरे महत्वपूर्ण परिणाम पर हम पहुँचते हैं। यह तब देग चुके हैं कि, पदार्थ के सूक्ष्मतम आपार हैं, वैद्युतिक अणु (इलेक्ट्रॉन) तथा प्रोटॉन) और ये वैद्युतिक

अणु सूक्ष्म विद्युत्-तरंग (अर्थात् विशुद्ध विद्युत्) के अतिरिक्त और कुछ नहीं हैं। यह सभी जानते हैं कि, विद्युत् कोई पदार्थ नहीं, बल्कि एक शक्ति है। अतएव पूर्वोक्त नये आविष्कार के फलस्वरूप पदार्थ और शक्ति के बीच का भेद मिट जाता है।

उपसर्वी शरी ने अतः तब वैज्ञानिकमय पदार्थ, पदार्थ के घनत्व तथा शक्ति इन तीनों के स्थायित्व अथवा सरक्षण (बच बँचाना)-सम्बन्धी सिद्धान्त पर विश्वास रखते थे। उनका मत था कि, पदार्थ विभिन्न रूपों में परिवर्तित हो सकता है; पर उससे परिवर्तित रूप तथा मूल रूप के शेषाशेषों यदि एकत्र किया जाय, तो पता चलेगा कि, मूल पदार्थ के किसी भी अंश का नाश नहीं हुआ है। पाती को जमाने से वह वर्ष में परिणत हो जायगा और शौलाने में पुँएँ में बदल जायगा; पर इस परिवर्तन के बावजूद कुल मिला कर मूल पदार्थ में कोई घटी न होगी। उसी प्रकार यह सिद्धांत भी स्वयं-सिद्ध बना हुआ था कि, किसी पदार्थ के परिवर्तित और अपरिवर्तित रूपों का घनत्व (जिसे किसी हद तक हम उत्तम वजन भी कह सकते हैं।) स्थायी रहगा और वही सिद्धांत शक्ति के स्थायित्व के सम्बन्ध में भी लागू माना जाता रहा है।

पर आधुनिकतम विज्ञान ने जिसके प्रमुख आचार्य सापेशवाद के विश्व-विम्यान् आचार्य आइन्स्टीन हैं, यह नया जातिवारी सोज की है कि, शक्ति का भी वजन होता है। और शक्ति की तीव्रता

जितनी ही अधिक होगी, उसका वजन (या घनत्व) भी उतना ही अधिक होगा। चूँकि, पिछले भौतिक तत्ववादियों को इस रहस्य की कोई खबर नहीं थी, इसलिए उनका विश्वास था कि, कोई पदार्थ चाहे स्थिर हो या गतिशील, उसका घनत्व (या वजन) स्थायी रहेगा। पर आइन्स्टीन के सिद्धान्त ने इस भ्रान्ति को मिटा दिया। नये अनुसंधान ने यह प्रमाणित किया है कि, शक्ति का अपना अलग वजन होता है, यद्यपि वह बहुत ही स्वल्प होता है। उदाहरण के लिए, यदि कोई ५०,००० टन वजन का जहाज एक घट में २५ मील की गति से चलता है, तो अपनी इस गतिशील अवस्थामें उसका वजन केवल एक औंस का दस लाखवाँ हिस्सा बढ़ जाता है, अर्थात् उसकी गतिशीलता का वजन इतना है। एक मनुष्य अपने संपूर्ण जीवन-काल में जो जो श्रम करता है, उसके फलस्वरूप उसका वजन केवल एक औंस का ६० हजारवाँ भाग बढ़ पाता है। मानवीय जगत के लिए इतने नगण्य वजन से चाहे कोई विशेष अंतर न पड़ता हो, किन्तु विराट्



दर्शन एवं विज्ञान में अद्वैत के प्रतिष्ठित आइंस्टीन (बुनावस्था का चित्र)

महाशक्त, सूर्य और महापूर्यों के जीवनमें इस हिसाब से बहुत भारी अंतर पड़ जाता है।

सूर्य पृथ्वी को जो प्रकाश देता है, उसे वह केवल इसलिए दे पाता है कि, वह अपने भीतर के दबाव से अपने में सन्निवृद्धि तथा चुंबक शक्ति को निरंतर बिखरता रहता है। यह बिखरेला ही उससे प्रकाश का विकीर्ण है। उससे इस प्रकाश विकीर्ण का एक निश्चित

वजन होता है, जिसे आज के गणितज्ञों ने ठीक-ठीक नाप लिया है। फलतः इस विकीर्ण का चाप पृथ्वी पर पूरे वजन से पड़ता है। प्रत्यक्ष में यह वजन बहुत कम होता है। पूरी एक शताब्दी में पृथ्वी के एक मील के घरे पर सूर्य के प्रकाश का जो चाप पड़ता है, उसका वजन एक सेकेंड के पचासवें

भाग में होनवाली मूसलाधार वर्षा के चाप के बराबर है। पर यह वजन इतना कम इसलिए लगता है कि, विराट् विश्व में एक मील का क्षय नगण्य से भी नगण्य है। यदि सूर्य के प्रकाश के पूरे चाप का वजन लिखा जाय, तो वह प्रति मिनट २५,००,००,००० टन निचलता है, अर्थात् एक मिनट में सूर्य इतना टन वजन

शक्ति खर्च करके तब पृथ्वी को प्रकाश और ताप दे पाता है। एक मिनट का जब यह हिसाब है, तब एक घंटे का हिसाब लगाइये और फिर एक दिन का, मास का, वर्ष का, सैकड़ों, हजारों, लाखों, करोड़ों, अरबों वर्षों का हिसाब लगाइये। तब पता चलेगा कि, प्रकाश-विकीरण के साथ का वजन क्या महत्व रखता है। इसका अर्थ यह है, सूर्य प्रतिदिन, प्रतिमास, प्रति वर्ष अपनी कितनी शक्ति विकीरण के रूप में व्यय करता चला जा रहा है और अरबों-अरबों वर्षों से कितना व्यय कर चुका है, अभी अरबों-अरबों वर्षों तक पितनी शक्ति खर्च करने की शक्ति उसमें रह गयी है और क्या वह इस प्रकार अपने संपूर्ण पारिवर्तक को विकीरण में परिणत कर मन में बुझ जायगा।

केवल सूर्य का पारिवर्तक ही विकीरण में परिणत नहीं हो रहा है, बल्कि आइन्स्टीन-जैसे प्रमुख वैज्ञानिकों का यह विश्वास है कि, जिनके भी अस्तित्व ग्रह-नक्षत्र आकाश में वर्तमान है, वे निरंतर एक निश्चित नियम से अपने पारिवर्तक अणुओं का विघटन वृहत् परिमाण में करते जा रहे हैं। यह विकीरण ठोस पदार्थ की स्तिमिराहित तरंगवित्त अवस्था के अतिरिक्त और कुछ नहीं है। 'इलेक्ट्रॉन' तथा 'प्रोटॉन' के सम्मिश्र में हम देख चुके हैं कि, वे एक दृष्टिकोण से पदार्थ हैं और दूसरे दृष्टिकोण से वैद्युतिक तरंगों के अतिरिक्त और कुछ नहीं है। उभी प्रकार प्रकाश-विकीरण के सम्बन्ध में हम यह सकते

हैं कि, वह पदार्थ का तरंग-रूप है और पदार्थ के सम्बन्ध में यह सकते हैं कि, वह विकीरण का वर्ण भी तरह जमा हुआ रूप है। पदार्थ भी मूलतः तरंग-गुण है और विकीरण भी। केवल इतना ही अंतर है कि, पदार्थ की स्थूल तरंगें दिन-प्रति दिन विकीरण की सूक्ष्म-तरंगों के रूप में परिणत होती चली जा रही हैं। पदार्थ का बद्ध जीवन प्रतिफल अपने पौ विघटित करता हुआ शक्ति-तरंगों के रूप में निज को मुक्त करने में प्रयत्नशील है। विकीरण है पदार्थ की बधन-ग्रस्त जीवनावस्था—यद्य 'लिविंग' का मुक्त सात्त्विक अवस्था से ग्रस्त जीवात्मा की मुक्ति वामना।

केवल इतना ही नहीं, वैज्ञानिकों को इस बात के भी निश्चित प्रमाण मिल रहे हैं कि, विकीरण भी जो कि, ठोस पदार्थ का सूक्ष्म-स्पन्दनशील रूप है, धीरे-धीरे सूक्ष्मतरंग तत्वों में विघटित होता चला जा रहा है। यह निश्चित है कि, स्थूल से सूक्ष्म में परिणत होने की जो प्रवृत्ति प्राकृतिक तत्वों में अपरिमित काल से चली आ रही है, वह रुक नहीं सकती। इसलिए यह भी विज्वात किया जाता है कि, विकीरण धीरे-धीरे जिस सूक्ष्मतरंग तत्व में बदल रहा है, वह भी समयानुक्रम से अपने से भी अधिक सूक्ष्म रूप में परिणत होगा। अतः में, यह स्थिति आने की संपूर्ण समावना है कि, समस्त विश्व-तत्त्व विमुक्त मनस्तत्त्व में और फिर आत्मतत्त्व में लीन होकर तादात्म्य प्राप्त कर लेगा।

भोजन स्वादिष्ट बनाने के लिये



**प्रताप
छाप
हींग**

इस्तेमाल कीजिये

गोपालजी एण्ड कंपनी
३१८, सम्मुखल स्ट्रीट, मुंबई ३.

“माहिम का हलवा”

१३० वर्ष पुराना व प्रख्यात

केवल भारत में ही नहीं, विदेश में भी प्रख्यात है।।

* विविध मांति के हलवे

* तिरंगी करपी

* शुद्ध मावे का पेदा

तथा अन्नाद्य भोजन की मिथ्याओं के लिए पुरान और प्रसिद्ध

**जोशी बुड्ढा काका माहिम
के हलवे वाला**

✓ कापड काजार, माहिम, बम्बई, १६

✓ गोलाबाला चिल्ड्रेन, बम्बई, ७

✓ पारसी कॉलोनी बाजार, बम्बई, १८

फोन - ६३९७७

फोन - ४०३६५

फोन - ६०५०६

कर्णोपदेश!

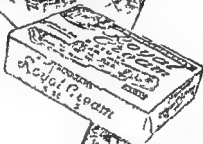


घरने पितृजी से
जे बी मंगाराम के
रायल क्रीम बिस्कुट का
एक पैकेट खराद लान
के लिए कहिए।

इन बिस्कुट का
श्रीम, आपकी बड़ा
स्वादिल लवगा।

बिटांमिनो ॥ समृद्ध
ऊर्जा कोटि के बिस्कुट

य बिस्कुट रंगीन आश्चर्यवादे
बायुरहि। पैकेटों में बंधे होते हैं।
मंगाराम के रायल श्रीम बिस्कुट
सर्वोत्तम उपहार है।



जे. बी. मंगाराम ऐंड कम्पनी

दीर्घायुपूर्व : नेशनल फूड एजेंसी. ३१५, चर्चरोड, बम्बई-४.



रौरिक रूमेंट

मन प्रदेश के एक विहारी बराबतजी जड़ भौतिक धरती के पर्यटन के भी अथक शौकीन हैं। कुछ समय पूर्व उन्होंने कुलू से शिमला की यात्रा की थी। प्रस्तुत स्तब्ध रस प्रति रोचक यात्रा का ही एक अंश है।

★

दूसरे वार कुलू से ही मोटर पर कोंगडा लौट गया, परन्तु गत वर्ष दुर्गा भाभी के साथ आया था, तो हम लोग कुलू से आगे-‘मनाली’ तक गये थे।

मार्च का महीना था। मनाली में जगह-जगह बर्फ पड़ी हुई थी। एक बगले को टीन की छत से फिसल कर गिरी हुई बर्फ घुटनों तक ऊँची मेढों के रूप में डाक बगले को घेरे थी। हमारे दुर्भाग्य से डाक बगले में पहले से ही कोई साहब लोग टिके हुए थे, इसलिए हम लोगो को उसी दिन लौट कर ‘नगार’ चले जाना पड़ा था।

नगार में ठहरने की इच्छा यो भी थी। वहाँ दो नार्चरण थे। जगत् प्रसिद्ध प्रकृति के चित्रकार (मास्टर आर्



हिमशैल-शिखरों के सौन्दर्योद्द कश्मिरी शिल्पी कथारोष निमोलस रौरिक

माउन्टेन्स) निमोलस रौरिक नगार में ही स्थाई रूप से रह रहे थे। उनसे बनावे कुछ चित्र देखे थे और इस पुरुष विशेष से मिलन की इच्छा थी। निको

लस रौरिक क्रान्ति से पूर्व रूस के एक बहुत बड़े ‘वैरन’ या ‘काउंट’ (आगीरदार) थे। वे उसी समय ही हिमालय भ्रमण के लिए आये थे और फिर लौटे नहीं। आधुनिक इसी समाज-व्यवस्था के प्रति उस महान कलाकार की भावना जानने का कौतूहल था। नगार में ठहरने की असुविधा का प्रश्न नहीं था। लाहौर में हम लोग ठहरे थे, अपने पुराने मित्र श्री बलवन्त के यहाँ। उन्हीं के यहाँ, एक दिन चाय-पानी के समय श्रीमती बल-

वन्त की सहेली में परिचय हुआ। बातचीत में मालूम हुआ कि, इनके पति सग्वारी नौकरी निभाने के लिए नगर में ही थे। वे जीव-विज्ञान के एम एस-सी हैं और एक जाति से दूसरी जाति की भूलखियों पंदा करने का काम करते थे। अब उन्होंने

मुना कि, हम लोग बुलू जाना चाहते हैं, नौ हाथ जोड़ अनुरोध किया—“हाथ, हमारे यहाँ भी जरूर आइयेगा। हम लोग तो ‘आदमी’ की मूरत देखने के लिए तरस जाते हैं।”

नगर में छोटी-मोटी घन्टी तो हैं, परन्तु स्थानीय आदमियों को यह लोग उनकी भाषा और आचार-व्यवहार के अपरिचय और विभिन्नता के कारण आदमी नहीं ‘माथू’ ही कहते हैं। रोरिफ की कोठी

या महल नगर के सबसे ऊँच भाग में है। वही राहली नहीं था। रोरिफ लम्बी, मिथुन के लिए समय निर्दिष्ट कर देना उचित था। इसलिए एक आदमी के हाथ पत्र भेज कर बुलवा दिया। अगले दिन नौ बजे का समय तय हुआ—बड़ी चढ़ाई चढ़कर पहुँचे। कोठी के दरवाजे पर वदी

पहले अदली ने स्वागत किया और दोनों के हस्ताक्षर और पते का एक रजिस्टर हस्ता-क्षर करने के लिए सामने पेश कर दिया। इसमें लखनऊ के आर्ट स्कूल के प्रिन्सिपल, कई दूसरे माथियों और प जवाहरलाल नेहरू के भी हस्ताक्षर मौजूद थे। बना

प्रभो !

हे प्रभो ! हमें ‘मनुष्य’ दो; नर-पुमव, जो भ्रम सत्त्वधान हो, अंतः-पूत हो, अक्षत यद्धावान हो, सकर्म-स्फूर्त हों, जिनके हृदय धार्मिक प्रभुत्व के लिए लातायित न हो उठे, जिन्हें विश्व का सर्वोच्च संभव भो सरोवर न सहे, जिनके विचार निर्भीक हों, जिनको भावना निश्छल-निर्बंध हों, जो ब्रह्ममियों के पाखंडों पर प्रहार करने से न डरे, जो सामाजिक एवं वैयक्तिक जीवन में सदैव उत निष्पक्ष-निर्विजित सूर्य के समान चमके, जिसके प्रवेष्टमात्र से समस्त विभिरण्य वस्तु-वस्त्र आलोकित हो उठता है।

—बिलियम जोन्स.

के प्रति प नेहरू अनुराग हैं। वे रोरिफ का अतिथि स्वीकार कर चुके हैं। उनके साथ कुछ दिन बिता चुके हैं।

उपोदी में जीना बंद कर ऊपर पहुँचने तक ही पर्याप्त रीब हम पर पड़ गया। पूरा जीना और जीने की दीवार बमर की ऊँचाई तक ईरानी बालीनों से घड़ी की और दीवारों पर भी रेशमी कपड़ों पर बड़े और बने अद्भुत बहुमूल्य चित्र।

दीवार का कोई भाग खाली नहीं था। रोरिफ लम्बी, खेन दाड़ी और मोटा टोपी में बबोन्-खोन्ड की छोटी-छोटी प्रति-छाया जान पड़ते थे, परन्तु कुछ नाट्य और जरा भारी नरीर। वे बड़िया परमीने का बन्द कपड़ा का कोट निबन्ध-बाबुर और बने ही

मोज पहने थे। बहुत सहृदयता से उन्होंने स्वागत किया। पहले उन्होंने बातचीत में हम लोगों के बला-सम्बन्धी बौतूहल और अनुराग का परिचय पा लेना चाहा। शायद वे अतिथि के बला सम्बन्धी ज्ञान के स्तर के अनुसार ही बात करते थे।

हम लोगों के पहुँचने से पहले चित्रों के दिखाने की व्यवस्था तैयार थी। हमारे बैठने के कोच के सामने चित्र दिखाने की एक टिकटबी पर एक भारतीय युवती का तैल-चित्र पहले से रखा हुआ था। मैं उस चित्र को बहुत देर तक देखता रहा। रोरिख ने बताया कि, वह उनके पुत्र का बनाया तैल-चित्र था। चित्र इतना सप्राण जान पड़ता था, विशेषतः आँखें और ओठों की भाव-भंगी कि, मानो युवती कुछ कह कर उत्तर की प्रतीक्षा कर रही हैं, अभी बोल उठेगी या खड़ी हो जायगी।

इसके बाद स्वयं रोरिख ने बनाये लगभग ५०-६० चित्र देखे। अधिकांश चित्र हिमाच्छादित पर्वत-श्रृंगों के थे। यह चित्र रोरिख ने पहाड़ों-पहाड़ बर्मा से दार्जिलिंग और दार्जिलिंग से मुलू की यात्रा करते समय ही उनकी स्मृति से बनाये थे। उन चित्रों में मानव-भाव (ह्यूमन एलिमेंट) बहुत कम दिखायी दिया। वैसे चित्र केवल

तीन ही दिखायी दिये। जिनमें से एक नावों की किसी झील का था। दो और विश्व-शान्ति के सन्देश-सम्बन्धी थे। चित्रों को टिकटबी पर रखने और उतारने का काम वहीं पहले अर्दली कर रहे थे। चित्रों के सम्बन्ध में बातचीत भी चलती जा रही थी। मैं चित्रों में मानव-भाव की कमी की बात कहे बिना नहीं रह सका। 'मुझ तो सूर्योदय या सूर्यास्त से दीप्त बर्फानी चोटी



बंगाली-बादल में
निमग्न एक पहाड़ी

की अपेक्षा झोपड़ियों के झुंड का चित्र, जिसमें आदमी दिखायी दे, ज्यादा मर्मस्पर्शी जान पड़ता है।' बलावार को मेरी बात से शोभ नहीं हुआ। इस विषय पर कुछ बात-चीत हुई। 'पिकासो का भी जितना थापा। उन्होंने अपने पुराने चित्रों के एल्बम मंगा कर दिखाये। कुछ की छपी हुई, छोटी प्रतियाँ भट भी कर दी। वे राजनीति पर बात करना नहीं चाहते थे। इस

की आधुनिक व्यवस्था के प्रति उन्होंने गर्व से कहा—'रुस एक महान राष्ट्र है और उसकी शान्ति मानवता के विप्लव के प्रति बड़ी भारी देन है।

निकोलस रोरिख 'बैरन' होश्वर भी बलावार की भावना से ओत प्रोत थे, इसलिए उपर्युक्त बात कह सकते थे, लेकिन 'बैरोनेस' या काउण्टेस-रोरिख (रोरिख की

पत्नी) का दृष्टिकोण दूसरा ही था। यह बात नगर में मौखिक मित्र के यहाँ लौटने पर पता चली। वे बोले—“रोरिक् की पत्नी तो आपसे मिली नहीं होगी?” हमारे हमी भरणे पर उन्होंने बताया कि, वह किसी से नहीं मिलती। वे रूम के द्वार की बहिर्न हैं। उनके आत्म-सम्मान-सम्बन्धी मस्कार यह सह्य ही नहीं कर सकते हैं कि, स्वमाधारण बल

के लोच, समान भाव और स्थिति में उनके सामने बेलें-किर! इस महल में आने के बाद वे एक कुल-मनाली सहक पर धमने गयी थीं। वहाँ गाधारज जंगलों या भारत-वासियों को अपने मांभने निरपेक्ष जानें-जानें देख उन्होंने अपना



एक पहाड़ी दृश्य

अपमानित अनुभव दिया कि, फिर वे अपने महल या कौंटी की चहारदीवारी में कभी बाहर नहीं निशली। अपनी सहचरियों या मेजदारी के रूप में वे ताम दा रंगी या यूरोपियन महिलाओं को तनपाह देकर लायी हुई थी। वे ही उनकी एकमात्र सगति थी। बाहर निकलने की उन्हें कोई आवश्यकता भी नहीं

थी। सभी आवश्यकताओं को पूरा करने का उत्तर अपना स्वतन्त्र प्रबंध था, शायद अपनी विजली भी थी। व्यक्तिगत स्वनमन ना यह भी एक रूप है। अपने-आपको दूसरे मनुष्यों में मित्र और उंचा माने रहने के लिए वेद स्वीकार कर लेता।

रोरिक् ने अपने बाग के कुछ मेव को खिलाये। सेव देयने में विलुप्त हरे का कच्चे जान पड़ रहे थे; परन्तु सबों से वैसी सुगंध और कही नहीं देनी। इस-बारह सबों के सम्बन्ध में उन्होंने बताया कि, उनके में कोई पोषा

आस्ट्रेलिया में, कोई कैलोफोर्निया में, कोई फ्रांस और इटली के मगामा समा था। कुछ देर तक रोरिक् के महल

से प्राकृतिक मोन्दन को देखते रहने के बाद मैं कहे बिना न रह सका—“हैं कास्तोर के कुछ जाग, कुमायू की पहाड़ियों भागुरी, शिमला, दार्जिलिंग और शिलांग छोड़ा-बहुत देखा हो है। लेकिन प्रकृति में, रंगों और दृश्यों का ऐसा वैचित्र्य और सम्बन्ध कहीं नहीं देगा, आपने यह इतना सुंदर स्थान चुना कैसे?”

मेरे कौतूहल की तृप्ति के लिए उन्होंने बताया—यहाँ से पहाड़ो-पहाड़ दार्जिलिंग और दार्जिलिंग से भी हिमालय के भीतर-ही-भीतर अपने काफिले को ले यात्रा करते हुए जब वे नगर पहुँचे, तो इसी मकान के समीप अपना खेमा लगाया था। जगह उन्हें इतनी पसन्द आ गयी कि, आगे बढ़ने का विचार छोड़ दिया। उन्होंने इस मकान और इसके साथ की भूमि को खरीद लेने का विचार प्रवट किया। उन्हें बताया गया कि, इस मकान को खरीद लेना सम्भव नहीं। मकान मंडी के राजा का है।

रोरिख स्वयं मंडी के राजा के पास पहुँचे और राजा से यात्रा की—“मेरे तुम्हारा मकान और उसके साथ की भूमि खरीदना चाहता हूँ।”

राजा ने बिस्मय से रोरिख की ओर

देखा—“मेरा मकान खरीदना चाहते हो?”

“हाँ, क्या कीमत चाहते हैं आप?”

राजा ने अपने विचार से एक बड़ी कीमत बता दी और रोरिख ने उसी समय एक ‘चेक’ दे दिया। उनका हिसाब पेरिस, न्यूयार्क और बम्बई के बैंकों में मौजद था।

इसके कुछ दिन बाद देहली जाने पर इसी समाचार ऐजसी ‘रास’ के प्रतिनिधि वामरेड ग्लाडीशव से मिलने का अवसर हुआ। मंने बातचीत में निकोलस रोरिख की कला की प्रशंसा की। वामरेड ग्लाडीशेव ने रोरिख की कला के लिए आदर प्रवट कर इतना और कहा—“जो अवसर पहले केवल रोरिख की स्थिति के व्यक्ति के लिए ही सम्भव था, अब उस में सभी लोगों के लिए है। अब हमारी निकोलस रोरिख हमारे देश में विकास कर द्येग।”

★

यह बात मुझे बहुत खुशी

एक दिन मैंने ईश्वर से पूछा—“मैं खूब अवस्थाओं में तुझसे सतुष्ट हूँ, क्या तू भी मुझसे सतुष्ट है?”

ईश्वर ने उत्तर दिया—“तू झूठा है। यदि तू मुझसे पूर्णतः सतुष्ट होता, तो मेरे सतोष की बात ही नहीं पूछता।”

—अबुल हुसैनअली

★

‘एक बार तो यह दिया कि, अभी कोई आदमी नहीं है दुष्टान में। जा, चला जा यहाँ से।’ दुनवानदार ने भिखारी को फटकारते हुए कहा। लेकिन भिखारी भी एक ही नवर का मुहफट था। उसने उत्तर दिया—‘तेहजी, थोड़ी देर के लिए आप ही आदमी बन जाइये न।’

—‘नवभारत’ (सराठी) से

★



आजोबा के हिसाब बम्ब प्रदेसों में जीवन के आलीस बर्ष बितावर फिर से 'मध्य आशिया' में लौटने वाले विश्व विख्यात सिवारी राबर्ट क्लार्क ने विभिन्न बम्ब पशुओं की खोजों में विरोधाभासों की निरर एक लेखमाला लिखी है। यह लेख इसी लेखमाला के एक आधापन सक्ति हिन्दी रूपान्तर है। बनराज सिंह शाहू के विषय में भी यहाँ बखित जानकारी आयेगी।

सम्ब क्रिये बिना नहीं रहेगी !

★

सिंह को साधारणतया 'बनराज' कहा जाता है, लेकिन मेरे अपने अनुभवों के आधार पर मैं तो यही कहूँगा कि, जंगल का राजा, पालक में बोंद है, तो वह हाथी है। हाँ, सिंह एक चतुर नृसीतिज अवस्थ कहा जा सकता है।

सिंह बाल्य में, एक शाक्ति-प्रिय प्राणी है। उसे यदि मनाया न जाय, तो वह गुदा सिनी भी प्रवार के झगड़ में दूर रहना ही पसंद करेगा। आत्मी तो वह इतना होता है कि, पेशा भूम खाने या छेदने पर ही उठता है, नहीं तो अधितर मंसा रहता है। यह लालची, लुब्ध और गदा भी होता है, और मण-मण माम खाने में भी नहीं हिचकता। उसकी मृत्यु अधितर

नवनीत

बुढ़ापे और अपक्ति के कारण होती है या स्वयं उसके बच्चे ही उसे मार सकते हैं। वह स्त्रियों में कम कर काम देने का पक्षपाती है और बड़े शायी में बिली में अधिक, बुद्धि में मिलता-जुलता है। उसके बदन में मण आती है और मस्त्रियों-मण्ड भी मदा उगवे आसपास भिनभिनामा रहते हैं। वह भूच कर चरता है ; लेकिन जल पडने पर इतना तेज भागता है कि, एक भी मज की दूरी करीब तीन मीटर में ही तय कर लेता है। उसकी एक छगल बाँग बुद्ध में भी अधिक की होती है।

सिंह पेश पर चढ़ सकता है और चढ़ा भी है। भारत में सिंह पाये जाते हैं, लेकिन अफ्रीका में बाप नहीं पाये जाते।

३८

विशाल

मिह और चाप की जानी भी साथ रखकर है। अमीरा के बड़े-बड़े हाथियों को देगी गयी है, लेकिन उनकी गवान इनकी अच्छी नहीं जानी। पर मिह का चेहरा दूगार ग नहीं मिलता। मिहनी भी गूमगूमत या रदगूरत है। सारनी है और स्त्रियों की भीति उनमें भी अपना-अपना विशेष आकर्षण होता है।

अधिराज मिह अया गदार नहीं जान। अयागालाकी गय्या कम जानी है। अयागदार मिह का रंग गहरा लाल ग हूरा गणद तर जाना है। मंने पर जाया गिर-कुट काने रंग का भी देगा है। मिह का भिन्नभिन्न ना मे वाली भविष्य-म कठ रंग और लहराया मे रहन विद्ध है। लेकिन चौड़ेपानरानी छोटी-छाटी लामहियों और गिहारा, तथा गुरवाने प्राय गर्मी प्राणिया मे वह दास्ती करता है, याने वह उन गणव भूया ग है।

गामान्य अवस्था में मिह किसी मे ठरता नहीं। मनुष्य मे भी वह प्यार कर गवता है। अधिराज परिस्थितिया म वह मनुष्य की उपस्थिति गहन कर नेता

है। अमीरा के बड़े-बड़े हाथियों को वह कुछ नहीं रहना और बड़े में हाथी भी उन पर आक्रमण नहीं करने। दोनारद केर नाम के एक व्यवसायी-गिहारी ने पर मिहनी का पर बार मादा गिराफ के नीचे मरा पाया था। मादा गिराफ न

विभूति

और, उन सिंह को ला । बड़ोवे मे रहता था। मुहर-ही-मुहर उसकी गर्भना की गभीर प्यनि जानों में पड़ती। उनके आवाज इतनी गभीर और उम्मा होती थी कि, हृदय डोलने लगता। मदिरों के गर्भगृहों में जंसी आवाज सूजती है, पंसी ही गभीर उनके हृदय गर्भ की पर प्वनि थी। और सिंह की बट पीरोदात, भव्य, निर्भय मुद्रा, उमका यह शाही डग और शाही संभव। यह भव्य सुंदर अयाल मानो चकर ही उस यनराज पर डल रहे हों। ऐसा मालूम होता है, मानो सिंह परमेस्वर की एक वाचन विभूति है।

—बिनोया

है। नर-मिह बहुधा अपना गिहार स्वय भाग्या अपनी धान के गिराफ गमझना है। उनके बहुत गो पल्लियों रहती है। मिह जन्म म किसी पर का भाजन जान के गिर भज देता है। जरा या दूगरे वन्य पशुओं के झुट के नजदीक जाकर

मिहनी का अपन गुरा न चुचर दिया था। मंन भी पर गार सेदुण रा मिह की गान गानेदगाथा, लेकिन नजदीक जाने पर मालूम हुआ कि, मिह किसी मगाई गिहारी के भाग मे पहले ही पायल है। बुरा था।

तेंदुग के प्रतिगूर मिह कभी किसी पर अवारण आक्रमण नहीं करता। यह भूया जाना है कभी किसी को मारता है। या गताय अथवा पायल सिव जान पर आत्म-रक्षा अवक्रमण करता

वह स्वयं टहलता रहता है ताकि उसको गाय उन तक पहुँच जाय। उसके बाद वह दो एक बार दहावता है। सिंहनी घास में छिपती हुई, दबक कर गिबार के पास पहुँचती है और फिर अपनी पूछ झाड़ को तरह सीधी खड़ी कर एकाएक उछलकर झपटती है। किसी मशौन के पुजे के अतिरिक्त आज सप मने कोई जीव ऐसा नहीं देखा, जो सिंह के सामान कृती में उछल सके।

सिंहनी अपने शिवार पर पीछे से झपटती है और अपने दान उगवी गर्दन में और पिछले पैर गिबार की पीठ पर गण देती है। अगर हमने ध्यान नहीं बना, तो दोनों पक्षों से गर्दन को पकड़ कर काँड़

ढालती है। लीजिए भोजन तैयार हो गया।

भोजन को विधि बहूत-बहुत सिंह की मर्जी पर निर्भर है। कभी-कभी तो वह उप-उप किसी को एक कौर भी नहीं सामे देता, जयन्त कि, उसका अपना पेट पूरा न भर जाय। कभी-कभी अपनी मित्रियों को पकड़े सामे देता है और यदि मित्राज ठीक हुआ, तो ग्यो-बच्चों समों को अपने नयनीत

साथ खाने के लिए आमंत्रित करता है। ऐसे मौकों पर दस-बारह सिंहों को एक साथ भोजन करते देखना कोई असंभारण बात नहीं। पता नहीं क्यों, सभी सिंह शिवार की आतों को पहले खाना चाहते हैं। वे तब तक खाते रहते हैं, जब-तक कि, उनका पेट ठूम-ठूम कर नहीं भर जाता। उसके बाद वे पड़े रहते हैं। जय दुवारा

भूख लगती है, तब फिर शिवार की सोज होती है।

साधारणतया सिंह मनुष्य-भशी नहीं होता। लेकिन भेड़ या चौपायों के झुंड पर आक्रमण करते समय, यदि किसी मनुष्य ने उस पर हमला किया और उसने अपने बचाव के लिए उस मनुष्य को ही मार डाला, तो मनुष्य

का रक्त उससे मुँह लग जाता है। इसके अलावा सिंह जब यूँ ही होता है या पाया होता है, तो उसमें बड़े गिबार को मारने की तावक नहीं रहती। उस घना बर अपने ही बच्चों द्वारा या दूगरे सिंहों द्वारा जगड़ में भगा दिया जाता है और किसी गोव के आगपास आसान गिबार की ग्योज में जाने के लिए मजबूर हो



सिंह-समाय

जाता है। अफ्रीका में लोग घर में किसी की मृत्यु का होना बहुत अशुभ मानते हैं। इसलिए उनके घर में कोई आदमी जब मृत्योन्मुख होता है, तो उसके प्राण निकलने से पहिले वे उसे जंगल में छोड़ आते हैं। ऐसे मृतप्राय व्यक्तियों या उनकी लाशों को जब बूढ़ा निर्बल सिंह देखता है, तो स्ता जाता है। वैसे भी सिंह को सड़ा मांस अधिक प्रिय होता है। एक बार जब सिंह मनुष्य को स्ता लेता है, तो उसे वह बहुत आसान शिकार दिखायी पड़ता है और जब यभी बिना अधिक परिश्रम किये वह अपना पेट भरना चाहता है, तो मनुष्य पर आक्रमण करता है।

ज एे हटर ने अपनी पुस्तक में लिखा है कि, एक बार मसाई जिले में चौपायों की रक्षा करते समय एक अन्य कारणों से भी जब बहुत से मसाई लोग मारे गये, तो करीब सौ सिंहों को वहाँ से खदेड़ना पड़ा कि, लगान पावर के नर-भक्षी न बच जाय। बेम्बा में कुछ शेरों ने सड़क बनाने के काम में लगे, कई आदमियों को स्ता डाला। एक बार तो वे आफिस में घुसकर सुपरिंटेंडेंट साहब को ही उठा ले गये। नर मांस एक बार भक्षण करने के बाद सिंह को उसकी लत पड़ जाती है। जिस कारणवत् वे भारत के ऐसे कई बाघों का जिक्र किया है, जिन्होंने पशुओं की अपेक्षा मनुष्यों को खाने में अधिक रुचि दिखायी।

एक वयस्क सिंह में अपरिमित व्यक्ति

होती है। पूरी उम्र के एक शेर का वजन तीन सौ पौंड से भी अधिक होता है। कम-से-कम एक सिंह तो मने ऐसा भी मारा है जिसका वजन ३ सौ पौंड था। तवाकू, शराव या अन्य किसी नशे अथवा दवाइयों की विपली प्रतिक्रिया से मुक्त, जीवन भर शुद्ध प्रोटीन (वेवल मांस), प्रकाश और यथेष्ट नींद पर पोषित, उसके स्प्रिंगदार अंगों में अपार शक्ति बूट-कूट भर भरी रहती है।

एक बार मैं एक तदुए को, जो सिंह के मुँहायले में उसका वेवल पोंचवाँ भाग होता है, जिराफ के एक बच्चे को (जिसका वजन तीन-चार सौ पौंड रहा होगा) अपने मुँह में दबा कर पेड़ पर चढ़ते देखा है। एक सिंह सात सौ पौंड भारी जेरा को अपने जबड़ों में उठाकर चल सकता है। आदमी तो शर के मुँह में एक 'लिमन-ड्राप' की तरह है। उसे मुँह में दबाकर तो वह पंद्रह फुट की छलाव भी मार लेता है।

सिंह के दाँत छेनी की तरह पंने और पंने बटार की तरह आगे की ओर मुड़े होते हैं। अगले पंजों में एक नाखून होता है, जो आक्रमण करते समय फँस जाता है। यह इतना तीखा और घातक होता है कि, सिंह के यदि और कोई अस्त्र न हो, तो केवल उस एक नाखून से ही वह बड़े-से-बड़े शिकार को चीर सकता है। उसकी मुजाओ में अपार शक्ति होती है और उछलता वह बिजली की तेजी से है।

सदा सड़ा मांस खाने के कारण उसने दात

और पजो में उसके वष जमा रहते हैं और इसलिए वे स्वयं विपणित बन जाते हैं।

कुछ घर बदमिजाज भी होते हैं। लेकिन मैंने एक आदमी को सिंह के मुँह पर हँट में घण्टा मारकर उसे हटाते भी देखा है। एक बार एक जीप-साड़ी सिंह की पूछ पर में निलय गयी। मैंने भी एक सिंह के मुँह में से जेन्ना की लाश के टुकड़े को छीन कर दूसरी ओर फेंक दिया ताकि, तस्वीर उतारने के लिए मैं उसे एम्बे रूपाय पर हटा सकूँ, जहाँ प्रकाश अधिक हो। मोटर में अगर मांस का टुकड़ा रख दिया जाय, तो शेर वही कूद आयेगा। अफीवा के 'नेशनल पार्क' में ली गयी एक तस्वीर में एक सिंह को 'टूरिस्ट' गाड़ी के 'हुड' पर सटा बताया गया है। जिस प्रकार एक आदमी के चेहरे को देखकर बताया जा सकता है कि, वह किस प्रकृति का है, उसी तरह प्रत्येक सिंह को भी पहचाना जा सकता है। बदमिजाज, पबझापा हुआ, या दुष्ट प्रकृति का सिंह देव घर ही पहचाना जा सकता है।

सिंह घोषित अवस्था में नहीं बहालता। या तो रान गीली अथवा ठडी हो और शठिया का दर्द उसे अधिक सताये या आपाज में मुदर चोद मित्रा हो और उसका मन प्रमथ हो उठा हो, अथवा प्रीति-विह्वल हो, या मूग्ध हो, तभी वह बहालता है। अर्थात्तर सिंह बडबडता रहता है। निवासन करते रहना उसकी आदत है। चोट लगने पर वह चिन्त्रता है और घायल होने के बाद भी उसकी नयनीत

आवाज अत्यत भयानक होती है।

सिंह का शिवार आसानी में किया जा सकता है। उसे खदेडा जा सकता है, शिवार का लोभ देकर वही भी बुलाया जा सकता है और उसके बहुत नजदीक भी आप जा सकते हैं। मसाई प्रात के गोंवों के लडके तक शेर मार लेते हैं। स्वयं अपने हाथा में मारे हुए सिंह को अयाल की टोपी वहाँ के लडके पहिनते हैं। मसाई लाय घर का शिवार करते जब जाते हैं, तो कुछ 'मोरान' या मैनिश शेर की घर घर उसे हमला करने को बाध्य करते हैं। शेर जब खपटता है, तो एक आदमी अपनी ढाल पर उसका बार रोक लेता है।

पूर्वो अफीवा के मसाई, परदेशी शिवारी और चितान्तो में एक बार सिंहों की मय्या इतनी कम कर दी कि, पूरे मसाई इलाके में केवल बार सिंह ही शिवार के योग्य बच गये। यहाँ हाल पड़ोस के मेरेगेटी मैदान का था। अन में, सरवार ने केन्या में शिवार की 'मीजन'लतम कर दी और मेरेगेटी को सुरक्षित प्रदेश घोषित कर दिया। आज तो फिर भी इस सुरक्षित प्रदेश में मोटर चलाते समय दस-बीस शेर दिखायी पड जाते हैं और उनसे शिवार को उन प्रदेश में वजित करने के कारण उनकी मय्या में भी इतनी वृद्धि हुई है कि, वे इस सुरक्षित प्रदेश में बाहर निबल कर शिवारियो को अपने शिवार का भी अवसर दे देते हैं।

अधिक-मे-अधिक ३१ गिर्हों को मैंने

एक साथ देखा है। सिंह अपन परिवार का मुखिया होता है और उसके बच्चे यदि सविनय रह तो साथ साथ रह सकते हैं। मुखिया सिंह परिवार की सभी सिंहनियों की देखभाल करता है। लेकिन एक दिन ऐसा आता है जब सबसे बड़ा बच्चा बूढ़ा सिंह को दण्ड पट्ट के लिए ललकारता है इसमें जिसकी विजय होती है वही परिवार का मुखिया बनता है। अधिकतर जवान सिंह अपने बड़े बाप को घायल कर देता है और बड़ा सिंह परिवार को छोड़कर अयश्रुत जान के लिए बाध्य हो जाता है। उस वक्त कमजोर और घायल होने के कारण वह पहले मवेशियों पर और बाद में मनुष्यों पर आक्रमण करना सीखता है। इसके कुछ अपवाद भी हैं। एक बार मैं एक ऐसे मुखिया शेर को मारा जिसने अपने बेटे को थोड़ी देर पहले ही मार डाला था। हेरी सेल्वी नाम के शिकारी ने पिस्तौल से एक ऐसे सिंह को मारा जिसकी कमर उसके बेटे ने तोड़ दी थी और जो घायल होकर दो हफ्ते से भूखा पड़ा था। लकड़वागंधे ने उसे घर लिया और कीड़ों ने उसके मांस को खाना शुरू कर दिया।

सिंह प्रायः दूसरे वय पशुओं के साथ अपना स्थान बदलता रहता है। जहाँ पानी और घास रहेगा वहाँ शिकार के नजदाक सिंह भी पाया जाता है। लेकिन एक बार जंग के किसी स्थान पर जंग जाते हैं तो वहाँ से सामान्यतया हटते नहीं। उनकी आदतें यही स्थिर होती हैं। एक

पहाड़ी पर वाली अयाल का एक सिंह दस साल से बराबर दिखायी पड़ता था। मत्सर्दी में कुछ ऐसे सिंह परिवारों से परिचित हैं जो अपने अड्डे से कुछ ही मील दूर उधर होने के अलावा नहीं हटते।

टगायिका में मैं एक बूढ़ी सिंहनी ममा को भी जानता हूँ। मुझसे वह बिगड़ी हुई है क्योंकि मैं एक दिन उसके पति को मारा था और तब से उसने निश्चय कर लिया है कि जीप-गाड़ी में आनवाले सभी लोग बुरे होने हैं। वह मुझ पर झपट कर आयी। दूसरे दिन जब मैं फिर वहाँ गया तब भी उस सिंहनी ने मेरी गाड़ी पर आक्रमण किया। छ महीने बाद एंड्रयू होमवुड या टोनी डायर (टोक से याद नहीं कौन) जब वहाँ गया तब भी वह बूढ़ी शरनी उन पर तीर की तरह झपट कर आयी। इस बूढ़ी सिंहनी की स्मरण शक्ति तो बड़ी तीव्र थी।

कुछ सिंह एकपत्नी व्रत रखते हैं और जीवन-मृत्यु तक उसे निभाते हैं। लेकिन कुछ ऐसे भी हैं जो पुराने राजाओं की तरह पुराने जनानखाना ही अपने साथ रखते हैं। मैं कई सिंहनियों के साथ एक सिंह देखा है। मजकी बात तो यह है कि सिंहनी अपने सौतेले बच्चे की भी देखभाल और रक्षा करती हैं। साधारणतया एक सिंहनी एक-साथ दो बच्चे देती हैं। लेकिन कई बार चार भी दे देती हैं। सिंह का बच्चा अठारह महीने का होने के बाद अपनी रक्षा करने का भार स्वयं ले लेता है।

धरती के स्वर्ग हिन्दुस्तान

*

प्रकृति और प्राकृतिक जीवन क्रम के अनन्य उदात्तक विद्वत्तासभी मोदी अभी हाल ही में निवृत्तरलेट गये थे। प्रकृति के इस 'राजिस्त-वन' के सम्पर्क का उनकी रसभूषण लेखनी द्वारा वह विवरण आपके पक्ष्य बैसा मधुर लगेगा।

पेरिस एग सप्ताह रहकर स्विट्जरलैंड के जूरिच शहर के लिए चल पड़ा। तीन घंटे काम को रेल चलकर हमें स्विट्जरलैंड की गीमा में ले जायी। यहाँ से रेल चली, तो दान्ते के दृश्य देखकर भार्मीर याद आ गया। लगा कि, यहाँ कोई भोंसोपर पड़ती बाँधवर छांट जाता, तो भी मैं यह भ्रमण जाता कि, यह स्विट्जरलैंड है। जैवी-जीवी पहाड़ियाँ, नाँव, छोटी-छोटी नदियाँ, चारों तरफ हरियाली, हरियाली में मैं झोंकने हुए गाँव और उनमें घबले सब कुछ बड़ा मुहायना लग रहा था। बार बज रहे थे और जूरिच आनेवाला था; सभी मेरे निवृत्त बंटी दो बूढ़ाएँ भुझने वाले करने लगीं:

"आप यहाँ में आये है?"

"हिन्दुस्तान में।"

"यूरोप बेसा लगा?"

"मेरी कल्पना में बड़ी अधिक घनवान मेंने उसे पाया।"

"आध्यात्मिक और पर यहाँ के लोग आपको कैसे लगे?"

"क्षमा करें, इस सम्बन्ध में मैं कुछ कह नहीं पा रहा हूँ।"

"बिल्कुल अमभिन्न और मूलों और यहाँ तो यहाँ के ऐश्वर्य के आधिक्य में भी कुछ बा कारण हैं। बाहर में मुझी पर अदर से दुखी! पर हम आशा करते हैं कि, भारत यूरोप को शांति के संदेश के साथ-साथ आध्यात्मिकता का भी संदेश देगा। आपके नेता माधीजी ने तो राजनीति के साथ हिन्दुस्तान की आध्यात्मिकता भी बढाया।"

मैं यहाँ जरा सोचा, पर कुछ ऐसी ही बातें मुझमें मिले प्रायः हर बूढ़ो ने यही की। पर्व इतना ही था कि, बूढ़ा की दाँव तीव्र आलोचनात्मक थी—“हाँ, ये साध्य के लिए साधन की पवित्रता में विश्वास करते थे। अतः राजनीति में उन्होंने अहिंसा का प्रतिपादन किया।"

"आपके यहाँ भगवान बुद्ध के बोधे

अहिंसा के बीज भी तो थे।”

“दोनों को तो एक देश से दूसरे देश में जाने में देर नहीं लगती। कोई न ले जाय, तो वे उड़कर भी चले जाते हैं।”

मेरी यह उक्ति सुनकर उक्त महिला मुस्करा पड़ी। तभी पोर्टर ने सूचना दी—
“जूरिख आनेवाला है।”

मैंने कहा—“पोर्टर यहाँ सूचना देता है?”

“हाँ, यह स्विट्जरलैंड है। यहाँ के लोग बड़े ही अतिथि-प्रेमी हैं और उनकी सुविधा का बहुत ध्यान रखते हैं।”

स्टेशन के निकट ही बड़िया होटल मिल गया। यहाँ होटलो की कमी नहीं है। अबेले जूरिख में ही इतने होटल हैं कि, छ हजार आदमी एक साथ ठहर सके। दस मिनट में ही होटल का आदमी स्टेशन से सामान ले आया और हम नहा-धोकर राहुर देखने निकले।

आते ही मैंने विर्चर-वर्नर ‘क्लीनिक’ की सचालिका को फोन कर दिया था और उन्होंने मुझे छ बजे ‘क्लीनिक’ देखने बुलाया था और उनकी इच्छा थी कि, हम वही भोजन भी करें। विर्चर-वर्नर का ‘क्लीनिक’ अपने भोजन-सम्बन्धी अनुसंधानों के लिए प्रसिद्ध है। इन अनुसंधानों का असर सारे स्विट्जरलैंड पर पड़ा है। विर्चर-वर्नर ने भोजन

में पचास प्रतिशत कच्ची तरकारियाँ और फल रखने की सिफारिश की है। उन्होंने सेव को बहुत ही महत्वपूर्ण पत्र माना है। परिणाम यह हुआ है कि, आपको स्विट्जरलैंड के हर होटल में भोजन के साथ कच्ची तरकारियाँ जरूर मिलेंगी और सेव का खाना रस तो आप वही भी खरीदकर पी सकते हैं।

हमने टैक्सी ली और पहले विर्चर-वर्नर के ‘क्लीनिक’ ही पहुँचे। यहाँ हमें ‘क्लीनिक’ की सचालिका दरवाजे पर ही मिल गयी। उन्हें हमें पहचानने में देर नहीं लगी। उन्होंने हमें घूम-घूमकर ‘क्लीनिक’ दिखाया।

भाजनशाला में हमारी एक भारतीय महिला से भेंट हो गयी। वे यहाँ चिकित्सा करा रही हैं। वे अपने अन्य रोगों की मुक्ति के साथ-साथ अपना वजन घटाने भी यहाँ आयी थी।

भोजन के बाद श्रीमती माटिन—यही उक्त भारतीय महिला का नाम था—हमारे साथ घूमने में भी शरीर हो

गयी। ये हमें जूरिख झील के किनारे ले गयी। यह झील ३० मील लंबी और औसतन एक मील चौड़ी है और जूरिख को तीन ओर से घेरे हुए है। स्वच्छ हरा जल, किनारे पर बड़ी-बड़ी दुकानें, होटल, बेहिसाब चहल-पहल। सैन्डो नावें झील में दौड़ रही



यकी निर्माण स्विट्जरलैंड का प्रमुख व्यवसाय है। ऊपर फेर ल्यूवा कंपनी के यकी निर्माण कौशल की प्रतीक यह पुस्तक दस्तानुशा यकी है।

थी। डल डील याद आ गयी, पर डर-म
शनकी क्या तुलना? यदि डल को
'मिश्रणी' कहें तो जूरिख डील को 'नव-
विवाहिता दुग्ध' कहना पड़ेगा।

सीसरे दिन के लिए प्राकृतिवर्ग मौदर्य
दिखानेवाली मोटरों में हमने मीठ 'रिजर्व'
करा ली। छोटी-सी

साफ 'बस' थी, १८
आदमी बैठ चुके थे।
दो हम बैठे और कम
नल पड़ी। पानी
चरम रहा था।

पचीस मील चल-
कर हम घूमन पहुँचे।
यह छोटी-सी आषादी
है। अब भी पानी की
छोटी-छोटी बूंद धीमे-
धीमे गिर रही थी,
तभी हमारी 'बस'
एक होटल के नामने
रुबी और होटल की
मार्गचिह्न छाना लिए
दोहरा 'वग' के दर-
वाजे पर आ गयी।

वह मुस्करा-मुस्करा-

कर हमें उतारने लगी और अपने प्रांते में
हमें भीगनेमें बचानेकी कोशिश करने लगी।
उम बूझा की मुस्कोई देखकर हैरानी
होती थी। हर यात्री को उमने अपने
मनो और मुस्कराहट की मिश्रण में मराबोंर
कर दिया। होटल में जाकर हम बैठे ही

नवनीत

थ कि, अब मुस्करानी हुई लडकी ने आकर
हम में नास्ते का आर्डर मंगा। जब वह
हमारे लिए फ्रेश दूध लेकर आयी तो हम
साथ लिये भीग हुए बादाम छील-छीलकर
सा रहे थे। हमने थोड़े बादाम उगे भी दिये
ता वह झुनझुता में भर उठी। जब तब

अपेक्षा

अभी मैंने पश्चिमी देशों का दौरा
किया हूँ। मैंने देखा कि, यहाँ साधा-
रण-से-साधारण मनुष्य और स्त्रियों,
चाहे वे किसी वर्ग से सम्बन्धित हों,
अपने देश को विशिष्ट करने के प्रति
उत्साह दिखाती थीं; परन्तु मुझे यह
कहते हुए बुल होता है कि, हमारे
देश में इस प्रकार के उत्साह का
अभाव है। हम में से प्रत्येक को इस
बात में गर्व का अनुभव करना चाहिए
कि, हमारा देश क्या कर रहा है।
वस्तुतः जय-शक्त बलिदानपूर्वक देशभक्ति
की भावना हमारे भीतर धारण नहीं
होयी, तब-तक हम कुछ भी अर्जित
नहीं कर सकते।

—राधाकृष्णन्

इन प्राकृतिक-दृश्यों में मैं उनका गामजस्य
वही स्थापित कर पा रहा था। पर यहाँ
तो मारे ही पर्वतीय स्थानों में आपुनिक
मापन पहुँच गया है। मारे पहाड़ी में
ही नहीं उनकी चोटी पर भी गेले जाती
हैं, अगम्य थोटियों पर भी 'बंजिल ट्रेने'

हमने नास्ता किया
वह बार-बार निकट
आकर हमारी जम्बत
पूछती रही और जब
हम बिदा हुए तो वह
देर तक हमें देखती
और हाथ हिलाने
ही रही।

यहाँ से 'बस' जो
बली तो वह प्राकृति
दृश्यों में ही बीच थी।
रास्ते के दोनों ओर
हरे-हरे वृक्ष, हरि-
याली ने लड़ी पहा-
डियों, चौड़ी गहरी
मीलों लम्बी घाटियाँ,
बड़े-बड़े झरने। बीच-
बीच में गाँव भी आने
जो जरा हमें धुमने।

गह्वं गयी है, जो तारा की रस्सी के सहारे चलती है। सड़क पर जगह-जगह 'टेलिफोन' था।

दो घंटे बाद तो हमें बर्फ भी दिखायी देने लगी। बारम्बार में नग गर्बतो की चोटियों पर बर्फ देखी थी, पर यहाँ तो नरे गर्बतो पर बर्फ थी। बर्फ बनी-बनी हमारे नजदीक आ जानी और आगे तो बर्फ ही बर्फ दिखायी देने लगी।

११ बजे हमारी बस 'रीन' नदी के उद्गम के नजदीक पुराना में रुक गयी। यहाँ आबादी निलुल नहीं है। पर यात्रियों के लिए एक बड़े-से कमरे में बाजार लगा हुआ था। जहाँ गायों में बनी चीजे, बिलौने, घटियों, बच्चों के जूते आदि बहुत-सा सामान रिक' रहा था। कुछ

रंग-बिरंगे पत्थर भी थे, जिनके से पहाड़ बने हैं।

बाजार के पास बैठा एक आदमी एक राव फ्रॉव (अठारह आना) लेकर बाजार से लोगों को बाहर की ओर ले रहा था, हम भी गये। यहाँ तो बर्फ का पहाड़ ही था और बर्फ में यह गुफा। लोग गुफा में

जा रहे थे और एक दूसरी गुफा से निकल रहे थे। क्या इस गुफा में जाना ठीक रहेगा? यह विचार भस्तिष्क में एक क्षण का ही रुका होगा। जब सब लोग जा रहे हैं, तो डर क्या है? गुफा बर्फ का ही एक भाग थी। बर्फ तो सफेद होनी चाहिए, पर यह नीली क्यों? शायद बाहर गुफा पर चमकती



जीवन के इस दुःख, आशा निराशा में सहस्रों सम्पत्ति के प्रतीक पद त्विस शिल्प की अनुकृति

सूर्य की किरणें इसे नीली हो नहीं पाए-दर्शक भी बना रही थी। नीले रंगवाली यह गुफा इतनी सुंदर लग रही थी कि, शरीर का रोम-रोम झिल्ले हो जाना चाहता था। डेढ़ सौ गज चलकर हम एक छोटे बोलाकार कमरे में आ गये। यहाँ दो दीपक जल रहे थे। यहाँ तो आकर प्रेमी और प्रमिकाएँ आपस में चमने ही लगे। प्यार के स्मृति-चिह्न

अंकित करन का उपयुक्त स्थान दूसरा इस पृथ्वी पर हो भी कोन-सा सकता था? चारों तरफ शिव-ही शिव व्याप्त था, सुंदर भी सजग हो उठा था।

मुड़कर हम बाहर निकलने वाली गुफा में चले और एक नृपतिकर अग्नदानभूति लिए बाहर निकले। बाहर लोग बर्फ में खेल

रहे थे। वर्ष की बेंदें अपने मित्रों पर फेंक रहे थे और उनकी मार भुग्मा-भुक्ती सह रहे थे पर, 'बस' चलने का समय हो गया था अब खेल खोडकर 'बस' में आना पड़ा।

अब तो 'बस' वर्ष की दीवारों के बीच चल रही थी। वर्ष बभी सर में डूबी हो आती, तो बभी भीबी। वर्ष की अनेक आदृतियों।

गुहासा तो जैसे आदूपर ही बना बैठा था। बभी रास्ता दिखाई देना बलिन हा जाता, तो बभी वह हटकर भीलो लग दृश्य स्पष्ट कर देता। मूर्धन चमकने लगा और हम दोहती 'बस' से हो फोटो में ले के लिए बंमरे ठीक करने लगने। एक एक दृश्य देगपर मन नाच उठता था। हम उन्हें बंमरे में बांध लेना चाहते थे, पर बंमरे की इन अतत सीधों के सामने भग्न क्या बिमल।

हमारी 'बस' की देगपर हर गुजरती, 'भार' और 'बस' में मे हाथ निरलर दिखने लगने। रास्ते के मौखों में धामीन बालाई और पुनः हमें देगपर मुन्मरा-मुन्मरावर हाथ दिखने, हमारा स्वागत करते। उनकी मधुर सरल वृत्तों-सी मुन्मल दृश्य में उतर जाती। और अपने बन जाने।

जहाँ के सारे पहाड़ों की फुन्नों का बाग बहा जाय तो अत्युक्ति न होगी।

उ बने पहाड़ों, जगलों, पनों का चमक लगाने सीली, सरनों, पर्वनों का दर्शन करते हम मुन्मल वापस आ गये। यहाँ गुजर जिस होटल में हमने नाश्ता किया था,

वही भोजन किया और रात बजे महोने 'बस'-जूरिया के लिए चढ़ पड़ी। अवेस होने लगा था, दृश्य अस्पष्ट और गुनर देग दृश्यों को फिर देगने की उत्सुकताधन। अब हमारी 'बस' की पथ-प्रदर्शिका ने 'रिवाइ' बनाने शुरू कर दिये। रास्ते-अब यह हमें 'माइक्रोफोन' में रास्ते की जगहों के नाम, उनकी विशेषताएँ बताती आयी थी। अब 'माइक्रोफोन' का यह उपयोग हमें बड़ा अच्छा लगा। बाघ समीप ही अधिक था जो बड़ा मधुर था जैसे विजय-जगीन हो। 'बस' में बेंटी गई मुनियों जगीन का नाम उड़ाकर गाने लगी। गाना लग्न होता और ताशियों की गदगदाहट में 'बस' गुन उठती।

एक प्रकार गाते-हंसते ८॥ यजे हम जूरिया पहुँचे। 'बस' ने उतरकर मयने आपस में हाथ मिलाया और अपने-अपने होटल के लिए चल पड़े।

हम एक दिन में २५० मील की यात्रा करने लगे थे और आपसे स्विट्जरलैंड की परिचय हमने कर ली थी। जितना पत्रों दिन में काश्मीर में देगा था, उससे कई गुना अधिक एक दिन में देग गया।

क्या मे स्विट्जरलैंड की स्वर्ण कहें और उन पर्यटकों के स्वर-में-स्वर मिला दें, जो स्विट्जरलैंड की 'पृथ्वी का स्वर्ण' कहते हैं? यदि स्विट्जरलैंड ही भव्य पृथ्वी का स्वर्ण है, तो फिर स्विट्जरलैंड-बागियों के लिए बिग स्वर्ण की बलपना की बागों?

LOW COST

Exciting Gifts



VIEW-MASTER COLOR PICTURES
IN AMAZING 3 DIMENSIONS!



मायाक-बुद्ध सभी अपनी रचि की कहानियों
और विवमास्टर के तीन-आयताधार सजीव
सुन्दर रंगीन दृश्यों में आनन्द
रते हैं। विवमास्टर स्टीरियो-
स्कोप और प्रोजेक्टरों द्वारा
प्रदर्शन के लिए यही शाल
काठा प्रेम हस्तावर्तियों हैं।

बच्चों और प्रौढ़ों के लिए
₹०० से भी अधिक विषय
जैसे मायाजगत में एनीस
(३ रोल) बुद्धात्मक दाम सागर
के स्वर्णीय दिन शाल माकवान्
रेनार्डियर मदर गुड की
लोरियाँ सहस्ररजनी
चरित (३ रोल) आदि
रीलों की लिस्ट तथा अन्य
जानकारी के लिए लिखिए।
नये स्थानों में विक्रता चाहिए
स्टीरियोस्कोप १५) * फोटो
रोल २१) प्रकाश यंत्र १५)
* छोटा प्रोजेक्टर ८५)

पटेल इंडिया लिमिटेड

१९० हार्मबी रोड, ५ लिट्टे स्ट्रीट, ७९० बसाऊजाह रोड, यासक अफ्री रोड,

बम्बई

कलकत्ता

गुवाहाटी

नयी दिल्ली

"मेरी प्रिय सुगन्ध!"

रूपमाला बढ़ती है

लक्स टॉयलेट साबुन
की नयी गुणवत्ता व सुगन्ध कितनी मोहक
है। यह सारी में बड़ी देर तक पसी रहती है।"



जगत् में जिन रमणियों
के सौन्दर्य की चर्चा है वे
सफेद व शुद्ध लक्स
टॉयलेट साबुन के उत्कृष्ट
सुगन्धमय भाग से अपने
रूप-रंग की रक्षा करती हैं।

बड़ी बड़ी का इस्तेमाल कर अपने दैनिक
सौन्दर्य-स्नान का आनन्द उठाइये।

लक्स टॉयलेट साबुन
चित्र-कारिकाओं का सौन्दर्य-साबुन



भारत में बना हुआ

अमर

११ हिंसाई अकबर आइकास्ट करते

इलाहाबाद आकाशवाणी से प्रसारित डॉ० रामकुमार वर्मा का एक रोमक सन्धि

★

दीने-इलाही दुनिया का दीन है। हर एक दीन और धर्म के मुवाहिदों से हमने दीने इलाही के लिए सिर्फ दस बातें चुनी हैं। सुनिये—

पहली है, जूद और करम (हरियादिली और मेहरबानी)। कुरान की आज्ञात है कि, जब-तक तू अपनी सब से प्यारी चीज कुरवान नही करता, तब-तक तू हुकीकत से पाकिस्त नही हो सकता। इसलिए हरिया दिल और मेहर-बान होना जरूरी है।

दूसरी बात है, बुरे काम करने वाले को माफ कर देना और उसके गुस्से का जवाब शीरी जवान से देना।

बम मबास अज दरख्ते
सामा फिगन।
हर कि सगत जनद
समर बरखा ॥

—तू सामा देने वाले दरख्त, बम न साबित हो। जो तुझे परवर मारे, उसे तू फूल दे।
तीसरी बात है, दुनियावी ख्वाहिशात (इच्छाओं) से तू परहेज कर।
चौथी बात है, दायमुल वजूद (अमरत्व)

के लिए तू इस दुनियावी जिंदगी की कैद से नजात (मुक्ति) हासिल कर।
पांचवी बात है, कामो को तू अकल और बदब से अजाम दे।

छठी बात है, दुनिया में खुदा का ऐजाज (करिमा) तू तभी देख सकता है जब तू होशियारी से काम ले।

सातवी बात है, सब के लिए नर्म जवान और जुश कलाम (मीठाबोल) रखना जरूरी है।

आठवी बात है, दूसरे की बात हमेशा अपनी बात से मुकद्दम (बदवर) समझ।

नवी बात है, दीन के लिए तू दुनिया को छुट कर दे और अपने को खुदा पर छोड़।

दसवी और आखिरी बात यह है कि, ए बिरादर! अगर तू अपने दोस्त से बरख चाहता है तो रुह और नफस को एक

में मिला दे।
बस इन्ही दस बातों में दीने इलाही है।
खुदा ने हमें मुल्क अता फरमाया। उस मुल्क को हम शीरी जवान दें, मुहब्बत दें, इबादत दें। अल्लाहो-अकबर!



सम्राट अकबर
[चित्र 'इंडियन-ज्वेलरी
ऐंड ज्वानियेट्स' नामक
ग्रन्थ से साभार]

★



श्रम आत्मविकास का कीमतीया

समर के सुप्रसिद्ध आत्मतिलिखों के वैयक्तिक अनुभवों पर आधारित
आत्मोन्नति के कुछ जीवन मुक्त

*

मानव-श्रम की महिमा अपार है। के लिए अपना रूचि से लेता तथा पशु-
इतिहास की गढ़ने का सर्वाधिक पालन करते थे। किसी भी कार्य की
श्रेय यदि किसीको है, तो वह मनुष्य के सम्पन्न करने में जो आनंद मिलता
परिश्रम को। श्रम द्वारा ही प्रत्येक युग है, उसे प्राप्त करने के लिए ही लोग
का मानव अधिनाशित महत्व, आरोग्य काम करते थे।

एक शान्ति प्राप्त करना
आ रहा है। प्रत्येक क्षेत्र में
प्रगति एवं विकास मानवीय
श्रम द्वारा ही सम्पन्न हुए
हैं। विज्ञान, कला, वाणिज्य,
उद्योग, मनुष्य, मानवता-
मनो का उत्कर्ष मनुष्य के
परिश्रम की ही देन है।

लेकिन जिने हम काम
ममत्ता है, उन्का स्वभाव
बहुत-बहुत आपत्तिक है।
ईसा के छ हजार वर्ष पूर्व
ऐसी कोई वस्तु नशा के
दिमाग में न थी। उस समय
लोग मन-बहताय के लिए
मिन्नार, अनुभव प्राप्त करने
नयनोन



काम

[चित्र : स्त्रियों के एक रंगीन
चित्र की रेखा प्रतिरूपित]

लेकिन ईसा से पाच-छ
हजार वर्ष पूर्व जीवन कुछ
जटिल बन गया और अधि-
वासित बनता ही गया।
उनके साथ-साथ आदमी का
काम भी पेचीदा होने लगा।
पशु-पालन में कई अहचिर
देनिर कायों की आवश्यकता
पड़ती। खेती में भी समय-
मसमय पर बटोर परिश्रम
करना पड़ता, नहीं तो भूख
मरने की नीयन आ जाती।
वही कार्य जो अब तब आनंद
के लिए किया जाता था,
अब मजदूर होकर करना
पड़ता। इच्छा रहने या न

रहने पर भी, जिसे करने के लिए बाध्य होना पड़े, वही काम बन गया। आज-कल काम का यही अर्थ अधिक प्रचलित है।

उसी समय से काम स्वास्थ्य और सुख का स्रोत न रहकर, मनुष्य के लिए एक बोझ बन गया। वह उससे दूर भागने लगा। यही कारण है कि,

हम थालीस वर्ष तक रोज तीन या चार घंटे काम करके शेष जीवन आराम से बिताने के सपने देखते हैं।

एक जी वेल्स ने आशा प्रकट की है कि, अधिक व्याप-पूर्ण सामाजिक एवं आर्थिक व्यवस्था के कारण आनेवाली पीढ़ियों को रोज रोज इतनी कड़ी मेहनत नहीं करना होगी। बैंक और धीमा कप-नियों लोगों को ६५ साल की उम्र में

सम्पूर्ण अवकाश प्राप्त करने की स्थिति का आश्वासन देकर काफी व्यवसाय करती हैं। इन सभी बातों में नम-से-नम काम करने की खतरनाक प्रवृत्ति का बीज छिपा है।

बहुत कम लोग यह याद रख पाते हैं कि, जिंदगी केवल एक हल्का दर्वा या

बठोर परिश्रम ही नहीं। किन्तु महान व्यक्तियों ने इस महान सत्य को पहचाना है कि, कर्म ही जीवन है।

जान रस्किन ने लिखा है—‘मनुष्य के श्रम का सर्वोच्च पारितोषिक उससे प्राप्त पारिश्रमिक नहीं, बल्कि उससे यह स्वयं क्या बनता है वही है।’

काम : अमृत

यदि अच्छा और परिश्रमपूर्ण काम है, तो वह एक ऊपर उठाने वाली, उल्लास और शक्ति देनेवाली चीज है। आपको कितना परिश्रम करना पड़ता है, इसकी परवाह नहीं। लोग आकर भुससे कहते हैं कि, इतनी मेहनत न करो, तुम काफी सोते नहीं हो। इसकी क्या चिंता? कठिन परिश्रम करने से कोई मरा नहीं है, बस तो कि, वह अच्छे उद्देश्य के लिए काम कर रहा हो और जी लगाकर काम कर रहा हो। इसके विपरीत लोग मानसिक थकावट और दूसरे कारणों से मर जाते हैं।

—जवाहरलाल नेहरू

महान धनपति हेनरी फोर्ड ने अनुभव किया कि, हमारा काम हमें जीवन का साधन ही नहीं, बल्कि स्वयं जीवन प्रदान करता है। लिड उलाइका फर्गन है—‘वास्तविक आनंद उसे ही प्राप्त होता है, जो अपने योग्य कार्य उचित ढंग पर करता है।’ कुछ भी नहीं करने से या काम को बिगाड़ कर अपना अयोग्यता से करने से मन दुखी होता है।

जवाहरलाल नेहरू का कार्यश्रम सुबह सात बजे से ही शुरू हो जाता है। वे प्रतिदिन ७ बजे प्रातः बाल से लेकर २ बजे रात तक कार्य करते रहते हैं, लेकिन उनकी इतना काम करने भी कोई परेशानी महसूस नहीं होती। उन्होंने तो बल्कि यह लिखा

हैं कि, काम के भार से मैं अपने मस्तिष्क और वदन की स्फूर्ति काममें रख पाता हूँ और यह अच्छे स्वास्थ्य के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।

केवल मनोरंजन, जीवन-यापन का साधन, स्वास्थ्य और सुख ही अधिक काम करने पर निर्भर नहीं, बल्कि मनुष्य की महानता की भी यही नींव है। प्रतिभा दस प्रतिशत प्रेरणा और नब्बे की सदी बटोर श्रम है, यह उक्ति बिलबुल सच है।

सन् १८४२ में चार्ल्स डार्विन ने एक खेत पर लट्टियाँ मिट्टी के टुकड़े इसलिए बिखेरे, ताकि मिट्टी को ढालने में केचुए क्या कार्य करते हैं, इसकी खोज के कर सके। २४ साल बाद उन्होंने इसके परिणाम की खोज के लिए एक सार्द बर्ही खोदी। एक सामान्य प्रयोग के साक्षर इतनी लगन से उन्होंने परिश्रम किया।

प्लेटो ने अपनी प्रख्यात पुस्तक 'रिपब्लिक' की प्रथम पंक्ति में थार लिखी। प्लिन ने 'डिपथिडन ऐंड फाल माव द' रोमन एम्पायर' का प्रथम परिच्छेद सात मित्र-मित्र तरीकों से लिखा। 'मिडम वावरी' लिखते समय गस्टाफ क्लायर्ट ने एक उपयुक्त शब्द ढूँढ़ने के लिए कई देशों की यात्रा की थी। माइकेल एन्जेलो भी इसी प्रकार ऐसे परिश्रमी थे। उस समय भी जब कि, वे बीमियों सहमय बिना तनखाह दिए रख सकते थे, उन्हें अपने ही हाथ से मय-मृच्छ करना अधिक प्रिय था। यहाँ तक कि, चौमट, छेनी या महामो नवनोत

इत्यादि औजार भी वह अपने ही हाथ वे बने इस्तेमाल करते थे।

लियोनार्डो-विंसी सत्तार के उन महा-पुरुषों में से थे, जिन्हें अपना काम इतना प्रिय था कि, सुनहूँ पी पटने ही वे अपने स्टुडियो में बैठे जाते और शाम तक कार्य करते रहते। दिन भर वे प्रायः कुछ खाते-पीते भी नहीं थे।

रूस के जार, पीटर ने, जिसे वर्तमान रूसी सरकार भी महान मानती है, २९ वर्ष की उम्र में बटोर परिश्रम से अपनी रोटी आप बमाकर, यूरोप-भर का भ्रमण किया। जहाज-निर्माण का काम सीपते बकन वह हार्लैंड के एक बदरगाह पर एक मामूली मजदूर की तरह साधारण बुटियाँ में रहा। रूस की प्रथम जल-सेना तैयार करने के लिए कई मजदूरों के साथ अपने दिन-रात बड़ी मेहनत की। उसने अपने अपने हाथों से रूस की सत्तार का एक शक्तिशाली राष्ट्र बनाया। यही कारण है कि, रूस का प्रत्येक नागरिक उन्हें 'पीटर महान्' के नाम से पुकारता है।

'टाइम्स', 'हेल्लोमेल' और 'इवनिंग न्यूज' जैसे विश्व-विख्यात पत्रों के मालिक, स्वर्गीय लार्ड नार्थविथफ अपने गाँव पसीने की बमार्द और अद्भुत साहस से ही इतने योगे बड़े। लडवपन में उनके पाठ एक भी पेंसा नहीं था और न उनका बही प्रभाव ही था। बिना धन या मित्रों की सहायता ने उन्होंने केवल अपने बटोर परिश्रम के कारण, बहुत मामूली हिसाब

से अपने-आपको इतने ऊँचे पद पर पहुँचाया।

काम अपने अनुयायियों को महानता के पथ पर तो ले जाता ही है, लेकिन किसी भी राष्ट्र अथवा संस्कृति को अधिक टिकाऊ और महान बनाने का यदि कोई साधन है, तो वह कार्य ही है। इतिहास इस बात का गवाह है कि, जिस किसी देश में धर्म और श्रमिक की महत्ता घट गयी और उन्हें नीचा देखा जाने लगा, वह देश शीघ्र ही पराधीनता के मार्ग पर अग्रसर हुआ, एवं उसकी संस्कृति धीरे-धीरे क्षय-धीण होकर नष्ट हो गयी।

रोमन और यूनानी सभ्यता इसके स्पष्ट प्रमाण हैं। इन प्रजातन्त्र राष्ट्रों के अंतिम दिनों में अवर्मण्य लोगों की सख्या में अत्यंत वृद्धि हो गयी थी। जूलियस सीजर के जमाने में तो अनुमान लगाया जाता है कि, राज्य-भोष पर निर्भर रहनेवाले व्यक्तियों की संख्या ३,२०,०००

थी। इनके अतिरिक्त हजारों और भी ऐसे लोग थे, जो ग़लत राजनीतिज्ञों को जनमत दिलाने के लिए रूपाएँ उठ कर अपना निर्वाह करते थे। यही कारण है कि, यूनानी अथवा हसी उत्कर्ष-काल में कोई भी नवीन वैज्ञानिक अनुसंधान अथवा प्रकृति पर विजय की गाथा सुनने में नहीं आती।

भारतवर्ष और दूसरे एशियाई राष्ट्र इस समय संक्रमण की परिस्थिति में से गुजर रहे हैं। सहस्रो वर्ष की अकर्मण्यता के कारण जिस पराधीनता के चंगुल में वे अब तक फँसे रहे, वह खत्म हो चुकी है। आज वे स्वतन्त्र हैं, लेकिन अपनी नवीन प्राप्त स्वतन्त्रता की रक्षा के लिए उसके, स्थायित्व के लिए सत्तार के राष्ट्रों में महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त करने के लिए, उन्हें इतिहास की यह शिक्षा कभी नहीं भूलनी चाहिए कि, जो जाति पराक्रम करती है, वही जीती है।

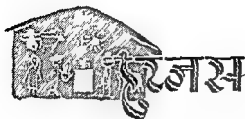
★

पाचना

जिन प्राणों से लिपटी हो
पीड़ा मुरझिठ चन्दन-सी ।
तूफानों की छाया हो
जिसको प्रिय आलिंगन-सी ।
जिसको जीवन की हारे
हो जय के अभिनन्दन-सी ।
वर दो यह मेरा आँसू
उसके उर की माला हो ।

—महादेवी वर्मा

★



राजस्थान का यह बोध प्रखर लोक-काव्य अपनी सर्वव्यपिता में बेजोड़ है। भाष्य सहित यह हमें काव्य-कौशल-सहस्र से प्राप्ति हुआ है। मिथिल-सत्य की प्रेम प्रखर अग्नि के सम्मुख निराख्य हिंसा भी प्रेम-व्यवस्थित बन जाती है, इसकी प्रतीति में यह गीत अत्यन्त अप्रसूत है।

★

हरिजी की बाड़ी घेर घूमेरी, सीता हैं रखवाली हो राम। हरे भज राम ॥१॥
 गौरी गैवतरी चौड़े पूज, इन्द्र रह्यो पराय हो राम। हरे० ॥२॥
 एक बन चरियो, सबल बन चरियो, तिहां को राख्यो बिडलो छन चर्यो। हरे० ॥३॥
 चरता-चरता सिंह ज आया, तो राख्यो बिडलो अण चर्यो। हरे० ॥४॥
 आ ए गैवतरी! भखलू ए भाई, तिहां का बिडला तें चर्या। हरे० ॥५॥
 आच्छो रं भाई, भरव के रं भाई, एक बर भाई बचना की बांधी, एक बर पाछो
 जान दे। हरे० ॥६॥
 घर मा उड़ीरं मेरा घनी घोरी बाड़े रामें मेरो बाछलू। हरे० ॥७॥
 आ ए गैवतरी! बचना की बांधी, बचना की बांधी पाछो आए गैवतरी। हरे० ॥८॥
 बाली रं गैवतरी ठान में आई, ठणक-ठणक ओसू टपक हो राम। हरे० ॥९॥
 आए गैवतरी! छूटं बांधू, ग्वाड़ें में रोमैं तेरो बाछलू। तेरं गुथाड़ें में परत न
 बघस्यु, बचना की बांधी दूध प्यायसू। हरे० ॥१०॥
 आ रं बाछडिया! बूग के रं दूधो, बचना रो बांध्यो दूधो बूग के रं भाई। हरे० ॥११॥
 आरं बाछडियो! गैवता गैवतरी, बचना की बांध्यो दूधो ना बिजें। हरे० ॥१२॥
 एक बन देख्यो, सबल बन देख्यो, तिहां रो राख्यो बिडलो में चर्यो। हरे० ॥१३॥
 बित हे माता तेरा सिंह घडूकं, बितरंतनं भरवण बाळियां। हरे० ॥१४॥
 इत भूल्या म्हारा भरवणियां, इतही सिंह घडूकसी। हरे० ॥१५॥
 आ रं मामलिया! भरव रं भाई, पाछं भरव मेरो माय नैं। बचना की बांध्यो
 दूधो ना बिजें। हरे० ॥१६॥

कण रं बाछडिया ! तिल बुध दोहों, कण तन वचन सुणाइयो । हरे० ॥१७॥
 हरि रं मामलिया ! तिल बुध दोहों, माता वचन सुणाइयो । हरे० ॥१८॥
 तन रं बाछडिया ! हसली कडूला, अगड घडाऊं तेरो माय नं । हरे० ॥१९॥
 तेरं रं बाछडिया ! भुगता टोपी, तील पहराऊं तेरो माय नं । तेरं अवर
 के वारि मर ज्याऊं ॥ हरे० ॥२०॥

अर्थात् हरि की घेर घुमेरवाली घाटिका है और सीता उसकी रसवाली करनेवाली है ॥१॥ गौरी गाय लुले में काँप रही है और इन्द्र घनघोर गर्जन कर रहा है ॥

(इसी समय वह गाय घरने निकली) एक इन की घस घर कर और सब बनो की घास भी घर ली, (यहाँ तक कि) सिंहों ॥ रक्षित हरे भू भाग भी उसने घर डाले ॥३॥

वह घर रही थी कि, इसने में सिंह आ गये और (आपस में कहने लगे) कि, हमारे रक्षित भू-भाग को इसने घर लिया।

(एक सिंह ने आगे बढ़ कर कहा) हे गाय ! इधर आओ, मैं तुम्हारा भक्षण करूँगा, क्योंकि तुमने सिंहों के हरे भू-भाग को घर लिया है।

गाय ने प्रत्युत्तर दिया—‘अच्छा भाई ! मेरा भक्षण कर लो, किन्तु भाई ! वचन-बढ़ होकर मुझे एक बार वापिस जाने दो।’

घर पर मेरे मालिक मेरी बाट देखते होंगे और खरक में मेरा बछड़ा रंभाता होगा।

सिंह ने कहा—‘हे गाय ! तुम वचन-बढ़ होकर वापिस आओ और वचन-बढ़ होने के कारण वापिस आना।’

गाय वहाँ से चल कर अपने स्थान पर पहुँची, उस समय उसकी आँखों से टपटप आँसू टपक रहे थे।

गाय के मालिक ने कहा—‘हे गाय ! आओ, मैं तुम्हें खूँटे से बाँधूँ, देखो, खरक में तुम्हारा बछड़ा रंभा रहा है।’

गाय ने उत्तर दिया—‘जब मैं तुम्हारे खरक में अभी न बंध सकूँगी, मैं तो अपने बछड़े को बचनो से बाँधा हुआ दूध पिलाऊँगी।’

गाय ने कहा—‘हे बत्ता ! आओ,



कुरान की एक आवक द्वारा अंकिन सिंह
 [चित्र एक खरवी चित्र की प्रतिरिति]

(अंतिम बार) मेरा दूध पान कर लो; बचन-बद्ध दूध का पान कर लो।'

(यह मुकते हो) बछड़ा आगे चल पड़ा और धीरे धीरे पोछे-पोछे (क्योंकि) बछड़े ने कहा—'मैं बचनो से बँधा हुआ दूध नहीं पीता।'

गाय ने कहा कि, मैं एक बचन देणती हुई तथा और सब बचनों की देणती हुई सिंहो से रक्षित भू-भाग की चरने लगी थी, (इसी से यह नीति आयी)।

(जब गाय और बछड़ा जंगल में पहुँच गये तो बछड़ा गाय से पूछता है) 'हे माता! तेरा यह सिंह क्यों दहाड़ता है और तुझे भक्षण करने वाला यह क्यों है?'

गाय ने कहा—'हे पत्त! मुझे भक्षण करने वाला यही सोचा हुआ है और यही यह सिंह दहाड़ेगा।'

(इतने में सिंह आ पहुँचा) सिंह की देखकर बछड़ा दृष्टि से धीरे दड़ा और कहने लगा—'आओ, माता! पहले मेरा भक्षण कर लो, इसके बाद मेरी माँ का भक्षण करना क्योंकि, धन्यों से बँधा हुआ दूध मैं नहीं पीता।'

सिंह ने तरस धा कर कहा—'हे पत्त! तुम्हें यह शिक्षा और यह बुद्धि किसने दी और किसने तुम्हें भ्रमोत्पन्न बचन सुनाये?'

बछड़े ने उत्तर दिया—'हे माता! भगवान ने मुझे यह शिक्षा दी और माता ने मुझे उपदेश दिया।'

सिंह ने प्रसन्न होकर कहा—'हे पत्त! मैं तुम्हारे सिधे हँसली और बड़ाला (आभूषण-विशेष) धड़का बूँदा और तुम्हारी माता के सिधे अपड़ा।'

'हे पत्त! मैं तुम्हें झगला (बच्चों का क्रूरता) और टोपी पहनाऊँगा और तेरी माता की लीला। तुम पर मैं न्योछावर होता हूँ।'

★

आमार

'आइवन्ही' के प्रख्यात लेखक, सर वाल्टर स्वाट ने एक बार किसी फुट के लिए एक सभा आयोजित की। फुट का महत्व समझाते हुए उन्होंने आपस ही मार्मिक एवं हृदयस्पर्शी भाषण दिया। बाद इबट्टा करने के लिए भाषण के उपरान्त उन्होंने अपना हँट थ्रोताओ के सम्मुख घुमाया; लेकिन बदे के नाम किसी ने एक पैसा भी हँट में नहीं डाला। जब सातवीं हँट लगने पास आपस आ गया, तो उन्होंने बड़ी धीमे से कहा—'आप लोगों का मैं अत्यंत आभारी हूँ कि, आपने मेरा हँट तो कम-से-कम सजुशल वापस लौटा दिया।'

—वाटल कुमार बनर्जी

★

जल की खेती

चैर अंगी

वेकिनयम और हार्लैंड के देशों में जल और वो जगहोंका संपादन होवी आ रही है, और दूसरी ओर सारे संसार के सारे मशीनी उत्पन्न से पाट देने के लिए उधे सधे जमीन पर उपयोग लगे गिये जा रहे हैं। अतः कृषि के लिए भूमि कम नहीं पा रही है। रोती या वह नया तरीका इसी समस्या का समाधान है।

★

बिना भूमि की कृषि-प्रणाली एक ऐसी रासायनिक प्रणाली है, जिसमें जल और रासायनिक प्रियाओं का मुख्य ह्रास रहता है। सामान्य कृषि प्रणाली में पौधों को भूमि से, जड़ों के माध्यम, साद्य पदार्थ (जैविक पदार्थ) प्राप्त होते हैं। परन्तु बिना भूमि की कृषि पद्धति से इन पदार्थों को ये साद्य पदार्थ रासायनिक द्रव्यों के रूप में जल के माध्यम से पहुँचाये जाते हैं। अतः जहाँ जमीन की कमी हो, उद्यान-पद्धति पूर्णतः असफल सिद्ध हो चुकी हो, जहाँ भूमि बजर हो, सिंचाई की व्यवस्था न हो, रेगिस्तान या पहाड़ी रपा हो, वहाँ रासायनिक पद्धति से-बिना भूमि के-उत्तम पोषक तत्वों और समस्त विटामिनो से पूर्ण वनस्पति उत्पन्न की जा सकती है।

वर्षप्रथम, जापान में अमेरिका के फोर्जी सिपाहियों ने बिना भूमि सेती की पद्धति से ८० एक्ड़ का खेत तैयार

किया था, जिसमें एक भी पौधा भूमि पर नहीं उगाया गया। आज भी पूर्वी देशों में, जहाँ की जनसंख्या बहुत अधिक है, हजारों खेत उपर्युक्त प्रणाली से तैयार किये जाते हैं और साद्य पदार्थों के अभाव की पूर्ति सहज ही कर ली जाती है।

हाल ही में, नूतन शोध और प्रयोगों से यह पद्धति अत्यंत सरल बना दी गयी है और कोई भी व्यक्ति इस पद्धति से लाभ उठा सकता है। इसके लिए कृषि-यंत्रों की भी आवश्यकता नहीं होती।

अब तब इस पद्धति के लिए पोषक तत्वों के मिश्रण तैयार करने पड़ते थे जिनके लिए विशेष वर्तनों और विद्युत-घड़ियों की आवश्यकता पड़ती थी। प्रयोग का व्यय भी कोई साधारण नहीं था। खती करनेवालों के लिए तद्-विषयक ज्ञान और अनुभव अपेक्षित थे। परन्तु अब इन समस्याओं को दूर कर दिया गया है और 'नूतन

बगाल-पद्धति' का परिपूर्ण विवास विद्या गया है। 'बगाल-पद्धति' अव्यक्त ही सुगम है। इस पद्धति ने सफ़्त प्रयोगों में विदेन तथा अन्य राष्ट्यों ने लिए जहाँ जनसंख्या समान है तथा कृषि के लिए उपयुक्त भूमि का मिलना बर्तित है, अनेक सम्भावनाओं का मार्ग प्रशस्त हो चुका है।

जल-स्रोतों का विना

भूमि की संतो का कार्य अव्यक्त ही रहता है। किसी भी धातु के वर्तन में जो काफी गहरा हो पोषे पैदा पिये जा सकते हैं। धर्तनी में १ से ३ इंच तक कचरा या गीली राख के साथ मिट्टी का मिश्रण ५/२ के अनुपात में भर देते हैं। ऐसे मिश्रण का राज की तरह सदा गीला रखा जाता है। रात में तैयार हो जाने पर कचरियाँ बना कर बीज डाल दिये जाते हैं। पोषों के उप आने पर कचरियों के बाँध में और पोषों की कचरियों के आग-पास मूत्रे रासायनिक लक्षण और रस का मिश्रण छिड़का जाता है। इस राख मसाले के ऊपर पानी के छींटे दे दिये जाते हैं।

रासायनिक राख अपना प्रभाव भी

नयनोत्त

बंचना

जिस किसी ने अपने जीवन में एक बार भी उस आनंद का, जो बंशानिक अनुसंधान के बाद प्राप्त होता है, अनुभव किया है, वह उस आनंद को बड़ा-बड़ा भूल नहीं सकता और वह निरन्तर इस बात की इच्छा करेगा कि, यह आनंद मुझे जीवन में अनेक बार मिले। पर, एक बात से उसे दुःख होगा—वह यह कि, इस तरह का आनंद बितने अल्प-संख्या आदमियों के भाग्य में बँटा है। कुर्भाव्यवस्था मान और व्यवस्था केवल मूढ़ों-अर आदमियों तक ही परिमित रहता है।

—विश्व प्रोपादक

बड़ी जगहों से २०० टन टमाटर पैदा किये जा सकते हैं—औसतम हर बीघे पर २५ पौंड टमाटर। मू-स्रोतों में एक एकर में २०० पौंड से भी कम मसूर पैदा होता है, परन्तु रासायनिक स्रोतों में एक ही एकर में ६०० पौंड से भी अधिक मसूर पैदा की जा सकती है। उत्तरी बगाल के दार्जिलिंग

काल ही दिखाता है। अब उत्तम विधे जाननेवाले पोषे बड़े ही ताजे और भरे-पूरे होते हैं। परिणामतः फल भी बड़े मोटे और रंगीने होते हैं। रासायनिक मिश्रण में मुख्यतः सोडियम नाइट्रेट या अमोनिया मल्ट, पाटायिसम सल्फेट, मैंगनेसियम सल्फेट और फामफोरस रहते हैं। इनके

अतिरिक्त घूने भी भी आवश्यकता पड़ती है। जहाँ ये पोषक तत्व मुख्य न हों, वहाँ उनसे स्थानात्मकताओं का उपयोग किया जा सकता है।

विना भूमि की रासायनिक संतो की उपज भी साधारण श्रेणी में अधिक होती है। जहाँ उत्तम भूमि और साध के उपलब्ध होने पर एक एकर में साधारणतया ६० टन से अधिक टमाटरों की पैदावार की जाती है।

बड़ी जगहों से २०० टन टमाटर पैदा किये जा सकते हैं—औसतम हर बीघे पर २५ पौंड टमाटर। मू-स्रोतों में एक एकर में २०० पौंड से भी कम मसूर पैदा होता है, परन्तु रासायनिक स्रोतों में एक ही एकर में ६०० पौंड से भी अधिक मसूर पैदा की जा सकती है। उत्तरी बगाल के दार्जिलिंग

में आलू की खेती इसी तरीके से की जा रही है। जहाँ पहले साधारण खेती से १८ टन आलू उत्पन्न होता था, वहाँ अब ६५ टन का उत्पादन किया जाता है। जल-खेती से चावल भी उत्तम किस्म के तैयार किये जा सकते हैं। गोबी, गाजर, खलजम आदि का उत्पादन भी इस पद्धति से सर्वोत्तम होता है। रंग-बिरंगे फूलों की पुष्पकारी भी राजायी जा सकती है।

भू-वृष्टि की तुलना में बिना भूमि की सती में श्रम और स्थान का ३० प्रतिशत अल्प व्यय होता है। आप अपने कमरे में ही इस खेती का आनंद ले सकते हैं। इस पद्धति में खाद्य का शोषण करने वाले व्यर्थ के घास फूस भी पैदा नहीं होते। प्रामाणिक तरीकों और आंतरिक रासायनिक क्रियाओं के कारण विशय देखभाल की आवश्यकता नहीं रहती। प्रकृति के प्रकोपों से सहज ही सती को बचाया जा सकता है। सर्दों के दिनों में बाँच या प्लास्टिक से ढाकर उसकी रक्षा की जा सकती है। सबसे बड़े महत्व की बात यह है कि, रासायनिक क्रियाओं से उत्पन्न और प्राकृतिक तरीकों से उत्पन्न पौधों के पापन सत्वा में अंतर नहीं होता। विटामिन और खनिजों की मात्रा दोनों में समान रहती है।

इन सब सुविधाओं के अतिरिक्त, इस पद्धति से पौधों के गुणों में वृद्धि करने की सम्भावनाएँ भी पर्याप्त हैं। टमाटर

में कैल्शियम की मात्रा बढ़ा कर छोटे बच्चों के लिए उन्हें उपयोगी बनाया जा सकता है। फिर यह खेती भिन्न-भिन्न व्यक्ति की प्रकृति के अनुसार भिन्न-भिन्न तरीके से की जा सकती है। जो टमाटर एक रोगी के लिए लाभदायक होगा, वह अन्य रोगी के लिए नहीं हो सकता। जो नींबू दुबने आदमी के लिए पैदा किया जायेगा, वह मोट आदमी के लिए उपयोगी नहीं होगा। मने की बात तो यह होगी कि, हर व्यक्ति अपने साधारण रोगों का इलाज खाद्य पदार्थों से ही कर लेगा।

इस चमत्कारपूर्ण पद्धति का विचार होने पर जनसंख्या की वृद्धि के भय का भूत भी भाग जायेगा। पौधों को मराने के छनो पर ही पैदा कर लिया जायेगा। सिट्रिफो पर लहलहाते पुष्पों की क्षारियाँ दिसायी देंगी। शीडियों के आसपास और आगन के चारों ओर छोटे मोटे पौध बड़ी आसानी के साथ पैदा किये जा सकेंगे।

एक विशेषज्ञ ने यहाँ तक कल्पना की है कि, भुद्ध के भेदान में हर सैनिक अपने शिविर में इस खेती से आवश्यक साध्य पदार्थ का उत्पादन कर अपनी भूख मिटा लेने में समर्थ हो सकेगा। इतना तो निश्चित ही है कि, इस पद्धति का विचार होने पर सभी देश आत्मनिर्भर हो जायेंगे और भुखमरी इतिहास की एर दुपट्ट घटना-मात्र बन कर रह जायगी।



औरंग-उरांग

हाल ही में वैज्ञानिकों का ध्यान चमर की इस जाति की ओर आकृष्ट हुआ है। आधुनिक काल में डार्विन के विकासवाद के समर्थक प्रोफेसर होवेल ने ही यहाँ तक दावा किया है कि, निम्पानी की अपेक्षा औरंग-उरांग में मानवीय लक्षण या विशेष सादृश्य है। प्रस्तुत लेख प्रोफेसर स्टैनिन होवेल के ही लेखों के आधार पर है।

★

औरंग की लाल भूरी छाल होती है।

बालों का रंग भी इसी प्रकार का होता है। यह बहुत धीरे-धीरे चलने वाला प्राणी है। यह चाहिये कि, आलसियों की तरह चमरता है। वास्तव में, यह पेड़ों पर रहने वाला जानवर है और इसीलिए अपने लम्बे-लम्बे हाथों की कलाइयों बहुत बचल होती है।

ऐसा प्रतीत होता है कि, औरंग केवल शीतलों और सुमात्रा द्वीपों में ही पाया जाता है। यहाँ यह पत्तों और आर्द्र जगहों में रहता है। एक वदमृत बात यह है कि, औरंग के शरीर का रंग यही है, जो वहाँ के निवासी मनुष्यों का है, और वह भी कुछ जगहों मनुष्यों की भाँति घेड़ पर रहता है। मनुष्यों को छोड़कर इनके मुख्य शत्रु मोंग और शेर-बीते आदि हैं।

नवनीत

फसलों पर चढ़ाई करने के लालच को छोड़कर, औरंग बहुत ही कम भूमि पर आता है। गुरिल्ला की तरह वह भी घोंसला या एक प्रकार का मंच बना कर रहता है। धूप और वर्षा से बचने के लिए यह पास-पसी की छतरी बना लेता है। बन्दी जीवन में (चिड़ियाखाने में) यह अक्सर या तिनपे से भी छतरी बना लेता है। कुछ पहले लंदन के चिड़िया-खाने में, रात में, एक बड़ा औरंग भाग निकला। दूसरे दिन प्रातः वह आराम से एक लुढ़ के बनाये घोंसले में थँटा मिला।

औरंग में काफी बुद्धिमानों और तर्क-शक्ति होती है। न्यूयार्क के चिड़ियाखाने के एक औरंग ने एक लकड़ी की चाबी बनायी थी। इसी प्रकार एक बार एक

औरग के पिंजड़े के निकट मूल से लगे
या एक टुकड़ा पड़ा रह गया। उसने उध
टुकड़े को उठा लिया और उससे पिंजड़े
से बाहर निकलने के लिए छड़ों को मोड़
कर रास्ता बनाने लगा। यही नहीं,
बल्कि उसने इस काम के लिए अपने एक
विर्मजी साथी से भी सहायता ली।

औरग का जीवन, मनुष्य के जीवन
से बहुत-कुछ मिलता-जुलता है। यह परि-
वार सहित झुंडों में रहता है और दिन
में साता और रात में सोता है। बच्चे
की शिक्षा-दीक्षा और पाछन-पोषण का
भार पूर्ण रूप से मादा औरग पर ही
रहता है। पेड़ों पर रहने के कारण औरग
के दैनिक कार्यक्रम में कुछ विशेषताएँ आ
गयी हैं। बिना मच बनाये यह किसी भी
स्थान में अधिक समय नहीं बिताता।

औरग केवल वही पानी पीता है,
जो बरसात से या ओस से पेड़ों के तने और
शाखाओं के जोड़ों से बने गूढ़ों में इकट्ठा
हो जाता है। एक चिड़ियाखाने के बदर-
पर में एक बाल्टी में पानी भर दिया गया।
यद्यपि-वहाँ एक कटोरी रखी थी, लेकिन
फिर भी औरग ने कुछ तिनके उठा लिए
और उनको पानी में डूबो कर घूसने लगा।
यह औरग जंगल में काफी समय तक रह
पुका था।

यो साधारणतः औरग बड़ा शांत
जानवर है, लेकिन कभी-कभी वह बहुत
भयंकर हो जाता है। यह आदत पुष्प
औरग में विशेषतः पायी जाती है। जितने

भी पुष्प-औरग पकड़े जाते हैं, च. १
जीवित पकड़े गये हों या मृत, उनमें से
बहुतांश के शरीर पर लडाइयों के चिह्न होते
हैं। यह देखा गया है कि, औरग की
जंगलिया के सिरे बहुत छोटे होते हैं-
कदाचित् इसका यह कारण हो कि, बदर
जब लड़ते हैं तो एक दूसरे का हाथ पकड़
कर चबा जाते हैं।

औरग का सबसे बड़ा शत्रु सोंप है।
इसमें संदेह नहीं कि, औरग का इनसे
डरना ठीक ही है, क्योंकि दिन जंगलों में
यह रहता है, वही बड़-बड़े विपले सोंप
भी पाये जाते हैं। कदाचित् औरग अपनी
सहजवृद्धि के कारण ही से सोंप से डरता
है। एक बार लड़क के चिड़ियाखाने में
एक छाट-से औरग के साथ एक विपहीन
सोंप को रख दिया गया। इस औरग
ने कभी सोंप को नहीं देखा था। वह सोंप
से डरने लगा, यहाँ तक कि, उसकी रक्षा
के लिए यह उचित समझा गया कि, दोनों
को अलग कर दिया जाय।

औरग-उदाग के बारे में न्यूयार्क के
चिड़ियाखाने के निरीक्षक डॉ. डिटमार्श
का वर्णन बहुत मनोरंजक है। उन्होंने
लिखा है—

“मुझे सबसे अधिक आनंद औरग-
उदाग के साथ मिलता है। एक बार मुझे
संन-फ्रांसिसको जाकर कुछ औरग उदाग
के लाने की आज्ञा मिली यह औरग-
उदाग सिगापुर से आये थे।

“मेरा दन्वा औरग-उदाग के दन्वे

से सात दृश्या आने लगे, इसलिए मैंने एक आदमी को कह दिया कि, अगर कोई जल्द ही तो मुझे आकर कह धाय। बाकी रात के समय मेरे दृश्य को किसी ने आकर बड़े जोर से खटखटाया। बुली ने धमा मारते हुए मुझसे कहा कि, पीछे के दृश्य में आप की आवश्यकता है। वहाँ जाने पर मालूम हुआ कि, एक रेल-बग्नकारी जो कि, सामान की जाँच कर रहा था, औरग-उठाव के पिजड़े के पास आया। शायद उसे कोई बागज नहीं मिल रहा था, इसलिए उसने अपनी जेब से बागजों को निकाल कर पिजड़े के ऊपर रखा और उनमें से छोटने लगा। इसी समय रेल एक ओर मुड़ी और औरग भाग पड़ा। शायद औरग की समझ में यह बात नहीं आयी कि, यहाँ पर लगे के समान यह क्या खड़ा है। उसने अपने लम्बे हाथ निकाल कर उन "सर्माँ" को जोर से ढँक दिया। बेचारा बग्नकारी बीस-मारकर एक तरफ गिर पड़ा।

एक स्टेशन पर मैंने औरग को जलपान कराया। दोपहर के समय एक दूसरे स्टेशन पर जब मैं धाय पी रहा था, तो मुझे औरग के दृश्य की ओर से चीखें और हँसी की आवाज सुननी पड़ी। एकदम मैं गमम गया कि, इसमें औरग का अवश्य कुछ हाथ है। यहाँ जाने पर देगा कि, सारे दृश्य में बीसहट-बीसहट स्मिरे बागजों का ढेर लगा है—वास्तव में, एक समाचार-पत्र बंधने वाला रज्जा यहाँ

पर औरग को देखने के लिए आया था। औरग ने एक झटके में उससे समाचार-पत्र छीन लिये और उन्हें पाटने लगा। इसी देर आलस्य में बैठने के पश्चात् जब औरग को यह खेल मिला तो पता नहीं उसके कितना आनंद हुआ होगा, क्योंकि वह बीच-बीच में किलकारी भी मारता जाता था। मैंने उस छटके का सब समाचार-पत्रों का मूल्य दे दिया।

“कुछ समय पश्चात् एक बुली फिर मेरे दृश्य में आया। वहाँ जाकर मैंने देखा कि, औरग के हाथ में एक लम्बा चाकू है और वह उससे आसपास खड़े हुए दर्शकों को डरा रहा है। पृष्ठने से मालूम हुआ कि, एक बुली नये सामानों पर लिबिल चिपकाने आया था। यह सोच कर कि, वही किसी सामान के पीछे खगपर वह चाकू मूल न जाये, उसने उसे औरग के पिजड़े पर रख दिया। लेकिन काट कर उसने दूसरा फिर वही चाकू रख दिया। आवाज होने से औरग जाग गया और चुपके से उसने चाकू पिजड़े से खींच लिया। बुली ने पहले तो चाकू की लोजा, लेकिन ज्योंही उसने उसे औरग के हाथ में देखा वह पौरन दृश्य में न बूढ़ पड़ा। बड़ी देर तक मोहन के पश्चात् मैंने औरग को एक सेल की कुर्सी दिखायी। उसमें सेल गिरता देखकर शायद औरग ने यह सोचा कि, इस चाकू से अच्छा यह सेल है और उसने चाकू गिरा दिया और कुर्सी ले ली। मैंने चुपके से चाकू हटा दिया।”

संस्कृति

हमारे हृदय की पावन गंगा

भारतीय की सुप्रसिद्ध ऐतिहासिक और समाज सेवित्रा भीमवी शर्मा ने इन ग्रंथों के एक सेट का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत

★

आजकल हम संस्कृति को बहुत चर्चा सुनते हैं। जब कभी कोई हम से दोष निकालता है या हमारे बारे में बर्ताव की ओर इशारा करता है, तो हम हमारे प्राचीन संस्कृति की दुहाई देते हैं। हमारा इतिहास सैकड़ों वर्ष पुराना है, हमारा ज्ञान सर्वोत्कृष्ट है, और हमारी सभ्यता बहुत बड़ी-बड़ी है, इसीलिए शायद हमारे सारे कुसूर माफ कर दिए जान चाहिए, ऐसा हम सोचते हैं।

हमारे पड़ोस में एक महिला रहती है जिन्के घर में रोज सवेरे शंख ध्वनि के साथ पूजा होती है और संध्या को आरती। लेकिन उसकी गोशाला इतनी बड़ी और मक्खियों-मच्छरों से भरी रहती है कि, आसपास के रहनेवाले अच्छी तरह गा नहीं

सकते। उनके यहाँ बगीचे में गाव गायों वाली भसीन पराव पड़ी है। ग उत्तम बभी सेल दिया जाता है और ग अभी उसकी सफाई ही होती है। गाव तो उससे गाव को भी नहीं बडवी, लेकिन बिपारे गाव को दोषहर के समय ३-४



वर्षपूजा

[विष. श्री देवदत्त के एक स्त्रीय विन वा सरल रीतिगन]

गटे बराबर उसे पलायन पड़ता है। और जब यह गंधीय गलती है तो फिर उसकी आवाज के क्या बर्ते। या वान भूदे बंठ रहित है।

हमारे गंधीय में एक दूसरी श्रीमतीजी रहती है, जो हर दशावसर को गिरजे जाती है और कई

गुपारवादी चार्म-मार्गियों की सदस्या भी है। लेकिन उन्होंने कुछ गुप्त गीने पाए हैं, जो सारे मुद्दों की गाव में दम नियम हुए हैं। जब कभी वे बाहर

हिये बाहरों

जाती हैं, तो इन कुत्तों को बगरे में बंद कर
जाती हैं। कुत्ते जोर-जोर से भौंकते रहते
हैं और हमें बानों में उगलियों डालकर बैठना
पड़ता है। एक बार हम सब पड़ोस की
स्त्रियों ने मिलकर उन्हें एक प्रार्थना-पत्र
लिखा कि, वे हम पर मेहरबानी करने
कुत्तों की इस प्रचार बंद न किया करें।
लेकिन उन्होंने कोई ध्यान नहीं दिया।
जानवरो को बच
से बचाने के लिए
जो सस्त्रा है उससे
हमने निषेध की,
तो उन्होंने जवाब
दिया कि, जब तक
कुत्तों का भरण-
पोषण भली भाँति
होता है तब तक
सस्त्रा इस मामले
में कुछ नहीं कर
सकती। कुत्तों को
बोई तकलीफ नहीं।
हमने कहा, कुत्तों
को न सही हमें तो
बेहद है।

वास्तव में, किसी भी बड़े शहर के लोग
अपने 'सम्य' पदोक्तियों के कारण शांति
से रह नहीं सकते। बम्बो-बम्बो तो जो
आहवा है, किसी का गला घोट दिया
जाय। लेकिन सम्यता की यह तो महन
नहीं होगा। मुझे याद है, जब मैं एक दिन
इस सम्य और सांस्कृतिक नगर की सड़क
मचनीत

पर चारों ओर हो रहे शोर-गुल, पुटपाप
पर बसनेवाले गृह-विहीनों, भिखारियों
और जोर-जोर से निल्लाते फेरोवालों की
जिदगी पर बम्बो-दार्शनिक विचार परती
हुई बली आ रही थी, तो एकाएक किसी
भवान की तीसरी मजिल से नारियल की
खोपड़ी मेरे सिर पर आकर पड़ी। मुझे
बरी-बरी-बरी मूर्छा आ गयी। मेरा सर



[चौंसी का रत्नचिह्न पाव जिसे
२००० वर्ष पूर्व वैदिक-स्थित
भारतीय कलाकारों ने बनाया था]

फटते-फटते गया।
ऊपर की ओर झाँका,
तो एक महिला पर
का सारा कूड़ा-
बचप, सब पर
बिखेर रही थी।
मुझे उन पर बहुत
गुस्ता आया, लेकिन
उनको इसकी क्या
परवाह? वे एक
बद महिला हैं।
सबसे ही उन्होंने
गयास्नान कर सारे
पाप धो लिये थे।
हटातू मुझे गापीजी

वे ये शब्द बाद आ गये—“इस विचार
मे मुझे बड़ा दुःख होता है कि, भारत के
किसी भी नगर में सड़क पर चलनेवालों
की ऊपर मे धूँ गिरने का गदा
डर रहता है।”

सम्यता और सस्त्रुति की पहली मॉग
तो यह है कि, हम अपने पदोक्तियों का
गवान रखें। प्रत्येक धर्म इस बात की

“सुंदरता का यह साबुन निराला है”
नया! भुगंधित!

ब्रीज़



“इस में एक्टमर मिला है”


* शरीर गंध को
रोकता है

आप को तरोताजा
रखता है!

* जिल्द के कीटाणुओं
का नाशक

जिल्द को तदुरुस्त
रखता है!

एक्टमर (बाइफिन्मोसिल) मोन्दाटो का महान नया
‘बैक्टीरियोस्टैट’ है—यह एक ऐसा स्थायिक पदार्थ
है जिस की कीटाणुनाशक शक्ति उच्च कोटि की है
और साथ ही इस की किरणें नरम
और शांतिकारक हैं।

केवल  आने

स्थायी टैक्स प्रतिस्विक

ब्रीज़-एक्टमर युक्त सौंदर्य साबुन



अब एक ही बार ब्रश करने से
कोलगेट डेण्टल क्रीम

दंत-क्षय तथा दुर्गंध-प्रेरक जीवाणुओं
 के ८५% तक को नष्ट करती है !



कविता कौमुदी

भाग १ (प्राचीन कवि)

भाग ३ (ग्राम-गीत)

भाग ४ (उर्दू)

मूल्य प्रत्येक भाग ८)

विक्रेताओं को आकर्षक कमीशन

नवनीति प्रकाशन लिमिटेड

३४१, तारदेव, घम्वर ७

लिखा देता है। वास्तव में, धर्म का जन्म ही इसी विचार से हुआ कि, हमारा बर्ताव दूसरों के साथ कैसा हो। समाज की रचना इसी पर हुई है। हमारे यहाँ जो वर्णायम धर्म था, उसका भी रहस्य यही था। शाहमण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र सभी अपना-अपना काम अच्छी तरह करके समाज की सेवा करें। गीता में कृष्ण ने अर्जुन को यही उपदेश दिया है।

मझे ही अपने लिए न सही, धर्म के लिए या समाज की रक्षा के लिए अपना कर्तव्य निभाना चाहिए। दूसरों के लिए जीना ही प्रत्येक धर्म का सार है। ईसा ने भी बार-बार अपने पड़ोसी को अपनी तरह प्यार करने के लिए कहा है। दूसरों की भलाई के लिए अपनी जान देने से बड़बुरा प्रेम की कोई कसौटी नहीं हो सकती।

लेकिन आज के राष्ट्र जो सभ्य और सांस्कृतिक होने का दावा करते हैं, क्या अपने पड़ोसियों को सुख-सुविधा या उनके विचारों की परवाह करते हैं? क्या वे दूसरों को भी अपनी ही तरह अपनी जिन्दगी बिताने का अवसर देना चाहते हैं? गृहणियों की भी सप्रद प्रवृत्ति, अना-

वश्यक मूल्यवान् अलवार खरीदने या नीमरों से बुरी तरह घेरा जाने की आदत कुछ सभ्य या सांस्कृतिक नहीं बही जा सकती। आवश्यकता पड़ने पर भी मित्रों की सहायता न करना और केवल अपने-एव अपने परिवार के लिए ही जीना, वो असांस्कृतिक ही कहा जायगा। न तो हमारे प्राचीन धर्म-ग्रंथों

शासन

यदि संम्यक्त्व से मुक्ति चाहते हो, तो घेंसा परमेश्वर ने किया, ऐसा करो। परमेश्वर ने बुद्धि का विभाजन कर दिया। हर एक को—अवल दे दो—चिच्छू को, साँव को, घोर को और मनुष्य को भी, और कहा कि, अपना जीवन अपनी अकल से चलाओ। यस तभी से सारी बुनियाद आत्मचासित हो गयी—यहाँ तक कि, प्रायः कहा हो जाती है कि, परमात्मा है भी या नहीं। वस्तुतः राज्य तो ऐसा ही चलना चाहिए कि, प्रजा को सत्ता का भाव तक न हो।

—सर्पोदध

में ही ऐसा लिखा है और न हमारी पुरानी सभ्यता ही हमें यह सिखाती है। लेकिन आज तो हमारे अधिकार गृहणियों ऐसी तग दिल और सबुचित विचारों की हो गयी हैं कि, पुराने समय का अतिवि-सत्कार तो केवल कहानी-भास रह गया है। किसी तमिल कवि ने लिखा है—“अच्छी गृहिणी वह है जो

घर में अभाव का अनुभव करते हुए भी, ऐसे अनिधियों का स्वागत प्रसन्नता से करती है जिनके पेट में समुद्र भी समा जाय।” भारतीय सभ्यता का मूल-मंत्र-निसर्वार्थ सेवा—तो आज कहीं भी दिखायी नहीं पड़ता। जब कभी, कोई किसी की सहायता भी करता है, तो उसने पीछे कुछ-न-कुछ उद्देश्य या फल-

प्राप्ति की आशा रहनी है।

यजुर्वेद में लिखा है—‘हमारे नवयुवक मली भौति सिष्ट हों।’ लेकिन आजकल के माता-पिता बच्चा को बड़ा से प्रणाम करने और यशवत् धन्यवाद देने के अतिरिक्त क्या और भी कुछ सिष्टाचार सिखाते हैं? पड़ोसिया से प्यार करना, सेवा-भाव, विनम्रता, सहनशीलता, देस एवं समस्त सत्तार की एवता पर विचार करने के लिए क्या उन्हें प्रात्माहिम दिया जाना है? क्या हमने कई बार एक बंगाली लड़के को अपनी मद्रासी बहिन पर हँसते नहीं देखा है? या महाराष्ट्र की रुडविचो को पंजाबी बहिनो को चिढ़ाते नहीं देखा? बानाहारी लाग भास सानेवालों से नफरत करते हैं। बेस-भूषा एक विन्यास के अंतर के कारण भी लोग एक दूसरे पर अविश्वास एवं अप्रसन्नता प्रकट करते दिखायी देते हैं।

सेठ पाल के शब्दों में प्रेम या परोपकार

की भौति ससृति भी पारस्परिक त्याग, सहिष्णुता एवं सेवा की अक्षय-अजस्र स्रोतस्विनी होती है। प्रेम जहाँ हृदय—मानव-हृदय—का अमृत है, वहाँ ससृति भी हृदय की पुष्पसलिला है। इतिहास साक्षी है, कोई भी सभ्यता जहाँ स्वार्थ-भावना के दयाणुओं से ग्रस्त हुई कि, नष्ट हो गयी; क्योंकि स्वार्थ की भाषा को यदि हम करिस्तों की तरह भी बोले, तो भी वह पीतल के मजीरों की नोरस-नीबीब आवाज ही होगी, प्राण उसमें नहीं हो सकते। इसीलिए शायद, मद्रास के राज्यपाल श्री श्रीप्रसाद ने स्त्रियों की एक सभा में कहा था कि, बला, सर्गीत या मूर्ति बनाने की ही हमें ससृति नहीं समझना चाहिए। वास्तविक ससृति तो हमारा वह आत्म-विश्वास है जो हमें दूसरों के साथ आत्मयत् बर्ताव करने की शिक्षा देता है।

★

परिवार का लेखा

“तुम्हारे पिताजी कहां हैं?” मर्दमनुभारी व अप्सर ने एक लट्की से पूछा।

“वे तो जेल गये हैं।” “और तुम्हारे भी?”

“वह पागलखाने गयी हैं। लेकिन मेरे एक बहन भी हैं, जो मन्चों को सुधारनेवाले स्कूल में हैं और एक भाई जो विश्वविद्यालय में हैं।”

“अच्छा, तुम्हारा भाई विश्वविद्यालय में हैं? क्या अध्ययन कर रहा है वह?” उस अप्सर ने सार्वभूम पूछा।

“वह तो कुछ नहीं करता—वहाँ के प्राप्तिर ही उसका अध्ययन कर रहे हैं।”

—वास्टर बिनेल

★

भात्र नागमय-तेलुगु-के सुप्रसिद्ध लेखक अटिनि बाधिराम
के एक रसमय सरस्वर का संक्षिप्त हिन्दी रूपान्तर

★

हमारी बेलगाड़ी उपत्यकाओं पर
धीरे धीरे सरसती हुई चादनी की
तह आगे बढ़ रही थी। दोनों श्वेत
बैल हिमाच्छादित घाट-शिखर से प्रतीत
हो रहे थे। श्वेत हत्तों से जुते हुए मुन्नाभ
रथ पर चढ़कर चन्द्रमा नीले आकाश में
विहार कर रहा था। सड़क के दोनों ओर
खेत ऐसे चुपचाप विछे थे, मानो चादनी
ने जादू कर दिया हो।

मनुष्य चिरयात्री है, अनन्तर रात-
दिन चादनी में या तारों-भरी रात में,
जलती धूप में अथवा घुमड़ती घटाओं में
बढ़ चलता रहता है। उसकी जीवन-यात्रा
कभी हर्ष की ओर कभी शोक की ओर
अग्रसर होती है। हमारी बेलगाड़ी भी
कला तथा इतिहास के प्रसिद्ध स्थान
विजयपुर के पुराखंडों की ओर जा रही
थी। नागार्जुन पहाड़ी की उपत्यका में
स्थित यह स्थान, कभी आन्ध्र के यशस्वी
इक्ष्वाकुओं की राजधानी था। यही स्थान
“अपर-शैल-नृपाराम” है।

वर्तमान अतीत में जा मिलता है, और
अतीत वर्तमान की ओर अग्रसर होता है।

नागार्जुन, ईसवी प्रथम शती के
महान आन्ध्र सत थे, जिन्हें बुद्ध
का अवतार मानकर पूजा जाता
था। बौद्ध महायानशाखा के
प्रवर्तक वही थे।

हमारा रास्ता धीरे-धीरे उस
घाटी पर चढ़ रहा था जिसे पार
करके विजयपुर की उपत्यका में

उतरते हैं। मंने सुना, खतो म बही कोई
बडा ही भाकुन किसान बुवन एक भावमय
गीत गा रहा था

‘बोल सुदरी ! जीवन के इस संवरे
पथ पर कितनी दूर मुझ चलना है ?’

“बोल सुदरी ! बिन बूजो तक मधुर
प्यार के, बूलों पर मुझको चलना है।”

जब तब स्वर से या चाँदनी की विरग
से चौंक कर छोटे-छोटे पछो मानो उस
दूरस्थ गीत के स्वरी पर ताल दे उठते



नाग की गुफा का एक शिल्प
प्रलय के समय नागह रूपधारी विष्णु द्वारा
पृथ्वी का परित्राण
[चित्र आसकास्य कोल्हरे]

ये। उस किसान के गीत तथा पछियों के स्वरों की मधुर लहरियाँ सुनता-सुनता मैं सो गया।

जब पूर्वी क्षितिज पर उषादेवी को रजित मुस्वान-फँली, तब मैंने जाग कर देखा, हम घाटी के बीचो-बीच पहुँच गये हैं। दोनों ओर घाटियों पर इक्ष्वाकुओं के लाट थे। सामने कोई तीन सौ हाथ नीचे विजयपुर की उपत्यका बिछी हुई थी।

नीचे जानेवाली सड़क बड़ी ढालू थी, दूर पर इस बिकरी हुई घाटी में दो-एक लम्बे गँवई मोपडे दिसामी दे रहे थे। नन्द-माल की सवारी घाटियों में बहनी हुई द्रुतवाहिनी कृष्णा नदी उस सुंदर उपत्यका को तीन ओर से घेरे थी। मैं धले अनीत से लेकर आज के स्पष्ट वर्तमान तक अजर रूप में प्रवाहमान यह नदी अनीत और वर्तमान का, नवीन और प्राचीन मस्तिष्कों का, पूर्वी बंगाल की घाटी और पश्चिमी गिरि-मंगला के जलो का संगम-भूत है।

हम नीचे उतरे। हमारी राह मुदनी, बगवाती, अत में मध्यहृत्य के फाटक तन आ पहुँची, जहाँ पर बीड़ स्तूपों तथा बिहारों में प्राप्त मूर्तियों और पुरातन रहते गये हैं। इन स्तूपों के अतिरिक्त मथनी

विजयपुर के प्राचीन नगर के कोई अवशेष अब नहीं है। नागार्जुन का बिहार घाटी के एक सिरे पर छोटी पहाड़ी पर था। बदाचित् इसी कारण इसे 'नागार्जुन टीला' कहते हैं।

मैं मध्यहृत्य में घुसा। प्राचीन मान्यों के अद्भुत सत्कार का दृश्य मेरे समक्ष प्रकट हो गया। मानो जादू के प्रभाव से मैं उन गुरुर शक्तियों के जीवन में पहुँच गया होऊँ। दलानिर्मित



आज का एक दृश्य—मुदक अपनी सवारी में आनंद-प्रपुल्लित
[चित्र: मासवाल्ड कोल्डे]

एक पापान में लेकर एक के बाद एक पापान मूर्तियों को देखता हुआ मैं आगे बढ़ता गया। मेरे सामने जीवन के सौन्दर्य और सपने का जो दृश्य आया वह मानो आज का ही था। यदि हम अपने वर्तमान को परिष्कृत अतर्भेदी दृष्टि से देख सकें, तो हमें उसमें पुरातन की पहचान हो सके, और फिर स्पष्ट प्रतियोगिता बसायें, देखने को मिलेंगी।

मध्यहृत्य का अवनत एक अन्य सत्कार था, एक साथ ही सुंदर और रहस्यमय। बड़े-बड़े सम्राट और सम्राजियों, राजकुमार तथा राजकुमारियों, मन्त्रियों तथा ऋषि-मुनि, बौद्ध तथा नागरिक, राजदरबार की महिमाएँ एक ग्राम-वधूएँ सभी वहीं थीं। राजाओं के उद्यान और विमानों

के खेत, महल और झोपड़े, पशु और परी, भेड़ें बेल गाड़ियाँ और सजीले रथ भी वहाँ देखने को मिले। वह दुनिया ही निरासी थी।

सम्राटलय से मैं अपने तथा गाड़ीवान के लिए भोजन बनाने बाहर निकला। कुरे की जंगल के पास नीम के वृक्ष की छाया में भोजन बनाते हुए मैंने देखा, खेतों में प्रसन्नवदन नर-नारी काम कर रहे हैं। एक युवती तथा उसने प्रेमी में होती हुई बातचीत मैंने सुनी।

युवक कह रहा था—“इस घरस तो हमारे खेत में चौलाई की फसल खूब फलेगी।”

युवती बोली—“और गेहूँ के फूल भी तो।”

युवक ने दिखाई दे कहा—“... और नहीं तो, छेरी बेगी को कौन सजायेगा ?”

“नहीं, नहीं ! तुम्हारे चौड़े बस कर हार बन कर झूमने के लिए, तुम्हारे पापाण हृदय को प्रसन्न करने के लिए।”

“मेरा हृदय क्या तुम्हारी चितवन से भी कुटिल है ?”

“और नहीं तो ! वह तो नाग से भी कुटिल है।”

“फिर भी तुम्हारी मदमाती बाल के बराबर नहीं।”

“तो तुम्हारे साथ चउने को कौन उधार बैठा है ?”

“और तुमसे बात ही कौन कर रहा है ?”

युवती रुठ गयी, बोली, “तो लो, मैं खेत के उस पार चली। कोई नहीं बोलता तो यहाँ बिसे पड़ो है। मैं अपने आपसे बातें करूँगी, पछियों से और उस नागार्जुन के टीले से बातें करूँगी।”

वह बोला, “हाँ, नागार्जुन ही तो टीले से उतर कर आयेगा वीरा रूप निहारने।”

लड़की क्रोध से भरकर वहाँ से चल दी। इस दृश्य में मुझे उस छोटे अर्धविश्र की याद आई, जिसमें स्त्री-पुरुष को दृष्ट प्रेमियों के रूप में अर्पित किया गया था।

पुरुष के मुख पर विपाद के और नारी की मुखाकृति में लज्जा, शोष तथा क्षोभ के भाव बड़ी कुशलता के साथ अर्पित किये गये थे।

दीपहर के विधायक के पश्चात् मैंने आन्ध्र के पुरातन कलाकार के हस्त-लाभ एव सुजन-कौशल का अध्ययन फिर आरम्भ किया। उस महान कलाकार की आजदर्पण तन्मयता का अनुभव किया

मंकल्प

मह नाथों व सगामे

चापतो पतित सरम ।

अतिवाक्य तितित्विस्त

हुस्तीलो हि बहुग्ननो ॥

—जैसे मुझ में हाथी धनुष से गिरे धारों को सहन करता है, वैसे ही मैं कष्ट बाव्यों को सहन करूँगा। सत्तार में तो हुआँछ व्यक्तियों का ही आविश्यक रहता है।

—‘धम्मपद’

जिगने चौरींग तो बपं पूर्व के सारे स्वर्ण-
अतीत का मेरे मानस-मट पर साकार कर
दिया था। पचासन में, अबवा एक हाथ
में भिक्षापात्र लिये और दूसरे को चिन्मुद्रा
में उठाये, नर-नारियों के बीच घूम कर
प्रेम और अहिंसा की निश्ठा देने हुए भगवान
बुद्ध की घोंसियों मूर्तियों देखत-देखते में
मानों आत्मरूप हो गया।

वह प्रणयाश्री युवक मुझे कई बार
मिला। युवती से उसका क्या सम्बन्ध है,
मैं नहीं जानता था। चिन्तु नागाजुन
टीले की छाया में अपने तीस दिन के
प्रवास में मैंने उस प्रेमी-युगल को कभी
अनुकूल होने नहीं देखा। मुझे पोटूहट
हुआ। पूछने पर पता चला कि, दोनों
का हाल ही में विवाह हुआ है, और युवती
कुछ ही मास पूर्व स्वामी के घर आयी है।

तीसरे दिन गणेश-पराधी थी-धर्म का
पहला वर्ष।

प्रातः काठ ही पाल के खेत में काम करने
वाले वह युवा जोशी साधुचार्नी-सी आकर
मेरे पास लड़ी हो गयी। उनसे साथ एक
रुग्णिया थी। मैं आश्चर्य-व्यक्त रह गया।

साधुचार्ने मुख मे मैंने पूछा—“क्यों भाई,
यह मेरे हाथे का नियंता कर लिया?”

अपनी निर्मल ओंघो में उत्थास भर

कर उसन उत्तर दिया—“भालिब, यह
झगडा थोडे ही बा? भला ऐसी सुंदर-
सुजील बहू से कोई झगडा सारता है?”
बहु थोडा-सा हँसा और फिर बोला—
“आप ही पूछ देगिये न।” वह अपनी
पत्नी की ओर वनखियों से निहारने लगा।
लडकी ने और भी लजा कर कहा—“वह
झगडा नहीं था, भालिब। यह तो इस
गर्बीली टृष्णा की पाटी में पले दो अलहड
दिलों की तरंगें थी। लीजिये, आपने
लिए हमारा खेती की यह भैंड।”

इलिया में हरे, शाब, तीन-चार सतरे,
बैथ और कुछ फूल थे। मेरी पलके आई
हो आयी। मैंने सोचा, ‘मैं, मेरी चिरतन
भारत की ससार के सरल राम्दोषी आद्य-
जननी भारत-वगुधरे। तू सब प्रेममयी
नहीं रही।’

साहसा मैंने अनुभव लिया, मुनि
नागाजुन प्राचीन कला-कृतियों की वह
रत्नराशि और उनसे समक्ष राधा वह
प्रेमी-युगल तथा वृष्ट-भूमि में स्हराता
टृष्णा का जल-सभी मेरी जननी जन्म
भूमि के गुणगान कर रहे हैं, आज तो
नहीं, पाल के अपराज्य वितने ही युगी
मे वे अपनी परम स्नेहमयी ‘मलयज शीत-
लाम्’ में का स्तवपान कर रहे हैं।

★

गरीब मनुष्य के लिए भविष्य की कल्पना आनन्ददायक होती है। यह
सोचता है कि, कभी मैं भी पैसावान बनूँगा, जब कि, धनारूप व्यक्ति सदा
इसी मांस में घुंटा रहता है कि, वही मैं गरीब न बन जाऊँ।

—‘कुमार’ (गुजराती) से

★



मधुनिक वैज्ञानिक एवं मनोवैज्ञानिक कक्षाओं पर परीक्षित तृटि की परम रहस्यमय खार्ज-
नारी के विषय को मनीन उदघाटनार्थ

५

कुछ साल पहले मनोवैज्ञानिकों का विश्वास था कि, नर और नारी में जो भेद है, वह केवल श्रिष्टा, संसार और वातावरण का है। यदि एक लड़की को भी उसी तरह रखा जाय जैसे एक लड़के को रखा जाता है, तो वह लड़की बड़ी होकर सभी पुरुषोचित गुणों को धारण कर लेगी। लेकिन यह विश्वास गत प्रमाणित हुआ है। प्रयोग करने देखा गया है कि, एक लड़की को बचपन से लड़के की तरह रखा जाने पर भी, युग-युग से चली आ रही नारी-गुलम विशेषताओं एवं प्रकृति के आपसों का परित्याग नहीं कर सकी। सूक्ष्म यंत्रों से देखे जाने पर, स्त्री और पुरुष के शरीर में जो असंख्य कोष होते हैं, वे भी समान नहीं, विभिन्न ही पाये गये हैं। कुछ समय पूर्व दो वैज्ञानिकों ने तो यहाँ तक सिद्ध कर दिखाया था कि, स्त्री और पुरुष के मस्तिष्क में भी यी रासायनिक तत्व हैं, वे भी एक-दूसरे से स्पष्टतया भिन्न हैं।

नारी की मदमरी चाल पर न-आने वित्तों वविठाएँ किसी गयी हैं। लेकिन

नारी की इस गजगामिनिता का असली रहस्य उसके शरीर की बनामट है। इसमें उसको अपनी कोई विशेषता या सिद्धि नहीं। स्वभावतः ही स्त्रियों का निष्ठम प्रवेध पुरुष से चोड़ होता है और उनकी टाँगें भी विभिन्न कोणों पर जुड़ी होती हैं। अतः जोधों के बीच में विपन्न अंतर रहने और टाँगें छोटी होने के कारण वे मजबूरन झुमती हुई ही चल सकती हैं। इस वैज्ञानिक तथ्य से अनभिज्ञ होने के कारण अमेरिका में एक धर महासभ्य ने अपनी गव-वधू को इसीलिए सताक दे दिया कि, उसकी 'मतवाली' चाल पर लोच कवतियों कपटे थे। न्यायाधीश के पूछने पर उन्होंने बताया कि, वधू दादी से पहले भी वैसे ही चरती थी, लेकिन विवाह होने पर तो उसे ठीक से चमना चाहिए था।

शुगर
विश्व के नंबर



शरीर-वैज्ञानिक के अनुसंधानानुसार जितना कि, पुरुषों की अपने विपक्षी को नारी पुरुष से छे फीसदी बढ में छोटी पीटने में।

और बीस फीसदी बजन में हल्की होती। पुरुष और नारी के शरीर के व्यापमान है, बल में तो वह पुरुष से हीन होती ही है। में भी काफी अंतर होता है। जिस शीत शरीर से कम काम लेने के कारण उसकी में पुरुष के दात बढाढाने लगते हैं, उस लुपक भी कम होती है। अल्पविकारण-शील पुरुष अवधिकार्यसी नारी से ५० फीसदी अधिक सुरक्षित पाता है।

ताने की शक्ति में भी दोनों में अंतर होता है। और बूँदों अधिकारा घरी में पीठ और पली दानों के अनुकूल अलग-अलग मोहन तैयार नहीं किया जा सकता, इसलिए किसी एक की दूसरे की शक्ति का समान पर अनुपपन्न पढ़ना पड़ता है, या दानों ही अनुपपन्न पड़ते हैं।

शरीर की कोमल रचना के कारण ही स्त्रियों पुरुषों होता है। शारीरिक शक्तों के विरोध की तरह शरीर से बल प्रयोग नहीं में यह तथ्य निश्चिन्त की है, अगर कर पाती। उनकी लड़ाई जवान से मानसिक रोग उन पर पुरुषों में अधिक होती है। बाद-गुट में नारी को आवश्यक करते हैं। क्योंकि नारी स्वभाव समापत उतना ही मानद आया है, में ही अधिक भावना होती है।

परमईस

विवाह के घुरे तेरह बने बाद, माता की अनुमति से ब्रिस्लेडर तक पंखल आयी। अपनी १८-वर्षीया बाली को देख परमहंस रामकृष्ण ने कहा- "ममवति, अब तो मैं नरिमात्र को मनुष्यत् देखता हूँ। मैं तुम्हें भी मानुष्य हो देख रहा हूँ। किंतु, यदि तुम मुझे पुन मृत्यु-जीवन के स्वप्न मय-जागृत में ले चलना चाहती हो, तो मैं उद्यत हूँ।"

शारदादेवी उनके चरणों पर गिर पड़ी- "देव, मुक्ति को धमन की ओर व्योचकर मैं जीनता श्रेय क्याऊँगी? मृत्यु भी दीक्षित कीजिये! मेरे लिए भी आप गुह-गुह्य ही हैं।"

तभी तो परमहंस ने उन्हें आश्रम में रत किया और देवी के रूप में उन्हें उपासने लगे। -सित्तर निवेदिता

म नारी भुलपूर्वक रह सकती है। दोनों की गोलें भी आदते भी भिन्न हैं। व्याप-रक्षणा पुरुष की अधिक काम करने के कारण ज्यादा सोने की जरूरत पड़ती है, जबकि नारी कम पढ़े सो कर ही स्वस्थ-प्रफुल्लित रह सकती है। इससे अलगवा एक स्त्री या शास्त्र मुलावस्था में भी मुदर लगत है। लेकिन पुरुष नहीं। अधिकारा पुरुष बड़े बेश्मे माने हैं।

हाकरों की राय में स्त्रियों का शरीर अधिक सहनशील

नारी अधिक वाचास क्यों होती है ? इसका कारण यह व्यापक विश्वास नहीं कि, उसकी बुद्धि समझोर रहती है, या जो कुछ वह करती है, उसे बहुत ही काम की बात समझती है। किन्तु स्वतः प्रकृति न ही ऐसा बनाया—एक खास अभिप्राय के लिए वह अभिप्राय है कि, वच्चे बापों का पाठ माँ के मुख से ही पढ़ते हैं। दो बात की लड़की अपनी माँ के लड़के से अधिक शब्द बोल सकती है।

नारी की विचार-धारा तो और भी रहस्यमयी है। छोटी-छोटी घाटीयों पर भी वह बहुत ध्यान देती है। एक विशेष प्रकार के रंग या डिजाइन की वस्तु के लिए वह पड़ोसुनाकरने में चिता देगी। आदमियों की समझ में ही नहीं आता कि, बाहिर इतनी घाटीयों में जाने की क्या जरूरत है ? हरा रंग कई प्रकार का होता है। आदमी हरे रंग का कपड़ा पहनने जायगा तो अधिक उपदेखन में नहीं पड़ेगा। किसी भी हरे रंग से वह सगुप्त हो जायगा। लेकिन स्त्री यदि एक विशेष प्रकार का हरा रंग चाहती है तो, उससे अधिक या कम गहरे हरे रंग से सगुप्त नहीं होगी। अपनी रुचि को



सखर
(विन के के डेयर)

सगुप्त करन के लिए वह बहुत ध्यान-धीन करेगी। यही कारण है कि, कोई भी स्त्री रंगों की पहचान में 'अपने' नहीं होती। अधिकांश स्त्रियाँ अपने आस-पास की या व्यक्तिगत बातों के अतिरिक्त बाहरी प्रश्नों या दुनिया के झगड़ों में रुचि नहीं लेती। उनका सत्कार अपने तक ही सीमित होता है। बहुत से आदमी इसलिए

नारी को मदबुद्धि समझ लेते हैं। लेकिन बात एसी नहीं है। लड़कियों लड़कों से बुद्धि में कम नहीं होती, इसका प्रमाण किसी भी स्कूल की परीक्षाओं से प्राप्त किया जा सकता है। शिशु-वर्ग के लेकर हाईस्कूल तक अधिकांश लड़कियाँ लड़कों से अधिक नगर पाती हैं। लेकिन इससे बाद उनका विकास रुक जाता है। वे अपने व्यक्तिगत या पारि-

वारित प्रश्नों में ही अधिक रुचि केन लगती हैं। साधारणतया स्त्री व्यक्तिगत सम्बन्ध पर अधिक ध्यान देती है। जीवन और जगत के विषय में विचार करने की उसे आदत नहीं। वह उसकी प्रकृति है। ऊपर से शादी हुई कोई मजबूरी नहीं। एक लड़का और एक लड़की अगर रंग में सले तो लड़का नारी बोलने में रंग बिखरता

हुआ खेलना अधिक पसंद करेगा, जबकि लड़की आसपास की रेत को अपने पास जमा कर एक जगह बंटी खेजती रहेगी। आयुर्विज्ञान नारी भी प्राणि-शास्त्र के इस नियम में स्थापित नहीं है। ऊपर से वह भले ही अपना रूप-रंग बदल ले, और स्त्री-भुरूप सनानता के समर्थन चाहे जितना इस तथ्य को बख्तीवार करे, लेकिन पिछली कई हजार वर्ष की सम्प्रदाय भी नारी की शरीर-रचना और प्रकृति में कोई अंतर नहीं ला सकी।

अपिनाम स्थलों सबसे बीच में बैठ कर साना पगद करता है, खासकर यदि उन्हें अपनी नई पोशाक या जेवर लोणों की दिखाना हो तो। लेकिन आदमी अपना भोजन एनात में करना पसंद करता है। किसी भी होटल में जाकर आप देख सकते हैं कि, आदमी अधिस्तर कीवार में लगी भोजन पसंद करते हैं। जब कोने की या दीवार में लगी भोजन वाली नहीं रहेगी, तभी पुरुष कमरे के बीच बैठना स्वीकार करता है। इसका मनोमनानिक कारण समझने के लिए आप एक कुत्त को रोटी का टुकड़ा डालिए। वह उसे ले जाकर एक कोने में डिबा कर खायेगा। आदमी भी भी प्रारम्भ में बही आदत है। आदि-युग में जब उसे अपना भोजन गरम बना कर करना पड़ता था, तब वह कोई दूसरा उसे छान न ले, तभी ने आदमी में स्वभावतः ही यह प्रकृति है। हजारों वर्षों की सम्प्रदाय भी

नयनीत

इस आदत को मिल्तुल मिटा नहीं सकी।

इसके अतिरिक्त आदमी और औरत की अंग-रचना में जो अंतर है, उसके कारण भी उनकी आदतें नहीं मिलती। औरत आदमी पर इसलिए बिगड़ती है कि, वह उसे रात में बिबेटर, सिनेमा या टेक्नर सुनने नहीं ले जाता और जल्दी ही सो जाना चाहता है, तो वह यह नहीं जानती कि, आदमी देर तक बिबेटर अपनी पीठ को सहारा दिए बैठ नहीं सकता। उसके घड़न का भार और अधि-से-अधिक चौड़ाई वयो के समीप होती है, क्योंकि उसे अपने हाथों से धम करना पड़ता है। स्त्री का शरीर कटिप्रदेश के समीप सबसे अधि चौड़ा और भारी होता है, इसलिए वह आसानी से सारे शरीर का भार उस पर डाले, बिबेटर माहाराज लिए देर तक बैठ सकती है। बिबेटर, सिनेमा या टेक्नर-हॉल में कुर्सियाँ छोटी होती हैं और पैर फैलाने के लिए जगह नहीं होती, इसलिए साधारण-तया आदमी बिबेटर अपने वयो को सहारा दिए, देर तक सीधा बैठने में तब सीफ अनुभव करता है। बनावट के अलावा, रात को अपने घर में ही आराम करने की इच्छा का यह प्रमाण कारण है।

आदमियों को अगर कुछ रोज ही घर का काम करना पड़े तो वे तब आ जाय। किसी भी पुरुष को बर्बाद की बात कहना या भारी बोझ उठाना स्वीकार होगा, लेकिन उसे एक जगह बैठकर तर-कारी छीलना कभी अच्छा नहीं लगेगा।

हैं, शीकिया वह कुछ देर के लिए गले ही बंध जाय। इसका कारण यह है कि, उसके शरीर की बनावट ही भारी काम के लिए हुई है। इससे अतिरिक्त औरते जब कि, बहुत सफाई-मसद होती हैं और घर को सँवार कर रखने में उन्हें आनन्द मिलता है, आदमी अपनी चीजें बिखेर देता है और स्थान की स्वच्छता की ओर अधिग्रहण नहीं देता। औरतो में किसी भी वस्तु को संभाल कर रखने की आदत होती है और चायपदार्थों को वह-इस सावधानि से बना कर रखती हैं कि, वे बिगड़ न जाय। अपने व अपने परिवार के स्वास्थ्य का खयाल उन्हें स्वभावतः ही रहता है।

सम्पत्ता के बावजूद भी आदमी स्वभाव से उग्र झगड़ालू और बात-जात पर भरने-भारने को तत्पर रहता है। अमेरिका की यूनाइटेड स्टेट्स में प्रति घंटा जो १९० गभीर अपराध होते हैं, उनमें से केवल १५ को छोड़कर बाकी सभी पुरुषों द्वारा होते हैं। यह सही है कि, बहुत-से अपराध पुरुष द्वारा न किये जाकर स्त्री द्वारा किये गये हों तो, वे अधिक आसानी से माफ किये जा सकते हैं।

पुरुष का स्वभाव सदियों से चले आ रहे संपर्प के कारण उग्र हुआ है। आज से १०,००० वर्ष पहले के दिन की नत्पना कीजिए। किसी गुफा में स्त्री अपने शिशु को स्तन-पान करा रही है। गुहा-द्वार पर उसका पति और संरक्षक हाथ

में गदा लिए बैठा है। बाहरी आक्रमण से रक्षा और भोजन प्राप्त करना उसीका काम है। उसे आप जंगली, जाहिर जो-कुछ भी कहें, लेकिन यही श्रद्धा अपनी गदा और कबड-मत्पर से दुनिया को जीतने चला था। आज भी वह काम जारी है। युग-युग की सम्पत्ता के उप-रात भी आज मनुष्य वर्चस्वता से सदा सशक्त रहता है। संपर्प के फल-स्वरूप ही पुरुष का स्वभाव उग्र बना हुआ है। स्त्रियों की यह शिक्षायत्त है कि, पुरुष उन पर अधिकार जमाता है, अपने-आपको उनसे श्रेष्ठ समझता है। लेकिन स्वयं पुरुष कोई जानबूझ कर गलती नहीं करता। सदियों से वह परिवार का संरक्षक और मुखिया होता आया है। केवल अधिकार जमाने के लिए वह अपने-आप को श्रेष्ठ घोषित नहीं करता। अधिकारी रहने को उसकी आदत है।

धीसधीस सदी का पुरुष आधुनिक सम्पत्ता के वातावरण में भी अपनी बहुत-सी एसी आदतों और प्रवृत्तियों को धारण किये हुए है, जिनका उद्गम आदि-युग से है। नारी के प्रति वैज्ञानिक जितने जागरूक हैं, उतने ही जागरूक पुरुष के मन और स्वभाव के प्रति भी हो, तो पुरुष और नारी के बीच जो यह अस्वाभाविक संपर्प उत्पन्न हो गया है, यह न रहे, और नारी भी पुरुष के व्यवहार से दुखी न हो। दोनों ही एक-दूसरे से सही प्रकार परिचित हो जाय और सुख से रहे।

मित्र बनाने की कला में आप कितने कुशल हैं

“सात मित्र ईशान के, सात सौ भगवान के” इस अरबी कहावत का स्पष्ट अभिप्राय यह है कि, मैत्री का प्रसार हो मनुष्य की सफलता उसकी वैयक्तिक विभूतियों का मापदण्ड है।

★

हमारे जीवन की सफलता एक संपूर्णता बहुत-कुछ मैत्री की भावना पर निर्भर है। जिस व्यक्ति के जितने अधिक और वास्तविक मित्र होंगे, उतना ही अधिक आनंद उसे जीने में मिलेगा। “मेरी सारी संपत्ति मुझसे ले लो और बदले में मुझे एक सच्चा मित्र दे दो।” ये शब्द बिल्वात् घनपति बानगी के हैं। वस्तुतः जिसकी शुभ कामना करनेवाला एक भी द्वितीय मित्र इस ससार में है, उसे किसी प्रकार का दुःख अधिक विचिन्तित नहीं कर सकता। और-तो-और हमारे आनंद-भोग की मात्रा भी इस पर निर्भर है कि, हमारे हर्ष में हिम्सा देनेवाले जितने व्यक्ति हैं।



‘मैत्री’ में मित्र को ‘भगवान का रूप’ कहा है। थोड़े से सौ मित्र को ‘सृष्टि की सर्वोच्च सज्जन-स्फूर्ति का बोध’ कहा है। अतः आइये, आप-कुछ अपने अतःकरण को दटोले कि, जीवन की इस अमृत-बेलि को हमने अपने-अपने हृदय-रस से चितना-चितना सींचा है ?

नीचे दो ममों प्रश्नावली में प्रत्येक प्रश्न का उत्तर ‘हाँ’ या ‘ना’ में दीजिये और निर्णय कीजिये कि, आप मित्र बनाने की विवनी समता रखते हैं—

१/ क्या आप दूसरों का खयाल अपने से पहले करते हैं और उन्हें कभी अपनी आर से नाराज नहीं करना चाहते ?

२/ अपने प्रति हमारे वे दोषों को क्या आप सहज ही क्षमा कर सकते हैं ?

३/ क्या आप दूसरों को प्रसन्न देखना चाहते हैं और उन्हें खुश करने के लिए छोटे-मोटे काम करना आपको पसंद है ?

मि श्रम इस ससार की एक अद्भुत शक्ति है। एक पारसी कहावत है कि, ‘जिग अर्कि ने मित्र नहीं, वह मनुष्य नहीं।’ इसमें ने भी अपने विस्फाट निबध नयनीत

४ क्या आप बदले में कुछ पाने की माता के बिना भी दूसरों को कुछ दे सकते हैं ?

५ क्या लोगों के साथ मिलन जुलने और साथ-साथ कार्य करने में आपको आनन्द मिलता है ?

६ क्या आप अन्य लोगों में सचमुच रुचि रखते हैं। उनकी वाकाश्याएँ, विचार धारणाएँ अनुभवों में आपको बाध दीलचस्सी है ?

७ क्या आप लोगों पर यह प्रवट करते हैं कि, वे आपको अच्छे लगते हैं और जो कुछ वे आपके लिए करते हैं, उसके लिए आप कृतज्ञ हैं ?

८ किंतु क्या आप शीघ्र ही यह ताड लेते हैं कि, आपके सम्पर्क में आये लोग व्यस्त हैं, या शांति अथवा एकांत चाहते हैं ?

९ क्या आप अपने विषय में बातचीत करने से अपने-आप को रोब पाते हैं ? अपनी या अपने परिवार की बड़ाई-अथवा अपने बरट और तबलीफों को शिकायत करना आपको बहुत प्रिय तो नहीं है ?

१० क्या आप अपनी एवं अपने मित्रों की अभिवृद्धियों के विकास में प्रयत्नशील हैं ?

११ जब कोई बात आपके प्रतिकूल हो तो क्या आप अपने को दबा लेते हैं और दूसरों पर वह आश्रय नहीं निकालते ?

१२ समस्याओं और गलतपहचियों की चर्चा क्या आप चतुराई और समझदारी

से कर सकते हैं ?

१३ किसी विषय पर विवाद होने से क्या आप दूसरों के साथ अपने मतभेद सहर्ष स्वीकार कर लेते हैं ?

१४ आप पर किय गये विश्वास की क्या आप रक्षा करते हैं ?

१५ क्या आप मित्रों के लिए सहर्ष बरट अथवा असुविधा उठाने को तैयार हो जाते हैं ?

प्रत्येक 'हाँ' के लिए पाँच अंक प्राप्त कीजिये। यदि आपके प्राप्त अकों की संख्या ७० या उससे अधिक है, तो आप मित्र बनाने की अच्छी योग्यता रखते हैं। ५० से ६० अंक सामान्य हैं, ५० से कम अब यह प्रकट करते हैं कि, आप मित्र बनाने की कला में कमजोर हैं ?

मित्र बनाने की क्षमता का अर्थ है कि, आपको दूसरे लोग अच्छे लगते हैं और अपने से अधिक आप उनमें रुचि रखते हैं। स्वार्थ सँधी का ही नहीं, समग्र जीवन का महान शत्रु है। रवीन्द्रनाथ ने तो स्वार्थ-अकेले स्वार्थ- को ही पड़िपुओं की जननी माना है। अतः स्वार्थ को परार्थ में परिणत करने का अभ्यास कीजिये-अपने ही से निकलकर दूसरों में भी अपनी दिनचर्या को विभाजित कीजिये। ज्यों-ज्यों यह आपका अभ्यास बढ़ता जायेगा, श्रो-र्यों शुकल पक्षीय चन्द्रोदय की भाँति आपके मोतर आनन्द की ऊर्मियों भी विकसित होती जायेंगी।



जानि सरद तितु खंजन आयें

खजन जैसी सोदय चरल भाषा ने सिद्धहाय तितुषी मेनीपुरीजी की लेखनी से यदि देखें तो कुछ और शब्दचित्र विरचित हों, तो यह परम्परा निश्चय ही एक अति दीर्घकालीन भाषा की पूर्ति कर देगी !

★

चेंचें-चेंचें ! वह देखिये, मेरी बँगनाईं सी चिटिया ने।
 मैं जिसने पुड्डोड मचा रखी हूँ ? ओ नन्ही चिटिया, अपने साथ मुझे
 ओहो !—जानि सरद-तितु खजन आयें ? भी ले लो और ससार में उन भागों की
 चेंचें-चेंचें ! वहाँ से आ पहुँची हैं संर कराओ, जहाँ सिर्फ ठड-ठडक है,

यह छोटी-सी चिटि-
 या ? जिसने आमरण
 भेजा था कि, जाओ,
 मेरे गौर से लिये-
 पुते इस विषने-
 दुरदुर ओगन को
 अपनी चेंचें-चेंचें से
 भर दो !

आज तब कहो
 भी यह चिटिया ?

सरद आयी, यह
 पहुँची : बमत बीता,
 यह गयी। वहाँ मे
 आती हूँ ? वहाँ से
 भाग जाती हूँ ?

पूष, पूर, पमार
 से इसे विरक्ति क्यों है ?

इसे उडक चाहिए, इसे रगीनी चाहिए !
 बंगी रगीली तबयन पायी है इस छोटी-

नवनीत

कामना

विकचकमलवधना कुल्लुनोलोत्पलाओ,
 विशसितनववाऽदयेतवासो वसतावा ।
 कुमुदकचिररान्ति वामिनोयोग्मदेयं,
 प्रतिविद्यतु दारद्वयेततः प्रोक्षिमप्रवासम् ।
 मयवान् करे, यह जिते हुये उबले
 बमत के मुलपाटी, फूले हुये नीले
 बमत को ओल्लोवासी, गुल्मर कोई के
 शरीर वाली और फूले हुये कोत की
 साड़ी पहननेवाली जो वामिनो के
 समान उम्मत दारद्व अनु आयी हैं,
 वह आप सब के मन में नयी-नयी
 उममें भरे।

—वासिदास

रगीनी - रगीनी है।
 रगियों ने, झुलसा
 डाला हूँ : पुरुषताओं
 ने ओल्लो की रग-
 शाहिणी शक्ति को ही
 मल्ट कर दिया है !

चेंचें-चेंचें ! क्या
 बोल रही हो ? मैं
 तुम्हारी भाषा समझ
 नहीं पाता हूँ ?

मरमसो, तुम्हारी
 बला ! यह चेंचें कर
 रही हैं, चहल रही
 हैं, दोड़ रही हैं, उड
 रही हैं ! पर, पर,
 जोबू सब को एक

ही साथ साथ रहा हों, जंगे ; एक छोटी-
 सी चिटिया ने सारे ओगन को भर रखा
 है—जहाँ देखिये, यही, यही !

छोटी-सी चिड़िया: उजली-सी चिड़िया। छोटे-छोटे पैर, छोटी-सी चोंच, छोटे-छोटे पंख। उजले पंखों पर काळी-सी धारियाँ—जो पूँछों से झुरू होकर, गर्दन होती हुई चोंच पर समाप्त होती हैं।

कवियों ने कामिनियों की आँखों की उपमा इससे दी है—अजनरजित आँखों से।

जरा भीर से देखिये किसी सुंदरी की अजन-रजित आँखें इस सज्जन के रूप में मेरे आँगन में धड़क रही हैं, फुदक रही हैं।

हो, हो, यह सज्जन नहीं, अजन-रजित नयन, है जो मेरे आँगन में झर-उधर, यहाँ, वहाँ, फुदक-वहक रहे हैं। एक नयन अनेक नयन बन चुका है। चारों ओर नयन, नयन, नयन—सज्जन कहाँ है?

कौसी चपलता, कौसी चटुलता। क्या कामिनियों की अजनरजित आँखों ने चपलता-चटुलता का उपहार तुमसे ही प्राप्त किया है?

जो नहीं चिड़िया, जरा पल-भर को ठहरो तो, रुकी सो अपनी कलम के फँसरे से तुम्हारा पूरा चित्र उतार लूँ।

शायद तुम्हें यह सूक्ति मालूम नहीं—सारा सौंदर्य क्षणिक है, नश्वर है, जब तक वह कला में नहीं बाँधा जाता।

बरी, ठहरो, तुम्हें कला में बाँधूँ, तुम्हें अमरता दूँ, साक्ष्यता दूँ। किन्तु

बेचारी करे तो क्या? क्या चाहकर भी वह कहीं स्थिर हो सकती है, एक क्षण को, पल को भी।

कमता है विधाता ने पारे से इसकी रचना की हो—बबक, डलमल पारे से।

पारे से इसे रचा और काले डोरो से इसे बाँध दिया—नहीं तो यह जब न आवाज में उड़ गयी होती। हाँ, पंखों पर के काले-काले डोरे हैं जिनके कारण यह पृथ्वी से बँधे हैं, आज मेरे आँगन में दौड़ रही हैं, वहक रही हैं।

धेधे-धूँधूँ! सर-सर, फुर-फुर।

ओहो, इसकी गति में कौसी समरसता, समथरता है। शरीर में जरा हिलडुल नहीं, पूँछ में हल्का कपन। चलती है, तो गौरैया भी, जैसे बँधे पंरों से बूद रही हो। क्या कोई सधा हुआ घोड़ा भी इस सरपर से भाग सकता है?

इस गति की उपमा कहाँ खोजी जाय?

जब पेरिस के स्वर्णस्थ (सांजिलीजे) पर दहल रहा था, वहाँ की सुंदरियों की, घोंग्रे को टेलनी हुई, हवा में तरती-नी, गति देखकर इस चिड़िया की याद आयी की?

बह गयी, बह गयी, उड़ गयी! बहानगी, किधर गयी—बस, चिंगाते रहिये, बह गयी, गयी। धेधे-धूँधूँ सर-सर-फुर-फुर! बरती उड़ गयी।

★

एक वंजूस बादमी ने अपने खिलौने इसलिए बचा कर रखे कि, भगले जन्म में जब वह बच्चा बनेगा, तो काम आवेंगे।

—'लाफ' से

★

शुर्जी का ज्ञान

'भोरा' मल्लोदावादी की एक लघुकथा का संक्षिप्त हिन्दी-रूपान्तर ।

★

हिन्दुस्तान में जहाँ और बदव्यवस्थाएँ हैं वहाँ एक यह भी है कि, घर का एक आदमी बमाता है, बाकी सब उससे सिर खाते हैं और जब वह बमाने वाला मर जाता है तब उसने छहारे जीने वाले भीस मोगने लगते हैं। इस बमाया ने लोगों के लिए एक कहानी सुनाता है ।

एक बड़, अरब एक जगह में दूसरी जगह जा रहा था । उसने खुर्जी में, एक तरफ बहुत-सा अनाज और दूसरी तरफ दा-एक बरतन और बाइसा सा खाने-पीने का सामान रखा और चल पड़ा ।

खुर्जी का अनाज बाला हिम्मा भारी होने की वजह से बार-बार नीचे की तरफ गिरता जाता था । जिसकी वजह से बड़, का भी बार-बार नीचे उतर कर सामान ठीक करना पड़ता था । यहाँ तक नयनोन

कि, वह तंग आ गया । इतने में उसकी नजर एक दूसरे मुसाफिर पर पड़ी जो पैदल चल रहा था और बड़, की तरफ देख-देखकर मुस्कराता जाता था । बड़, ने उससे कहा, "तुम मेरी तरफ देख कर क्यों मुस्करा रहे हो ? क्या मेरी तलवार की धार नहीं देखी ?" "नहीं भाई," उसने जवाब दिया, "तुम्हारी तलवार की धार तो मुझसे छिपी हुई नहीं है।"



मुग्धभाव

[चित्र - मुग्धभाव व रंगीत चित्र की सरल रेखाचित्र]

"लेकिन क्या ?" बड़, ने तन्दार मीतकर कहा—"भाई, मैं तो तुम्हारा हमदर्द हूँ और चाहता हूँ कि, तुम्हारी तलवार दूर बरदे ।"

"इस बात का क्या मतलब ?"

"आपकी एक तरफ की खुर्जी बार-बार गलत जाती है, जिसकी वजह से आपका भी बार-बार जेट उठ-राना, नीचे उतरना और उसे ठीक करना

डालडा
मेरे लिये
अच्छ है!



डालडा
एन
वनस्पति
स्वाना पकाइए



यह न केवल स्वाना पकाने के लिये ही अच्छा है, बल्कि पौष्टिक भी है!



लोमा

मस्तिष्क को शांत रखता है।

लोमा

अधिक बाल उगाता है।



लोमा

सुफेद बालोंको स्थान बनाता है।

लोमा

बड़ी प्यारी खुशबू देता है।



सुफेद बालोंको स्थान बनाता है।

लोमा केर, केर, कर्मायका, कर्मायका १.
कर्मका के, कर्मका के, कर्मका के, कर्मका के २.

पता है! आप मुझ इजाजत द, तो मैं
यह तर्जामा दूर कर दूँ।

यह तुम क्या कराग ?

मैं दोनो खुजियो में वजन धराबर कर
दूँगा जिसकी वजह से वह नहीं सरकेंगी।

तुम हाथ न लगाओ, मुझ बताते जाओ मैं
अपन हाथ से करूँगा। अगर याद रखा
अगर फिर यही तकलीफ हुई तो तुम्हारा
मिर उदा देंगा।

इसके बाद वह ऊँट में उतरा और
मुसाफिर न जिस तरह बताया उसा तरह
जगमगाना खुजियो का बोझ एक सा
कर दिया। काम खत्म हुआ तो वह बोला
तुम मेरे साथ आओ, अगर फिर मुझ
तकलीफ हुई तो तुम्हारी खैर नहीं और
अगर तकलीफ न हुई, तो जहाँ कहोग वही
अपन ऊँट पर बिठाकर पहुँचा देंगा।

दोनों ऊँट पर सवार होकर आगे चले।
वह न जाँच करण के लिए ऊँट को कई
गोल तक खूब तेज दौड़ाया, लेकिन खुजियो
अपना जगह से न हटी। वह खुदा होकर
साथी से बोला—'तुम बहुत अकम्बल

आदमी मालूम होते हो।

बहुत सारी किताब पढ़ चुका हूँ न वह
मा सुन हाकर बोला।

तो फिर तुम बहुत मालदार भी होग।"

नहीं मैं कमाता कुछ नहीं, मेरे कदर-
दान ही पट भर देत ह।

वह सुनकर गुस्से से सुर्ख हो गया
और कहन लगा — तुम कुछ नहीं कमाते,
दूसरो व सहारे जीते हो। बल्लाह, अगर
इल्म का भण्डार यह है कि, आदमी हाथ
पाँव न डिलाय और खरात पर गुजर बरे,
तो ऐसे इल्म का जहाज कही अच्छी
है। इतना कहकर उसने ऊँट रोक लिया।
एसा मालूम होता था जैसे वह अपन गुस्से
को दबा रखा हो। लेकिन घड़ी बर बाद
वह अपन बाल नोच-नोच कर कहने लगा,

बसवस्त, तू मेरे ऊँट से उतर जा। मुझ
न तेरी अकम्बली की जरूरत है न तेरे
इल्म की। इतना कहकर वह ऊँट से
कूद पडा साथी को भी टोंग पकड़ कर
सीचा, फिर अपना सामान पहिले ही फेंक
तरह भरकर खाना हो गया।

★

जल्द दुह लो

संयुक्त राष्ट्र अमेरिका के भूतपूर्व राष्ट्रपति अब्राहम लिन्कन और उनके
समाजिक सेनापति जार्ज मक्केल में अनती नहीं थी। लिन्कन का हुक्म था
कि, सेनापति अपने कार्यों की सूचना समय समय पर राष्ट्रपति को भजते
रहें। मक्केल को यह हुक्म फूटी ओख नहीं भाता था। एक बार चिढ़ कर
वहोंने लिन्कन के नाम एक तार भजा—'अभी-अभी छ गाथ पकड़ी गयी हूँ।'
लिन्कन ने उत्तर दिया—'उन्हें जल्द लो।'

—'टाइम्' से

★



मल्ला के अद्वितीय हास्य-व्यंग्य-लेखक श्री बरशुराम का एक कहानी का मधुर हिन्दी रूपान्तर ।

★

बेतमी का जन्म विगत सत्रह सौ वर्षों में हुआ था।

उमरे पिता न बड़े बृद्धि एव पदा पावन की निष्ठा प्राप्त की थी। स्वयं लौटकर उन्होंने अपनी जमींदारी में धान-गन्ना का एक बड़ा बाग लगा दिया और भेड़, गाय, मूँजर, मुर्गी, हंस इत्यादि पालने का व्यवसाय करना लग्य। मरने पर नक उन्होंने बड़ी व्यवसाय किया। उमरे पश्चात् उनकी मृत्यु हो गयी।

बेतमी की माँ अपनी मदिरा में पड़ गयी। इनके बड़े व्यवसाय की दय-ग्य जर कौन करेगा ? उमने तब किया कि, मर-मृत्त बेच-बाच कर बचतें कर कर रहा जाय। लेकिन अपनी न अपनी माँ ने कहा कि, इसमें बिना क्या, वह स्वयं मारा काटोवार ममाने लगी।

अनमा की अर यह चिन्ता मनाने लगी कि, यदि कोई धान्य जमाना मिल जाय, तो मारा व्यवसाय वह मैमाने लगे। बेतमी का उमर हाथ में मोहर कर वह निश्चिन्त हो जायगी। लेकिन अपनी का यह निश्चयपर न था और मित्राज भी नहिमना और बहुत तेज था। इसलिए उनकी माँ की मारी चेष्टाएँ निश्चय हुईं। 'मेनमी ने कहा—' माँ, क्यों चिन्ता करनी है ?

मदनान

दा दिन रात सत्र हीन हो जायगा।"

जयहरि हाजरा नाम का एक मध्यम वर्ग का 'रूढ़ी' 'स्वातन्त्रिय' पालन विगत गया और वहीं में मृत और मरना मृत का नाम मीन कर लीला। आने हो वह लहमदागद की बिभी मिल में अन्त यन्त्र पर नीतर हो गया। कुछ दिन बाद उमने नीतरों छोड़कर स्वयं अपना 'हाइम' और 'वर्चस्व' का कारगाना मोड़ लिया। धन भी काफी कमाया उमने। लेकिन धिराज का मोहने होने के कारण एर बार जबकी मूँजर के आक्रमण ने उमरा पाँव जमी हो गया। वह लगाने लगा। उमने अपना कारगाना अच्छी धीमन पर बेच दिया और अपने पैतृक ममान में आकर रहने लगा।

जयहरि की जमीन के एक ओर डिम्बकट बोट का खम्भा और तीन तरफ पान का खेत था। उमने मरान के मामने एक खाना मंदिर था। उमने वहीं रहने के कुछ दिन उपरांत ही लोगों ने देखा कि, उम मंदिर में मोदि-मोदि के विचित्र जीव फिर रहे हैं। दूर-दूर से लोग आकर उनको देखने लगे।

बेतमी के पाग भी मरने पहुँचो कि, एक

८०

दिवान्वर

रंगे बाबू ने अजब चिड़ियाखाना खोल
रखा है, जिसे देखने के लिए लोग कलकत्ते
तक से आते हैं। उस इलाके में चाकलादार
वगैरे ही सर्वाधिक गणमान्य जमींदार थे।
कतसी ने यह सहन नहीं हुआ कि, कोई
शक्ति बाहर से आकर इस प्रकार का एक
अद्भुत चिड़ियाखाना खोले और उसे
देखने के लिए उन्हें निमंत्रण तक न भेजे।

मयूरवर्ती हम दिखायी पड़। मकान की
छत पर से हात् लाल, नारंगी, पीले, नीले,
बैंगनी रंग के पक्षी उड़ कर आकाश में
मड़लने लगे। मानो इंद्रधनुष दिखायी
पड़ रहा हो। वह चकित होकर उन्हें देख
ही रही थी कि, उसके कानों में किसी की
आवाज आयी—'नमस्कार। कृपा करके
धीनर आइये न ?'

वह विलायत भी होकर
बाया है, यह सुनकर
बेतसी उसकी अवज्ञा
भी न कर सकी। कौतू-
हल में दवा पाकर, एक
दिन सबेरे एक बड़े
विलायती कुत्ते, 'प्रिंस'
को साथ लेकर वह
जयहरीर का बगीचा
देखने गयी।

फाटक के पास
पहुँचकर वह अवाक्
होकर देखने लगी।
मीन मीली भेड़ें चर
रही थीं। एक हरे
रंग की गाय और पास
में चार बैंगनी रंग के दछड़ दिखायी पड़े।

एक और अद्भुत जानवर पास चर रहा
था। शरीर का रंग पीला और उस पर
गहरे बादामी रंग की लकीरें। बेतसी ने
पहले तो सोचा कि, शायद चीता है,
लेकिन उसकी दाढ़ी और सींग से तो वह
बकरा दिखायी पड़ा। सोड़ी दूर पर कुछ



भार मुक्ति

[चित्र : ब्रिटेन के विश्वकार भर एल्फेड
मुन्सि का एक अनुपम चित्रित स्केच]

बेतसी ने मुँह घुमा
कर देखा कि, एक
सुंदर युवक फाटक
खोलकर खड़ा है। प्रति-
नमस्कार कर उसने
पूछा—'आप ही जय-
हरीर बाबू हैं ? आपने
तो जानवरों को अत्यंत
आश्चर्यजनक बना डाला
है। लेकिन इसके पीछे
कुछ उद्देश्य भी है कि,
यह सब निष्प्रयोजन
ही है ?'

जयहरीर ने उत्तर
दिया—'आर्टि-मान ही
निष्प्रयोजन है, एक

बच्चा का-सा खेल। कोई बागवन्नेन्वास
पर चित्र आकृति है, कोई पत्थर की
प्रतिमा बनाता है। मैं जीवित प्राणियों
पर रंग लगाता हूँ। मेरा 'मोडियम
आव टेक्नीक' बिल्कुल नया है।'

"सुना है कि, आपने विलायत जाकर
सूत और वपड़ा रखने का काम सीखा था।

आप किंगो मिल् में नीबरी क्यों नहीं कर लेते ? उस किङ्ग का मैं अपना दिमाग नष्ट करने है ।' बेनमी न कहा ।

"किंग सभी की दृष्टि में यह दिमाग नष्ट करना नहीं । हमारे राज्याधीन गगनहादुर नादान तो, मेरा काम देखकर इनने खुद हुआ कि, उन्होंने कहा — "यदि माविपट सरकार को एक भी आठ उल्लू लाल रंग के भेज जा सके, तो यहा अच्छा होगा ।" वे नेहरू के साथ इस विषय में परामर्श करेंगे ।" जयहरि ने उत्तर दिया ।

इसी बीच जयहरि की एक गुलाबी रंग की कुनिया ने बेनमी के खिलाफनी कुत्ते, 'प्रिग' को बाट गया, क्योंकि 'प्रिग' ने उसके साथ अनुचित घनिष्ठता बढ़ाने की कोशिश की थी । बेनमी के गुस्से का पार न था । उसने आत्मनि होकर कहा — "आप अपनी कुनिया का गोश्री मार दीजिये । एक साधारण देवी कुनिया होने हुए भी, उसकी यह मजादरि, उच्चवर्गीय किंगनी 'प्रिग' का बाट गया ।" जयहरि ने उत्तर दिया — "आपका 'प्रिग' जितना भी ठीकी हिंदी का हो, लेकिन उसकी दृष्टि निम्न है । टीन जैसे उच्चवर्ग के लोग चेहरा रंगी हुई साधारण स्त्री के पीछे खड़े होने से जान है । इसमें बगूर उसी का है ।" बेनमी ने कहा — "तो टीन है क्या सीपही मेरे बकीर की चिट्ठी पायेगा । देव, अदागत आगो रिहा करनी है या नहीं ।"

पर लौटकर बेनमी गोपी वकील के यहाँ पहुँची । वकील, किन्तु वनगी उसके मकान

पिता के त्रिदत्तम मित्र थे । उन्होंने कहा — "इस पर कोई कानूनी वाग्दाहों नहीं हो सकती । जयहरि की कुनिया रास्ते पर नहीं मटक रही थी और न वह पागल ही है ।" बेनमी वहाँ से गेट होकर महारमा हाकिम, अग्न घोंप के मकान पर गयी । उनसे सारा वृत्तांत कह कर उसने विनय की कि, वे पुलिस द्वारा कुनिया के भरवा डालें और जयहरि को जानवर राने के काम से रोका जाय । हाकिम ने उत्तर दिया कि, वे पुलिस को निश्चय ही जयहरि बाबू की कुनिया की रोज लपर राने का हुक्म दे देंगे । किसी प्रकार की बीमारी होने पर अवश्य ही कुनिया मार डाली जायगी । किन्तु जयहरि जो करते हैं वह तो एक निर्दोष रेल है, उसे किसी प्रकार रोका नहीं जा सकता जब तक कि, उनमें किसी का अहित न हो ।

बेनमी वहाँ से भी निराश होकर अपने घर लौट आयी । उसने निश्चय लिया कि, वह स्वयं जयहरि से बदला ली । उसने अपने धात्री निमाईदास और सदर अर्दगी गगन मटक को बुलाकर हुक्म दिया कि, वे दूसरे दिन सवेरे आठ बजे जयहरि बाबू के पास के पास उपस्थित रहे ।

"पर दिन बेनमी अपने अरबी पोडे पर बैजल पाउड्र हाथ में लिये जयहरि के मकान पर पहुँची । निमाईदास और गगन मटक दोनों वहाँ अपने बच्चों के साथ पहुँचे थे ही उपस्थित थे । जयहरि भी पाटक के नाम लता अपने जानवरों को

देख रहा था। बेतसी को देखते ही मुस्करा कर बोला—“गुड मॉनिंग, मिस बेतसी। आपका प्रिंस अच्छा है न?”

बेतसी ने उत्तर दिया—“जरा बाहर जाइये, आपसे कुछ कहना है।” जयहरि पाठक के बाहर निकल आया। बेतसी ने कहा—“तब मेरे साथ जो आपने दुर्व्यवहार किया उसने लिए आप क्षमाप्राप्ति है या नहीं? और, यदि संभव हो आपकी उसने लिए दुःख है, तो आप अपनी कुत्तियाँ को गोली मारवा दीजिये। या ऐसा नहीं कर सकते हो, तो उसे गंगा-गार छुड़वा दीजिये। जयहरि ने उत्तर दिया—“आपको बप्ट हुआ, उसने लिए मुझे क्षमापत्र जरूर है। क्षमा भी मैं माँग सकता हूँ। लेकिन कुत्तियों के साथ मैं किसी प्रकार का बठोर व्यवहार नहीं कर सकता, बेतसी ने जयहरि को मारने के लिए चाबुक उठाया।”

लेकिन बेतसी का चाबुक जयहरि की पीठ पर पड़ने से पहले एक और घटना एसी घटी, जिसका विवरण यहाँ आवश्यक है। मंदिर में ब्रह्म-मुखादि नीचे एक जेब्रा दिखायी दिया। बेतसी ने उसे देखा नहीं था। निमाई धोबी उसे देखकर बोली देर तो हो रहा है। उसने बाद उसने गहनाना—“अरे यह तो मेरी मरामी है।” जयहरि बाबू को दस रुपये में वह मभी उसने कुछ दिन पूर्व बेची थी। लेकिन अब तो उसका रंग ही बदल गया था। सैरभी ने अपने पुराने मालिक, निमाई को पहचान लिया और वह ‘भूची-भूची’ करते उसकी

तरफ दौड़कर आयी। उसका अद्भुत सौंदर्य देखकर बेतसी का थोड़ा सामने के दोनों पाँव छटककर हिनहिनाने लगा। बेतसी जयहरि के साथ बात करने में व्यस्त थी। अचानक घोड़े के पैर उठने से वह अपने-आपको समझल न सकी और घड़ाम से जमीन पर गिर गयी।

उसे दो सप्ताह तक विस्तर पर ही लेटे रहना पड़ा। उनके मुनीम हरबाली माहनी की स्त्री रोज उसे देखन आती। उसने कहा—“तुम भी दीदी खूब हो। मेरा साहू की तरह घोड़े पर घंटनर जयहरि बाबू बोसजा देने गयी। मर्दान के दाँत खटटे करने का एक ही तरीका है। उन्हे लुमा कर पढले तो अपन बस म करना और फिर चाहे जैसे नाच नचाना। तुम्हारी और जयहरि बाबू की जोड़ी भी खूब मिलती है। तुम शादी न करो, तो जयहरि बाबू जैसा पात्र ता में हाथ से छोड़नेवाली हूँ नहीं। मेरे भाई की ‘बची’ को यहाँ बुझ लूमी। मेरा खयाल है, जयहरि बाबू उसे नामसद नहीं करेगे।

माइती की स्त्री चली गयी, लेकिन उसकी बात बेतसी के मन पर चोटकर गयी, जयहरि न मभी को जेब्रा पना दिया, तो क्या वह जयहरि को भेड नहीं बना सकती? दूसरे दिन सबेरे ही उसने जयहरि बाबू को लिखी लिखी—“आपकी कुत्तियाँ और मभी को मेने क्षमा किया और आपको भी। क्या आप भी मुझे क्षमा कर सकते हैं?”

रुनी कथा साहित्य में 'वर्तमान शोकी' के नाम से प्रख्यात भी निकोसर्द पित्तवर्षी की एक युद्धवालीन कहानी का सचित्र हिन्दी रूप-भर।

*

वह व्यक्ति जार-जोर से हँसना हुआ लड़ा था। वह झुलझाया हुआ था, उसने हँस-हँसास गुम थे।

'उम्, बड़ी मुश्किल में पता चला मुझारा। इस अधिपती में तो कोई अपने ही घर को भी खोजता-खोजता घर के बिनारे में निबल जाय।' उसने अपनी टोपी का बर्फ साटते हुए कहा— "क्या यह बच्ची का अस्पताल है?" उसने पूछा।

"हाँ, क्या बात है?"

"यान क्या, एक औरत पिछवाड़े की गली में पड़ी बच्चा जन रही है।"

"और तुम क्यों हो?"

"मैं... मैं तो इतिहास में उभर तो मुजब था। बारगाने की रात की ठण्डी में मैं लौट रहा था। गैर, अब जन्दी बरती। मैं तुम्हें रास्ता दिना दूँ। क्या अभीव वाम है। मैं अपने रास्ते जा रहा था, देगना क्या है कि, वह बंचारी अनेली है। कोई भी तो वहाँ नहीं और मैं भी करता तो क्या करता?"

एक मिनट बाद ही एगेना नाम की नर्म एक परिवारक को लिये उस अतजान के माथ बर्फ की ओधी में गिरती-मड़ती जा रही थी। अंधेरा बहुत घना हो गया था। मकान नयी बट्टानों-में लड़े थे। बही में भी तो प्रकाश की विरण नहीं आती थी। बर्फ की ओधी धूम में कचकरी लगाती हुई घूम रही थी। कुछ आभास-सा होता था, पहले घर सेनात मैनिबो की छाया कर, जो छाया दवे पोंच गती में निबल जाती थी।

एवाएव के घरती घर, बर्फ में मिबुट कर पड़ गये। उनकी मान एक-दूनेर की पीठ में अही हुई थी। एर धीज, पर धीरे-धीरे बढ़ती हुई आवाज मुतायी पड़ी और जैम वह आवाज उनकी और बढ़ी आ रही थी, उनके मिर मिबुट कर बघो में घुम जाते थे। नुबरड के पास बही में लाल लपटे-उछरने लगी और गली को बँपता हुआ जोर का एक धमाका हुआ। घरों की ओगनी पर जमी हुई बर्फ बडबड कर गडग ११ गड रही थी।

“वही उस बेचारी को घोट न आयी हो”-इरीना चिल्लायी।

“नहीं, वह दूसरी ओर है। तुम दोनों उपर की तरफ खोजो उसे। चिन्नली के शम्भू के आगे वह वही होगी। मैं तो चला। आज तो इनादन गोलियाँ चल रही हैं। घर पहुँचने से पहले मैं थोड़ी नहीं खाता चाहता।”

इरीना ने साईं का काम नहीं सोचा था। रूचो के अस्पताल में वह नर्स का काम करती थी। पर अब उसे इस रात में उस स्त्री की खोज करनी थी और बच्चा भी उसी को जताना होगा। अब एक सविन्ध भी नहीं खोता है। साईं यहाँ वहाँ है आ उसकी मदद को लायेंगी। रात का सप्ताहा था। पाला और बर्फ का तूफान। पत्वार और सीढ़ी के साथ गोले पर-गोले सिर के ऊपर से निकल जाता था। इरीना बर्फ की एक इरी में दूसरी की ओर दौड़ती थी और हक-भक कर जान लगानी और मुनती थी।

दाहिनी ओर से बराहने की आवाज सुनायी दी। वह उठी और लपकी और सचमुच चिन्नली के शम्भू के आगे-बैठा कि, उस अन्तर्जान ने कहा था—किसी घर के बंधु द्वार के समीप वह स्त्री बर्फ में, दीवार के सहारे कमर टेके बैठी थी। इरीना औरत के सामने घुटने टेक कर बैठ गयी और औरत ने इरीना का हाथ अपने हाथ में धाम लिया। उसका हाथ गरम-गरम धर धर काँप रहा था।

उसे अस्पताल तक ले जाने का समय न था। उसे प्रसव का दर्द उठ रहा था। वह बर्फ में ही बच्चा जन गयी थी, शीतवाल की उस अँधियारी रात में जिसे पटते हुए थोला का प्रकाश ही आलोकित कर रहा था। इरीना ने अपने चारों ओर देखा वह मर-बुछ रानि के भयावह स्वप्न-सा दिख-लायी पड़ना था। उसने कोट के कॉलर में बर्फ भीतर की जिसब रहो थी हवा के घुरे जोरों से सोवी के बपेड़े उसके मुँह पर रुकते थे, उमने हाथ छिद्र गये थे और उसका दिख इस जोर से धक्का रहा था कि, इरीना को वह धडकन भी साफ सुनायी पड़ती थी। माहूम होता था, जैसे वह लेनिनग्राद नगर नहीं, दक्षिण कोई निदावान सुनसान है, जहाँ शीत की अँधी जर्मन तोषा की ताल पर फरे सपा रही है। घर के बंधु द्वार को खटखटाना व्यर्थ था, किसी को पुकारना भी तो बिजूल होता। गली सूनी पड़ी थी और मुझ तक कोई भी प्राणी उपर से न निकलेगा।

पर वही, इस वीष-नाशों में, इस लुले मैदान में, जिसे आवास की अँधिया घेरे थी, एक बड़े मानव प्राणी का जन्म हो रहा था। इसकी प्राण रक्षा तो करनी ही थी। शीत, बीवड और दुश्मनों की ताप के मुँह से उसे बचाव ही होगा। फटते हुए गोलों की भीषण प्रमत्त से उसने जान बूझ रहे हो रहे थे। इरीना ने स्त्री को इस सहारे से उठाया जैसे वह अस्पताल की आरामदेह बार्ड में सो रही हो, इस

हिन्दी डाइनेस्ट

सरह आहिंसा में जैसे बच्चा का उठाया जाता है। बच्चे को उसने थोड़े में ले लिया और फिर उसे आबास की ओर उठा दिया, जैसे अफगान की मूर्छा में पड़े हुए लेनिनग्राद नगर का उसका प्रदर्शन कर रही है। वह उसे अपनी छाती में चिपका कर चलने लगी— गरम-गरम, रोते-रोकते उस जीव का अपने बाट के भीतर दुजवाले हुए। वह वर्ष में चल रही थी, उस वर्ष में जा ताजा थी और जिसका निगी के पार्श्वों ने रोना न था।

परिवार के सहारे बच्चे की भी पीछे-पीछे घूमती रही थी, जैसे नूपान में चित्र हुए पत्तों वाली चिट्ठी हो। पक्षी ने हवा के मोड़ों में उसी पोंच डगमगातार, उसी सूते ओढ़ों के पार जानापूर्वी के-के धब्बे निरन्तर थे— 'मैं तो अपने आप भी चल सकती हूँ।' धीरे-धीरे परिवार के मुँह में निरन्तर था— 'हम लोग छोड़ ही क्यों पहुँच जायेंगे। अब दूर नहीं है।'।

औधी मुट्ठी भर-भर कर मुँहा बर्फ उनके मुँह की ओर मोड़ रही थी। नगर को घेरा हुआ दूर हर घमक के गाँव दूरे हूँ पोंच की धाछार उनका पीछा करती थी। लेनिन के विजेता के समान आगे बढ़ रहे थे— रात, मौन और नगर को केंद्रित धारी गोल-गोले का जीवन चले जाते थे। जहाँ के समान।

अपर ज़रूरत होगी, तो जीवन के इस तबू अकुर को फिर जीत का यह सानदार जूलूम तारें शहर में धूमना, इस नन्हे-ने

नवागन्तुक का लिए हुए, जा लेनिनग्राद नगर में ऐसे समय में अवतीर्ण हुआ था।

मौ पहले ही जान गयी थी कि, उसने जिस शिशु को जन्म दिया है, वह बच्चा है। बार-बार वह इरीना को ओर बाँहें उठाती थी, जैसे उसे रोकना चाहती हो, लेनिन फिर-फिर वह अपनी बाँहों को गिरा लेती थी।

वे बच्चों के अस्पताल में पहुँच गये। और जब स्त्री को बिछौने पर लिटा दिया गया और उसके आराम की सुविधा पर दी गयी, तो उसने इरीना को बुला भेजा और निस्पृह, बिन्तु अधिभार पूर्ण और धीमे स्वर में उसने पूछा— "तुम्हारा नाम क्या है?"

"तुम मेरा नाम क्यों जानना चाहती हो?" मेरा नाम 'इरीना' है।"—सस्नेह, इरीना ने पूछा।

"मैं अपनी पुत्री को तुम्हारा ही नाम दूँगी। उसे तुम्हारा स्मरण रहे, यह तुम्हारे जैसा बन सके। आज की रात तो तुमने नारी नाम को गौरवित कर दिया है बच्ची।"

और उसने इरीना का तीन घण्टा धुधन दिया। इरीना ने पीठ फेर ली। उगरी ओलों में ओमू उमड़ आये।— क्यों? क्योंकि द्विग्व पञ्चजल की महार-महाम काष्ठाभिषिक्तों के बीच जब रि, धरती में आराधन तक मौन धरगती थी, उसने जीवन का सर्जन किया था। जीवन को बिनान पर विजयी बनाया था।



सिंधी भाषा में रससिद्ध कथालेखक श्री आसानन्द गामलोरा की एक कहानी का
श्री मूलचन्द्र परशुराम शर्मा द्वारा सविन्य हिन्दी-रूपान्तर ।

★

किंकी को उसकी सब सहेलियों ग्वालिन कह कर सम्बोधित करती थी, पर उसके परोक्ष में वास्तव में, वह कोई ग्वालिन न थी और वह उसका व्यापार-धंधा भी न था। उसके पति न दो-तीन गायें पाल रखी थी और उनके दूध बेचने में जो-कुछ मिल जाता था, उस पर उनके परिवार की आजीविका निर्भर थी।

उसका वास्तविक नाम भी किंकी न था। अभी वह बारह बरस की बच्ची ही तो थी, पर इतने में ही उसके अभिभावकों ने उसका विवाह एक पञ्चवीस वर्ष के ब्राह्मण से कर दिया। शरीर से भी वह सुंदर ही थी। पति के घर में जब वह गयी, तब भी वह एक अवोध बालिका की तरह दिखायी पड़ती थी, मानो वह निरी बच्ची थी, एक किंकी। सिंधी भाषा में 'किंकी' का अर्थ होता है, एक छोटी बच्ची।

किंकी का पति जन्म से ब्राह्मण था, पर कर्म से नहीं। न उसने संस्कृत का अध्ययन किया था और न अपनी मातृ-भाषा में अनुवाद हुए वेद-शास्त्रों का

अभ्यास ही किया था। प्रारम्भ में कुछ उसके यजमान था। वह पौरोहित्य वृत्ति करता था। घामिव त्योहारों पर जो कुछ दान-दक्षिणा उसे मिल जाती थी, उस पर अपना उदर निर्वाह करता था। ब्रिन्तु लड़ाई के बाद उसका निर्वाह कुछ कष्ट से होना लगा। उसके यजमानों की संख्या भी कम हो गयी-हो सकता है, उनमें पहले की-सी थढ़ा ही न रही हो। अतः में, विवश होकर इस जन्म के ब्राह्मण ने, दो-तीन गायें पाठकर लड़े अपनी आजीविका का साधन बना लिया।

किंकी न अब अट्ठारहवें में प्रवेश किया था। यौवन-चिह्न बहुत बाल में उसके शरीर में प्रस्फुटित हुए। यह सामद उसके सूक्ष्म शरीर और कुराब यष्टि के कारण था। पर अट्ठारहवें में पदार्पण करते ही उसके शरीर में यौवन के चिह्न इतनी तीव्रता के साथ विकसित हुए-वाटण्य की शारीरिक तथा मानसिक तरंगें इतने वेग से उठी कि, प्रणय की कोमल और कमनीय भावना

के पूर्णरूपेण प्रस्तुतित होने के पूर्व ही वह अपने पति के सहवास में जीवन की प्रफुल्लता अनुभव करने लगी। वस्तुतः प्रणय के कोमल और वमनीय भावों के प्रादुर्भाव को उसके जीवन में मुझाईस ही नहीं थी। ये भावनाएँ केवल उस स्थान में पनपती हैं, जहाँ सम्मता का बमल, अमादि सत्य के मूर्ध की ओर उन्मुख होकर विकसित होता है। यहाँ तो न आर्ति का सम्मता का प्रवास था और न उसके लिए कोई अभिलाषा थी।

हिन्दु पूरे हो जल भी उस घोषने-ग्वाद में बीजने न पाये थे कि, अपने पति के प्रति उसके स्वभाव में अलक्षित परिवर्तन होने लगा। पति के बातचीत के दृग तथा व्यवहार में जरा-सा भी लक्षण न देखकर उसे घृणा-भी आने लगी।

रान को जब यह उसके पार्श्व में विस्तर पर लेटना था, तो उसने दरीर में गोबर तथा गो-मूत्र की गंध आनी रहनी थी। बिन्नी को यह अग्रह्य था। अपने मन को यह बहुत ही सभ्रान्ती-सभ्रान्ती—“एति ईश्वरतुल्य है। भाते वह बैगा भी हो, गुण्य हो अथवा विकृत हो, हिन्दू तारी का परम वर्तक्य है, उसकी सेवा-अभुषा करना—उसे गतार के सभी पुण्यों में श्रेष्ठ मानना।” शार्वीन शास्त्री की यह निशा—यह सरदार उसके रोम-रोम में गमया हुआ था।

पर कभी-कभी जब गृहस्थ में निवृत्त होकर एतान में बैठती, तो उसने मन नवनोत

में विचारों की दूसरी अनीली तरंगें उठनी थी, जो उसने इस पति-जीवा की भावना को घारा देकर वही दूर पटक देती थी। उस समय उसके हृदय में निराशा और पिता के बाले बाइल पिर आते और अनर्दनों का तूफान-भा उठ गया होता। शताक्षित हृदय रूप में विद्राह कर बैठता।

पर-भण्डों को देतारर हृषित और प्रफुल्लित होने कई गर्तवा बिन्नी ने रूप को पकड़ दिया था। बीन-मी ऐसी पित्त-पता थी उनमें, जिनमें उसके हृदय में अज्ञान आरपण उत्पन्न विद्या था ? बिन्नी भोली-भाली बिन्नी को यह भी ज्ञान न था। पूछने पर भी वह इसका उत्तर न दे पाती।

उसके गार्हस्थ्य जीवन में आनन्द का एक क्षण भी विद्यमान न था। गृहस्थों में सुदृष्टी पाकर जब पर में दरवाजे की पीछे पर आकर बैठती थी और उस समय रिपी एवक की देगवर अनायास ही, जब उसका हृदय पुनर उठता, तो उसे उस मुख की पत्नी के मोभाग्य पर ईर्ष्या हो आनी थी। वीं रिपी के पीछर में भी गुण-लक्षणों का साम्राज्य था—सरग्वती और लक्ष्मी दोनों की रूपा थी। वहाँ धाम-मूम सोरर और गोमूत्र के गंध की जगह पुष्प, पुष्प, दीप तथा फदन की सुगंध ध्यात रहनी थी। यहाँ पर-निदा, इषर-उपर की बेगूद घाते और जोर-जोर में बीजने के बड़े घमंघरी,

शास्त्राभ्यास, शिष्टाचार तथा सम्यक्ता का वातावरण था। इस सम्यक् वातावरण में एली विकी को भाग्य ने नैसे वातावरण में ला पटवा था—किकी का मन विक्षोभ से भर उठता।

किकी का दम घुटने लगता और तब उसका एकमात्र सहारा था सुखद कल्पनाओं के ससार सँजोना। कल्पनाएँ ही उसके जीवित रहने का एकमात्र आधार रह गयी थी। उसकी ये कल्पनाएँ भी बड़ी अनोखी होती थी—एक विस्तृत मैदान, जहाँ प्रकृति अपने पूरे निखार पर है और जिसका ओर-ओर कुछ भी नहीं सीख पड़ता। इस मैदान के कला-वृक्षों से लिपटकर वह अपना असतोष-अपना अभाव-सब कुछ भूल जाती थी। हर रात वही मैदान होना-वही हरियाली।

किन्तु एक दिन उसकी कल्पनाओं ने परस्पर का बाँध तोड़ दिया। किकी ने उस दिन देखा—मैदान में एक ज्योतिर्मय शिवालिंग है। बड़ी श्रद्धा में वह उसकी आराधना में तल्लीन है। बहुत समय तक वह ध्यान में जुटी रही। अँखों उसकी बंद थी, मुस्तक झुका हुआ और दोनों हाथ जुड़े हुए थे। आँख खोलने पर उसने देखा कि, शिवालिंग के स्थान पर एक देवोपम कातिमान पुरुष सामने खड़ा है—मानो

उसकी आराधना से साक्षात् शिव ने दर्शन दे दिये हों। किकी वसुध-सी उस पुरुष की ओर बढ़ी और दूसरे ही क्षण उसने स्वयं को उस पुरुष के स्नहार्तिगत में सोप दिया। वे पवित्र स्नह के सुवर्णमय क्षण थे—किकी आत्मविभोर हो उठी। जाने कितनी देर बाद उसे अपने आलिगन के बंधन सिधिल होते प्रतीत हुए। चौंकर उसने भँहूँ ऊपर किया—वह देवोपम पुरुष



[चालिन]

भी भतर्धान होने को था और तब पहली बार किकी ने देखा कि, उस पुरुष की आकृति बिल्कुल उसके पिता की आकृति के समान थी। अनचाह ही एक सिहरन सी उसके शरीर में दौड़ गयी और कल्पनाओं का वह रपीन ससार छिन भिन हो गया। किन्तु किकी के ऊपर अभी भी एक अव्यक्त भय हावी था। उस दिन के बाद फिर कभी उसने उस विस्तृत और विशाल मैदान को अपनी कल्पना में उतारने का प्रयास नहीं किया। अपने वर्तमान और यथार्थ जीवन से ही समझौता करने की चेष्टा करती रही।

एक दिन उसके पति पर एक गाय न और से सीप का प्रहार किया जिससे उसके गर्दन की हड्डी टूट गयी। पैर का एक घुटना भी बुरी तरह चोट खा गया। किसी प्रकार लोग उसे टोंग टोंग कर घर

ले आये। कई महीने वह बिस्तर पर पड़ा रहा।

शिशु पनि के साथ घटी इस दुर्घटना ने बिना किसी पूर्व सूचना के ही किसी की जीवन-धारा फट्ट दी। अभिराज मानो वरदान में परिणत हो गया। अभिराज और अग्रिम वास्तविकता के बीच जो कुछ उसने मन में चला रहा था, उससे उसका ममस्पर्श विदीर्ण जाना चला जा रहा था—उन लगना, किसी भी समय उसके हृदय की धड़कन बढ़ हा जा सकती हैं।

परन्तु इन आश्चर्य विपदा ने उसके हृदय में एक नयी भावना को जन्म दिया। उसने अन्तर में एक ओर मोया मानुष्य ज्ञान का ही जाग उठा। अपने इस दुर्घटना-ग्रस्त 'पुनित' पनि के लिए अस्मान् ही उसने हृदय में प्यार का गान उमड़ पड़ा। जिस प्रकार एक माँ अपने बच्चे की देख-भाल में स्वयं की मुध-मुध भूँट जाती है, ठीक वही बात किसी के माथे हुई। वह अचट-बोवार ग्राहमण अर उनका पति न था, कुटुम्ब का पालन न था। किसी की नज़री में वह एक निर्दम और अमन इमान था।

मातृ-उमग से किसी ने अपने-आपको उस बेवार ग्राहमण-पति की सुधूपा में इस तरह सौंप दिया कि, दूसरी सब भावनाएँ-आकाशाएँ उस एक महान् भावना में विलीन हो गयी। उसके हृदय में जीवित रहने के लिए एक नया उत्साह उत्पन्न हो गया, जिसने उसके शरीर के अग-प्रत्यग में आह्लाद और प्रमत्तता की लहर बौड़ा दी। दिन रोज़ के सपने, जो उसके पिछले मवीर्ण और म्लान जीवन में मुक्ति दिलाने के क्षणिक साधन थे, अब सदा के लिए उसने बिदा माँग कर चले गये। उसका माँस अब इस मातृ-उमग में परिपूर्ण जीवन में था। उसके हृदय में भावना का एक नवीन स्रोत फूटकर बाहर निकल आया था, जिसने उसने मन के मग बलुप को टाँके। गुंमा प्रेम था, जिसमें वामना या वामना का लेसमान भी बिद्यमान न था। ऐसे एविप्र प्रेम का अनुभव किसी ने इससे पहले कभी नहीं किया था।

हाँ, किसी अर पत्नी से परिवर्तित होकर माँ बन गयी थी.... बिना प्रगब-वेदना के ही, पर इसी मातृत्व ने उमगी जीवन-रसा की—उने नया जीवन दिया।

★

अमेरिका के फंडरेण बोर्ड के जबर प्रॉ विराट अगनी यूरोप-यात्रा में वेरिम भी साथ। अगरी यात्रा से लौटने के बाद विराट ने अपने एक मित्र के वेरिम की घड़ी प्रगगा की और बोले—“वापस मेने उस नगर को २० वर्ष पूर्व देखा हुआ?” मित्र ने पूछा—“क्या जब वेरिम वेरिम था?” विराट ने उत्तर दिया—“नहीं, जब विराट विराट था।” —“जोरुण एवावट द' ग्रेट में” ने

★

देश-प्रेम

ले० कृष्णदेवप्रसाद गौड़ 'वेदर बजारसी'

✱

गुप्त या अंग्रेजों का शासन का। क्रांतिकारी दलों का नाम कभी-कभी पत्रों में सुनायी देता था। देश-प्रेम तो हम लोगों में भी था, किन्तु उसे हृदय की तिजोरी में कजूस की सपत्ति की भौति बंद रखना ही ठीक जान पड़ता था। क्योंकि जितना देश-प्रेम अधिक था उतना ही साहस कम था। देश-प्रेमियों की यातनाएँ हम लोग सुनते-पढ़ते थे। जब कुछ करने का मन होता है तब उसके समर्थन में तर्क उसी सरलता से मिल जाते हैं, जैसे बिना खोजे पग-पग पर मूर्ख मिल जाते हैं।

मित्रों ने कहा हम लोगों का समय शिक्षा ग्रहण करने का है। हम सभी लोग इस समय शिक्षा ग्रहण करें। देश-भक्तों का, देश-सेवकों का, निर्माण कैसे होता है इसे पहिले सोचना चाहिए। डाक्टर एक दम रोगी को दवा देना आरम्भ नहीं कर देता। पौच-छ साल पढ़ने के बाद अनेक रोगियों पर अभ्यास कर लेने के पश्चात् ही दवा करने योग्य होता है। एक मित्र ने कहा, हम लोगों को क्रांतिकारी बनना चाहिए। देश-सेवा का इससे बढ़कर दूसरा ढंग नहीं हो सकता।

नाम भी है और यदि गोली खायी या फासी पड़ी, तो अप्सराओं का ससर्ग और लोगों की अपेक्षा जल्द होगा। एक छोटा-सा भाषण ही इन्होंने दे डाला और अतिम वाक्य यो बोले — जिस प्रकार हल चलाये बिना खेत में कुछ नहीं उपज सकता, मूढ़ मुंडाय बिना सग्यासी नहीं बन सकता, नाट बिना कपडा नहीं सित्र सकता और रावण के धरे बिना दसमी नहीं हो सकती, उसी प्रकार बिना क्रांतिकारी बने देश स्वतंत्र नहीं हो सकता।

इस भाषण का प्रभाव बैसा ही पड़ा जैसा गाये की चिलम पर कुभक का पड़ता है। एक साथी ने कहा क्यों न हम लोग एक गुप्त समिति कालेज में बनायें। दूसरे ने पूछा, उसका उद्देश्य क्या होगा। उसने उत्तर दिया — "पहला उद्देश्य यह होगा कि, गुप्त ढंग से हम लोग कार्य करना सीख जायेंगे। दूसरी बात यह होगी कि, कालेज में जो भी बुराई हो और स्पष्ट रूप से उसका सुधार न हो सके उसे समिति द्वारा हम लोग ठीक करेंगे।" कुछ लोगों ने इस मनोवृत्ति का विरोध

किया और कहा यह कायरता है, छिने-छिप कोई कार्य करना। जैसे लोगों को चाम गर्म अच्छी लगती है, भाजन गर्म अच्छा लगता है, मित्रता गर्म अच्छी लगती है उसी प्रकार विचार भी गर्म अच्छ लगते हैं। यही निश्चय हुआ कि, हम लोगों को गुप्त समिति बन जाना आवश्यक है।

समिति बन गयी। उस समय अग्रजों का ब्यागाला था इसलिए उसका नाम रखा गया था एम् एम् । जिसका अर्थ था 'पेड्रियुम सीन्ट मासापटी'। इनके कुल बाहर मदस्य थे। दम होस्टल के और वा बाहरी। किसी को, सदस्यों के मित्र पता न था कि, कौन इनका सदस्य है। बंठन रात को ग्यारह बजे होती थी, जय प्राय मत्र लोग मां जाने थे। एक आदमी कमरे के बाहर पहचान देता था। उसे आदेश था कि, यदि कोई विद्यार्थी उधर आता दिखायी दे, तो वह बहे—'लोन्-डी,' और हम लोग तान गेठने लगे। दो-तीन ताज की बड़ियों मशामाने बेजपर रखी रहनी थी। यदि 'कार्डन' उधर जाने दिखायी दे, तो वह टहलने लगता और गाने लगता—'जावे प्रिय न राम बेदेही'। और एक विद्यार्थी कमरे में जोर-जोर से किसी विषय का नोट पढ़ने लगता और हम लोग ध्यान में मुनने लगते।

इसी बीच एक घटना घटी। तीन विद्यार्थियों पर पंच-शोच रूप से जुरमाना इसलिए किया गया कि, उन्होंने दूसरे की हाजिरी इतिहास के पटे में बाध दी।

प्रापेसर मकोडाराम इतिहास पढ़ाते थे। आज की तुलना में उन दिनों उन्नति कम थी। कदर ने प्रथम उन्नति करके मानव की मजा पायी। इसी प्रकार सिर का पंजान भी उन्नति की चार गीड़ियां चढ़ कर आज उन्नति की चोटी पर पहुँचा है। पहिले सिर जटाजूट से ढका रहता था। उसे फिर पगड़ी ने हलका किया। किंतु पगड़ी भी भारी थी इसलिए टोपी ने उसका स्थान लिया। और जय हलकापन अधिक पगद आने लगा, क्योंकि लोग भी हलके हो गये तब आज टोपी हटाकर सिर का बोझ हलका किया गया। उस समय विद्यार्थी और अध्यापक उन्नति के एक पग पीछे थे। इसी प्रकार मूछ मुड़ाने की भद्र प्रथा का अविष्कार तो हो चुका था; किंतु अघर उसे घर न सवा था। मकोडाराम टोपी लगाते थे, मूछे रखते थे। आकमफांड में तीन साज रहने और वहाँ से एक एक पास करने पर भी ऐसा जान पड़ता था कि, उन्हें कोई किसी गोंव की छाटी नदी के किनारे गेपकट लाया है। उनकी मूछे जमुनापारी घबरे के बानो के समान मुह के दोनों ओर लटक रही थी। यदि उनके दोनों ओर बोध दिये जाते, तो ऐसा जान पड़ता मानो उनके मुह पर शिर्माने बगेर की मांग राग दी है। तब ऐसी जान पड़ती थी मानो मूछे को कोयरा मयज कर बह मागे भय के अदर लौट जाने की चेष्टा कर रही है। ओखे चेहरे की सतह में एक दच अदर थी और आदमी न होकर रखे

की भौति गोल थी। जिसकी आर दसते थे जान पड़ता था मंगल ग्रह का कोई प्राणी देख रहा है। यदि वह चश्मा न लगात, तो मेरे दरजे में ऐसे भी विद्यार्थी थे कि, उनकी ओर वह देखते, तो उनके हृदय की घड़न उसी प्रकार बंद हो जाती जैसे बिना चाबी दिये घड़ी बंद हो जाती है। वह कैसे पढ़ाते थे यह आप बताऊँगा। उनके पास जाना और सिंहनी को दूहना करीब-करीब बराबर था।

जिन विद्यार्थियों पर जुरमाना हुआ उसमें भी एस एस् का भी एक सदस्य था। तीनों विद्यार्थी उनके पास गये और जुरमाना समा करने के लिए कहा। वे इस प्रकार बोले जैसे बिल्लियों लड़ते समय बोलती हैं और कह दिया, मैं क्षमा नहीं कर सकता। रात को गुप्त समिति की बैठक हुई कि, क्या किया जाय। अनेक सुझाव आये किसीन कहा, उनकी कुरसी पर बिछूर रख दिया जाय। किसीने सुझाव दिया कि, उन्हें चाय के लिये बुलाकर पचास टिकिया वाइकोलेट धूर करके चाय में मिला दी जाय। किन्तु कुछ लोगों को सका थी कि, वह चाय का निमनन स्वीकार न करेगा। एक न कहा घर से उनके नाम तार दिला दिया जाय जिसमें उन्हें घर जाना पड और पचासा रुपये खर्च हो जाय। किन्तु यह सब जचा नहीं। अंत में सर्व सम्मति से निश्चय हुआ कि, चुपके चुपके पहरा दिया जाय और जब वे कहीं बाहर जायें, तब नौकर को किसी बहाने इधर-उधर भेज दिया जाय और

उनक घर में जाकर उनका बपटा सब हटा दिया जाय। जाड के दिन थ मजा आ जायगा। प्रोफसर मकोडाराम के घर के लोग उनके साथ नहीं रहते थे। इसी-लिए यह बात सोची गयी। तीन-चार दिनों के बाद नोटिस आया कि, आज सात बज मकोडाराम का 'स्लीपर्स' क्लब में आपण हैं। भगवान विद्याधिमो की बात बहुत शीघ्र मुन लेता है, ऐसा हम जान पडा। प्रोफसर महोदय समय के बहुत पावद थे। इसलिए जब हमन समचा उठ गये पंद्रह मिनट हुए होग, तो मैं और मेरा एक साथी चला। द्वार पर नौकर नहीं था, दरवाजा देखा तो केवल बपटायो हुआ था, अंदरया बाहरसे बंद न था। तनिक-सा हाथ से धून से खुल गया। उसी समय यह अनुभव हुआ कि, साहस करे मनुष्य, तो सफलता उसकी चेरी बन जाती है। हम दोनों व्यक्ति घरमें थले गये। जान पडा नौकर वही चला गया है और द्वार बंद करना भूल गया है।

हम लोगों को पता न था कि, बपड कहीं रख हाय। किन्तु डाइग रूम तो बाली था केवल कुर्सियों मुस्करानी हम लोग का स्वागत कर रही थी। सामने रसोई पर था, उसमें बपड रखी न होगी। बगल में एक कमरा था उसमें भी अघेरा था। उसका द्वार भी बंद था। इसी में बपडे रख हाय। हम लोगो ने द्वार खोला तो खुल गया। हम लोग धुस गये। चार चाप उस समय एक साथ हुए। हम लोगो का घुसना, किसी का

चिल्लाता "कौन हैं", स्विचपर किसी का हाथ जाना और न जाने वहाँ से मकड़ोडाराम का उपस्थित हो जाना।

उडनी तलवारों (फटाइंग सासर) से भी तीव्रतर गतिसे हमारे अस्तित्व में यह बात आयी और गयी। भय, ग्लानि, अपमान, लज्जा और मविष्य की कथा देनेवाली आशय। उस समय तो नहीं, किंतु बादमें यह भी जान पड़ा कि, आवश्यकता पड़ने पर बीरता और साहस ऐसे

भाग जाते हैं जैसे प्रकाश देसकर भूत भाग जाता है। प्रोफेसर साहब ने पूछा "पीन, क्या बात है?" इतना आश्चर्य मुझे भी नहीं हुआ था जितना इस समय जब मेरे मुँह में बोली फूट पड़ी। जान पड़ा कोई अज्ञात शक्ति मुझे सिखा दे रही है। सबकुछ अतर्जनि कोई चीज है। मैंने कहा हम लोग क्षमा माँगने आये हैं। प्रोफेसर साहब इतने जोर से हँसे, मानो हिरोगिमा की घटना फिरसे हुई।

✱

देश-भक्ति और पेट-भक्ति

उस दिन सारे अफ्रीका से बहुत बुरे राधाचार मिले थे। तेल के व्यापारी, श्री फेंगीचे और गन्ने के व्यवसायी श्री पीयशा, हाथ में अखबार लिये सड़क के बीच में लड़े लड़े आवेग में जाने कर रहे थे। उनसे देशभक्त हृदय में उफनते हुए तूफान का प्रतिबिम्ब उनके तमतमाने हुए चेहरों पर व्यक्त था। मैनिंग दुर्घटना का धक्का, मारे जाने वालों के लिए रोद, विजयी हथियारों के प्रति शोध, हायाकाण्ड के लिए उत्तरदायी मनुष्यों के ऊपर क्षोभ—यह सब उनके दिल में रह रह कर उठ रहा था और बाहरी तौर पर उनकी शीघ्र गति, बार-बार मुट्ठी बाधना, बड़बड़े शब्द, तीव्र दृष्टि और मुँहों उनसे भावों का प्रदर्शन कर रहे थे।

इसी समय दोपहर का घटा बजा और देखते ही देखते उनके तमतमाने मुखों पर प्रसन्नता की लहरें दौड़ गयीं मानों अचानक अपनी 'इंटीलियन्स' मैनाओं की मनसनीदार विजय की खबर मिल गयी हो। सब दोनों ने वही प्रसन्नतापूर्वक भावार्थ में हाथ मिलाया और शीघ्र ही, एक-दूसरे और दूसरा-दूसरे डग बजाने चले दिये।...

उनकी इस आत्मिक प्रसन्नता का कारण यह था कि, दोनों के लिए अपनी-अपनी पसन्द की वस्तुएं भोजन के लिए मिली थीं। श्री फेंगीचे के लिए भेड़ का बगार था, तथा श्री पीयशा के लिए शरबों अंगारोंदार बरफ-बन्दा।

—फ्रीली

✱



शास्त्र नारी आत्मा के अद्वितीय चित्रकार थे और रवीन्द्र नारी अतः शरणा के अनुसरण कवि । दोनों ने अपने विराट् प्राण-तत्त्व को भावना में उठाकर नारीत्व को थाह हमारे सामने रखा है । नारी के अतः कण्ठ का स्पर्शीकरण करते हुए शरद ने अपनी एक कहानी (अथवाट म आलोक) में तो मानो मनुष्य स्वभाव के मूल का ही हमें आभास दे दिया है— स्वभाव के विरुद्ध विद्रोह किंवा ज्ञा सकता है पर उसे विस्तृत बख्ता नहीं जा सकता । नारी शरीर पर सैकड़ों अत्याचार किये जा सकते हैं किन्तु नारीत्व को वो अस्वीकार नहीं किया जा सकता । रवीन्द्र ने भी नारी को सहज गरा 'नेहपात्री धरित्री' कह कर नारीत्व को वही उपात छवि बन दो है । यदा हम रवीन्द्रनाथ की ही एक लम्बी कहानी का सविष्ट हिन्दी-रूपांतर प्रकाशित कर रहे हैं । कवि ने यदा भी नारी हृदयको अत्यंत तरल एवं यथ अभिव्यक्ति में चित्रित किया है । ऊपर का चित्र श्री सुधीर खास्तगीर के एक सुन्दर चित्र की सरल रेखाचित्र है ।

*

लड़की के पिता के लिए धीरज धरना था। अतः बहुत समय भी था, लेकिन लड़के के पिता मरने के लिए तनिक भी राखी न था। उन्होंने समझ लिया था कि, लड़की के विवाह की उम्र पार हो चुकी है, लेकिन यदि कुछ दिन और भी पार हुए तो हम बात का, भद्र या अमर किसी भी उपाय में दया करने का अवसर भी पार हो जाएगा। क्या की रणम बड़ा अवैध भाव में बड़ा रही थी, यह सच है, किन्तु उमर भी बड़ा सच यह था कि, उसी क्षण में दहेज की खबर भी काफी भारी थी। घर के पिता हमीरजी इस तरह मोहमाह जन्मी मचा रहे थे।

मैं ठहरा घर। लिहाजा मां की बे मामले में मेरा मन जानता मिलना ही मिलना समझा गया। अपना कर्तव्य निभाने में मैंने भी कोई पगर नहीं रखी, अर्थात् एफ ए पास करके छात्रवृत्ति पा ली। पर यह हुआ कि, मेरे सम्बन्ध में श्रीप्रजापति के दोनों ही पक्ष, वन्यापक्ष और वरपक्ष, बार-बार बेतरह बेचैन होने लगे।

हमारे देश में जो मनुष्य एक-बार ध्याह कर चुका है, उसके मन में अगली बार ध्याह के विषय में कोई उद्वेग नहीं होता। पर बार-बार-बार का स्वाद ले लेने पर मनुष्य के प्रति बाध की जो मनादना होती है, स्त्री के सम्बन्ध में बहुत-कुछ वेगों ही अवस्था पर बार-बार प्रताप कर चुनेवाले आदमी के मन की भी होती

नवनीत

है। एक बार स्त्री का अभाव पड़ित हुआ कि, फिर सत्रों बड़ी बात उम्र अभाव की भरने की ही सामने हुआ करती है और फिर इस विषय में उसका चित्त दुविधा में नहीं रहता कि, भावी स्त्री की उम्र क्या और अवस्था कैसी है। मैं दयाता हूँ, भागी दुविधा और दुश्चिन्ता का ठेका ले रहा है, हमारे आचार्य के लड़कों ने, बार-बार विवाह का प्रस्ताव वेस होने पर उनके पिता-मर्यादा के दंत वंश, विज्ञान के आजीवार्थ में बार-बार बाले हो उठते हैं, और उधर धानचान के प्रथम मूलपाठ की ओर मैं ही लड़कों के काले वेस, भारे चित्त-फिराव में, तन ही भर में पत्र उठने का उपक्रम करते हैं।

आप विद्वान् रगिये, मेरे मन में ऐसा कोई विषय उद्वेग पैदा नहीं हुआ, बल्कि विवाह के प्रस्ताव मे मन में धनन की दक्षिण हुआ डोंड उठी, बौद्धिक बलता की नवीन बोलाले के बीच मानों आग में गुपचुप बमबारी शुरू हो गयी। जिस छात्र की लम्बे बर्र के कर्मीनी विपन्न की घोर टीकाओं के पौन-मान पोषे जगनों पाठने से, उसके मन में इस जाति के भावों का उठना बेजा ही समझा जायेगा। यदि टेम्प्ट-वृत्त-नमिति द्वारा मेरे इस लेख के पास होने का जरा भी अन्देज होता, तो शायद ऐसा कहने हुए भी सत्यधान हो जाता। लेकिन यह मैं क्या शुरू कर बैठा ?

क्या कोई ऐसा वास्तव है जिस लेकर
 जगत्पाद गढ़ने जा रहा हूँ? भरा यह लिखना
 इस सूर से शुरू हो जायगा, यह मैं सोचा
 भी न था। बड़ी साध थी कि, वेदना के
 वो काले बादल पिछले कई वर्षों से मन में
 रुक रहे हैं, उन्हें किसी वंशाखी साक्ष
 की तूफानी बारिश के प्रबल वर्षण द्वारा
 निकुल निशेष कर दूंगा। लेकिन न तो
 पक्षों की कोई पाठ्य-पुस्तक ही लिखते
 बनी, क्योंकि सस्कृत का व्याकरण मेरा
 पढ़ा हुआ नहीं था, और न वाक्य रचना ही
 हो सकी, क्योंकि मातृभाषा मेरे जीवित
 काल में ऐसी कूली पत्नी न थी कि, उसके
 द्वारा मैं अपने अंतर के राज्य को बाहर
 प्रकट कर पाता। इसीलिए देख पा रहा हूँ
 कि, मेरे भीतर का सन्ध्यासी आज अपन
 अन्तर्हास से अपना ही परिहास वरज
 बैठा है। और बिना किय बरे भी तो क्या?
 उसके आँसू सूख जायेंगे। ज्येष्ठ की
 तेज धूप वस्तुतः ज्येष्ठ की अशुशून्य रलाई
 ही तो है।

जिसके साथ मेरा विवाह हुआ था
 उसका असली नाम नहीं बहूंगा, क्योंकि
 आज पृथ्वी के पुरातत्ववेत्ताओं में उसके
 ऐतिहासिक नाम के विषय में घोर विवाद
 छिन्न की भाँसना नहीं है। जिस ताम्र-
 पत्र पर उसका नाम खुदा हुआ है, वह मेरा
 हृदयपट है। वह पट और वह नाम किसी
 काल में भी विलुप्त होगा, यह बात
 मेरी वत्पना से भी बाहर है। किन्तु
 जिस अमृतलोच में वह अक्षय बना रहा,

वहाँ इतिहासकारों का आना-जाना
 नहीं होता। किन्तु तब भी मेरे इस लेख
 में उसका एक नाम तो चाहिए ही। अच्छा
 मान लीजिये उसका नाम शवनम (मूल
 शब्द शिसिर का अर्थ है ओस, किन्तु
 ओस हिन्दी में नाम के लिए प्रयुक्त अथवा
 उपयुक्त शब्द नहीं। अतएव उसने फारसी
 पर्याय, शवनम को यहाँ ग्रहण किया गया
 है) था, क्योंकि शवनम में मुस्कान और
 रुलाई दोनों घुल-मिलकर एक हो गयी
 होती है, और भोर का संदेशा प्रभात तब
 आते-आते ही चुक जाता है।

शवनम मुझसे सिर्फ दो ही वर्ष छोटी
 थी। मेरे पिता गौरीदान के पक्षपाती न
 हो, सो भी नहीं था। उनके पिताजी
 जवरदस्त समाज-विद्रोही थे। देश में
 प्रचलित किसी धर्म के प्रति उनमें श्रद्धा
 न थी। उन्होंने खूब बसकर अंग्रेजी
 पढ़ी थी। मेरे पिता उग्र भाव से समाज
 के अनुगामी थे। जिसे मानते हुए तनिक
 सो भी अडचन हो, ऐसी किसी भी वस्तु
 की हमारे समाज के सिंहद्वार या अंतपुर
 में, दर-देहली अथवा पिछली राह पर,
 झलक भी देख पाना मुमकिन न था। इसका
 भी कारण यही था कि, उन्होंने भी बसकर
 अंग्रेजी पढ़ी थी। पितामह और पिताजी
 के विभिन्न मत मानने विद्रोह की दो
 विभिन्न मूर्तियाँ थीं। कोई भी सरल-
 स्वाभाविक नहीं। फिर भी यही उग्र
 की लड़की ने साथ मेरा विवाह करना
 पिताजी ने इसलिए मजूर कर लिया कि,

जिन्ही आमीया न मेरे सामन मन पर
 सबनम की तस्वीर ठावर रख दी और
 वहा- लो अम झठमठ की पढाई बंद
 करके सचमुच की पढाई करो। एवदम जी
 तोह परिश्रम करानवाली पढाई। तस्वीर
 जिसी अनाड़ी कारीगर की खींचा हुई
 थी। लडकी ने मौ
 नहीं थी इसलिए
 उसके केशो को बाध
 भँवारकर जूँ मजरी
 गूँथकर कटक की
 मशहूर साहा या
 मलिक बम्पना की
 बपव जवदस्त जवेट
 पहनाकर बरपक्ष की
 ओखो म धूल झोकन
 की कोशिश नहीं की
 गयी थी। केवल एव
 मीधा-सादा भराहुआ
 चेहरा या मीघी
 सादी दो आख और
 बँसी ही सीधी-सादी
 एव साड़ी। तब भी
 मालूम नहीं क्या
 कोई अपूर्व महिमा



साखी पाव। बागज की उस छवि को जैसे
 ही मेरे मन के जादू का स्पश मिला कि वह
 मेरे जीवन म जाग उठी। वे दोनों काग़ी
 आख मेरी सारी बिता भावना को चीखर
 मुझपर जान कैसे जद्भत भाव से आकर
 स्थिर हो गयी। और उस तिरछी किनार के

नीचेवाले दोनों अना
 वत चरणो न मेरे
 हृदय-पथासन पर बर
 बस अपना स्थान
 बना लिया।

पन की तिथियाँ
 आती और जाती
 रही। विवाह के दो
 तीन सन भी बीत
 गए। लेकिन मेरे
 स्वसुर को छुट्टी
 मिलनका नाम भी
 नहीं। इधर कुछ
 महीनो से मेरे देखते
 देखते एव अकाल
 मेरी इतनी बड़ी
 अविवाहित वयस को
 व्यथ ही उन्नीसवे वष
 से बीसवे वष की ओर

उभय
 [विप्र अरु शती घोष]

उसे घरे हुए थी। कसी भी एक चौकी पर
 वह बँठी थी। पीछे पद की तरह एक
 धारीदार शतरजी बूझ रही थी। पास म
 ही तिपाई पर फलदानी म फलो ने कुछ
 दीख रहे थ और बाल्छोन पर साड़ी की
 तिरछी किनार मे बिबित अनावद्ध दो

धवेलन का पडमय रच रहा था। स्वसुर
 और उनवे अधिकारियों पर मुझ खीझ
 होन लगी।

विवाह का दिन ठीक अक्काश का
 पूर्वलग्न पर ही आकर पड़ा। उस रोज की
 सहनवाई की हर तान आज मुझ याद आनी

हैं। उस दिन के प्रति मूलतः को मन अपन समग्र चेतन्य द्वारा छुआ था। मेरी वह उन्नीस वर्ष की उम्र मेरे जीवन में अक्षय रहे, मैं उसे कभी नहीं भुला सकूँगा।

विवाह-मण्डप में चारों ओर शार-गुल फैला हुआ था। उसीके बीच कन्या का कोमल हाथ मेरे अपन हाथ में पाया। मुझे स्पष्ट प्रतीत हुआ कि, यही मेरे जीवन की एक परम आश्चर्य घटना है। मेरे मन ने बार-बार यही कहा—‘इसे मैंने पाया है, उपलब्ध किया है। किन्तु किये? यह तो दुर्लभ है। यह मानवी है। इसके रहस्य का क्या कभी आर-छार पाया जा सकता है?’

मेरे दत्तनुर का नाम गौरीशंकर था। जिस हिमाचल पर उनका कर्मस्थान था, उसी हिमाचल के वे मानो गंभीरी थे। उनके गामोर्ध्व के शिखर देश में कोई प्रमाण शुभ्य हैनी उज्जबल होकर खिन्नी हुई थी। उनमें हृदय के स्नेह-योग का मघान जगने की एक बार पाया, उसने फिर कभी उन्हें छोड़ना नहीं चाहा।

काम पर लौटने में पूर्व उन्होंने मुझे बुगार कर कहा—‘बेटा, अपनी बच्ची को जो मैं सत्रह वर्ष में जानता हूँ, और तुम्हें इन पिछले कुछ दिनों में, अब भी मौषा तो उसे तुम्हारे ही हाथों में है। जो पन तुमने आज पाया, किसी दिन उसका मूल्य भी पहचान सको, इसमें यश आशीर्वाद मेरे पास नहीं।’

समधीनमपिन ने उन्हें बार-बार नयनोत

आश्चर्य करते हुए कहा—‘समधी, कुछ चिन्ता न करना। तुम्हारी बेटा जैसी पिता को छोड़कर आयी है, वैसे ही यहाँ मातापिता दोनों पायें, एता ही समझना।’

कन्या में विदा लेते समय वे हँसकर बाट—‘विटिया, चल दिया। इस बाप का छोड़ तेरा नोन अपना रहा है? आज मे अगर इसका कुछ भी सो जायें, तो इसमें लिए मुझे जिम्मेवार न ठहराना।’ बेटा, ने कहा—‘बयों नहीं, अगर कभी इतनी—मौ चीज भी नष्ट हुई, तो तुम्हें सारी नुकसानों भरती होगी।’

अन में, पर रहते हुए जिन विषयों पर अस्मर ही तूल राखा हो जाता था, उनमें उसने पिता को बार-बार सावधान कर दिया। भोजन के मामले में अनियम का उन्हें सागा अभ्यास था। कुछ विशेष प्रकार के अपघ्न्य भोज्य पर उन्हें विशेष आसर्पण था। पिता को उन साथे प्रलोभनों में यथासम्भव दूर रखना लड़की का एक ग्याम काम था। इसीसे आज वह उर्द्विगन होकर उनका हाथ घामदार धोती—‘आबूजी मेरी एक बात गये?’ पिता ने हँसकर कहा—‘आदमी इसीलिए प्रतिज्ञा करता है कि, एक दिन उसे नोडरर चैन ही माता के सके। इसमें प्रतिज्ञा न करता ही बेहतर है।’

पिता के चडे जाने पर बेटा ने समरे का द्वार बंद कर दिया। धाद की घटना अनर्थाभी ही जानते हैं। धाद-बेटा की अश्रुहीन विदाई का दृश्य रंगत के समरे

की चिर-चौतहलो अत पुरिकाओ ने देखा, सुना और टिप्पणी की—“नैसी अजब बात है भला ! ऐसे-सूखे देश में रहते-रहते इन लोगो के दिल भी सूखकर काठ हो गये हैं। भाया-भमवा का लेश भी नहीं रहा। राम राम !”

मेरे स्वमुर के मित्र बनमाखी बाबू ने ही हमारी बातचीत पक्की की थी। वे हम लोगो के घराने से भी खूब परिचित थे। मेरे स्वमुर से बोले—“लडकी को छोड़कर तो दुनिया में तुम्हारा कोई नहीं है। यहाँ इनके नजदीक कोई मकान केवर जिंदगी के बाकी दिल निकाल डाली।”

जवाब मिला—“जब दिया है, तो नि शेष करके ही दे डाला है। फिर लौट-लौटकर तामने के जी को पीडा ही होगी। जिस अधिकार को एक बार त्याग चुका, उसे बार-बार घनाये रखने की कौशिस से बढ़कर बिडम्बना और क्या होगी ?”

अत में भुझे निराले में ले जाकर किसी अपराधी की तरह दुविधा करते हुए बोले—“विटिया की बिठावे पढ़ने का बड़ा शौक है और लोगो को मिलाते-मिलाते उसे बहुत भला लगता है। लेकिन इसके लिए समझौती का परेशान करते अच्छा नहीं लगता। अगर बीच-बीच में तुम्हें रुपये

मग दिया कहें, वो इससे वे नाराज तो नहीं होंगे ?

सुनकर मुख बरा साज्जुव हुआ। कारण जिंदगी में कभी किसी भी तरफ से अर्थ समागम होने पर पिताजी नागज हुए हो, उनका ऐसा विगडा मिजाज तो अपने जाने मैंने कभी नहीं पाया। जो हो, मेरे स्वमुर मानो मुझे रिश्तत दे रहे हो, कुछ ऐसे ही भाव से मेरे हाथो की रपथ का एक मोट धामकर, वे वहाँ से चटपट चल दिये। मैंने देखा, इस बार जेब से हमाल निकलने की वारी आही पहुँची। स्तब्ध होकर मैं बिचारो में सो गया। मैंने अनुमन किया कि, ये सोण बिल्कुल अन्य जाति के मनुष्य हैं।



रखली
[चित्र. दामिनी राव
के एक रंगीन चित्र
की रेखानुकृति]

अपने मित्रो में कितनी ही को तो विवाह करते देखा है। विवाह मन्त्रो के उच्चारण के साथ-ही-साथ स्त्री को एकबारगी गले के नीचे उतार लिया करते हैं। हजम

करने के यत्न तक पहुँचने पर थोड़ी ही देर बाद यह पदार्थ अपने नाना गुण-अवगुणो को हर वर सखता है और इसके परिणाम स्वरूप भीतर पिताजन्य हलबल भी शुरू हो सकती है। सो होती रहे। लेकिन निगलने के रास्ते में इससे कोई रुबावट नहीं पड़ती।

किन्तु मैंने विवाह-मठ में ही भलो-

मोति समझ लिया था कि, पाणिग्रहण के मन द्वारा जिसे पाया जाता है, उसमें घर-गिरिस्त्री तो चल जाती है लेकिन प्राप्य का पदर आना पाना वाकी ही रह जाता है। मुझ मन है कि दुनिया के अधिराज आदमी स्त्री का डीर छीन पाते हैं। वे स्त्री का व्याह कर आते हैं, लेकिन उपलब्ध नहीं करते, और न वही जान ही पाते हैं कि, उन्होंने पाया कुछ भी नहीं। उनकी स्त्रियों भी मुखवाला तब इस समय में अवगत नहीं हो पाती। बिल्कुल मने स्पष्ट अनुभव किया था कि, वह मेरी साधना का धन है। यह सम्पत्ति नहीं, सम्पद है, आगम रत्न-राशि।

धनम, नहीं इस नाम में काम नहीं चलेगा। एक तो यह कि, वह उमका वास्तविक नाम नहीं, और न यह उमका यथार्थ परिचय ही है। वह तो सूर्य की तरह ध्रुव है, धनशालीन जग का विदा-बेला के औसुओं की घूँट नहीं। नाम का छुपाकर ही आगिर क्या होगा? उमका असल नाम था . . . हेमती।

मने देगा, मगर यथ की इस गटकी पर योयन का गारा आधा विमर हुआ है। तब भी निशोरसम्भा की गोद में वह अब तब जागी नहीं है। पर्वत के बर्षानी शिखर पर मुरह का उजाग ता शर उठा है, लेकिन हिम अभी नव गड नहीं पाया है। बंगी अवलुप शुभ्र है वह, बंगी निरिड पवित्र, यह में ही जानना है। मने मन में उगम यह गटका ग्या नवनीत

हुआ था कि, इतनी बड़ी पट्टी-लियो लडकी का मन मालूम नहीं, क्यों-कर पाउगा। लेकिन कुछ ही दिनों में मने जान लिया कि, उसके मन की राह और पट्टी-लियो की राह आपस में नहीं बटी ही नहीं है। अब उसके सहज शुभ्र मन पर हलकी-सी रगानो दौड गयी, आदों में अदस तडा छापी और देह मन मानों उल्लुप हो उठे, मो स्थिर भाव में वह पाना मेरे लिए कठिन है।

यह तो हुई एक पल की धान, बिल्कुल दूसरा पल भी है। वह और उसके धारे में विस्तृत रूप में बहने का समय अब आ पहुँचा है।

मेरे ध्वगुर राज-दरबार में काम करत थे। अतएव उनकी वितनी दौग्न धन में जमा है, इस सम्बन्ध में जनश्रुति ने बहुत तरह के अनुमान बिछाये थे। इनमें से कोई भी सम्भा लाल के आरुओं में नीचे नहीं पड़ती थी। ब्रह्मरूप एक तरह पिता के प्रति सम्मान करता गया, तो दूसरी ओर धेटी के प्रति दुःख। हमारी घर-गिरिस्त्री का काम-धंधा और तोर-तरीका योगने के लिये हेम बगवत मूव उल्लुप थी, लेकिन मो ने उगे लपट के मारे बिगी काम में हाथ भी नहीं लगाते दिया। यहाँ तब कि, घर में हेम के माघ जो पहाड़ी महरी आयी थी, उगे उन्होंने यद्यपि अपने बमरे में नहीं घुमने दिया, फिर भी उमकी जान-पान के बारे में कोई धान नहीं उठायी। वे डरती थी

कि, तहकीचात करने पर वही कोई
अप्रिय सत्य न सुनना पड़े।

दिन इसी तरह बट जाते। विन्तु
एक दिन पिताजी का मुँह घोर मेघाच्छन्न
दिखायी दिया। बात यह थी कि, मेरे
विवाह में स्वमुर ने पंद्रह हजार रुपये
काद और पांच हजार के जेवर दिये थे।
इसपर पिताजी का अपने किसी दलाल
मित्र की कृपा से पता
चला है कि, यह समूची
रकम बर्ज करके जुटायी
गयी थी, जिसका ध्याज
भी कुछ मामूली नहीं
था। और लाख रुपये
की अपनाह तो बिल्कुल
उदाई हुई ही थी।

अथपि मेरे विवाह के
पूर्व-समुर की सन्पत्ति
के परिमाण के विषय
में पिताजी ने कभी उनसे
कोई आलोचना नहीं की
थी, तब भी ज्ञान
किस तर्प पद्धति से आज
उन्होंने यह बिल्कुल पक्का

ठहरा लिया कि, उनके समधी महाशय ने
उसके साथ जान-बूझकर ही यह धोखा
रोला है। इसने अतिरिक्त पिताजी की वह
भी धारणा थी कि, मेरे स्वमुर राजा के
प्रधान मंत्री वन्नी अथवा उसी जाति के
किसी पद पर प्रतिष्ठित हैं। पीछे जाना
गया कि, वे वहाँ के शिक्षा विभाग के

अध्यक्ष हैं। पिताजी ने टीरा की-अर्थात्
स्वूल के हेडमास्टर, दुनिया में जितने
भी भद्र पद हैं उनमें सबसे ऊँचा। पिताजी
न बड़ी-बड़ी उम्मीद बाँध रखी थी कि
आज नहीं तो कल, स्वमुर के अवकाश
ग्रहण करने पर राजमन्त्री के पद का वे
स्वयं ही सुसोभित करेंगे।

इन्ही दिना के कात्तिव महीन में
रासलीला के उपरान्त
में हमारे देश का
सारा दुनरा चलकतेगा
पर म आ जुटा। कन्वा
को देखते ही उनमें एक
छर से दूसरे छोर तक
रानापुत्री की लहर दौल
गयी। कपडा वह अस्पृष्ट
हुई। दूर के रिश्ते की
किसी नाभी न फरमाया
—'आम को मेरे नसीब
को, नहीं यह न तो उमर
में मुझ भी हरा दिया।'



वट पूर्ति के हेतु

[चित्र भी देशीप्रसन्न राव
चौधरी के एक रंगीन चित्र
की रेखानुकृति]

हम अगर न हरावेगो, तो हमारा लज्जा
परदेस से बहू लाने ही क्यों जायगा ?

मैं न खूब तेजी के साथ जवान दिया—
'मैंवा रे, यह भला कंसी बात हुई ?' वह
ने तो अभी धारह पूरे नहीं किये, परों
अगले फाल्गुन में बारह में पाद परेगी।
पछहुको देस में दान रोटी खा-खा कर

बड़ी हुई है कि, नहीं ? सो दूर जरा ज्यादा समझ गयी है ।”

नानियों ने शाल अविश्राम के साथ कहा—“सो बिटिया, इनकी समझ तो हमारी नजर अब भी नहीं हुई है । हमारे जान लड़की-सालों ने जल्द उमर कुछ बढ़ाकर बनाई है ।

मौ बोली—“हम मांगों ने जन्मपत्री दी है ।”

“यान मच है, लेकिन जन्मपत्री में ही तो प्रमाणित होता है कि, लड़की की अवस्था मच है ।”

प्रसन्नताओं में कहा—“मौ जन्मपत्री में क्या घोना-घड़ी चढ़ती नहीं ?” इस बात पर धोरा बहाना छिड़ गयी । यहाँ तक कि, तारार की मोमल आ पहुँची । उगी समय यहाँ हम आ पहुँची । रिहरी नानी ने उगीने पूछा—“बढ़गनी, तुम्हारी उमर क्या है बताओ तो मच ?” मौ ने धोंगों में गैर किया ; लेकिन हम उसका मतलब नहीं । मचमी बोली—“मच है ।” मौ बेंचन होकर बह उठी—“मुझ माचूम नहीं है ।” हम बोली—“माचूम है । मेरी उमर मच है ।”

नानियों ने गुपचुप एड-डूमने के हाथ लगाये । बड़ की मूर्खता पर मोमल मौ बोली—“तुम्हें तो मच माचूम है । तुम्हारे बाजूजी ने हमारे गुरु कहा है कि, तुम्हारी उमर मच है ।” मुनका हम चीर उठी, बोली—“बाजूजी ने ? कभी नहीं ।” मौ बोली—“तुमने तो ईशान कर दिया ।

समझी गुरु मेरे सामने बह गये और बिटिया बहती है, कभी नहीं ।” यह कहकर मा ने धोंग में फिर गैर किया । अब की बार हम दगारा समझ गयी । किन्तु उमने बछम्बर को और भी दूढ़ करने कहा—“बाजूजी ऐसी बात कभी यह ही नहीं सकते ।”

मौ ने आवाज को जग दगारर कहा—“तू मुझे झूठा ठहराना चाहती है ?” हम ने कहा—“बाजूजी तो कभी झूठ नहीं बोले ।”

इसमें बाद मौ जितना ही बचने-छरने लगी, गियाही उननी ही छहर-उपर बुलब कर मचने एकरार लीपने पोलने लगी । मौ ने नाराज होकर पिताजी के निरुध धननी पनोद की मूला और उसमें ज्यादा बिद की शिवायत दायर की । पिताजी ने हम को बुलाकर घम-बाने हुए कहा—“इनकी बड़ी अनध्याही लड़की की अवस्था मच करग की थी, यह क्या बोटें बट्पन की बात है, जो उमरा दिदोरा पीटनी फिरोगी ? हमारे घर में बट मच नहीं बनेगा, बट देना है ।” हाथ ने माम्, बहगनों के प्रति पिताजी का बट मधु-मभिन्न पचम स्वर इस तरह उम्माद बाक्यों के धोर पदज तक बने उतर आया ।

हम ने व्यथित होकर पूछा—“अगर कोई उमर जानना चाहे, तो क्या बताऊँगी ?” पिताजी बोले—“झूठ बोले की जरूरत नहीं । बह दिया करो, मुझे नहीं माचूम,

अपने बालों को और भी अधिक तरंगित बनाइये !

लहरिया बाल सभी को अच्छे लगते हैं। अपने बालों को गाढ़े और भारी तेल द्वारा चिपकाइय नहीं। टॉम्को के सुगन्धित नारियल के तेल का इस्तेमाल कर अपने बालों की प्राकृतिक तरंगों को विवर्धित कर लीजिये। यह हल्का और विस्तृत तेल इन तीन मोहक सुगन्धों में मिलता है—चमेली, गुलाब और लंबेण्डर।

२५ से भी अधिक वर्षों से भारत का लोकप्रिय हेयर ऑइल ।

सप्ताह में एक बार अपने बालों को टॉम्को द्वारा निर्मित नारियल के तेल के शैम्पू से धोइये। यह बालों को कोमल और प्राकृतिक रूप से तरंगित रखने में मदद पहुँचाता है।



टॉम्को द्वारा निर्मित बालों के लिए सुगन्धित
नारियल का तेल और शैम्पू
टाटा ऑइल मिल्स

गुवागियर रेयन प्रिन्टर

अत्युत्कृष्ट गुणवत्ता वाले प्रिन्टिंग



क्रेप प्रैन्
क्रेप प्रिन्ट

जार्जेट
साटिन
चेक साटिन

शार्क स्किन
बेबी शार्क स्किन
पिग स्किन

शॉट्टिंग

और

बनाया प्रकार की सूटिंग

सब बड़े शहरों की दुकानों पर प्राप्य

मैनेनिंग एनेदस

विडला एक्सो गुवागियर गुवागियर

मेरी सास जानती है।" इसके बाद झूठ किस तरह बचाया जाना है, इसका सारा उपदेश सुनने के पश्चात्, हमें कुछ इस तरह सामोश हो गयी कि, पिताजी को यह समझना बाकी न रहा कि, उनका सारा सदुपदेश विलुप्त उल्टे घड पर पानी की तरह पडा।

हम की दुर्गति पर दुःख क्या प्रकट करे, उसके आगे तो मेरा सिर ही नीचा हो गया। मैंने बेला, शारदीय प्रभात के आकाश की तरह उसकी आँखों की वह सरस उदार दृष्टि मानो किसी मशय की छाया से म्लान हो उठी। भीत हरिणी की तरह मानो उसने मेरे मुख की तरफ ताका और सोचा, मैं क्या कहूँ नहीं पहिचानता।

उस दिन मैं एक मनोरम जिल्द बंधी हुई अंग्रेजी कविताओं की पुस्तक उसके लिये खरीदकर लेता आया था। उसने कितना अपने हाथों में बांधी, फिर धीमे से गोद में रख कर एक बार भी खोलकर नहीं देखा। मैंने उसका हाथ अपने हाथों में लेकर कहा—'हेम, मुझपर नाराज न होना, मैं तो तुम्हारे सत्य के वधन में

बधा हुआ हूँ। सुनकर वह कुछ न बोली, केवल तनिक सी हँस दी। विधाता न बंसी हँसी जिसे दी है, उसे और कुछ भी बहने की जरूरत ही क्यों ?

इधर पिताजी की आर्थिक उन्नति के बाद कुछ दिनों से विधाता के उस अनुग्रह की चिरस्थायी वर रखने की गरज में

हमारे यहाँ नये उत्साह से पूजा पाठ

पूजा आरंभ

पूजा न आरंभ, न पूजा न आरंभ

पूजा न आरंभ, न पूजा न आरंभ

पूजा न आरंभ, न पूजा न आरंभ

पूजा न आरंभ, न पूजा न आरंभ

पूजा न आरंभ, न पूजा न आरंभ

पूजा न आरंभ, न पूजा न आरंभ

पूजा न आरंभ, न पूजा न आरंभ

पूजा न आरंभ, न पूजा न आरंभ

पूजा न आरंभ, न पूजा न आरंभ

पूजा न आरंभ, न पूजा न आरंभ

पूजा न आरंभ, न पूजा न आरंभ

चल रहा था। आज

तब पूजा-अर्चना में

घर की बहू की पत्नी

बुलाहट नहीं हुई।

आज अचानक तभी

बहू की पूजा का बाल

सजाने का आदेश

मिला। वह बोली—'मैं

मुझे समझा दो, कैसे

क्या करना होगा ?

प्रश्न कुछ ऐसा

न था, जिसे सुनकर

चिन्मी बेसिर आसमान

टूट पड़ता, क्योंकि

यहतो सब लोग भली

भाति जानते थे कि, मातृहीन लड़की प्रवास में ही बड़ी हुई है। तब भी इस आदेश का आशय तो केवल हेम का लज्जित करना ही था। सा सभी ने गाल पर हाथ धरकर कहा—'हाथ रे, यह भला बंसी बात है। आखिर किस नास्तिक के घर की लक्ष्मी हैं ? बहू, घर की लच्छमी अब इस गिरिस्त्री के विदा होने ही वाली है।

देरी मत समझना"। और इसी प्रसंग में हमें वे पिता की लक्ष्य करके जाने वित्तनी अपयत्ननीय दाते बड़ी गयी। बटूकियों की हवा जगमे वहना शुरू हुई थी, तब से हमें आज तक बराबर चुप रहकर सब बर्दाश्त करनी आ रही थी। सभी पल भर में गिरा भी उसने किसी के सामने आगे नहीं छापायी। लेकिन आज तो उसने बड़े-बड़े नामों का ज्वाबित करती हुई जामुओं की छडी-सी दग गयी। वह खड़ी राबर बाल उठी—“आपको मालूम है, यहाँ मेरे बाबूजी का सब लोग श्रुति मानते हैं।”

श्रुति मानते हैं, मुनवर सब लोगों ने पेट भरकर हँस लिया। इस घटना के बाद जब उसने पिता का उत्प्रेष करना हाता, तो सब लोग यही कहते, तुम्हारे 'श्रुति पिता'। इस लट्ठी की रायने मर्म की जगह बोल सी है? हमें हमारे यहाँ सबने अच्छी तरह जाच लिया था। दरअसल मेरे दमुर ब्राह्म भी नहीं थे, न विस्तार, और बहुत बरने नास्तिक भी नहीं। पूजा-आठ की बात सभी उनसे ध्यान में ही नहीं आयी। लट्ठी को उन्होंने बहुत पढ़ाया था, गुनाया था, बिलु भगवान् के मरथ में सभी कोई उपदेश नहीं दिया। दर्जी सिलसिले में पूछने पर उन्होंने इतना ही कहा था—“जिस विषय को मैं स्पष्ट नहीं जानता, उसे गिरालाना केवल बपट ही होगा।”

अल पुर में हमें की एग मचमुच की नयनीत

भक्तिन थी, मेरी छोटी बहिन नारायणी। वह अपनी भाभी की प्यार करती थी, इससे लिये उगे बाकी टाछना सहनी पड़ती। घर में हमें वे अपमान की बहानी मुझे उसीमें गुनने को मिलनी थी। हमें वे मुह में सभी किसी दिन कुछ भी गुनने को नहीं मिला। मबोच के बारे यह सब उमरे मुह में सभी निलयता ही न था। मबोच अपने लिये नहीं, मेरे ही लिये था। पिता के पास में वह जब जो चिट्ठी पानी, मुझ पढ़न के लिये देती। ये चिट्ठिया छोट्टी होने पर भी रग के भरपूर हानी। वह स्वयं भी जब उन्हें कुछ लिखती, तो मुझे जरूर दिखाती। पिता के साथ उमरा जो नाता था, उममें अपने साथ मुझे भी बराबर-बराबर साथी बनाये बिना उमका दाम्पत्य पूर्ण जो नहीं हो पाता। उसकी चिट्ठियों में सगुराल के सम्बन्ध में किसी तरह की गिवायत का आभास भी न होता। यदि होता तो रगने की मनावना थी, पारण बहिन में मैंने गुन दिया था कि, जाच के लिए बीच-बीच में उमकी चिट्ठिया खोनी जाती है। इन चिट्ठियों में उमका बोर्ड कुमूर साबित न होने में ऊपरवालो का मन दात हो, सो नहीं। बन्वि उम्मीद टूटने का दुग ही नायद उन्हें ज्यादा टीमा करना था। अतएव बेहद चिड़पर उन्होंने वहना शुरू किया—“आगिर इतनी जर्दी-जल्दी चिट्ठिया लिखने की ही मला बीतमी जम्बरन है? मानो माप

ही सन कुठ हैं। हम लाग क्या काई नहीं?" और इसी सिलसिले में अश्वि बाना का साना शुरू हो गया। मैं मुन्ध होकर हेम से बहा—'तुम पिताजी का जो चिट्ठी लिखती हो, उसे और किसी का न देकर मुझे ही दे दिया करा, बाग़िज जाते हुए राह में छोड़ दिया बरुगा।

बकित होकर हेम न पूछ—'क्या? मैंने राज के बारे में जवाब नहीं दिया। किंतु घर में सज्जन बहना आरम्भ किया कि, अज लटके के सिर चढ़ना शुरू हुआ है। वो ए की शिरो अज तान पर रखी रहेगी। आखिर उस बचारे का भला दोष ही क्या है?

सा तो है ही। दाप अगर किसी का है, तो वह हेम का ही हो सकता है। उसकी उम्र सप्तह्र वरस की है, यह उसका पहला दोष है। मैं उसे प्यार करता हूँ, यह भी उसीका दोष है। विधाता का विधान ही ऐसा है, यह भी हेम का एक दोष है। इसीलिए तो मेरे हृदय के रघु रघु में समस्त आकाश इस तरह वासुकी की तान साधे हुए है।

धी ए, की टिप्री को परम निर्विकार भाव से मैं झूलूँ म पूव सकता था, लेकिन हेम के कल्याण की खातिर मैंने प्रण किया कि, मैं जहर पाम होऊँगा और अच्छी तरह ही पास होऊँगा। दो कारणों से मुझे अपनी प्रतिज्ञा पूरी कर पाने का पूरा भरोसा था। एक तो हेम की प्रीति में कुछ ऐसा आनन्दब्यापी विस्तार था कि,

वह मन का सजीव आसक्ति में अटकावर नहीं रहनी। उस प्यार के आसपास काई मूव ही स्वास्थ्यरग हवा बहा करती थी। दूसरे इम्तिहान की विताय कुछ ऐसी थी जिन्हें हम के साथ माय पढ़ना अमभव न था। सा में बमर बसकर परीक्षा पार करन के उद्योग में जुझ गया।

एक राज नविवार की दोपहर का बाहर न बमर म बंटा हुआ मैं मार्टिन की आचार साम्प्रदायकी पाथी की दास खास पक्षितवा न मध्यपथ को चीरते हुए लाज नीली पन्निन का हल चगाए जा रहा था कि, अचानक सामन की तरफ मरी नजर जा पड़ची। बमर के सामन आगन के उत्तर की तरफ अत पुर का जान के लिये एक जीना था। इसी बंद जीने में बाहर की तरफ मीलवेदार सिडकियो थी। मैंने देखा, हम उहीम किसी खिडकी के पास पच्छिम की तरफ तारती हुई गुमसुम बंटी है। उस आर मल्लिको की बगिया है, जिसमें बचनार का पेड गुलाबी फुला से सिर-मे-गैर तब लदा लदा है। इस भापाहीन गहरी पीडा के रूप को आज तब इतन मुस्पष्ट भाव से मैंने नहीं देखा था। दास कुछ भी नहीं, अपने बमरे मे से विचित्र पीछ की आर शीवार के गहारे टिके उसके सिर की भगी माय देख पा रहा था। मेरा अपना जीवन इस तरह लबाएव भर उठा था कि, वहाँ किसी प्रकार की भी काई शून्यता मैंने आज तब लख ही नहीं की

थी। आज अचानक अपन त्रिलुल हो पान मेंने किनी वृत्त निराशा का अधा गड़ा देखा था। इस तरहोंने गह्वर का मैं क्योंकर, बाहें-में भर सजूया? मुझे ना जीवन में कुछ भी त्यागना नहीं पड़ा। न घर, न द्वार और न आज तक का कोई अय्यास ही। किन्तु हम को तो सभी पीछ छाड़कर और दूर टेम्बर ही मेरे पाम आना पड़ा इसका परिमाण कितना अधिक है, मा मेंन बभी भली-भौति माया भी नहीं। हमारे घर में अपमान का काटा की मेज पर वह बैठी है। उस का हमने आपन में बोट लिया है। उस पीड़ा में हम दानों एक-दूसरे में युक्त थे, उसन हमें न्यारा नहीं किया। किन्तु पहाड़ों में पली हुई यह गिगिनन्दिनी सबह वर्ष की सबी अवधि तक अपने बाहिरी और भीतरी जीवन में बभी विगल युक्ति के बीच पड़ी है? कैसे निर्मल नय और उदार आलाप में उनकी प्रवृत्ति हम तरह श्रुज, शुभ और मरत हो उठी है? उम समूचे वैभव में आज हम का नाना विस तरह निरतिशय और निष्ठुर रूप में तोड़ दिया गया है, इस बात का पूरी तरह आज में पहले मेंने बभी अनुभव ही नहीं किया था। कारण उस जगह हम के साथ मेरा आसन धराजरी में नहीं था। वह तो भीतर-ही-भीतर पत्थरल निर-तिर बरके मृत होनी जा रही थी। उसे मैं सब दे सताया; लेकिन मुक्ति नहीं, मुक्ति मेरे अपने ही अंतर में वही है? इगोयि बन्धन को इस सारी गरी

म पिडकी की तीलिया के भीतर से भूख आवास के साथ उसके भूख की भी बातचीत हुआ नरतो। किसी दिन अचानक रात को उठकर मेंने देखा, वह बिठाने पर नहीं है। हमो पर तिर की धामकर तारो से भरपूर आवास की आर मुह उठाये वह छत पर लेटी है।

माटिनो का चरित्रत्व वहाँ पड़ा रह गया। मैं सोचने लगा कि, मेरा वर्तव्य क्या है। बचपन से ही पिताजी के साथ मेरे सम्बन्ध में गकोच की सीमा नहीं थी। आम्ने-मामने सबे होकर बभी उतने किसी चीज की दरन्दास्त कर सकने की न तो मेरी आदत हो थी, न हिम्मत ही। लेकिन आज मुझमें रहा नहीं गया। राज-दारम को तब पर धरकर मैं उनगे वह बैठा—“उसकी तबीयत कुछ अच्छी नहीं है, न हो एक बार पिता के यहाँ भेज देना अच्छा होगा।”

गुनकर पिताजी का हनुर्बुद्धि हो गये। उनके मन में इस बात का तनिक भी मदेह न रहा कि, हेम ने ही मुझमें यह अमृतपूर्व होमला उरमाया है और मिला-बडाकर दरबार में भेजा है। वे बटपट उठकर अत पुर में गये और हेम से पूछा—“मैं बहूँ, वह, तुम्हें क्या बीमारी है, बताया तो मग?” हम बोली—“बहो, बीमारी-बीमारी तो कुछ नहीं है।” पिताजी ने गाचा, जवाब तेज दिवाने के लिये है। लेकिन हेम की देह का प्रतिदिन मूयनी जा रही थी, मा राजमरी देगते रहते के

कारण हमलोग समझ भी नहीं पाते थे। एक दिन अचानक बनमाली बाबू ने उसे देखा, तो चौंक पड़े। वे बोले—“ऐं, यह क्या ? तेरा मुँह यह ऐसा-नंसा हो गया है ? हेमी ! बीमार तो नहीं है ?” हेम ने कहा—“नहीं, ” लेकिन इस घटना के बाद दस-दस दिन के भीतर ही, न बात, न चीज, अचानक मेरे समुद्र आ पहुँचे। अबश्य ही बनमाली बाबू ने हेम की तबीयत की बात उन्हें लिख दी होगी।

विवाह के बाद बाप से विदा लेते समय लड़की ने अपने आँसू रोए लिये थे। किन्तु आज जैसे ही उन्होंने उसकी ठोड़ी छूकर मुँह ऊपर को उठाया कि, हेम के आँसुओं ने सब दरजना जैसे एकबारगी भुला ही दिया। पिता के मुँह से भाषी बात भी न निकली। वे इतना भी न पूछ पाये कि, तू कैसी है ? लड़की के मुँह पर उन्होंने ऐसी बात देखी कि, उनकी छाती टूकटूक हो गयी। हेम पिता का हाथ पकड़कर उन्हें सोने के कमरे में लिवा ले गयी। बितनी ही बातें तो पूछने की हैं, पिताजी की तबीयत भी तो ठीक नहीं जान पड़ती।

हेम अपने पिता के साथ जाने को तत्पर हो गयीं। बनमाली बाबू ने भी समझी से इस बात का संकेत किया, किन्तु अन्ततः बात मेरे पिता की रही और हेम अपनी आकांक्षा पूरी करने से बाज रह गयी।

पिता पुत्री की विदा का मुहूर्त एक बार फिर आ पहुँचा। बटी न हँसते हँसते ही मर्तना के गुर में कहा—‘बाबूजी, अगर फिर कभी तुमने मेरे लिये पागल की तरह बेतहाश दौड़ते हुए इस घर में पौव रखा, तो मैं दरवाजा बंद कर लूंगी। पिताने भी हँसते हँसते ही कहा—‘अगर फिर कभी आया, तो साथ में सेप लगाने के आँजार भी लेता आऊँगा।’ इसके बाद हेम के मुँह की हमेशा की वह स्निग्ध हँसी फिर कभी देखने को नहीं मिली।

फिर क्या हुआ तो मुझसे कहा नहीं जायेगा।

सुनता हूँ, मैं फिर उपयुक्त पात्री की तलाश में हूँ। शायद किसी दिन मैं के अनुरोध की अवहेलना मुझसे न हो सके यही संभव है, क्योंकि खैर, खैर, छोड़िये भी उन बातों को !

★

एक मिनट की महिमा

एक वैज्ञानिक ने हिसाब लगाकर बताया है कि, सप्ताह में प्रति मिनट— ५४४० घन्चे पंदा होते हैं, ४६३० आदमी मरते हैं, लोग ८३५००० प्याले चाय-नाँफी पीते हैं, १२७० टन तम्बाकू सिगरेट आदि के रूप में स्वाहा करते हैं, तथा ११७०० पत्र और १९१७ तार भेजे जाते हैं। —आनंद

★

हृदयवान

★

यूरोप के एक बलाघार हैं, पिनासो! समझा जाता है कि, वे घोर अहंवादी व्यक्ति हैं, जो जन साधारण तब पहुँचने का विस्तृत प्रयास नहीं करते। किन्तु वास्तविकता कुछ और है। नाज़ी-अन्याय की विभीषिका उनके 'गुजर-निरा' नामक प्रसिद्ध विषय में इतनी सजीव हो उठी है कि, कोई भी धन्यना प्रवण व्यक्ति उसे देखकर गिना सिद्धे नहीं रह सकता। नाज़ी स्टूटेरे जय पिनासो की चित्रशाला में घुमे, तो वहाँ उन्होंने वह चित्र पाया। गुस्से से बौफते हुए उन्होंने पिनासो से पूछा—“म्या यह तुम्हारी करतूत है?” “नही तुम्हारी—”



पिनासो

पिनासो ने निर्भीकता से उत्तर दिया।

किन्तु अन्याय के अममूख सदैव बच-बन् पिनासो स्नेह के म्यला पर गहदय

भी नितन ह। जरा इस घटना को देखिये। एक बार पिनासो के एक बहुत प्रिय शिष्य का विवाह हुआ। बर-बधू का सरने कुछ-न-कुछ भेंट दी, किन्तु पिनासो ने कुछ भेंट नहीं दिया।

सत्र की आश्चर्य भी हुआ। किन्तु जब बर-बधू गिरजे के बाहर निकले, तो पिनासो उन्हें मोटर पर लेकर एक मये मकान पर पहुँचे। “यह तुम लोगों के रहने के लिए एक ‘कॉन्ट’ हैं”—बहुकर उन्होंने जो ताला मोला और बर-बधू अंदर गये तो आश्चर्य-चकित रह गये।

प्रयोग दीवार पर पिनासो की तूलिका के अम्य चमत्कार अंकित थे। वह ‘कॉन्ट’ उन्होंने बुधने-बुधने अपने प्रिय शिष्य और उसकी बधू के लिए तैयार किया था।

—अनंतनुमार ‘पापाण’

★

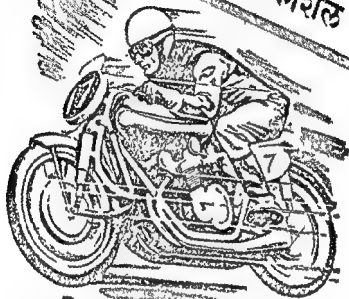
अमणित जिहाएं

—साधु को एक जीम रहती है, सर्प को दा, ब्रह्मदेव को चार, अग्नि को सात, वातिरोप स्वामी का छ और रामन को दस, घोष का दो हजार जीम रहती हैं; पर दुर्जन-मुग में रहने वाली जीमों की संख्या अनगिनत है—भी, हजार, लाख या बराह-बाई कुछ नहीं वह मन्ना।

—गुमापित

★

रोमाञ्चपूर्ण कौशल



के फटे न
दूसरों से मीलों आगे
क्यों न केपस्टेन खरीदें
इसका मिश्रण अच्छा है



बाल भारती

महें मुद्रों की सचित्र मासिका जिसमें सरल भाषा में प्रेरणादायक कहानियाँ, मोठो मोठो कविताएँ, उपयोगी खेल और रेखा-चित्र प्रस्तुत किए जाते हैं। वार्षिक मूल्य ४); एक प्रति 10)



आजकल

हिन्दी की इस सर्वप्रिय सचित्र मासिका में विचारपूर्ण खेल तथा विज्ञान कथावाचों और कवियों की कृतियाँ पाईएँ। 'आजकल' से समृद्ध 'विश्वदर्शन' में अन्तराष्ट्रीय विषयों पर निष्पक्ष खेल प्रस्तुत किए जाते हैं। वार्षिक मूल्य ६); एक प्रति 11)

प्रसारिका

(सचित्र प्रामाणिक)

'प्रसारिका' (रेडियो सप्ताह) मातामहाराजी के हिन्दी क्षेत्रों में प्रसारित उच्च कोटि की बुझो हुई कानाओं, कविताओं तथा कहानियों का प्रामाणिक सप्ताह है। सुन्दर गेट-अप की इस सचित्र पत्रिका का मूल्य ८ आता है। वार्षिक मूल्य २)



एक से एक उत्तम

इसके चरमुरेपन से पहले ही आपको मालूम हो जावेगा कि ब्रिटैनिया विस्कुट रास तरह के हैं, उनका सानी नहीं। य विस्कुट विशेषतः बनाते हैं और ऐसी सम्प्री से जिनकी विमुद्धता और उत्तमता पहले ही जांच ली जाती है। स्वादिष्ट तो होते ही हैं, साथ ही पुष्टिकारक भी। कच्चे बहुत पसन्द करते हैं आप भी वैशक पसन्द करेंगे।



ब्रिटैनिया विस्कुट
ब्रिटैनिया

BBX 23 M NO

हिन्दी डाइजेस्ट

गोंव - गोंव में...



ग्रामपालिनी भानुमाता की गृह-
लक्ष्मिया पिछले पचास वर्षों से
हमारे मिल में निर्मित सुन्दर और
टिकाऊ कपड़ों का व्यवहार करती

आ रही है। गोंव की धर्म संलग्न
दिनचर्या के लिए, धातुय में, इससे
अधिक विफायती और मजबूत
कपड़ा अयन सुलभ नहीं है।

गुल गोंव काटन सिस्स लि.

गुल गोंव (मध्यप्रदेश)

५९ अक्टोबे १९३३, बम्बई



मेरिठा एनेरा

श्री हरदयाल सन्ता

ચેમ્પિયન કાઉન્ટેન્સ

(રજિસ્ટર્ડ)



- * ચેમ્પીઅન એડમાર્સલ
- * ચેમ્પીઅન ૧૦૧
- * ચેમ્પીઅન ૧૦૫ હીલ્સ
- * ચેમ્પીઅન ૧૫૧
- * એવરક્ષાર્પ ટાઇપ ૧૨૧
- * ચેમ્પીઅન ૧૦૨-૧૦૩
- * એરોમેટીક પેન્સિલ

મેનુફેક્ચરર્સ —

ગુજરાત ઇન્ડસ્ટ્રીઝ

શાલજી માનસિંહ વિલ્ડિય, હેદાર ચાઉ ગમ્દઈ-૨

प्रभात

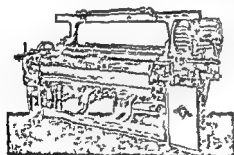
विकास का प्रतीक



संस्कृत ज्ञानपीठ
स्वयं श्रमो ज्ञानपीठ



प्रभात **प्राइवेट लिमिटेड**
प्राइवेट लिमिटेड



भारत में तैयार
निये गये इन
'टेक्समेकी'

बायोमेट्रिक लूम
से मुद्र, धातु-
विनिर्माण कपड़ बने
जाते हैं। मशीन
के विभिन्न भाग

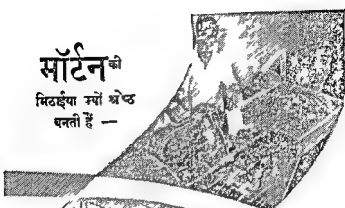
इस मशीन और तरंगों के द्वारा यह है कि, भारतीय धर्मिक इन कपड़ों
को बिना किसी दिकार के बना सकते हैं। हमारी फाब्रिक हमारे डिजा-
इनिंग तकनीक में बनाने और विभिन्न धारापिचन टेक्समेटिकल
और इन्वेंचर नाम करत है।

इसके अलावा साद, सूती व रेशमी कपड़, डाना, ड्राप धातु, धातु
पटल व विभिन्न गिट्टी भी बनते हैं।

टेक्समेकी (म्यालिपर) लि., पो. निरुडानगर.

मॉर्टन की

मिठाईयां म्यो अष्ट
बनती हैं —



उत्कृष्ट सामग्री
आधुनिक मशीनें
शीट ताप विनियंत्रित कारखाना
जादूई स्वाद और स्वस्थ
कालावस्था
कुशल कारीगर

भारत की मिठाईयां
मदरे निराली

भारतीय उद्योग प्रदर्शनी कई दिनोंमें हुआ हमारे स्टाल नं० बी ७१ पर स्थापित
१९९ नवम्बरसे १९ दिसम्बर तक १९५५ तक

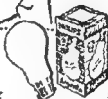
हिंदी डाइजस्ट



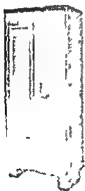
आपकी आंखों को
आराम देनेवाली बत्ती

**फिलिप्स
अर्गेण्टा**

जिसकी रोशनी मसमल-सी मुलायम है



PLX 39 MIN



सस्ते उद्योग विस्म, टिकाऊ और सर्वोत्तम
स्टील फर्नीचर
के लिए

श्री नोवेल स्टील प्राइवेट लिमिटेड

द्वारा निर्मित फर्नीचर पर भरोसा कीजिए

मुख्य कार्यालय व भौत

बली, बयर्-१८

टेलीफोन - ७३३३८-९

टेलेग्राफ-वायंग्रूफ

श्री स्व

१७, चर्चगेट

एटो

बयर् १

११८, बालक-

देवी रोड

बयर्-२



दोहरी

शक्तिवाला



मोबिलिटी

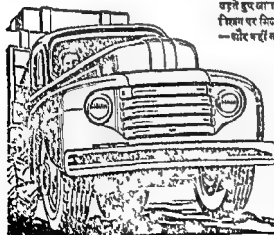
इस्तेमाल में लाइए और प्रति मीलन पर
ज्यादा से ज्यादा मीलों का फासला तय कीजिए !

आज के देशों में से दोहरी देश आपको सबसे ज्यादा
मागेज देता है। जाहिर है, बरी से सज्जा है जो आपको
गरी के इंजन को सबसे अच्छी तरह चलाए रखता है। और
आज देश है—दोहरी शक्तिवाला मोबिलिटी।
क्योंकि यह सिरी सुपर देश की तुलना में आपके देश
की अधिक क्षमताओं दिखाता है।

इस तरह आपका देश अधिक दूर तक चलाता है और
आपको दिखाएगा भी होती है। आपकी मोटरवाही या सारी
विशेषताएँ उसी वास्तविक दक्षिण तथा पूरी क्षमता के साथ

चला सकती है जिसकी आपका देश उतने चले है।

आज ही से अपनी गरी में दोहरी शक्तिवाला
मोबिलिटी लातेवाला बनना शुरू कीजिए। केवल यही एक
देश देश है जिसमें मोबिलिटी वायर सम्पादन शामिल है।
यह सम्पादन कई तन्त्रों (एडिपिज) का एक ऐसा दक्षिण
आती मिल है जो आपका सिरी देश में नहीं दिखाया
गया। इसका इस्तेमाल कर आप अपने में रहेंगे क्योंकि
मोबिलिटी आपके देश का ज्यादा से ज्यादा गुण
बढ़ा करता है।



उड़ते हुए जान छोड़ें के
चिह्न पर मिलता है
—और वहीं नहीं।



जो है आपको हर तरह दोहरी
शक्तिवाले मोबिलिटी की
तरीक करते हैं—आपका माग
है कि आप पूरी क्षमता
करता है और आप ही खुद
निराश्वरी भी है।

दोहरी-दोहरी शक्तिवाली (संगीत के साथों का दक्षिण सीमा 1)



नयना मिराम

संयुक्ती के कपड़ों का स्थान
सदस्य विनिष्ठ रहा है। 'बस्त्र
कुल' धोतियों, निरुद्ध स्पृष्टि प्रामाण्य,
धुली और रंगीन बायल, ताड़ियों,
बादलबेस्ट के कपड़ों, बादरों, प्रले एवं
रंगीन कपड़ों की लम्बे और कपड़ों के
रंगों की संयुक्ती की अपनी
विशेषताएं हैं।



संयुक्ती के कपड़ों का स्थान
सदस्य विनिष्ठ रहा है।
मेनेजिंग डायरेक्टर
विप्लवा प्रकाश सिंह





आपके अतिथियों
का प्रिय



जी० जी०

जैक्स

पेठा, केण्ड फ्रूट्स,
टमाटर सजीवनी

चाकलेट

टाफो मिठाइयाँ,
इत्यादि



जी० जी० इण्डस्ट्रीज

ग्रामान कार्यालय - भागदा

बारदावा :

रखदानी - बगलोर ४ - दिल्ली

हुकुमचंद जूट मिल्स लिमिटेड

(स्थापित १९१९)

राजोनगर, नईहाटी (६० रेल्वे), पश्चिमी बंगाल

सर्वोत्तम धेधे के हेरियन, धोरे, किरमिच, सम्बू, द्याइन, डेविन

तथा अन्य कन्वर्तों आदि के उत्पादक

मैनेजिंग एजेंट्स: रामचंद्र रामकिशनदास

प्रधान कार्यालय: बेंगलूर रोड, कलकत्ता-१

टेलिफोन:

बंक ११९५ (लाईस)

तार का पता:

JUTIFICIO, कलकत्ता



शंकार रेडियो पर स्वर का

माधुर्य निखर जाता है

मेटेयोर

मार. एम. ए., वार एम यू-
ए सी/रो सी वार एम सी-ड्राई
बैटरी सेट ६ वात्स बैट स्ट्रेड

उष्ण कटिबंध के लिए, पूर्ण
उपयुक्त तथा उत्कृष्ट सामानों
से बना हुआ शंकार रेडियो
वर्षों तक बिना किसी कष्ट
के काम देगा है

हमारे अन्य मॉडल: 'मार्बल' 'यो' 'एम' तथा सुपर-न्यू ए सी/ए सी/बी सी
तथा ड्राई बैटरी/इनके अनिरिफ ८ वात्स के बैट स्ट्रेड दोलक
रेडियोफोन भी उपलब्ध हैं

इंडियन प्रेस्टिजियस लिमिटेड

पोस्टल बिल, बान्द्रावली, बम्बई

बड़े दानेवाली सफेद चमकदार चीनी के लिए
प्रख्यात



श्री लक्ष्मीजी शुगर मिन्स क लि
मद्रासी

श्री अनुधिया शुगर मिन्स क लि
राजा का साहसपुर
मुरादाबाद

और
सर्वाधिक टिकाऊ
एव सरस्ती
शर्टिंग, कोटिंग, धोतियों
व
चादरों
के
लिए



अनुधिया लक्ष्मीजी शुगर मिन्स क लि मद्रासी राजा का साहसपुर मुरादाबाद



सपट
लोशन
दाद, स्वाज, खुजली पर

Manufacturers **SAPAT & CO.** Bombay 2

कलकत्ता स्टोकिस्ट : दोशी मेडिकल स्टोर्स
१७३, हरासन रोड कलकत्ता-७



मेहक सेल्युल के लिये
रेमी स्नो

रेमी स्नो सौन्दर्य में वृद्धि कर
त्वचाको कोमलता तथा पूर्ण की सी
तागमी प्रदान करता है।

ए. वी. आर. ए. एण्ड कं.
फर्म्बर्ड २-मद्रास १.

- मोहक
- रुचिकर
- तृप्ति-पूर्ण



आपके दैनिक भोजन भी
इस तरह के होंगे—
आप भी

वनस्पदा

वनस्पति में पकाइए,

बराबर आयात इंडस्ट्रीज—अहमदाबाद



शुद्ध चीनी

शरीर की प्रथम आवश्यकता
 चूनि का प्रथम के लिए हमारे घर को
 चूनि की जरूरत होती है। यह चूनि
 चीनी से हमें बड़ी सुगन्धता से मिल
 सकती है। किन्तु यदि चीनी शुद्ध न हो,
 तो वह हमारे लिए हानिकार हो सकती
 है। अतः हमारे लिए शुद्ध चूनि चाहिए।
 अतः प्रति-जल शुद्ध होता है। यही कारण
 है कि चूनि से लोग इसे ही पसंद करते
 या रहे हैं।

दी पोद्दार मिल्स लिमिटेड

बम्बई

—निर्माता—

कोरे ब्रिल, चादरे (शीटिंग्स), शर्टिंग्स, लुहा,
लेपर्ड, आदि-आदि

उत्तम किस्म और स्थायित्व के लिए प्रसिद्ध

। मेनजिंग एजेंट्स ।

पोद्दार सन्स लिमिटेड

पोद्दार चेम्पर्स

१०९, पारसी बाजार स्ट्रीट, फोर्ट

बम्बई

तार

टेलिफोन ।

"पोद्दार गिरनी"

बाफिस : २७०६५ (६ छादरे)

मिल : ४०१४९

मैं बच्चों को

ड्यूमेक्स

घेवी फूड देना कब से शुरू करें ?

अग्रे दिन से उनको बोतल से दूध पिलाना जल्दी हो
जाय—लेकिन उससे पहले नहीं। विज्ञापनों
में कुछ भी बच्चों न लिखा हो, यह बात धर है कि
बच्चे के लिए माँ के दूध जैसी कोई चीज नहीं
हो सकती। फिर भी, आप इस बात का भरोसा
रख सकती हैं कि माँ के दूध के बाद दूसरे संवर की
सबसे अच्छी चीज ड्यूमेक्स घेवी फूड
है। जब सही बच्चा आ जाए तो बोतल से ड्यूमेक्स
का दूध पिलाना शुरू कीजिए। यह निरापद
है और पोषक भी। यह आपके बच्चे का पूरा मूल्य भी
बढ़ा करता है। सदा ड्यूमेक्स ही खरीदिए।

ड्यूमेक्स

घेवी फूड

बच्चों को ड्यूमेक्स दीजिए और उन्हें फलता-फूलता देखिए!